

جمله حقوق بحق قد یی کتب خانه محفوظ میں۔

تَشْرُجُاكِ ٱلْمِنْالِيْنَ

حضرت مولانا كمال الدين المسترشد

مولا ناشس الحق

نام كتاب:

تَالِيُفُ:

كمپوزنگ:

ناشر

قرن يَ كُنْ خَيَانَ نُونَ مُنْ خَيَانَ نُونَ مُنْ فَالِنَ ٱلْلِمْ يَاعَ مُواجِي

ون: 021-32627608 ون: 021-32623782

فهرست عنوانات تشريحات ترمذي جلد مفتم

| صخنبر | عنوان | نمبرثثار | منخبر | عنوان | نبرثثار |
|-----------|---|----------|-------------|-------------------------------------|---------|
| ۵۰ | مهدی کی آمد | 10 | 1% | باب: پندره علامتیں | ۲ |
| | باب عیسی علیہ السلام کے نزول | 17 | | باب میں قیامت کے ساتھ مبعوث | ۳ |
| or | كابيان | | ۳1 | <i>א</i> פואפט | |
| ۵۳ | نزول عيسى عليه السلام اور حكمت بارى | 14 | m | باب:غزوه ترک | ۳ |
| ۵۳ | باب: دجال كابيان | 1/ | * | باب:جب كسرى بلاك موجائ كا | ۵ |
| ٧٠ | باب دجال کہاں سے نکام کا | 19 | ۳۳ . | تواس کے بعد کوئی کسریٰ نہ ہوگا | |
| | باب: خروج دجال کی علامات کے | r• | 4. | باب: قیامت اس وقت تک نہیں | ч |
| 71 | بارے میں مروی حدیث | _ | | آئے گی جب تک حجازی | |
| · | باب: وجال كے فتنہ ہے متعلق حدیث | rı | mb | جانبے آگ نہ نکلے گی | |
| וד | کابیان . | ÷ | | باب: قيامت اس ونت تك نهيس | ۷ |
| ۸۲ | خوارق کی چھشمیں | rr | | آئے گی جب تک کہ نبوت | |
| ۷٠ | لملحوظ | ۲۳ | ro | کے جموٹے دعویدار نبیں نکلیں کے | |
| ۷٠ | باب: دجال کی حالت کے بیان میں دروز | 44 | | باب: بنوثقیف میں ایک جموٹا اور ایک | ٨ |
| ∠1 | باب: د جال مدینه میں داخل نہیں ہوگا عدالہ عمران کا کا کا | ra | rz | سفاک ہے | |
| ۷۳ | باب عیسی بن مریم کاد جال کول کرنے کے بارے میں | ry | m | باب: قرن سويم كابيان | 9 |
| 2m | ے بارے یں باب (بلاتر جمہ) | 12 | M | باب: خلفا وكابيان | 10 |
| ۷۳ | ې بې رب د به د.) باب:ابن صياد کا ذ کر | 77 | 1 44 | باب: خلافت كابيان | * |
| ΔI | باب(بلاترجمه) | 79 | 悭 | ظفا قريش مس عديك قيامت تك | ır |
| | باب: ہوا کوٹر ابھلا کہنے کی ممانعت | ۳. | | باب: مراه کرنے والے حکمرانوں | 1111 |
| ۸۳ | کے بارے میں | | اسم | کے بارے میں | |
| ۸۳ | باب (دجال کے بارے میں) | m | ſΥ٩ | باب:مہدی (رضی اللہ عنہ) کے بارے میں | ۱۳۰ |

7

| برحت | | | | و تريدن، جند | |
|-------|---------------------------------------|------------|--------|---|--------------|
| صخخبر | عنوان | نبرثار | منخبر | عنوان | نمبرشار |
| lin" | باب | ሶ ለ | ٨٧ | باب | ۳۲ |
| | ہاب:ترازواورڈول کے متعلق نبی | r4 | ۸۷ | باب | ٣٣ |
| 110 | يَنْطُكُ كا فواب(اورتعبير) | | ۸۸ | باب | ۳۳ |
| | ابواب الشهادات | ۵۰ | 9+ | اباب | ro |
| | عن رسول الله تَسْطِلْهُ | | 91" | باب | ۲۲ |
| 144 | (گوای کابیان) | | 9.4 | اباب | ۳۷ |
| | ابواب الزهد | ۵۱ | 1•1 | اباب | 7% |
| 152 | عن رسول الله مَثْظَة | | | ابواب الرؤيا | ۳۸ |
| IM | باب عمل كرنے ميں جلدى كرنا | or | 1+1 | عن رسول الله ﷺ | |
| | باب:موت کے تذکرے کے بارے | ۵۳ | | باب:مومن كاخواب نبوت كاج صياليسوال | 179 |
| 1170 | یں | | 1+1 | حصہ | |
| 184 | باب: قبرکی مولنا کی کابیان | ۵۴ | 1014 | اس مدیث ہے قادیا نیوں کا استدلال | 4,4 |
| | باب: جوالله سے ملنا پسند کرے الله | ۵۵ | | باب: نبوت الفتآم پذیریموکی جبکه | ן אין ו |
| 127 | اس سے ملنا پسند فرماتے ہیں | | 1+14 | مبشرات ہاتی ہیں باب:جس شخص نے مجھے خواب میں | Pr |
| | باب:حضورعليه السلام كاا پني قوم كو | ۲۵ | | ہاب کا مل سے مصلے واب یں د کیولیا محقیق اس نے مجھ کوہی | , , , |
| IM | شفقت کے ساتھ ڈرانا | | 1•4 | و يکھا | |
| | اباب: الله کے خوف سے رونے کی | ۵۷ | | باب:خوف ناک خواب د مکیم کر کیا | سام |
| ۱۳۳۲ | فضیلت کابیان | | 1•∠ | كرناحيائي | |
| | باب:الرحم وه بات جانتے جویں | ۵۸ | 1+9 | ا باب:خواب کی تعبیر کے بارے میں | ሌሌ |
| ۱۳۴ | جانتا ہوں تو بخدائم کم ہی ہنتے | | 11+ | اباب في ر | గాద |
| | باب: جس نے ایک بات کی تا کہ بعر بر | ۵۹ . | | باب:اس مخفس کے بارے میں جو - | ۳٦ |
| ווייץ | لوگوں کو ہسائے کی کریں میشند | | ** I1+ | مجھوٹا خواب بیان کرتاہے | |
| 122 | باب: كى كوجنت كى خۇخىرى دىينے كابيان | 4+ | IIT | ا باب | ٣2 |

| منختبر | عنوان | نبرثار | مؤنبر | عنوان | نبرثار |
|------------|---|-----------|-------|---|--------|
| | باب:غريب مهاجر مالدارمها جرون | ۷٦ | 11-9 | باب: كم كوئى كابيان | JI. |
| 1415 | سے پہلے جنت میں جائیں مے | | · | باب: الله كزو يك دنيا كى بوقعتى | 44 |
| | باب: نبی مسطل اوران کے محمروالوں | 44 | 16. | كابيان | |
| 177 | کی معاشی زندگی | 0. | | باب:ونیامومن کی جیل اورکافرکی | ۲۳ |
| AFI | باب: محابر کرام کی معاشی زندگی کابیان | ۷۸ | IMA | جنت ہے | : - |
| | باب:اصل بے نیازی ول کی ہوتی | 49 | | باب: دنیا کی حالت، حپارآ دمیوں کی | 414 |
| 122 | ہے،تو محری بدل است | | ۳۳۱ | حالت | |
| 122 | باب: مال كمانے كاطريقه | ۸۰ | ira | باب ونیا کی فکر مندی اور محبت کابیان | 40 |
| 121 | اباب | ۸ı | | باب:مومن کی درازی عمر کی فضیلت | 77 |
| 149 | باب | ۸r | IM | میں | |
| 149 | باب | ۸۳ | | باب:اس امت کی عمر۲۰ تا ۱ سال | 44 |
| . IA• | باب:دوستی کااثر | ۸۳ | ira | کورمیان ہے | |
| IΛI | ہاب: دنیافانی اور کمل خیر جاویدانی ہے | ۸۵ | 1679 | باب:زمانه کالیمثنا اورامید کا مچعوثا پا | ۸۲ |
| IAT | ہاب:زیادہ کھاٹا کروہ ہے | ` | 10+ | باب: کوتا وامیدوں کے بارے میں | 49 |
| ۱۸۳ ۱۸۹ | باب: دکھاوے اور شہرت پسندی کابیان میں میں تانو ش | ۸۷ | 150 | باب:اس امت کا فتنه مال میں ہے | ۷٠ |
| IAZ | باب:ریا کا تکخ ثمره ا | ۸۸ | - | باب:اگراین ادم (آدی) کے پاس | ۷۱ |
| ,,,_ | ہاب باب: آدمی ای کے ساتھ ہوگاجس | 9+ | | مال کی دووادیاں ہوں تو تیسری | |
| IAA | ہےدہ محبت کرتاہے | • | - 16r | مجمى طلب كركا | |
| 19+ | باب:الله پرنیک گمان کرنے کابیان | 91 | | باب: بوز هے کادل دو چیزوں کی محبت | ۷٢ |
| 19+ | باب: نیکی وبدی کے بیان میں | 91 | 100 | میں جوان رہتا ہے | |
| | باب: الله بی کے لئے محبت کرنے کا | 98 | 100 | اباب: دنیا(مال) میں دلچین ندر کمنا | ۷٣ |
| 191 | بيان | | 14+ | ہاب: کفایت وقناعت کے بیان میں | ۷۳ |
| 191" | باب: محبت کے اظہار کابیان | 91 | יידו | ا باب غربت کی فضیلت کابیان | ۷۵ |

تشريحات ترندى،جلد مفتم

فهرست

| هرست | | | | | |
|-------------|---|---------|---------------|---------------------------------|-------------|
| منختبر | عنوان | نمبرشار | مختبر | عنوان | نمبرثنار |
| *** | باب:سفارش كے بيان ميں | 161 | | باب: تعریف اورتعریف کرنے والول | 914 |
| rr. | باب منه | sir | 191 | ک ناپند یدگی ک ابیان | |
| 444 | باب:حوض کوڑ کے احوال کابیان | 1112 | | باب مومن كے ساتھ دہنے كى ترغيب | 90 |
| ۲۳۵ | حوض کو ژکے برتنوں کا احوال | 110 | 190 | وشلقين | |
| r ∆∠ | باب | 110 | | باب: تکلیف ومصیبت پرمبر کرنے کا | 44 |
| 1/29 | باب | דוו | 197 | بيان | |
| 1/4 | بإب | 114 | 19/ | باب: نابینا ہونے کا ثواب | 92 |
| 1/1 | باب | 11/4 | r | باب:زبان کی حفاظت کابیان | 9/ |
| M | باب | 119 | ** (** | باب | 99 |
| 11/17 | باب | 11* | 794 | باب | 100 |
| 1710 | باب | Irl | ļ | ابواب صفة القيامة | ! ◆I |
| | ابواب صفة الجنة | irr | 7• A | (احوال قيامت كابيان) | |
| rgm | (جنت کے احوال کا تذکرہ) | | | باب:بدلداور حماب کی کیفیت کے | 1+1 |
| | ہاب: جنت کے درختوں کے احوال رین | 150 | ۲• Λ | بيان ميں | |
| 797 790 | کابیان باب جنت اوراسکی نعتوں کے احوال | | rir | باب | 1+1" |
| 140 | باب جنت کے بالا خانوں کے احوال باب: جنت کے بالا خانوں کے احوال | 110 | ! | باب: لوگوں کے جمع ہونے کے احوال | . ۱۰۳ |
| 194 | ېب: کست باد کا د راست. وال کابیان | ''- | rim | كابيان | * |
| 19 1 | باب: جنت مے درجوں کابیان | IFY | riy | باب: پیش ہونے کا بیان | 1+0 |
| | باب: جنتوں کی بیبوں کے احوال | 11/2 | 714 | بإبمنه | 1+4 |
| P | کے بارے میں | | YIA . | بإب منه | 1•4 |
| | دنیا کی عورتیں جنت میں کس کے | IFA | 7 19 | بابمنه | • |
| P*1 | نکاح پیس ہوں گی؟ | | rr• | باب:صور پھو ککنے کا بیان | 109 |
| 7. 7 | باب:جنتيول كي قوت جماع كابيان | 119 | rri | باب: بُل صراط کی کیفیت کابیان | \$I* |

| | | A CONTRACTOR | | | |
|-------------|--|--------------|--------------|--|------------------|
| صخيبر | عنوان | نمبرثثار | منختبر | عنوان | نمبرنثار |
| ۳۳۲ | باب: جنت کی نهرون کابیان | 1rz | بماجما | باب: جنتوں کے احوال کابیان | 1174 |
| | ابواب صفة جهنم | IM | P+4 | باب:جنتیوں کے لباس کابیان | 11"1 |
| | عن رسول الله مَنْظِيَّةُ | | 170 A | باب: جنت کے مجلوں کا بیان | 177 |
| PP2 | (جہنم کےاحوال کابیان) | | 144 | باب:جنت کے پر ندوں کابیان | ۳۳۱ |
| rr2 | باب: دوزخ كاحال | 164 | 1414 | باب: جنت کے محوژوں کا حال | ۳۳ |
| mma | باب:جنم کی گرائی کابیان | 10+ | P11 | باب جنتیوں کی عمرے بارے میں | 110 |
| | باب :اہل نارکے بوے جسوں کا | اھا | MIT | باب: جنتيون كي مفيل متني مول كي؟ | IMA . |
| rr. | بيان | | ·rir | باب: جنت کے دروازوں کا تذکرہ | 12 |
| mur | باب: دوزخ والوں کے مشروب | ior | mlh. | باب: جنت کے بازار کے متعلق | 1174 |
| | باب ووزخ والوں کے کھانے کا | 101 | | باب: الله تبارك وتعالى كے ديدار | 1179 |
| mad | بیان باب:دوزخ کی آگ دنیوی آگ | | 171 2 | کے بارے میں | |
| 70 + | ہاب:دوزر کی آک دیموں آگ سے اُنہتر گنازیادہ تیزہے | ۱۵۳ | ۳۲۰ | پاپ | 114 |
| | باب: دوزخ کے دوسانس کابیان اور | 100 | | باب جنتیوں کا بالاخانوں سے ایک | IM |
| roi | دوزخ ہے موئن کے نگلنے کاذکر | -¥- | mri | دوسرے کودیکھنا | |
| | باب: دوزخ میں زیادہ تعدادعورتوں س | rai | | باب:الل جنت والل دوزخ کے | ווייך י |
| 709 | ئ ہے | | ۳۲۲ | ہمیشہ رہنے کابیان | |
| ۳4÷ ۳4• | ب اب ماد . | 162 168 | | باب:جنت ناگوار یوں کے ساتھ اور | ساماا |
| , , | باب ابواب الایمان | 109 | | جہنم ہُؤسُوں کے ساتھ مگیری گئی | |
| ۲۲۳ | عن رسول الله يَنظِي | | 774 | ייט יייט אייט אייט אייט אייט אייט אייט | سيدر ا |
| ' '' | عن رسول الله ملاه باب: مجمع حم دیا گیا ہے کہ لوگوں سے | 140 | mra. | باب: جنت اوردوزخ میں بحث ومباحثه | ויני <i>רי</i> |
| | ہاب: خصصے مویا کیاہے کہو توں سے قال کروں یہاں تک کہوہ لاالہ | 11* | ' // | کابیان باب:سب سے کم درجے کے جنتی | Ira |
| , | عال خروں یہاں علت کہ وہ دلا انہ الا اللہ کہیں | | A | | II' & |
| 740 | | - 1VI | 779 | کے اعزاز کابیان مار مند عدمی کانتگارس | ر درمري |
| 172. | باب: مجهة عمديا كياب كدالخ | - 141 | P7* | باب:حورمين كي تفتكو كابيان | ורץ |

| لبرشت | | | | ې رين پ | |
|------------|--|---------|---------------|-----------------------------------|---------|
| صخيبر | عنوان | نمبرثار | مغنبر | عنوان | نمبرشار |
| P+Y | باب:مسلمان کوگالی ویتا مناه ہے | 144 | | ہاب:اسلام پانچ (ارکانوں) پر بنایا | iyr |
| r+r | باب:مسلمان کو کا فرقر اردینے کا گناہ | 140 | 121 | میاب | |
| | باب:ایمان کی حالت میں موت | 124 | | باب: بی تھے کے سامنے جرئیل کا | 148 |
| h+h | آنكابيان | | | ایمان داسلام کابیان (یعنی | |
| | باب:اس امت می فرقه بندیون کا | 144 | r2r | سوال) کرنا | |
| P+2 | بيان | | | باب: فرض اعمال كوايمان مين شامل | וארי |
| | ابواب العلم | 141 | 1729 | كرنے كابيان | |
| ۳۱۳ | عن رَسول الله يَمْطُلُهُ | | | باب:ایمان کوکامل بنانے اوراس | 476 |
| | باب:جب الله كسى بندے كى بھلائى | 149 | MAY | کے زیادہ اور کم ہونے کابیان | |
| | حابتا ہے تواسے دین کی سمجھ عطا | | | باب:حیاء کاایمان میں سے ہونے کا | ידרו |
| ساله | کرتاہے | | ۳۸۷ | بيان | |
| MB | باب علم حاصل کرنے کی فضیلت | 1/4 | ም ለለ | باب: نماز کے تقدس کا بیان | 174 |
| MZ | باب علم چھپانے کا گناہ | IΛI | 1791 | باب: ثماز چموڑنے کا گناہ | AFI |
| } | باب:طالب علم کے لئے آپ کی | IAT | rgr | باب | 149 |
| MIA MIA | ومیت کابیان میل علم میلی از سران | ۱۸۳ | } | باب: ایمانی کیف میں کوئی زنانہیں | 14. |
| 719 | باب علم <i>اُ ثھ</i> جانے کابیان باب علم دین کودنیا کمانے کا ذریعہ نہ | 1/1 | man | كرمكن | |
| ۳۲۲ | بب. اوی رو یا عامت داور میراند. بنایاجائے | | | باب بمسلمان وہ ہے جس کی زبان | 141 |
| | باب:یادکی هونی احادیث دوسرول | ۱۸۵ | | اورہاتھ (کی ایذاء) سے | |
| | تك پېنچانے كى فضيلت اور | | . ۳ 9∠ | مسلمان محفوظ رہیں | |
| rrr | ذمهداری - | | | باب:اسلام نامانوس شروع مواقعااور | 12r |
| | باب:من محرث احادیث بیان | PAL | | عنقریب وه دوباره نامانوس بن | |
| ۳۲۲ | کرنے کی تخت ممانعت ••• | | 79 A | کرلو <u>ٹے</u> گا | |
| ۲۲۸ | آج کل مدید فقل کرنے کی شرائط | 114 | l | باب:منافق کی نشانیوں کا بیان | 141 |
| ۳۲۸ | آج کل مدیث فقل کرنے کی شرائط | ۱۸۷ | l | باب:منافق کی نشانیوں کا بیان | 148 |

| | | | حصيف | و تريدن، چيد | |
|------------|---------------------------------|-------------|--------------|---|--------|
| مختبر | عنوان | نمبرشار | مغنبر | عنوان | نبرثار |
| | ابهاب الاستيذان والآداب | 7** | ٠٩٠٠ | باب مشکوک روایت سے پر بیز کرنا | 144 |
| • | عن رسول الله مُثلِثِة | | | باب: مدیث س کربہانے تراشا | 1/4 |
| | (اجازت چاہیے اورام مجھی عادتوں | | اسم | جا ترخبي <u>ن</u> | |
| ror | کابیان) | | משמ | منكرين حديث كأتقم | 19+ |
| | باب:سلام کی ترویج اورعام کرنے | r+1 | mm | باب: مديث لكصنے كى ممانعت كابيان | 191 |
| 606 | کے بیان میں | | | باب:احادیث لکھنے کی اجازت کا | 197 |
| raa | باب سلام کی فضیلت کابیان | r•r | ۳۳۳ | بيان | |
| | باب:اجازت نین مرتبه تک طلب | 7. M | | باب: اسرائیل روایات نقل کرنے کا | 191" |
| ray | ڪرني ڇاہيئ | 1 | ויייייי | علم حکم | |
| וצאו | باب:جواب سلام كابيان | r•1~ | | باب: نیکی بتانے والانیکی کرنے | 191" |
| ראר | باب: كمى كاسلام پېنچانا | r•0 | ۲۳۶ | والے کی طرح ہے | |
| | باب:سلام کرنے میں پہل کرنے | 74 4 | Ý. | باب: جس نے نیکی ، بدی کی وعوت | 190 |
| מציח | والے کی نضلیت | | وسم | دى اوراس كى پيروى كى گئ | |
| | باب:سلام میں ہاتھ کے اشارہ پر | r•∠ | | باب:سنت طريقه پر چلنے اور | 194 |
| ישציין. | اکتفاء کمروہ ہے | | h.h.+ | بب سے جینے کابیان بدعت سے بچنے کابیان | |
| | باب: چھوٹے بچوں کوسلام کرنے کا | r•A | . , | برے سے میں اور ہے۔ اباب:ان چیز ول سےدورر ہے کامیان | 194 |
| WYP | بيان | | ויויץ | ہب بن پیروں سے دورر ہے ہیں جن سے آٹ نے منع فرمایا ہے | 1,2 |
| arm | باب:عورتوں کوسلام کرنے کا بیان | 109 | | | |
| | باب: گھر میں داخل ہوتے ہوئے | rı. | <u>የየረ</u> | ا باب:مدینہ کے بڑے عالم کی فضیلت میں دنفا سے میں | 19/ |
| רצא | ملام کرے | | I | اباب: (نفلی) عبادت سے فقاہت سرفض میں | 199 |
| | باب:سلام بات چیت پرمقدم ہونا | rli | ሶ ዮ/አ | کے افضل ہونے کا بیان | |
| M17 | حاب ^ي | ļ | * | | |
| ۳۲۷ | باب: ذِمّی کوسلام کرنا مکروہ ہے | rir | | | |

| | 111111111111 | 13777 | | | |
|--------------|--|--------------|---------------|------------------------------------|-------------|
| صنحنبر | عنوان ِ | نمبرشار | صفحتمبر | عنوان | نمبرشار |
| | میل کرنے والے کے لئے علیک | *** | | باب بمسلم وغيرمسلمون كى مخلوط مجلس | rım |
| የ የለም | السلام كهنا كمروهب | | ٩٢٩ | پرسلام کانتخم | |
| MAZ | باب | 779 | 14 | باب: سوار پیادے کوسلام کرے | ۲۱۳ |
| | ہاب:رائے پر ہیٹھنے والے ک | rr• | اکم | باب: أنْحُق بينِّعة سلام كرنا م | 710 |
| የ አዓ | ة مددار ب <u>ا</u> ل | | | باب: گھرکے سامنے اجازت طلب | riy |
| r4+ | باب:مصافحه(ہاتھ ملانے) کابیان | ا۳۲ | 12°T | كرنے كالحريقہ | |
| ۲ ۹ ۱ | مصافحہ ایک ہاتھ سے یادونوں سے؟ | rmr | | باب بلااجازت کسی کے گھر میں | 11 4 |
| Lek | باب: محلے ملنے اور بوسددیے کابیان | ۲۳۳ | 14214 | حجعا نكنا | |
| 490 | بوسەدىيغ كىاقسام؟ | | | باب:سلام کرنااجازت طلی پرمقدم | MV |
| 490 | کیاسجد و تعظیمی گفروشرک ہے؟ | 720 | 1 2∠17 | ç | |
| ۲۹۳ | باب: ہاتھ یا وَل پُو ہے کا بیان | 724 | | باب: گھريس سفرسے رات کواچانك | 119 |
| ۳۹۸ | باب:مرحبا(خوش آمدید) کینچکابیان | 772 | ۳۷۲ | آ نامکروہ ہے | |
| | ہاب: چیننگنے والے کے لئے دعائی | ۲۳۸ | ١٣٤٤ | باب: قط كوخاك آلود كرنا | rr• . |
| ۵۰۰ | كلمات | | r44 | باب:قلم كان پرركھنا | 771 |
| ۵۰۱ | باب: چینک آنے پر کیا کہنا جاہے | | ۳4A | باب:سريانی زبان شيمنے کابيان | rrr |
| | باب: چھینکنے والے کوجواب وینے کا | LL. | | باب:مشر کین سے خط و کتابت کا | 777 |
| 0·r | אוט בא יאי אי | | የ %• | بيان | |
| | ہاب: چھینکنے والے کی تخمید کرنے پر سے نام | rri | የ 'ለ1 | باب: غيرمسلمول كوخط لكھنے كاطريقه | 226 |
| ۵۰۳ | یوحمک الله کهناواجب | | የ አተ | باب: خط پر مُهر لگانے كابيان | 110 |
| | باب جیسیئلنے والے کو کتنی باردعادی | 704 | የ ለተ | باب:سلام کیسے کیا جائے؟ | rry |
| ۵۰۳ | جائے | سيهر | | ہاب: پیشاب کرنے والے پر سلام | 772 |
| | باب: چھنگنے کے وقت آواز پست کرنے اور مُنہ ڈھا نکنے کابیان | T (Y) | የ ለሶ | ب بین ب رک دک برا کروہ ہے | |
| ۵۰۱ | کرے اور منہ و حاسے ہیان | | 17/17 | مروه ہے | |

تشریحات ترندی،جلدهنم اا فهرست

| اب: چھینک کی در آاور جمائی کی ذم اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ الل | יית ליים דרים דרים |
|--|--------------------------|
| اب : الثالث المن المن المن المن المن المن المن المن | rra rry |
| اب: نماز میں چھینک آناشیطان کا ۲۵۸ ہے۔ التالینے کی ممانعت ۲۵۸ ہے۔ التالینے کی ممانعت کا ۲۵۸ ہے۔ التالینے کی ممانعت کا شیطان کا التی ہے۔ التالین کی ممانعت کا شیطان کا التی ہے۔ التالین کی ممانعت کے التالین کی محتوات کی ہے۔ التالین کی محتوات کی محتوات کی ہے۔ التالین کی محتوات کی محتوات کی محتوات کی ہے۔ التالین کی محتوات کی ہے۔ التالین کی محتوات کی ہے۔ التالین کی محتوات کی محتوات کی محتوات کی محتوات کی محتوات کی محتوات کی ہے۔ التالین کی محتوات کے محتوات کی محتوات | rry |
| اب: نماز میں چھینگ آناشیطان کا ابت اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ الل | rry |
| اس کی جگر دور پیشمنا مکروہ ہے اشاک دور پیشمنا مکروہ ہے اس کی جگر دور پیشمنا مکروہ ہے اس کی جگر دور پیشمنا مکروہ ہے اس کی جگر خور پیشمنا مکروہ ہے اس کی جگر ہے جگر ہے اس کی جگر ہے | i |
| اس کی جگہ خود بیٹھنا کروہ ہے ۔ ۱۹۵ ۲۹۲ باب: آدمی اپنی سواری کی انگی نشست باب: جوشف اپنی جگہ سے اُٹھے اور ایس بیٹھنا کی اس | i |
| باب: جو خص اپنی جکہ ہے اُٹھے اور ایک العمالی کا ایک ہواری کی افغی کشست کا زیادہ حقد ارہے کے اسلام کا میں میں ایک میں اسلام کی اسلام کی ایک کا زیادہ حقد ارہے کے اسلام کی ایک کا نیادہ حقد ارہے کے اسلام کی ایک کا نیادہ حقد ارہے کے اسلام کی کا نیادہ کی ایک کی کا نیادہ کی کا نیاد کی کا نیادہ کی کا نیادہ کی کا نیاد کی کا نیادہ کی کا نیاد کی کا نیادہ کی کا نی | rr2 |
| کازیادہ حقدار ہے کا اس میشینا ما سرتواس | |
| | |
| الاستان میں میں ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی | |
| باب: بلااجازت دوآ دمیول کے درمیان ۲۲۳ سواری کے ایک جانور پر تین آ دی | rra |
| بیٹھناظروہ ہے اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ | |
| ۲۵۲ تا کمهالی نظر پر جانے کابیان | 1779 |
| ۲۲۲ باب عورتین جھی مردوں کو نددیکھیں ۲۲۲ | ra. |
| کر در در کا میار کا کا کا باب: شوهر کی اجازت کے بغیر عورت | |
| نے پاس جانا فروہ ہے ا | 101 |
| ۱ باب: ناحن کاننے اور موجیحے پت | rar |
| کرنے کی مت کابیان ۵۱۸ ۲۲۹ ماب: مالوں میں مالوں کا محمواشال | |
| ۲۰ باب: موجیس کترنے کابیان ۵۱۹ کرنامکروہ ہے | 701 |
| ا باب ابانوں میں بال پیوست رہے | rar raa |
| | 704 |
| ۲۷ باب: چت کیلے می حالت ایک پاول ۱۲۵ باب: مردوزن کاایک دوسرے کی دوسرے کی دوسرے پردکھناجائز ہے ۵۳۹ مثابہت اختیار کرناحرام ہے ۵۳۹ | |

| فهرست | | 1 | <u>r </u> | په تر مذی، جلد ^{مفت} م | تشريحات |
|--------------|-----------------------------------|-------------|--|----------------------------------|----------|
| منختبر | عنوان | نمبرشار | .صخفهر | عنوان | نمبرثثار |
| ۸۵۸ | باب: زر در مك واليال كابيان | PAY | | باب:عورت کے لئے خوشبولگا کر کھر | 727 |
| | باب:مردول کے لئے زعفرانی رنگ | MA | ۵۳۰ | ے لکانا جائز نہیں | |
| ٩۵۵ | اورتكين خوشبو مروه بين | | | باب:مردون اور عورتون کی خوشبوؤن | 121 |
| ۰۲۵ | باب:ریشی لباس کی ممانعت | MA | ۵۳۱ | كابيان | |
| IFG | باب (کوٹ وغیرہ پہنناجائزہے) | 1/19 | orr | باب:خوشبوقبول ند کرنا مکروہ ہے | 12 P |
| | باب:الله اپنے بندے کے اظہار نعت | 19 + | ۵۳۳ | باب:بے تجابانه اختلاط کا بیان | 120 |
| ٦٢۵ | کوپندکرتا ہے | | ۵۳۵ | ہاب:ران ستر میں داخل ہے | 124 |
| ۳۲۵ | باب:سیاه موزے کا بیان | 791 | ۵۳۷ | باب صفائی ستمرائی کابیان | 122 |
| ۳۲۵ | باب:سفيد بال نوچنامنع ہے | rgr | | باب:ہم بسری کے وقت پردے | 12A |
| | باب:صاحب مشوره امانت دار موتا | 19 m | ۵۳۸ | کااہتمام کرے | |
| ara | 4 | | ۵۳۸ | حمام میں جانے (اور نہانے) کابیان | 1/4 |
| ara | باب:بدهنگونی کابیان | rar | | باب: فرشة اليه كمريس داخل نهيس | 1/4 |
| | باب: تین آدمیوں میں سے دوا لگ | 292 | ۵۵۰ | ہوتے جس میں تصویر یا کتا ہو | |
| 240 | سر کوشی ندکریں | | | باب:مُر دول کے لئے عُصفر (مرخ | 1/1 |
| ۸۲۵ | باب:ايفائي عبد كابيان | rey | | یازردرنگ) سے رنگاہوا کپڑا | |
| | باب:میرے مال باب تھھ پر قربان کا | 19 2 | oor | مکروہ ہے | |
| PFG | بيان | | | باب:سفید کپڑے پہننے (کی افضیلت) | 17.17 |
| ۵۷۰ | باب بحسى كوبينا كهنه كابيان | 19 1 | ۳۵۵ | كابيان | ļ |
| | اباب:نومولود بیج کانام جلدی رکھنا | 199 | | اباب: (ملکے) سرخ رنگ کے کیٹروں | 11/11 |
| ۵۷۰ | <i>چا</i> ئ | - 6 | | کااستعال مردوں کے لئے جائز | |
| ۵ ∠ 1 | باب: المحصالي على المان المان | ۳۰۰ | ۵۵۵ | 4 | |
| ۵۲۲ | باب: تاپىندىدە نامون كابيان | P*1 | raa | باب سنرکیژون کااستعال | 17/17 |
| ۵۷۳ | باب: بُر ے نام تبدیل کرنے کابیان | ۳۰۲ | ۵۵۷ | باب: کالے لباس کابیان | MA |

تشريحات رزندى جلدمقتم نمبرشار صخنبر نمبرشار صخيمبر عنوان عنوان ابواب الامثال 045 باب: نی کریم نظاف کاسائے گرای ٣١٣ عن رسول الله مَنْظِيَّة ٣٠٨ باب: ني منطقے كے نام اور كنيت كو يكيا ۵۸۷ باب:الله عزوجل کی بیان کی ہوئی کرنا کروہ ہے ساله 02Y مثال كاتذكره باب بعض اشعار حكيمان موت بي 644 ۵۸۷ r.0 باب: المخضرت بنط اور دوس ب ۱۳۰۲ باب:شعرگوکی کابیان 710 ۵۷۸ انبياء يبهم السلام كي مثال ۳۰۷ باب: پیٹ کا پیپ سے بحرجانا، شع 295 باب: نماز،روزه اورصدقه کی مثال کے جرنے ہے بہتر ہے 714 090 ۵۸۲ باب:قرآن کی تلاوت کرنے اور نہ ۳۰۸ باب: بولنے میں تکلف کابیان ۵۸۳ **ساح** كرنے والے كى مثال ٣٠٩ | باب 094 ۵۸۴ باب: نماز ، بنگانه کی مثال باب: (بلاترجمه) جانوروں کا بھی MIN 4++ باب (بلاترجمه)اس امت کی مثال خيال ركهنا حابي 19 ۵۸۴ باب:(بلاترجمه) کلملی حبیت برنبیں بارش کی طرح ہے 4+1 ٣11 ۳۲۰ باب:آدی اوراس کی موت اورامید کیمثال ۵۸۵ باب:(بلاترجمہ) احپھا عمل وہ ہے 4+1 جلد بفتم ختم موئى _آخرى جلد بشتم جودائي ہو YAG نضل قرآن سے شروع ہوتی ہے۔

فهرست عربی ابواب

| صخنبر | باب | صغخبر | باب |
|-----------|--|------------|--------------------------------------|
| ۷٠ | باب ما جاء في صفة الدجال | ۲I | باب ما جاء في اشراط الساعة |
| 41 | باب ما جاء ان الدجال لايدخل المدينة | 12 | باب |
| ۷۳ | باب ما جاء في قتل عيسي بن مريم الدجال | ٣1 | باب ما جاء في قول النبي مُلَئِّ الخ |
| 24 | باب | ٣٢ | باب ما جاء في قتال الترك |
| 48 | باب ما جاء في ذكر ابن صياد | | باب ما جاء اذا ذهب كسرى فلاكسرى ا |
| A1 | باب | ٣٣ | بعده ۽ |
| ۸۳ | باب ما جاء في النهى عن سب الرياح | | باب لا تقوم الساعة حتى تخرج نار من |
| ۸۳ | باب | 777 | قبل الحجاز |
| 14 | باب . | | باب ما جاء لاتقوم الساعة حتى يخرج |
| ۸۷ | ا ہاب | 20 | كذابون |
| ^^ | باب | ٣٧ | باب ما جاء في ثقيف كذاب و مبير |
| 9 + | باب | ۳۸ | باب ما جاء في القرن الثالث |
| 91 | باب | ا ۱م | باب ما جاء في الخلفاء |
| 95 | باب | L L | باب ما جاء في الخلافة |
| 91 | باب | - | باب ما جاء ان الخلفاء من قريش الى ان |
| | ابواب الرؤيا | r/L | تقوم الخ |
| 1 • 1 | عن رسول الله عَلَيْكُ | ٩٩ | باب ما جاء في الائمة المضلين |
| 1+1 | باب ان الرؤيا جزء من ستة الخ | ۹ ۳۱ | باب ما جاء في المهدى |
| ۱۰۴۳ | باب ذهبت النبوة وبقيت المبشرات | or | باب ما جاء في نزول عيسى بن مريمً |
| 104 | باب ما جاء في قول النبي عَلَيْتُ الخ | ٥٣ | باب ما جاء في الدجال |
| 1+4 | باب ما جاء اذا راى في المنام ما يكره ما يصنع | ٧٠ | باب ما جاء من اين يخرج الدجال |
| 1 - 9 | باب ما جاء في تعبير الرؤيا | 4.1 | باب ما جاء في علامات خروج الدجال |
| 100 | ہاب | 41 | باب ما جاء في فتنة الدجال |

| | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | |
|--------|--|--------|--|
| منخنبر | باب | منختبر | باب |
| | باب ما جاء اعسمار هذه الامة ما بين | 11• | باب ما جاء في الذي يكذب في حلمه |
| 164 | الستين الخ | 117 | باب |
| 1179 | باب ما جاء في تقارب الزمان وقصر الامل | 11/4 | ب اب |
| 10. | باب ما جاء في قصر الامل | 110 | باب ماجاء في رؤيا النبي تُلْبُّ في الخ |
| 100 | باب ما جاء ان فتنة هذة الامة في المال | | ابواب الشهادة |
| 100 | باب ما جاء لو كان لأبن اهم واديان من الخ | 1 22 | عن رسول الله مُلَيْظُهُ |
| | باب ما جاء قلب الشيخ شاب على | | ابواب الزهد |
| 100 | حب النين | 174 | عن رسول اللّه غَلَطْتُهُ |
| 100 | باب ما جاء في الزهادة في الدنيا | 171 | باب جاء في المبادرة بالعمل |
| 144 | باب ما جاء في الكفاف والصبر عليه | 184 | باب ما جاء في ذكر الموت |
| 140 | باب ما جاء في فضل الفقر | 14. | با <i>ب</i> |
| | باب ما جاء ان فقراء المهاجرين يدخلون | 122 | باب من احب لقاء الله احب الله لقاء ٥ |
| 144 | الجنة الخ | ITT | باب ما جاء في انذار النبي عَلَيْتُ قومه |
| 144 | باب ما جاء في معيشة النبي عليه الخ | ١٣٣ | باب ما جاء في فضل البكاء من حشية الله |
| AFI | باب ما جاء في معيشة اصحاب النبي مَلْكِلُهُ | ۱۳۳ | باب ما جاء في قول النبي مُلْتِلِيَّة لوتعلمون ما الخ |
| 122 | باب ما جاء ان الغنا غنا النفس | | باب ما جاء من تكلم بالكلمة ليضحك |
| 144 | باب ما جاء في اخذ المال بحقه | 184 | الناس |
| 141 | ہاب | 174 | باب |
| 149 | باب | 1149 | باب ما جاء في قلة الكلام |
| 149 | باب | | <u>,</u> |
| 1.4 | ہاب | 16.4 | باب ما جاء في هوان الدنيا على الله |
| 1/1 | باب | | باب ما جاء ان الدنيا سجن المؤمن |
| IAP | باب ما جاء في كراهية كثرة الاكل | 164 | وجنة الكافر |
| 110 | باب ما جاء في الرياء والسمعة | ۳۳ ا | باب ما جاء مثل الدنيا مثل اربعة نفر |
| PAI | باب | ۱۳۵ | باب ما جاء في هم الدنيا وحبها |
| 114 | ہاب | 164 | باب ما جاء في طول العمر للمؤمن |

| عبكسيج | | البري الأسي | |
|-------------|----------------------------------|-------------|---------------------------------|
| مغنبر | باب | صخيبر | باب |
| 739 | ہاب | ۱۸۸ | باب الموء مع من احب |
| 102 | باب | 19+ | باب في حسن الظن بالله |
| 129 | باب | 194 | باب ما جاء في البر والاثم |
| ۲۸۰ | باب | 191 | باب ما جاء في الحب في الله |
| 777 | باب | 192 | باب ما جاء في اعلام الحب |
| 787 | ہاب | 1917 | باب كراهية المدحة والمداحين |
| ۲۸۳ | باب | 190 | باب ما جاء في صحبة المؤمن |
| 710 | ہاب | 197 | باب في الصبر على البلاء |
| 714 | ہاب | 191 | باب ما جاء في ذهاب البصر |
| | ابواب صفة الجنة | 7 | باب ما جاء في حفظ اللسان |
| 797 | · عن رسول الله مُلَّاثِثُهُ | 4+4 | ہاب |
| 497 | باب ما جاء في صفة شجر الجنة | ۲+٦ | باب |
| 490 | باب ما جاء في صفة الجنة و نعيمها | r•A | ابواب صفة القيامة |
| 192 | باب ما جاء في صفة غرف الجنة | r • A | باب ما جاء في شان الحسب والقصاص |
| 19 1 | باب ما جاء في صفة درجات الجنة | 717 | ہاب |
| ۳۰۰ | باب ما جاء في صفة نساء اهل الجنة | 414 | باب ما جاء في شان الحشر |
| ۳۰۳ | باب ما جاء في صفة جماع اهل الجنة | . 114 | اباب ما جاء في العرض |
| m•w | باب ما جاء في صفة اهل الجنة | 112 | باب منه |
| ٣•٩ | باب ما جاء في صفة ثياب اهل الجنة | 714 | باب منه |
| ۳۰۸ | باب ما جاء في صفة ثمار الجنة | 719 | باب منه |
| • 9 | باب ما جاء في صفة طير الجنة | rr• | باب ما جاء في الصور |
| ۳۱۰ | | rri | باب ما جاء في شان الصراط |
| 1 | باب ما جاء في صفة خيل الجنة | ۲۲۳ | باب ما جاء في الشفاعة |
| ۳11 | باب ما جاء في سِنّ اهل الجنة | rr+ | باب منه |
| ۳۱۲ | باب ما جاء في كم صف اهل الجنة | ۲۳۴ | باب ما جاء في صفة الحوض |
| ۳۱۳ | باب ما جاء في صفة ابواب الجنة | 220 | باب ما جاء في صفة اواني الحوض |

| منحنبر | باب | منخنبر | باب |
|-------------|---|--------------|--|
| ۳۷٠ | باب ما جاء امرت ان اقاتل الخ | 7117 | باب ما جاء في سوق البجنة |
| P61 | باب ما جاء بني الاسلام على خمس | 712 | باب ما جاء في رؤية الرب بارك و تعالىٰ |
| ٣2٢ | باب ما وصف جبرئيل للنبي مُنْكِنِينَهُ الايمان الخ | ٣٢٠ | باب |
| 7 29 | باب ما جاء في اضافة الفرائض الى الايمان | mr1 | باب ما جاء في تراثي اهل الجنة في الغرف |
| | باب ما جاء في استكمال الايمان | *** | باب ما جاء في خلود اهل الجنة والنار |
| MAR | والزيادة والنقصان | | باب ما جاء في حفت الجنة بالمكاره |
| 714 | باب ما جاء الحياء من الإيمان | 774 | وحفت الغ |
| ۳۸۸ | باب ما جاء في حرمة الصلواة | 277 | باب ما جاء في احتجاج الجنة والنار |
| 791 | باب ما جاء في ترك الصلوة | 444 | باب ما جاء مالادني اهل الجنة |
| 797 | باب | ۳۳۰ | باب ما جاء في كلام حور العين |
| ٣٩٣ | باب لایزنی الزانی حین یزنی و هو مؤمن | 777 | باب ما جاء في صفة انهار الجنة |
| | باب ما جاء المسلم من سلم المسلمون | | ابواب صفة جهنم |
| 79 2 | من لسانه ويده | 77 2 | عن رسول الله مَلَيْكُ |
| | باب ما جاء ان الاسلام بدأ غريبا وسيعود | 772 | باب ماجاء صفة النار |
| 79 A | غريبا | 779 | باب ما جاء في صفة قعر جهنم |
| ۳۰۰ | باب في علامة المنافق | ۳ <i>۴</i> ۰ | باب ما جاء في عظم اهل النار |
| 4.4 | باب ما جاء سباب المسلم فسوق | 777 | باب ما جاء في صفة شراب اهل النار |
| 4.4 | باب من رمی اخاه بکفر | ۲۳۲ | باب ما جاء في صفة طعام اهل النار |
| h•h | باب في من يموت وهو يشهد ان لا اله الا الله | 70 + | بىاب مىا جىاء ان ئىاركىم ھىذە جزء من سىمىن جزءً من ئار جھنم |
| 4+4 | باب افتراق هذه الامة | | باب ما جاء ان للنار نفسين وما ذكر من |
| | ابواب العلم | 201 | يخرج من النار من اهل التوحيد |
| ۱۳۱۳ | عن رسول الله عَلَيْكُ | 209 | باب ما جاء ان اكثر اهل النار النساء |
| 414 | باب اذا اراد اللَّه بعبد خيرا فقهه في الدين | | ابواب الايمان |
| 110 | باب ما جاء في فضل طلب العلم | myr | عن رسول الله مُلْكِنَّةُ |
| 412 | ياب ما جاء في كتمان العلم | | باب ما جاء امرت ان اقاتل الناس حتى |
| MIV | باب ما جاء في الاستيصاء بمن يطلب العلم | ۵۲۳ | يقولوا لا اله الا الله |

| صختبر | باب | صخينبر | باب |
|--------------|---|--------------|---|
| MAD | باب ما جاء في التسليم على النساء | 1719 | باب ما جاء في ذهاب العلم |
| 777 | بأب في التسليم أذا دخل بيته | rrr | باب في من يطلب بعلمه الدنيا |
| M42 | باب السلام قبل الكلام | rrr | باب في الحث على تبليغ السماع |
| ۲۲۷ | باب ما جاء في كراهية التسليم على اللمي | ٣٢٦ | باب في تعظيم الكذب على رسول الله عَلَيْكِم |
| 749 | باب ما جاء في السلام على مجلس فيه الخ | ٠٣٠ | باب فی من روی حدیثا و هو یری انه کذب |
| ۴2. | باب ما جاء في تسليم الراكب على الماشي | اسما | باب ما نهى عنه ان يقال عند حديث الخ |
| M21 | باب التسليم عند القيام والقعود | אשא | باب في كراهية كتابة العلم |
| 14ZY | باب الاستيذان قبالة البيت | ساسهم | باب في الرخصه فيه |
| 4224 | باب من اطلع في دار قوم بغير اذنهم | אשא | باب ما جاء في الحديث عن بني اسرائيل |
| 474 | باب التسليم قبل الاستيذان | ٢٣٦ | باب ما جاء ان الدال على الخير كفاعله |
| ۲۷۳ | باب في كراهية طروق الرجل اهله ليلا | 44.0 | باب في من دعا الي هدى فاتبع |
| W22 | باب ما جاء في تتريب الكتاب | h.h. • | باب الاخذ بالسنة واجتناب البدعة |
| ٣٧٧ | باب | የ የየ4 | باب في الانتهاء عما نهي عنه رسول اللَّه مُنْرَثِّتُهُ |
| ۳۷۸ | باب في تعليم السريانية | ٣٣٤ | باب ما جاء في عالم المدينة |
| ۴۸٠ | باب في مكاتبة المشركين | <u> </u> | باب ما جاء في فضل الفقه على العبادة |
| ۳۸۱ | باب كيف يكتب الى اهل الشوك | | ابواب الاستيذان والاداب |
| ۳۸۲ | باب مِا جاء في ختم الكتاب | 808 | عن رسول اللّه مَالَئِكُمْ |
| ሾለተ | باب كيف السلام | ۳۵۳ | باب ما جاء في افشاء السلام |
| ۳۸۳ | باب في كراهية التسليم على من يبول | 667 | باب ما ذكر في فضل السلام |
| | باب ماجاء في كراهية ان يقول عليك | 76Y | باب ما جاء ان الاستيذان ثلاث |
| <u> የ</u> ላለ | السلام مبتد ثا | ודא | باب كيف ردّ السلام |
| 712 | יו רי | 444 | باب في تبليغ السلام |
| m/4 + | باب ما جاء ما على الجالس في الطريق | ۳۲۳ | باب في فضل الذي يبدء بالسلام |
| Lab. | باب ما جاء في المصافحة | ۳۲۳ | باب في كراهية اشارة اليد في السلام |
| r94 | باب ما جاء في المعانقة والقبلة باب ما جاء في قُبلة اليد والرجل | מאה | باب ما جاء في التسليم على الصبيان |
| | باب ما جاء في قبله اليد والرجن | | |

| منخبر | باب | مغنبر | باب |
|------------|---|-------|---|
| | باب ما جاء في وضع احدى الرجلين | ۸۹۳ | باب ما جاء في مرحبا |
| orr | على الاخرى مستلقياً | ۵۰۰ | باب ما جاء في تشميت العاطس |
| orm | باب ما جاء فی کراهیة فی ذلک | ۱۰۵ | باب ما يقول العاطس اذا عطس |
| " " | • | 0.5 | باب كيف يشمت العاطس |
| | باب ما جاء في كراهية الاضطجاع | | باب ماجاء في ايجاب التشميت بحمد |
| ora | على البطن | ٥٠٣ | العاطس |
| Dry | باب ما جاء في خفظ العورة | ۵۰۳ | باب كم يشمت العاطس |
| ۵۲۸ | باب ما جاء في الا تكاء | | باب ما جاء في خفض الصوت و تخمير |
| 271 | باب | r+0 | الوجه عنيد العطاس |
| 079 | باب ما جاء ان الرجل احق بصدر دابته | | باب ما جماء ان اللُّه يحب العطاس و |
| 000 | باب ما جاء في الرخصة في اتخاذ الانماط | ۵۰۷ | يكره التثاؤب |
| م٣٠ | باب ما جاء في ركوب ثلاثة على دابة | ۵ + ۹ | باب ما جاء ان العطاس في الصلوة من الشيطان |
| 071 | باب ما جاء في نظرة الفجاء ة | | باب ما جاء في كراهية ان يقام الرجل |
| arr | باب ما جاء في احتجاب النساء من الرجال | ۵۱۰ | من مجلسه ثم يجلس فيه |
| | باب ما جاء في النهي عن الدخول على | | باب ما جاء اذا قام الرجل من مجلسه |
| 024 | النساء الاباذن ازواجهن | ١١۵ | ثم رجع |
| مهم | باب جاء في تحذير فتنة النساء | | بـاب مـا جـاء في كراهية الجلوس بين |
| 224 | باب ما جاء في كراهية اتخاذ القصة | 011: | الرجلين بغير اذنهما |
| | باب ما جاء في الواصلة والمستوصلة | 017 | باب ما جاء في كراهية القعود وسط الحلقة |
| ۵۳۸ | والواشمة والمستوشمة | ۵۱۳ | باب ما جاء في كراهية قيام الرجل للرجل |
| ۵۳۹ | باب ما جاء في المتشبهات بالرجال من النساء | ۵۱۵ | باب ما جاء في تقليم الاظفار |
| ۵4. | ا باب ما جاء في كراهية خروج المرأة متعطرة | | بهاب مها جماء في توقيت تقليم الاظفار |
| ۱۳۵ | باب ما جاء في طيب الرجل والنساء | ۸۱۵ | واخذ الشارب |
| ۵۳۲ | باب ما جاء في كراهية رد الطيب | 919 | باب ما جاء في قص الشارب |
| | بماب ما جاء في كراهية مباشرة الرجل | 610 | باب ما جاء في الاخذ من اللحية |
| ٥٣٣ | الرجل والمرأة المرأة | 211 | باب ما جاء في اعفاء اللحية |
| | | | |

| | | نحبب | والمراجع وا |
|-------------|--|------------|--|
| صخيبر | باب | صفحنبر | باب |
| 02. | باب ما جاء في تعجيل اسم المولود | ara | باب ما جاء في حفظ العورة |
| 021 | باب ما يستحب من الاسماء | ara | باب ما جاء في ان الفخذ عورة |
| 02r | باب ما جاء ما يكره من الاسماء | عمم | باب ما جاء في النظافة |
| 025 | باب ما جاء في تغيير الاسماء | ۵۳۸ | باب ما جاء في الاستتار عند الجماع |
| ۵۲۳ | باب ما جاء في اسماء النبي مُلْكُلُهُ | ۵۳۸ | باب ما جاء في دخول الحمام |
| | باب ما جاء في كراهية الجمع بين اسم مدالله | ۵۵۰ | باب ما جاء ان الملا ئكة لا تدخل الخ |
| 024 | النبى مَلَّتُ وكنيته | aar | باب ما جاء في كراهية المعصفر للرجال |
| 822 | إباب ما جاء ان من الشعر حكمة | ممم | باب ما جاء في لبس البياض |
| ۵۷۸ | باب ما جاء في انشاد الشعر | | باب ما جاء في الرخصه في لبس الحمرة |
| DAY | باب ما جاء لأن يمتلى جوف احدكم قيحا الخ | ۵۵۵ | للوجال |
| DAT | بيات ما جاء في القصاحة و البيان | raa | باب ما جاء في الثوب الاخضر |
| | ابواب الامثال | ۵۵۷ | باب في الثوب الاسود |
| ۵۸۷ | عن رسول الله مُلْكِيَّةُ | ۸۵۵ | باب ما جاء في الثوب الاصفر |
| ۵۸۷ | باب ما جاء في مثل الله عز وجل لعباده | | باب ما جاء في كراهية التزعفر والخلوق |
| | باب ما جاء في مثل النبي والانبياء صلى | ۵۵۹ | للرجال |
| ۵۹۳ | الله عليهم وسلم الخ | 646 | باب ما جاء في كراهية الحرير والديباج د |
| ۵۹۳ | باب ما جاء مثل الصلوة والصيام والصدقة | į | باب ما جاء ان الله يحب ان يرى اثر |
| | باب ما جاء مثل المؤمن القارى للقران | 277 | نعمته الخ |
| ۵9 <i>۷</i> | وغير القارى | 244 | باب ما جاء في الخف الاسود |
| 4 • • | باب ما جاء مثل صلوات الخمس | ۵۲۳ | باب ما جاء في النهي عن نتف الشيب |
| 4+4 | باب ما جاء مثل ابن ادم واجله وامله | ara | باب ما جاء ان المستشار مؤتمن |
| o. | تم المجلد السابع | 010 240 | باب ما جاء في الشوم باب ما جاء لايتناجي اثنان دون ثالث |
| | ويليه المجلد الثامن | AYA | باب ما جاء في العدة |
| } | اوله ابواب فضائل القرآن | 649 | باب ما جاء في العداك ابي و امي |
| | Ì | ۵۷۰ | باب ما جاء في يا بني باب ما جاء في يا بني |
| | ····· | | |

بسم اللدالرخل الرحيم

باب ماجاء في اشراط الساعة

علامات ِ قیامت کے بیان میں

عن انس بن مالكُ انه قال: احدثكم حديثاً سمعته من رسول الله صلى الله عليه وسلم الله عليه وسلم الله عليه وسلم الله عليه وسلم "قال رسول الله صلى الله عليه وسلم "قال رسول الله صلى الله عليه وسلم "قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : "ان من اشراط الساعة ان يُرفع العلم ويَظهر الجهل ويَفشُو الزناويُشرب الخمسين امرأة قيم الزناويُشرب الخمسين امرأة قيم واحد". (حسن صحيح)

حضرت انس رضی الله عند سے روایت ہے کہ انہوں نے فر مایا میں تمہیں ایسی حدیث بیان کرتا ہوں جومیں نے رسول الله علیہ وسلم سے سی ہے میرے بعد کوئی بھی تم کو یہ نہیں بتا سکے گا کہ اس نے رسول الله علیہ وسلم سے (براہ راست) سنا ہے، (کیونکہ ایسا صحابی ہی کہرسکتا ہے جومیر سے بعد یہاں موجو ذہیں رہے) رسول الله علیہ وسلم نے ارشا وفر مایا ہے کہ قیامت کی علامات میں سے یہ ہے کہ علم اٹھالیا جائے گا اور جہل ظاہر (عام) ہوجائے گا اور زناعام ہوجائے گا اور شراب بی جانے گے گی اور عور تیں زیادہ ہوجا کیں گا اور مردکم ہوجا کیں اور عربی کہ بچاس عور توں کا ایک ہی ذمہ دار ہوگا (لیدی نفت ظم ہوگا)۔

لغات: قسولسه: "الشسواط" شَسرَط بِفَتْح الراء كى جَمْع بِمَعْى علامت ونشانى كى كمامر قبوله: "يفشو" فَشَا يفشو فُشُواً وَفَشُواً بَمَعَى ظَاهِر بون ، پھيلنے اور عام بونے كے ہے۔ قوله: "قَيِّم" بفتح القاف وتشد يدالياء المكسورة سربراه ، فتظم اور ذمدواركوكتے ہيں۔

تشری : حضرت انس رضی الله عنه کااس صدیث میں بیا ندازگفتارا پناناتر غیب کے لئے ہے پس اگر مخاطب اہل بھرہ ہوں تو چونکہ یہ بھرہ میں آخری صحابی رہ گئے تصلید اان کا بیکہنا کہ میرے بعد کوئی بینہیں کہہ سکے گاکہ میں نے بیحدیث یالفس حدیث آنحضور علیہ السلام سے سی ہے کہ بھرہ میں ان کے بعد کوئی صحابی تھا ہی نہیں۔ اوراگر بیعام خطاب ہوتو پھراگر چہان کے بعد صحابہ کرام کا وجود تو تھا مگر شاذونا در۔ اس لئے نفی عموم صحح ہے کہ القلیل کالمعدوم۔ یا مطلب بیہ ہے کہ بیحدیث ان الفاظ میں کوئی بھی تم کو نبی علیہ السلام سے براہ راست نقل نہیں کر سکے گا کہ اس کا ساع آپ سلی اللہ علیہ وسلم سے جن حضرات کو حاصل ہے ان میں صرف میں ہی باقی موں۔

اس حدیث میں رفع العلم کی پیش گوئی گئی ہے جس کا تذکرہ سابقہ باب سے پیوستہ "باب ماجاء
فسی المھوج" میں گذرا ہے تاہم وہاں بجائے جہل بڑھ جانے کے آل عام ہونے کا ذکر تھا گران دونوں میں
طازم ہے کیونکہ علم جس تناسب سے کم ہوتا ہے اس تناسب سے جہل بڑھ جاتا ہے کہ دونوں متضاد چیزیں ہیں
اور جہل عام ہونے کی صورت میں آل بھی عام ہونالازی ہی بات ہے کہ دنیاوی مفادات کے لئے کسی کا خون
بہانا آسان تر ہوجائے گا،علاوہ ازیں آج کل عام علاء میں دنیاوی تذکرہ عام ہوتا ہے یہ تھا گیلی علم کاسب ہے
جہاں تک شراب پی جانے کے عموم کی بات ہے تواس کی وجہ ایک توبہ ہے کہ یاتولوگ اس کی حرمت سے
جہاں تک شراب پی جانے کے عموم کی بات ہے تواس کی وجہ ایک توبہ ہے کہ یاتولوگ اس کی حرمت سے
انکارکردیں کے یانام تبدیل کر کے تاویل کرلیں گے اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ حرمت کو تسلیم کرتے ہوئے اس سے
انتخار بنہیں کیا جائے گا کہ حرام وطلال کی اہمیت ختم ہوجائے گی، اسی پر قیاس کر کے زنا کا عام ہونا مستجذبی بلکہ
اخت توبیدونوں صورتیں ہمارے سامنے ہیں عورتوں کا سیلاب باز اروں میں المہ آیا ہے اور شخصی می نت نئی صورتیں
روز پر وز ترتی کرتی جارہی ہیں ایک سے ایک انداز اختیار کئے جارہے ہیں، موسیقی عام ہوگئی ہے اور مستی کے سارے دروازے کھل گئے ہیں حکومت کو خیر باد کہنا ترقی نہیں سمجھیں گی تو کیا کریں گی آزادی دی جارہی ہے
الیے میں نا قصات العقل اپنی عفت کو خیر باد کہنا ترتی نہیں سمجھیں گی تو کیا کریں گی ؟
الیے میں نا قصات العقل اپنی عفت کو خیر باد کہنا ترتی نہیں سمجھیں گی تو کیا کریں گی ؟

عورتوں کی کثرت کی سائنسی وجہ یہ ہے کہ ورت کے نطفے میں X (ایکس) نوعیت کا بیفنہ ہوتا ہے جبکہ مرد کے نطفے میں X اور Y (ایکس اوروائی) دونوں ہوتے ہیں پس اگر جماع کے وقت ایکس نتقل ہوجائے تو دونوں ایکس ٹل کرلڑ کی جنم دینے کا سبب بنتے ہیں جبکہ وائی نتقل ہونے کی صورت میں لڑکا پیدا ہوتا ہے بشر طیکہ وائی چوہیں گھنٹوں کے اندراندر تم میں X تلاش کر کے اس سے ٹل جائے ورنہ تو ضائع ہوجا تا ہے جبکہ ایکس کی زندگی نسبتا زیادہ ہے ، دوسری طرف کثرت جماع سے وائی کی پیدا وار بڑھ جاتی ہے ۔ لہذا جولوگ نو جوانی میں شادی کر لیتے ہیں یاوہ محنت کش ہوتے ہیں تو مردانہ طاقت زیادہ ہونے کی وجہ سے وہ بیوی سے جلدی جلدی ملتی میں اس طرح لڑے کا امکان زیادہ ہوتا ہے۔ بخلاف تا خیرسے شادی کرنے والوں اور سُست و کا ہل لوگوں کے ۔ کیونکہ قدرتی طور پران دونوں فریقین کی مردانہ طاقت خود بخود کم ہوجاتی ہے ، آج کل لوگ دیرسے شادی

کرنے کے عادی ہو میں ہیں اور کام کاج ومحنت بھی کم ہوگی اس لئے لڑکیاں کثیر ہوگئیں ان گنت آلات تغیش وصنعت نے انسان کومحنت سے تقریباً فارغ کردیا ہے جو کام پہلے ہاتھ سے کئے جاتے تھے وہ آج مشینوں کے ذریعے کئے جاتے ہیں اور جو مسافت پیدل چلنے سے طے کی جاتی تھی وہ آج گاڑیوں اور جہازوں کے ذریعے طے کی جاتی ہے جاتے ہیں اور جہازوں کے ذریعے طے کی جاتی ہے لہذااس کالازی نتیجہ مردانہ طافت اور پھر"وائی" کا کم ہونا ہے جس سے لڑکیوں کی شرح بیداوار بڑھر ہی آج کی دنیا ہیں بھی لڑکیوں کا تناسب لڑکوں سے زیادہ ہے اور اس میں تیزی سے اضافہ شروع ہو گیا ہے۔

٢٣

جھے اچھی طرح یا دہے کہ لڑ کے کے ماں باپ رشتے کے لئے لڑکی تلاش کرتے مگراس میں بعض دفعہ ناکا می ہوجاتی جبکہ آج لڑکی کے ماں باپ کورشتہ کے لئے سرگر داں پھر نا پڑتا ہے اور پھر بھی بہت ی لڑکیاں رفعة از دواج سے محروم ہیں آگے چل کریداضا فہ اور بھی زیادہ ہوگا۔

ال حدیث میں "فیسم" سے مرادشو ہرنہیں بلکہ ذمہ داراور متولی ہے یعنی ایک گھر میں کثرت سے لڑکیاں ہوں گی خواہ ان میں بہنیں اور بیٹیاں ہوں یا ہویاں اور ماسیاں ، نیز سے بھی ضروری نہیں کہ ساری دنیا کا یہ حال ہو بلکہ بعض علاقے جیسے گرم خطے اگر اس کی لپیٹ میں آ جا کیں تو بھی پیش گوئی صادق ہوگی ،اور یہ بھی ضروری نہیں کہ کثرت کا تناسب اٹھانوے فیصد یا نناوے فیصد ہو بلکہ نفس تکثیر سے بھی حدیث کا مصداق پایا جائے گاخواہ وہ اٹھانوے فیصد سے کم ہی کیوں نہ ہو غرض ان امور سے عقول وانساب بربادہو نگے اور نتیجة معاد بھی متاثر ہوگا۔

وومرى حديث: حسن الزبيسربسن عسدى قسال دخلناعلى انسس بسن مالك قسال: "فشكونااليه مانكلقي من الحجاج فقال: مامن عام الأوالذى بعده شرِّمنه حتى تلقوا ربكم سمعت هذامن نبيّكم صلى الله عليه وسلم ". (هذاحديث حسن صحيح)

حضرت زبیر بن عدی فرماتے ہیں کہ ہم لوگ حضرت انس بن مالک (رضی اللہ عنہ) کے پاس (اندریعنی ان کے گھر) گئے اوران سے حجاج کی جانب سے ملنی والی تکلیفات کی شکایت کی تو حضرت انس نے فرمایا کوئی سال ایسانہیں مگراس کے بعد آنے والاسال اس سے زیادہ بدتر ہوگا یہاں تک کہتم اپنے رب سے جاملویہ (بات) میں نے تمہارے نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے ن ہے۔

تشرت : - بد باعتبار اغلب حالات کے ہیں یاباعتبار زمانہ کے ہے کہ ہرآنے والا وقت گذرے وائے

زمانے سے براہوگا کیونکہ مرورز مانہ سے آتخضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے عہد پاک سے دوری آٹالازی بات ہے نہ اس میں پہلے جیسے لوگ رہتے ہیں اور نہ ہی پہلے جیساعلم وعمل اور ورع وتقوی ہوتا ہے اور نہ ہی وہ برکات ہوتی ہیں ہاں البتہ جب ایک شخت دور گذرتا ہے تو لوگ پھے ہوشیار ہوجاتے ہیں اورا کثریت گنا ہوں سے تو بہتا ئب ہوجاتی ہے اور جب دوبارہ آسائٹوں میں گم ہوجاتے ہیں تو پھرئی ہے پھران میں سے نیک وصالح قیادت سامنے آجاتی ہے اور جب دوبارہ آسائٹوں میں گم ہوجاتے ہیں تو پھرئی نسل عیاثی کے در بے ہوجاتی ہے ران میں فساق محمر ان سامنے آتے ہیں جوابی ہی لوگوں پرمظالم ڈھاتے ہیں اس طرح ایک دوراچھا گذرتا ہے اورایک خراب مگر مجموعی اعتبار سے برائی غالب اور بردھتی رہتی ہے جی کہ ان اور ادور میں مشکل ترین اور بدترین دورد جال ملعون کا آتے گا پھر اللہ کے فضل سے اس تناسب سے بہترین دور مصل آئے گا جو حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے نزول سے شروع ہوگا، بہر حال حدیث ہیں شرسے مراد باعتبار دنیا کے نہیں بلکہ باعتبار دین کے ہے۔

تيسري عديث: عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لايقوم الساعة حتى لايقال في الارض "الله، الله، الله، الماء حسن

حضرت انس رضی الله عنفر ماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ارشاد فر مایا کہ قیامت قائم نہیں ہوگی یہاں تک کہ زمین میں الله الله الله نہیں کہا جائے گا، لینی جب تک الله کویاد کرنے والے موجود ہوں گے اور الله کی یا دباتی ہوگی اس وفت تک قیامت نہیں آئے گی کیونکہ دنیا وکا نئات کی تخلیق کا اصل فا کہ ہ الله کی عبادت اور الله کی یا دب تو جب تک ذکر باقی ہے تو دنیا کا فاکدہ باقی ہے اور جب ذکر ختم ہوگا تو دنیا کا فاکدہ ختم ہوجائے گا اور چونکہ الله تبارک و تعالی نے زمین و آسمان کو بلافاکدہ پیدائیس کیا ہے لہذا ذکر کے اختیام کے ساتھ ہی دنیا کا بھی خاتمہ کردیا جائے گا تا کہ کوئی فضول اور محض لغویت لازم نہ آئے۔

تشری : بیر حدیث مسلم وغیرہ میں بھی آئی ہے اس میں لفظ 'اللہ'' مکررتا کید کے لئے ہے یا تاسیس
کے لئے؟ اس کا دارو مدار ، اس پر ہے کہ اس حدیث کا مطلب کیا ہے تو اس بارے میں اختلاف ہے اور بہ
اختلاف کافی پُر انا ہے حاصل اس کا بہ ہے کہ بعض علماء وصوفیاء کرام کے یہاں فقط لفظ اللہ کا ور دکر نا بھی ذکر ہے
علی ہٰذا یہاں تکرار برائے تاسیس ہے بعنی اس میں ذکر کا ایک طریقہ بتلایا گیا ہے ، گراس کے برعس بعض علماء کی
دائے یہ ہے کہ حدیث کا مطلب تو ذکر اللہ بی ہے گر لفظ مفرد کے ساتھ نہیں بلکہ جملہ کی صورت میں مثلاً
سجان اللہ ، والحمد للد ، واللہ اکبروغیرہ ۔

امام نوویؓ نے شرح مسلم میں اس پر زیادہ بحث نہیں فر مائی ہے بلکہ اس کے بارے میں صرف چند باتیں تحریر فر مائی ہیں :

(١)مامعنى الحديث فهوان القيامة انماتقوم على شرار الخلق....

۲) میہ ہے کہ اللہ اللہ کا اعراب رفع ہے اور رفع کی صورت میں میرب ہوگا اور کسی محذوف کے ساتھ مرکب ہوگا جیسے ''یااللّٰہ''یا کلااللہ وغیرہ۔تد برالمستر شد

(٣)واعلم ان الروايات كلهامتفقة على تكريراسم الله تعالى في الروايتين وهكذافي جميع الاصول ،قال القاضي عياض وفي رواية ابن ابي جعفريقول : "لاإلة الاالله". والله اعلم (نووى شرح مسلم ص: ٨٨٠ ج: ١)

یعنی ابن ابی جعفری روایت حدیث الباب کی مفسر ہے ، اور مرادایمان باللہ ہے تاہم اذکار میں اہم قاعدہ یہ ہے کہ بعض اوقات جہرد کجمعی میں معاون ثابت ہوتا ہے اور بعض دفعہ اخفاء ، بھی اسم الذات سے دفع وساوس وجع خواطر میں زیادہ فائدہ محسوس ہوتا ہے اور بھی ذکرنی واثبات سے لہذا اصل تو پورا جملہ اور اخفاء ہے مگر جن اوقات میں فرکورہ فوائد محول ہوں تو واضح فائدے کی صورت میں اس طریق کو اختیار کرنے میں کوئی حرج نہیں ہوتا جا ہے فان الضروری یتقدر بقدد الضرورة ۔

صديث آخر: عن حذيفة بن اليمان قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "لاتقوم الساعة حتى يكون أسعَدَالناس بالدنيالكع بن لكع". (حديث حسن)

حضرت حذیفہ بن ممان رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قیامت اس وقت تک قائم نہ ہوگی جب تک کمینہ ولد کمینہ و نیاوی اعتبار سے خوش حال نہ بن جائے۔

لغات وتركیب مع التقریخ: فوله: اسعدالناس منصوب به بنابرخبریت فوله" لُكعُ بن لکع" مرفوع به که یکون کااسم مو خرب بهال نقدیم خبرمبالغه کے لئے به یعنی لوگول میں سب سے زیادہ خوش نصیب وہی ہوگا یعنی نصور کیا جائے گا اور شار کیا جائے گا جو دنیاوی مال ومتاع اور منصب واثر ورسوخ والا ہوگا خواہ وہ نسب واخلاق اور علم وعقل کے اعتبار سے کمتر ہی کیوں نہ ہو۔ لکع بضم الملام وفتح الکاف کمینا ورخی ذات کے آدمی کو کہا جاتا ہے، کم علم اور کم عقل والے پر بھی اطلاق ہوتا ہے یعنی دنیا داری اتنی بڑھ جائے گی کہ تمام ترخو بول کا محور مال ومتاع اور منصب ہوگا۔

حاصل مطلب بیہ ہے کہ سفلہ اور پنج ذات کے لوگ جب تک دنیادی معاملات ، سیاسات واختیارات وغیرہ کے متصرف وارباب اختیار نہیں بنیں کے قیامت اس وقت تک نہیں آئے گی کیونکہ جب تک حسب ونسب کے لوگ ارباب اختیار ہوں گے تب تک خسیس حرکات کا راستہ بند ہوگا اور جب گھٹیافتم کے لوگ او پر آجا کیں کے اور شریف لوگ بہاڑ ہوجا کیں گے تو بھر فحاشی وعریانی اور زناوغنا کا راج ہوگا غرض قلب الحقائق کے بعد ہی قیامت قائم ہوگی ، چنا نچہ ابن رجب حنبلی رحمہ اللہ نے حدیث جرئیل ودیگر احادیث کو یکجا کرنے کے بعد کھا ہے:"و ھذا کله من انقلاب الحقائق فی آخو الزمان و انعکاس الامور"۔

صحیح الحاکم میں مرفوع حدیث ہے:

"ان من اشراط الساعة ان يوضع الاخيار و ترفع الاشراد". (شرح الخمسين ص۵۵)
آج كل به پیش گوئی بھی صادق ہو چکی ہے كونكه اب معاشرے میں علماء كود ہشت گرداور فلمی اداكاروں
اور گلوكاروں اور دیگران پیشہ ورلوگوں كوجن كاتعلق عمو مأغلط والدین اور خنی ذات كے ساتھ ہوتا ہے امن كے دائی
اور قوم كا ہير وسم جھا اور گردانا جاتا ہے اوراب تو ہیجڑوں نے بھی مطالبہ كردیا كه آسمبلی كی سیٹوں میں ہما را بھی لینی جیسے اقلیتوں كا ہے ویہ مقرر ہونا جا ہے۔

صديث آخر: عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ": تَقِى الارض افلاذ كبدها اَمثَال الأسطوانة من الذهب والفضة قال: فيجئ سارق فيقول: "في هذا قُطِعَت يَدِى "ويبجئ القاطع فيقول" في هذا قَطَعتُ رحمى ثم يَدَعُونَه فلا يأخذون منه شيئا". (هذا حديث حسن غريب)

حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عند سے مردی ہے فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ زمین اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ زمین اندرونی) خزانے سونے چاندی کے بشکل ستونوں کے اگل دے گی ، آپ (صلی اللہ علیہ وسلم) نے فرمایا: پس چور آکر کہے گا کہ اس کے حصول میں میراہاتھ کا ٹا گیا ہے، اور قاتل (اس کے پاس) آکر کہے گا اس کی خاطر میں نے قبل کیا ہے اور صلہ رحی تو ڑنے والا آئے گا تو کہے گا کہ اس کے لئے میں نے قطع رحی کی ہے، پھروہ سب اس کوچھوڑ دیں گے اور اس میں سے پھر بھی نہیں لیں گے۔

لخات: قوله: "تقى" فى سى بمعنى خارج كرف اوراً كلف ك ب قوله: "افلاذً" بفتح الهزة فلذة كى جمع بوه كلزاجوله باكى مين كا تاكيا موراس لئ فرمايا "امشال الاسطوانة " يعنى جيس لمب لمبستون

ہوتے ہیں، سونے چاندی کے بیکڑے بھی ایسے لیے لیے ہوتگے، پھران کوز مین کے جگری طرف منسوب کرنے کی وجہ بیے کہ جس طرح جگری طرح جس بیٹی اندر ہوتا ہے ای طرح یہ معدنیات بھی زمین کے پیٹ میں ہوتی ہیں۔

تشرت : ۔ زمین کا مرکز جوسطے سے تقریباً ساڑھے چھ ہزار کلومیٹر کے فاصلے پر ہے مائع مواد پر شتمل ہے اس کی وجہ بیے کہ مرکز انتہائی گرم ہے اور در وجہ حرارت زیادہ ہونے کی وجہ سے کوئی چیز مجمد نہیں رہ سکتی چنا نچہ وہ حرارت ہروقت باہر نکلنے کے لئے کوشاں رہتی ہے جوعمو مالا وے کی شکل میں کمزور صول سے خارج ہوتی ہوتی ہے اس کے نتیج میں زلز لے بھی آتے ہیں اس طرح دونوں صورتوں میں لینی خواہ زلز لے کی جنبش ہوتی ہے اس کے نتیج میں زلز لے بھی آتے ہیں اس طرح دونوں صورتوں میں لینی خواہ زلز لے کی جنبش ہویالا وے کا دباؤ معد نیات کو باہر پھیکا جاتا ہے چونکہ قیامت کے قریب لاوے اور زلز لے کٹر ت سے رونما ہول گے۔ اس لئے سونے چاندی کا اخراج ہوگا۔ اور چونکہ زمین میں بھی رکیس ہوتی ہیں اس لئے ان کی صورت ستونوں کی طرح ہوگی۔

اس حدیث میں چور، قاتل اور قاطع سے مراد جنس بھی لے سکتے ہیں اور معین افراد بھی جنہوں نے خودیہ اکتال کئے ہوں اوران پا ہوں اوران کا سونا چاندی چھوڑ نادو وجہ سے ہوسکتا ہے کہ یا تو مال کی بہتات ہوگ اس لئے وہ ضرورت محسوں نہیں کریں گے یا پھرفتنوں کی شدت اتن زیادہ ہوگ کہ سونا چاندی یا دیگر نفتدی کسی کام کی نہ رہے گی کیونکہ بازاروں میں سوداسلف کے بجائے قتل وقال کا بازادگرم ہوگایا افراتفری کی وجہ سے ان لوگوں کواس سونا چاندی میں سے پچھ کا می کر لینے کا موقد نہیں ملے گا۔ (تدبر)

باب

يبدره علامتيں

"عن على بن ابى طالب قال قال رسول صلى الله عليه وسلم: اذا فَعَلَت أُمّتِى خمس عشرة خصلة خصل الله قبل: ماهى؟ يارسول الله قال: اذاكان المغنم دُوَلاً والامانة مَعْنَماً والزكاة مغرماً واطاع الرجلُ زوجته وعَقَّ أُمَّه وَبَرَّ صديقه وجَفَا أباه وارتفعت الاصوات في المساجدوكان زعيم القوم ارذلهم وأكرِم الرجلُ مخافة شره وشُرِبَتِ الخمورولُبس المحريرو أَتِّيخِلَتِ القِيانِ والمعازف والعَنَ اخرُهذه الامة اَوَّلَها، فليرتقبو اعتدذالك

ريحاً حمراء او خسفا اومسخا". (هذا حديث غريب)

حضرت علی رضی اللہ عنہ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جب میری امت پندرہ چیزوں کی عادت بنالے گی توان پرمصیبت (آزمائش) نازل ہوگی ،عرض کیا گیا ہے اللہ کے رسول! وہ اشیاء کیا ہیں؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: جب مال غنیمت کواپی دولت سمجھاجائے اورامانت کوغنیمت (یعنی اس میں تصرف اپنا تق) سمجھاجانے گے اورز کو ق کوتا وان سمجھاجائے اورآدی اپنی بیوی کی اطاعت اور ماں کی نافرمانی کرنے گے اوراپ دوست سے نیک سلوک کرے اور پرشفیق پرستم کرے (یعنی دوری افقیار کرے جوموجب ظلم وستم ہے) اور محبدوں میں آوازیں بلندہونے گیس اورقوم کا رذیل آدی ان کا فرمہ دار (برا) بن جائے اورآدی کا اکرام اس کے شرکے خوف کی بناء پر کیا جائے اور (بکشرت) شراب پی جائے اور ریشم (کالباس) پہنا جائے اورگانے والیوں کے رکھنے (یعنی پالنے اور حوصلہ افزائی کرنے یا تخواہ پر جائے اور ریشم (کالباس) پہنا جائے اورگانے والیوں کے رکھنے (یعنی پالنے اور حوصلہ افزائی کرنے یا تخواہ پر کھنے کا کارواج ہوجائے اور موسیقی کے آلات اختیار کئے جائیں اوراس امت کے آخر دالے اس کے آگوں پر کھن وطعن کرنے گیس تو چاہئے کہ اس وقت وہ انتظار کریں شرخ آندھی کا یا وہنس جانے کا یا شکلوں کے گڑ جانے کی وظعن کرنے گیس تو چاہئے کہ اس وقت وہ انتظار کریں شرخ آندھی کا یا وہنس جانے کا یا شکلوں کے گڑ جانے کا۔

لغات: قوله: "خوله المحمد والله مالمشد وقاى نزل قوله: "البلاء" أزمائش مصيبت اوررخ وثم مراديس قوله: "البلاء" أزمائش مصيبت اوررخ وثم مراديس قوله: "البلاء" أزمائش مصيبت اوررخ وثم الحقاد لئة وله: "كولا أبيضم الدال وفخ الواوجوجيز باتقول مين فتقل موتى رئتى ہے چنانچه پيے بھی باتھ در باتھ ادلة بين اس لئے ان كودولت كہتے ہيں قوله: "مغرماً" وہ چيز جولازم نه مواور ذع پر جائے ، جرمانے اور تا وال جرنے كو كہتے ہيں قوله: "جولانم نه مواور ذع پر جائے ، جرمانے اور تا وال بحرنے كو كہتے ہيں قوله: "خوجه بين مونك تو كو كہتے ہيں جونك قوم كامر داران كاذم دار ہوتا ہاس لئے اسے دعم كہتے ميں قوله: "القينات" قيم بنتي القاف كى جمع ہے قيان بروزن قيام بھى جمع آتى ہے باندى كو كہتے ہيں گرزياده تيں ۔ قوله: "المقينات" قيم في القاف كى جمع ہے قيان بروزن قيام بھى جمع آتى ہے باندى كو كہتے ہيں گرزياده تراستعال مُغنّد يعنى كانے والى لونڈى ميں ہوتا ہے۔ قبوله: "المعازف" بفتح الميم وكر الزاء معزف بروزن منراعزف كى جمع ہے، باج وديكر آلات خواكم ہم الات كو كہتے ہيں چرمعازف وہ آلات كہلاتے ہيں جو ہاتھ سے بجائے جانے والے آلات كو كہتے ہيں جير جير بانى الكوكب الدرى۔ جائيں جب بانى الكوكب الدرى۔ تشرق كے: سير عديث فرج بن فضاله كى وجہ سے بظام ضعيف ہے جيسا كه ترفرى نے اخريس تقرق کے: سير عدير فرج بے بین فضاله كى وجہ سے بظام ضعيف ہے جيسا كه ترفرى نے اخريس تقرق کے: سيرے ديث فرح بن فضاله كى وجہ سے بظام ضعيف ہے جيسا كه ترفرى نے اخريس تقرق کے: سيرے ديث فرح بن فضاله كى وجہ سے بظام ضعيف ہے جيسا كه ترفرى نے اخريس تقرق کے: سيرے ديث فرح بن فضاله كى وجہ سے بظام ضعيف ہے جيسا كه ترفرى نے اخريس تقرق کے: سيرے ديث فرح بن فضاله كى وجہ سے بظام ضعيف ہے جيسا كه ترفرى نے اخريس تقرق کے اسے دیم کی تو اللے اللہ کو کھوں کے اللہ کے دورک کے اللے کو کھوں کے دورک کے اللہ کے دورک کے اللہ کی دورک کے د

فرمائی ہے تا ہم اس مضمون کی اورروایات بھی واردہوئی ہیں جیسا کہ باب کی دوسری اور تیسری حدیث مع کی بیشی الفاظ کے ہیں۔

مطلب یہ ہے کہ مندرجہ بالا امورا تنافروغ پائیں کہ رواج اور معاشرے کا حصہ بن جائے تو پھر علامات قیامت کا انظار کیا جانا چاہئے لین پھرامت کی خیرو بھلائی کی امید منقطع ہوجائے گی اور پورا کا پورا دھانچ خراب ہونے کی وجہ سے قابل علاج نہیں رہے گااس لئے موت عالَم بقینی اور قریب ہوجائے گی ان امور میں سے ایک مال غنیمت پر حکام اور دولت مندلوگوں کا قبضہ ہے حالانکہ غنیمت میں دیگر کا بھی حق ہوتا ہے۔

دوم: امانت میں خیانت کرنے کواپناحق شار کیاجانے لگے گاجیسے آج کل ہوتا ہے اور بہت سارے حرام کاموں کواپناذ اتی حق شار کیاجا تاہے آپ کسی بھی محکمے کے ارباب اختیار پرنظر ڈالیس وہ لوگوں کی املاک جوان کے پاس امانتیں ہیں کس طرح ذاتی حق سجھ کران میں تصرف کرتے ہیں۔

سوم: زکوۃ کواپنے او پڑیکس بجھ کریا تو ادائییں کریں گے اورا گر کسی طرح مجبور بھی ہوجا کیں تو ثو اب کی نیت نے بہن بلکہ کسی مفادات کے تحت ادا کریں گے جیسے ایک غیر ضروری بوجھ کوادا کیا جاتا ہے۔

چہارم: بیوی کی اطاعت یعنی ہرمعالمے میں اسے حاکم کی طرح مان کراس کی فر ما نبر داری ہوگی جوقلب لحقیقت ہے۔

۵: ماں کی نافر مانی۔ ۲: دوست کے ساتھ غیرا خلاقی طور پر قرب، خاص کرباپ کے مقابلے میں۔ ۷: باپ پر شتم اور بُر اسلوک گویا چوتھا و پانچواں اور چھٹا وسا تو اں ایک دوسر ہے کے تناظر و تقابل کی وجہ سے ہر دواولین مذموم ہو گئے کہ بیوی کو ماں پر اور دوست کو باپ پر برتری دے دی۔

۸ بمسجدوں میں شور کرنا اورز ورسے بولنا ،اور بیتب ہی ہوگا جب مسجد کے تقدس کا خیال ختم ہوجائے گا۔ ملاعلی قاریؓ فرماتے ہیں :

"وهذامما كثير في هذا الزمان وقدنص بعض علما ثنايعني الحنفية : بأن رفع الصوت في المسجدولوبالذكر حرام". كذافي التحفة عن المرقات.

المستر شدعرض کرتاہے کہ آج کل معجدوں میں جلنے ہوتے ہیں اوران میں انتہائی تیزلاؤڈسپیکر استعمال ہوتے ہیں چندمقتذیوں کے لئے نمازیں لاؤڈسپیکر پر پڑھائی جاتی ہے تاہم وعظ ونصیحت میں آواز بلند ہوجائے توحسب ضرورت جائز ہے۔ ٩: لوگوں كاسر دارر ذيل وعكمه آ دى موگا جيساً كەسابقد باب ميں گذراہے۔

۱: آدمی کا اکرام اس کے شرسے بیخے کے لئے کیا جائے گا آج کل اس کاظہور بھی ہوگیاہے عام بدمعاشوں سے لے کر پولیس افیسروں اور بڑے بڑے سیاس لیڈروں کی مدح کے ترانے گائے جاتے ہیں۔ ۱۱: شراب بیناعام ہوگا یعنی حرمت کی پرواہ کئے بغیریا نام تبدیل کر کے خواہش پوری کرنے کے لئے جو بھی ناحائز راستہ ہوگا اسے اینا یا جائے گا۔

۱۲: ریشی لباس ندکورہ بالا وجہوں کی بناء پرمر دیہنیں گے۔

۱۳ انمنونیہ عورتیں جن کوآج کل گلوکارکہاجا تا ہے اور (۱۲) موسیقی کے آلات دونوں عام ہوجا کیں گے آج آپ د کیے رہے ہیں کہ فلمی صنعت ہویاریڈیواورٹی وی اوراسٹیج ڈراموں کے پروگرام ہوں الیی عورتوں کو بھاری رقوم دے کران کو بڑی بڑی تخواہوں پراورفیسوں پردکھاجا تا ہے بلکہ باعزت طریقے سے دعوت دی جاتی ہے جس سے اس شعبے کوغیر معمولی ترقی مل رہی ہے۔

10: اسلاف پرلعن طعن کرنے والوں کی بھی آج کوئی کی نہیں پہلے صرف شیعہ تھے جو خلفاء ثلاثہ کو قابض اور غاصب کہتے حضرت ام المؤمنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا پر بہتان بائد ہے جبکہ آج کل روش خیال کسی کومعاف نہیں کرتے اور بعض غالی تئم کے غیر مقلدین امام صاحب اور دیگر فقہائے کرام کو بھی نشانۂ سب وشتم بناتے ہیں،ان سب کے جواب میں فرمایا: "فلیو تقبو االلے"۔

ان لوگوں پر جوآندھی آئے گی اس کارنگ سُرخ ہوگا جوعذاب کی نشانی ہوگی حسف اور سنخ کے بارے میں باب ماجاء فی الخسف میں گذراہے فلیراجع۔

علادہ ازیں منے کاان گنا ہوں سے گہر اتعلق ہے کہ جب باطن بگڑ جائے گا تو اس کااثر ظاہر پر رونما ہوگا اس طرح گناہ کے مناسب حال پر چبرے بگڑ جائیں گے۔

اس باب میں دوسری حدیث حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مرفوعاً مردی ہے اس کامفہوم وضمون میں بہلی حدیث کی طرح ہے تا ہم اس میں دوجملوں کا اضافہ ہے ایک میرکہ 'و تبعلم لغیر اللہ بن '' بیٹی علم شریعت کو دنیا کے حاصل کیا جائے گا، یہ بھی خواہشات کی بہتات کا اثر ہے کہ دین کو دنیائے حقیر کے حصول میں لگا کمیں گے۔

المستر شدعرض كرتائي كه جب صدر پاكتان اور چيف آرى ضياء الحق فے وفاق المدارس العربيد

پاکتان کے ذمہ داران کی کوشٹوں سے مدرسوں کی اسانید سرکاری سطی پائیم اے کی مساوی قرار دیں تو مدارس میں طلبہ کی تعداد غیر معمولی طور پر بڑھ گی اگران میں ایسے طلبہ ہوں جو ہوا کا رُخ دیکھتے ہوں تو وہ اس حدیث سے اپنی اصلاح کریں۔ دوسر ا"و آیسات تسابع کے خطام بالِ قطع مسلکہ فستابع "جیسے بوسیدہ ہار ہواس کی لڑی لوٹ جانے سے اس کے موتی لگا تارگرنے لگیں، نظام بکسرالنون ہار، بال ، بمعنی پُر انے کے اور سلک بوٹ جانے سے اس کے موتی لگا تارگرنے لگیں، نظام بکسرالنون ہار، بال ، بمعنی پُر انے کے اور سلک بکسرالسین وسکون اللا ملزی اوروہ دھا گاجس میں موتی وغیرہ پروتے ہیں یعنی لڑی ٹوٹ بی جس طرح پ در پے موتی گرتے ہیں اس طرح ان علامات میں تیزی آئے گی ،علاوہ ازیں اس روایت میں زلزلوں کی کڑت اور پھروں کی بارش کی بھی پیش گوئی کی گئے ہے جوظیم پر حقیر کو ترجے دینے والوں پر برسیں گی۔

باب ماجاء في قول النبي مَا لِينَامُ : بُعِثْتُ اناو الساعة كَهَاتَينِ

میں قیامت کے ساتھ مبعوث ہوا ہوں

"عن المُستَورد بن شدادالفِهرى رواه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: بُعِثُ النّافى نفس الساعة فَسَبَقتُه اكماسبقت هذِه لِاصبَعيه السبابة والوُسطى". (هذا حديث غريب)

حضرت مستوردرضی الله عنه (بضم الميم وسكون السين وفتح الناء وكسر الراء) آمخضرت سلى الله عليه وسلم سے روایت كرتے ہیں كه آپ سلى الله علیه وسلم نے فرمایا كه میں قیامت كى آمد كے ساتھ مبعوث ہوا ہوں تا ہم میں کچھ پہلے آگیااس سے جیسے بیراس سے آگے ہے اپنی دوافگیوں سبابہ اور درمیانی كی طرف اشارہ كرتے ہوئے فرمایا۔

تشری : قوله: "فی نفس المساعة النع" بفتح النون والفائفس کے کی معنی ہیں از ال جمله ایک "سانس" بھی ہے گریہاں مراد قرب اور ظہور ہے چونکہ آپ صلی الله علیہ وسلم آخری نبی اور رسول ہیں اس لئے آپ صلی الله علیہ وسلم کا آنا ہی قیامت کو مستازم ہے پھر لازم وطزوم کے درمیان کوئی واسط نہیں ہوتا اس لئے آپ صلی الله علیہ وسلم نے درمیانی اور اشارے کی افکلیوں سے تشبیہ دے کر فرمایا کہ جیسے بید دنوں متصل ہیں اسی طرح میرے اور قیامت کا حال ہے لھذا آپ صلی الله علیہ وسلم کے بعد کوئی نبی مبعوث نہیں ہوگا جہاں تک حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا تعلق ہے تو وہ آپ صلی الله علیہ وسلم سے پہلے مبعوث ہوئے تھے محرعلا مات کری کی کے وقت ان علیہ السلام کا تعلق ہے تو وہ آپ صلی الله علیہ وسلم سے پہلے مبعوث ہوئے تھے محرعلا مات کری کی کے وقت ان

کانزول ہوگاجو شے دیگر ہے، غرض یہال نفی نبوت جدیدہ اور قرب قیامت کابیان ہے بعض حضرات نے کہا ہے کہ بہتشبیہ مقدار میں ہے کہ سبابہ وسطی سے نصف سُبع کے بقدر چھوٹی ہے اس طرح آپ صلی الله علیہ وسلم اور قیامت کے درمیان نصفِ سُبع کی نسبت ہے گرابن العربی نے عارضہ میں اس تو جیکورد کیا ہے لہذا کہا تو جیہ ہی افضل ہے، کیونکہ دنیا کی بقاء کا وقت معلوم نہیں قیامت کاعلم اللہ عزوجل نے صرف اینے یاس رکھا ہے۔

باب کی دوسری حدیث حضرت انس رضی البندعنہ سے مروی ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ارشاد فر مایا: "بُعِث اناو المساعة" اس میں الساعة کومنصوب پڑھنا فضل ہے تا کہ واو بمعنی مع کی وجہ سے مفعول معد بن جائے اور بعثت کی نسبت قیامت کی طرف نہ آئے ،اس حدیث کی وضاحت جوراوی سے منقول ہے "فسماف ضل احداه ماعلی الا نحوی " یعنی جتنی زیادتی وسطی کو حاصل ہے سبابہ پر اتن ہی سبقت آپ صلی الله علیہ وسلم کو حاصل ہے تیامت پر یعنی نصف سُبع ، تو او پر گذر گیا کہ راوی کا یہ مطلب بیان کرنا حدیث کی مرجوح شرح ہے۔ (حداحدیث حسن صحح کی مرجوح شرح ہے۔ (حداحدیث حسن صحح کی صورت کے۔ (حداحدیث حسن صحح کی ا

باب ماجاء في قتال التُرك

غزوة ترك

عن ابسى هسريسرة عن النبسى صلى الله عليه وسلم قال: لاتقوم الساعة حتى تقاتلوا قوماً كَانَّ وُجوههم المَجَانُّ المُطرَقة". (حسن صحيح)

حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا قیامت اس وقت تک ت<u>ک قائم نہیں ہو</u>گی جب تک تم الیی قوم سے نہ لڑوجن کے جوتے بالوں کے ہوں گے اور قیامت اس وقت تک قائم نہیں ہوگی یہاں تک کہتم قال کروگے ایسی قوم سے جن کے چہرے ڈھال کی طرح بتہ بُنِتہ ہوں گے۔

لغات: قوله: "المجان" بفتح الجم وتشديدالنون جمع بحن ہے سپر اور ڈھال کو کہتے ہیں۔ قوله: "المصطوقة" بضم المم وفتح الراءته بتد کو کہتے ہیں یعنی پُر گوشت ہوں گے پس ڈھال کے ساتھ تثبیہ گولائی میں ہے اور حد بتہ کہنا باعتبار پُر گوشت اور بخت ہونے کے ہے۔ بخاری شریف میں چھوٹی آئھوں اور چپٹی ناکوں کا بھی ذکر ہے۔ (بخاری ص: ۱۰۹ ج: ۱)

تعری : مسلم کی روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ حدیث ہذائیں جن روقو موں کا ذکر ہے ان سے مرادترک ہیں ویکھنے مسلم ج ۲۳ سام ۱۹۹۸ پر ایک متعددروایات ہیں مثلاً "لات قسو م السساعة حتیٰ یہ قات المسلمون الترک قوما وجو ههم کالمحان المعطوقة یلبسوئ الشعر ویمشون فی الشعر" بالوں سے مرادیہ بھی ہو گئی ہو اور خال ہو کہ ان کے جوتے (بوٹ) ایسے چڑوں سے بنے ہوئے ہوں گجن کود باغت نددی گئی ہو ، اور نظا ہری معن بھی لے سکتے ہیں کہ کمل بالوں کے بنے ہوئے ہوں گاس صورت میں یہ بھی کمکن ہے کہ انال پورپ اور ترکی ال کرمسلمانوں اور خصوصاً عربوں کے خلاف متحد ہوکر جنگ الای پس اہل یورپ بالوں والے ہوں گے اور ترکی گول ، پُرگوشت چہوں ، چھوٹی تجھوٹی تھوں اور چپٹی ناکوں والے ہوں گے ، نیز ترکیوں سے مراد صرف ترکی کے باشند ہے ہی نہیں لینے چاہئے بلکہ ترکی انسل سب لوگ اس میں شامل ہو سکتے ہیں جو ترکی سے جاپان تک پوری پئی کے لوگ ہیں جن میں وسط ایشیائی مما لک ، چین ، مگولیا ، دونوں کوریا ، جاپان اور تھائی لینڈ تمام مما لک کے لوگ ہیں ، اگر مخصوص ترکی کے لوگ ہوں تو یہ بھی بعیر نہیں کہ کوریا ، جاپان اور تھائی لینڈ تمام مما لک کے لوگ شامل ہیں ، اگر مخصوص ترکی کے لوگ ہوں تو یہ بھی بعیر نہیں کہ کوریا ، جاپان اور تھائی لینڈ تمام مما لک کے لوگ شامل ہیں ، اگر مخصوص ترکی کے لوگ ہوں تو یہ بھی بعیر نہیں کہ کوریا ، جاپان اور تھائی لینڈ تمام مما لک کے لوگ شامل ہیں ، اگر مخصوص ترکی کے لوگ ہوں تو یہ بھی بھی ہیں کہ میں اس ان تا ترک کے بعد ترکی یورپ کے قرب اور عربوں سے نفر سے کی طرف مسلسل پر صور ہے ہیں ۔ اس تو جیس سے میں ایک بی معرکہ ہوگا۔

لیکن اگر صدیث باب میں دونوں قو موں کوالگ الگ لے لیاجائے تو جنگیں دومانی پڑیں گی ایک کوتر کوں (ترکی النسل) کے ساتھ جبکہ دوم کے بارے میں ظاہر یہ ہے کہ یورپوں کے ساتھ ہوگی جو بالوں کی جیکٹ،لباس اور جوتے استعمال کرتے ہیں ، ماہرین کے مطابق یہ دنیا کی تیسری جنگ عظیم ہوگی۔

پھرظا ہر یہ ہے کہ یہ جنگ حضرت مہدیؓ کے وقت میں ہوگی جس سے پہلے کئی چھوٹی چھوٹی جنگیں بھی ہوں گی، جو چھسات سال تک جاری رہیں گی۔واللہ اعلم وعلمہ اتم

باب ماجاء اذاذهب كسرى فلاكسرى بعده

جب کسری ہلاک ہوجائے گاتواس کے بعد کوئی کسری نہوگا

"عسن ابى هسريسرة قبال قبال رسول الله صلى الله عليه وسلم : اذاهلك كِسرى فلاكسرى بعده واذا هلك قيصرفلاقيصر بعده والذى نفسى بيده لَتُنفَقَن كنوزهمافى سبيل الله". (حسن صحيح)

حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جب کسری ہلاک ہوجائے گا تواس کے بعد کوئی کسری نہ ہوگا اور جب قیصر ہلاک ہوجائے گا تواس کے بعد کوئی قیصر نہ ہوگا ، اور اس ذات کی قتم جس کے قبضے میں میری جان ہے تم لامحالہ ان کے خزانے اللہ کی راہ میں خرچ کروگے۔

تشریخ: کری بکسرالکاف والف مقصورہ فارس کے بادشاہ کالقب تھا اور قیصررومیوں کے بادشاہ کالقب تھا۔ چنا نچہ اس حدیث میں بیان کردہ پیش گوئی کے مطابق پرویز کی حکومت تو کھمل ختم ہوگئی آگر چہ پرویز کے بعد مزاحت کرنے والے سے مگروہ بھی بالآخر نیست و نابود ہو گئے جیسا کہ حکومتوں اور قو موں کے مٹنے کا عام طریقہ ہے کہ دھیرے دھیرے ختم ہوجاتی ہیں اور جہاں تک رومیوں کا تعلق ہے تو وہ اس شان و شوکت کے ساتھ باتی ندر ہے جومسلمانوں کو چینے کر سکیس، پس خلاصہ بیہوا کہ یہاں ان کے دبد بے کی نفی مراد ہے کیونکہ رومیوں کی بقاء کی بھی احاد بیٹ متی احاد بیٹ میں احاد بیٹ میں احاد بیٹ میں احاد بیٹ میں صراحتا مذکور ہے، چونکہ پرویز نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے متوب گرای کو چھاڑ دیا تھا اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کی حکومت کے مگڑ ہے وہ تو کھمل ختم ہوا۔ جبکہ قیصر (ہرقل) نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے متاز امراکی میں خرج کرنے دیے وہ مکمل تباہی سے محفوظ مسلی اللہ علیہ وسلم کے اور وہ کی راہ میں خرج کرتے دیے۔

اس حدیث کا ایک مطلب بی بھی بیان کیا جاتا ہے کہ ان کی حکومتیں عراق اور شام میں دوبارہ نہیں آئیں گی جوصحا بہ کرام کے لئے خوش خبری تھی کہ اسلام لانے کی وجہ سے جوخطرات تجارت کے حوالے سے لاحق ہوگئے تھے وہاں جاکرفارس اور روم والے ہمیں تنگ کریں گے تو آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے ان کوسلی دی۔

باب لاتقوم الساعة حتى تخرج نارمن قِبَلِ الحجاز

قیامت اس وقت تک نہیں آئے گی جب تک جانب سے آگ نہ نکلے

"عن سالم بن عبدالله عن ابيه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ستخرج نار من حصر مَوت اومن نحوب حرحضر موت قبل يوم القيامة تحشر الناس، قالو ايارسول الله فما تأمرنا؟ فقال عليكم بالشام". (حسن صحيح)

حضرت سالم است والد حضرت عبدالله بن عمرضی الله عنها سے دوایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا:
رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا ہے کہ عنقریب ایک آگ قبل از قیامت حضرموت سے یا فرمایا کہ بحر حضرموت کی جانب سے نکلے گی جولوگوں کو جمع کرے گی ،صحابہ کرام ٹے نے عرض کیاا ہے اللہ کے رسول! پس آپ بہمیں کیا تھم دیتے ہیں؟ (یعنی خروج تار کے وقت) آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا تم پرشام چلے جانالازم ہے۔
تشریح: ۔ "حضر موت"اس میں ح، ر،م اورت مفتوح اور باقی دولیعی ض اور واوسا کن ہیں ، یمن کے ایک علاقے اور شہرکا نام ہے ہیدوہ ہی آگ ہے جس کا تذکرہ پہلے" باب ماجاء فی الخص "میں گذراہے جوعدن کے کایک علاقے اور شہرکا نام ہے ہیوہ ہی آگ ہے جس کا تذکرہ پہلے" باب ماجاء فی الخص "میں گذراہے جوعدن کے سے نکلے گی چونکہ عدن کے جنوب مغرب میں ایک جزیرے کا نام ہے لہذا اصلایہ آگ عدن کے قعر (جڑ) سے نکلے گی اور براستہ حضر موت اور بچاز مقدس گذر کرشام تک لوگوں کو ہا نکے گی امام ترفی کی نے ترجمہ قعر (جڑ) سے نکلے گی اور براستہ حضر موت اور بچاز مقدس گذر کرشام تک لوگوں کو ہا نکے گی امام ترفی کی نے ترجمہ الباب میں ای تطبیق کی طرف اشارہ فرمایا ہے جو باسانی سمجھاجا سکتا ہے۔شام کی خصوصیت بھی وہاں بیان کی گئی

باب ماجاء لاتقوم الساعة حتى يخرج كَذَّابون

قیامت اس وقت تک نبیس آئے گی جب تک کہ نبوت کے جھوٹے دعوید ارنہیں لکلیں گے عن ابی هریسرة قبال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم: لاتقوم الساعة حتی یَنُبَعِث کذّابون دجّالون قریب من ثلاثین کلهم یزعم انه رسول الله" (حسن صحیح)

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا قیامت قائم نہیں ہوگی یہاں تک کہ برآ مدہوجا کیں تمیں کے قریب بخت دروغ گواور سخت فریب کارسب دعوی کریں گے کہ وہ اللہ کے رسول ہیں۔

لغات: قوله "ينبعث" ابعاث كمعنى جا كنه، روانه بونه ، زنده بونه، تيز چلنه اورائه كا كنه كه الغات كمعنى جا كنه، روانه بون ، زنده بون ، تيز چلنه اورائه كا كنه بين يهال يهي آخرى معنى مراد بهاى يخرج قوله: "كذّابون" يهاور "د بجالون" دونول مبالغ ك صيغ بين الى پيل كى تاكيد معنوى به دجل كم معنى خلط كرنے ، فريب اور جھوٹ كة بين ، د جال اصل مين كو بر برسونے كے پائى چڑھانے كو كہتے بين يعنى ملتم ساز قول كو بين يعنى ملتم ساز قول كو بين يائى چڑھان د قامد كو كھتے بين اور نشس قول كو بھى يہال مراد جھوٹاد وى بے۔

تشری : دجال اصل میں می کذ اب کالقب ہے جب مطلق بولا جائے تو وہی مرادہوتا ہے گرجیسا کہ پہلے عرض کیا جاچا ہے کہ جب کوئی برداواقعہ ہوتا ہے تواس سے پہلے اس کے آٹاررونما ہونا شروع ہوجاتے ہیں۔ چنا نچہ دجال اعظم سے قبل نہ تجھوٹے چھوٹے دجال پیدا ہوں گے جو نبوت کے دعویدار ہوں گے ان میں سے تین تو آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی حیات طیبہ ہی میں ظاہر ہوئے تھا ایک اسود وعشی اور دوم مسیلمہ کذا ب، اسود کو فیروز نے تل کیا تھا جس کی اطلاع آپ سلی اللہ علیہ وسلم کو بذر بعہ وہی قاصد آنے سے پہلے ہوگئ تھی جب قاصد پہنچا تو آپ سلی اللہ علیہ وسلم کا وصال ہو چکا تھا جبکہ مسیلمہ جنگ میامہ میں مارا گیا تھا یہ حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کے دور خلافت کے ابتدائی ایا می بات ہے، جبکہ تیسر افتا صطلبحہ اسدی بھی مدی نبوت ہوگیا تھا گروہ عہدفاروتی میں تو بہ تا تب ہوگیا تھا۔ غرض دجال اعظم تک یہ تعداد پوری ہوجائے گی بعض روایات میں تعداد سائیس آئی ہے جن میں چارعور تیں ہوں گی لہذا باب کی زیر بحث روایت آگی روایت کے لئے شارح ہوگی تعداد سائیس آئی ہے جن میں چارعور تیں ہوں گی لہذا باب کی زیر بحث روایت آگی روایت کے لئے شارح ہوگی بین تقریباً تمیں، جہاں تک دجال اکم کی بات ہے تو وہ دعوائے الو جست بھی کرے گا۔ کمائیا تی فی باب

بعض روایات میں ستر کی تعداد آئی ہے مگروہ روایت اولاً توضیح نہیں یا پھروہ چھوٹے لینی تیسرے درجے کے دجال ہوں گے پس کہاجائے گا کہ سب سے بڑادجال تووہ ہوگا جو بالکل آخر میں آئے گا اورجس کو حضرت عیسیٰ علیہ السلام قبل کریں گے، دوسرے درجے کے وہ ہوں گے جوتقریباً تمیں ہوں گے جبکہ تیسرے درجے والے تیس سے زیادہ ہوں گے جبکہ تیسرے درجے والے تیس سے زیادہ ہوں گے جن کا دعوی نسبتاً کم درجے کا ہوگا مثلاً مہدی اورمجد دوغیرہ کا دعویٰ۔

صديت آخر: "عن ثوبان قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لاتقوم الساعة حتى تلحق قبائل من امتى بالمشركين وحتى يعبُدُو االاوثان، وانه سيكون في امتى ثلاثون كذّابون كلهم يزعم انه نبى واناخاتم النبيّن لانبى بعدى". (صحيح)

حضرت ثوبان رضی الله عنه فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا ہے کہ قیامت اس وقت تک قائم نہیں ہوگی یہاں تک کہ میری امت کے بہت سے قبائل مشرکین کے ساتھ ل جا کیں گے، اور حتی کہ لوگ (قبائل والے) بتوں کی عبادت کرنے لگ جا کیں گے۔ اور یہ کہ عنقریب میری امت میں تمیں انتہائی جھوٹے نکلیں گے ہرایک وعوی کرے گا کہ وہ نبی ہے حالانکہ میں تمام انبیاء میں آخری نبی ہوں میرے بعد کوئی نبی ہیں ہے۔

تشریخ: ۔ بیفتنهٔ ارتدادی طرف بھی اشارہ ہوسکتاہے جوآب صلی الله علیہ وسلم کے وصال سے متصل

رونما ہوا تھا، مگر ظاہریہ ہے کہ میہ پیش گوئی حضرت عیسی علیہ السلام کے نزول اور وفات کے بعد کے حالات کے بارے میں ہوگا۔ بارے میں ہے کہ لوگ تیزی سے مرتد ہول گے اور بتوں کی عبادت کریں گے انہی پر قیامت قائم ہوگا۔

قوله: "انساخاتم النبيين" خاتم بكسرالآء وتحها دونوں پڑھنا جائز ہے تاہم مشہور فقہ ہے، يہ كہنے كى ضرورت اس لئے محسوں كى گئ تا كہ كى كوان كذابوں كى چرب زبانى سے بچ كا كمان پيدا نہ ہو، جيسا كہ بہت سے لوگ قاديانى كے جال وبال بيں پھنس كئے اگران جا ہلوں كو آنخضرت سلى الله عليه وسلم كاس فرمان اور ختم نبوت بریقین وایمان ہوتا تو بھى بہت سارے دلائل پریقین وایمان ہوتا تو بھى بہت سارے دلائل ہيں اور امت كامت فقة عقيدہ ہے گريم وقعداس كے بيان كانبيں۔

بعض علاء فرماتے ہیں کہ غلام احمد قادیانی تک مدعیان نبوت کی تعداد ستائیس تک جا پیٹی ہے، اب درکھنا یہ ہے کہ قادیانی خاتم استنہین المصلین ثابت ہوتا ہے بااس کے کچھ اور بھائی بھی آئیں گے جوگندی میراث کے وارث ہونگے اگروہ دجال اکبرسے پہلے کے سلسلے کی آخری کڑی ہے تو پھر مطلب یہ ہے کہ دجال اکبراٹ میں استریب ہے۔

باب ماجاء في ثَقيف كذّاب ومُبير

بنوثقیف میں ایک جھوٹا اور ایک سفاک ہے

"عن ابن عمرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: في ثقيف كذّاب ومبير" (حسن غريب)...ويقال الكذّاب المختاربن ابي عبيدو المبير الحجاج بن يوسف....عن هِشام بن حسان قال أحصو اماقتل الحجاج صَبراً فبلغ مائة الف وعشرين الف قتيل".

حضرت ابن عمررضی الله عنبماسے روایت ہے فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ ثقیف میں ایک بہت جموٹا اور ایک سفاک ہوگا .. کہا جاتا ہے کہ جموٹا مختار ہے اور سفاک تجاج ہے، ہشام نے کہا کہ گوجاج نے جوصرف نہتے اور بے گناہوں کوئل کیا ہے ان کی تعدادا یک لا کھیس ہزار ہے۔

لغات: قسولسه: "مبيسر" بضم أميم وكسرالباءوه خض جوَّل وسفاكي مِن بهت مبالغه كرتا هو۔ قوله: "صبراً" بفتح الصادو يكون الباء جو خص كسى لرائى اوغلطى كے بغير مارا جائے۔ تشری : شقیف طائف کے ایک قبیلے کانام ہے جوابی جداعلیٰ کی طرف منسوب ہے یہ روایت اگر چہ عبداللہ بن عصم کی وجہ سے سندا کم روری ہے مگر دوسرے طرق کی بناء پرامام ترفدیؓ نے اس کوشن کہاہے، اسی وجہ سے حضرت اساء نے جاج سے کہا تھا: "سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ و سلم یقول: فہاہے، اسی وجہ سے حضرت اساء نے جاج سے کہا تھا: "سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ و سلم یقول: فسی شقیف کے ذاب و مبیر فیانت المبیر" اس پر جاج نے غلط تاویل کر کے جواب دیا کہ میں منافقین کامیر یعنی قاتل ہوں۔ یہ اپناعیب چھپانے کی غرض سے کہا تھا، جاج بی بن یوسف کے ظلم کی داستانیں مشہور ہیں اس لئے وہ ظلم میں ضرب المثل بن گیا، حضرت شاہ صاحب العرف میں فرماتے ہیں: "ویدوی عن احمد بن حنبل ان حجاجا کافر"۔ ابن العربی "عارضہ میں تحریفرماتے ہیں:

"والمحماج ظالم متعد ملعون على لسان النبي عليه السلام من طرق، خارج عن الاسلام عندي باستخفافه بالصحابة كابن عمر وانس".

شایدامام احمد کا مطلب بھی یہی ہو کہ وہ صحابہ کرام کی تو ہین کی وجہ سے کا فر ہواتھا۔ واللہ اعلم شایدامام احمد کا مطلب بھی یہی ہو کہ وہ صحابہ کرام کی تو ہین کی وجہ سے کا دوسرا آ دمی مختار بن الی عبید ہے اس کی ولا دت ہجرت کے سال ہوئی تھی گرصحبت ثابت نہیں اس کے والد اجل صحابہ میں سے تھے۔ اور اس کی بہن صفیہ بنت ابی عبید حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہ اکی بیوی تھیں جو بروی زاہدہ خاتون تھیں ، مختار نے حضرت حسین رضی اللہ عنہ کے قصاص اور بدلے کا نعرہ بلند کر کے حب مال وجاہ کی بناء پر شہرت ودولت بھی پائی گرحقیقت میں وہ جھوٹا ہی تھا حتی کہ وہ حضرت جریل سے ملاقات کا ڈھونگ بھی رچاتا۔ اور بدباطن کو چھیاتا۔

باب ماجاء في القرن الثالث

قرن سوئم كابيان

"عن عمران بن حصين قال سمعت رسول الأصلى الأعليه وسلم يقول: خيرالناس قرنى ،ثم الذين يلونهم ،ثم الذين يلونهم ،ثم يأتى من بعدهم قوم يتسمّنون ويحبّون السِمَنَ يعطون الشهادة قبل ان يسألوها".

حضرت عمران بن حمین رضی الله عند سے روایت ہے فرماتے ہیں کہ میں نے رسول الله علی الله علیہ وسلم سے بیفر ماتے ہوئے سُنا ہے کہ سب سے اچھے لوگ میرے زمانہ کے ہیں پھروہ ہیں جوان کے بعد ہیں پھروہ

لوگ ہیں جوان کے بعد آئیں گے، پھران (تبع تابعین) کے بعدایسے لوگ (قوم) آئیں گے جوموٹا بننے کی کوشش کریں گے اورموٹا پاپند کریں گے، وہ گوائی ویں گے بل اس کے کدان سے گوائی کامطالبہ کیا جائے۔

وہ مری حدیث :۔ دوسری حدیث بھی ان ہی سے مروی ہے جس کے الفاظ تھوڑ ہے سے مختلف ہیں آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

"خيسرامتى القرن الذى بُعثِتُ فيهم ،ثم الذين يلونهم ولااعلم اَذَكر الثالث ام لا،ثم ينشوء ُ أقوام يَشهَدُون ولايُستَشهَدُونَ ويخونون ولايؤتمنون ويفشُوفيهم السِمَنُ". (حسن صحيح)

میری امت کا بہترین زمانہ وہ ہے (لیعنی سب سے اچھے لوگ وہ ہیں) جس میں ہیں بھیجا گیا ہوں پھروہ لوگ ہیں جوان کے بعد ہوں گے حضرت عمران فرماتے ہیں مجھے یا ذہبیں کہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے قرن ثالث کا ذکر فرمایا پانہیں پھرالی قومیں پیدا ہوں گی جوگواہی دیں گی (لیعنی ازخود) حالانکہ ان سے گواہی طلب نہیں کی جارہی ہوگی اور وہ خیانت کریں گی جب کہ ان پراعتا ذہبیں کیا جائے گااور ان میں موٹا پا ظاہر ہوجائے گا۔

لغات: قولسه: "قونى" قرن زمانے كاس حصكوكت بيل جس ميں ايك پيڑهى يعن سل اور ہم عصر آكرختم ہوجا كيں جوعمو ماسوسال كلگ بھگ ہوتا ہے۔ قوله: "يتسمّنون" باب تفعل ميں تكلف كمعنى پائے جاتے بيں يعنى ان كاموٹا پاطبعى نہيں ہوگا بلكرزياده كھانے كشوق اور حص كانتيجہ ہوگا، يدفظ من سے مشتق ہے جو بکسرالسين وفتے اليم ہموٹا كو كہتے ہيں۔ قوله: "في مينشق" اى يخلق. قوله: "ولايؤ تمنون" لينى لوگ ان برعدم اعتماد كى وجہ سے ان كوامين نہيں جميں كے۔ قوله: "ويفشو فيهم" اى يظهر۔

تشری : میر صدیث متعدد طرق میں شک کے ساتھ آئی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے قرن الشکا کا در فرمایا ہے یا نہیں مگر بہت سے طرق میں بغیر شک کے بھی آئی ہے خود حضرت عمران کی حدیث امام ترفدی نے آگے ابواب الشہا وات میں ذکر فرمائی ہے اس میں قرون ثلاثہ کا ذکر بغیر شک کے آیا ہے اس طرح مسلم میں حضرت عائشہ رضی اللہ عنہاکی روایت ہے:

قبال رجل يارسول الله اأَيُّ الناس خيرقال "القرن الذي انافيه ثم الثاني ، ثم الثالث ".

للنداكها جائے گاكدآپ عليه السلام كاعهد پاك اور مابعد كے دوقر نيس ،اپنے ،ماضى ومستقبل كے تمام

زمانوں سے فضل اور مشہود لھا بالخیریت ہیں ان میں الاول فالاول بہتر ہے۔

صحابہ کرام کا قرن الے جمری پرختم ہوا بہتا برمشہور اور تع تا بعین کا دوسویس بیش ہو پرمنقطع ہوااس کے بعدوہی حالات رونما ہوگئے جن کی آپ علیہ السلام نے اس حدیث میں پیش گوئی فرمائی تھی ، تا ہم ان تمام ادوار میں یہ بات طے ہے کہ جو وقت آپ ملی اللہ علیہ وسلم کے زمانہ کے جتنا قریب تر رہایا ہوگا وہ ہرآنے والے وقت سے افضل ہے اور رہے گا، اور یہ فرق مجموعی اعتبار سے رہتا ہے ورنہ اچھے زمانہ میں کسی کر فے محف کی موجودگی اور کہ ہو تا میں اچھے لوگوں کا ہونا ممکن بھی ہے اور واقع بھی چنانچے قرن اول میں بعض لوگ نفاق کے مرض میں مبتلاء رہ چکے ہیں جب کہ بدترین زمانہ میں نیک اور صالح لوگ پائے جاتے ہیں گوان کی تعداد بہت کم ہوتی ہے۔

جس زمانہ میں یُر بے لوگ ہوں گے ان کے اندرکون ساعیب ہوگا جس کی بناء پروہ نالبندہ تھہرادیئے گئے تو یہاں ان کی تین خامیاں ذکر کی گئی ہیں: ایک بید کہ وہ موٹے ہوں گے جوزیادہ کھانے کی وجہ سے اس ندموم شرعی مقام تک جا پہنچ ہوں گے یعنی انہوں نے اپنانصب العین اور زندگی کا مقصد کھانے پینے کی اشیاء میں توسع بنایا ہوگا جو آج کل کہیں بھی دیکھا جا سکتا ہے جتی کہ زیادہ کھانے پینے سے نہ صرف وہ موٹے ہوگئے بلکہ شوگر کے بھی وہ شکار ہوگئے ،البتہ جو خص پیدائش طور پرصحت مند ہواوراس کا وزن بھی زیادہ ہووہ اس وعید میں نہیں آتا کیونکہ فدموم فقط موٹایا نہیں بلکہ کھانے پینے میں توسع ہے، عارضہ میں ہے:

"وانساذ كرحب السمن لان المؤمن حسبه لُقيمات يقمن صلبه فان كان ولا بُدّفشُلث طعام وثُلث شراب وثُلث نفس فامامو الاة الشبع والرفاهية فسمكروه وامسامحبة السِمَن فهى مكروهة فى النفس محبوبة فى الغير كالزوجة والجارية "الخ.

الاشباه والنظائر مين علامه ابن تجيم رحمه الله قاعده ثاني: "الامور بمقاصدها" كتحت لكهة بين: "قالوا الاكل فوق الشبع حرام بقصد الشهوة وان قصد به التَّقَوِّى على الصوم اومؤاكلة الضيف فمستحب". (ص٣٣)

لینی شہوت یں اصابے ہموٹا ہے اور دیگر مذموم مقاصد کے لئے زیادہ کھانا حرام ہے جب کہ نیک مقصد کے تخت نہصرف جائز بلکہ حسب اہمیت مقصد عبادت ہے۔ حاشیہ ترندی میں دوسرامطلب بیذ کر کیا گیاہے کہ وہ لوگ اپنی مدح کریں گے اور پسند بھی کریں گے کہ وہ لوگوں سے اپنی تعریفات سنیں حالا تکہ وہ ان صفات سے خالی ہوں گے،افسوس ہے کہ کم از کم بید دونوں باتیں اکثر علاء میں بھی پائی جاتی ہیں۔فیااسفاخم وثم

ال حدیث میں دوسراعیب گوائی میں پیش پیش رہناہے جب کہ اس کا مطالبہ ان سے نہیں ہوگا، ابن العربی فرمائے ہیں کہ مرادیا تو جھوٹی شہادت ہے جس کا مطالبہ نہیں تھایا پھر جھوٹی قشمیں ہیں جونسادز مانہ کا اثرہے کیونکہ اس میں تہمت زیادہ ہوگی اوراعتاد کم جیسا کہ یہ تیسراعیب ہے کہ وہ لوگ خائن ہوں گے اس لئے ان پر بھروسنہیں کیا جائے گا آج کل یہ عیب بھی عام ہے کہ آ دمی اپنے پدرشفیق اور رفیق حیات کے ساتھ بھی مخلص نہیں رہا ہے تاروا قعات اس پرشاہ ہیں ایسے میں اعتاد کہاں؟

باب ماجاء في الخُلفاء

خلفاءكابيان

"عن جابربن سَمُرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : يكون من بعدى اثناعشر امير أقال ثم تكلم بشتى لم افهمه فسألت الذى يلينى فقال : قال : كلهم من قريش". (حسن صحيح)

حضرت جابرین سُمُر ہ رضی اللہ عند سے روایت ہے فرماتے ہیں کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

میر سے بعد بعد بارہ امیر ہوں گے حضرت جابر فرماتے ہیں کہ پھر آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے کوئی بات ارشا وفرمائی

جس کو میں نہ بچھ سکا۔ پس میں نے اپنے پاس بیٹھے ہوئے خص سے پوچھا تو انہوں نے کہا کہ آپ سلی اللہ علیہ
وسلم نے فرمایا وہ سارے قریش میں سے ہوں گے ، سلم میں ہے کہ میں نے اپنے والدسے پوچھا کہ:
ماقال؟قال کلھم من قریش.

تشریخ:۔اس مدیث کے مطلب میں متعددا قوال ہیں جن میں قابل ذکردو ہیں:ایک قول ہے کہ یہ بارہ امام زمانہ غلبہ اسلام میں مراد ہیں ہی حاصل ہے ہے کہ میرے بعد بارہ امام ایسے ہوں گے جن کی امامت پرامت کا اتفاق اور بیعت پرسب کا إطباق ہوگا ہے رائے اصلاً قاضی عیاض رحمہ اللہ کی ہے جسے ابن حجر رحمہ اللہ نے اورامام نووی نے بھی شرح مسلم میں نقل کیا ہے اس طرح حافظ سیوطی رحمہ اللہ نے تاریخ

الخلفاء میں ذکرکیا ہے۔ (دیکھے نووی برمسلم ص:۱۹اج:۲ وتاریخ الخلفاء ص:۹) اس کی تا ئیدا بوداؤد کی روایت سے بھی ہوتی ہے۔ "کلھم یجتمع علیه الامة "ایک طریق میں ہے:"کلھم یجتمع علیه الناس"۔
علی ہذاان کی ترتیب یہ ہوگی ، ابو بکر، عمر، عثان، علی، معاویہ (بعد ملح الحسن) یزید، عبدالملک بن مروان بعد قبل ابن الزہیر، پھرعبدالملک بے چار بیٹے ولید، سلیمان، یزید، ہشام، تا ہم سلیمان اور یزید کے درمیان عمر بن عبدالعزیز بھی آئے ہیں وال اُنی عشر ہوالولید بن یزید، بن عبدالملک۔

تاہم یہ تعدادبارہ سے زیادہ ہے بعض حضرات نے بنوامیہ کے بعض ناموں میں اختلاف کیا ہے اور خلافت کا دامن بنوعباس تک پھیلایا ہے بعض نے حضرت حسن اور حضرت عبداللہ بن زبیر کو بھی شامل کیا ہے اس لئے کہا جائے گا کہ بارہ کاعدد کم از کم ہے اس سے زیادہ کی نفی مراد نہیں ہے۔ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے فتح الباری میں اس رتفصیل سے بحث فرمائی ہے (دیکھئے فتح الباری جلد: ۱۳۱۳) سے آگے جع قدیی:

"وفيه...الى ان لم يبق من الخلافة الاالاسم فى بعض البلادبعدان كانوافى ايام بنى عبدالملك بن مروان يخطب للخليفة فى جميع اقطار الارض شرقاً وغرباً وشمالاً ويميناً مماغلب عليه المسلمون ولايتولّى احدفى بلدمن البلاد كلها الإمارة على شئ منها إلا بامر الخليفة "الخ.

دوسراقول بیہ کے کہ مراد مطلق بارہ کی تعدادہ اس میں کسی زمانے کی تخصیص ملحوظ نہیں بلکہ اسلام کی ابتداء سے انتہاء تک پورے دور میں بی تعداد کمل ہوگی اس قوجیہ کے مطابق مرادوہ خلفاء ہوں گے جنہوں نے حق وصدافت اور عدالت کی مشخکم بنیا دوں پر قائم عمارت خلافت کا بھر پور خیال رکھ کرقر آن وسنت کے اصول ، کلیات وجز نیات کا استعال کیا ہوا گر چدان کی خلافت پرسب کا اتفاق نہ رہا ہوسیو طی تا رہ کے الخلفاء میں اور دیگر حضرات لکھتے ہیں:

"ويؤيده فداما اخرجه مسددفى مسنده الكبيرعن ابى الخلدانه قال الاتهلك هذه الامة حتى يكون منها الناعشر خليفة كلهم يعمل بالهدئ ودين الحق منهم رجلان من اهل البيت محمد (صلى الله عليه وسلم) عمر آك كالصة بين كروه باره يرين:

خلفاء اربعه والحسن ، ومعاوية ، وابن الزبير وعمربن عبد العزيز هؤلاء

شمانية ويحتمل ان يضم اليهم المهتدى من العباسين لانه فيهم كعمر بن عبدالعزيز في بنى امية وكذالك الطاهر لمااوتيه من العدل وبقى الاثنان المنتظران احدهماالمهدى لانه من ال بيت محمد صلى الشعليه وسلم". (ص + 1)

خلاصہ بیہ ہوا کہ اگر مرادوہ خلفاء ہوں جن کی خلافت وبیعت پراتفاق ہواوران کی وجہ سے اسلام کی شوکت ودبد بہ قائم رہا ہوتو پھر پہلاقول ہے اورا گرعدل وحقانیت مراد ہوتو پھر دوسر بےقول میں مندرج حضرات ہیں۔واللہ اعلم، بہر حال شیعوں کا قول قابل التفات نہیں۔

وومرى حديث: - "عن زيادبن كُسَيب العدوى قال كنتُ مع ابى بكرة تحت منبرابن عامروهويخطب وعليه ثياب رِقاق فقال ابوبلال انظرواالى اميرنايلبس ثياب الفساق فقال ابوبكرة: أسكت اسمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: من اَهان سلطان الله في الارض اهانه الله". (حسن غريب)

حضرت زیاد بن کسیب فرماتے ہیں کہ ہیں ابو بکرہ کے ساتھ ابن عامر کے منبر کے بینچے بیٹھا تھا جب کہ ابن عامر باریک (فیمق) کپڑے بیٹھا تھا جب کہ ابنارے امیر کودیکھو کہ فاسقوں کالباس پہنتا ہے اس پرابو بکرہ رضی اللہ عنہ نے فرمایا خاموش ہوجاؤ کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کوفر ماتے ہوئے سنا ہے کہ جو خض زمین پراللہ کے (بنائے ہوئے) بادشاہ کی تو بین کرتا ہے اللہ اس خض کوذیل کرتا ہے۔

تشری کیر وں کے ہیں ہوسکتا ہے کہ ریشی نہ ہوں گرصلی اور کی کیر وں کے ہیں ہوسکتا ہے کہ یہ ریشی کیڑ دوں کے ہیں ہوسکتا ہے کہ ریشی کیڑ ہے ہوں اور یہ بھی ممکن ہے کہ ریشی نہ ہوں گرصلی اور کی کیٹر ہے ہوں اور یہ بھی ممکن ہے کہ ریشی نہ ہوں گرصلی اور نے بہت اعلی لباس اختیار کیا جو محنت سے بنایا گیا تھا یہ دنیا داری کی علامت ہے۔

چونکہ بادشاہ کے قیام کااصل مقصد اللہ تبارک وتعالی کے احکام نافذ کرنا اورلوگوں تک عدل وانصاف پہنچانا ہے اس لئے وہ سلطان اللہ بالا ضافۃ کہلاتا ہے جیسے تشریفاً ناقۃ اللہ اور بیت اللہ کہا جاتا ہے اس لئے ایسے سلطان کی تعظیم اللہ تعظیم کے عمن میں آتی ہے پس جوشخص اس کوذلیل کرنے کی کوشش کرتا ہے وہ سلطان کی تعظیم کے بعض میں آتی ہے پس جوشخص اس کوذلیل کرنے کی کوشش کرتا ہے وہ سلطان کی تو بین ہوگا۔ سمولیا اللہ کی عزت نہیں کرتا اس لئے بطور م کافات و مجازات من جانب اللہ اس کی تو بین ہوگا۔

"قال في العارضة فمن كان بهذه الصفة فهو خليفة الله، ومن عصاه فهو خليفة الله، ومن عصاه فهو خليفة الشيطان".

باب ماجاء في الخلافة

خلافت كابيان

"عن سعيد بن جُمهان قال ثنى سفينة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: المخلافة فى امتى ثلاثون سنة ثم مُلك بعد ذالك، ثم قال لى سفينة: امسِك خلافة ابى بكرثم قال وخلافة عمرو خلافة عثمان ثم قال: امسِك خلافة عَلى فوجدناها ثلثين سنة قال سعيد فقلتُ له: ان بنى امية يزعمون ان الخلافة فيهم ،قال: كذبو ابنو الزرقاء بل هم ملوك من شرالملوك.".

حضرت سعید بن جمہان فرماتے ہیں کہ حضرت سفینہ رضی اللہ عنہ نے جھے سے فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے خلافت میری امت میں تیں سال تک رہے گی پھراس کے بعد با دشاہت ہوگی پھر سفینہ نے مجھ سے کہا کہ رکو خلافت ابی بکر (کی مدت) پھر فرمایا اور خلافت عمر (کین) اور عثمان کی خلافت پھر فرمایا شار کروعلی کی خلافت ہیں کہ میں نے ان شار کروعلی کی خلافت ہیں کہ میں نے ان رسفینہ) سے کہا کہ بنوامیہ تو دعوی کرتے ہیں کہ خلافت تو ان میں بھی ہے انہوں نے فرمایا بنوالز رقاء جھوٹ بولے ہیں بلکہ وہ تو بڑے بادشا ہوں میں سے بادشاہ لوگ ہیں۔ یعنی دنیوی بادشا ہوں کی طرح مرضی کی حکومت

کرتے ہیں۔

تشریخ: حضرت سفیندرض الله عنه کاتعارف (جلداول ۲۰۰٬ باب الوضوء بالمد٬) میں گذراہان کے اصل نام کے بارے میں ابن العربی عارضہ میں لکھتے ہیں کہ کسی نے ان سے نام پوچھا تو انہوں نے بتانے سے انکارکیا کہ آپ علیه السلام نے میرانام سفیندر کھا ہے اس لئے دوسراکوئی نام پسندنہیں کرتا۔

قول ه: "المحلافة في امتى ثلاثون سنة" يهال بياشكال وارد بوتا ہے كه ظلافت توتني سال كے مابعد تك جارى رہى ہے جيسا كه گزشته باب كى حديث سے معلوم ہوا پھرتيں كى تحديد كا كيا مطلب ہوسكتا ہے؟ اس كے دوجواب ہيں: ايك بير كہ خلافت مرضية تميں سال تك رہے گی لینی الی خلافت جس ميں سنت قائمہ سے ذرا بھی انحراف نه ہو بلكہ وہ آنخصور صلى الله عليه وسلم كے نهج ومنهاج پرسوفيصد قائم ہو جب كه مابعدا زئميں ميں بعض اشياء بھی شامل ہوجا كيں گي چتا نجے الكوكب الدرى ميں اس كويوں بيان كيا ہے:

"اى لايسقى الامسراء بعددالك على سِيَر الخلفاء وان كان التغيريسيراً كمافى معاوية رضى الله عنه وابن ابنه معاوية بن يزيد".

دوسراجواب یہ ہے کہ خلافت راشدہ متصل یعنی بلاانقطاع تو تمیں سال تک رہے گی اس کے بعد بھی ہوگی اور بھی نہیں ہوگی کذافی الکو کب وغیرہ۔

یه دونوں جواب اس پرمبنی ہیں کہ اس حدیث کو صحے تسلیم کرلیا جائے مگر محقق عبدالرحمٰن بن خلدون نے اس سے اختلاف کیا ہے اور حضرت حسن رضی اللہ عنہ اور حضرت معاویہ رضی اللہ عنہ کی مصالحت اور حضرت معاویہ رضی اللہ عنہ کی خلافت کسی رضی اللہ عنہ کی خلافت کسی طرح خلفاء سابقین سے کم نتھی وہ لکھتے ہیں کہ اس حدیث کی طرف توجہ ہیں وینی چاہئے کہ بیضعیف ہے:

"و لاينظر في ذالك الى حديث: "الخلافة بعدى ثلاثون "فانه لم يصح.

(د مکھنے تاریخ ابن خلدون ص ۲۲۱ ج۲، دارالکتب العلمیة)

گرابن خلدون اس تھم میں ہمارے علم کے مطابق متفرد ہیں عام محدثین نے اس حدیث کو تھے یا کم از کم حسن کہا ہے جیسا کہ امام ترفدیؓ نے بھی اس کو حسن قرار دیا ہے ، ابوداؤد نے اس پرسکوت کیا ہے اورامام احمد نے بھی اس کی تخز تنج فرمائی ہے اگر چہ اس میں حشرج اور سعید بن تُمہان صدوق ہیں گرروایت کے طرق متعدد ہیں۔ لہذا پہلے دوجواب ہی متعین ہوگئے۔

قوله: "امسک" لینی انگلیوں پر ثار کرتا کہ حساب میں غلطی نہآئے، پھرتمیں سال تک خلفاءار بعد کی خلافت شارکی تاہم اس مدت میں حضرت حسن رضی اللہ عنہ کے چھاہ اور چندون بھی شامل ہیں چنا نچہ دوسال سے پچھذا کد حضرت ابو بکڑے ہیں ساڑھے دس سال حضرت عمر کے ہیں، تقریباً بارہ سال حضرت عثمان کے ہیں، پھرتین ماہ کم یانچ سال حضرت علی کے ہیں۔

قولسه: "بنوالزرقاء" زرقاء بؤاميك جدات من سايك فاتون كانام ب،اس جمل "كذبوا بسنوالزرقاء" كرتيب من بحل كل بمقدم كي تى بها بن العربي عارضه من لك بين كم سنبوياس پراستشهاد كي ك "اكلونى البواغيث" ك محاج بوك "والقرآن وعامة الحديث يشهدلهاوهى فصيحة مليحة".

قوله: "وفی الباب عن عمروعلی قالا: لم یعهدالنبی صلی الله علیه وسلم فی المحلافة شیئا" لینی نبی سلی الله علیه وسلم فی المحلافة شیئا" لینی نبی سلی الله علیه وسلم نے خلافت کے بارے میں کوئی وصیت نبیس فرمائی ہے۔ یہ ارشاد حضرت علی رضی الله علیه الله علیه الله علیه میں فرمایا ہے، سیوطی فرمایا لهذا س روایت کی ان روایات سے کوئی منافات و تعارض نہیں جن وسلم نے عندالوفات کی خلیفہ کا تعین نہیں فرمایا لهذا س روایت کی ان روایات سے کوئی منافات و تعارض نہیں جن میں حضرت ابو بکر گی خلافت کی طرف اشارے پائے جاتے ہیں کیونکہ وہ و فات کے وقت نہیں بلکہ پہلے کی ہیں میں حضرت ابو بکر گی خلافت کی طرف اشارے پائے جاتے ہیں کیونکہ وہ و فات کے وقت نہیں بلکہ پہلے کی ہیں ۔ (راجع للتفصیل تاریخ المخلفاء ص ۲ ، قدیمی کتب خانہ)

صديث آخر: - "عن ابن عسرقال قيل لعسربن الخطاب: لواستخلفت؟قال: ان استخلفت عن ابن عسرقال قيل لعسربن الخطاب: لواستخلف الله عليه الستخلف لم يستخلف رسول الله صلى الله عليه وسلم" (صحيح) كذافي الصحيحين.

اس حدیث میں لفظ "لے "کوتمنا بیے بجائے شرطیہ بنانا زیادہ اچھا ہے پس جواب محذوف ہوگا یعن لکان حنا بعنی اگرآپ کسی کواپنا خلیفہ نامزد کر لیتے تو بہت اچھا ہوتا تا کہ کوئی فتنہ برپانہ ہوجائے تو حضرت عمر شنے فرمایا کہ اگر میں بناؤں تو بھی فیک ہے کہ ابو بکر نے بنایا تھا اورا گرنہ بناؤں تو بھی درست ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے نہیں بنایا تھا، مطلب بیہ ہے کہ میرے سامنے دوصور تیں ہیں اور دونوں سنت اور درست ہیں اس لئے مجھے اختیار ہے اور کوئی تنگی نہیں ہے۔ اس کا ایک مطلب تو وہی ہوا جواد پر گذر گیا یعنی آپ صلی الله علیہ وسلم نے عندالوفات کسی کونہیں بنایا ہے ، دوسرا مطلب ابن العربی نے عارضہ میں بیان کیا ہے یعنی آپ صلی الله علیہ سلم

وسلم نے کسی کوصرت کے طور پرخلیفہ نہیں بنایا ہے۔ جہاں تک اشارے کا تعلق ہے تو اس کی نفی یہاں مراز نہیں ، الکو کب میں ہے کہ اس میں جواز تقلید کی طرف اشارہ ہے۔

ببرحال صحابہ کرام کے متفقہ فیصلوں کے آگے سرتنگیم نم کرنالا ذی ہے اور شیعہ دروافض نے اس بارے میں جوروایات گھڑ لی ہیں وہ قطعاً قابل التفات نہیں۔ چونکہ حضرت عمرضی اللہ عنہ نے نصب امام کی ذمہ داری چھ کی شوری پرڈ الی تھی اس لئے بیطریقہ بھی صحیح ٹابت ہوا۔"فیجب علی کل مسلم التسلیم لذالک".

(عارضة الاحوذی)

باب ماجاء ان الخُلفاء من قریش الی ان تقوم الساعة ظفاء قریش می سے موں قیامت تک

"عن حبيب بن الزبيرقال سمعت عبدالله بن الهزيل يقول: كان ناس من ربيعة عندعمروبن العاص فقال رجل من بكربن وائل: لَتَنتَهَيَنَّ قريش اوليجعلنَّ الله هذا الامرفى جمهورمن العرب غيرهم ، فقال عمروبن العاص: كذبتَ اسمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: قريش وُلاة الناس في الخيروالشرالي يوم القيامة ". (حسن صحيح غريب)

وسی بن زبیر فرماتے ہیں کہ میں نے عبداللہ بن ابی الھر یل سے بیفرماتے ہوئے سُنا کہ رہید قبیلہ کے کچھ لوگ حفرت عمرو بن عاص رضی اللہ عنہ کے پاس بیٹھے تھے تو بکر بن وائل نامی قبیلہ کے ایک شخص نے کہا کہ یا تو قریش (اپنی حرکات سے) بالکل ہی باز آ جا نمیں یا پھر اللہ تعالیٰ بیامر (خلافت) قریش کے علاوہ باقی سب عربوں میں منتقل فرمادیں گے ،اس پر عمرو بن العاص نے فرمایاتم نے غلط بات کہی میں نے رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم سے بیاد شاوستا ہے کہ قریش قیامت تک لوگوں کے والی (حکمران) ہوں گے فیر میں بھی اور شرمیں تھی۔ اللہ علیہ وسلم سے بیاد شاوستا ہے کہ قریش قیامت تک لوگوں کے والی (حکمران) ہوں گے فیر میں تھی اور شرمیں تھی۔ وسلم سے میں قریش کی ہمسری کے دعو بدار تھے مگر حقیقت میں قریش ان سے بہت آ گے تھا گر چہ رہیعہ والے قریش کے اعمام تھے ، چونکہ عمومی طور پر رعایا کو ارباب اختیار میں قریش ان سے بہت آ گے تھا گر چہ رہیعہ والے قریش کے اعمام تھے ، چونکہ عمومی طور پر رعایا کو ارباب اختیار واقعہ ان ان سے حکومت لے کر باقی عربوں کو دے دیں گے حالانکہ واقعہ میں ایسانہ تھا ، باز آ جا نمیں ور منداللہ تبارک و تعالیٰ ان سے حکومت لے کر باقی عربوں کو دے دیں گے حالانکہ واقعہ میں ایسانہ تھا ،

حضرت عمروبن العاص في أس آدمي كقول كوردكرت موئ فرمايا كه خلافت وسلطنت تو قريش كاحق ہے جيسے

وہ جاہلیت میں اس کے ستحق تھے تو خیر لینی اسلام میں بھی وہ اس کے ستحق ہیں وہ الگ بات ہے کہ کوئی متغلبہ ان پر غالب آکران کا بیرحق چین لیس گرحدیث باب کی روسے بیرحق قیامت تک قریش کے پاس ہونا چا ہے کیونکہ ان کے اندرصد افت وعد الت اور شجاعت وغیرہ کی وہ تمام خوبیاں پائی جاتی ہیں جو حکر ان کے لئے لازمی ہیں جب کہ باقی لوگ مجموعی اعتبار سے ان خوبیوں سے محروم ہیں ہاں آگر چہکی جزوی مسئلہ میں یا غلبہ کی صورت میں غیر قریش کی امارت بھی واجب الا طاعت ہے بشر طیکہ وہ شریعت کے خلاف نہ ہوعقا کنسفی اور شرح عقا کہ میں امامت کی بحث میں ہے:

"ويكون من قريش ولايجوزمن غيرهم ولايختص ببنى هاشم واو لادعلى" يعنى يشترط ان يكون الامام قريشياًلقولة: الائمة من قريش وهذاوان كان خبراً واحداًلكن لمارواه ابوبكرمحتجاً به على الانصارولم ينكره احدفصارمجمعاًعليه ولم يخالف فيه الاالخوارج وبعض المعتزلة ولايشترط ان يكون هاشمياً اوعلوياً "الخ.

جى طرح عارضه، شرح مسلم وديگر ميں اجماع كا قول كيا گيا ہے۔اس مسله سے متعلقه بحث اور سوال وجواب "باب ماجاء في طاعة الامام" ميں ملاحظه كيا جاسكتا ہے۔ (ديكھئے تشريحات ص: ۵۲۰ جلد: ۵)

باب کی دوسری حدیث: حضرت ابو ہریرہ رضی اللّه عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللّه سلّی اللّه علیہ وسلّم بن جائے گا) ایک وسلم نے ارشاد فر مایا کہ ختم نہیں ہوں گے رات دن حتی کہ ما لک ہوجائے گا (لیعنی والی وبا دشاہ بن جائے گا) ایک شخص عجمیوں میں سے جس کوچمجا ہ کہا جائے گا۔

تشری : موالی مولی کی جمع ہے اگر چہ اس کا اطلاق عمو ما غلاموں پر ہوتا ہے گریہاں مراداعا جم ہیں،
بعض روایات میں ہائے ٹانینہیں یعنی ججاہے مسلم کی روایت میں جُجاہ ہے، ایک اور سیح حدیث میں ہے: 'السن
تقوم الساعة حتی بحر جر جل من قحطان یسوق الناس بعصاہ'' چنا نچاس بارے میں ایک قول یہ
ہے کہ ججاہ وہی قحطانی ہے جب کہ دوسراقول ہیہ کہ بیدونوں الگ الگ حکمران ہوں گے پھراس حدیث کا یہ
مطلب نہیں لینا چاہئے کہ ایسا کرنا جا کڑے بلکہ مطلب یہ ہے کہ ایسا بھی ہوگا کہ زمام حکومت عربوں
اور خصوصاً قریش کے ہاتھوں سے نکل کراعا جم کے پاس چلی جائے گی جوعلامات قیامت میں سے ہے حضرت
گنگوہی رحمہ اللہ الکوکب میں فرماتے ہیں کہ شاید یہ دور حضرت عیلی علیہ السلام کے بعدرونما ہوگا۔

باب ماجاء في الائمة المضلِّين

عمراہ کرنے والے حکم انوں کے بارے میں

"عن ثوبان قبال قبال رسول الله صلى الله عليه وسلم: انماا خاف على امتى أثمةً مصلين قال وقال رسول الله على المتى أثمةً مصلين قال وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: الاتزال طائفة من امتى على الحق ظاهرين الموسل خَذَلهم حتى يأتى امرالله". (حديث صحيح)

حضرت توبان رضی اللہ عنہ سے روایت ہے فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ میں اپنی امت کے بارے میں گمراہ کرنے والے حکمرانوں سے خوف کرتا ہوں اور فرمایا کہ میری امت کی ایک جماعت مسلسل حق پرقائم اور باطل پرغالب رہے گی نقصان نہیں پہنچا سکے گاان کو وہ مخص جوان کی مدد کرنا چھوڑ دےگا تا آنکہ اللہ کا حکم آجائے۔

تشریخ:۔اس مدیث کے دوسرے جھے کی تشریخ ''باب ماجاء فی اہل الشام' میں عقریب گذری ہے فلا نعید ھاجہاں تک پہلے جھے کا تعلق ہے توبی پیش گوئی بھی صادق آئی ہے دونوں پیش گوئیاں آپ سلی اللہ علیہ وسلم کے مجزات میں سے ہیں۔اس مدیث میں ظاہرین خبر فانی بھی بن سکتا ہے اور حال بھی پھر غلبہ باعتبار حجت ہمیشہ رہے اجب کہ باعتبار قوت وسلطنت کے بھی ہوگا جب صلاح ہوا ور بھی نہیں ہوگا جب فساد ہو۔

باب ماجاء في المهدى

مہدی کے بارے میں

"عن عبدالله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لاتذهب الدنياحتى يملك العرب رجل من اهل بيتى يواطئى اسمه اسمى". (حسن صحيح)

حضرت عبداللہ بن مسعودرضی اللہ عنہ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا دنیا ختم نہیں ہوگی یہاں تک کہ عربوں کا حکمران بن جائے گامیر سے الل بیت میں سے ایک فخص جس کا نام میرے نام کے مطابق ہوگا۔

باب کی تیسری روایت میں ہے کہ اگر دنیا کا صرف ایک ہی دن فی جائے تو بھی اللہ اس کولمبافر مادیں

مے یہاں تک کدمیرض (لیعنی مہدی) والی بن جائے۔

تشریج: - "لاتساهب السانسا"ای لاتسقصی لین دنیامهدی کی آر کے بغیر ختم نه ہوگ قوله:
"بواطئی" وَطالًا بمعنی موافقت کے ہے چنانچ موطاً الم مالک کی وجہ تسمیہ بھی یہی ہے کہ جب انہوں نے اپنی کتاب علماء وقت پر پیش کی تو انہوں نے اس سے موافقت فرمائی، حدیث میں عربوں کا ذکرا صالة ہے۔

باب کی بیدونوں روایتیں بقرت امام تر ندی سے ہیں تا ہم باب کی آخری حدیث جوابوسعید خدری رضی اللہ عنہ سے مروی ہے درجہ حسن کی ہے۔اس روایت میں مہدی کی تصریح بھی ہے اور مدت ولایت بھی متعین کی گئی ہے تا ہم راوی کوشک ہے کہ وہ مدت پانچ یاسات یا نوسال کی ہے اور یہ کہ ان کے پاس ایک محض آئے گا اور مال (غنیمت وبیت المال) کا مطالبہ کرے گا ،حضرت مہدی لپ بحر مجر کراسے اتناویں کے جتناوہ اپنی جا در میں اٹھا سکے گا۔یعنی بہت زیادہ عطافر ماکیں گے۔

مہدی کی آمد: حضرت مہدی کے بارے میں اہل علم کی کل ملا کرتین آراء ہیں: ایک جماعت کے خیال میں حضرت مہدی سے خیال میں حضرت مہدی سے متعلق تمام احادیث ضعیف ہیں۔ (۲) احادیث صحیح ہیں مگر حضرت مہدی سے مراد حضرت مہدی حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے مراد حضرت مبدی حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے مختلف وستقل شخصیت کا نام ہے جو حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے پہلے تشریف لائیں مے پھران کے بعد وجال کا خروج ہوگا جب حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا نزول ہوگا اور وہی وجال کوتل کریں مے جیسا کہ ترفدی کے ''باب ماجاء فی فتنة الدجال' میں تصرت ہے۔

جوحفرات ظہوروآ مدمہدی کے مشری ان میں سرفہرست علامہ عبدالرحلٰی بن خلدون المؤرخ کا نام ہے جنہول نے اسپے مقدمہ کی جلددوم میں مہدی سے متعلق اکیس مرفوع احادیث نقل کر کے ان کے راویوں پر تفصیلی جرح کی ہے اوران روایات کی تفعیف کے لئے یہ موقف اختیار کیا ہے کہ جرح مقدم ہوتی ہے تعدیل پر لہٰذا ایسے مختلف فیصم راوی ضعیف ہی کہلا کیں گے ، دوم حضرت مہدی سے متعلق احادیث اور دلائل میں شیعہ وروافض پیش پیش بیس جس سے ان روایات کی توشق مقلوک ہوگئ ہے ، مگر جمہور علماء کرام نے ابن خلدون کے وروافض پیش بیش بیس جس سے ان روایات کی توشق معمول ہوگئ ہے ، مگر جمہور علماء کرام نے ابن خلدون کے اس استدلال کورد کیا ہے کہ اوالا تو ابن خلدون تاریخ وعرانیات کے ماہر بیں فقہ واحادیث کے ماہر بین میں ان کا شار نہیں ہوتا ، ٹانی یہ بات میں کے جرح ، تعدیل پر مقدم ہوتی ہے لیکن اگر تعدیل مقدم ہوتو مو خرج ح قابل النفات نہیں ہوتی دوم بھی راوی ضعیف یا مختلف فیہ ہوتا ہے گر کشرت طرق اور تعدد متابعات کی وجہ سے وہ درجہ کو النفات نہیں ہوتی دوم بھی راوی ضعیف یا مختلف فیہ ہوتا ہے گر کشرت طرق اور تعدد متابعات کی وجہ سے وہ درجہ کا النفات نہیں ہوتی دوم بھی راوی ضعیف یا محتلف فیہ ہوتا ہے گر کشرت طرق اور تعدد متابعات کی وجہ سے وہ درجہ کا النفات نہیں ہوتی دوم بھی راوی ضعیف یا مختلف فیہ ہوتا ہے گر کشرت طرق اور تعدد متابعات کی وجہ سے وہ درجہ کے درجہ کی مقدل میں مقدل میں موتی ہوتا ہے گر کشرت طرق اور تعدد متابعات کی وجہ سے وہ درجہ کی دور کی میں کی دورے کو معرف کی دورے کو معرف کی دور کانگل کیں میں دورے کھیں دورے کی دورے کی دورے کی دورے کو کی دورے کی دورے کی دورے کو معرف کی دورے کی

ضعف سے بلند ہوکر درجہ حسن اور بھی بھی اس کی روایت صحت تک جا پہنچتی ہے اور بھی وجہ ہے کہ امام ترفی نے باب کی روایت صحت تک جا پہنچتی ہے اور بھی وجہ ہے کہ امام ترفی نے باب کی روایت جو بین مسعود سے مروی ہے عاصم کے باوجود پرحسن سیح کا تھم لگایا ہے۔ جیسا کہ پہلے عرض کیا جا چکا ہے کہ صدیث پر تھم بھی امور خارجیہ کے پیش نظر بھی ہوتا ہے لہذا امام ترفی کا سیحم اس کی ایک اور مثال سمجھیں۔ جہال تک ووسرے فریق کا تعلق ہے کہ مہدی سے مراد صفرت عیسی علیہ السلام ہیں تو اس رائے کوخودابن خلدون نے بھی ردکیا ہے کہ فلا ہرا حادیث سے اس تاویل کی صاف ننی ہوتی ہے۔

اب رہا تیرے فرین کاموقف تواں بارے میں بیر کہنا بجاہوگا کہ اس پرامت کا اجماع ہے اور بیکہ مہدی سے مرادوہ اما منتظر نیس جوشیعوں کے من گھڑت عقیدے کے مطابق وہ بارھویں امام غائب ہیں کیونکہ ان کے فزد کیا امام غائب کا نام محمد بن الحس العسکری ہے جب کہ ابودا وَد (جلد:۲مص:۵۸۸) کی روایت میں تصریح ہے کہ: "بیو اطنی اسمہ اسمی و اسم ابیہ اسم ابی " یعنی محمد بن عبداللہ نام ہوگا۔ ہاں جن روایات میں شمس ہے کہ وہ اولا دفاطمہ میں سے ہوں گے بعض میں "مسن او لادالسحسسن " اور بعض میں "مسن او لادالسحسسن " اور بعض میں آئی منافات اولادالسحسین " کے الفاظ آئے ہیں تو اس کا جواب ابن جربیمی نے بیدیا ہے کہ ان روایات میں کوئی منافات فہیں کہ ایک ہوں اور باپ میں وہ گفتی میں دومختلف قبیلوں کے نسب ملناعامی بات ہے کہ ماں مثلاً حتی ہوں اور باپ میں ہوائی " فرماتے ہیں کہ حضرت مہدی کے بارے میں کل احادیث بچاس مروی ہیں ان میں اٹھا کیس آ خار ہیں لینی باقی مرفوع۔

یہاں یہ بات قابل ذکرہے کہ بہت سے علاء اپنا حساب لگا کر حضرت مہدی کی آمد کے لئے ایک وقت مقرر کرتے ہیں پھر جب وہ وقت گذرجا تا ہے تو ان کے مریدوشا گرد پھر تاویلات کرنے میں مصروف ہوجاتے ہیں ایک پیشن گوئی شخ اکبرابن عربی تنظیم کی تھی کہ مہدی سلمانے ہیں آئیں می مگروہ تھے قابت نہ ہو کیں، آئی کی بہت سے علاء نے اس بارے میں چیش گوئیاں کی ہیں، اس سے کریز کر تالازی ہے کیونکہ اس سے وام کے عقائد مزازل ہوجاتے ہیں۔ دجال کے بارے میں بھی بیرقاعدہ طمح ظربا جائے۔

با ب ماجاء في نزول عيسيٰ بن مريم

عيسى عليه السلام كنزول كابيان

"عن ابى هريرة ان النبى صلى الله عليه وسلم قال: والذى نفسى بيده لَيُوشِكَنَّ ان ينسزل فيكم ابن مريم حَكماً مُقسِطاً فيُكسِرُ الصّلِيبَ ويقتل الخنزيرويضع الجزية ويَفِيضُ المالُ حتى لايقبله احد". (حسن صحيح)

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایافتم ہے اس کی جس کے قضہ میں میری جان ہے کہ غضری اللہ عنہ ابن مریم تنہارے در میان ضرور اتریں گے دراں حالیکہ وہ انصاف والے حاکم ہوں گے پس وہ صلیب تو ڑیں گے اور خزیز (سور) گوئل کریں گے اور جزیہ کوختم کریں گے اور مال غنیمت زیادہ ہوجائے گاختی کہ کوئی شخص مال کوقیول نہیں کرے گا (یعنی لینے کی ضرورت محسوس نہیں کرے گا)۔

تشریخ: دھ رہے اسلام کو جامع مجد کے مشرق منارہ پر فرشتوں کے کندھوں پردونوں ہاتھوں سے تکیہ لگائے ہوئے جلوہ دمشق کی جامع مجد کے مشرق منارہ پر فرشتوں کے کندھوں پردونوں ہاتھوں سے تکیہ لگائے ہوئے جلوہ افروز ہوں گے پھر منارہ سے سیڑھی کے ذریعہ بنچ اتریں گے اور حضرت مہدی کی امامت میں نمازادافر مائیں گے جس سے اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ وہ اس امت مرحومہ کی صف میں شامل ہوکر بحیثیت امتی خلافت کے فراکنس انجام دیں گے اور بہی وجہ ہے کہ وہ یہود کو آل کریں گے اور ہراس کا فرکوتی فرمائیں گے یا اسلام پر مجبور فرمائیں آخری نبی نہیں مانیا، اس لئے ان کے زول کے بعد پورا کو مائیں گے جورسول اللہ ملی اللہ علیہ وکل جو اسلام بی ہے باقی کوئی دین اور کی بھی دین کے پیروکارنہیں رہیں گی کا پورادین صرف اللہ بی کے بود ونصار کی دونوں کا زعم باطل ہوجائے گا کیونکہ یہود نے یہ مشہور کردیا ہے کہ کوئی نہیں دیں گے جس سے یہود ونصار کی دونوں کا زعم باطل ہوجائے گا کیونکہ یہود نے یہ مشہور کردیا ہے کہ حضرت عیسی علیہ السلام کو صلیب (جوکوئری کی مثلث طرز کا آلہ ونشان ہوتا ہے) پر بھانی دی گئی ہے اور نصار کی خور سے بی مدروجہ تھی کرتے ہیں ،ای طرح خزیرے قتی میں بھی ان کے زعم کی تروید ہے کہ خزیر تو طال نہیں اس کے عال رکھاور نہی اس سے کی طرح کا آتھ واصل نہیں ہوتی بلکہ وہ تو مارے جانے کا مستق ہوتا ہے کا کہ دونوں کا تو ماسل نہیں ہوتی بلکہ وہ تو مارے جانے کا مستق ہوتا ہے بی بھی ان کے ذعم کی تروید ہے کہ خزیر تو طال نہیں اس لئے اس کے ذی سے کوئی صلت وذکا ہ حاصل نہیں ہوتی بلکہ وہ تو مارے جانے کا مستق ہوتی اسے بیال رکھاور نہی اس سے کی طرح کا استفادہ کرے۔

ر ہاجزیہ خم کرنے کا مسئلہ تواس کا مطلب بینہیں لینا چاہئے کہ حضرت عیسی علیہ السلام جزیہ کومنسوخ کریں گے کیونکہ وہ تو پورے اسلام کے پابند ہوں گے بلکہ مطلب یہ ہے کہ جب کا فرختم ہوجائیں گے تو جزیہ خود بخو دختم ہوجائے گاجیسے مولفۃ القلوب کا تھم ہے یا مطلب یہ ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے جزیہ کا تھم بیان فرمایا کہ بیتھم حضرت عیسی علیہ السلام تک رہے گا اور ان کے نزول کے ساتھ ختم ہوجائے گا اس یہ بینے محضرت عیسی علیہ السلام کی طرف سے نہیں بلکہ آنحضور صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف سے ہے اور انہوں نے پہلے ہی محضرت عیسی علیہ السلام کی طرف سے ہے اور انہوں نے پہلے ہی اس کا تھم بتلادیا۔

نزول عيسى اور حكمت بارى: ويساتو الدرب العزت كاكوئى كام حكمت سے خالى نبيس اور عالمين میں جو کچھ رونماہوتا ہے اس میں بے شار حکمتیں اور بے تعاشار ازینہاں ہوتے ہیں خصوصاً عالم اسباب میں تو ہرشے دوسری شے کے ساتھ اس طرح مرتب ونسلک ہے جیسے زنچرکی کڑیاں ہوتی ہیں ،اس لئے یہ بات سوفيصديقيني ہے كەحفرت عيسى عليدالسلام كو بحالت حيات آسان كى طرف اٹھا نا اور پھر بالكل قيامت كقريب ان کونازل فرمانا ضرورسی بردی حکمت برمنی ہے اور یہ کہ جاری عقل وہم اس حکمت کے ادراک سے قاصر ہے مرمکن ہے کہان حکمتوں میں سے ایک یہ بھی ہو کہ جب انسانیت کا بگاڑ انتہاء تک پہنچ جاتا ہے توعام انسان اس کی اصلاح سے قاصروعا جز ہوجاتے ہیں ایسے میں اللہ کی مہربانی کا تقاضا ہوتا ہے کہ لوگوں کی دیکھیری کے لئے ان میں سے کسی ایسے مخص کا انتخاب کر کے بھیجاجائے جوتمام لوگوں سے زیادہ عاقل، ذہین، دیانت داراور بمدردوخيرخواه موآ محضور صلى الله عليه وسلم سيقبل جب انبياء عليهم السلام كاسلسله جاري تفاتو الله تبارك وتعالی ہرزمانے والوں کے لئے نیانی اوررسول بھیجنا مگر جب آ پ سلی اللہ علیہ وسلم اس عمارت کی آخری این کی طرح خاتم النبیین قراریائے تووہ سلسله کمل موااورارسال الرسل کاباب ہمیشہ کے لئے بند ہوا، دوسری طرف لوگ آخری زمانے میں ہدایت سے بہت دور جالکلیں مے فرانیت کے نام پر مرابی عام ہوجائے گی اورظلمات وتو ہمات ہر سُو جیما جا کیں گے ،ایسے میں نیا نبی بھی نہیں آسکے گا اور موجودہ لوگوں میں کوئی ایسا بھی نہیں ہوگا جو حالات کوبدل سکے ساری دنیانصاری کے رحم وکرم پرگویا زندہ ہوگی۔ایسے میں اللہ نے ان حالات کا مقابلہ کرنے کے لئے اورنصاری ویہودکوشرمندہ کرنے کے لئے حضرت عیسی علیہ السلام کومحفوظ رکھا جوایے مقررہ وقت یرنزول فرما کرحالات کواللہ کے حکم سے بدل ڈالیس کے اور تمام مردہ دلوں کوجوان میں قابل علاج ہوں گے باذن الله زندہ فرمائیں گے اور جونا قابل علاج ہوں گے وہ مرجائیں گے اور یہی وجہ ہے کہ ان کی سانس میں

الله يہ تا فيرود ليست فرمائيں گے كہ تا حدثگاہ كوئى كا فرسا منائيس كرسكے گا كويا بيا يٹم بم كا جواب ہوگا اوراس وقت ب ولينا لو جى ونيا والوں كے پاسٹيس ہوگى اس لئے الن كے آ گے سب بے بس ہوں گے ويسسكسون السديسن كلة للّه۔

باب ماجاء في الدجال

دخال كابيان

"عن ابى عبيدة ابن الجَرَّاح قال: سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: انه لم يكن نبى بعدَنوح الاقداندرقومه الدجال وانى انذِرُكُمُوه فوصف لنارسول الله صلى الله عليه وسلم فقال: يارسول الله الحكيف وسلم فقال: لعلمه سيدركه بعض من رانى اوسمع كلامى قالوا: يارسول الله الحكيف قلوبنا يومنذ ؟ فقال مثلها يعنى اليوم اوخير". (حسن غريب)

حضرت ابوعبیدہ ابن جراح رضی الله عند سے روایت ہے فرماتے ہیں کہ میں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم کوارشا دفرماتے ہوئے سنا کہ نوح علیہ السلام کے بعد کوئی نبی نہیں گذراہے گراس نے اپنی امت کو دجال سے ڈرایا ہے اور میں بھی تم کواس سے ڈراتا ہوں پس رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے اس کے حالات ہے ہمیں آگاہ فرمایا ، آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا شایداسے وہ لوگ پالیس کے جنہوں نے مجھے دیکھا ہے یا (وہ لوگ) جنہوں نے میرا کلام سنا ہو صحابہ نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! اس وقت ہمارے دل کیسے ہوں گے؟ آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا آج کی طرح ہوں سے یاس سے ایکھے۔

تشریخ: امام ترفدی نے چندابواب میں دجال کے متعلق مختلف زاوبوں پرنظر والی ہے اور متعدد سوالات کے جوابات تلاش کے ہیں جواس اندھے فتنے کا تقاضا تھا کہ اس پر تفصیل سے بحث کی جائے۔ دجال بعد یدالجیم مبالغے کاصیغہ ہے اور دجل سے مشتق ہے جو بمعنی فریب ، جھوٹ اور خلط ملط کرنے کے آتا ہے جیسا کہ پہلے عرض کیا جا چکا ہے۔

دجال کے متعلق ان ابواب کی تشریحات سے قبل ایک تمہید بیان کرنا مناسب ہے تا کہ محصورت حال سجھنا آسان رہے و باللہ التو فیق۔

(۱) ... جن اور باطل کامعرکداس دنیا پردہنے والے انسانوں کے لئے آزمائش بھی ہے اور ترقی وتابی

کاسامان بھی۔الل ایمان اس جنگ میں فتح یاب ہو کر ترتی کرتے ہیں اور ایمان کے ثمرات سے بہرور ہوجاتے ہیں جبکہ الل عصیان جاہ ہوجاتے ہیں۔

قرآن وسنت اورتاریخ گواہ ہے کہت وباطل کے میدان جنگ ہیں آخری فتح می کونھیب ہوتی ہے ہیں جس قدرباطل طاقت ورہوتا ہے ای طرح حق بھی من جانب اللہ معنبوط تر ہوجا تا ہے اور بالآخر فالب ہی رہتا ہے اگرکس کو یہ طاقت عالم اسباب کی رُوسے نظر نہ بھی آجائے تو غیبی مدو کے بے شاروا قعات اس کا بین شہوت ہے۔ ام معذ بہ کے کھنڈرات آج بھی ہزبان حال اس کا اعلان کررہے ہیں علی ہزاجب فرمز یہ معنبوط موقا تو مسلمانوں کی تقویت کے لئے اللہ تبارک و تعالی حضرت مہدی کو نتخب فرما کیں گے جوالل باطل کو شکست موگا تو مسلمانوں کی تقویت کے لئے اللہ تبارک و تعالی حضرت مبدی کو نتخب فرما کیں ہے جوالل باطل کو شکست کے کہ ان کو بورپ کی واد بول میں و تعمیل دیں گے وہ ابھی تک خلافت کی بنیاد یں مجھے طور پر مضبوط نہ کر چکے ہوں کے کہ ان کے مقابلے کے لئے وجال کاخروج ہوجائے گا جس کی طاقت اور طاہری شوکت کا عالم وہ ہوگا جس کی طاقت اور طاہری شوکت کا عالم وہ ہوگا جس کی طاقت اور طاہری شوکت کا عالم وہ ہوگا جس کی خات سے والا ماور پوری و نیا پرحا کم بنے والا ہو دیا تھر بہا تجرجائے گی اور بول محسوں ہوگا جسے دجال غالب ہونے والا ماور پوری و نیا پرحا کم بنے والا ہو سے میں اس وقت اللہ تبارک و تعالی حضرت عسی طید السلام کی وفات کے بعد کفر بہت جلد عام ہوجائے گا موال ہی جو بال کا کھر وہاں مقابلہ کی کوئی صورت نہ ہوگی تو فرخ کا سوال ہی بے کا رہا ہی ۔

(۲)...اس زمانے میں خرق عادت امورکی کثرت ہوجائے گی جیبا کہ عارضہ میں ہے:"لان ذالک زمان حوق العادات" آج کل عجائیات کی کثرت تومشاہدہ عام ہے جس پرتیمرہ کرنے کی ضرورت نہیں تاہم جیسے جیسے وقت گذرہے گاتونت نی ایجادات اور حیران کن حدتک اشیاء استعال میں مزیداضافہ ہوتارہے گاتا آ کلہ دجال ان ہے بھی ہو ھرکرتب دکھائے۔

(۳)...بعض لوگ د جال سے انکار کرتے ہیں اور بعض ان روایات میں ایسی تاویلات کرتے ہیں جو بظاہر نصوص کے خلاف ہیں مثلاً د جال سے مرادا یک طاخوتی نظام ہے د غیرہ د غیرہ و خال کہ بید د نوں فریق غلطی پر ہیں پہلے فریق کی غلطی بیہے کہ انہوں نے الی نصوص کا انکار کیا جومعناً متواتر ہیں اور امت کا اس پر اجماع، جبکہ دوسرے فریق نے بلاکسی ناگزیر وجوہ کے نصوص کو ظاہر سے پھیردیا، بید دونوں با تیں اصول کے خلاف ہیں۔ شرح عقائد میں ہے:

"ومااخسرالنبى عم من اشراط الساعة اى من علاماتهامن خروج الدجال ودابة الارض وياجوج وماجوج ونزول عيسى عم من السماء وطلوع الشسمسس من مغسربهافهوحق لانهاامورممكنة اخبربهاالصادق الخ". (ص: ۲۳)

دوسرى بات كمتعلق كلهاس:

"والنصوص من الكتاب والسنة تُحمل على ظواهرهامالم يصرف عنهادليل قطعى الخ". (١١٩مكتبه علوم اسلاميه يشاور)

ال مخضرتمہید کے بعد عرض ہے کہ ان روایات کے مطابق دجال کے متعلق سی احادیث کواپنے ظاہر ہی پر محمول کر تالازی ہے تاہم اس کے وقت کے بارے میں بیہ کہنا سی کے فلاں سال یا فلاں مہینے میں فکلے گاکھوں کر تالازی ہے تاہم اس کے وقت کے بارے میں سیکہنا سی کہنا سی کہ فلاں سال یا فلاں مہینے میں اللہ کوکوئی جلدی گاکیونکہ بڑے واقعات کے رونما ہونے میں صدیاں گذرجاتی ہیں۔ہم لوگ جلد باز ہوتے ہیں اللہ کوکوئی جلدی نہیں ہے۔

قول د: "لم یکن نبی بعدنوح النع" یہال مبدأ یعن حضرت نوح بھی اس انذار میں شامل ہیں اور خصیص ان کی شہرت کی بناء پر ہے یا پھر طول زمانہ کی وجہ سے بیابیا ہی ہے جیسے ایک صحابی نے آنخضرت سلی اللہ علیہ وسلم سے پوچھا: یار سول الله! کیف تعرف امت ک من بین الامم فیما بین نوح الی امت ک باللہ علیہ وسلم سے پوچھا: یار سول الله! کیف تعرف امت من میں الامم فیما بین نوح الی امت ک بقال غرم حجلون النح (مشکوة ص: ۴۰) علی ہذااس روایت میں اور باب کی اگلی روایت میں کوئی تعارض نہیں مربی یہ بات کہ ان سب انبیاء کیم السلام نے اپنی امتوں کو کیوں ڈرایا حالا تکہ ان کو پیتے تھا کہ دجال تو علامات کرئی میں سے ہے جوآ ہے سلی اللہ علیہ وسلم کے بعد قیامت کے قریب نظے گا؟ اگر چا یک رائے کے مطابق ان کو پیتے نہیں تھا اس کا جواب ابن العربی عارضہ میں بیدیا ہے کہ:

انـذار الانبياء من نوح الى محمدعليه السلام باَمر الدجال تحذير اللقلوب من الفتن وطمأنية لها....الخ .

یعنی ان کامقصدلوگوں کونفس فتنوں سے ڈرانا تھااور یہی وجہ ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کو بھر پورانداز سے بیان فرمایا جیساکہ "باب ماجاء فی فتنة اللہ جال "میں آرہاہے:

فحفّ ض فيه ورفّع حتى ظننّاه في طائفة النحل الخ لانه ان لم تكن

فتنة الدجال قريبة فان قريباً منهاقريب في فسادالاديان واتباع الائمة المضلين والافتنان بالسلاطين ". (عارض)

مطلب میہ ہے کہ جب کس نوع کا بڑا فردسامنے ہوتو دیگرچھوٹے چھوٹے افرادکواس پرقیاس کرنا آسان ہوتا ہے۔ تدبر

قوله: "وانی اندر کموه" اگل روایت میں ہے کہ آپ سلی الله علیہ وسلم نے فرمایا میں تم کواس کے بارے میں ایسی بات بتا تا ہوں جو کسی نبی نے اپنی قوم سے نہیں کہی ہے، چونکہ باتی انبیاء کو معلوم تھا کہ وہ ہماری امتوں کے زمانہ میں نہیں آئے گااس لئے ان کو تحقی تعارف کی ضرورت نہی جبکہ اس امت کے لئے بیفتنہ بینی تھااس لئے آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے اس کی وضاحت فرمائی۔

قوله "لعله سيدركه بعض من رانى اوسمع كلامى" جوحفرات ال صديث كوي نبيل مائة بين النوم او خير "ك بين النوم او خير "ك حوال سن المع بين النوم او خير "ك حوال سن لكهة بين:

"فهذه الكلمة واشباههاتسقط الاحاديث وان رواهاالمستورون الخ.....وقدروى ابوعيسى عن ابن عبدة غريباً وعن ابن عمرصحيحاً".

مر پہلے عرض کیا چکا ہے کہ امام بخاری اور امام ابن العربی " کے نزدیک درجہ حسن کی روایت بھی ضعیف ہوتی ہے جبکہ جہور کے نزدیک حسن قابل استدلال ہوتی ہے، الہذایہاں حدیث کو ثابت مان کر توجیہ کی ضرورت ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کودیکھنے والے اور سننے والے کیسے د جال کو پالیس مے جبکہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ سوسال کے بعد کوئی بھی (موجودہ لوگوں میں سے) نہیں بے گا۔

اس کا ایک جواب بید یا گیا ہے کہ ماع عام ہے خواہ براہ راست ہو یا بالواسط لہذا مراداس امت کا کوئی شخص ہے جس نے دجال کے متعلق احادیث بالواسطہ ٹی ہوں گی مگریہ توجید پہلے جملے "مسن رانسی" کے ساتھ نہیں گئی اس لئے بعض شارصین بخاری جیسے قسطلانی وغیرہ نے ایک قول بیقل کیا ہے کہ دجال جس شخص کے دوکلڑے کرے گاوہ حضرت خضر علیہ السلام ہوں کے بعض حضرات فرماتے ہیں کہ کوئی معمر جن ہوگا حضرت فانوی نے تقریر ترفدی (المسک الذی) میں فرمایا کہ حدیث کو ظاہر پر محمول کرنا اولی ہے بلکہ لازی ہے اور کہاجائے گا کہ اس عہدیاک کا کوئی شخص مرادہے۔

ر ہابی مسئلہ کہ آ پ مسلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ سوسال کے بعد کوئی ہمی نہیں رہے گا تواس کا جواب یہ بے کہ یہ عام مخصوص منہ البعض ہے چونکہ شیطان بالا تفاق اب تک موجود ہے اور دجال بھی زندہ ہے تو کہا جا سکتا ہے کہ حضرت خضریا کوئی جن وغیرہ بھی اس وقت تک زندہ رہے گا، واللہ اعلم وعلمہ اتم واتحم ، ابن العربی نے اس کورد کیا ہے۔

قوله "مثلهایعنی الیوم او خیر" اس کے بارے شی توابن العربی کی رائے گذرگی کہ بہ جملہ بہت کی احادیث سے معارض ہے اوردلوں کی حالت میں گراوث اور تنزلی امر بدیجی ہے حضرت انس رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں: "مانفضنااً یدینامن تو به رسول الله صلی الله علیه وسلم حتی انکر ناقلوبنا" یعنی آپ صلی الله علیه وسلم حتی انکر ناقلوبنا" یعنی آپ مسلی الله علیه وسلم کی چرو انورجیسے ہی ہماری نظروں سے اوجھل ہواتو ابھی ہم نے قبر مبارک کی مٹی سے اپنے ہاتھوں کو بیس جھاڑا تھا کہ ہم نے اپنے دلوں میں فرق محسوں کیا یعنی وہ تجلیات وانوارات اس شان سے ندر ہے جو آپ صلی الله علیہ وسلم کی موجودگی میں تھے۔

بصورت صحت مطلب سے ہے کہ جن کے دل میں ایمان ہوگا تو وہ فتنے کو یقین سے دفع کریں گے۔
عارضہ میں ہے: "انھے اذا کسانو اعسلی الایسمان ثابتین دفعو االشبھة بالیقین" یعنی بیمراز نہیں کہان
کاایمان صحابہ کرام کے ایمان سے اچھا ہوگا بلکہ مطلب سے ہے کہ وہ اس فتنہ کوآسانی سے دفع کرسکیس کے جواس
وقت کے حالات کا نقاضا ہوگا ، کیونکہ وہ زمانہ ہی خوارق عا دات کا ہوگا تو ان کے لئے دجال کے کرتب استے اہم
اور محورکن نہیں ہوں گے ، اور کی کمز ورآ دمی کا بڑے معرکہ کو سرکر ناممکن ہے۔

قوله: "تعلمون انه أعوروان الله لیس باعور"اس حقیقت کی طرف اشاره ہے کہ دجال ناقص الخلقت ہے کیونکہ اعور (کانا) ہونا بڑا عیب ہے جبکہ الله تبارک وتعالی تمام عیوب ونقائص سے پاک ومنزه ہے پس اس کا دعوائے ربو بیت کیے صبح ہوسکتا ہے کہ جو خص خود کونہیں بچاسکتا اورا پنا نقصان نہیں بٹاسکتا وہ دوسروں کا خدا کیونکر بن سکتا ہے؟ گویا یہ ایسا فتنہ ہے جس کے بطلان کی دلیل اس کے اندر بلکہ او پرموجود ہے لیکن فتنہ میں بتلاءلوگ عوماً سوچانہیں کرتے علاوہ ازیں اس کے بال بھی بہت زیادہ ہوں گے اور دامنی آئکہ کے کنارے برگوشت کا اجرا ہوا گلزا بھی ہوگاتو ایہ فتص جس کی بائیں آئکہ کانی ، دامنی زائد گوشت کی بناء پر بہت بدنما اور غیرضروری بالوں کی حجہ سے نہایت تبج ہوہ والہ ومعبود اور رازق کیے ہوسکتا ہے؟ ۔ کذا فی العارضہ غیرضروری بالوں کی حجہ سے نہایت تبج ہوہ والہ ومعبود اور رازق کیے ہوسکتا ہے؟ ۔ کذا فی العارضہ

قولسه: "تعلمون انسه لن يرئ احدمنكم رَبَّهُ حتى يموت" بياس كرجل وفريب

كادوسرابر اقريند بتلاياكد دجال تمهار بسامنه بوگاتو اگروه خدا بوتا آپ كو برگز نظر ندآتا كونكدتم بخوبي جائة بوكتم شركتم من الله بائت بوكتم من سكوني اين درب كوند د كيد كه كاجب تك وه مرند جائد

یمال امت کے دیکھنے کی نفی کی گئی ہے رہی یہ بات کہ آنخصور صلی اللہ علیہ وسلم نے معراج کے موقعہ پراللہ متاہم وہال مجی پراللہ متارک و تعالی کودیکھا ہے یا نہیں تو وہ الگ مسلہ ہے اس حدیث سے اس کی نفی مراز نہیں ، تاہم وہال مجی دوتول ہیں حضرت عاکشہ وابن مسعودرضی اللہ عنمانفی کے قائل ہیں اور بعض دیگر صحابہ رؤیت کے ، را ہے سے للنفصیل شرح العقائد۔

قوله: "وانه مكتوب بين عينيه كافو" يتيراقرينهاسك بطلان دعوى يركداس كآتكمول كدميان كافراكه والمال كالمتحمول كالمرادم والمرادم والمردم والمرادم والمردم والمرادم والمردم والمردم

قوله: "یقر آه من کوه عمله" برده مخص اس کو پڑھ سے گاجود جال کے مل کو کر استجے گا۔ عارضہ میں ہے کہ دوہ سلمان بھی اس کو پڑھ سکی اس کو پڑھ سکیں سے جوان پڑھ ہوں کے کیونکہ وہ زمانہ خوارق کا ہوگا جبکہ کا فراس کونیس پڑھ سکے گا کہ اس کی بھیرت ہے۔ سے ہے۔

"عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: تقاتلكم اليهو دفتُ سَلّطُون عليهم حتى يقول الحجريامسلم هذااليهودي وراثي فاقتله". (حسن صحيح)

لینی ببودتم سے لڑیں مے پس تم ان پر غالب آجا وکے یہاں تک کہ پھر پکارے گا:اے مسلم! یہ یہودی میرے پیچیے چمیا ہواہے اسے مارڈ الو۔

جیدا کہ عرض کیا گیا کہ بیز مانہ خرق عادات کا ہوگا اس لئے پھر کا بولنا قابل یقین ہے بلکہ واجب الیقین ہے بلکہ واجب الیقین ہے کہ برمکن جس کی خرصادق ومصدوق وے دیں واجب الیقین ہوجا تا ہے سلم کی روایت میں درخت کا بھی اضافہ ہے البتہ غرقد نامی درخت جو بیت المقدس میں پایاجا تا ہے اور خاردار بھی ہے وہ خاموش رہے گا بہ شاکدنوع کی خباشت ہے۔ اس حدیث کی مزید شرح اس کھیا باب میں ملاحظہ کی جاسکتی ہے۔

"عن ابى بكر الصديق قال حدثنارسول الله صلى الله عليه وسلم:قال الدجال يخرج من ارض بالمشرق يقال لها خُراسان يتبعه اقوام كَانٌ وجوههم المجانُ المطرقةُ".

حضرت ابو بمرصدیق رضی الله عنه سے روایت ہے فرماتے ہیں که رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ہم سے بیان فرمایا کہ وجال مشرق کے ایک علاقہ جسے خراسان کہاجا تا ہے سے نکلے گا،اس کی پیروی ایسے لوگ کریں کے (لیمنی اس کے ساتھ مہوں گے) جن کے چبرے ڈھال کی طرح تبہہ ، ہتبہ ہوں گے۔

تشریخ: قدیم جغرافیه میں ایران کامشرقی اورافغانستان کامغربی حصه ہرات وغیرہ خراسان کہلاتا تھا یہ اگر چدمدیند منورہ کے عین مشرق میں نہیں ہے مگراہل عرب عراق اورایران وغیرہ پورے خطے کومشرق کہتے ہیں گویا یہاں عرفی مشرق مراد ہے۔

دجال کے خردج کے بارے ہیں تمام روایات کوسامنے رکھتے ہوئے یہ نتیجہ دکتا ہے کہ مسلمانوں اور پورپ ومغرب والوں کے درمیان سخت لڑائی ہوگی جے اگلے باب میں' کہلمجہ اعظیٰ ، لینی جنگ عظیم سے تعبیر کیا ہے ،اس جنگ میں روی قسطنطنیہ یعنی استنبول پر قبضہ کرلیں گے پھر حضرت مہدی آکران کی کما غریس مسلمان اسے دوبارہ حاصل کرنے میں کامیاب ہوجا کیں گے۔ ابھی وہ تقسیم غنائم سے فارغ نہیں ہوئے ہوں گے کہ دجال کے خربی جائے گی گویا جب کا فروں کواستبول کے محاذ پر شکست کا سامنا ہوجائے گا تو وہ چھے سے تیاری کر کے تملہ آور ہونے کی کوشش کریں گے اور اپنے زعم کے مطابق ایک ایسی طاقت کے ساتھ میدان میں اتریں گے جو بظاہر نا قابل شکست ہوگی بید جالی قوت ہوگی ایک روایت میں اس کی تصریح ہے کہ ان شریک لشکریہودی ہوں گے ادران کی تعداد ستر ہزار ہوگی جبہ باب کی روایت میں اس کی تصریح ہے کہ ان لشکریوں کے چہرے ڈھال کی مانندگول مول اور پر گوشت ہوں گے مید وصف ترکی النسل از بک وغیرہ مارواء النہرکے لوگوں میں پایا جاتا ہے۔

پھر بعض روایات کے مطابق دجال کاخروج ایک جزیرہ سے ہوگا ایک روایت میں شام وعراق کے درمیان سے گذرنا ثابت ہے مگران روایات میں کوئی تعارض نہیں کیونکہ اولین خروج تو جزیرہ سے ہوگا مگروہ خفیہ

ہوگا جبکہ خراسان مین ظہور ہوگا اور شام تک وینچتے کینچتے اس کی قوت وکثرت اتباع انتہاء تک پہنچ جائے گی مگراللہ کے نفضل سے وہ مزید ترتی کے بجائے ہلاکت کا شکار ہوں کے حضرت عیسیٰ علیہ السلام دجال کولل کریں گے اور اس کا فشکر سب ختم ہوجائے گاحتی کہ پھراور درخت بھی ان کے خلاف ہوجا کیں گے۔

باب ماجاء في علامات خروج الدجال

خروج دجال کی علامات کے بارے میں مروی حدیث

"عن معاذبن جبل عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: الملحمة العُظمىٰ وفتج القُسطُنطِنيةِ وخروج الدجال في سبعة اشهر". (حسن)

حضرت معاذین جبل رضی اللّه عنه سے مردی ہے کہ رسول اللّه سلی اللّه علیہ وسلم نے فرمایا جنگ عظیم اور قسطنطنیہ کی فتح اور د جال کاخروج سمات ماہ میں ہوگا۔

تھرتے:۔ جنگ کوملحمہ اس لئے کہتے ہیں کہ اس میں ہم یعنی گوشت کتا ہے تسطنطنیہ میں قاف مضموم اورسین ساکن ہے طائے اول پرضمہ اوردوم پر کسرہ ہے بعض لغات میں نون کے بعد ایک اور یاء مشددہ کا بھی اضافہ ہے بیشہرترکی میں ہے جو مطنطین باوشاہ کی طرف منسوب ہے آج کل اس کا نام استبول ہے، ترکی ایشائی ملک ہے مگر بیصوبہ یورپ میں ہے جس کو بحر اسود کو طلانے والے ابنائے پر ایک بل ملا تا ہے جو بٹن سے کھاتا ہے۔ فرکورہ روایت میں سات مہینوں کا ذکر ہے مگر بعض دیکرروایات میں چھسالوں کا ذکر ہے اس لئے بعض خفرات نے باب کی روایت کو ابو بحر بن ابی مریم کی وجہ سے ضعیف قر اردیا ہے مگر زیادہ سے جے کہ جنگوں کا ایک صلاحہ چھسال پر شتمل ہوگا اوردوسر اسلسلہ فئے قسطنطنیہ اورخروج دجال پر شتمنل ہوگا جس میں پہلے سلسلہ کے سلسلہ چھسال پر شتمنل ہوگا جس میں پہلے سلسلہ کے آواخر بھی داخل ہوں گے اس کا دورانیہ سات ماہ پر شتمنل ہوگا گویا جنگ عظیم چھسال تک جاری رہے گی۔ اس موضوع برآج کل تفصیلی کتا ہیں کھی جا چھی جی بین شرح حدیث کے لئے اس قدروضا حت کا فی ہے۔

باب ماجاء في فتنة الدجال

وجال کے نتنہ ہے متعلق حدیث کابیان

"عن النُّوَّاس بن سمعان الكِلابي قال ذكررسول الله صلى الله عليه وسلم الدجالَ

ذات غيسداة فَحَفَّضَ فيه ورَقَّعَ حتى ظَنتًاه في طائفة النخل قال: فانصر فنامنَ عندرسول الله صلى الله عليه وسلم ،ثم رُحنااليه فعرف ذالك فينا، فقال: ماشانكم؟؟قال قلنايارسول الله إذكرتَ الدجالَ الغداةَ فَخَفَّضتَ ورَفِّعتَ حتى ظنناه في طائفة النخل .قال:غير الدجال اخوف لى عليكم إن يخرج وانافيكم فاناحجيجه دونكم، وان يخرج ولستُ فيكم فإمرؤ حبجيج نفسه والله خليفتي على كل مسلم، انه شابٌّ قَطَطُّعينُه قائمة شبيه بعبدالعُزّى بن قَطَن فمن راه منكم فليقرأ فواتح سورة اصحاب الكهف،قال يحرج مابين الشام والعراق فعاث يسميناً وشسمالاً، ياعباد الله! البَعُوا! قلنا يا رسول الله ومالَبعُه في الارض؟قال: اربعين يوماً، يوم كسنة ويوم كشهرويوم كجمعة وسائرايامه كايامكم ،قال قلنايارسول الله ارأيت اليوم الذي كالسنة أتكفينافيه صلاية يوم؟قال: "لا"ولكن اقدرواله إقلنايارسول الله فماسرعته في الارض؟قال:كالغيث استدبرته الريح فياتي القوم فيدعوهم فيُكِّدِّبُونه ويَرُدُّون عليه قوله فينتصرف عنهم فتتبعه إموالهم فيصبحون ليس بايديهم شئي ثم يأتي القوم فيدعوهم فيستجيبون له ويُصَدِّ قونه فيأمر السماء ان تمطِر فتمطِرويأمر الارضَ ان تنبتَ فتنبتُ فتروح عليهم سارحتهم كاطول ماكانت ذُرّى وامدِّه خواصِرَوادَرَّه صروعاً،ثم يأتي الحَربَة فيقول لهاأخرجي كنوزك فينصرف منهافتتبغه كيعاسيب النحل ثم يدعورجلا شابأ ممتلياً شبابافيضربه بالسيف فيقطعُه جِزلتين ثم يدعوه فيقبل يَتَهَلَّلُ وجههُ يضحكُ، فبينما هو كذالك اذهبط عيسي بن مريم بشرقي دِمشق عندالمنارة البيضاء بين مهرودتين واضعاً يده على اجنحة ملكين اذاطأطارأسه قَطَرَواذارفعه تَحَدّر منه جُمّان كاللؤلؤ قال: ولا يجدريحَ نفسِه يعني احدَّالاَّمات وريحُ نفسِه منتهى بصره قال فيطلبه حتى يدركه بباب لُدِّ فيقتله قال فيلبت كذالك ماشاء الله قال ثم يوحِي الله ان حَوّزعبادي الي الطورفاني قد انزلت عباداًلِي لايَدَان لِآحَدِ بقتالهم قال ويبعث الله ياجوج وماجوج وهم كماقال الله "وهم من كل حدب ينسلون"،قال ويمرُّ اولهم ببُحيرة الطبرية فيشرب مافيهاثم يمُرُّ بهاآخِرُهم فيقولون لقدكان بهذه مرة ماء ثم يسيرون حتى ينتهواالى جبل بيت السقدس فيقولون : لقدقتَلنَامن في الارض فَهَلُمَّ فلنقتل من في السماء فيرمون بنُشَّابهم الى

السماء فيرُ دَّاللهُ عليهم نُشّابهم مُحمرًا دَماً ويُحاصَرُ عيسىٰ بن مريم واصحابُه حتى يكون رأسُ الثوريومشذِ خيراً لهم من مالله دينارلاحدكم اليوم قال: فيرغبُ عيسىٰ بن مريم الى الشواصحابه ،قال: فيُرسِلُ الشعليهم النَّعَفَ في رِقابهم فيصبحون فَرسىٰ مَوتىٰ كموت نفس واصحه ،قال: ويهبِطُ عيسىٰ واصحابه فلايجدُ موضع شِيرِ الاوقدملائه زَهَمَتُهم ونَتُنَهُمُ ورَماء هم قال فيرخب عيسىٰ الى الشواصحابه قال فيرسل الشعليهم طيراً كاعناق البُخت فتحمِلهم فَتطرَحُهُم بالمَهبَل ويَستوُقِد المسلمون من قِسيّهم ونُشّابهم وجعابِهم سبع سنين ويرسل الشعليهم مطراً لايُكن منه بيت وَبَر ولامَدر قال: فَيغسِلُ الارضَ فيتركها كالزُّلقَة قال ثم يقال للارض أخرِجى ثمرتك ورُدّى بركتك فيومئذِ تاكل العِصابةُ الرمانة ويستظلون بقم يقال للارض أخرِجى ثمرتكِ ورُدّى بركتك فيومئذِ تاكل العِصابةُ الرمانة ويستظلون بقصحفِها ويبارك في الرِّسل حتى ان الغِئامَ من الناس لَيكتفُون باللقحة من الابل وان القبيلة لَيكتفون باللقحة من الغنم فبينماهم كذالك اذبعث ليكتفون باللقحة من العنم فبينماهم كذالك اذبعث الشريحافقبضت روحَ كل مؤمن ويبقىٰ سائر الناس يتهارجون كمايتهارج الحُمر فعليهم تقوم الساعة". (غريب حسن صحيح) واخرجه مسلم واحمد رحمه ماالله.

71

حفرت نواس بن سمعان رکلا فی رضی الله عند سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ رسول الله سلی الله علیہ وسلم فی ایک دن شخ کے وقت د جال کا تذکرہ فرمایا پس اس کے حال کو نیچا بھی کیا اور بلند بھی کیا (لیعنی اس کی حقارت بھی پیش کی اوراس کی بردی بردی کرقوت بھی بیان کئیں) حتی کہ ہم اس کو مجودوں کے جمنڈ میں (یا کنارے پر) سجھنے لگے چنا نچہ ہم رسول الله سلی الله علیہ وسلم کے پاس سے لوٹ مکے (لیعنی گھروں کو چلے مکے) پھرشام کے وقت دوبارہ آپ سلی الله علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ سلی الله علیہ وسلم نے ہمارے خوف کو بھانپ لیا اور فرمایا تمہیں کیا ہوا؟ ہم نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! آپ نے ضح دجال کا ذکر کیا اور اسے پست بھی کیا اور او نچا بھی ، یہاں تک کہ ہم نے اسے مجودوں کے درختوں کے پاس تصور کیا،

آپ سلی الله علیه وسلم نے فرمایا میں دجال کے علاوہ ایک اور چیز کاتم پرخوف کرتا ہوں (کیونکہ) اگروہ فکلے اور میں تمہارے درمیان موجود رہاتو میں تم ہے آگے ہو ھکراس پر جمت میں عالب رہوں گا، اوراگروہ فکلے اور میں موجود ضرباتو ہرآ دی اپنے طور پر (لینی اپنی طرف ہے) جمت پیش کر کے اس پر عالب آجائے گا (لینی : پکے مؤمن) اور میرے بعد اللہ ہر مسلمان کا محافظ ہے (لینی میں رہوں یا ندر ہوں اللہ تمہاری حفاظت کرے گا)

دجال جوان ہے اس کے بہت زیادہ تھنگھریا لے بال ہیں اس کی آنکھاپی جگہ باقی ہے (لیعنی باوجودیکہ باہر کی طرف نکلی ہوئی ہے) وہ عبدالعزیٰ بن قطن کے ہم شکل ہے تم میں سے جوبھی اس کودیکھیے تو سورۃ الکہف کی شروع کی آیتیں پڑھ لے (کیونکہ یہ آیات دفع فتنہ کے لئے مجرّب ہیں)

آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا وہ شام اور عراق کے درمیانی علاقے سے برآ مدہوگا ہی خراب ویربادکرے گادائیں بائیں کو (بعنی دونوں جانب فساد پھیلائے گا) اے اللہ کے بندو! ثابت قدم رہو! ہم نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! زمین میں اس کار ہنا کتنا ہوگا؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: چالیس دن، ایک یوم سال جتنا ہوگا دوسرامہینے کے برابر ہوگا اور ایک (تیسرا) دن ایک ہفتے کے مساوی ہوگا جبکہ باتی تمام دن تمہارے دنوں (بعنی معمول کے ایام) کے بقدر ہوں گے، حضرت نواس فرماتے ہیں ہم نے عرض کیا: اے اللہ کے رسول! آپ بتا کیں کہ جودن سال کے برابر ہے تواس میں ہمارے لئے ایک ہی دن کی نمازیں کافی ہوجا میں گی؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا نہیں بلکہ اس کا اندازہ (حساب) لگالین، ہم نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! زمین میں اس کی تیزر فرای کتی ہوگی؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جسے بادل (یابارش) ہوتا اللہ کے رسول! زمین میں اس کی تیزر فراری کتی ہوگی؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جسے بادل (یابارش) ہوتا ہے۔

چنانچہوہ ایک قوم کے پاس آئے گا اور ان کو اپنی (الوہیت کی) دعوت دے گا تو وہ لوگ اس کو چھٹلا ئیں گے اور اس کے دعوے کو مستر دکریں گے چنانچہ وہ ان کو چھوڑ کروا پس لوٹے گا پس ان کے اموال اس کے پیچھے چلے جائیں گے جب وہ سو کر میں گے تو ان کے پاس پھر بھی نہیں بچا ہوگا پھر وہ ان لوگوں کے پاس آئے گا اور انہیں دعوت دے گا تو وہ لوگ (یا دوسر لوگ) اس کی بات مان لیس گے اور اس کی تقدین کرلیں گلا اور انہیں دعوت دے گا تو وہ لوگ (یا دوسر لوگ) اس کی بات مان لیس گے اور اس کی تقدین کرلیں گلا یہ اور ایک اور تا بین کو کھم دے گا کہ بارش برسا! تو بادل بارش برسائیں گے اور زبین کو تھم دے گا کہ گھا س اُگا تو وہ چارہ وغیرہ اُگائے گی چنانچہ ان کے جانور شام کو چراگاہ سے واپس آئیں گے تو ان کے کو ہاں لیے (بڑے) ہوں گی اور تھنوں میں دودھ بہت ہوگا، پھر وہ ایک ویر ان نو وہ نوٹین کے پاس آئے گا اور اس سے کہا کہ اپنے خزانے با ہر نکال دو، پس جب وہ وہ ہاں سے واپس لوٹے گا تو وہ خزانے اس کے پیچھے شہد کی تھیوں کے بہت سے سر دار ہوں (جن کے پیچھے شہد کی تھیوں کے بہت سے سر دار ہوں (جن کے پیچھے شہد کی تھیوں کے عول کے فول کے فول ہوتے ہیں)

مچرد جال ایک جوان آ دمی کوتلاش کرے گا (جواس کا مخالف ہوگا) جو بھرا ہوا ہوگا جوانی ہے اس پرتلوار

ے وارکر کے اس کے دوگلڑے کرے گا، پھراہے بلائے گا (ایعنی زندہ ہوکرا شخے کو کہے گا) تو وہ جہکتے ہوئے چہرے اور (دجال پرطنز ا) مسکرا تا ہواسا سنے آئے گا ابھی وہ (جوان) اس حالت پر ہوگا (یعنی دجال کے دوبارہ نشانہ بننے سے قبل ہی) اچا تک عیسیٰ بن مریم (علیہ السلام) دمش کے مشرقی جانب سفید بینار کے (او پر) پاس دوزرد کپٹر وں میں اتر جا کیں گے دراں حالیہ وہ اپناہا تھ فرشتوں کے باز وؤں پر رکھے ہوئے ہوں گے، پھر سر بھکا کیں گو قطر نے پکییں گے اور جب سراٹھا کیں گو موتوں کی طرح چا ندی کے دانے جھڑیں گے (یعنی پانی کے صاف قطر ہے گریں گے اور جب سراٹھا کیں گو موتوں کی طرح چا ندی کے دانے جھڑیں گا تو وہ مرے گا اور ان کی سانس کی خوشبوتا حدثگاہ پنچ گی ۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا حضرت عیسیٰ دجال کو وُھونڈیں گے تو (مقام) گذ کے دروازے کے پاس اسے پاکیں گا اور پاتے ہی قبل کر دیں گے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا پس علیہ السلام اسی طرح رہیں گے جتنا اللہ کو منظور ہوگا، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا پس علیہ السلام اسی طرح رہیں گے جتنا اللہ کو منظور ہوگا، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا پس علیہ السلام اسی طرح رہیں گے جتنا اللہ کو منظور ہوگا، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا پس علیہ بند وں کو، کوہ طور پر لے جاؤ کہ میں نے اپنے ایسے بندے بھیج ہیں جن سے لڑنے کی تا ہے بندے بیا ہیں۔

چنانچاللہ یاجوج ماجوج کو تھے گا دو وہ ایسے ہی ہوں گے تھیے اللہ نے فرمایا ہے ' وہ ہر بلندی سے پھیل پڑیں گے' (یعن پھلے دوڑتے آئیں گے) آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ان کے اگلے ' تحیر ہ طریبہ پر سے گذریں گے تو اس کا سارا پانی پی جائیں گے ، پھران کے بعد والے اس پرسے گذریں گے تو (اسے خٹک پاکر) کہیں گے کہ بھی یہاں پانی تھا (کہ اس کا اثر کیچڑ پاتی ہے) پھر چل پڑیں گے اور چلتے چلتے بیت المقدس کے کہ بھی یہاں پانی تھا (کہ اس کا اثر کیچڑ پاتی ہے) پھر چل پڑیں گے اور چلتے چلتے بیت المقدس کے کہ بھی یہاڑ کے پاس پہنچ جائیں گے تو کہیں گے کہ ہم نے سب زمین والوں کوتل کر دیا، آؤاب آسان والوں کوتل کر ڈالیس، چنانچہ وہ اپنے تیرآسان کی طرف بھینکیں گے، اللہ تعالیٰ ان کے تیروں کونون آلودلوٹا ئیں گے اور (ادھر)عیدیٰ بن مریم (علیہ السلام) اور ان کے ساتھیوں کو کوہ طور پر دوک لیاجائے گا (فاقہ کا بیا ما ہوگا) حق کہ اس وقت ان کے لئے تیل کا سراس سے بھی بہتر ہوگا جتنے آپ کے لئے آج سودینار ہیں، آپ سلی اللہ علیہ وسلم اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی میں موں گے تو اللہ ان (یا جوج ، ماجوج) پر ایک قشم کے کیڑ سے مسلط کر دیں گے جو ان کی گرونوں میں ہوں گے پس (نتیجۂ) سارے یا جوج ، ماجوج نئی ہوگا کی اور ان کے ساتھی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی میں اور ان کے ساتھی اور ان کے ساتھی اللہ علیہ وسلی میں میں جوج جبرائی می جائیں اور ان کے ساتھی کی جبرائی براشت کے بقدر خالی جگر نہیں پائیں گے گراس کو یا جوج ، ماجوج کی چکنائی اور بدیواورخون اثریں کے جبرائی بالشت کے بقدر خالی جگر نہیں پائیں گے گراس کو یا جوج ، ماجوج کی چکنائی اور بدیواورخون

نے جردیا ہوگا، آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا اب عیسی (علیہ السلام) اللہ کی طرف خوب متوجہ ہوں گے اوران کے ساتھی بھی ، آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا پس اللہ ان پرا یہ پرند ہے جیسے بین کے ، اوران کی کمانوں اور تیروں اور طرح کمبی ہوں گی ، تو وہ ان کواٹھا کر پہاڑوں کے دروں میں پھینک دیں گے ، اوران کی کمانوں اور تیروں اور ترکشوں سے مسلمان سات سالوں تک آگ جلاتے رہیں گے ، اوراللہ ان پر بارش برسائیں گے جس سے کوئی شمہ یا گھر نہیں بچے گاپس وہ زمین کو دھوکر شیشہ کی طرح صاف ستحراکردے گی ، آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا اس کے بعد زمین سے ارشاد ہوگا کہ اپنے میوے اور پھل نکال! اورا پی برکت دوبارہ لوٹا! پس اس وقت ایک جماعت ایک انارکھائے گی اوراس کے چھلکے کی چھاؤں میں آرام کرے گی ، اسی طرح دودھ میں برکت دی جائے گی یہاں تک کہ تازہ جنم دینے والی ایک اؤٹنی کا دودھ کی جماعتوں کے لئے کافی ہوگا اورا یک قبیلہ ایک گائے گی یہاں تک کہ تازہ جنم دینے والی ایک اوراس کے چھوٹا قبیلہ تازہ جنم دینے والی برکن (کے دودھ) پر برکرے گا،

دریں اثنا کہلوگ اسی حالت پر ہوں گے کہنا گہاں اللہ ایک ہوا بھیجیں گے جو ہرمسلمان کی روح قبض کرلے گی اور باقی (پُرے) لوگ نچ جائیں گے ان کا حال سے ہوگا کہ بے حجاب عورتوں سے جماع کریں گے جیسے گدھے کیا کرتے ہیں۔ پس انہی لوگوں پر قیامت آئے گی۔

تشری : قوله: "فحقض فیه و رَفّع " دونوں میں فائین مشدد ہیں یعنی دجال کواعور کا ناوغیرہ کہدکر اسے معمولی نوعیت کا شخص قرار دیا اوراس کے خوارق کا ذکر فرما کراس کا ظاہری رعب و دبد بدظا ہر فرمایا ۔ قبول ه : "حتی ظنناہ فی طائفة النحل" کنایہ ہے شدت خوف سے کیونکہ جس چیز سے ڈرلگتا ہے وہ قریب ہی محسوس ہوتی ہے یہ مطلب نہیں کہ وہ محبور کے جھنڈ وجھر مث کے اندر محسوس ہور ہاتھا کیونکہ یہ تو یقین تھا کہ اس کا ظہور بعد میں ہوگا۔ قبول له : "غیر المد جال اخوف لی علیکم" امام نووی فرماتے ہیں کہ مرادائم کہ مصلین ہیں لیمن محمول ہور کے قریب خواہ محمول ہور کے محمر انوں کا فتند حجال کے فتنہ سے زیادہ خطر ناک ہے محمول میں ہے کہ قریب خواہ جھوٹا ہوزیادہ خطر ناک ہوتا ہے ۔ تد ہر

قوله: "فاناحجیجه" فعیل بمعنی فاعل ہے جمت سے مشتق ہے لین میں جمت قائم کرنے میں اس پر عالب رہوں گا۔ قول ہے: "فامر ءُ حجیج نفسه" مفاف مقدر ہے ای فکل امر اُلهذا مبتدا معرف ہی ہے پوراجملہ اس طرح بنتا ہے "فکل امر اُ یحاجه ویحاوره ویغالبه لِنفسه کذاقال الطیبی". قوله: "قطط" بروزن سبب بہت مُوے ہوئے بال جو بہت معیوب اور یُرے لگتے ہیں اور جوجعودت حن کی

علامت ہوہ معمولی پیدار بال ہوتے ہیں۔قولمہ: "عینه قائمة" مسلم کی روایت میں طافئہ ہے بینی مرتفعۃ مطلب یہ ہے کہاس کی آکھ خراب اور بنورہوگی ، اپنی جگہ اٹھی ہوئی باہر کی طرف ابحری ہوئی قائم ہوگ ۔قوله: "فعاث" بمعنی افسد یعنی وائیں بائیں بخت فساد پھیلائے گا۔قوله: "المبثوا" لبث بابس سے ہے بمعنی مکث مکت بمعنی تھم را واور ثبات کے ہے ، مسلم کی روایت میں "فعالبتوا" ہے۔قولہ: "یوم کسنة النے "جیسا کہ پہلے عرض کیا جاچکا ہے کہ وہ زمانہ خوارق کا ہوگا لہذا اس میں کسی طرح کا استبعاد بیں ہے خواہ وہاں کوئی ظاہری اسباب پیدا کردیے جائیں یا باطنی وعیبی۔

قوله: "ولکن اقدرواله" اس سے فقہاء نے استباط کر کے ناروے وغیرہ ان ممالک کے باشدوں

کے لئے جو ۲۱ درج سے زیادہ دوری پرواقع ہیں نمازوں کے اوقات کواندازے کے مطابق پڑھنے کا تھم
دیا ہے اس میں شالی ناروے بن لینڈ اور سویڈن وغیرہ شالی روس اور شالی امریکہ کے قطب سے قریب ترین خطے
داخل ہیں جبکہ جنوبی قطب کے پاس اب تک انسانی آبادی نہیں ہے۔ مندرجہ بالا منطقوں میں بیر مسئلہ جون کے
مہینے میں پیدا ہوتا ہے۔ قبوله: "ہم ماتی القوم" فاہر بیہ کہ دیودی لوگ ہوں گے جن کے پاس وہ پہلے آیا تھا
مہینے میں پیدا ہوتا ہے۔ قبوله: "ہم ماتی القوم" فاہر بیہ کہ دیودی لوگ ہوں گے جن کے پاس وہ پہلے آیا تھا
کیونکہ معرفہ جب معاورہ وجائے تو ٹائی عین اولی ہوتا ہے۔ قبولہ: "سسار حتھہ" ان کے جانور۔ قبولہ انڈڑی " کسی بھی چیز کی بلندترین جھے کو کہتے ہیں گرعوماً کوہان کی چوٹی اور او پروالے جھے پراطلاق ہوتا ہے مفرد
ذروۃ بکسرالذال وضمتھا آتا ہے بیاور مابعد کا جملہ "وامَدہ حبواصو"، زیادہ کھانے اور فر بوموٹے ہونے
ذروۃ بکسرالذال وضمتھا آتا ہے بیاور مابعد کا جملہ "وامَدہ حبواصو"، زیادہ کھانے اور فر بوموٹے ہونے
اور کو کھی پھولی ہوئی اور تھن دودھ سے بھرے ہوئے ہوں گے۔ قوله: "کیعاسیب النحل" ، بیعوب کی بہتے ہے
اور کو کھی پھولی ہوئی اور تھن دودھ سے بھرے ہوئے ہوں گے۔ قوله: "کیعاسیب النحل" ، بیعوب کے بیتھے
شہد کی کھیاں ہوئی ہیں اور انہائی سرعت سے اس کی بیروی کرتی ہیں جبکہ یعاسیب میں یہ تعداداور وقار اور

قوله: "ثم یدعور جلاشابا النع" باورکیاجا تا ہے کہ فیخص حضرت خضرعلیہ السلام ہوں گے گرابن العربی ہے۔ العربی ہے۔ واللہ النع مقول ہے: "مسمتلیاً" جوانی سے بھراہونا کنایہ ہے بھر پورجوانی سے۔ واللہ اعلم قول ہے: "جوز لتین" ای قطعتین" اس میں جیم کا کسرہ فتح سے افضل ہے، ملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ ان دونوں مکروں کو دوردور بھینک وے گاجن کے درمیان میں تیر چھینکے جتنا فاصلہ ہوگا اور مقصد لوگوں کو باور کرانا ہوگا جیسے

جادوگراور شعبده بازلوگ کرتے ہیں۔ قول الدہ و فیقبل یَتَهَلُلُ و جهد " یعنی اسے کے گاکرزندہ ہوکراٹھواور میرے پاس آجا و کیس وہ اُٹھ کرآئے گاجس کا چہرہ چمکا ومکتا ہوگا۔ قسول اللہ الدجال یعنی وہ وجال پر ہنے گا اور کے گاکہ یہ کیے خدا ہوسکتا ہے ... بخاری شریف جلداص ۲۵۳ پر ہے کہ یہ واقعہ دینہ منورہ کے باہر قریب ہیں ہوگاجب بیخض زندہ ہوجائے گاتو کہنے گے "واللہ ماکنت قط اسلہ بصیب وہ منی المیوم فیقول الدجال اقتلہ فلایسلط علیہ" یعنی جھے آجا سبات کا زیادہ یقین ہوگیا کہتم وجال ہوگیا کہتم وجال ہوگیا کہتم وجال ہوگی دوبارہ مارنے سے قاصرر ہے گا، گویا اس کی قوت وشوکت اور ظاہری رعب وہ گیا کہتم وجال ہوگی دوبال اسے دوبارہ مارنے سے قاصر رہے گا، گویا اس کی قوت وشوکت اور ظاہری رعب وہ کہتا گا جائے ہوگیا ہے کہ وہ زمانہ خوارت کا ہوگا اس کے ہاتھوں بیت المقدس کے قریب ہوگا۔

ودید ہے کا خاتمہ بی ہوجائے گا جبکہ کمل صفایا حضرت عینی علیہ السلام کے ہاتھوں بیت المقدس کے قریب ہوگا۔

گے جن میں لوگوں کے لئے زبر دست آزمائش وامتحان ہے دجال کے اور بھی بہت ی خصوصیات ہیں جو شناف روایات میں پائی جاتی ہیں مثلاً وہ جس گدھے پرسوار ہوگا اس کے دونوں کا نوں کے درمیان فاصلہ چاکیس کرکا ہوگا جس سے فتنے کا ہول اور بھی بڑھے ہی ہو اور کیا ہوائی جہازم او ہواور اسپے معنی حقیق پر بھی محمول کرنامکن ہیں جیسا کہ آج کل کا دوئی کا نظریہ فروغیا رہا ہے ممکن ہا ہوائی جہازم او ہواور اسپے معنی حقیق پر بھی محمول کرنامکن ہیں جیسا کہ آج کل کلونگ کا نظریہ فروغیا رہا ہے ممکن ہاں سے بڑے برے جانور معرض وجود میں آجائے۔

خوارق کی چھوشمیں:۔خیالی وغیرہ میں امر خارق للعادۃ کی تقسیم کچھاس طرح کی گئے ہے کہ جس کے ہاتھوں امر خارق دکھایا جاتا ہے وہ یا تو دین ساوی کا تالع ہوتا ہے یانہیں ہوتا ہے پھرفتم اول میں وہ خض یا تو نبوت کا مدعی ہوتا ہے یانہیں ہوتا ہے اگر مدعی نبوت ہوتو امر خارق قبل الدعوی ارباص کہلاتا ہے اور بعد الدعوی معجزہ، جبکہ غیر مدعی نبوت اگر ولی ہوتو اس سے سرز دہونے والا امر خارق کرامت ہے اور عام آدی کے بارے میں معونت ہے ۔ قسم دوم میں اگر امر خارق اس کے دعوی کے مطابق ہوتو استدراج کہلاتا ہے جبکہ ناموافق کو اہانت کہتے ہیں۔

قول د "مهرو دتین" دال اور ذال دونوں جائز ہیں البتد دال کے ساتھ اکثر اور زیادہ شہور ہے وہ کیڑے جس کو ورس اور زعفر ان سے رنگا گیا ہو لیعنی زرد ۔ قسول د "طاط ا" ہمز تین ہمغنی خصل لیمنی جب سرجھا کیں گے۔قول د: "تے گر " ماضی معلوم کا صیغہ ہے ہمغنی نزل لیمنی اتریں گے اور ٹیکیس گے ۔ قبول د "جمان" بضم الجیم و تخفیف المیم موتیوں کی طرح چاندی کے دانوں کو کہتے ہیں مطلب یہ ہے کہ حضرت عیسی علیہ "جمان" بضم الجیم و تخفیف المیم موتیوں کی طرح چاندی کے دانوں کو کہتے ہیں مطلب یہ ہے کہ حضرت عیسی علیہ

السلام كى مرمبارك كے بالوں سے انتہائی صاف پانی چاندی اور موتیوں کی مانند كے قطرے گریں گے۔ چونکہ حضرت عیسی عمام بین شاکر کے آسان پراٹھالئے گئے تھاس لئے بالوں سے پانی شکیے گاجولوگ سائنس كے نظرية اضافت كوجانتے ہیں ان كے لئے يہ حقیقت مجھنا نہایت آسان ہے۔ قبولہ: "و لایہ جد دیم نفسه المنے" چیسے اللہ تبارک و تعالیٰ نے ان كے سائس اور آواز میں مردوں كوزندہ كرنے كی قوت و دیعت فرمادی تھی اس كے برعكس اب زندوں كو مارنے كی طاقت و دیعت فرمائیں گے كہ پہلے زمانہ میں طِب كاعروج تھا تواس وقت يہی مجزوم ناسب تھا جب كدوبارہ آمد پرایٹی طاقت اور مہلک ہتھیار كامقابلہ ہوگا تو دوسر امناسب ہوگا۔

قوله: "حتى يدركه بباب أد" بضم اللام وتشد يدالدال، أد تل ابيب سے جنوب مشرق ميں اتھاره كلوميٹر كے فاصله برايك جھوٹا ساشېر ہے يہاں اسرائيل نے دنيا كاجد يرترين سيكورٹی سے ليس ايئر پورث بنايہ مكن ہے كہ دجال يہاں سے فرار كي كوشش كرنا چا ہتا ہوجس كو حضرت عينى عليه السلام ناكام بنائيں گے۔ قوله: "عِباد ألمى" اتنى تى بات تو طے شدہ ہے كہ يا جوج ، ما جوج وحثى ، جاہل اور جفائش اور ظالم شم كوگ بيں مگراس كے ساتھ وہ سارے كافر بھى ہوں گے؟ تو حضرت تھانوى صاحب المسك الذكى ميں فرماتے بيں كہان كم سراس كے ساتھ وہ سارے كافر بھى ہوں گے؟ تو حضرت تھانوى صاحب المسك الذكى ميں فرماتے بيں كہان كي برايمان يا كفر كا حكم نہيں لگانا چا ہے اگر چہ وہ كمى ايك حالت سے خالى نہيں ہوں گے اور جہاں تك آسمان كى طرف تير بھينك كاتعلق ہے تو بيزيادہ ہے الت كانتيجہ ہوسكتا ہے اور اللہ عزوج کی کا معاملہ ہر بندے كے ساتھ اس كى حالت كے مطابق ہوتا ہے۔

المستر شدعرض کرتاہے کہ عمومات سے یا جوج ، ماجوج کا بے راہ وگراہ ہونے کا تا کڑ ملتاہے ممکن ہے کہان میں اچھے کرے دونوں تتم کے لوگ ہوں مگر غالب اکثریت شاید کفار کی ہو۔واللہ اعلم

قوله: "لایدان" یرکا شنیرائے مبالغہ ہے یعنی کی کا قدرت وطاقت نہیں کوان سے مقابلہ کرسکے۔
قوله: "ببحیرة الطبویة" بحیرة طبریہ ایک بہت بوی جھیل ہے جواسرائیل کے شال مشرق میں اردن کی سرحد
کے قریب واقع ہے شالاً وجنوباس کی لمبائی شیس (۲۳) کلومیٹر اور چوڑائی شال میں زیادہ سے زیادہ تیرہ (۱۳)
کلومیٹر ہے جبکہ انتہائی گہرائی کے اف ہے کل رقبہ ۱۹۲۱ مربع کلومیٹر ہے۔قبولہ: "النغف" بروزن سبب ایک
سفید شم کے کیڑے ہیں جو جانوروں کی ناک میں پیدا ہوتے ہیں واحد نعفۃ آتا ہے۔قبولہ: "فرسی" فراس کی
جمع ہے جیسے "قت لی بھیل کی جمع ہے فریس وہ ہوتا ہے جسے کوئی حیوان مفترس یعنی بھاڑنے والا جانورزشی کرک
پھاڑ چیردے۔ قبولہ انتی "بسکون الناء

بد بوکواور بکسرالاً عبد بودار چیز کو کہتے ہیں لینی ان کی چی بی بھناہ ف اور دیگر بد بوداراشیاء اورخون نے زمین کو جردیا ہوگا۔ قبولہ: "المہ بل کھائی اور در ہے کو کہتے ہیں۔ قبولہ: "قسیه م" بکسرالقاف والسین و تشدید المیاء توس کی جمع ہمنی تیر و تشدید المیاء توس کی جمع ہمنی تیر کے ہے۔ قبولہ: "کالزلفة" بنتی الزاء واللا م کے ہے۔ قبوله: "کالزلفة" بنتی الزاء واللا م یہ لفظ بجائے فاء کے قاف کے ساتھ بھی پڑھا جا سکتا ہے آئینہ اور شخصے کو کہتے ہیں۔ قبولہ: "عصابة "بکسرالعین دس تا چا لیس آدمیوں پر شمل جماعت کو کہتے ہیں۔ قبولہ: "بِقحفها" بکسرالقاف چھاکا۔ قبولہ "الرسل" کسرالراء دود دے۔ قبولہ: "فی میں اس کا واحد نہیں اس کا واحد نہیں آتا ہے۔ قبولہ: "لفت کی جمع کی اس کا واحد نہیں اس کا واحد نہیں آتا ہے۔ قبولہ: "لفت حق و اور ٹمنی وغیرہ جس کو بچہنم دینے میں زیادہ عرصہ نہ گذر ام ویعنی تازہ۔ قبولہ: "فخذ" بطن سے جھوٹا قبیلہ جواقر بہ پر شمل ہو۔ "فخذ" بطن سے جھوٹا قبیلہ جواقر بہ پر شمنل ہو۔ "فخذ" بطن سے جھوٹا قبیلہ جواقر بہ پر شمنل ہو۔

قسو ل۔ "هسرج" بسکون الراء کسی چیزی کثرت کو کہتے ہیں یہان مراد کثرت سے اور بے شری سے جماع ہے یعنی ان لوگوں میں زناعام ہوگا اور اس میں کسی سے شرم وحیاء بھی نہیں کی جائے گی بلکہ گدھوں کی طرح جہال موقعہ میسر ہوخواہ پر دہ ہویا نہ ہواس میں لگ جائیں گے پس انہی پر قیامت آئے گی کہ وہ حدا نسانیت سے گذر گئے ہوں گے وہ انسان نما جانور ہوں گے جبکہ بیز مین انسانوں کے لئے ہے نہ کہ جانوروں کے لئے اس لئے وہ قیامت کے زلز لے سے نیست ونا بود کردئے جائیں گے،علاوہ ازیں ان لوگوں میں بت پرستی بھی عام ہوجائے گی۔

ملحوظ: - ایک روایت میں ہے کہ دجال جب حضرت عیسیٰ علیہ السلام کودیکھے گا تو نمک کی طرح پگل جائے گالہذایا توعیسیٰ علیہ السلام اس کواس حالت میں قبل کریں گے یاقل کی نسبت مجازی ہے کے عیسیٰ علیہ السلام سب قبل بن جا کیں گے۔

باب ماجاء في صفة الدجال

وجال کی حالت کے بیان میں

"عن ابن عمرعن النبي صلى الله عليه وسلم انه سئل عن الدجال فقال: آلاان ربكم ليس باعور آلاو انه اعور عينه اليمني كانهاعِنَبة طافية". (حسن صحيح غريب)

حضرت ابن عمرضی الله عنهما سے مروی ہے کہ نبی صلی الله علیه وسلم سے دجال کے متعلق ہو چھا گیا تو آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا آگاہ ہو کہ تمہارارب کا نانہیں، آگاہ ہو کہ دجال کا ناہے اس کی داہنی آگھ کو یا انگور کا انجرا ہوا دانہ ہے۔

تشریخ:۔اس باب میں دجال کی علامت بتلا نامقصودہ کیونکہ صفت بمعنی حالت ونشانی کے آتی ہے اپنی دجال خدا کیسے بن سکتا ہے؟ جبکہ وہ خود کو عیوب سے نہیں بچاسکتا ؟ تفصیل سابقہ باب میں گذری ہے۔

باب ماجاء ان الدجال لايدخل المدينة

د جال مدينه مين داخل نبيس موگا

"عن انس قبال قبال رسول الله صلى الله عليه وسلم : يأتي الدجال المدينة فيجد الملائكة يحرسونها فلايد خلها الطاغون ولاالدجال انشاء الله". (صحيح)

حضرت انس رضی الله عند سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ رسول الله سلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ دجال مدینہ (میں داخل ہونے کی غرض سے) آئے گا تو فرشتوں کواس کا پہرادیتے ہوئے یائے گا، پس مدینہ میں نہ تو طاعون داخل ہوسکتا ہے اور نہ ہی دجال۔

تشری : طاعون ایک وبائی مرض ہے جوجلدیں پھوڑے کی طرح خطرناک ورم کی شکل میں ظاہر ہوتا ہے یہ یاری وبائی بھی ہے اور مہلک بھی وبائی امراض کی تفصیل پہلے گذری ہے۔

بخاری شریف میں حضرت انس رضی اللہ عنہ سے مرفوع حدیث مروی ہے کہ دجال مکہ ومدینہ کے علاوہ تمام شہروں میں داخل ہوگا جبکہ حرمین کے نقاب لیعنی داخل ہونے کے مقامات (درواز وں اور کھیوں) پرصف بندی کئے ہوئے فرشتے ہول گے جواس کی حفاظت کریں گے پھر مدینہ منورہ میں تین بارزلزلہ آئے گا جس سے اللہ تبارک و تعالی ہرکا فرومنافت کو تکال باہر کردیں گے۔ (ص:۲۵۳ جلد: ۲ باب لاید خل الدجال المدینة)

جیسا کہ پہلے گذراہے کہ باطل قوت کے ظاہری غلبہ سے بھی مسلمانوں کی مرکزیت ختم نہیں ہوگی اس لئے دجال کی طاقت اوراسباب ظاہریہ کے لحاظ سے اس کی حکومت جتنی بھی وسیع اور مضبوط ہوگی مگر مخلص ایمان والوں پر اس کا کچھ بھی اثر نہ چلے گا۔اور نہ ہی ان کے مرکز و بیضہ تک اس کی رسائی ممکن ہوگی۔

"عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: الايمان يمان والكفرمن قِبَل

المشرق والسكينة لاهل الغنم والفخرو الرِّياء في الفدادين اهل الخيل واهل الوبر، يأتي المسيحُ اذاجاء دُبُرَ أحد صرفت الملائكةُ وجهَه قبل الشام وهناك يُهلك". (صحيح)

حضرت ابوهریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ ایمان تو یمنی ہے اور کفرمشرق کی طرف سے ظاہر ہوگا اور سکون (وقار) مبکری والوں میں ہوتا ہے جبکہ فخر اور دکھا واچیخے چلانے والوں میں ہوتا ہے جو گھوڑوں والے اور پشم (اونٹ اور خیموں) والے ہوتے ہیں مسیح (دجال) آئے گا تو جب احد کے پیچھے پنچے گافر شتے اس کا رُخ شام کی جانب موڑ دیں گے اور وہیں جا کے مرے گا۔

تشری : "الایسسان یسان" اصل میں یمنی منسوب بسوئے یمن تھا اخیر سے یا کوحذف کر کے اس کے عوض میں الف کا اضافہ کر دیا جا تا ہے ، چونکہ یمن ساحلی علاقہ ہے جس کی وجہ سے اس کا موسم معتدل رہتا ہے ۔ اورضا بطے کے مطابق معتدل خطے کے لوگوں کا مزاح بھی معتدل ہوتا ہے اس لئے معتدل خرب یعنی ایمان واسلام ان کے مزاج کے عین مطابق ہوتا ہے اور ہم مزاج چیز کوقبول کرنا آسان بھی ہوتا ہے ، دائم بھی ، اسی بناء واسلام ان کے مزاج کے عین مطابق ہوتا ہے اور ہم مزاج چیز کوقبول کرنا آسان بھی ہوتا ہے ، دائم بھی ، اسی بناء پراہل یمن والوں نے بغیر لڑائی کے ایمان کوقبول کیا گویا یہان کا طبعی تقاضا ہوتا ہے اس کی پچھنفسیل "باب ما جاء فی اھل الشام" من ابواب الفتن میں گذری ہے فلیرا جع۔

اس ارشاد کا مقصد اہل حرمین کی ایمانی حالت کی کمزوری بتانا نہیں بلکہ اہل یمن کی فضیلت مراد ہے نہ کہ افضلیت اور بلاغت میں ایسا ہوتا ہے کہ قابل ذکر چیز کی فضیلت کو اُجا گرکرنے کے لئے کلام میں ادوات حصر شامل کئے جاتے ہیں یا انداز کلام بظاہر مفیل کھر لایا جاتا ہے حالانکہ وہاں حصر مقصور نہیں ہوتا ہے جبیبا کہ مطول و مخضر المعانی وغیرہ میں ہے۔

"والکفرمن قبل المشرق" اگرمرادهیقی مشرق بوتو پیمشرق والوں سے مراد تبیلهٔ مضرب جواہل کین کے مقابلے میں ایمان سے پیچے رہا تھا اوران کا کفرشد یہ بھی تھا اورا گرعر فی مشرق مراد ہو جوعراق وایران وغیرہ ہیں تواگر کفرسے مرادهیقی کفر ہوتو مجوس کا فدہب مراد ہے ممکن ہے ہندومت اور بدھمت وغیر ہما بھی مراد ہولیکن اگر کفرسے مراد اعمال کفریہ ہوں تو پھروہ فتنے مراد ہوسکتے ہیں جو مسلمانوں کے باہمی جنگ وارتد ادک موجب بنے ،اور یہ سلملہ جاری ہے تا آئکہ دجال کا خروج مشرق سے ہوجائے غرض مشرق ایسے فتنوں کی جولان گاہ بنا ہوا ہے جبکہ جمین ان فتنوں سے محفوظ رہا ہے ، چنا نچہ فتنہ خوارج ،معزلہ ، روافض ، انکار حدیث اور قادیا نیت و ذکری سب مشرق فتنے ہیں۔

قوله: "والسكينة لاهل النغنم" يوصبت كااثر ظاهر فرمايا چونكه بكريال فرم الاراح اور متواضع جانوريس اس لئے ان كے چرانے والے پر شبت اثرات ظاہر ہوجاتے ہيں جبكہ اونٹ وغيره سركش اورطاقة وجانوريس جن ميں دهم چنيں ديگر نيست" كاجذبه پاياجا تا ہے توان كی صحبت ميں رہنے والے پر وبى اثر ہوگا۔ قبوله: "فَدَادِين" فَدَادِين" فَدَادِين" فَدَادِين " وَدِي الدال الاولى وه لوگ جو كھيتوں ميں اورجانوروں كے بيجھے چلا چلا كر بولتے ہيں اور چيختے ہيں۔ قوله: "وبو" اونٹ كے بالوں كو كہتے ہيں مراد خيمہ ہے يعنی خانہ بدوش اورد يہاتى لوگ فخر ومبابات ميں پيش پيش ہوتے ہيں يہ صحبت اور ماحول كامنوس اثر ہوتا ہے چانچ مشاہدہ ہے كہاكي عام ديہاتى ،گدھا چرانے والا بھى اپنى حالت پر فخر كرتا ہے بلكہ گاؤں ديہات والے عموماً ہركام ميں افخار كادامن تھا ہوئے ہوتے ہيں مجد بنانے ،مہمان نوازى اورد يگران امور ميں بھى مقابلے كرتے ہيں جن كامقعد محض اللہ كي خوشنودى كاحصول ہو۔

قول د: "بات المسيع" دجال کوسے کہنے کی وجدیہ ہے کہاس کی ایک آنکھ مسوح لین ہموار ہے
یا کثرت مساحت کی بناء پرسے کہلاتا ہے ، یہ لفظ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے لئے بھی بولا جاتا ہے مگراس کی
وجوہات مختلف ہیں مثلاً اندھے کوسے کرنے سے وہ ٹھیک ہوتا ، یاوہ کثرت سے سیاحت برائے عبرت یابرائے بہلیغ
فرماتے وغیرہ وغیرہ ۔

باب ماجاء فی قتل عیسی بن مریم الدّجال حسی بن مریم الدّجال حضرت عیل مضرت عیل مادجال کولّ کرنے کے بارے میں باب کی صدیث کی تشریح "باب ماجاء فی فتنة الدجال" میں عنقریب گذری ہے۔

باب (بلا ترجمه)

"وفيه عن قتادة عن انس الخ" الرباب كل صديث كاتشري "باب ماجاء في الدجال" من الذرى هـ - الدين الذي الدين الذي الدين الدين

باب ماجاء في ذكرابن صيّاد

ابن صياد كاذكر

"عن ابى سعيدقال صحبنى ابن صياد إمّا حُجّاجاً وإمّا معتمرين فانطلق الناس وتُوكتُ انساو هو فَلَمّا خلصتُ به اقشعررتُ منه واستوحشتُ منه ممايقول الناس فيه فلمانزلتُ قلتُ له ضَع متاعكَ حيثُ تلك الشجرة قال: فابصرَ غنماً فاخذ القدح فانطلق فاستحلبَ ثم اتسانى بلبن فقال لى: يااباسعيد إشرب افكرِهتُ ان اشرب عن يده شيئاً لِمَايقول الناس فيه فقلت له هذا اليوم يوم صائف وانى اكره فيه اللبن فقال: يااباسعيد لقدهممتُ ان اخذ حبلاً فاوثقه الى الشجرة ثم اَحتنِق لِمَايقول الناس لى وفِيَّ ، اَرأيتَ من خَفِيَ عليه حديثى فلن يخفى عليكم اأنتم اعلم الناس بحديث رسول الله صلى الله عليه وسلم ، يامعشر الانصار األَم يقل رسول الله صلى الله عليه وسلم الله عليه وسلم الله عليه وسلم الله عليه وسلم وسلم انه عقيم لا يولد له؟ وقد خَلَفتُ ولدى بالمدينة ، اَلم يقل رسول الله صلى الله عليه وسلم الله عليه والمدينة؟ الستُ من اهل المدينة؟ وهو ذا انطلِقُ معك الى مكة اقال : فوالله ما ذال يجىء بهذاحتى قلتُ فلعله مكذوب عليه، ثم قال ياباسعيد والله الخروب عليه، ثم قال ياباسعيد والله الخروب عليه، ثم قال ياباسعيد والله الخروب عليه، ثم قال فلتُ فلعله والده واين هو الساعة من الارض فقلتُ تباً لكَ سائر اليوم (حسن)

حضرت ابوسعید خدری رضی الله عنہ ہے مروی ہے فرماتے ہیں کہ میرے ساتھ ابن صیادہوگیادرال حالیہ ہم جج یا عمرہ کے لئے جارہے تھے پس لوگ آگے نکلے جبکہ میں اوروہ (ابن صیاد) دونوں پیچھے رہ گئے پس جب میں اس کے ساتھ تنہارہ گیا تواس ہے (ڈرکے مارے) میر رے رو نگلئے کھڑے ہوگئے اور میں نے اس ہے وحشت محسوس کی اس بات کی وجہ سے جولوگ اس کے بارے میں کہتے تھے (لیمنی کہ بید جال ہے) پس جب میں سواری ہے اُتر اتو میں نے اس سے کہا کہ تو اپناسامان اس درخت کے بنچے رکھ! ابوسعید خدری فرماتے ہیں کہ اس فرمیں نے اس سے کہا کہ تو اپناسامان اس درخت کے بنچے رکھ! ابوسعید خدری فرماتے ہیں کہ اس نے ایک بکری دیکھی تو پیالہ لے کروہ چلا اور دود ہودہ کر پھر میرے پاس آیا اور مجھ سے کہنے لگا: اے ابوسعید! بیو، مگر میں نے اس کے ہاتھ سے بچھ بینا مناسب نہیں سمجھا اس وجہ سے کہلوگ اس کے بارے میں چہی گوئیاں

کرتے تے پس میں نے اس سے کہا کہ آئ کا دن گرم ہے اور میں اس میں دودھ پنڈییں کرتا، پھروہ کہنے لگا اے ابوسعیدا میں چاہتا ہوں کہ ایک ری لے لوں ادراسے درخت سے باندھلوں پھرگلا گھونٹ کرمرجاؤں بوجہ اس بات کے جولوگ جھ سے اور میر سے بارے میں کہتے ہیں، آپ بتا کیں کہا گرمیری بات کی اور پر پوشیدہ ہے تو تم پر تو مختی نہیں ہو سکی اللہ علیہ وسلم کی حدیث سے خوب باخبر ہوا ہے انساری جماعت!
کیا رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم نے نہیں فر مایا ہے کہ وجال کا فر ہوگا؟ جبکہ میں مسلمان ہوں، کیا نہیں فر مایا رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم نے کہ وہ (دجال) ہے اولا دہوگا اور میں نے مدینہ ہوں اولا دچھوڑی ہے، کیا رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم نے کہ وہ (دجال) ہے اولا دہوگا اور میں نے مدینہ ہو کیا مدینہ والوں میں سے نہیں ہوں اور شان ہے کہ اب تیرے ساتھ کہ جار ہا ہوں ابوسعید خدری فر ماتے ہیں کہ تحد دالوں میں سے نہیں ہوں اور شان ہے کہ ابی کہ میرا گلاے ابوسعید! بخدا میں اس وقت زمیں میں کہاں ہونے لگا کہ اس پر چھوٹے الزامات لگائے گئے ہیں، وہ پھر کہنے لگا اب ابوسعید! بخدا میں می کہاں تا ہوں، خدا کی قتم میں اس (دجال) کوجا تنا ہوں اور اس کے باپ کو بھی پہچا تنا ہوں اور ہو کہا تیری ہالا کت ہو بھیشہ کے لئے (کہ تقرامعا لمہ پھر مشتبہ ہوگیا)۔

اس وقت زمیں میں کہاں ہے (ابوسعیدفر تے ہیں کہ) پس میں نے کہا تیری ہالا کت ہو بمیشہ کے لئے (کہ تیرامعا لمہ پھر مشتبہ ہوگیا)۔

تشری : ابن صادبتند یا الیاء کوابن صاکریمی کتے ہیں اصلی نام صاف تھا بعض نے عبداللہ بھی بتایا ہے۔ قولہ: "حجاجاً او معتمرین "صحبنی کے فاعل سے حال ہے۔ قولہ: "خلصت "ای انفر دت به لینی جب میں اس کے ساتھ اکیلارہ گیا تھا۔ قولہ: "اِقشعورت" ای قام شعری رو نکنے کھڑے ہوگئے میرے کیونکہ جھے اس کے بارے میں اندیشہ تھا کہ بید جال ہے۔ قولہ: "استوحشت "میں نے اس سے وحشت کیونکہ جھے اس کی اُنس کی ضدہ بہ اس بناء پر جب اس نے اپناسامان دو پہر کے آرام کے وقت اس دوخت کے نیچ محوس کی اُنس کی ضدہ بہ اس بناء پر جب اس نے اپناسامان دو پہر کے آرام کے وقت اس دوخت کے نیچ رکھا جہاں میں نے اپناسامان رکھا ہوا تھا تو میں نے اس سے کہا کہتم اپناسامان اس دوسرے درخت کے نیچ رکھا دورہ ہوں۔ قولہ: "اس محدود، تاکرہ فیمہ اللبن" لیخن عن رکھدو، تاکہ میں اس کے شرسے دوررہ ہوں۔ قولہ: "صائف"اکم ہے اس لئے آن گری کی سے وجہ میں نہیں پیتا۔ قسولہ بید کی یا بن محدود کے دود دھ بھی طبعاً گرم ہے اس لئے آن گری کی سے وجہ میں نہیں پیتا۔ قسولہ نہا خود کی دود دھ بھی طبعاً گرم ہے اس لئے آن گری کی سے وجہ میں نہیں پر لوگوں نے "اختنتی" گلاگونٹ کرخود کشی کرلوں۔ قبولہ "عقیم" بانجھ۔ قبولہ: "مکذوب علیہ "بینی اس پر لوگوں نے جھوٹ بولا ہے۔ قولہ: "سائو الیوم" باقی دن لینی ساری زندگی۔

ملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ چونکہ اس نے پہلے مسلمان ہونے کا دعویٰ کیا اور پھرعلم غیب کا مدعی بن گیا اور

مدع علم غیب کا فرجوتا ہے اس لئے اس کا معاملہ ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ پر پھرمشتبہ وگیا۔

ابین صیاد کے بارے میں علاء کی ایک جماعت کی رائے ہیہ کہ بیدونی دجال اکبرتھااور بعض صحابہ کرام رضوان النظیم کوبھی اس کے دجال ہونے کا جزم حاصل تھا چنا نچہ حضرت عمر ، حضرت جابراور حضرت ابن عمر رضی الند عنهم کا موقف بھی بہی تھا حتی کہ ان حضرات نے اس پوسم بھی کھائی ہے پھران میں دورائے پائی جاتی بیں ایک بید کہ ابن صیاد غائب ہوکراصفہان چلا گیا ہے جہاں سے وقت موعود پرخروج وظہور کرے گا جبکہ دوسری رائے کے مطابق وہ مرگیا ہے مگروقت مقررہ پر تھم خداوندی سے دوبارہ زندہ کیا جائے گا گویا کہ اس کے دیگر معاملات کی طرح یم کمل بھی کیے از خوارق العادت امر ہے، اور ایسا ہونا کوئی بعید از وقوع نہیں ہے مرحقتین کی دائے ہیں علم روہ دجال تو تھا کہ اس نے بہت سے معاملات کوخلا ملط کردیا تھالہذا اس میں دجل کے معنی پائے جاتے ہیں مگروہ دجال تو تھا کہ اس نے بہت سے معاملات کوخلا ملط کردیا تھالہذا اس میں دجل کے معنی پائے جاتے ہیں مگروہ دجال اعظم نہ تھا بلکہ دہ مدینہ منورہ میں مرگیا تھا بعض کے نزد یک تو بہتا ب کو محالہ کہ ہونا ہے کہ اس کے انجام کے بارے میں وقوق سے کہنا مشکل ہے ، جہاں تک بعض صحابہ کی تم کو تعنی کے تعرب کے مطابق تھی اور آ ہے ملی الندعلیہ وسلم کا ان کوشم کھانے سے نہ رو کنا بھی تو قف کی کا تین تھا اگر چہ کہی دوبات سے معلوم ہوتا ہے کہ ابن صیاد بھی ایک ابن تھا اگر چہ کہی نہی ہوتا ہے کہ ابن صیاد تھی ایک ابن تھا اگر چہ کہی دوبات سے معلوم ہوتا ہے کہ ابن صیاد تھی ایک ابن تھا اگر چہ کہی دیکھی تو تھا بی والند اعلم

ابن جرر وبعض دیگر شارحین کی رائے میہ کہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم کو د جال کی صرف علامات بتلائی گئ تھیں اور چونکہ ابن صیاد میں وہ اکثر علامات پائی جاتی تھیں اس لئے آپ سلی اللہ علیہ وسلم بھی ابتداء میں اس کے د جال ہونے یا نہ ہونے میں تو قف فرماتے مگر جب تمیم داری کا قصہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے بیان ہوا تب آپ سلی اللہ علیہ وسلم کا تو قف ختم ہوا اور اس محصور فی الجزیرہ کے بارے میں رائے مجتمع ہوگئی کہ وہی وجال اعظم

نوٹ: ۔ جولوگ ابن صیاد کے دجال ہونے کاباورکرتے ہیں وہ ابن صیاد کے مدینہ میں ہونے اورصاحب اولا دہونے وغیرہ کے بچھ جوابات دیتے ہیں کہ مثلاً بیعلامات اس کے خروج کے بعد ہوں گی نہ کہ ابتداءً گران کے قال کرنے کی چندال ضرورت محسوں نہیں کی گئی کیونکہ بیدائے کرورہے۔ واللہ اعلم وعلمہ اتم "عن ابن عسموان رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم مَرّبابن صیادفی نَفَرِ من اصحابه منہ عسر بن المنحطاب ہویلعب مع الغلمان عنداً طم بنی مغالة و ہو غلام فلم یشغر حتی

ضرب رسول الله صلى الله عليه وسلم ظهره بيده ثم قال: أتشهد انى رسول الله ؟ فَنظَرَ اليه ابن صياد للنبى صلى الله عليه وسلم على الله عليه وسلم المنت بالله ورسول الله عليه وسلم الله عليه وسلم المنت بالله ورسول الله على الله على الله عليه وسلم المنت بالله ورسول الله على الله على الله على الله على الله على الله على الله عليه وسلم المن ققال النبى صلى الله عليه وسلم الحراثم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الى قد حَبَاتُ لَكَ خبيئا، و حَبَاله "يوم تأتى السماء بدخان مبين" فقال ابن صياد: وهو الدخ، فقال رسول الله على الله عليه وسلم إخسافلن تعد وقد و كاذب عنقه فقال الله عليه وسلم إخسافلن تعد وقد و كاقل عمر يارسول الله الله الذن لى فاضرب عنقه فقال رسول الله عليه وإن لا يك فلاحير لك فى وسلم الله عليه وال الله عليه وإن لا يك فلاحير لك فى قتله قال عبد الرزاق يعنى الدجال".

حفزت ابن عمر رضی الله عنهما سے مروی ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم ایسیے صحابہ کی ایک جماعت کے ہمراہ جن میں عمریھی تصابن صیاد کے پاس سے گذر ہے جبکہ وہ بچوں کے ساتھ بنی مغالہ کے قلعے کے پاس کھیل ر ہاتھاوہ ابھی بچہ ہی تھالیں اسے آپ سلی الله عليه وسلم كى آمد كاية نہ چل سكاتا آئكرسول الله صلى الله عليه وسلم اپنادست مبارک اس کی پُشت پر مارا، پھرآپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا: کیاتم گواہی دیتے ہوں کہ میں التُدكارسول مون؟ توابن صيادنے آپ صلى التُدعليه وسلم كي طرف ديكه كركها: بان ميں كوابى ديناموں كه آپ أمِّيين كرسول بين ابن عر "فرمات بين كه پهراين صياد نے كہا نبي صلى الله عليه وسلم سے كه آپ كوائى ديتے مين کہ میں اللہ کارسول ہوں؟ تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں اللہ برایمان رکھتا ہوں اوراس کے رسولوں پر پھر نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: تیرے یاس کیا چیزآتی ہے؟ ابن صیاد نے کہامیرے یاس سجاا ورجھوٹا (یا پچ اورجھوٹ) دونوں آتے ہیں ،پس نبی صلی الله علیه وسلم نے فرمایا تیرے اوپر معامله گذند (خلط ملط) ہو گیاہے پھررسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمايا: ميں جھ سے ايك بات چھيا تا ہوں (تم بتا ؤوہ كياہے؟) اس كے ساتھ آپ صلی الله علیه وسلم نے "يوم تأتي السماء بدخان مبين " (آيت كوسحاب كے سامنے آہستہ تلاوت كرك یا) ول میں متعین ومنتخب فرمالی ، توابن صیاد کہنے لگاوہ "الله خ" ہے پس رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا پر ہے ہوتیری قدر ہرگزنہیں بوھے گی ،حفرت عرص نے فرمایا اے اللہ کے رسول! مجھے اجازت و بیجئے تا کہ میں اس کی گردن اڑادوں،آپ ملی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا (نہیں)اگریہ واقعی (وہ دجال) ہےتو پھرآپ اس پرمسلط نہیں

ہوسکتے (کیونکہاس کے لئے حضرت عیسیٰ علیہ السلام ہیں) اور اگریہ وہبیں تو پھر آپ کواس کے آل سے کوئی فائدہ نہیں ملے گا۔ راوی عبدالرزاق فرماتے ہے کہ ان یکن حقا کی ضمیر سے مراد د جال ہے۔

تشریخ:۔ "اُطُ۔م "بروزن کُتُب پھروں کی بلند عمارت کو کہتے ہیں جوقلعہ نما ہوتی ہے جمع آطام آتی ہے۔ قولمہ: "امنت باللہ ورسله" آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے بیلطیف اندازاس لئے اختیار فرمایا کہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم کواس کے دجال ہونے اور نہ ہونے کے بارے میں تا مل تھا اور یہی وجہ ہے کہ جب حضرت عمر نے آپ علیہ السلام کے سامنے تم کھا کر فرمایا کہ یہی دجال ہے تو آپ نے اس کی نفی نہیں فرمائی پس یہاں آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے ابن صیاد کی بات کی تر دید غیر محسوس انداز سے فرمائی کہ بالفرض آگر یہی دجال ہے تو کہیں بڑا فتنہ قبل از دقت بریانہ ہوجائے۔

(كذا في المسك الذكي للتها نوى رحمه الله)

قوله: "ياتينى صادق وكاذب" ياتوفرشته اورشيطان مرادب يا پهرموصوف مقدرب اى خمر صادق وخبر کا ذب لیعنی مجھے بعض سچی باتیں القاء ہوتی ہیں اور بعض جموثی اور میکا ہنوں کاشیوہ ہے جن کی باتوں میں نناوے فیصد با تیں جھوٹی ہوتی ہیں ۔لہذاصادق کی تنوین برائے تقلیل اور کا ذب کی برائے تعظیم وَکمثیر لیں ك_لينى معمولى چ اورزياده ترجموث_قبوليه: "وهبوالله خ" بعض حضرات كہتے ہيں كه دخ ايك لغت ميں دخان کو کہتے ہیں عارضہ میں ہے کہ وہ اپنی بات پوری نہ کرسکا پھر بداطلاع علم غیب کی دلیل نہیں بلکہ کہانت کی علامت ہے کہ اللہ تبارک و تعالی کی کا ہنوں کوایسے امور پراطلاع دینے میں آ زمائش کی حکمت مستر ہوتی ہے تا کہ اہل زینج گمراہ ہوں اوراہل بمان جان لیں کہ بیکا ہن ہےاس لئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا'' إخسه ا'' بیہ الفاظ سنتے کو دھتکارنے کے لئے بولے جاتے ہیں ، لینی جب تنہیں اس قتم کی خبریں معلوم ہوجاتی ہیں تو پھرتم کا بن بی ہو پھرابن صیادکواس اطلاع کی صورت کیاتھی؟ تواس بارے میں مشہوریہ ہے کہ آ پ صلی اللہ علیہ وسلم نے صحابہ سے چھیکے سے مشورہ کیا تھا جس کوابن صیاد نے پااس کے شیطان نے سُن لیا تھا، مگر حضرت تھا نو کُٹ نے اس پرزور دیا ہے کہ شیطان کا انبیاء علیہم السلام کے قلوب تک رسائی کوئی مستبعد نہیں ہاں اس سے گناہ نہیں كرواسكتاجاس يربطوراستدلال حضرت الوب عليه السلام كاواقعه "انسى مَسَنِسى الشيطين بنصب وعذاب" اورحفرت موى عليه السلام كاواقعه "وماأنسنيه الاالشيطن أقل فرماياب المستر شدعرض كرتاب كديبهلاتول اسلم واحوط ہےاور حضرت ايوب عليه السلام كوية تكليف براه راست

شیطان سے نہیں بلکدان کی بیوی کوورغلانے سے پیچی تھی جبکہ حضرت موسیٰ علیدالسلام کابی نسبت شیطان کی طرف کرنا بطورتا وب بھی ممکن ہے۔والٹداعلم

سوال: - جب ابن صیاد نے نبوت کا دعویٰ کیا تو پھرآپ علیہ السلام نے حضرت عمر رضی اللہ عنہ کوآل کرنے کی اجازت کس حکمت کے تحت مرحمت نہیں فرمائی؟؟؟

جواب: ۔ (۱) اس لئے کہ ابن صیاد یہودی بچہ تھا اور ان دنوں میں آپ علیہ السلام کی یہود کے ساتھ صلح چل رہی تھی ۔ صلح چل رہی تھی ۔

جواب: - (۲) ابن صیاد نابالغ تھا جیسا کہ روایت میں "و هو غلام" سے معلوم ہوتا ہے اور نابالغ بچوں کی بات کو اتی سنجیدگی سے لینالازمی تصور نہیں کیا جاتا ہے کہ وہ مکلف نہیں ہوتے ہیں جبکہ تل کی سز ااس عظیم جرم پر جاری ہوتی ہے جوابے مل میں ہویعنی عاقل، بالغ سے صادر ہو۔

باب کی اگلی روایت کامضمون بھی ایساہی ہے جبیبا کہ اوپر کی روایت کا ہے بعض الفاظ کا اختلاف معنوی اختلاف کو مستلزم نہیں ہوتا ہے۔

قوله: "وله ذوابة" وشيالينى سرك بالول كى چوئى كوكت بيل قوله: "ادى عوشافوق المهاء" ابن صياد نے كہا ميں پانى (سمندر) پرتخت و يكتا ہوں ۔ آپ صلى الله عليه وسلم نے فرمايا بيا بيس كا تخت و يكتا ہے جوسمندر پر ہے ، عارضة الاحوذى ميں ہے كہ جب ابليس نے سنا كه كا تنات كى تخليق سے پہلے الله رب العزت كاعرش پانى پر (بلااحتياج) تعاتو ابليس نے بھى ايك تخت بنا كرسمندر پردكھ ديا تا كه وہ الله كى ہمسرى كا تا ثر دے ۔ والعياذ بالله ، لعنة الله على ابليس واعوانه.

ر ہایہ سئلہ کہ ابن صیاد اہلیں کو کیے و کھ سکتا تھا جبکہ باتی لوگوں کوتو نظر نہیں آتا تو اس کا جواب ہہ ہے کہ
یہ کوئی سنجد نہیں اللہ تبارک و تعالی آتھوں میں جس طرح قوت وصلاحیت و دیعت فر مانا چاہے اس کے لئے
آسان ہے۔ آج کل کے دور میں جدید آلات سے یہ اشکال آسان ہوگیا ہے کہ جس آدمی نے اندھرے میں
دیکھنے والی عینک لگائی ہووہ تاریکی میں بھی دیکھ سکتا ہے۔ قبولہ: "قبال اُدی صادف او کا ذہین النے" یعنی
میرے پاس ملی جلی مخلوط خبریں آتی ہیں بعض بچی اور باتی جھوٹی ہیں۔ قبولہ: "بُیّسَ علیه" بھینئہ جہول لہس
میرے پاس ملی جلی مخلوط خبریں آتی ہیں بعض بچی اور باتی جھوٹی ہیں۔ قبولہ: "بُیّسَ علیه" بھینئہ ہو گیا
یا تنظیم سے ہے باب ضرب سے بمعنی مشتبہ اور گڈٹر ، خلط ملط ہونے اور کرنے کے ہیں لیمنی اس پر اشتباہ ہوگیا
ہے۔قبولہ: "فیدعاہ" امر کا صیغہ برائے تثنیہ ہے مخاطب شیخین رضی اللہ عنہا ہیں لیمنی آپ دونوں اس کو چھوٹر

دیں۔ مسلم میں جمع کاصیغہ "دَعُوه" آیا ہے لینی اگر تثنیہ ہوتو معنی اُتر کاہ ہے جبکہ جمع جمعنی اُتر کوہ ہے۔

"عن عبدالرحمن بن ابى بكرة عن ابيه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم المدحل الله عيناه والدجال وأمّه ثلاثين عاماً لايولدلهما ولدثم يولدلهما غلام اعوراً ضَرَّشنى واقله منفعة تنام عيناه ولاينام قلبه ثم نعت لنارسول الله صلى الله عليه وسلم ابويه فقال :ابوه طُوال ضرب اللحم كان انفه مِنقار وامه امرأة فرضا خية طويلة الثديين قال ابوبكرة فسمعت بمولود في اليهود بالمدينة فذهبتُ اناوالزبيربن العوام حتى دخلناعلى ابويه فاذانعت رسول الله صلى الشعليه وسلم فيهما، قلنا:هل لكماولد ؟ فقالا مكتناثلاثين عاماً لايولدلناولد ثم ولدلنا عندام عيناه ولاينام قلبه قال فخرجنامن وللدلناء عنده مافاذاه ومنجدل في الشمس في قطيفة وله هَمهَمَةٌ فَكَشَفَ عن رأسه فقال عنده ماقلتما ؟ قلناوهل سمعتَ ماقلنا ؟ قال نعم تنام عيناي ولاينام قلبي " (حسن غريب)

تشریخ: قوله: "اضرشنی و اقله منفعه"ای اقل شنی منفعه ینی اولاد کے جومنافع ہوتے ہیں وہ اس سے عاری تھااگر چنس اولا دمجت وسکون کاسامان تو ہے گروہ تسکین قلب کا اتناسامان نہ تھا جتنا کہ تثویش اور پریشانی کاسب تھا مع هذاوہ معیوب بھی تھا۔ قبوله: "طوال "بروزن غراب اس میں طوالت کے معنی بنسبت طویل کے زیادہ پائے جاتے ہیں۔ قبوله: "ضرب الملحم" یعنی کم گوشت والا اور لاغوشم کا۔ قبوله: "فرضا خید" بسرالفاء وتشد پدالیاء وہ عورت جس کی ضخامت و قبوله: "فرضا خید" بسرالفاء وتشد پدالیاء وہ عورت جس کی ضخامت و جمامت بھی زیادہ ہواور چھا تیاں بھی بری بول مول مع هذا اس میں طوالت ولمبائی بھی ہو۔ قبوله: "همهمة" بسرالدال چد الدزمین کو کہتے ہیں یعنی زمین پر پڑا ہوا تھا۔ قبوله: "قطیفة" مخمل نما چا در۔ قبوله: "همهمة" کمسرالدال چد الدزمین کو کہتے ہیں بوشہد کی کھیوں کی طرح سنائی د کیکن مفہوم نہ سمجھا جا سکے۔

ابن صیاد کے بارے میں سابقہ روایات سے معلوم ہوا ہے کہ وہ اصلی دجال یعنی دجال کبیر نہ تھا ہاں نفس دجال ضرور تھا مگر علا مات کا پایا جانا ذی العبلا مات کی دلیل نہیں ہوتی ہے، پھر حفزت ابو بکرہ جونکہ فتح مکہ کے بعد ہجرت فرما کرمدینہ میں آئے ہیں لہذا میہ مطلب نہ لیا جائے کہ انہوں نے اس وقت اس نیچ کی پیدائش کے بعد ہجرت فرما کرمدینہ میں آئے ہیں لہذا میہ حلب انہوں نے آنحضور صلی اللہ علیہ وہ تو مرا ہتی تھا بلکہ جب انہوں نے آنحضور صلی اللہ علیہ حلم سے بیعلا مات من لیس تو ان کو جبتی ہوئی پھر آپ نے سنا کہ اس طرح کا ایک بچہدینہ میں موجود ہے، چنا نچہ نیچ کی بات چیت سے بھی معلوم ہوتا ہے کہ وہ نومولود نہ تھا بلکہ عاقل قریب الاحتلام تھا۔

نیز شیطان وابلیس کابھی ایک سلسلۂ نبوت ہوتا ہے جس میں وہ جھوٹے نبیوں کی کڑیاں ملاتار ہتا ہے اس لئے ایسے لوگوں کے دل بیدارر ہے ہیں۔ تدبر وتشکر

باب (بلاترجمه)

"عن جابرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ماعلى الارض نفس منفوسة يعنى اليوم يأتى عليهامائة سنة ".(حسن)

حفزت جابررضی اللہ عنہ ہے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا کہ کوئی متنفس زمین پراہیانہیں بینی آج جس پرسوسال گذر جا کیں گے۔

تشریح: نفس سے مرادانسان ہے اور منفوسہ جوسانس لیتا ہو یعنی آج جو بھی روئے زمین پر زندہ ہے

خواہ بالکل نومولود بچہ بی کیوں نہ ہووہ ا گلے سوسال کے اندرا ندرا نقال کر جائے گا۔

مسلم میں ہے کہ بیار شادآپ صلی اللہ علیہ وسلم نے وفات سے ایک ماہ قبل فرمایا تھا چنانچ سب سے آخری صحابی ابوالطفیل عامر بن واثلہ رضی اللہ عنہ کے بارے میں مشہور بیہ ہے کہ وہ مثالہ وکووفات پائے جبکہ استحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کاوصال المدے ھرزیج الاول میں ہواہے۔

اس حدیث کا مطلب بنہیں کہ سوسال کے بعد قیا مت آئے گی بلکہ مرادیہ ہے کہ اس قرن کے لوگ ختم ہوجا کیں جن حضرات نے اس سے مراد قیامت لی ہے تو اس سے مراد قیامت من مات فقد قامت قیامته "کے تحت اس قرن کی قیامت مراد ہے۔

اس حدیث سے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی حیات پرکوئی اعتراض وار ذہیں ہوتا کیونکہ وہ زمین پر نہ سے بلکہ آسان میں سے ،اس طرح ابلیس بھی پانی پر تھا نیز ابلیس انسان بھی نہیں جبکہ یہاں انسانی حیات کی بات ہورہی ہے ، ہاں البتہ حضرت خضر علیہ السلام کی حیات اختلافی ہے ،امام بخاری ،ابو بکر بن العربی وغیرہ بعض محدثین ان کی وفات کے قائل ہیں ان کی دلیل باب کی حدیث ہے۔جبکہ جمہوران کی حیات کے قائل ہیں ، جمہور کے نزد یک بیعام خصوص منہ البعض ہے یا پھر حضرت خضراس رات کو جب آپ صلی اللہ علیہ وسلم بیارشاد فرمارہ سے یا نی پر ہوں گے نہ کہ ارض یعنی خشکی پر۔

اس بارے میں طرفین وفریقین کے دلائل ظنی ہیں اور کوئی حتمی ویقینی بات کسی کے پاس نہیں ہے۔ واللہ اعلم وعلمہ اتم۔

قوله: "فوهل الناس" بمعنی فرع بھی آتا ہے اور بمعنی غلط بھی آتا ہے پہلے معنی کے مطابق مطلب یہ ہوگا کہ لوگ اس ارشاد کی وجہ سے گھبرا گئے کہ سوسال میں خروج دجال وغیرہ سارے فتنے آجا کیں گے جبکہ دوسرے معنی کے مطابق مطلب یہ ہے کہ لوگ اس حدیث کا صحیح مطلب نہ بجھ سکے بلکہ اس میں غلطی کر گئے کہ قیامت آجائے گی حالانکہ اس کا مطلب یہ تھا کہ "ان یہ خوم ذالک القرن" یہ قرن ختم ہوجائے گا جیسا کہ اوپر بیان ہوا۔ انخوام بمعنی انقطاع وفنا کے ہے ای لاید قی احد ۔ قبول ہ: "فی مقالة رسول الله صلی الله علیہ وسلم فیمایت حدثون بھذہ الاحادیث النح" یعنی لوگوں نے آپ سلی اللہ علیہ وسلم فیمایت حدثون بھذہ الاحادیث النح" یعنی لوگوں نے آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی یاس سے خوف زدہ ہوگئے اور اس بارے میں اس فتم کی باتیں کرنے گئے کہ مثلاً سوسال کے بعد قیامت آئے گی یاسارے فتنے دجال اور خروج یا جوج وغیرہ سب آجا کیں گے۔

باب ماجاء في النهى عن سَبِّ الرِّياحِ مواكورُ ابھلا كنے كى ممانعت كے بارے ميں

"عن ابى بن كعب قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : لاتسبو االريح فاذار أيتم ماتكرهون فقولوا: اللهم انانسئلك من خيرهذه الريح وخير مافيها وخير ماأمِرَت به ونعوذبك من شر هذه الريح وشرمافيها وشرماأمِرَت به". (حسن صحيح)

ہوا کو بُرامت کہولیں جب تم کوئی ناگوارصورت حال دیکھوتو یوں کہواے اللہ! ہم جھے سے اس ہوا کی بھلائی کاسوال کرتے ہیں اور جو خیراس میں ہے اور جس خیر کے ساتھ سیجیجی گئی ہے ، اور تیری پناہ ما نکتے ہیں اس ہوا کی شرسے اور جو شراس کے اندر ہے اور جس شرکا اسے تھم دیا گیا ہے۔

تشریخ: پیچیے عرض کیا جا چکا ہے کہ لوگوں کی نفسیات اور طبعیت یہ ہے کہ جب بار بار کسی چیز کو دوسری چیز سے منسلک دیکھتے ہیں تو ٹانی کی نسبت اول کی طرف کرتے ہیں جیسے زمانے کی طرف خیر وشرکو منسوب کرنا اور دواء کی طرف شفاء کو منسوب کرنا ، علی بندا صدیث کا مطلب یہ ہے کہ ہوا تو بذات خود پھینیں کرسکتی بیتو اللّٰد کی طرف سے مامور و مجبور ہے اس لئے ہوا کو تصور وار نہ مجھا جائے ، دوسری جانب الله حکیم ذات ہے وہ خیر کے فیصلے فرماتے ہیں اور حکیم مجھی تھی کہ بناء بر ظیم نفع وخیر لینی مفاد عامہ کو نہیں روکتا لہذا ہوا ہو یا بارش وغیرہ ان سیم کے کہ یہ پوراعمل کراہے اور اس کو گالیاں دینے گئے بلکہ فائدہ کا سوال اور نقصان سے بینے کی دعا ماگئی جائے۔

بابٌ

وجال کے بارے میں

"عن فاطمة بنت قيس ان النبى صلى الله عليه وسلم صَعِدعلى المنبر فضحك فقال: ان تميم الله الدارى حدثنى بحديث ففرحت فاحببتُ ان أُحدِّ ثكم: ان ناسامن اهل فلسطين ركبو اسفينة في البحر فجالت بهم حتى قذفتهم في جزيرة من جزائر البحر فاذاهم بهدابّةٍ لبّاسةٍ ناشرةٍ شعرَها، فقالو ماانتِ قالت: اناالجساسه ، قالو افا خبرينا! قالت: لااخبركم

ولااستخبركم ولكن إئتوا اقصى القرية فان ثم من يخبركم ويستخبركم فاتينااقصى القرية فاذارجل مُوثَق بسلسلة فقال: اخبرونى عن عين زُغَرَ قلنامَلأى تدفُق قال اخبرونى عن البحيرة قلنامَلأى تدفُق قال اخبرونى عن البحيرة قلنامَلأى تدفُق قال اخبرونى عن نخل بَيسان الذى بين الأردن وفلسطين هل اطعَم ؟قلنانعم قال اخبرونى عن النبى هل بُعِت ؟قلنانعم قال اخبرونى كيف الناس اليه؟ قلنساسِراع ،قال فنزانزوة حتى كاذ ،قلنسافماانت؟ قال اناالدجال وانه يدخل الامصار كلَّهااللاطيبة وطيبة المدينة ـ (حسن صحيح)

حضرت فاطمه بنت قیس رضی الله عنهاے روایت ہے که نبی صلی الله علیه وسلم منبر برچڑ ھے (جلوه افروز ہو گئے)اورمسکرا گئے اس کے ساتھ فرمانے لگے کہ تیم داری نے مجھ سے ایک بات (واقعہ) بیان کی جس ہے مجھے خوشی ہوئی اس لئے میں جا ہتا ہوں کہ آپ کوبھی بنا دوں، بے شک فلسطین کے پچھلوگ سمندر میں کشتی پر سوار ہو گئے تو وہ کشتی ان کو دوسری طرف لے گئی (یعنی ناموافق ہوا کی وجہ ہے) تا آ نکہ ان کوسمندر کے جزائر میں ہے کی جزیرہ پر پھینک دیا (اتاردیا) پس اچا تک ان کا واسط ایک ایسے جانور سے بڑا جو بہت زیادہ بالوں والا (یابہت فریب کار) تھا بکھرے ہوئے (یا لمبے لمبے) اس کے بال تھے، چنانچہ انہوں نے اس سے بوچھا تو کیا ہے؟ وہ کہنے لگا میں خبررساں ہوں (جاسوی کرنے والا) ان فلسطینیوں نے کہا پھرتم ہم کو (اپنی حقیقت یا خبروں ے) آگاہ کرو،وہ کہنے لگا کہ نہ تو میں تہمیں کوئی خبردونگا اورنہ ہی تم سے کوئی بات پوچھوں گا،کیکن تم لوگ (میرے ساتھ) اس بتی کے اخیر میں چلے جاؤ بے شک وہاں ایسا شخص ہے جوتم کو خبر بھی دے گا اور تم سے خبریں بھی معلوم کرے گا، چنانچہ ہم اس بستی کے اخیر میں آئے تو دیکھا کہ ایک شخص زنجیروں میں جکڑا ہواہے،اس نے کہامجھے زغرچشے کے بارے میں بتاؤہم نے کہاوہ تو بھر پور بہدر ہاہے،اس نے کہامجھے بحیر ہے متعلق بتاؤ (لیعنی طرری) ہم نے کہاوہ بھی مجراہوا کھلک رہاہے اس نے کہابیان کے خسلتان کے بارے میں بتاؤجواردن اورفلسطین کے درمیان ہے کہ آیاوہ پھل دینے لگاہے؟؟ ہم نے کہا''ہاں' اس نے کہا مجھے نبی (آخرالزمان) کے بارے میں بتاؤ کہ آیاوہ مبعوث ہوگئے ہیں؟ ہم نے کہا'' ہاں' یو چھا جھے بتاؤان کے بارے میں لوگوں کا ر مل کیا ہے؟ ہم نے کہاتیزی سے ان پرایمان لارہے ہیں، کہتے ہیں کہاس نے ایک زبردست جنبش کی حتی کی زنجيروں سے نکلنے كے قريب ہو گيا ہم نے يو چھاتم كون ہو (كيا ہے؟)اس نے كہاميں دجال ہوں ، دجال سب شهرول میں داخل ہوگا سوائے طیبراورطیبروہی مدینہ ہے۔ اخسر جسه مسلم وابو داؤ دو ابن مساجسه

واحمدوالحميدى

تشريح: يردايت مسلم مين نبتاً زيادة تفصيل سے آئي ہے اس لئے تشريح مين اس كرجمي المحوظ ركھنا مناسب معلوم بوتا ب-قوله: "صعِدعلى المنبو ،مسلم ميس بكداس سقبل اعلان بواتها كـ "الصلواة حامعة "چنانچه فاطمه بنت قيس فرماتي بين كه مين مسجد مين آئي ادرعورتوں كي اس صف مين بينير گئي جومردوں كي صف سے متصل تھی ، پھر جب آپ علیہ السلام نماز سے فارغ ہو گئے تومسکراتے ہوئے منبر پرجلوہ افروز ہو گئے چونکہ اس میں جلس علی المنبر کی تصریح ہے اس لئے معلوم ہوا کہ خطبئے مشہورہ (جمعہ وغیرہ) کے علاوہ وعظ اور نقیحت کی غرض سے منبر پر بیٹھنا جائزہے اگر چہ جمعہ وغیرہ مسنون خطبہ کھڑے ہوکر ہی دیاجائے گا۔ قوله: "ان تعیماالدادی" بیایے جد" داد "کی طرف منسوب ہے اس وقت مشرف بایمان نہوئے تھے یروایت ان کی بڑی منقبت ہے کہآ پ علیہ السلام نے بیوا تعدان کے حوالے سے بیان فرمایا۔ قوله: "ر کبوا سفینة" مسلم میں ہے کہ کل تیں آ دی تھے۔قولہ: "فجالت بھم" کشتی ان کو هما پھیرا کر لے گئ یعنی موجوں نے ان کی کشتی دھیل دی یہاں تک کہ "قے ذفتھے"ان کوایک جزیرہ پرڈال دیامسلم کی روایت میں ہے کہ بیسفر ایک مہینے کا قطااورمغرب الشمس میں ایک جزیرے تک پہنچ گئے علی ہذامعلوم ہوتا ہے کہا گریہ لوگ بحیرۂ روم میں سفر کرر ہے تھے تو پھر بیرواقعہ بحراوقیا نوس میں شال مغربی افریقہ اور جنوب مغربی یورپ میں سپین اور مراکش کے مغرب میں پیش آیا ہوگا، اوراگران کاسفر بحرقلزم (بحراحمر) میں تھاتو پھر بھی یہ بحراوقیا نوس جنو بی افریقہ کی ست میں پیش آیا ہوگا کیونکہ بح قلزم (بحراحمر) بجانب مشرق ومغرب اتناچوڑ انہیں ہے بلکہ ایک خلیج ہے ،اورجس روایت میں دجال کواز جانب مشرق برآ مدہونے والاقرار دیاہے تواس سے کوئی تعارض لا زم نہیں آتا کیونکہ اس میں خروج کی بات ہے جبکہ مندرجہ بالا جلے میں اس کی موجودگی کی بات کی گئے ہے۔قولہ: "بدابة لباسة" مسلم كىروايت ميس بىكە "فىلىقىي انساناً يىجوشعوە" جېدابودا دوكى روايت ميساس پرامرا ة كااطلاق بىمى كيا گیاہے جس کا مطلب بیہ ہے کہ بیانسان نما کوئی جانورتھا یا شیطان تھا،لبّاسہ مبالنے کاصیغہ ہے یا تولیس جمعنی خلط ملط سے ہے بعنی بہت فریب کاریا بمعنی لباس سے ہاور یہی رائح ہے بعنی وہ سرتایا بالوں میں لیٹا ہوا تھا جیسے کوئی کپڑوں میں چھیا ہوا ہو، ایک روایت میں ہے کہان کی کشتی ٹوٹ گئی تھی بیلوگ ایک شختے پرسوار ہوکراس جزیرے تک پہنچے تھے جبکہ ایک روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ بیرا پنی بڑی کشتی کے اندرموجود چھوٹی کشتی پرسوار ہوکراس جزیرے تک <u>پہنچے تھے اور یانی</u> تلاش کررہے تھے کہ اچا تک ساحل پراس وابہ سے آ منا سامنا ہوگیا۔

قوله: "ناشرة شعرها" ال مين ناشرة مجرور ہے كدابه كى صفت ثانيہ ہے جبكہ شعرها بنابر مفعوليت منصوب ہے،
يوگوبالباسة كابيان ہے۔قوله: "المجسّاسه" بَجُنُّس كرنے والا يعنى مين خبررسال اور مخبرى كرنے والا ہول۔
"ائتوا اقصىٰ القرية" مسلم ميں ہے"انطلقو االى هذا الرجل فى الديو" يعنى اس گرج ميں موجود مخص كى طرف چلوچنا نچه جب اس سے ملاقات ہوئى توريكھا كدو بال ايك بہت برداخوفناك انسان زنجيرول ميں اس كى طرح بندها ہواتھا كہ اس كے ہاتھ كندهول تك اور كھنے تخنول تك لوہے كى زنجيرول سے جكڑ ہے ہوئے تھے، چر مسلم كى روايت كے مطابق وجال نے ان سے تعارف يوچھا تو انہوں نے پورى تفصيل سے واقعہ بيان كيا كہ مم مسلم كى روايت كے مطابق وجال نے ان سے تعارف يوچھا تو انہوں نے پورى تفصيل سے واقعہ بيان كيا كہ م

قول د "زغر" المنام الزاء وفق الغین (مجم البلدان جلد ۱۳۸۳ من ۱۷۲۰) پرابن عباس سے ایک روایت ہے کہ جب حضرت لوط علیہ السلام سدوم سے نگلے تو ان کی دوصا جز ادیاں ان کے ہمراہ تھیں بردی کا نام "ریّه" تھا اور چھوٹی کا "زُوْخ" تھا، راستہ میں پہلے ریّہ کا انتقال ہوا جن کوایک چشفے کے پاس دفایا جس سے اس چشفے کا نام "عین ریّه" پر گیا پھر زغر کا دوسر مقام پرانتقال ہوا وہ جس چشفے کے پاس مدفون ہیں اس کا نام "عین رُخ" ہے۔قولہ: "مَا لأى " بھرا ہوا۔قولہ: "تعدفق" دفق کو دنے اوراً چھلے کو کہتے ہیں یعنی وہ خوب لبر بزہاں کا پانی پُر جوش انداز سے بہدر ہا ہوگ اس سے جسی باڑی کرتے ہیں۔قولہ: "المبحیوة" وہی طبر بیکا بحیرہ کیا پانی پُر جوش انداز سے بہدر ہا ہوگ اس سے جسی باڑی کرتے ہیں۔قولہ: "المبحیوة" وہی طبر بیکا بحیرہ ہوتا ہے گا۔قولہ: "نحل ہے۔ جس کے بارے میں پہلے بتایا گیا ہے مسلم میں ہے کہ دجال نے کہا یہ بحرہ خوالہ نے تبند کیا ہو جسم سے سے جس کے بارے میں ان ایک بھوروں کی وجہ ہوجائے گا چنا نچہ مشہور مورث و ابوعبداللہ حوی التو نی میں ہے کہ دجال نے گا چونا نچہ مشہور مورث و ابوعبداللہ حوی التو نی میں ہے کہ دجال نے کہا کہ قریب ہے کہ بی خلستان ختم ہوجائے گا چنا نچہ مشہور مورث و ابوعبداللہ حوی التو نی میں ہوبائے گا چنا نچہ مشہور مورث و ابوعبداللہ حوی السرف دو میں میں ہوبائے گا چونا نچہ مشہور مورث و ابوعبداللہ حوصہ الدون و پی میں اس کی مرتبہ گیا ہوں گر جمھے وہاں صرف دو پی میں داخل ہے وہاں زیادہ تر گندم اور سبزیاں وغیرہ ہوتی ہیں۔

قوله: "فنزانزوة حتى كاد" يعنى اس نے اس زور كے ساتھ جنبش كى كة تريب تھا كه وه زنجيروں كى قيد سے آزاد ہوجاتا، يہ جنبش يا توخوش كے مار بے تھى كه اس كووه علامات معلوم ہو كئيں جن كااس كوا تظار تھا كه اس كي خروج كازمان قريب آگيا، يا پھر آنخصور صلى الله عليه وسلم كى مقبوليت كے بار بے ميں سُن كروہ غم اور غصے سے مجر گيا اور پھرايك ما يوسى جرى جنبش كى ۔

بیحدیث دیگرمتعدد صحابه کرام سے بھی مروی ہے جیسے حضرت عائشہ، حضرت جابراور حضرت ابو ہریرہ رضی اللّٰعثہم۔قالہ الحافظ

بابٌ

"عن حـذيفة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لا ينبغى للمؤمن ان يُذِلَّ نفسه ، وعن حـذيفة قال قال رسول الله على الله على الله عنه وسلم الماليطيق". (حسن غريب) اخرجه احمدايضاً

حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے فر مایا مؤمن کے لئے مناسب نہیں کہ وہ اپنے آپ کورسوا کرے محابہ نے عرض کیا وہ خودکو کیسے ذکیل کرتا ہے؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ وہ ایسی آزمائش کا بیڑااٹھائے جس کی وہ طافت نہیں رکھتا۔

تشری :۔ ذلت ،عزت کے مقابل آتی ہے خصوصاً جب آدی اپنی مرادیس ناکام رہے تو اس پراطلاق بوجہ اتم ہوتا ہے جبکہ بلاء آزمائش ومصیبت کو بھی کہتے ہیں اور زبردست کوشش ومحنت کو بھی ، یہاں بمعنی آزمائش بھی ہوسکتا ہے اور بمعنی تعب ومشقت یعنی نا قابل برداشت عمل یا قول بھی۔

غارضة الاحوذى ميں ہے كہ بيغل يا قول اگر مندوبات كے زمرے ميں سے ہوں توبيكى صورت ميں جائز نہيں گو يالا ينغى بمعنى لا يحل ولا يجوز ہوا ،اورا گرفرائض ميں سے ہوں جيسے امر بالمعروف ونہى عن المئكر تواس ميں تفصيل واختلاف ہے جو پہلے اسے باب ميں گذراہے۔

غرض ہرکام اور ہربات میں اپنی قدرت کا جائزہ لینالازی ہے کہیں ایسانہ ہوکہ ایک کام یاذمہ داری قبول کرے یا شروع کرے اور پھراسے نبھانہ سکے کیونکہ اس کا متیجہ یہ نکلے گا کہ وقت ضائع ہوگا، وسائل ضائع ہول کرے مائل میں اضافہ ہوگا اور لوگوں کے طنز وتسنح کا دروازہ کھل جائے گا۔ وغیرہ وغیرہ

باب

"عن انسس بن مالك عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: أنصر احاك ظالماً وقال الله عن الظلم ظالماً وقال الله عن الظلم فذاك نصر ك اياه". (حسن صحيح)

حضرت انس رضی الله عنه سے روایت ہے کہ نبی پاک صلی الله علیه وسلم نے فرمایا کہ اپنے (اسلامی) بھائی کی مدد کروخواہ ظالم ہو یا مظلوم ، پوچھا گیا اے اللہ کے رسول! جب وہ مظلوم ہوتواس کی مددتو کرسکتا ہوں گر جب وہ ظالم ہوتواس کی مدد کیسے کروں؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا (بایں طور) کیتم اس کوظلم سے روک دو گے تو یہ اس کی مدد ہوجائے گی تیری طرف سے۔

تشری : قوله: "ظالماً" خاک مفعول سے بناء برحالیت منصوب ہے۔ سائل کے سوال کا منشاء یہ تھا کہ شاید ظالم کا ساتھ دینا مراد ہے اور جواب کا مطلب ظاہر ہے کہ جب اسے ظلم سے اور جھڑ ہے کہ اسباب سے بازر کھو گے تو یہ چیزاس کے ظلم سے رو کئے اور ہلا کت اور شیطان کی شرارت سے تفاظت کا سبب ثابت ہوگ ۔ عارضة الاحوذی میں ہے کہ مظلوم کی مدد کا وجوب استطاعت اور عدم فساد سے مشروط ہے اگر استطاعت نہ ہوتو وجوب نفرة ساقط ہوجائے گا جبکہ کسی بڑے فساد کے بریا ہونے کی صورت میں شاید ندب وجواز بھی ختم ہوجائے جسے آج کل کے دور میں بعض دفعہ مظلوم کی مدد خطرناک ثابت ہوجاتی ہے۔ (واللہ اعلم)

باب

"عن ابن عباس" عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: من سكن البادية جَفَاومن إتَّبَعَ الصيدغفل، ومن أتىٰ ابواب السلطان أفتُتِنَ". (حسن غريب)

حضرت ابن عباس رضی الله عنهما سے مروی ہے کہ نبی صلی الله علیه وسلم نے فر مایا جو شخص بادیہ (صحراء، دیہات وجنگل) میں رہائش پذیر ہوگااس کا دل سخت ہوگا اور جو شکار کے پیچھے پڑے گاوہ غافل ہوگا اور جو شخص بادشا ہوں کے دروازوں پر جائے گاوہ فتنہ (آز مائش و گناہ وغیرہ) میں مبتلاء ہوگا۔

تشری : - "جف" سے اور غلظت کو کہتے ہیں مشاہدہ یہی ہے کہ دیہاتی لوگ بڑے تخت جان اور تخت دل ہوتے ہیں کیونکہ وہ اہل علم اور شہری ماحول اور تہذیب سے دور ہوتے ہیں دیہا تیوں کی اپنی تہذیب ہوتی ہے جس پڑھو ما جانوروں کی عادات کا اثر ہوتا ہے میصحبت اور پیٹے کی تا ثیر ہے ، پھروں اور لو ہے کا اثر ان کے مزاح پر پڑتا ہے تا ہم اگر شہری ماحول دیمی ماحول سے زیادہ بگڑ جائے تو پھر دیہات و جنگلات شہروں سے افضل ہیں جیسا کہ پہلے تفصیل سے گذرا ہے چونکہ اثر قبول کرنے کے لئے وقت درکار ہے اس لئے یہار شادعادی و یہاتی کے بارے میں ہے جو مستقل وہاں رہتا ہو چندایا م کے رہنے سے جیسے کوئی بطور سیر وتفری یا کسی وقی ضرورت

ہے وہاں جائے ،کوئی خاص فرق نہیں پڑتا،۔

شکارا گربطورلہوولعب کے ہوتو وہ غفلت کومنتلز م ہے کہ ایسا آ دمی تعلیم ،نمازوں اور دیگرلواز مات کاخیال نہیں رکھتا ہے یا کم رکھتا ہے اور شکار کے شوق سے بیمرض اور بھی بڑھ جاتا ہے مگر بطور ضرورت وحاجت اور نمازوں کی رعایت کی صورت میں شکار معیوب نہیں ۔

جہاں تک بادشاہوں کے درواز وں پردستک دینے کی بات ہے تو آج کے دور میں اس سے فتنہ میں مبتلا ہونااغلب ہے کہ وہ آ دمی سے غلط کام لیتے ہیں اگر عالم ہے تو اس سے من پیندفتوی صا در کرواتے ہیں ،ان کی طرز زندگی دیکھ کرآ دمی اپنی حالت پر ناشکری کرتا ہے وغیرہ وغیرہ تا ہم اگر کوئی نیک نیتی سے ان کے دربار میں جا تا ہے اور ان کی اصلاح پر قا در بھی ہے اور کلمہ حق بلند کرسکتا ہے تو وہ خص ما جور ہوگا اگر چہ آج کل میمکن عقلاً تو ہے مگرامکان وقوعی سے دور ہے۔واللہ اعلم وعلمہ اتم واحکم

وومرى عديث: -"انكم منصورون ومصيبون ومفتوح لكم فمن ادرك ذاك منكم فليتق الله وليامر بالمعروف ولينة عن المنكرومن يكذب عَلَى متعمدا فليتبو أمقعده من النار". (حسن صحيح)

تم مدد کئے جاؤگے اورتم (مال تک یعنی غنیمت تک) رسائی حاصل کرنے والے ہواور تمہارے لئے فقح کئے جا کیں جو محض اس فہ کورکو پائے تواسے اللہ سے ڈرنا چاہئے اورامر بالمعروف ونہی عن الممئر کرتار ہے اور جو محض مجھ برجان ہو جھ کرجھوٹ باندھے پس وہ اپنا ٹھکانہ جہنم میں بنادے۔

چونکہ دولت و حکومت دونوں تقوی سے دور لے جانے کے اسباب میں سے ہیں کہ عموماً ان میں بتلا مخص کم ہی تقوی بجالا تا ہے اس لئے آپ علیہ السلام نے فتوحات کی خوشخبری کے ساتھ ساتھ ان کو تقویٰ کی بھی وصیت کی اور یہ کہ اینااصل فریضہ نیکی کی طرف بلانے اور بدی سے روکنے کاعمل بھی بھی نہ چھوڑیں۔

صدیث کا آخری جملهان شاءالله "ابواب العلم ،باب ماجاء فی تعظیم الکذب علی رسول الله صلی الله علی وسول الله صلی و سلم" مین آئے گا،خلاصہ یہ کہ یہ امر بمعنی اخبار ہے اور بیروایت بیس سے زیادہ صحابہ کرام رضوان الله علیم سے مروی ہے۔

باب

"عن حذيفة قال قال عمر: ايكم يحفظ ماقال رسول الله صلى الله عليه وسلم فى المفتنة ؟ فقال حذيفة انا، قال حُذيفة : فتنة الرجل فى اهله وماله وولده وجاره تكفر هاالصلوة والصوم والصدقة والامربالمعروف والنهى عن المنكر، قال عمر: لستُ عن هذا أسالكَ ولكن عن الفتنة التى تموج كموج البحر، قال: ياامير المؤمنين ! ان بينك وبينها بابامغلقاً قال عمر أيُفتح ام يُكسر ؟ قال: بل يُكسَرُ قال: اذاً لا يُغلق الى يوم القيامة ، قال ابو وائل فى حديث حماد فقلتُ لمسروق سَل حذيفة عن الباب فَسَالَه فقال: عمر".

حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے فرمایاتم میں سے کسے دسول اللہ علیہ وسلم کا وہ فرمان یادکیا ہے جو فقنے کے بارے میں ہے؟ تو حذیفہ نے فرمایا ''میں نے ''حضرت حذیفہ نے فرمایا (آپ علیہ السلام نے فرمایا ہے) آدمی کا فتنہ اس کے اہل ومال اور اولا دو پڑوی کے بارے میں ،ان کی تلافی کرتی ہے نماز ،روزہ ،صدقہ اور امر بالمعروف و نہی عن المنکر ،حضرت عرش نے فرمایا میں تم سے اس کے متعلق نہیں پوچھ رہا بلکہ اس فتنے کے بارے میں پوچھ رہا ہوں جو سمندری موج کی طرح موج نی طرح نوبی نوبی محضرت حذیفہ نے فرمایا اے امیر المؤمنین! بے شک آپ کے اور اس کے درمیان ایک بندوروازہ (حائل) ہے حضرت عرش نے فرمایا اوہ دروازہ کھولا جائے گایا توڑا جائے گا؟ حذیفہ نے فرمایا بلکہ وہ بندوروازہ (حائل) ہے حضرت عرش نے فرمایا وہ دروازہ کھولا جائے گایا توڑا جائے گا؟ حذیفہ نے فرمایا بلکہ وہ توڑا جائے گا، حضرت عرش نے فرمایا کی بندنیوں کیا جائے گا۔

ابو وائل کہتے ہیں (بیصرف ان کے شاگرد) جماد کی حدیث ملے ہے (نہ کہ اعمش وعاصم کی) پس میں نے مسروق سے کہا کہ حضرت حذیفہ سے اس دروازے کے بارے میں پوچھو(کہ اس سے کون مرادہ؟) چنانچے انہوں نے پوچھ لیا تو حذیفہ نے کہاوہ عمر ہیں۔

تشریخ: فوله: "فتنة الرجل فی اهله" یعنی آدی سے مال وعیال اور جاری وجہ سے پھونہ پھھ ہے اعتدالیاں ضرور ہوتی ہیں اور بھی اولا واور پڑوسیوں کے بعض متحب حقوق میں بھی کوتا ہیاں ہوتی ہیں ان دونوں صورتوں میں نماز وغیرہ عباوات سے ان کوتا ہیوں کا از الد ہوجا تا ہے بشرطیکہ وہ کمبارکتک نہ پنچیں کیونکہ کمیرہ کے لئے توبہ لازی ہے جیسا کہ کتاب کے شروع مباحث میں گذرا ہے قولہ: "التی تموج کموج البحر" سمندر کی موج

سے تشبید دینے سے غرض فتنے کی شدت اور کشرت شیوع ہے لینی وہ فتنہ بتا وَجوسب کواپی لیسٹ میں لےگا، ابن العربی تا عارضہ میں اشارہ کررہے ہیں کہ وہ حضرت عثان رضی اللہ عنہ کی شہادت کے مابعد کے واقعات ہیں گویاوہ بند درواز وحضرت عثان ہیں۔ لیکن حدیث کا ظاہری مطلب وہی ہے جو آخر میں بیان ہوا ہے یعنی حضرت عمرہ۔

قوله: "ان بينك وبينهابابا مغلقا" ينى وه فتذا پتكنيس بني سكا اورا پاليث ملنيس كين سكا كدا پندورداز يركي ييچ مل مخفوظ بيل قوله: "أيفت مه يُكسر" يونكه كلا بوادروازه بندكرنا تو اسمان يركي ورونوث جائز الساس يركي والي بندكيا جائ كا قوله: "قال بل يكسر" يعن پهر بنزييس بوگا، بلغاء كلام ميل ايسه بى كنايات ميل بات بوقى به نيز حفرت حذيف ورسول الله سلى الله عليه وسلم كم صاحب السر يعن راز دال تق پسلى الله عليه وسلم نے ان كومنافقين كنام اور بهت سے آنے والے فتول كه بارے ميل الله فرمايا قما حضرت حذيف اس راز كوفاش نيس كرنا چا بيت تقاس لئے كنايات ميل بات كرنا چا بيل تاكه راز صرف حضرت عرفتك محدودر به ،اس لئے بخارى شريف (جلد:اص: ۵۵) پر به جب حذيف شد راز مواف كيا كيا كه دوريا حديث تقو انهول نے جواب ديا دريافت كيا كيا كه دون الغدالليلة النع" يعنى جي بال جس طرح كل سے پہلے دات كا يقين بوتا ب-

قول، "فقال عمر" يهال بداشكال وارد بوتاب كه جب حفرت عر اورفتول كورميان ايك بند دروازه حائل بي تواس كا تقاضا توييب كه وه وروازه حضرت عمر سے غيراور مختلف بوجبكه يهال اسے عين عمر قرار ديا كيا فما جواب؟

اس کا جواب میہ کہ حضرت عمر ط کا وجود نتوں اور عہدِ محفوظ از فتن کے مابین رُکا و ف و حاجز و ساتر ہے جب تک آپ زندہ بیں فتنے سر نہیں اٹھ اسکیں کے مگر جب آپ کوشہید کیا جائے گاتو پھر فتنوں کا دروازہ کویا نہ صرف کھلے گا بلکہ ٹوٹے گا جیسا کہ بعد میں ایساہی ہوا، نیز اس میں آپ کی شہادت کی طرف اشارہ ہے، اس سے معلوم ہوا کہ حضرت حذیفہ طاس حد تک بتانے کے مجازتھے۔

باب

"عن كعب بن عجرة قال خرج الينارسول اللصلى الله عليه وسلم ونحن تسعة خمسة واربعة احدالعددين من العرب والآخرمن العجم فقال اسمعوا إهل سمعتم أنه سِيكون بعدى امراء فمن دخل عليهم فَصَدَّ قهم بكذبهم واعانهم على ظلمهم فليس منى ولستُ منه وليس بوارد عَلَى الحوض ومن لم يدخل عليهم ولم يُعنهم على ظلمهم ولم يصدقهم بكذبهم فهومنى وانامنه وهووارد عَلَى الحوض". (صحيح غريب) اخرجه النسائي واحمد

حضرت کعب بن عجره رضی اللہ عند فرماتے ہیں کہ رسول اللہ علیہ وسلم (جحرے سے باہر مجد کی طرف) ہمارے پائ تشریف لائے جبکہ ہم نوآ دمی تھے یعنی پانچے اور چار، ایک عددان میں سے عربوں کا تھا (مثلاً پانچے) اور دوسرا عجمیوں کا (مثلاً باقی چار) پس آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: سنو! کیا تہ ہیں معلوم ہے کہ عنقریب میرے بعدا مراء (برے حکران) ہوں گے، جو شخص ان کے پائ جائے گا اور ان کے جھوٹ کی تھدیت کرے گا اور ان کے ظلم میں تعاون کرے گا تو وہ جھے سے نہیں اور نہ ہی میں اس سے ہوں وہ میرے پائل حوض کر کے گا اور ان کے گا اور جو شخص ان کے پائل جائے گا اور ان کی مدن ہیں کرے گا اور نہ ہی ان کے جھوٹ کی تھمدیت کرے گا اور دہ ہی سے ہوں اور وہ میرے پائل حوض پر (بھی) ان کے جھوٹ کی تھمدیت کرے گا تو وہ مجھ سے ہے اور میں اس سے ہوں اور وہ میرے پائل حوض پر (بھی) آئے گا۔

تشریخ:۔قولہ: "خمسة واربعة" ینو (تسعه) کی تغییر ہے یعنی ان نومیں عرب وعجم دونوں طرح کے لوگ تھے، حدیث کی باقی شرح سابقہ باب سے پیوستہ باب حدیث ابن عباس میں گذری ہے۔قسول۔ افلیس منی ولست منه" یہ شدید تاراضگی کا اظہار ہے یعنی گویا میر ے اورا یہ شخص (عالم) کے درمیان کوئی گہر اتعلق نہیں اور میری طرف سے خلاصی کی شفاعت کا عہر نہیں ہے۔قسول۔ امسواء" امراء کی بی حالت باعتبار اغلب کے ہورندان میں اجھے بھی گذرہے ہیں۔

صديث السطنية على النباس زمان السابر فيهم على دينه كالقابض على المجموس (حديث غريب، تفردبه الترمذي)

لوگوں پرایک ایساز مانہ آئے گا جن میں اپنے دین پرصبر کرنے (جمنے)والا ایساہوگا جیسے چنگاریوں کوہاتھ میں تھامنےوالا ہوتاہے۔

تشری خاند کی میروریث الله الله کا مطلب میروتا ہے کہ مؤلف اور نبی کریم صلی الله علیہ وسلم کے درمیان صرف تین واسطے موں چنانچہ یہاں اساعیل بن موسی عمر بن شاکراور حضرت الس تین رجال

ہیں اور ترفدی میں فقط بھی ایک ٹلا ٹی حدیث ہے تا ہم اس میں عمر بن شاکر ضعیف ہیں آگر چے ضعف زیادہ نہیں۔
قبولہ: "حسر" جمرۃ کی جمع ہے چنگاری کو کہتے ہیں پس مطلب بیہ ہے کہ جس طرح چنگاریاں مٹھی میں بند کر کے
رکھنا آسان کا منہیں ایساہی اُس زمانے میں دین کی حفاظت اور اس پڑمل کرنا اتنا ہی مشکل ہوجائے گایا مطلب
بیہ کہ ضعف ایمان کی وجہ سے اور نامساعد حالات کی بناء پرکوئی شخص دین پڑمل کرنا گوار انہیں کرے گا جیسے کوئی
انگارے مٹھی میں بند کرنا گوار انہیں کرتا۔

باب

"عن ابى هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم وقف على ناس جلوس فقال: آلا الجبركم بخيركم من شركم قال فَسكتوافقال: ذالك ثلاث مرات فقال رجل بلى يارسول الله أخبرنا بخيرنامن شرنا إقال: خيركم من يُرجى خيره ويُؤمن شره وشركم من لايُرجى خيره ولايؤمن شره". (صحيح)

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم کھے بیٹے ہوئے لوگوں کے پاس آ کھڑے ہوئے اور فرمایا: کیا تہ ہیں آگاہ نہ کروں تم میں سے اچھے لوگوں کے بارے میں بنسبت ہُ ب لوگوں کے راوی نے کہالی لوگ خاموش ہوگئے آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے یہ ارشاد تین بار فرمایا تب ایک آدی نے عرض کیا کیوں نہیں اے اللہ کے رسول! ہمیں خبر دیجئے ہم میں سے بہتر لوگوں کی بابت بنسبت اہل شرکے میں کیا کیوں نہیں اے اللہ کے رسول! ہمیں خبر دیجئے ہم میں سے جبری توقع کی جاتی ہواوراس کے شرسے بے فرمایا تم میں اچھا آدی وہ ہے جس سے خیر کی توقع کی جاتی ہواوراس کے شرسے بے فکر رہا جائے جبکہ تم میں پر اضحف وہ ہے جس سے خیر کی امید نہ رکھی جائے اور اس کے شرسے اطمینان نہ ہو۔

تشریخ: صحابہ کرام کی خاموثی اس بناء پرتھی کہ دہ اس سے ڈرگئے کہ اگر آپ علیہ السلام نے ہمارے اندر لینی ان لوگوں میں بُرے افراد کا تعین فرمادیا تو وہ رسواو تباہ ہوجا کیں گے اور چونکہ الایمان بین الخوف والرجاء اس لئے ہرخض اس خوف کا شکار ہوا تا ہم جب آپ علیہ السلام نے اصرار فرمایا تب ایک صحابی نے ہمت کر کے فرمایا کہ ضرور بتلائے ،اور حضور علیہ السلام نے عام ضابطہ ارشاد فرما کران کا خوف بھی زائل فرمایا اور تعلیم عام بھی ہوگئی جیسا کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی عادت شریفہ تھی کہ کسی کا نام لئے بغیر تھم ارشاد فرماتے ،چونکہ خیرا تھا اسلام ہے جبکہ شروالا اپنے شرکی وجہ سے بُراہے۔

"عن ابن عسرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذامشت امتى المُطيطياء وخَسدَمَهَا ابساء السلوك ابساء فارس والروم سُلِّطُ شرارهاعلى خيارها. (غريب ،تفردبه الترمذي وموسى بن عبيدة ضعيف)

جب میری امت اِتراتی ہوئی چلنے لگے اور شنرادے اس کی خدمت کرنے لگیں یعنی فارس وروم کے بیٹے تواس کے مُرے لوگ اچھے لوگوں پرمسلط کردیئے جائیں گے۔

تشری : قوله: "المُطیطِیاء" اس میں دوطاء اور دویاء ہیں مضموم اور طاء اولی مفتوح ہے بعض یاء ٹانیہ کو حذف کر کے مطیطاء بھی پڑھتے ہیں یہ لفظ مصغر ہے اس کا مکرنہیں آتا، مُظَ بمعنی تکبر کے اور مططت بمعنی تمد دلیتی لمبا کرنا للہذا دونوں معنوں کی رعایت کرتے ہوئے مطلب بیر بنتا ہے کہ جب اس امت کے لوگ اکر کر اور اپنے بازووں مارتے ہوئے چائیس گے، اور شہزاد ہے ان کے خادم ہوں گے تو پھر اشرار اخیار کے ملوک ہوں گے، اس کی وجہ یہ ہے کہ اشرار اس چیز کوعزت اور قدر کی نگاہ سے دیکھتے ہیں ان کی نظر میں اس انداز اور طرز معاش کی بڑی ما نگ ہوتی ہے اس لئے وہ حکومتوں پر قبضے کی خاطر آگے برھیں گے چنا نچوشش نے اور طرز معاش کی بڑی ما نگ ہوتی ہے اس لئے وہ حکومتوں پر قبضے کی خاطر آگے برھیں گے چنا نچوشش نے داخی تھیں ہوگی جوں کی توں ٹابت ہوئی تا ہم جس کھھا ہے کہ بنوامیہ کے دور میں ایسانی ہوااور آپ علیہ السلام کی بیش گوئی جوں کی توں ٹابت ہوئی تا ہم جس زمانے میں فارس وروم کی فتو حات ہوئیں اور جب صحابہ کرام رضوان الدّعیم المجھیں بھی اس وقت موجود ہے تو وہ دوسری احادیث کی وجہ سے مستثناء ہیں للہذا اس سے مراد ما بعد کا زیانہ ہے۔

قوله: "لن یفلح قوم و لوامرهم امراء ة النخ" حضرت ابوبکره رضی الله عنفرماتے بین که الله نے اس چیز (حدیث) کی وجہ سے میری حفاظت فرمائی جومیں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے شنی تھی کہ جب کسریٰ ہلاک ہواتو آپ صلی الله علیہ وسلم نے پوچھا کہ اس کا جائشین کس کو بنایا؟ صحابی نے عرض کیااس کی بیٹی کوپس نبی صلی الله علیہ وسلم نے فرمایاوہ قوم ہرگز کا میاب نہیں ہو سکتی جواپی حکومت عورت کے سردکر سے چنانچہ جب حضرت عاکشہ "بھرہ تشریف لا کیس تو مجھے رسول الله صلی الله علیہ وسلم کا (بیہ) فرمان یادآیا، پس الله نے اس کی وجہ سے میری حفاظت فرمائی۔ (بعنی میں جنگ جمل میں شرکت سے گریزاں رہا)

تشریخ:۔ جب حضرت عثمان رضی الله عنه کوشهید کیا گیا تو حضرت طلحه اور زبیر رضی الله عنها دونوں نے مکہ جا کر حضرت ام المؤمنین عا کشصد یقتہ کے سامنے واقعه کی تفصیل بیان کی جوان دنوں میں حج کرنے تشریف کے میا کہ جا کر حضرت اور ت سے ملے ہوا کہ بھر وجا کرلوگوں کی ذہمن سازی کی جائے تا کہ حضرت عثمان کے خون

کابدلہ لیا جائے ادھر حضرت علی رضی اللہ عنہ جن کے ہاتھ پرلوگ شہادت عثان کے فور أبعد بیعت کر پچکے تھے حضرت عثان کے خون کا قصاص لینا چاہتے تھے گران کواولیا وعثان کے آنے اور طلب قصاص کا انتظار تھادوسری طرف باغیوں کی تعداد بھی زیادہ تھی جن پر قابو پا نا خاصام شکل امر تھا بہر حال جب حضرت علی اللہ کوان حضرات کے بھرہ جانے کا پتہ چلا تو وہ بھی وہاں تشریف لے گئے ۔ حضرت ابو بکرہ رضی اللہ عنہ کی رائے وہی تھی جو حضرت عائشہ ملی کی تھی گر ذکورہ روایت کے مطابق انہوں نے بھانپ لیا تھا کہ فتح حضرت علی ملی کو فعیب ہوگی کہ وہ مرد ہیں جبکہ ام المؤمنین عورت ہیں ،اس لئے وہ لڑائی سے اجتناب کرتے رہے۔

اس مدیث کے مطابق اہل فارس نے سمری کی گوئی کو مکران بنالیا تھاجس پرآپ صلی الشعلیہ وسلم نے بیارشاوفر مایا کہ ایسا کرنے والی کوئی قوم کا میاب نہ ہوگی ۔ اس کا مختصر پس منظر یہ ہے کہ جب صلی حدیبیہ کے بعد آپ صلی الشعلیہ وسلم نے ملوک کے نام خطوط ارسال فرمائے تو حضرت عبداللہ بن خذافہ ہی گا کوایک کمتوب در کرشاہ فارس جس کا لقب سرک کا اور نام خسر و پرویز تھا کی طرف بھیجا اس بد بحنت نے آپ صلی الشعلیہ وسلم کا نام اپنے نام سے پہلے لکھا ہواد یکھا تو کبروخوت کے نشہ میں وہت طیش میں آکر آپ صلی الشعلیہ وسلم کا والا نامہ چاک کردیا جس کی اطلاع مدینہ میں پہنی اس پرآپ صلی الشعلیہ وسلم نے بدد عاکی کہا ہے اللہ! اس کو بھی کھڑے گئی اس پرآپ صلی الشعلیہ وسلم نے بدد عاکی کہا ہے اللہ! اس کو بھی کو بھی کا بیٹ کو اس کے ادادے کا اندازہ ہوگیا تھا اس لئے اس نے شاہی دوا خانہ میں ناس پر کے باپ کو داست سے ہٹا یا باپ کو اس کے ادادے کا اندازہ ہوگیا تھا اس لئے اس نے شاہی دوا خانہ میں نرم کی شیش رکھ کراس پر کھا تھا، بس وہ بھی اپنے انجام کو پہنچا، اس طرح جے ماہ کے اندراندراس خاندان کے وہ جماح کا کہا ہت حقوق رکھا تھا، بس وہ بھی اپنے انجام کو پہنچا، اس طرح جے ماہ کے اندراندراس خاندان کے سب مردخم ہوگئے اور بالآخراس کی بیٹی ' بوران' ' کو تخت پر بھا دیا گیا، آپ صلی الشعلیہ وسلم کو طلاع ہوئی تو آگی، این العربی میں ایک تو بیس کی جنا نے جنام کو کھا تھا۔ وسلم کو الشد کے زمانہ میں ایک تو بیس کی دیا جو مطرف کا میانی کو امریانی نوانس کو کا میانی نہیں ہوگی جنا نچہ حضرت عمرضی الشدے زمانہ میں ایران

"هـندايـدل عـلى ان الولاية لِلرجال ليس للنساء فيهامدخل باجماع اللهم الاان اباحنيفة قال تكون المرأة قاضية فيماتشهدفيه يعنى على الخصوص

لینی عورت کوبالا جماع ولایت کاحق حاصل نہیں البتہ امام صاحبٌ فرماتے ہیں کہ جن مواقع میں

عورت گواہ بن سکتی ہے تو ان میں قاضیہ بھی بن سکتی ہے۔

شرح عقائد وغیرہ میں عورت کی عدم ولایت کی دلیل بیددی ہے کہوہ"ناقیصات العقل والدّین"
ہوتی ہیں، نیزامام کے لئے شجاعت وغیرہ ضروری ہے جوعورت میں بڑے پیانے پڑہیں پائی جاتی ہے،البتہ
قضامیں ضابطہ یہ ہے کہ جس چیز میں جس شخص کی شہادت معتبر ہے اس میں وہ قاضی بھی بن سکتا ہے کہ قضاء
کا دارومدارشہادت پر ہے لہٰذاعورت حدوداور قصاص کے علاوہ باقی خصومات میں قاضیہ بن سکتی ہے۔(کذافی
الہدایہ باب کتاب القاضی الی القاضی فی فصل آخر)

اس باب میں حضرت عمر کی حدیث ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ آگاہ ہو! میں تم کو بتا تا ہوں تا ہم کو بتا تا ہوں تہمارے حکمرانوں میں سے اچھے اور بُرے ، اچھے امراء وہ بیں جن کوتم پسند کرواور تم کو وہ پسند کریں تم ان کے لئے دعا کیں ماگلواور وہ تمہارے لئے دعا کریں ، اور برے حکمران وہ بیں جن سے تم نفرت کرواور وہ تم سے نفرت کریں بتم ان پرلعنت کرواور وہ تم پرلعنت کریں۔

لینی اگران کے اندر ہمدردی اور خیررسانی کا جذبہ اور خدمت وسیاست کا سلیقہ اور عدل کا ملکہ ہوگا تو تمہارے تعلقات خوشگوار اور ایک دوسرے کے لئے دعا گوہوں گے، ورنہ دشمنی، نفرت اور عداوت واختلافات ہوں گے۔

 کم از کم گناه کی شرکت سے تو سالم و محفوظ رہا گرجوش ان افعال پرخوش بھی ہواور شریک بھی ہوتو وہ گناہ میں برابرکا شریک ہوگا، یہاں "لے نم من رضی "کی فرکوظا ہر ہونے کی وجہ سے حذف کردیا"ای فہواللذی شداد کھم فی العصیان" وجہ ظہور ہے کہ بیصورت پہلی دونوں کے مقابل ہے۔ چنا نچ تفییر خازن میں سورہ بقره کی آیت نمبر: ۹۱"قبل فَلِمَ تقتلون انبیاء الله من قبل ان کنتم مؤمنین "کی تفییر میں لکھا ہے کہ دنیا میں کہیں بھی معصیت ہور ہی ہوتو اس پراعتراض کرنے والا بری اور راضی ہونے والا شریک شار ہوتا ہے" قیسل کہیں بھی معصیت ہور ہی ہوتو اس پراعتراض کرنے والا بری اور راضی ہونے والا شریک شار ہوتا ہے" قیسل اذائے ملت المعصیة فی الارض فسن کو مقبلو انکو بَوی و من رضیعا کان من اھلھا" تا ہم آنخضرت سلی الله علیہ وکل من ان سے لڑنے کی ممانعت فرمادی کیونکہ یوا کی عموم بلوی کی کیفیت ہوگی اور ایسے منکرات کو برد و بازورو کئے کے لئے بہت زیادہ خون بہانے کی ضرورت ہوتی ہے جو بذات خووا یک الیہ سے کم نمیں۔ (ھذا مدیث صفحی)

قوله: "اذا کانت امراء کم خیار کم واغنیاء کم سُمحاء کم وامور کم شوری بینکم فیظهرالارض خیر لکم من بطنها". جبتمهارے امراء تمهارے افضل لوگ ہوں کے اور تمهارے اغنیاء تمہارے بی لوگ ہوں اور تمہارے کام باہمی مشاورت کے ساتھ ہوں قربین کی پشت تمہارے لئے اس کے پیٹ سے بہتر ہے۔ لیخی اسک صورت حال میں حیات موت کے مقابلہ میں افضل ہے اس کی وجہ ظاہر ہے کیونک جب ارباب افتد ارشریف اور تقی لوگ ہوں گے اور مالدارلوگ خاوت کرتے ہوں اور معاملات وغیرہ باہمی مشورے کے ساتھ چل رہے ہوں اور معاملات وغیرہ باہمی مشورے کے ساتھ چل رہے ہوں تو یہ تابی کا ذریعہ ہوگا جو ہوت ہوگا۔ کہ نیک عمل میں تعاون کرنے والے موجود ہوں کے لہذازندہ رہنا اچھے اعمال کا ذریعہ ہوگا جو ہوت سے مقطع ہوجاتے ہیں۔ اس کے برعس اگر حکم ران کر ہے ہوں اور معاملات کورتوں کے سپر دہوجا کیں تو پھر موت ہی آئی ہوں کے دو کی گناہوں کے ویک دریک گناہوں کے بیاں حیاتی ہیں مرت کے بین مرت کے بین میں آجائے تو وہ تو اور بھی اچھی بات ہے کیونکہ گناہوں کی نو بت ہی نہیں آئے گی ، بہر حال جب مور گر بات ہے کیونکہ گناہوں کی نو بت ہی نہیں آئے گی ، بہر حال جب مور گر بات اللے بین اور گر بین کے اور بدی گاہوں کی نو بت ہی نہیں آئے گی ، بہر حال جب مور گر بین کے اور گر نہیں کے اور بین کی کر نامنعد رہوجائے تو پھر نور دروجائے تو پھر نور دروجائے تو پھر نور ہوجائے تو پھر نور ہوجائے تو پھر نور ہوجائے تو پھر نور ہوجائے تو پھر نور نور ہوجائے تو پھر نور نور ہوجائے تو پھر نور ہوجائے تو پھر نور ہوجائے تو پھر نور نور ہوجائے تو پھر نور ہوجائے تو پھر نور نور ہوجائے تو پھر نور نور ہوجائے تو پھر نور ہوجائے تو پھر نور ہوجائے تو پور نور ہوجائے تو پھر نور ہوجائے تو پور نور ہوجائے تو پھر تو پھر نور ہوجائے تو پھر نور ہوئے تو پھر نور ہو

زندگ آم براۓ بندگ زندگ بے بندگ شرمندگ ال حدیث میں عام نضا کی بات ہوئی ہے کہ جب عمومی فضااس طرح بن جائے کہ اہل اقتد ارسارے یا کثر کرے ہول ،افنیاء بخیل ہوں اور عور تیں با اختیار یا معاملات میں پیش پیش ہوں یا کم از کم مرد ان کے مشور وں شاروں پر چلئے لگیں تو چونکہ وہ ''ناقیصات العقل و اللدین '' بیں ظاہر ہے کہ وہ کسی بھلائی کامشورہ تو نہیں دے سیس میں نہیں تو ایسے میں خیرونیکی کی تو قع کیسے کی جاسکتی ہے اگر چہ نیک سیرت اور فضائل و اخلاق سے آراستہ خاتون اس فہرست سے مشتی ہے کہ وہ اگر سے مشورہ نہ بھی دے سکے تو کم از کم غلط رائے سے اخلاق سے آراستہ خاتون اس فہرست سے مشتیل ہے کہ وہ اگر سے مشورہ نہ بھی دے سکے تو کم از کم غلط رائے سے انہاں کی تعداد اقل قلیل ہوتی ہے۔

باب

"عن ابسی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال: انکم فی زمان من ترک منکم غشر ماأمر به هلک ، ثم یأتی زمان من عَمِل منهم بِعُشرِ ماأمر به نَجَا". (هذا حدیث غریب) حضر ماأمر به هلک ، ثم یأتی زمان من عَمِل منهم بِعُشرِ ماأمر به نَجَا". (هذا حدیث غریب) حضر ست ابو بریره رضی الله عند سے مروی ہے کہ بی سلی الله علیه وسلم نے فرمایا بے شکم آلاک ہوجائے گا پھرا کے زمانہ میں ہوکہ تم میں سے جوفض اس کا دسوال حصہ عمل میں لائے گا جس کا اسے حکم ہے تو نجات پائے گا ایسا آئے گا کہ ان میں سے جوفض اس کا دسوال حصہ عمل میں لائے گا جس کا اسے حکم ہے تو نجات پائے گا (کیونکہ اس دور میں دین کے انسار کم یا معدوم ہوں گے)۔

تشری : صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کا زمانہ اسلام کے شاب وطاقت کا دور تھا اور نیکیوں کی برکات وبارش کے لئے بمنزلہ ساون کا مہینہ تھا ظاہر ہے ایسے میں کوئی پوداختک اور کوئی درخت بیٹر نہیں رہتا ایسے ماحول میں نیکی کمانا نہ صرف آسان ہوتا ہے بلکہ ماحول کا تقاضا بھی ہوتا ہے جبکہ موسم خزاں میں درختوں کے پتے جھڑ جاتے ہیں اور پھل گرجا تا ہے شاذ و نا در درختوں میں پھل نظر آتا ہے مگر کسی پودے یا درخت کا اپنی تازگی کو محفوظ و بر قرار رکھنا موسم کے اعتبار سے ایک و شوار امر ہوتا ہے ، ایسا ہی جب فتنوں کا زمانہ آئے گاتو ہر طرف نیکیوں کے خلاف ہوا کمیں اُمنڈ آئیں گی اور نیکی کو کرنے ہی نہیں دیں گی ، وہ آ دمی بڑا ہی با جمت اور ایمانی اعتبار سے مضبوط ہوگا جو ایسے میں بھی نیکی کے حصول کے بیچھے لگار ہے۔

یبال تک توبات بدیمی ہے گر' مامور بہ' اور نیکی سے کیامراد ہے؟ تو بعض حصرات سے اس کے تعین میں سہوہ وا ہے اور مراد فرائض کے بین حالانکہ یہ درست نہیں کیونکہ فرائض تا قیامت پوری امت پریکسال لازم

ہیں ان میں کمی ورخصت کی کوئی گنجائش نہیں ہے سوائے عاجز کے۔

پھراس کامطلب کیا ہے؟ تو بعض حضرات فرماتے ہیں کہ مراداخلاص ہے کہ فتنوں کے زمانہ ہیں تھوڑ اسااخلاص بھی نجات کاسبب ہے گا۔ بعض حضرات فرماتے ہیں کہ مرادامر بالمعروف ونہی عن الممکر ہے کہ قرون اولی ہیں مشرات کمزور تھے اس لئے ان کوسرا تھانے ہے دو کنا آسان تھااس لئے اس میں سُستی کی مختائن نہتی جبکہ آج کل یا آ کے چل کرمنگرات کی جڑیں مضبوط ہیں اور مزید پختہ ہوں گی ایسے میں ان کو جڑے اکھاڑ نامتعذر انجالبتہ استیصال کی دی فیصد کوشش بھی نجات کا ذریعہ بنے گی، ابن العربی عارضہ میں لکھتے ہیں اکھاڑ نامتعذر انجالبتہ استیصال کی دی فیصد کوشش بھی نجات کا ذریعہ بنے گی، ابن العربی عارضہ میں لکھتے ہیں کہ جب دسوال حصہ بھی قابل عمل ندر ہے تو پھرآ دمی کواس کی اجازت ہے کہ وہ لوگوں کے مسائل چھوڑ کر بھنی امر بالمعروف ونہی عن الممثل جھوڑ کر مرف اپنی فکر میں لگار ہے اور پھرا کیک دوراییا بھی آجائے گا کہ خود بھی عمل دشور جھوڑ کر صرف اپنی فکر میں لگار ہے اور پھرا کیک دوراییا بھی آجائے گا کہ خود بھی عملی دینہ میں انگار سے قامنا متعذر ومشکل ہے جسیا کہ حضرت انس کی حدیث میں گذرا ہے دشوار ہوجائے گا جتنا مٹھی ملی دینہ سے القابض علی المجمو" حضرت تھانویؒ فرماتے ہیں کہ مراد کیت نہیں بلکہ کیفیت ہے بینی نمراد کیت نہیں حضوص وغیرہ یا جسے متجات وآداب بھی لے سکتے ہیں ۔ واللہ اعلم

قوله: "ههٔ خاارض الفتن واشارالی المشرق"اس پر بحث "باب ماجاء ان الدجال لایدخل المدینة" بین گذری ہے حدیث ابوهری گی تشریح میں دیکھے۔قوله: "حیث یطلع قون الشیطان" جہال شیطان کاسینگ نکتا ہے، یہ تو لفظی ترجمہ ہے گرقرن الشیطان سے مراداس کا تسلط اور اس کی جماعت وکارندے ہیں جوشیطان کے اشاروں پر چلتے ہیں چنا نچہ جتنے فرق مبتدعہ گزرے ہیں یا آج کل نے مناظریات لے کرنکل رہے ہیں یہ سب مشرقی لوگ ہیں یعنی عوام ممکن ہے کہ شیطان سے مرادعام ہوخواہ من البنات ہوں مامن الانس ہوں چنانچہ میہ فتندا گیزلوگ بور پی اقوام وانگریزوں کے منصوبوں کو ملی جامہ بہناتے ہیں۔

قوله: "اوقال قون الشمس" لفظ اوشكراوى كے لئے ہے يعنى جہال سے سورج كاكناره طلوع موتا ہے۔ هذا صديث حسن سيح واخرجه الشيخان

قوله: "يخرج من خراسان رايات سُودفلاير دهاشنى حتىٰ تنصب بايليآء". (غريب حسن) خراسان سے كالے جمند كليں كي پس كوئى چيزان كؤيس لوٹا سے گاتا آئكدوہ ايلياء (مقام) بيس كا رُحد يئے جائيں گے۔قوله: "رايات" راية كى جمع ہے بمعنی جمندے كاورسود جمع ہے اسودكى قوله:

"حتى تُنصب" بصيغة مجهول نصب معنى كا رُصنا ورابرانے كے بيں قوله: "بايلياء" إيليا وبكسرالبهزه وكسرالبهزه وكسراللام مدوقصردونوں جائز بيں بيت المقدل كقريب ايك شهركانام ہے، پھرحتى متعلق ہے يخرج كے ساتھ نه كد" فلايو دها"كے ساتھ ۔

اس نشکراور جھنڈوں کوواپس کرنے کی کسی میں تاب وطافت نہ ہوگی کیونکہ کنز العمال اور مسنداحمد کی روایت میں ہے کہان میں حضرت مہدی ہوں گے۔

"اذار أيسم رايات السودقدجاء ت من قِبَلِ حراسان فائتوهافان فيهاخليفة اللهالمهدى". لفظه لاحمد و رجاله ثقات

آخرابواب الفتن ويليه ابواب الرؤيا

ابوابالرؤپا

عن رسول الله صلى الله عليه وسلم

باب إن رؤيا المؤمن جزء من ستة واربعين

جزء من النبوة

(مومن كاخواب نبوت كالاسهر جهياليسوال حصدب)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: اذا قِترب الزمان لم تكد رؤيا السمؤمن تكذِبُ واصدَقُهم رؤياً اصدقهم حديثاً ،ورؤيا المسلم جزء من ستة واربعين جزء من الشوالرؤيامن تحزين الشيطان والرؤيام أو والرؤيام فالرؤيا الصالحة بُشرى من الله والرؤيامن تحزين الشيطان والرؤيام مايكره فليقم وليتفُل والايُحَدِّث به الناسَ قال وأحِبُ القيدفي النوم واكره الغُلَّ ،القيدثبات في الدين". (حسن صحيح)

حضرت ابو ہریرہ سے دوایت ہے کہ رسول الله علیہ وسلم نے فرمایا جب زمانہ قریب ہوجائے گا تو مؤمن کا خواب بہت کم جھوٹا ہوگالوگوں میں سب سے زیادہ سپے خواب والا وہ ہوگا جس کی بات (یا سوچ) سب سے زیادہ سپی ہواور مسلمان کا خواب نبوت کا چھیالیسواں ہزء (حصہ) ہے اور خواب تین طرح کے ہوتے ہیں، پس اچھا خواب اللہ کی طرف سے بشارت (خوشخری) ہے اور ایک خواب شیطان کی طرف سے پریشان کن خیال ہوتا ہے اور ایک خواب آدمی کے ول میں سوچ و بچار کی وجہ سے ہوتا ہے پس تم میں کوئی اگر ایسا خواب دیکھے خیال ہوتا ہے اور ایک خواب آدمی کے ول میں سوچ و بچار کی وجہ سے ہوتا ہے پس تم میں کوئی اگر ایسا خواب دیکھے جواسے نا گوار گے تو اسے چاہئے کہ اُٹھ کر (بائیس جانب) تھو کے اور لوگوں سے اس کا تذکرہ نہ کرے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں خواب میں بیڑی کو پسند کرتا ہوں اور طوق کو ناپسند کرتا ہوں (کیونکہ) بیڑی (کی تعبیر) و بین پر ثابت قدم رہنا ہے۔

آخری : قوله: "اذااقترب الزمان" اس کے معنی و مطلب میں شار مین نے متعددا تو ال بیان کئے ہیں مثلاً جب صبح کا وقت تریب ہو بعض نے کہا کہ دن رات مسادی ہوجائے بیاس وقت ہوتا ہے جب سور ج خط استواء پر ہوجیسے مارچ اور سمبر کے مہینوں میں مگراس کو ابن العربی نے نئی سے رد کیا ہے لہذا بے غبار مطلب یہ ہے کہ جب قیامت کا دن قریب ہوجائے گا بھر چاہے وہ حضرت مہدی ویسی علیما السلام کا زمانہ ہویا خروج دجال اورفتوں کا زمانہ مانا جائے کیونکہ ایک تو وہ زمانہ بجائیات وخوارق کا ہوگا اور از اس جملہ ایک خواب بھی ہے دوم مؤمن ان فتوں میں نامانوس ہوگا تو جس طرح ابتداء اسلام میں مؤمن کا خواب سیچا ہوا کرتا تھا اس طرح ان کی تالیف کے لئے آخر الزمان میں بھی ان کو سیچ خواب دکھائے جائیں گے، اور اگر حضرت مہدی کا زمانہ لیا جائے تو پھرعدل وانصاف کی فراوانی کی وجہ سے خواب سیچے ہوں گے۔

قوله "لم تكدوؤیا المؤمن الخ" رؤیا بروزن پیری اصل مین مصدر ہے گرجب اس کا اطلاق خواب پر ہونے لگا تواسے اسم کی طرح مانا گیا،خواب کی حقیقت جاننا ایک مشکل امر ہے بہت سے ماہرین نے اس پر مستقل کتابیں کھی ہیں اور بعض حضرات نے اسے اپنی کتابوں میں ضمنا ذکر کیا ہے حضرت شاہ عبدالعزیز رحمہ اللہ دہلوی کی اس موضوع پر مستقل کتاب بنام "تحقیق الرؤیا" بہت سے فوائد پر مشتمل ہے ، ججة الله البالغہ اور مقدمہ ابن خلدون میں بھی اس موضوع کو اُجا گر کیا گیا ہے "تحقیق الرؤیا کے صفحہ نمبر الا پر حضرت شاہ صاحب" کھے ہیں:

"فَمِن ثم اضطرب الناس في امرالرؤيا واختلفوااختلافاً فاحشاً على حسب اصولهم المختلفة فقال المتكلمون الرؤياخيال الخ".

لین اس سئلہ میں بہت سارااختلاف ہے حکماء کچھ کہتے ہیں اور دیگر کچھ، گربعض متکلمین یعنی اہل سنت والجماعت کے نزویک خواب ایک خیال ہے جس کا مطلب علا مدا بن خلدون نے اپنے مشہور مقدمہ میں یوں بیان کیا ہے کہ جب انسان سوجا تا ہے تو روح بجائے حواس ظاہرہ کے باطنی قوئی کی طرف متوجہ ہوجاتی ہے جس سے اس کو حافظہ کی صور تیں نظر آتی ہیں بیصور تیں زیادہ تر وہی ہوتی ہیں جوعادی و مانوس ہوتی ہیں بھر حس مشترک ان کا حواس ظاہرہ کے مطابق ادراک کرلیتی ہیں۔ (مقدمہ ص: ۳۰۹ متر جم حصداول)

مرصوفیاء اور فقہاء فرماتے ہیں کہ خواب ایک حقیقت ہے پس خواب تین طرح کا ہوتا ہے: (۱) شیطانی وسوسہ(۲) خیالی (۳) الہامی خواب جو یہاں مراد ہے۔

قوله: "اصدقهم رؤیا النے"اس کی وجہ یہ کہ خواب در حقیقت ایک خیال ہوتا ہے الہذا جس کے مزاج میں دروغ گوئی نہیں ہوگی تو اس کی سوچ بھی اچھی اور حقیقت پڑی ہوگی اس لئے خواب سے ہوں گے۔

قوله: "رؤیا المسلم جزء من النے" بعض شار عین نے اس کا مطلب یہ لیا ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو خواب و کھانے وسلم کو نبوت چالیس سال پڑل گئی تھی جبہ وہی کے آغاز سے چھ ماہ قبل آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو خواب و کھانے کا سلسلہ شروع ہوا تھا مگر ابن خلدون نے اس تو جیہ کوئی سے ردکر کے اپنی تو جیہ اس طرح کی ہے کہ:"انبیائے کہ اسلمہ شروع ہوا تھا مگر ابن خلدون نے اس تو جیہ کوئی سے ردکر کے اپنی تو جیہ اس طرح کی ہے کہ:"انبیائے کہ اس کو مدارک بدنیہ سے مجر دہوکر جوعلم حاصل ہوتا ہے وہ زیادہ ترخواب کے علم سے مشابہ ہے اگر چہ نیندگی حالت، حالتِ وہی سے بہت بست ہے عام خواب اور وہی کے مراتب میں زمین و آسان کا فرق ہے اس مشابہت کے بعد دونوں) کے مرتبوں میں کثر ت فرق کا اظہار مقصود ہے، کیونکہ عرب لفظ بلکہ خواب و نبوت (میں مشابہت کے بعد دونوں) کے مرتبوں میں کثر ت فرق کا اظہار مقصود ہے، کیونکہ عرب لفظ عدیمن اظہار کثر ت کے لئے استعال کیا کرتے ہیں۔ (مقدمہ حصد اول ص: کے سافیس اکیڈی)

اس مدیث سے قاد نیوں کا استدلال: ۔ قادیانی اس مدیث سے استدلالی کوشش کر کے کہتے ہیں کہ جب نبوت کا جزء باتی ہے تو پھر مطلب سے ہوا کہ نبوت بھی باتی ہے کیونکہ جزء من حیث الجزء بغیر کل کے موجو ذہیں ہوسکتا، مگر بیا سندلال انتہائی کمزور بنیاد پر قائم ہے کہ اوّلاً تو جیسا کہ او پر محقق عبدالرحمٰن بن خلدون کی عبارت میں تقریح کی گئی ہے کہ یہاں تشبیہ دے کردونوں میں تباعدوتفارق بتلا نامقصود ہے نہ کہ جزئیت وکلیت ۔ دوم جزء کے اندر حیثیت کو لمح فارکھنا ایک عمین غلطی ہے، جیسا کہ علامة نفتا زانی رحمہ اللہ نے شرح عقائد میں اس پر تفصیل سے بحث کی ہے جو ''و ھی لاھو و لاغیرہ " کے تحت دیکھی جا سکتی ہے، خلاصہ اس کا بیہ ہے کہ اگراس قتم کی قبودات سے مانی جا کیں تو پھر باپ من حیث الباب بغیر بیٹے کے اور تمام متفائفین ایک دوسرے کے بغیر نبین پائے جا سکیں گے بلکہ دوم غائر چزیں بھی پھر ساتھ ساتھ رہیں گی جبکہ اس کا کوئی بھی قائل نہیں ہے۔ بغیر نبین پائے جا سکیں گے بلکہ دوم غائر چزیں بھی پھر ساتھ ساتھ رہیں گی جبکہ اس کا کوئی بھی قائل نہیں ہے۔

قوله: "ولیتفل النے" پریشان کن خواب دیکھنے کے بعد جب آدمی نیندسے بیدار ہوجائے تو فوراً تعوذ کرکے بائیں جانب تھو کے کیونکہ شیطان بائیں جانب سے آگر دسوسہ ڈالٹا ہے نیز جیسے دم کرنے والاتھو کتا ہے اس طرح تعوذ کی صورت میں بھی تھو کنا چاہئے اور دل میں بی خیال لائے کہ اس نے گویا شیطان کے منہ پرتھو کا، اس سے دفع وساوس میں بوی حد تک مدملتی ہے اور لوگوں سے اس کا تذکرہ نہ کرے کیونکہ جب لوگ اس کا آپس میں تذکرہ کریں گے تو اس سے وسوسے دوبارہ لوٹ آئیں گیا تین میں علاء فرماتے ہیں کہ کھ صدقہ بھی کا آپس میں تذکرہ کریں گے تو اس سے وسوسے دوبارہ لوٹ آئیں گیا گوبنی علاء فرماتے ہیں کہ کھ صدقہ بھی

دے دے اور جتنا دے گا اُتنابی اس کے ضرر سے محفوظ رہے گا۔واللہ اعلم اس کے لئے آ گے متعلّ باب آر ہاہے۔ فلینتظرہ

قوله: "و أحِبّ القيد النع" عارضه ميں ہے كه يه جملة خرتك مدرج من الراوى ہے يه مرفوع حديث كا حصنہيں ہے ، كواله خطيب البوبكر في كتاب الفصل بهر حال اس كومرفوع ما نيس تو مطلب يہ ہے كه مقيدة وى چلئے سے قاصر ہوتا ہے اس لئے وہ اپنی جگہ قيم رہتا ہے جبكہ اغلال يعنی طوق تو اس كا تذكره قر آن ميں جہنيوں كى فدموم حالت كے بيان كے طور بركيا گيا ہے۔

باب ذهبت النبوة وبقيت المبشرات

(نبوت اختتام پذریهوئی جبکه مبشرات باقی ہیں)

"مختاربن فلفل نا انس بن مالك قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : ان الرسالة والنبوة قدانقطعت فلارسول بعدى و لانبي قال: فَشَقَّ ذالك على الناس ، فقال : "لكن المبشرات " فقالوايارسول الله او ما المبشرات ؟ قال: رؤيا المسلم وهي جزء من اجزاء النبوة ". (صحيح غريب)

مختار بن فلفل حضرت انس رضی الله عنه سے روایت کرتے ہیں فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ بے شک رسالت و نبوت یقینا ختم ہوگئ پس نہ کوئی رسول آئے گامیر نے بعد اور نہ ہی نبی، حضرت انس فرماتے ہیں کہ صحابہ کرام ملک کو یہ بات گراں معلوم ہوئی ، تو آپ سلی الله علیہ وسلم نے فرمایا مگر مبشرات کو خرایاں کا خواب، (خوشخریاں) باقی رہیں گی ، صحابہ کرام نے بوچھا اے الله کے رسول! مبشرات کیا ہیں؟ ؟ فرمایا مسلمان کا خواب، جبکہ وہ اجز ائے نبوت کا ایک جزء ہے (یعنی مشابہ بجز ہے)۔

تشری : مبشرات کی تغیر خود ہی حدیث میں کی گئی ہے یعنی ایسے خواب جن سے بشارت معلوم ہویہ صیغتہ اسم فاعل بکسرالشین المشد دہ ہے ، چونکہ پہلے ارشاد سے صحابہ کرام پڑم کا اثر ہوا کہ آپ علیہ السلام کے بعد جب نبوت کا دروازہ بند ہونے کی بناء پرکوئی نبی یارسول نبیں آئے گا تو بھلے بُر سے افعال کے بارے میں کوئی بشارت یا تنذیر بھی ندر ہے گی اس طرح تو لوگ جلد ہی راؤستقیم سے ہٹ سکتے ہیں کہ ان کا رابطہ عالم بالاسے کمل منقطع ہوگا ، اس پرآسے سلی اللہ علیہ وسلم نے ان کوسلی دی کہ مبشرات باقی رہیں گی جونیک آدی کے لئے خوشخری

لائیں گی اور بڈمل کرنے والے کے لئے عبیہ ہوگی، پھریہ کیفیت اگر بیداری کی حالت میں ہوتو اس کوالہام کہتے ہیں خواب اورالہام دونوں باتی ہیں مگر انبیاء کے علاوہ کسی اور کا خواب یا الہام شرعی جمت ودلیل نہیں گواس سے تسلی مل سکتی ہے مگر جہال کوئی اشارہ شریعت کے خلاف محسوس ہوگا تو اس پڑمل در آمد جائز نہیں، پھرخواب اگر عالم بالا میں دوری پردیکھا جائے تو اس کی تعبیر آنے میں سالہاسال لگتے ہیں جبکہ قریب سے دیکھنے میں زیادہ در نہیں لگتی ہیں جبکہ قریب سے دیکھنے میں زیادہ در نہیں لگتی۔

دوسری حدیث میں ایک مصری شخص نے ابودرداءرضی اللہ عند سے اس آیت کے بارے میں پوچھا "لھم البشویٰ فی العیاۃ الدنیا" توانہوں نے جواب میں فرمایا کہ جب سے میں نے رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم سے اس بارے میں پوچھا ہے تو سواے تیرے اور ایک شخص کے کسی نے مجھ سے یہ سوال نہیں پوچھا ہے میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جب سے یہ آیت نازل ہوئی تیرے رسول اللہ علیہ وسلم سے پوچھا تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جب سے یہ آیت نازل ہوئی تیرے (ابودرداء کے) سواکسی نے مجھ سے اس کے متعلق نہیں پوچھا ہے، یہ اچھ (سیچ) خواب مراد ہیں جوکوئی مسلمان و کھے یاس کے لئے دیکھا جائے۔

اس روایت میں مصری شخص مجہول ہے اس کے باوجودامام ترفدیؒ نے اس کو حسن کہاہے بیشا ید دیگر شواہد کے پیش نظر ہو۔ یہاں بھی او پر حدیث کے شمن میں جوبات کی گئے ہے اس کو کھوظ رکھنا چا ہے لینی زندگانی دنیا میں اہل ایمان کے لئے خوشخبری بذریعہ خواب ہویا بذریعہ الہام ہو، تا ہم آیت کا مفہوم کافی عام ہے للبذا بشارت کی اور بھی صور تیں ہو سکتی ہیں مثلاً لوگوں میں مقبولیت، نیک اعمال سے شرح صدر اور مزیدا عمال میں دلچیس میں اضافہ اور موت کے وقت فرشتوں کی طرف سے نیک سلوک اور خوشخبری دغیرہ دغیرہ ۔

قول الدن اصدق الرؤیاب الاسحار نیادہ سپاخواب وہ ہے جوسے (طلوع فجر) کے وقت دیکھا جائے ، اسحار جمع ہے گرکی اگر رات کے چھ صے بنادیئے جائیں تو آخری چھے حصہ کوسے کہ جن اس وقت کے خواب کا زیادہ سپاہونا دو ہا توں پرٹن ہے ایک ہی کہ بیز دول رحمت کا وقت ہوتا ہے دوم ہی کہ دو ماغ اور قلب معد کے بخارات سے خالی ہوتے ہیں چونکہ رات کے پہلے اور دوسرے وغیرہ پہروں اور حصوں میں قلب ود ماغ حدیث انتفس اور خیالات میں جاتا ہوتے ہیں اس لئے وہ خواب زیادہ معتبر نہیں کہ ان میں زیادہ احتمال خیال کا ہے جبکہ آخری حصہ میں دل ود ماغ کمل راحت حاصل کر چکے ہوتے ہیں اس لئے ان کا تعلق عالم بالاسے قوی تربہ وجاتا ہے اس کئے اس گھڑی کے خواب عوم آسے اور الہامی ہوتے ہیں اس لئے ان کا تعلق عالم بالاسے قوی تربہ وجاتا ہے اس کئے اس گھڑی کے خواب عوم آسے اور الہامی ہوتے ہیں۔

باب ماجاء في قول النبي عَلَيْكِمْ:

"من رانى فى المنام فقدرانى"

جس شخص نے مجھے خواب میں دیکھ لیا تحقیق اس نے مجھ کو ہی دیکھا

"عن عبدالله عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: من رانى فى المنام فقدرانى فان الشيطان لا يتمثّل بى". (حسن صحيح)

حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: جس شخص نے مجھے خواب میں دکیولیا پس تحقیق اس نے مجھ ہی کودیکھا کیونکہ شیطان میراروپے نہیں دھارسکتا۔

تشری : اس صدیث میں "من دانسی فسی السمنام فقددانی "شرط اور جزاء دونوں متحدیں جو مبالغہ کے لئے ہیں یعنی اس نے حقیقت میں مجھ ہی کود کھ لیا کیونکہ "فان الشیطان لایت مثل ہی " یعنی شیطان میری صورت اختیار نہیں کرسکتا کیونکہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم مظہر ہدایت ہیں اور شیطان مظہر ضلالت، اور دونوں میں تاتف ہے ۔ عارضہ میں ہے کہ اس حدیث کے چارالفاظ ہیں: (۱) ایک جو یہاں حدیث میں ہے (۲) دوم "من دانی فقد دأی الحق" (۳) سوم "فسیرانی فی الیقظة (۳) چہارم" آگانمادانی فی الیقظة" ۔ "من دانی فقد دأی الحق" بہروم میں شیطانی خیال وصورت کی نئی مراد ہے جبر سوم میں سی ہی احتمال ہے کہ اس اول کی وجہ تو گذرگی جبر دوم میں شیطانی خیال وصورت کی نئی مراد ہے جبر سوم میں سی ہی احتمال ہے کہ است میں دیکھتا ایپ خواب کی تغییر و تاویل معلوم ہوجائے گی اور چہارم میں تثبیہ ہے یعنی اگر وہ مجھے بیداری کی حالت میں دیکھتا تو یقینا وہ دیکھنا خواب کی تقیقت ہے۔

المستر شدع ض کرتا ہے کہ جلال الدین سیوطی رحمہ اللہ نے ''الحاوی' ہیں مضارع کا صیغہ قل کر کے لکھا ہے کہ جس نے آنحضور صلی اللہ علیہ و سلم کو خواب میں و کھ لیا اسے جا ہے کہ اپنے باطن کی صفائی پر توجہ دے کیونکہ وہ یقظہ میں آپ علیہ السلام کی زیارت کر ے گا جیسے فرشتوں کا ویکھنا تصفیہ قلب کے بعد ہوسکتا ہے اس طرح آپ صلی اللہ علیہ وسکتا ہے پھر جمہور کے نزدیک آپ علیہ السلام کا حلیہ مبارک آخری عمر کے مطابق ہو مالی اللہ علیہ وسکتا ہے بھر جمہور کے نزدیک آپ علیہ السلام کا حلیہ مبارک آخری عمر کے مطابق ہو یا کہولت اور جوانی کا سب آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے دیدار میں برابر ہیں ۔ البتہ اگر کسی شخص نے آپ علیہ السلام کو خواب میں کسی آپ کی اللہ علیہ وسلم کی دات کی حالت کا عکاس خواب شار ہوگاغرض آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات

میں تبدیلی نہیں آتی مرصفات میں دیکھنے والے کی حالت کے مطابق تبدیلی آسکتی ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا چہرہ انورآ سینے کی مانندہے جس میں دیکھنے والے کواپی حالت نظر آتی ہے، یا یوں کہنا چاہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کود کھنے والے کی حالت عینک کی طرح ہے عینک جس رنگ کے شخصے کی ہوگی تو منظراتی رنگ میں نظر آتا ہے، مثلاً انگریزی لباس والافخص آگر آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو کوٹ پتلون میں ملبوس دیکھے گا تواس سے رائی کی حالت مراوہ وگی، چنا نچے محمد ابن سیرین رحمہ اللہ کے پاس ایک شخص نے آگر کہا کہ اس نے آپ علیہ السلام کو لیٹے ہوئے حالت وفات میں دیکھا ہے تواس سے امساتیة حالت وفات میں دیکھا ہے تواس سے امساتیة سنت مراد ہے، غرض ذات میں تمثل نہیں ہوسکنا گرصفات میں ہوسکتا ہے اسی طرح آگرخواب میں آپ علیہ السلام کا ارشاد سے تواگروہ فلا ہم احادیث و شریعت کے منافی ہوتو اس پڑمل کرنا جائز نہیں ہاں البت آگروہ موافق ہوتو اس پڑمل کرنا جائز نہیں ہاں البت آگروہ موافق ہوتو اس پڑمل کرنا جائز نہیں ہاں البت آگروہ موافق ہوتو اس پڑمل جائز نہیں ہاں البت آگروہ موافق ہوتو اس پڑمل جائز نہیں ہاں البت آگروہ موافق ہوتو اس پڑمل جائز نہیں ہاں البت آگروہ موافق ہوتو اس پڑمل جائز نہیں جائز ہیں جائز ہیں۔

بی حدیث شائل ترندی میں بھی آئی ہے وہاں حضرت مدنی اور شخ الحدیث حضرت مولا ناز کریا صاحب
رحم اللہ نے بوی نفیس بحثیں فرمائی ہیں جود یکھنے کے قابل ہیں۔ شخ الحدیث نے اس کی ایک مثال دی ہے کہ
جیسے کوئی شخص آڑ میں بیٹھ کراپنے سامنے ذرافا صلے پرایک بڑا آئینہ رکھ لے اور دوسر اشخص اس آئینہ کود کیھے تو اس
میں بیٹھنے والے شخص کی مثال یعن عکس نظر آتا ہے ، اس سے بیا شکال بھی دور ہوا کہ بیک وقت مختلف خطوں میں
آپ کی زیارت کیوکر ہوسکتی ہے؟ جواب آسان ہے کہ عالم مثال ایک بڑے آئینے کی طرح اسکرین ہے اس کو ہر
جگہ سے دیکھا جا سکتا ہے جیسے آفناب وما ہتا ہ، تا ہم صوفیاء اس کو حقیقت اور اصل رؤیت پرمحمول کرتے ہیں بیہ
بحث کافی مشکل ہے ، جس کو عالم مثال سمجھنا ہوتو وہ حجۃ اللہ البالغہ کا مطالعہ ضرور کرے۔

باب ماجاء اذارای فی المنام مایکره مایصنع؟

خوفناك خواب د كيه كركيا كرنا چاہيع؟

عن ابى قستادة عن رسول الله صلى الله عليه وسلم انه قال: الرؤيامن الله و الحُلُمُ من الشيطان فاذاراى احدكم شيئايكرهه فلينفث عن يساره ثلث مرات وليستعذ بالله من شرها فانها لاتضره". (حسن صحيح)

حفرت ابوقاده رضی الله عنه سے مروی ہے که رسول الله صلی الله علیه وسلم نے ارشاد فرمایا ہے: سچاخواب

الله کی طرف سے (الہام) ہوتا ہے اور پُر اخواب شیطان کی جانب سے (وسوسہ) ہوتا ہے ہیں اگرتم میں سے کوئی ایک ایسا خواب دیکھے جواسے تا گوارگذر ہے تو (الحصتے ہی) بائیس جانب تین بارتھوک دے اور چاہئے کہ اس کے معزا ترسے اللہ کی پناہ مائے کیونکہ (ایسا کرنے سے) وہ اس کونقصان نہیں دے گا۔

لغات: فوله: "المُحلُم" بضم الحاء واللام، لام كوساكن بھى پڑھا جاسكتا ہے لغت ميں مطلق خواب كو كہتے ہيں مگر عرف ميں رؤيا كا اطلاق الجھے خواب پر ہوتا ہے اور حلم كا پراگندہ اور پريشان كن پر۔

قوله: "فلينفث" بعض روايات من "فليبصق" ہواور بعض من "فليتفل" ہے تيوں كے معنى تھوكنے كے ہيں، مرنفث ميں لعاب زيادہ نہيں ہوتا ہے۔

تشری : اصالتاً توخواب تین طرح کے ہوتے ہیں: (۱) پراگندہ خیالات جوعمواً معدے کی تبخیر اور دماغی خشکی یا طبعیت کی ناسازی کے وقت ہوتے ہیں (۲) شیطانی تخیلات (۳) جوفرشتہ اللہ کے تھم سے کسی مؤمن کے دل ور ماغ میں القاء کرے۔ پہلی دونوں قسموں کوشیطانی قرار دے کر دوہی اقسام بنادی گئیں پھر اللہ کی طرف نسبت تشریف کی بناء پر اور شیطان کی جانب سوءا دب سے بچنے کے لئے ہے جیسا کہ عام ضابطہ ہے کہ اللہ کی طرف ورنہ یہ بھی ہوسکتا ہے کہ کہ اچھی چیزوں کی نسبت اللہ کی طرف مستحب ہے اور کری اشیاء کی شیطان کی طرف ورنہ یہ بھی ہوسکتا ہے کہ پریٹان کن خواب از قبیل انذار کے بیا ہوجومن جانب اللہ ہوتا ہے اور وہی ہرچیز کا خالت ہے۔

بہرحال حدیث کے بموجب اچھے خواب پراللہ کاشکرادا کرنا چاہئے اور پریشان کن خواب دیکھنے کے بعد جب آئسیں کھل جا کیں تو فوراً باکیں کندھے کی طرف تین مرتبہ تھو کے کونکہ شیطان ای جا نب آکروسوب ڈالناہے اور تھو کنے کے لئے بیضروری نہیں کہ آدی زیادہ لعاب تھو کے جیسا کہ لغات میں بتایا جاچکا ہے کہ لفظ "فسلیت فٹ" کے اور تھو کنے کے لفظ میں اس طرف اشارہ ہے کیونکہ نفٹ بعن لغے کہ تاہے جس کے معنی سانس کے آتے ہیں لہذا تھو کتے وقت تھوک کے معمولی ذرات بھی اس مقصد کے لئے کفایت کرتے ہیں ،اس سے بھی شیطان مردودرسوا ہوتا ہے اس کے ساتھ "اعبو ذہ اللہ من الشیطان ... اعو ذہ اللہ من شرھا" بھی پڑھ لے ،اورجیسا کہ بعض روایات میں ہے کہ کروٹ بھی تبدیل کرے بلکہ اگر ہو سکے تو اٹھ کرنماز پڑھ لے اور پچھ صدقہ بھی دے دے لوگوں سے اس خواب کا تذکرہ نہ کرے ،اس طرح وہ ان شاء اللہ اس خواب کے ضرر سے بی جائے گاخصوصاً جب لوگوں سے اس خواب کا تذکرہ نہ کرے ،اس طرح وہ اللہ سی اور اس کا ہونا مقدر ہو، تو وہ لامحالہ ہوکرد ہے گا۔

غرض اس عمل سے ایک طرف تسلی ہوگی جوعلاج کا ایک طریقہ ہے اور دوسری جانب بیاس خواب کے نقصان کورو کنے کا ایک ذریعہ ہے جیسے دعاء ہوتی ہے۔ (تدبر)

باب ماجاء في تعبير الرؤيا

خواب كى تعبير كابيان

تجیرعبورسے بمعنی انقال کے ہے خیالی صورت کے جسمانی صورت سے بیان کرنے کوتجیر کہتے ہیں۔

"دؤیاالمؤمن جزء من اربعین جزء کمن النبوة وهی علی دِجل طائر مالم یتحدث بھا فاذا
تحدث بھاسقطت قال واحسبہ؟ قال (عَلَيْظِیّ): والاتحدث بھالالبیباً او حبیباً". (حسن صحیح)
مؤمن کا خواب نبوت کے چالیس اجزاء میں سے ایک جزء ہاوروہ پر ندے کے پیر پر ہوتا ہے جب
تک اس کو بیان نہ کر دیاجائے لیس جب بیان کر دیاجاتا ہے تو وہ ساقط (یعنی واقع) ہوجاتا ہے رادی نے کہا
میرا گمان ہے کہ آپ سلی اللہ علیہ وہلم نے فرمایا کہ سوائے ہوشیار اور خم خوار (دوست) کے اور کسی کونہ بتایاجائے۔
تشریح: حدیث کا پہلاحسراس بحث کی پہلی صدیث میں گذرا ہے۔ قسو لسد: "عسلسی دِجل
طائد" حضرت گنگوہی رحمہ اللہ نے الکوکب میں فرمایا ہے کہ بیہ بے قراری سے کنا بیہ جوخواب د کیھنے والے
کے دل میں تعبیر کے حوالے ہوتی ہوتی ہاں کا ذھن بھی ایک تعبیر کی طرف جاتا ہے اور بھی دوسری کی جانب
مرجب وہ کسی معبر سے بیان کرتا ہے تو دل کوایک تعبیر پرقرار حاصل ہوتا ہے تو جس طرح پر ندہ کے بیر پردگی
ہوئی چیز غیر مستقل اور محزلال ہوتی ہے مگر جب گرجاتی ہوتیا کی ہوجاتی ہے اس کا خواب کا ہے
تعبیر سے بیل کیا ور بعد میں یکا ہوجاتا ہے۔

عام شارحین کی شرح ذرامخنف ہے وہ کہتے ہیں کہ اس کی تعبیر محمل ہوتی ہے گر جب تعبیر نکالی جاتی ہے تو وہ کہتے ہیں کہ اس کی تعبیر محمل ہوتی ہے گر جب تعبیر نکالی جاتی ہے تو وہ کی متعین ہوجاتی ہے وفیہ مافیہ ۔ حاشیہ قوت میں ایک اور مطلب بھی بیان کیا گیا ہے کہ طائر سے مراد تقدیر ہے کیونکہ جو چیز کسی کے لئے مقرر وختص کی جاتی ہے اسے طائر کہا جاتا ہے پس مطلب یہ ہوگا کہ خواب خیر وشرکے مابین شکش میں ہوتا ہے پس اس کلام میں تشبیہ ہے خواب کی پرندے کے پیر پرموجود چیز کے ساتھ لہذا اس کی تعبیر کے لئے ہوشیار اور مخوار محض کا انتخاب کرنا چا ہے تا کہ وہ اچھی تعبیر نکا لے اور اگر تعبیر اچھی نہ ہووہ خاموش رہے گا۔

صوفیاءاورفلاسفہ کہتے ہیں کہ جب اس عالم ناسوتی میں کوئی واقعہ رونماہونے والا ہوتو پہلے عالم مثال میں اس کی صورت منقش ہوجاتی ہے،خواب دیکھنے والا (لعنی تیسری قتم ،خواب میں) وہی نقشہ دیکھتا ہے گر بھی وہ صاف ہوتا ہے اور بھی مدہم جس کو تعبیر کی ضرورت ہوتی ہے ہوشیار آ دی ہوگا یعنی عالم مثال کی چیز کو بجھنے والا ہوگا تو وہ تعبیر بتلا سکے گاناواقف کواس سے کیا واسط؟ پھر ماہر شخص وہ ہے جسے اللہ کی معرفت اور عالم مثال سے اُنس ہو جو عام طور پرلدنی علم ہوتا ہے اگر چہ کسب کے ذریعہ بھی آ دی اس کے قریب پہنچ سکتا ہے ، شہوریہ ہے کہ خواب تعبیر کے تابع رہتا ہے گریہ تا شرصحے نہیں۔

باب

" الرؤياثلت فرؤياحق ورؤيايُحدِّث الرجل بهانفسه ورؤياتحزين من الشيطان فمن رأى مايكره فليقم فليصل وكان يقول يعجبنى القيدواكره الغل القيدثبات في الدين وكان يقول من رانى فانى اناهوفانه ليس للشيطان ان يتمثّل بى وكان يقول لاتقص الرؤياالاعلى عالم اوناصح". (حسن صحيح)

مدیث کے تمام حصے گذشتہ ابواب میں معتشرے گذر گئے ہیں۔

یہاں صرف ترجمہ پیش ہے۔خواب تین طرح کے ہوتے ہیں سچاخواب اور وہ خواب جوآ دی اپنے دل میں سوجتا ہے (یعنی سوچ کا اثر) اور ایک خواب شیطان کی طرف سے پریشان کرنے والا ہوتا ہے ، پس جوخص ناپندیدہ خواب دیکھے تو اٹھ کرنماز پڑھ لے اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم فریاتے ہیں کہ مجھے بیٹری پہند ہے اور طوق کونا پہند کرتا ہوں ، بیڑی سے مراددین پر استقامت ہے اور فرماتے ہیں کہ جس نے خواب میں مجھے دیکھا تو وہ میں بی ہوں گا کیونکہ شیطان کے لئے روانہیں کہوہ میرا حلیہ اختیار کرے، اور فرماتے خواب سوائے عالم یا خیرخواہ کے کسی سے بیان نہ کیا جائے۔

باب ماجاء فی الذی یکذب فی حلمه (اس شخص کے بارے میں جوجھوٹا خواب بیان کرتا ہے)

"من كذب في خُلمه كُلِّفَ يوم القيامة عقدشعيرة".

ا بوعبدالرحمٰن راوی کہتے ہیں کہ میں سمجھتا ہوں کہ حضرت علیؓ نے اس حدیث کو نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے مرفوع نقل کیا ہے کہ جس محف نے بیانِ خواب میں جھوٹ بولا اس کو قیامت کے دن ' بھو'' کی گرہ بندی پر مجبور کیا جائے گا۔

اگلی سند کے ساتھ بیر حدیث مرفوع ہی ہے جبکہ تیسری سند میں بیر وایت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے مروی ہے اس میں ہے کہ جھوٹا خواب بیان کرنے والے کو قیامت کے دن دو' بُو' میں گرہ لگانے کا مکلف بنادیا جائے گا جبکہ وہ ان میں گرہ بھی بھی نہیں لگا سکے گا۔

تشری : قوله: "من کذب فی حلمه" کا ایک مطلب توبیه که اس فراب تو دیما ہے گر اس میں اپنی طرف سے اضافہ بھی ملاتا ہے۔ دوسرا مطلب بیہ ہے کہ پوراخواب بی جموٹا ہوجیسا کہ ابن عباس کی صدیث میں ہے "من تحلم کا ذبا" کوئکہ کم باب تفعل سے بمعنی تکلف کرنے اور گھڑنے کے ہے، چونکہ اس مختص نے الہام کا جموٹا وکوئی کیا ہے اس لئے اس نے گویا اللہ پرجموث بولا ہے کیونکہ الہام تو من جانب اللہ ہوتا ہے، اس بناء پراس کی سزادو جو میں گرہ بندی مقرر کردی گئی ہے یعنی ایسا عل جس کے اجزاء میں کوئی جوڑ نہیں بن سکتا ہے چونکہ بیا دی جموٹا ہے اور الہام تو صادقین اور بچ لوگوں کوئی ہوتا ہے کہ مشابہ جزء نبوت ہوتا ہوئی کہ مشابہ جزء نبوت ہوتا کو الہام سے کیا مناسبت ہے اس طرح دوجو میں گرہ بندی کا کوئی امکان نہیں کہ گرہ بندی کے لئے بچھ طول در کار ہوتا ہے جوان میں نہیں اس کئے وہ یہ مزا کا فنار ہے گا اور یہ اس کے جموٹا ہونے کی نشانی بھی ہوگی جو الل محشر کونظر آئے گی۔

المستر شدعرض كرتاب كه بهم لفظ شعيرة كوشعيرتين برجمول بهى كرسكة بين اوريه بهى ممكن ب كه جب پوراخواب جمونا بهوتواس كوايك جوديا جائة اورجب اس مين جموث ملائة تواسة دوجود يئم جائين گويايه عذاب اپنال كساته لفظى مناسبت كى بناء پرب كه اس في بلاشعورا لهام كا دعوى كيا تواسة شعيرة برائ كره درديا كيار (تدبر)

چرگفت سے تعلیف شرق مراذییں بلکه سرامراد بالدایهاں سے تعلیف بمالایطاق کی بحث نہیں تعلیف بمالایطاق کی بحث نہیں تعلق العربی العادی کے بارے میں لکھتے ہیں " ذکر هما ابو عیسی وغیرہ ،وهو صحیح کله"۔ قولی این العربی الله عمل میں الدخه یت الاول" اگرچہ پہل سند کر جال بھی ثقات ہیں گرابواحمہ الزبیری مفیال اوری کی دوایات میں کھی تعلی کرتے ہیں۔ (کذائی التحد عن التربیب)

باب

"عن ابن عمرقال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: بينماانانائم إذ أبيتُ بقدح لبنِ فشربتُ منه، ثم اعطيتُ فضلى عمربن الخطاب قالو افمااوّلته يارسول الله؟ قال"العلم". (صحيح)

حضرت ابن عمر طفر ماتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے بیا بھرا پنا بچا ہوا میں نے عمر بن خطاب وریں اثنا جبکہ میں سویا تھا بچھے دود ھا کا پیالہ دیا گیا ہیں میں نے اس سے پیا پھرا پنا بچا ہوا میں نے عمر بن خطاب کودیا بہ حابہ نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! آپ نے اس کی کیا تعبیر نکالی؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا علم ۔

تشریخ: نے واب کا تعلق چونکہ عالم مثال سے ہے جہاں اشیاء دنیا میں رونما ہونے سے پہلے ہی متشکل ہوجاتی ہیں تا ہم دونوں حالتوں میں منال کوئی خواب میں انسان کی گندگی دیکھتو اسے مال ملے گا، دنیا کی مجت اور انہاک سے عالم برزخ میں سانپ بن کر مسلط کر دیا میں انسان کی گندگی دیکھتو اسے مال ملے گا، دنیا کی مجت اور انبہاک سے عالم برزخ میں سانپ بن کر مسلط کر دیا جا تا ہے کیونکہ جس طرح دنیا بظاہر خوشما اور پیاری مگر در حقیقت زہر سے بھری ہوئی ہے سپیر ااس سے کھیل سکتا ہو تا ہے کیونکہ جس طرح دنیا بظاہر حسانپ بھی بظاہر رنگ برنگی کیروں اور زم و ملائم کھال کی وجہ سے بہت خوبصورت لگتا ہے گرسپیرا کے علاوہ جو محض اس سے کھیلتا ہوتو سانپ اسے ڈھنتا ہے ،غرض بظاہر خوبصورت سے مربی زہر ہوتا ہے ،وعلی ھذالقیاس۔

شاه ولى اللَّهُ حجة الله البالغدك ' باب ذكرعالم المثال ' ميس لكهة بين :

"تَتَمَثُّلُ فيه المعاني باجسام مناسبة لهافي الصفة وتتحقق هناك الاشياء

قبل وجودهافي الارض نحوامن التحقق".

یعنی اس عالم مثال میں معانی ایسے جسموں کے ساتھ پائے جاتے ہیں جوان معانی کی حالت کے ساتھ مناسبت رکھنے والے ہوں اور زمین میں رونما ہونے سے پہلے وہاں چیزیں پائی جاتی ہیں وجود کی مخصوص نوعیت کے ساتھ اس لئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے دودھ کی تعییر علم سے فرمادی کیونکہ جس طرح دودھ ایک فطری غذا ہے اس لئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے دودھ کی تعذی کا دارومداردودھ ہی پر ہوتا ہے تا ہم دودھ جسمانی غذا ہے اس طرح علم بھی ہے خصوصاً ابتداء خلق میں بچے کی تغذی کا دارومداردودھ ہی پر ہوتا ہے تا ہم دودھ جسمانی غذا ہے اورعلم روحانی مگریہ بات ذھن میں رہے کہ دونوں میں ایک نوع تلازم بھی پایا جاتا ہے۔ (تدبر)

(۲) دودھ مصلے جسم ہے بلکہ اطباء کہتے ہیں کہ دودھ ہر دواکا بھی مصلح ہے اس طرح علم بھی مصلح ہے، دودھ سے جسمانی جرافیم مرجاتے ہیں اور علم سے روحانی اور جسمانی دونوں ، یعنی شک وجہل اور گندگیوں کے جرافیم۔

(۳) جس طرح انتهائی پاکیزہ دورہ گندگیوں کے درمیان سے ہوتا ہوا نکلتا ہے اس طرح علم کی روشنی اندھیروں کو چیرتی ہوئی اُجالا کردیتی ہے لینی شک اور جہل کی تاریکیوں سے نکل کرمعرفت کا سبب بنتی ہے۔قالہ ابن العربی فی العارضة ۔

بظاہر یہاں یہ اشکال ساوارد ہوتا ہے کہ صدیث باب سے حضرت عمرضی اللہ عنہ کی ملمی فضیلت حضرت اللہ عنہ کی اللہ عنہ الایک معنی اللہ عنہ براثابت ہورہی ہے حالانکہ دیگر فصوص سے واضح طور پرصد بی اکبر کی افضلیت محقق ہوتی ہے چنانچ عقا کرنٹی میں ہے: "وافس البشر بعد نبینا ابو بکر الصدیق ثم عمر الفاروق النے "اور یہ افضلیت علم وغیرہ سب صفات میں مراد ہے۔

اس کاحل یہ ہے کہ یہاں پراضافت مراذبیں ہے کہ ابوبکر او چھوڑ کران کودیا بلکہ حضرت عرق وہاں موجود تھے اس لئے ان کودیا جبکہ ابوبکر وہاں پرموجود نہ تھے ، یااس علم سے مراد علم السیاست ہے یا پھر جزوی افضلیت مراد ہے یعنی الہا می جو کلی افضلیت کوسٹزم نہیں چنانچہ الہا مات کے حوالے سے حضرت عمر کے موافقات وی تقریباً کیس تک ہیں۔

یہ بات ذہن میں رہے کہ کسی کوالہام ہونے سے بیلاز مہیں آتا کہ وہ دوسروں سے الہام کی بناء پرافضل ہی ہوکیونکہ بھی اس کے مقابلہ میں ایسافخص بھی ہوتا ہے جویفین وتقعدیق اور محبت ومعرفت کے اس مقام ودرجہ پرفائز ہوتا ہے جہاں اس کوالہام وکشف کی ضرورت ہی نہیں رہتی اس لئے سابقہ امم میں منہم لوگوں کی تعداد زیادہ ہوتی تھی۔اس آخری تو جیکوعام علماء شاید نہ بچھکیس اہل تصوف واہل عرفان کے ہاں بیسلم ہے جس کومعلوم کرنا ہوتو وہ صوفیہ اور خصوصاً حضرت مولانا اشرف علی تھا نوی رحمہ اللہ کی متعلقہ کتب کا مطالعہ کریں جواس علم کے مجدد ہیں۔

قوله: "العلم" منصوب م كفعل مقدر كامفعول م اى أوّلتُه العلم

باب

"بيناانانائم رأيت الناس يُعرضون على وعليهم قُمُصَّ منهامايبلغ الثُدِى ومنهامايبلغ السُفِل من ذالك قال فعُرضَ على عمروعليه قميص يَجُرُّه قالوافمااوّلتَه يارسول الله؟قال الدينَ". (واخرجه احمدفى مسنده)

نی پاکسلی الله علیه وسلم نے فرمایا دریں اثناء کہ جب میں سویا تھا خواب دیکھا کہ لوگ میر ہے سامنے پیش کئے جارہے ہیں اوران (کے بدنوں) پرقیص ہیں ان میں سے بعض قبیص سینوں تک ہیں اور بعض اس سے پیش کئے جارہے ہیں آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا پس عمر میرے سامنے پیش کئے حجکہ ان کی قبیص اتنی نیجے تک (لمبی) تھی کہ وہ اسے تھیدٹ رہے تھے حکا بہ کرام نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! آپ نے اس کی کیا تعبیر نکالی؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا" دین "حدیث کے رادی حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ ہیں۔

تشری : قوله: "قمص" بضمتین بروزن کتب قیص کی جمع ہے۔قوله: "الفدی" بضم الناء وکسر الدال وتشد بدالیاء ثبر تی مثری الناء وسکون الدال کی جمع جمعتی پیتان کے ہے ابن العربی عارضہ میں لکھتے ہیں کہ قیصوں کا سینے تک ہونا شارہ ہے کہ دلوں کو گفر ہے محفوظ کئے ہوئے تھیں، اور جومز یدینچ تھیں انہوں نے شرمگا ہوں کو بھی محفوظ کرلیا تھا جبکہ بیروں تک ہونے کا مطلب سے ہے کہ اس کو کسی بھی گناہ کے داستے پر چلنے سے روکے ہوئے تھیں جبکہ تھیٹنے والے حضرت عمر ہو تم کے تقویل میں مستور ومحفوظ اور ملبوس تھے، بیتشری اس روایت کو مدنظر رکھ کرکی گئی ہے جس میں گھنوں اور ساقین کا ذکر ہے۔

امام نوویؓ نے شرح مسلم میں ایک اور لطیف وجہ کی تصریح کی ہے کہ تَر یعن کھیٹنے سے مرادا چھے اثرات کی بقاء ہے یعنی حضرت عمرؓ نے ایسے کارنامہائے خیر کی بنیادیں ڈالی ہیں جن پراہل اسلام چل رہے ہیں اوروہ آ ثار آج تک باقی ہیں۔

یمال بھی افضلیت عمرعلی الصدیق والا اعتراض ہوسکتا ہے جبیبا کہ سابقہ باب میں گذراہے، مگر حل بھی وہی ہے جو وہاں بیان ہوالیتی یا تو یہ حضرت عمر کی خلافت طولی کی طرف اشارہ ہے جس میں ان کوتاسیس قواعد واجتماعات منعقد کرنے کا موقعہ میسر ہوااور دینِ اسلام اپنے پھیلاؤ کی وجہ سے عروج کو پہنچا جوامت کے تمام ادوار سے مضبوط ترین دورہے یعنی مابعد النبی صلی اللہ علیہ وسلم کے ادوار میں سے، لہذا یہ فضیلت جزوی ہوگئ جبکہ

ابو بر کرے فضائل دیگراعتبارات سے بہت زیادہ ہیں یہ بھی کہاجاسکتا ہے کہ ابو بکر ان پیش کئے جانے والوں میں موجود نہ ہوں کہ ان کو پیش کئے جانے والوں میں موجود نہ ہوں کہ ان کو پیش کرنے کی ضرورت ہی نہتی یاوہ بھی موجود بوں اور ان کا کرتہ بھی حضرت عمر جتنایا اس سے زیادہ لمبا ہوجیسا کہ حاشیہ میں اس کی طرف اشارہ کیا گیا ہے۔

باب ماجاء في رؤياالنبي عَلَيْكُ في الميزان والدلو ترازواور وول كِ متعلق ني صلى الله عليه وسلم كاخواب (اورتجير)

"عن ابى بكرة ان النبى صلى الله عليه وسلم قال ذات يوم: من راى منكم رؤيا؟ فقال رجل انارأيت ، كَانَ ميزانا نَزَلَ من السماء فَوُزِنتَ اَنتَ وابوبكر فرجحتَ انت بابى بكر، وَوُزِنَ ابوبكروعـمرفَرجَحَ ابوبكرووُزِنَ عمروعثمان فَرَجَحَ عمر ثم رفع الميزان فراينا الكراهية فى وجه رسول الله صلى الله عليه وسلم ". (حسن صحيح)

حضرت ابوبکرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک دن بوچھاتم میں سے کسی نے کوئی خواب و یکھاہے؟ توایک شخص نے کہا میں نے دیکھاہے، میں نے دیکھا جیسا ایک ترازوہ وہ آسان سے اُتری پس آپ اورابو بکر دونوں تولے گئے تو آپ ابو بکر پر بھاری رہے اورابو بکر وعمر تولے گئے تو ابو بکر پر بھاری رہوئے بھروہ میزان اٹھالی گئی، پس (بیس کر) ہم نے رسول بھاری ہوئے بھروہ میزان اٹھالی گئی، پس (بیس کر) ہم نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے چرے میں تا گواری کے آثار محسوں کئے۔

تشری : آگر تری اور سلم کی روایت میں ہے کہ آپ علیہ السلام فجر کی نماز کے بعدلوگوں کی طرف متوجہ ہوکر پوچھتے کہ تم میں سے کسی نے رات کوکوئی خواب و یکھا ہے؟ حدیث باب میں اسی طرح ایک دن کاذکر ہے چونکہ مواز نہاتی جلتی متقارب اشیاء میں ہوتا ہے اور حضرت عثمان کی شہادت تک اخیار کی کثر ت تھی کاذکر ہے چونکہ مواز نہاتی جلتی متقارب اشیاء میں ہوتا ہے اور حضرت عثمان کی شہادت تک اخیار کی کثر ت تھی جب منافاء کامقام ان میں بہت جن میں مہاجرین وانصاراور بالحضوص السابقون الاولون بھی پائے جاتے تھے جبکہ خلفاء کامقام ان میں بہت نمایاں تھا کہ ان کے مرا تب معلوم ہوجا کیں جبکہ حضرت علی کے دور خلافت میں آپ کے خضائل بلامواز نہ نمایاں تھے کہ سابق الایمان تھے۔

عام شارحین حدیث کا مطلب بیبیان فرماتے ہیں کہ اس خواب میں اشارہ ہے کہ امن وامان کا بہترین دورش اللہ عنہ کے دور میں دورشہادت عثمان پرختم ہونے والا ہے پھرفتنوں کا دروازہ کھل جائے گاچنانچے حضرت علی رضی اللہ عنہ کے دور میں

باہی الرائی پورے دور پرمحیط رہی اگر چہ بیان حضرات کے لئے اُخروی نقصان کی موجب نہ تھی مگرآنے والی ا امت کے لئے ایک آز مائش تھی۔

بناہر ہرتقدیرآپ علیہ السلام اس خواب سے پریشان نظرآئے پہلی توجید کی بناءاس لئے کہ آپ کی خواہش تھی کہ اخیار کا یدودرانید طویل ہوتا تو اچھا ہوتا، جبکہ دوسری توجید میں پریشانی کی وجہ ظاہر ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کوانح طاط کا خطر ہمسوس ہوا۔

حدیث سے ان تینوں خلفاء کی فضیلت ہاتی صحابہ پراوران کے آپس میں ایک دوسرے پراسی تر تیب سے ثابت ہوئی ادریبی جمہور کا مذہب ہے جبکہ بعض حضرات حضرت علی " کوحضرت عثالیؓ سے افضل مانتے ہیں اس مسئلہ کا موضع شرح عقائد ہے۔

حضرت الوبكرصديق رضى الله عنه كاموازنه نبى پاك صلى الله عليه وسلم كے ساتھ ان كى اليى فضيلت كوظا مركرتا ہے كہ كوئى بھى ان كے ساتھ شريك نہيں موسكتا، ابن العربی نے اس مقام پر بہت تفصيل سے بحث فرمائى ہے جسے دركار مووہ عارضة الاحوذى ميں ديكھے۔

حدیث آخر: دوسری حدیث میں ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے ورقد بن نوفل این اسد کے بارے میں پوچھا گیا تو حضرت خدیجہ نے ورقد کی طرف سے کہا کہ انہوں نے تو آپ کی تصدیق کی تھی اور آپ کے اظہارِ نبوت سے قبل ہی فوت ہو گئے ہیں پس رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا وہ جھے خواب میں دکھا دیئے گئے دراں حالیہ ان پرسفید لباس تھا اگر وہ دوزخی ہوتے تو ان پرسفید کے علاوہ دوسرے کپڑے ہوتے ۔ (یعنی سیاہ رنگ کے) بیصدیث غریب ہے۔

تشری : ورقبه نتین ام المؤمنین حضرت خدیجه رضی الله عنها کے پیچازاد بھائی تھے زمانہ فتر ہ میں نفر افی ہوگئے سے اور شرک سے بزار سے ، بخاری شریف کی تیسری حدیث میں ان کا تذکرہ یوں آیا ہے کہ جب آپ علیه السلام پر پہلی وی نازل ہوئی اور غار حراء سے گھر تشریف لائے تو حضرت خدیج آپ علیه السلام کوورقہ بن نوفل کے پاس کے گئیں تو ورقہ نے نبی صلی الله علیه وسلم سے کہا: "هدا المناموس الذی نَزَّ لَ الله علیہ موسسیٰ بسالیت سے فیھا جذع اللخ " یعنی بیونی فرشتہ ہے جو حضرت موئی علیه السلام پروی نازل کرتا تھا ، کاش میں اس زمانے (دعوت یا نبوت) میں تو انا جو ان اور زندہ ہوتا۔ یعنی آپ کی نفرت کرتا ہو تکہ پہلی وی بعد کچھ مدت کے لئے وی بند ہوگئ تھی اور ورقہ کا انقال بظاہر اسی دوران ہوا تھا اس

کئے یہ کہنا مشکل ہے کہ آپ علیہ السلام کے باقاعدہ تبلیغ کے آغاز سے قبل ورقہ کا ایمان کیما تھا اس لئے اس بارے میں علاء کے دواقوال ہیں گرزیادہ تر محققین ان کی نجاۃ کے قائل ہیں چونکہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم پراس بارے میں کوئی وہی جلی نازل نہیں ہوئی تھی اس لئے آپ نے فرمایا کہ ان کے لباس سے دہ جنتی معلوم ہوتے ہیں کیونکہ سفیدلباس طہارت قول وعمل پردلالت کرتا ہے اسی طرح سنز کپڑے بھی جنتی ہونے کی علامت ہیں یہ روایت بظاہران کے جنتی ہونے پرصرت کے مگریہ عثمان بن عبدالرحمٰن کی وجہ سے کمزور ہے ہاں البتہ دیگر قرائن ان کے نجات یا فتنہ ہونے پردلالت کرتے ہیں۔واللہ اعلم وعلمہ اتم

صديث آخر: "عن عبدالله بن عمر عن رؤيا النبى صلى الله عليه وسلم وابوبكرو عمر فقال: رأيتُ الناس اجتمعوا فنزع ابوبكر ذَنُوباً أو ذَنوبين فيه ضعف والله يغفرله ثم قام عمر فنزع فاستحالت غَرباً فلم أرَعَبقَرِياً يَفرِى فَرِيَّه حتى ضرب الناس بالعَطَنِ ". (صحيح غريب)

حضرت عبداللہ بن عمررضی اللہ عنہماسے نبی صلی اللہ علیہ وسلم اور ابو بکر وعمر کے خواب کے بارے میں مروی ہے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں نے خواب و یکھا ہے کہ لوگ جمع ہوئے بس ابو بکر نے ایک ڈول یا دو ڈول پانی نکالا اور اس میں ضعف تھا اللہ ان کو معاف فرمائے بھر عمر کھڑے ہوئے پس انہوں نے کھینچا تو وہ دول بانی نکالا اور اس میں ضعف تھا اللہ ان کو معاف فرمائے بھر عمر کھڑے ہوئے پس انہوں نے کھینچا تو وہ دول برا ابن گیا ہی بہلوان کو نہیں دیکھا جوان جیسا کا م کرے، یہاں تک کہ جگہ بکڑی لوگوں نے اپنی آرام گاہوں میں (بعنی خوب سیراب ہو گئے)

تشری : عام نوں میں 'ابوبکر' مرفوع ہے حالانکہ یہ 'النبی '' پرعطف کی وجہ سے مجر ورہونا چاہئے ،
ای طرح ' فقال '' بغیر فاء کے اصح ہے لینی ' قال رأیت '' النے ۔ قوللہ : ' فنزع ابوبکر ذنو بااو ذنو بین فیہ ضحف '' ذنو ب وہ بڑا ڈول کہلا تا ہے جو بیل کے چڑے سے بناہ واہو ، عام شار حین اس جملے کا مطلب یہ لیت ہیں کہ دوڈول ان کی خلافت کے دوسال کی طرف اورضعف فتن ارتداد کی جانب اشارہ کرتا ہے ، مگر زیادہ را نج یہ معلوم ہوتا ہے کہ ذنو بااو ذنو بین قلت فتو حات اورضعف میں قلت مدت خلافت کی طرف اشارہ ہے (تدبر) جہال تک ان کے لئے مغفرت کی دعاء کا تعلق ہے تو یہ سی تقصیر وکوتا ہی سے بخشش کے لئے نہیں بلکہ عارضہ میں جہال تک ان کے لئے مغفرت کی دعاء کا تعلق ہے تو یہ سی طویل خلافت کا اجرد سے لینی زیادہ عمل کا جبکہ امام نووگ فرماتے ہیں کہ یغفر اللہ ان کو کم مدت خلافت پر بھی طویل خلافت کا اجرد سے لینی زیادہ عمل کا جبکہ امام نووگ فرماتے ہیں کہ یغفر اللہ ایا لک عام طور پر کلام عیں بطور تکیہ کلام کے ستعمل ہوتا ہے۔

قوله: "فانستحالت غربا" بروزن عبداوهما حاهية توت ميس كدوه برادول جويل كي كال س

بنا ہوا ہوہم نے اوپر ذنو ب کی تشریح بھی اس طرح کی تھی وہ عارضۃ الاحوذی سے لی ہے، بہرحال مرادیہ ہے کہ عمرضی اللہ عند نے جب پانی نکالنے کے لئے وہ ڈول تھینچا تووہ بہت بڑے ڈول سے تبدیل ہو گیا جو کہ اشارہ ہے کثرت فتوحات اورمملکت کے پھیلاؤ کی طرف۔

قولمه: "عَبقَريًا" بفتح العين وسكون الباء وفتح القاف وكسرالر اء وتشديد الباء توانا وطاقت ورخض كوكتج بين جبكه يفرى بروزن برمى اور فريي فتح الفاء وكسرالراء وتشديد الباء ہے فريداصل ميں كھال بنانے اور درست كرنے كو كہتے بين يہاں مراداصلات ہے، يعنى جوشل عمر كمل كرے قوله: "عطن" بروزن قروه جگہ جہاں برے جانور گھا ف ميں پانى پينے كے بعد آرام كرتے بين يعنى حضرت عمر كرك ورخلافت ميں لوگ بے فكر بوكر زندگى بسر كريں گے عارضه ميں ہے كہ آپ صلى الله عليه وسلم نے ان كى اور اسى طرح حضرت عمان كى شہادت كى طرف اشارة نہيں فرمايا جس سے معلوم ہوا كه شرپندوں كى شرارت سے اخيار كے مراتب ميں كسى طرح كى نہيں آتى كونك الله عدل كے ساتھ الله جوركى دشنى لازمى ي بات ہے۔

حدیث آخر: حضرت ابن عراسے ایک اور دوایت ہے کہ نی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ میں نے پر اگندہ بالوں والی ایک کالی عورت کودیکھاوہ مدینہ سے فکل کرمہ یکہ میں قیام پذیر ہوگئی اور وہ (مہیعہ) بُحُفہ ہے پس میں نے اس کی تعبیر ریکروی کہ مدینہ کی وہاء بُحفہ منتقل کردی جائے گی۔

تشری : مدیند کاجابلی نام یژب بمعنی ندامت و پچهتاوے کے تھا کیونکہ یہاں کی آب وہوایس وبائی امراض کا اثر تھا اس لئے جو خص یہاں باہر سے آتاوہ اپنے آنے پرنادم ہوتا صحابہ کرام نے جب اس کی طرف ہجرت فرمائی تو تقریباً سب بیار ہوگئے ، بخار میں بہتلاء ہوگئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی دعا وَں کی بدولت اللہ نے اس کوطیبہ بنایا اور وہاں کی وباء کومہیمہ یعنی بُحفہ نتقل فرمایا جو یہود ومشرکین کا علاقہ تھامہیکہ میں ہاء ساکن اور باقی مفتوح ہیں جبکہ بُحفہ بروزن غرفة مہیمہ کی تفسیر ہے جو بظاہر مدرج من الرادی ہے۔

ابن العربی کھتے ہیں کہ تورت کی تعبیر میں ہزارا حتالات ودرجات ہیں جبکہ سیاہی مطلقاً کمروہ اور بیاض مطلقاً پندیدہ ہے الا یہ کہ ان کے ساتھ کوئی الی چیزشا مل ہوجائے جواسے اپنے اطلاق سے خارج کردے پھر سیاہی میں خیراور سفیدی میں شرداخل ہوجاتا ہے جبکہ منتشر بال بھی ناگواری کی طرف مشیر ہیں بس مدینہ تو منورہ تھا اس لئے اس میں کسی بھرے بالوں والی کالی عورت کا نظر آنا وباء ہی ہوگئی کیونکہ ان میں مناسبت نہیں لہذا کا لے ملکوں میں کالی عورت دیکھنا کہ دونوں میں مناسبت بیائی جاتی ہے۔ .

اس کے بعد حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کی حدیث ہے جس کے تمام قطعات پہلے گذر ہے ہیں اس لئے اعادہ کی ضرورت نہیں۔

حدیث آخر: حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے فر مایا کہ میں نے خواب میں دیکھا کہ سونے کے دوئگن میرے ہاتھوں میں ہیں چنا نچہ ان کی موجودگ نے جھے پریشان کردیا پس جھے وتی کی گئی کہ میں ان کو پھونک دوں چنا نچہ میں نے ان کو پھونک دیا تو وہ دونوں اُڑ گئے ، تو میں نے اس کی یہ تعبیر نکالی کہ میرے بعدد وجھوٹے (متنتی) تکلیں کے ایک کومسلمہ کہا جائے گا بمامہ والا اور دوسراعنسی ہوگا صنعاء (بمن) والا۔

تشرق : قول ه: "سوارین" بکسرالسین اورضم بھی جائز ہے سوار بروزن کتاب کا تثنیہ ہے بمعنی کتان کے قول ہے: "انفخھ ما" بضم الفاء وسکون الخاء ای اَر بھما لینی کہ بین ان کو بھینک دوں اگر چلفظی معنی بھی سے جمعی کہتے ہیں بیامہ کے بھی سے جمعی ہوسکتے ہیں ۔ قسول ہے: "مسل مه، بفتح الم والملام اس کومسیل ربات مغیر) بھی کہتے ہیں بیامہ کے حدودار بعد یہ بین مشرق بین عمان اور بحرین ، مغرب بیں حجاز اور حصہ کین ، جنوب بین احقاف یا الربع الخالی شال میں نجد۔ (تاریخ ارض القرآن ص ۹۲)

قول د: "عنسى" بفتح العين وسكون النون كانام اسودتها جوصنعاء يمن كارہ والاتھا كئنوں كى اس تعمال تعبير تنبئى سے كيا مناسبت ہے؟ تو اس بارے ميں دوقول ہيں ايك بيہ كي كسونام دوں كے لئے نا قابل استعمال ہے اس لئے جب آپ سلى الله عليه وسلم نے ان كواپنے ہاتھوں ميں ديكھا تو پريشان ہو گئے چونك يكنن بحل ديكھے محتے متھاس لئے تعبير جھوٹى نبوت سے كائنى كيونك جھوٹ بھى بحل ہوتا ہے۔

المستر شدعرض کرتاہے کہ سارے انبیاء میہم السلام ایک دوسرے کی تائیداور تحسین کرتے ہیں کنگنوں کا مطلب توبیہ ہوتا ہے کہ جن سے ہاتھ خوبصورت اور مالی وسلطانی اعتبارے طاقت وربن جاتے ہیں گریہاں مسئلہ یہ تھا کہ آپ علیہ السلام کے بعد کوئی نبی ہیں بن سکتا اس لئے ایسے تکن سونے کی صورت میں دکھائے گئے جو کہ جھوٹے نبی ہی ہوسکتے ہیں جو بظاہر سلسلہ نبوت کی کڑیاں دکھائی دیتے ہیں گردر حقیقت وہ متنبی یعنی جھوٹے تھے۔

دوسری وجدابن العربی نے عارضہ میں بیان فرمائی ہے کہ تنگن ملوک کا زیورہ اس لئے کفارنے اعتراض کیا تھا" فلو لاالقی علیه اسورة من ذهب" (سورة زخرف آیت:۵۳) یعنی اگریدواقعی قیادت کے

مستحق ہیں تو پھران کے ہاتھوں میں بھن کیوں نہیں ہیں؟ جبکہ 'یرکان' یا'' ید' عربی میں کی معانی کے لئے آتا ہے۔ یہال جمعنی غلبہ کے ہے بعنی آپ علیہ السلام نے دیکھا کہ کوئی ان کے امر (نبوت) پر قبضہ حاصل کرنا چاہتا ہے کہ علامت سے ذی العلامت پر استدلال ہوتا ہے، چونکہ غلط چیز کا از الہ ضروری ہوتا ہے اس لئے آپ علیہ السلام کو بذر بعدوی تھم ہوا کہ ان میں پھونک ماریں، چنا نچہ اسو عنسی تو آپ علیہ السلام کے مرض الوفات ہی میں فیروز دیلی تھے ہاتھوں مارا گیا جس کی اطلاع آپ علیہ السلام کو سرلانے سے پہلے ہی دی گئی اور آپ علیہ السلام نے فرمایا" فی اور آپ علیہ السلام کو مولا نے سے پہلے ہی دی گئی اور آپ علیہ السلام نے فرمایا" فی اور آپ علیہ السلام کو مولا نے سے پہلے ہی دی گئی اور آپ علیہ السلام نے فرمایا" فی اور آپ علیہ السلام کے دور خلافت میں قل کردیا تھا جس کا قصہ اور جنگ بمامہ کی تفصیل سیروتا ریخ کی کتب میں پروھی جاسکتی ہے۔ حضرت وحشی نے اسلام سے قبل حضرت جمزہ "کو اُحدیثیں شہید کردیا تھا۔

یہاں بیاشکال واردہوتا ہے کہان دونوں کا دعویٰ تو آپ علیہ السلام کے مین حیات ہی سامنے آیا تھا پھر
"بسخسر جسان من بسعدی" کا کیامطلب ہے؟ اس کا جواب میہ ہے کہن بعدی سے مراد بعدموتی نہیں بلکہ
بعد نبوتی ہے، شاہ صاحب عرف میں فرماتے ہیں کہ اس سے معلوم ہوا کہ مدی نبوت اب بالا جماع کا فرہے
اور واجب القتل ہے۔

حدیث آخر: حضرت ابن عباس رضی الله عنهما ہے کہ ابو ہریرہ نے بیان کیا کہ ایک آدی ہی کریم صلی الله علیہ وسلم کے پاس آیا اور کہا: ہیں نے رات کوخواب دیکھا ہے کہ اُکیک سائبان ہے اس سے گھی اور شہد فیک رہا ہے اور میں نے دیکھا کہ لوگ اپنے ہاتھوں میں بھر بھر کر لے رہے ہیں پچھزیادہ حاصل کرنے والے بین اور پچھ کم ، اور میں نے دیکھا کہ ایک رسی آسیان سے زمین تک لکی ہوئی ہے، پس میں نے آپ کو دیکھا اے الله کے رسول! کہ آپ نے اس رسی کو پکڑلیا اور آپ پڑھ گئے بھر آپ کے بعد ایک اور خض نے اس کو پکڑلیا اور وہ بھی پڑھ گیا، پھر اس کے بعد ایک اور خض نے وہ رسی پکڑی اور وہ بھی پڑھ گیا، پھر اس کے بعد ایک اور خض نے وہ رسی پکڑی اور وہ بھی پڑھ گیا، پس حضرت ابو بکڑنے کہا اے نے وہ رسی پکڑی پس وہ ٹوٹ گئی، پھر اس کو جوڑ دیا گیا اس طرح وہ بھی پڑھ گیا، پس حضرت ابو بکڑنے کہا اے الله کے رسول! میر سے ماں باب آپ پر قربان ہوں جھے اس کی تعیر دینے دیجئے (یعنی تعیر کی اجازت فرما کیں) الله کے رسول! میر نے ماں باب آپ پر قربان ہوں جھے اس کی تعیر دینے دیجئے (یعنی تعیر کی اجازت فرما کیں) اور شہد اس سے میک رہا ہے وہ قرآن ہے جس کے مضابی نرم اور میٹھے ہیں اور زیادہ اور کم اختیار کرنے کو اس سے خیک رہا ہے وہ قرآن ہے جس کے مضابی نرم اور میٹھے ہیں اور زیادہ اور کم اختیار کرنے کو اس سے خین درائے کی اور وہ رسی کی وزیادہ اور کم اختیار کرنے کو اصل کرنے کو الے ہیں اور وہ رسی جو واصل ہے آسان سے زمین تک

تو وہ حق ہے جس پرآپ ہیں ہیں آپ نے اس کواختیار فر مایا تو اللہ نے آپ کواو پر چڑھادیا پھرآپ کے بعد کسی فخص نے حق کواختیار کیا وہ بھی چڑھے گا، پھر اس کے بعد ایک اور خص اس کو پکڑے گا تو وہ بھی چڑھے گا، پھر اس کے بعد ایک اور خص اس کو پکڑے گا تو وہ بھی چڑھ اس کے بعد ایک اور خص اس کے بعد ایک اور خص اس کے بعد ایک اور خص اسے پکڑے گا تو وہ بھی چڑھ جائے گا اے اللہ کے رسول! آپ ضرور بتائے کہ میں نے سیح تعبیر دی ہے یا خلطی کی ہے؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا بعض صبح بتلا دی اور بعض میں خلطی کی ہے، حضرت ابو بکڑنے کہا اے اللہ کے رسول! میرے ماں باپ آپ پر قربان ہوں میں آپ کوشم دیتا ہوں کہ بتا ہے کہ میں نے کیا خطا کی ہے؟ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا بشم نے دیں۔ (بیشنق علیہ صبح حدیث ہے)

تشری : عارضہ میں ہے کہ اس حدیث سے حضرت ابو بکڑی شان ومنزلت اور تعبیر الرؤیا میں مہارت کا اندازہ ہوتا ہے کہ آپ علیہ السلام کے بعدان جیسا کوئی نہ تھا'' ظلہ'' کو اسلام سے تعبیر کرتا تھے تھا مگر تھی اور شہد کوایک ہی معنی میں لینا شاہدوہم تھا کہ بید ونوں الگ الگ ہیں پس مراد تویا قرآن وسنت دونوں ہیں یاعلم وعلی ، یا بھر حفظ اور سمجھ،

آپ علیہ السلام کے بعد جن تین آ دمیوں کا ذکر ہے وہ بالتر تیب ابو بکڑ وعمر اور عثال ہیں البتہ یہاں یہ اشکال وار دہوتا ہے کہ حضرت عمر کو بھی توقت کیا گیا ہے ان کی رسی بھی ٹوٹنی چاہئے تھی؟اس کا جواب ہیہ ہے کہ حضرت عثال کی رسی بعجہ ولایت کے توڑی گئی تھی جبکہ حضرت عمر کی بوجہ ُ ذاتی دشمنی کے نہ کہ بوجہ ُ خلافت کے۔(تدبر وانتظر)

قوله: "فیم وصل" یعن خلافت کی رسی پھر حضرت علی رضی اللہ عنہ کے ذریعے جوڑ دی گئی البتہ اس میں علویعنی اتفاق نہ تھا اس لئے کوئی نئی فتو حات اور غلبہ حاصل نہ ہو سکا اگر چہ وہ جن پر تھے ، غلطی کی وجہ ایک تو وہی ہوئی جو او پر گذرگئی دوسری وجہ یہ ہو سکتی ہے کہ انہوں نے رسی کوئی کہا حالا نکہ اس سے مراد خلافت تھی کیونکہ حضرت عثان کے لئے جن منقطع نہیں ہوا تھا بلکہ خلافت منقطع کردی گئی تھی۔ قبولسہ: "اقسم" کے ساتھ اگر باللہ کوؤکر نہ کیا جائے تو امام الک کے نزد کی فتا اس کے نزد کے لفظ اسم سے کہا جائے تو امام الک کے نزد کی فتا اس کی نیت کی ہو جبکہ امام ابو حذی ہے اللہ کی نیت کی تھی کہ علیہ جس کہ ابو بکر شنے باللہ کی نیت کی تھی کہ غیر اللہ کی قسم جو جائز نہیں۔ (ھذا کلہ من عاد ضة الاحوذی)

حدیث سے معلوم ہوا کہ اگر کوئی کسی کوشم دے اور ابراء مصلحت کے خلاف ہوتواس سے اعراض کیا

جاسکتا ہے یہاں حضرت عثان کی شہادت کی خبرآ پ علیہ السلام افشاء کرنافی الحال مناسب نہیں سمجھ رہے تھے۔ حدیث سمرۃ بن جندب :۔ نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم صبح کی نماز کے بعد لوگوں کی طرف متوجہ ہوکر فرماتے بتم میں ہے کسی نے رات کوخواب دیکھا ہے؟ (حسن صبح کی)

اگرگونی ندد کیم چکا بوتا اورآپ علیه السلام دیکیم چکے بوتے تو پھرآپ صلی الله علیه وسلم خود بیان فرماتے جیسا کہ "دایت رجلین اَتیانی فاخذ ابیدی الخ"معراج کا ایک واقعة تفصیل سے بیان فرما تا وغیرہ۔

حضور صلی الله علیه وسلم علم کے حصول میں بہت دلچیں فرماتے اس لئے صحابہ کرام سے خواب پوچھتے کیر جب کوئی صحابی خواب بیان کرتا تو آپ فرماتے ماشاء الله مگر جب آپ صلی الله علیه وسلم نے دیکھا کہ بعض خواب ناپندیدہ معنی پرشتمل ہوتے ہیں اورا یسے خوابوں کا بیان مناسب نہیں اس لئے آپ صلی الله علیه وسلم نے یہ معمول چھوڑ دیا۔ (کذافی العارضة)



اپواپ الشيادات

عن رسول الله صلى الله عليه وسلم (گوائ كابيان)

شہادات جمع ہے شہادت کی جمعنی گواہی کے ہے۔

قوله: "أكا اخبر كم بحير الشهداء الذى يأتى بشهادته قبل ان يُسئلها". (حَسن) حضورصلى الله عليه وسلم نے فرمايا: كيا بيل تم كوفبرنه دول كواہوں بيس سے التھے كى ، بيروه شخص ہے جو گواہى كے مطالبہ سے پہلے ہى اپنى گواہى دے۔

تشری : _ یہاں پراشکال وارد ہوتا ہے کہ ابواب الفتن میں ' ہاب ماجاء فی القون الثالث ''میں حضرت عمران بن حصین کی مرفوع حدیث میں ایسے لوگوں کونا پندیدہ ظاہر کیا گیا ہے جو بغیر طلب کے ازخود گواہی دیں گے' یعطون الشہادة قبل ان یسالوها ''جبکہ باب کی حدیث میں ایسے گواہ کو خیرالشہد اء کہا گیا ہے، اور بیتو تعارض ہے عمران بن حصین "کی ، یہ حدیث ابواب الشہادات کے آخر میں بھی آرہی ہے۔

اس کا جواب و ہیں پرگذراہے کہ معیوب اور مذموم جھوٹی گواہی ہے جس میں لوگ پیش پیش ہوں گے جیسے آج کل ہوتا ہے یا مراد جھوٹی قشمیں ہیں جولا پرواہی کی وجہ سے لوگ کھاتے رہیں گے اگر چہان سے مطالبہ نہ کیا گیا ہو۔

جبکہ باب کی حدیث میں تجی گواہی کا ذکر ہے جو ہر گرندموم نہیں ہے بشر طیکہ اس سے کی بڑے مفدہ
یا نقصان کا خطرہ نہ ہو، کیونکہ بھی گواہی تو تجی ہوتی ہے مگراس کی ادائیگی معیوب ہوتی ہے جیسے چھوٹے بچے ادر بچی
کونا جائز تعلقات میں دیکھا اور خاندانی اعتبار سے دونوں شریف لوگ ہیں تو بجائے شور مچانے کے ان کوڈرائے
دھمکائے تاکہ وہ آئندہ اس قتم کی حرکت نہ کریں شور مچانے سے دونوں خاندانوں کی رسوائی ہوگی اس طرح
اگر گواہی کی نوبت آجائے تو حتی الامکان نہنے کی کوشش کرے۔واللہ اعلم ۔لہذاروایات میں کوئی تعارض نہ
سمجھا جائے۔

بعض حضرات نے حدیث باب کا بیجی مطلب لیا ہے کہ صاحب حق کواپنے گواہ کاعلم نہ ہوتو اچھا گواہ وہ ہے جوازخودگواہی دے کراس کوحق ولا دے، یابیہ کنابیہ ہے سرعت قبولیت سے لینی وہ گواہ طلب کے بعد اتن جلدی آتا ہے گویا کہ وہ مطالبہ سے پہلے ہی پہنچ گیا۔

قولسه: "لاتبجوزشهادة خائن ولاخائنة ولامجلودٍ حداً ولامجلودةٍ ولاذى غِمرٍ لِإِحْنِهِ (والصواب لِآخِيه) ولامبحرّب شهادة ولاالقانع اهل البيت لهم ولاظنين في وِلاء ولاقرابة". (غريب)

جائز نہیں گواہی کسی خیانت کرنے والے مرداور عورت کی اور نہ ہی اس مرداور عورت کی جن کو کسی حد میں کوڑے کا اور نہیں گواہی میں کوڑے کا اور قبول نہیں شہادت حسد کرنے والے کی کینہ کی وجہ سے (یا محسود میں کوڑے لگائے گئے ہوں (یعنی حد قذف) اور قبول نہیں شہادت حسد کرنے والے کی کینہ کی وجہ سے کی روزی میں آزمودہ ہواور قبول نہیں ایسے خص کی بھی جس کی روزی کسی گھرسے وابستہ ہو،اس گھر والوں کے لئے ۔اور نہ ہی اس محض کی جوموالات اور قرابت کے انتساب میں متم ہو (یعنی جمونا سمجھا جاتا ہو)۔

تشری ولغات: قوله: "خانن" خیانت کرنے والاخواه حقوق الله میں ہویا حقوق العباد میں خصوصاً حقوق مالیہ میں، چونکہ ایبا شخص فاسق ہوتا ہے اور فاسق کی گواہی قابل قبول نہیں اس لئے خائن کی گواہی نہیں چلے گی۔

قول الم المورد الله المورد الله المورد وفض الم جس كوجلد المن كور الطور مدلك مجهول پس الرمراد مطلق مدمولة بجرعدم قبوليت الل وقت مولى جب تك الله ن گناه سے توب ندكى مواورا گرحد قذ ف مراد مولة بحر حنفيه كن د يك الل كي شها وت مدكے بعد كى صورت ميں قبول نميں كى جائے گى اگر چهال نے توب كرلى موجبكة شافعية ومالكيه وغيره كن د يك توب كرنے كے بعد محدود فى القذف كى شها دت قابل قبول ہے الله اختلاف كا دارو مداراس اصولى اختلاف برہ كه اگر كلام ميں متعدد معطوفات ندكور مول اور آخر ميں استثناء اختلاف كا دارو مداراس اصولى اختلاف برہ كه اگر كلام ميں متعدد معطوفات ندكور مول اور آخر ميں استثناء كاتعلق آخرى آجائے توكيا وہ صرف آخرى تحم يعنى معطوف سے موگايا سب سے؟ حفيہ كہتے ہيں كه اس استثناء كاتعلق آخرى معطوف سے موتا ہے۔ چنا نچہ حدقذف كے بارے ميں تحم ہے۔ معطوف سے موتا ہے۔ چنا نچہ حدقذف كے بارے ميں تحم ہے۔ معطوف سے موتا ہے۔ چنا نچہ حدقذف كے بارے ميں تحم ہے۔ شاخ الحدو ہم شمانی ماللہ بين جالم سله و الاتقبلو الهم شهادة ابداً و اُولَيْكَ هم الفاسقون 1 الاالذين تابو امن بعدذ الک و اصلحوا". (نور آ بت نبر ۵)

پی احناف کے زدیک توبر کرنے سے فقط اس کافسق خم ہوگا جو آخری تھم اور معطوف ہے اس سے تبل واللہ کم 'ولا تقبلو الله مشھادة ابداً ''بستور باقی رہے گالہذا کہا جائے گا کہ قاذف کی صددوسر اوّں سے مرکب ہے ایک کوڑے لگا نا اور دوم گواہی ہمیشہ کے لئے نا قابل قبول ہونا۔ مزید تفصیل اصول فقہ کی کتابوں میں دیکھی جائے ہے۔

قوله: "ولاذى غِمو" بكسرالغين بروزن سدر حقداوركين كوكت بير

قوله: "لإحنه" لام اجليه ہے جبکه إحن بکسرالهمزه وسکون الحاء بھی حقد اور غضب کو کہتے ہیں یعنی اس کے کیندگی وجہ سے ختو دومحسود کے خلاف گواہی منظور نہیں ۔ بعض ننخوں میں ' لِا حیسه " بالخاء والیاء ہے جبکہ بعض میں لاحیسه بالناء ہے اس میں لاحیسه زیادہ مجھے ہے ، دونوں میں لام بمعنی علی ہوگا یعنی جس بہن بھائی سے آس کا کینہ چل رہا ہے اس کے خلاف اس کی گواہی نہیں چلے گی۔

قسولسه: "و الامسجسوب المنح" ليعنى جس كى جھوٹى گوائى مشہور ہواوراسے بار بارآ زمايا گيا ہو۔ قسوله: "و الاالقانع" قانع اصل ميں اس سائل كو كہتے ہيں جوتھوڑ ہے بہت پرصبر كرتا ہوگر يہاں وہ فض مراد ہے جوكسى گھرسے كھاتا پيتيا ہوخواہ مفت ميں وہ كھلاتے ہوں يا بطور خادم واجير كان كے گھر ميں رہتا ہوجيسے چوكيدار، ڈرائيوراور خانساما وغيره۔

قوله: "ظنین" متهم کو کہتے ہیں۔ یہاں مرادوہ ہے جواپی ولاء کی نسبت اپنے اصلی موالی کے بجائے غیر کی طرف کرتا ہویا اپنانسب غیر ہاپ کی طرف منسوب کرتا ہو۔

اس حدیث ہے معلوم ہوا کہ جو تخص فاسق ہویا گواہی میں مہم لینی مشکوک ہواس کی گواہی نامنظور ہوگی چنانچہ خائن اور خدود بغیر تو بہ کے فاسق ہیں اس لئے ان کی گواہی نہیں مانی جائے گی جبکہ ذی غمر اور قانع کی گواہی مشکوک ہے کیونکہ دشمنی عداوت رکھنے والا دشمن کے خلاف گواہی اپنے ذاتی مفاد کے لئے بھی دے سکتا ہے جبکہ عام قانع اہل بیت کے قل میں گواہی دے کراپئی وفا داری اور نفع رسانی کا تا ثر قائم کرنا چا ہتے ہیں۔

اسی بناء پر باپ بیٹے کی گواہی ایک دوسرے کے حق میں قابل قبول نہیں ہے جیسا کہ امام تر فدگ نے ذکر فرمایا ہے اور یہی جمہور و حنفیہ کا فد جب ہمی ہے اگر چہ حضرت عمر اور بعض اہل انظو اہرنے اس میں اختلاف کیا ہے ۔ غرض اصول وفروع کے لئے گواہی ممنوع ہے تہمت کی وجہ سے اس کے علاوہ تمام رشتہ داروں کے لئے گواہی دینامنظور ہے ،سوائے زوجین کے کہ ان میں بھی تہمت قائم ہے کہ مفادات مشترک ہوتے ہیں

خلافاللشافعي ابن العربي كهية بي: "وساعدنا ابوحنيفة عليه وهو الصحيح "ليني شهادة الروجين قبول نهين ہے۔

حدیث آخر: "قوله فیما زال رسول الله صلی الله علیه وسلم یقولهاحتی قلنالیته سکت " یعن آپ سلی الله علیه وسلم یقولهاحتی قلنالیته سکت " یعن آپ سلی الله علیه وسلم نے بڑے گنا ہوں میں جب جھوٹی گوائی کا ذکر فرمایا تواس جملہ کو بار بار دہراتے اور مکر دفرماتے رہے یہاں تک کہ جماری خواہش ہوئی کہ کاش آپ سلی الله علیه وسلم خاموش ہوجائے کیونکہ آپ سلی الله علیه وسلم کو تکلیف پہنچ رہی ہے اور تھک رہے ہیں۔

اگل حدیث میں شہادت زورکوشرک کے برابر قرار دیا گیا' نفیدلت '' یعنی برابری گئی ہے اس کی وجہ ابن العربی نے عارضہ میں یہ بیان فرمائی ہے کہ جس طرح شرک موجب فساد ہے اس طرح جموثی گواہی بھی باعث فساد ہے کہ جس طرح شرک موجب فساد ہے کہ جس طرح نظام سیاراتباہ فساد ہے کہ جس کی وجہ سے آل کیا جاتا ہے اور بھی دوسری سزادی جاتی طرح نظام سیاراتباہ و برباد ہوجاتا ہے جسیا کہ آج کل ہوا ہے۔ آخری حدیث عمران بن حسین کی ابواب الفتن ' بساب مساجاء فی القرن الشالث ''میں مع التشر سے گذری ہے۔ فلیراجع



البواپ الردك عن رسول الله صلى الله عليه وسلم

"عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :نعمتان مغبون فيهما كثير من الناس،الصحة والفراغ". (حسن صحيح)

حضرت ابن عباس فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ دونعتیں ایسی ہیں جن میں بہت سارے لوگ خسارہ میں رہتے ہیں صحت مندی اور فارغ البالی۔

تشری : ـ زہداورزھادت بمعنی بےرغبتی کے ہیں یعنی دنیا سے زیاد ہعلق نہ جوڑنا۔

قوله: "مغبون" دراصل اس فحق کو کہتے ہیں جو تجارت میں نقصان یعنی گھائے میں رہتا ہے چونکہ اعمال صالحہ اُخروی ثواب کا سامان ہے اس لئے اس عمل کو بھی بزبان قر آن تجارت کہا گیا ہے یعنی نکیوں کی تجارت، یہاں جن دونعتوں کا ذکر ہے ان میں ایک تو تندرتی ہے جوعبادت کے لئے کلیدی حیثیت رکھتی ہے کونکہ بیارآ دمی عوا آپی ہی فکر اور پریٹانیوں میں گھر ار ہتا ہے یا پھرعبادت کا حق ادا کرنے سے قاصر دہتا ہے۔ دوسری نعت فراغت ہے یعنی آ دمی کا دنیوی مصائب و پریٹانیوں سے حفوظ ہونا، کونکہ پریٹانیوں میں گھر ا آ دمی کہاں جا ندارعبادت کرسکتا ہے خصوصاً عبادت تفکر مطلب ہے کہ کم ہی لوگ ایسے ہیں جوان دونعتوں سے خوب اُخر دمی تجارت کر سے ہیں جبہ عام لوگ ان نعتوں کی قدر نہیں کرتے وہ ندتو صحت سے نفع اٹھاتے ہیں اور نہی خوب اُخر دمی تجارت کر سے ہیں جبہ عام لوگ ان نعتوں کی قدر نہیں کرتے وہ ندتو صحت سے نفع اٹھاتے ہیں اور نہی خوشحالی سے نفع کما سکتے ہیں بلکہ عوباً وہ اس سرمایہ کوضول کا موں یا دنیوی مشاغل اور کبھی گناہ کے عوائل میں خوب کری آخرت کے فائد سے سے محروم دہتے ہیں ، یہ ایسا ہے جیسے ایک آ دمی کی دکان مال تجارت سے میں خرج کری پڑی ہوگروہ اسے بندر کھتا ہو یا اس میں بجائے کاروبار کے کھیل تماشے اور گرپ شپ کرتا ہو ظاہر ہے وہ اس میں بجائے کاروبار کے کھیل تماشے اور گرپ شپ کرتا ہو ظاہر ہے وہ اس سے کما کمائے گا؟۔

غرض آ دمی کوچاہئے کہ بجائے حظِ دنیا کے دُتِ آخرت پرزورلگائے اپنے لئے بھی اوردوسرول کے لئے بھی دنیا کوضرورت سجھ کراس کے مطابق حاصل کرے آخرت کو مقصود ومطلوب جان کراس پرتوجہ دينا چا بين ، اى تكتى طرف حضرت شاه صاحب في اشاره كر يحرف بين فرمايا ب: "قسالواان ذرة من الزهد خير من عبادة النقلين "-

ووسری حدیث: اس باب میں دوسری حدیث ابو ہریہ اسے مروی ہے کہ آپ علیہ السلام نے فرمایا: کون ہے جو جھے سے یہ باتیں (احکام ومشورے) حاصل کرکے ان پرخوش کرے اوراس فخص کو ہتلادے جوان پڑمل کرے؟ ابو ہریہ افغے فرمایا کہ میں نے عرض کی اے اللہ کے رسول! میں ہوں پس آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے میرا ہاتھ پکڑ کروہ پانچ باتیں شار کرائیں۔(۱) آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جرام سے نج کر رہنا اس طرح تم لوگوں میں سب سے زیادہ عبادت گذار بن جاؤگے۔(۲) اوراللہ نے تیرے لئے جومقد رفر مایا ہے اس پرراضی رہوتو لوگوں میں سب سے زیادہ غنی بن جاؤگے۔(۳) ایٹ پڑوی کے ساتھ اچھاسلوک کروتو کامل مؤمن بن جاؤگے۔(۳) اپنے پڑوی کے ساتھ اچھاسلوک کروتو کامل مؤمن بن جاؤگے۔(۳) اپنے بائد کرتے ہوتو کامل مسلمان ہوجاؤگے اور (۵) زیادہ مت بنسو کیونکہ زیادہ بنسنادل کومردہ کردیتا ہے۔

تشری : _ آخضور صلی الله علیه وسلم کاابوهری اقلی کا اتھ پکڑناان باتوں کی اہمیت کے پیش نظر تھا،اس حدیث میں ' آوی علم النے '' کا' او '' بمعنی واو کے ہے حدیث کا مطلب آسان ہے البتہ اس سے چند باتیں معلوم ہوتی ہیں: ایک یہ کہ دین اسلام میں علم اور عمل دونوں اہم ہیں ۔ دوم یہ کہا اس کو پڑھانا چاہئے جو عمل کی غرض سے پڑھتا ہویا کم از کم عمل کا شوق رکھتا ہوا گرچہ اتمام جمت کے لئے عام تعلیم دینا بھی جائز ہے ۔ تیسری بات یہ ہے کہ عبادت صرف کرنے کانا منہیں بلکہ ترک اور چھوڑ نا بھی عبادت ہے لہٰذا ترک دنیا اور ترک گناہ بھی عبادت می جڑ ہے ۔ چو تھی بات ایمان کے تقاضوں کو پورا کرنے سے ایمان مضبوط تر ہوجا تا ہے ۔ امام ترفدی نے اس حدیث کو منقطع قرار دیا ہے کہ حضرت سن بھری کا ساع حضرت ابو ہریں اللہ علیہ خاب تہیں ۔

باب ماجاء في المبادرة بالعمل

(عمل کرنے میں جلدی کرنا)

"عن ابى هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: بادروابالاعمال سبعاً هل تنظرون إلاالى فقرمُنسِ اوغِنى مُطخ اومرض مُفسدِ اوهَرَم مُفندِ اوموت مُجهزِ اوالدجال

فَشَرٌّ عَائب يُنتَظُرُ اوالساعة فالساعة أدهى وامَرُّ. (حديث غريب)

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: سات چیزوں سے پہلے ہی عمل میں شتا بی (جلدی) کرو (عمل نہ کرکے) تم انتظار نہیں کرتے ہو گر(ا) نمولا دینے والے فقر کا (۲) یا بھٹکا دینے والی مالداری کا (۳) یا بگاڑ دینے والے مرض کا (جس سے دین اور بدن دونوں بربا دہوجاتے ہیں) (۳) یا (عقل کو) فاسد کرنے والے بڑھا ہے کا (پھر سے حقل کی قدرت نہیں رہتی) (۵) یا اچا تک آنے والی موت کا (۲) یا پھر د جال کا انتظار ہے ہیں وہ تو ایسا شرہے جوغائب ہے اوراس (کے خروج) کا انتظار ہور ہاہے (۷) یا قیامت کا انتظار ہے ہیں قیامت تو بہت ہی ہولناک اور سخت کڑوی ہے۔

تشریج:۔"مُنس" اور ہاتی تمام صفات مجھزِ تک باب افعال سے اسم فاعل کے صینے ہیں نسیان سے ہے کیونکہ فقر وفاقہ عمو مآلوگوں کومعاش کی فکر میں لگا کرمعاد کی طرف توجہ کو ٹھلا دیتا ہے۔

قول : "مُطغِ" طغیان سے ہے بمعنی سرکشی کے کیونکہ مال عموماً آدی کوسرکش و نافر مان بنادیتا ہے جیسا کہ مشاہدہ ہے۔ قوله: "هوم" بروزن قرربر ها پااور "مفند" افناد سے بمعنی فئد میں لینی فقور د ماغی اور عقل کی خکست وریخت میں مبتلا کردینے والا، کیونکہ زیادہ بوڑھا آدی بچوں کی طرح ہے معنی باتوں اور بے مقصد کا موں میں سرگرم ہوجا تا ہے عبادت کاحق ادانہیں کرسکتا بلکہ بعض تو چھوڑ ہی دیتے ہیں۔

قوله: "مجهز" إجهاز سے بمعنی جلدی رخصت کرنے والی موت کے ہے۔قوله: "ادھی وامر" دونوں استفضیل کے صیغے ہیں داھیہ گھرادینے والی چیز اور امرمر سے بمعنی کڑوا کے ہے۔

مطلب یہ کہ مندرجہ موافع عبادت کی آ ہدسے پہلے پہلے عبادت میں گےرہوتا کہ آخرت کے لئے پہلے عبادت میں گےرہوتا کہ آخرت کے لئے پہلے عبادت کرنے کی فرصت یا طاقت نہیں رہے گ

پر عبادت کی اہمیت نہیں رہے گی کیونکہ جو تھن جو انی میں اورصحت کے دور میں عبادت پر توجہ نہ دے تو یہ امکان نہ ہونے کے برابرہ کہ ان فتنوں میں وہ عبادت کے لئے کمر کس لے گا، چونکہ ان آ فات میں ہے بعض کا آ تا تو بیتی ہو تھ کہ کہ کی ان قات میں ہے بعض کا آتا تو بیتی ہو تھ کہ کہ کی اور ہے کہ تم لوگ عبادت میں خوب محنت نہیں کرتے ہو کیا تمہیں ان آ فات کا انتظار ہے پی اگر ایسا ہے تو بیتر اور اس سے بیتر ہو انتظار ہے پی اگر ایسا ہے تو بیتر اور اس سے بین تھ بالسلام کے سامنے خاطب صحابہ کرام میں اور اس سے بین تیجہ اخذ کیا جائے کہ وہ گو یا اعمال میں کمز ورشے گا و وہ شاصی ابر ضوان اللہ علیم سے بڑھ کرکون زیادہ عبادت کر سکتا ہے بلکہ یہ خطاب

امت کے ہراس مخص سے ہے جو عل کے اعتبار سے سست ہواور جتنی عبادت کرتا ہواس سے بھی زیادہ کرسکتا ہو گر کر سکتا ہو گر بوجر سستی کے نہ کرتا ہوتو اس سے کہا جار ہاہے کہ تمہیں کس چیز کا انتظار ہے؟ تحفۃ الاحوذی اور عارضۃ اللحوذی بیں اس حدیث کو حسن بھی کہا ہے۔

باب ماجاء في ذكر الموت

(موت کے تذکرہ کے بارے میں)

"اكثروا هاذم اللذات يعنى الموت". (غريب حسن) لذتول ومنقطع كرن والى چيز كوبكثرت بإدكر وليني موت كو

تشریخ: بید لفظ دال مہملہ اور ذال معجمہ دونوں کے ساتھ پڑھا گیا ہے دونوں قریب المعنی ہیں ھادم کے معنی ڈھانے دینے والی چیز اور ھاذم کے معنی قاطع کے ہیں مرادموت ہے جیسا کہ داوی نے اس کی تغییر میں کہا ہے" یعنی المعوت' عاشر قوت سے معلوم ہوتا ہے کہ پیلفظ 'موت' بالجر بغیر یعنی کے عطف بیان ہے۔ موت کو بکثرت یا دکرنے میں حکمت یہ ہے کہ اس سے دنیا کی حقارت اور بے وفائی کی حقیقت سمجھ میں آتی ہے کہ جب موت سے مادی تغییر ورتی منہدم ہو کرختم ہوجاتی ہے تو پھرکیوں ندایسی زندگی کے لئے تیاری کریں جس کی حیات ابدی میوے لافانی اور عربحر جوانی ہی جوانی رہتی ہے جہاں کا منظر کچھاس طرح ہے کہ:

"افتضاض الابكار،على شطِ الانهار،تحت الاشجار،اوضرب الاوتار و ضيافة الجبار. (كذافي المدارك، سوره يس آيت: ۵۵)

باب

قبرکی ہولنا کی کابیان

"كان عشمان اذا وقف على قبربكى حتى يبل لحيته فقيل له تُذَكَرُ الجنةُ والنارُ فلا تبكى وتبكى من هذا ؟ فقال ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: ان القبراول منزل من منسازل الآخرة فان نجامنه فمابعده ايسرُ منه وان لم ينجُ منه فمابعده اشدمنه قال وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم : مارأيتُ منظراً قطّ الاالقبرافظع منه" . (حسن غريب)

حضرت عثان رضی اللہ عنہ جب کمی قبر پر کھڑ ہے ہوجاتے تورونے لگتے یہاں تک کہان کی داؤھی گیلی موجاتی چنا نچدان سے دریافت کیا گیا کہ جب جنت وجہنم کا تذکرہ کیاجا تا ہے تو آپ ٹنہیں روتے اور قبر کے پاس روتے بیں تو انہوں نے فرمایا کہ رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا ہے کہ: قبر آخرت کی منزلوں میں سے کہلی منزل ہے لیں اگر آ دمی یہاں سے بحفاظت گذرا تو اس کے بعد (کی منزلیں) اس سے آسان تر ہیں لیکن اگر یہاں نجات نہ کی تو اس کے بعد (کی منازل) زیادہ کھٹن ہیں فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے بیل منظر نہیں دیکھا گر قبراس سے زیادہ بھیا تک ہے۔

تشریخ: قوله: "بیل" بضم الباءوتشد بداللام بلل تری کو کہتے ہیں۔ قولسه: "بلد کو" بسیغهٔ مجبول۔ قوله: "فان نجا" منمیرمقبور یعنی صاحب قبری طرف راجع ہے۔

قول د: "افظع" فظع ہے ہے ہمتی ہمیا تک اور ڈراؤ نے کے یہاں باتی مناظر ہے مرادد نیاوی مقامات ہیں ورندتو اُخروی عذابوں میں قبر ہے زیادہ خطرناک بھی پائے جاتے ہیں جیسے آگ۔ جب موت آتی ہے تو نامہ اعمال لپیٹ دیا جا تا ہے اور جزاوسزا کاعمل شروع ہوجا تا ہے چونکہ محتوں میں آتک میں اس وقت کھل جاتی ہیں اس لئے گناہ میں لت پت شخص پراتنا خوف طاری ہوتا ہے کہ اس کا تصور بھی نہیں کیا جاسکا، پھر قبر کی جنوائی الگ مصیبت اور فرشتوں کی بختی الگ عذاب اور باتی انواع عذاب کا تسلط تو ہے ہی عذاب، اگر کوئی خوش نفیائی الگ مصیبت اور فرشتوں کی بختی الگ عذاب اور باتی انواع عذاب کا تسلط تو ہے ہی عذاب، اگر کوئی خوش نفیائی الگ مصیبت اور فرشتوں کی بختی الگ عذاب اور باتی انواع عذاب کا تبدی کے بات یا فتہ ہونے کا نیک فیسب یہاں نرمی اور دحمت کا انعام حاصل کرنے میں کا میاب ہوجا تا ہے تو بیاس کے بعد بطریق اولی وہ مختیوں گاستی ہے کہ قبر کا عذاب اس کے سارے گناہوں یا خوف کا کفارہ نہ بن سکے کامستی ہے کہ قبر کا عذاب اس کے سارے گناہوں یا خوف کا کفارہ نہ بن سکے اور اسے مزید کھن مراحل سے گذر تا پڑے ۔ اعاذ نا اللہ منہا

ضروری نہیں کہ حضرت عثمان رضی اللہ عنہ کارونا اپنے او پر ہو کیونکہ وہ تو جنت کی خوش خبری صادق ومصدوق علیہ السلام کی زبان مبارک سے سن چکے تھے بلکہ امت کے گنہگاروں کے بارے میں وہ رویا کرتے سے جسے جاں باپ اپنے قیدی یا بیار بیٹے کی تکلیف پرروتے ہیں کتے لوگ ہیں جو امت کے مم سے بیار پڑھے، یہ بھی ممکن ہے کہ قبر کے پاس کھڑے ہو کروہ عذاب قبر کے بارے میں سوچتے ہوں اور بدرجہ 'لا بشرط فی' ایسیٰ خوش خبری سے قطع نظر کرے روتے کیونکہ 'انمایخ شبی اللہ من عبادہ العلماء''۔الآیۃ

باب من اَحَبَّ لِقاء الله اَحَبَّ الله لِقاء ه

(جواللدےملنالیندکرے،اللداسےملنالیندفرماتے ہیں)

''من اَحَبَّ لِقاء اللهُ اَحَبَّ اللهُ لقائه ،ومن كَرِهَ لِقاء اللهُ كَرِهَ اللهُ لقاء ه''. (صحيح) جوُّخص الله سے ملنے کو پسند کرتا ہے تو الله تعالی بھی اس سے ملا قات کو پسند فرماتے ہیں اور جوُّخص الله سے ملنا پسند نہیں کرتا تو اللہ بھی اس کی ملا قات کو پسند نہیں فرماتے۔

باب ماجاء في إنذار النبي عَلَيْكِمْ قومَه (حضورصلى الله عليه وسلم كااين قوم كوشفقت كساته ورانا)

"عن عائشة قالت لمانزلت هذه الاية: "وانذرعشيرتك الاقربين "قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ياصفيّة بنت عبدالمطلب! يافاطمة بنت محمد إيابني عبدالمطلب! انى لا الله من الله شيئاسلوني مِن مالى ماشئتم ". (حسن وصحيح)

حفرت عائشہ رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں کہ جب بیآیت نازل ہوئی ''اورڈرسُنا وے اپنے قریب کے رشتہ داروں کو'' (سورۃ شعراء آیت ۲۱۳) تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: اے صفیہ بنت محمد!اورا ہے عبدالمطلب کی اولا دمیں اللہ کے ہاں تمہارے لئے کچھنہیں کرسکتا، میرے مال میں سے

جوجا ہوما تگ لو۔

تشری : تغیرعثانی میں اس آیت کے حاشیہ پراکھاہے: یعنی اوروں سے پہلے اپنے اقارب کو تقبیہ کیجئے کہ خیرخواہی میں اُن کاحق مقدم ہے اورو یسے بھی آ دمی کی صدافت وتقانیت، اقارب کے معاملہ سے پر کھی جاتی ہے۔ حضرت شاہ صاحب کلھتے ہیں کہ جب بیآیت اُئری حضور سلی الله علیہ وسلم نے سارے قریش کو پُکا رکر سُنا دیا اورا پی بھو پی تک اورا پی بیٹی تک اور چپا تک کو کہ سُنا یا کہ اللہ کے ہاں اپنی فکر کرو۔خدا کے ہاں میں تمہارا کی خیریس کرسکتا۔ انہیٰ

المستر شدع ض کرتا ہے کہ اندار مطلق ڈرانے کوئیں کہتے بلکہ اللہ کے عذاب سے شفقت کے ساتھ
ڈرانے کو کہاجا تا ہے اس لئے سب انبیا علیہم السلام کے لئے یہی لفظ استعال ہوا ہے کہ وہ احتیوں کے لئے باپ

کے مانند تھے، یہ روایت تغییر میں بھی آ رہی ہے وہاں امام ترفریؓ نے اس کی تھیج کی ہے، سلم میں یہ نبتا زیادہ
تفصیل کے ساتھ آئی ہے اور یہ کہ بیاجتماع صفا پہاڑی پر پیش آ یا اوران لوگوں میں ابولہب بھی تھا جس نے دعوت
کو تقارت کے ساتھ ردکر دیا جو "تبت بدااہی لھب " کے نزول کا سبب بنا، آپ علیہ السلام کا مقصد یہ تھا کہ اگر
اللہ جارک و تعالی کی سے ناراض ہوکر اس کے گنا ہوں یا کفر پر سزاد بناچا ہیں گے تو میں اس عذاب کوئیس ٹال سکنا
کہیں اس کا مالک نہیں ہوں البتہ و نیا وی امور میں جہاں تک مجھے تصرف کا حق ہے اس میں آپ کی مدد کے لئے تیاری کر کے خود ہی
تیار ہوں لیکن یہ فائدہ آخرت کے مقابلہ میں بہت قلیل ہے اس لئے تم لوگ آخرت کے لئے تیاری کر کے خود ہی
تقویٰ اختیار کرو۔

بظاہریہ واقعہ دومرتبہ پیش آیا ہے ایک شروع میں ہجرت سے قبل اور دوسری ہار ہجرت کے بعد لہذاو فی الباب کی روایات جوحضرت الو ہریرۃ ودیگراصحاب سے مروی ہیں کومرسل مانے کی ضرورت نہیں اورایک آیت کا متعدد بارنازل ہونا ٹابت ہے جبیبا کہ امام سیوطیؓ نے ''الا تقان' میں بیان فرمایا ہے راقم نے بھی'' زاد یسیر'' میں اس کی مثالیں نقل کی ہیں ۔

آپ سلی الله علیہ وسلم کی سفارش امت کے عُصا ۃ المؤمنین کے لئے حق ہے جیسا کہ شرح عقا کدوغیرہ میں ہے مکن ہے کہ دوری باب کا واقعداس کے علم سے بل ہو۔ یا مطلب بیہ ہے کہ دانسی لاا ملک '' ایعن میں اللہ کی مرضی اورا جازت کے بغیر کچھ نہیں کرسکتا البذائم لوگ بیانہ مجھوکہ ہماری نجات بہر حال ہوجائے گی جیسے دنیا کے لوگ و نیا میں اپنے افر بہ کو بہر حال پاس کرتے اور کراتے ہیں ، اللہ کے ہاں شفاعت إذني تو ہوسکتی ہے دنیا کے لوگ و نیا میں اپنے افر بہ کو بہر حال پاس کرتے اور کراتے ہیں ، اللہ کے ہاں شفاعت إذني تو ہوسکتی ہے

لیکن اس ہے ہٹ کرکوئی زور ،کوئی شور وغیرہ نہیں چاتا۔

باب ماجاء في فضل البكاء من خشية الله

(الله كے خوف سے رونے كى فضيلت كابيان)

"لايلج الناررجل بكي من خشية الله حتى يعوداللبن في الضرع ولايجتمع غبارفي سبيل الله ودخان جهنم". (صحيح)

جہنم میں ہرگز وہ مخض داخل نہیں ہوگا جواللہ کے خوف سے روئے تا آئکہ داخل ہوجائے دودھ تھن میں اوراللہ کی راہ کا غبار اور دوزخ کا دھوال ہرگز جمع نہیں ہو سکتے ہیں۔

تشری : پوتکه الله کخوف سے رونا اور است میں چانا ایمان کے ساتھ لازم ہیں اور دوز خ اور اس کا دھوال کفر کے لواز مات میں سے ہیں اور المزومیں لیمی ایمان اور کفر میں تو تضاد ہے اس لئے ان کے لوازم میں بھی تضاد ہے اور نفی لازم سے فی المزوم ہونا بدیمی ہے جسیا کہ خطق کی کتب میں بیان ہوا ہے اور 'حتی یعود اللبن النے ''تعلیق بالمحال ہے' حتی یہ لمج المجمل فی سم المحیاط '' کی طرح لیمی بود دھتو واپس خضوں میں نہیں جاسکتا اس طرح اللہ کے خوف سے رونے والا اور اللہ کی راہ میں غبار سے کرد آلود ہونے والا بھی دوز خ میں نہیں جاسکتا، پھراس کرد آلود ہونے سے مراد غیرا فقتیاری گردو غبار ہے اگر کوئی فخص مٹی لے کراپ او پرچھڑک دیے تو اس کا کوئی اعتبار نہیں جیسا کہ پہلے عض کیا جاچکا ہے۔ نیز یہ بھی گذرا ہے کہ اس قتم کی تا ثیرات خاصیات المفردات کہلاتی ہیں۔

ملياله باب ماجاء في قول النبي عَلَيْسِهِ

لوتعلمون مااعلم لضحكتم قليلاً

(اگرتم وه بات جانع جومین جانتا مول تو بخداتم کم ہی ہنتے)

"عن ابى ذرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: انى اَرى مالاترون واسمَعُ مالاتسمعون اَطَّتِ السماء وحُقَّ لهاان تَإِطَّ مافيهاموضع اربع اصابع الاوملك واضع جَبهَتَه لِلله ساجداً والله لوتعلمون مااعلم لضحكتم قليلاً ولَبكيتم كثيراً ،وماتلَلَدْتم بالنساء

على القُرش ولنَّعرَجتم الى الصَّعَدات تجارون الى الله لَوَدِدتُ الى كنتُ شجرةً تُعضَد". (حسن غريب)

حضرت ابوذررضی الله عند فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا ہے شک میں وہ اشیاء دیکت ہوں جوتم لوگ نہیں و یکھتے اور سنتا ہوں وہ جوتم نہیں شنع ہو پڑ پڑا تا ہے آسان اوراس کے لئے یہی چرچا ہث مناسب ہے کہ اس میں بفترر چا را گھشت خالی جگہ نہیں مگر فرشتہ اس پراپی پیشانی اللہ کے لئے سجدہ میں رکھے ہوئے ہے، بخد ااگر تہمیں معلوم ہوتا وہ جو میں جانتا ہوں تو تم کم ہی ہنتے اور زیادہ ہی روتے اور ہیویوں سے بستروں پر ہرگز لطف اندوز نہ ہوتے بلکہ بیا بانوں کی طرف ضرور نکل کر الله کی طرف کریہ وزاری کرتے۔ (بیدوایت بیان کر کے حضرت ابوذر شرف ایک کاش! میں ورخت ہوتا جو کا ب دیا جاتا۔

تشریخ: قوله: "انی آدبی و اسمع" اس سے مراداً سان کی حالت بھی ہوسکتی ہے اور دیگروہ سب قرائن جواللہ کی عظمت ِشان پردال ہیں۔

قوله: "اَطت" بتشد بدالطاءاطيط پَر چرانے اور چرچرا ہث کو کہتے ہیں جولکڑی کے ٹوٹے اور کجادے کی آواز ہوتی ہے جو بعجہ بوجھ کلتی ہے۔

قوله: "وحق" بصيغير مجهول يعني اس كے لئے يهي مناسب ہے۔

قولد: "الصُعُدات" بضمتين صعيد كى جمع بهى بوسكتى ہے اور صُعدة كى بھى صحر ااور بيابان كو كہتے ہيں۔ قولد: "تبجارون" تم فرياد كركز اروقطار روتے اور چيننے چلاتے بين صرف دعائيں بى ماسكتے۔ بعض روايات كے مطابق آپ عليه السلام نے بيار شاداس وقت فرمايا جب آپ مسجد بيس تشريف لائے اور وہاں بيٹے ہوئے كچھ لوگول كود يكھا جو باتيں كررہے تھے اور بنس رہے تھے۔

حدیث کالب لباب یہ ہے کہ اللہ عزوجل کی عظمت اور قدرت اتن زیادہ ہے کہ آسان بھی بغیر چر چراہٹ کے نہیں رہ سکتا پھراس کی وجہ بیان فر مائی کہ اس پر قدم رکھنے کی جگہ بھی خالی نہیں اس لئے وہ اس پو جھ تلے دبار ہتا ہے آگرتم لوگوں کوموت اور اس کی ختیوں اور قبر اور اس کے مابعد والی پریٹا نیوں کاعلم ہوتا تو تم گھروں سے نکل جاتے اور جنگلوں میں اللہ سے دعا کیں ما تکتے اور جینے چلاتے ، کیونکہ جب کی آ دی پر بہت زیادہ پریٹائی آئی ہے تو وہ گھر سے نکل جاتا ہے اور دشت وصح اوکا رُخ کر کے نجات طلب کرنے لگتا ہے ۔ آخر میں جو آئی ہے تو وہ گھر سے نکل جاتا ہے اور دشت وصح اوکا رُخ کر کے نجات طلب کرنے لگتا ہے ۔ آخر میں جو ''کہ و دد ث انسی النے ''جملہ ہے یہ دیگر روایات کی تصریح کے مطابق حضر سے ابوذر ' کا قول ہے جیسا کہ امام

ترندیؓ نفر مایا ہے 'ویسوی من غیر هذا الوجه ان اباذرؓ قال لوددث النع''۔عارضة الاحوذی میں ہے کہ بیعدیث صحیح ہے۔

باب ماجاء من تَكُلّم بالكلمة لِيُضحكَ الناسَ

(جس نے ایک بات کی تاکہ لوگوں کو ہنسائے)

"عن ابى هسريسرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان الرجل لَيَتَكَلّم بالكلمة لايرى بهاباساً يهوى بهاسبعين حريفاً في النار". (حسن غريب)

فر مایارسول الله صلی الله علیه وسلم نے کہ بے شک آ دمی ایک ایسی بات کرتا ہے جس میں وہ کوئی حرج (بُرائی) نہیں سمجھتا (مگر)وہ اس کی وجہ سے دوزخ میں ستر سال گرتا چلا جاتا ہے۔

تشریخ: قول د: "بهوی" هوی بهوی باب ضرب سے پنچی طرف گرنے کو کہتے ہیں جب کد اضرف اسلام موسم خزال کو کہتے ہیں جب کد اضرف اسلام موسم خزال کو کہتے ہیں گراس کا اطلاق سال پر بھی ہوتا ہے جو یہال مراد ہے، جیسے جمعہ اور ہفتہ ہو لے جاتے ہیں گران سے مراد پورے سات دن ہوتے ہیں ۔ قبوله: "سبعین" کاعدد تحدید کے لئے نہیں بلکہ کشرت اور دوام مراد ہے۔

صدیث کا مطلب ہے ہے کہ بعض دفعہ آدمی اتی غلط بات منہ سے نکالتا ہے کہ وہ شخص اگر چہ اسے غیر معمولیٰ ہیں ہمتالیکن درحقیقت وہ اتی تباہ کن ہوتی ہے کہ سب کچھ کئے جاتا ہے اورا یمان کی دولت ختم ہوجاتی ہے۔ آج کل بہت سے لوگ نداق میں داڑھی والے کو' داڑھی'' کے نام سے پکار تے ہیں کوئی شخص پر دہ پوش عورت کا ہتک آمیز نام رکھتا ہے بھی مولوی صاحب کا فداق اڑا یاجا تا ہے وغیرہ وغیرہ بید درحقیقت دین کا تمسخر ہے جوز والی ایمان کا سب بن سکتا ہے اس سے پر ہیز لازمی ہے، دوسری حدیث میں ہے کہ حضورصلی اللہ علیہ وسلم نے ایسے شخص کو ہلاکت کی بددعاء دی ہے جولوگوں کو ہنسانے کی غرض سے جموف آگر چہ الیہ نیمی بڑھ جاتی ہے بیونکہ جس طرح ایک نیکی کمی زمان ومکان یا گل کے اعتبار سے مزید بلند ہوجاتی ہے اس طرح گناہ بھی زمان ومکان اور موقع وکل کے حوالے سے بڑھ جاتا ہے اس لئے جب لوگوں کے ہنسانے کے لئے جموث بولا جائے کا قوڈ بل گناہ ہوگا، خاص کر جب اسے مشغلہ بنایا جائے جیسے بعض لوگوں کی عادت ہوتی ہے کہ ہروقت بکواس

کرتے رہتے ہیں۔

البتہ بھی بھار تی بات سے کی دلداری ودلجوئی کی غرض سے مزاح کیا جائے تو وہ معیوب نہیں بلکہ بعض دفعہ سابقہ ضا بطے کے مطابق مستحن ہوتا ہے، جیسے کی دوست کو منانے کے لئے یاس کاغم کم کرنے کے لئے مزاح کیا جائے اس بیں بھی بیدخیال ہونا چاہئے کہ بات صرف تجی ہی نہیں بلکہ مفید بھی ہو جیسے کوئی علمی لطیفہ ہے، پھراس طرز کو بھی عادت و معمول نہیں بنا نا چاہئے۔ ہمارے اسا تذہ کرام جب کی مجلس میں جلوہ افروز ہوتے تو اکر علمی بحث کرتے اب فضاء بلدم و بیکس ترتبدیل ہوگئی اکثر الل علم اپنا عیب چھپانے کے لئے علمی بحث سے گریز کرتے ہیں اور تمام تر توجہ سیاسی گفتگو پر ہوتی ہے جس میں فیبت بھی آتی ہے اور ضیاع وقت اور طنز و تسنو و غیرہ کی خرابیاں مجتمع ہوجاتی ہیں اس سے بھی بچنا چاہئے ہاں مفید و جائز سیاست اور سیاسی گفتگو جائز بلکہ نیک نیتی وغیرہ کی خرابیاں مجتمع ہوجاتی ہیں اس سے بھی بچنا چاہئے ہاں مفید و جائز سیاست اور سیاسی گفتگو جائز بلکہ نیک نیتی سے بسااوقات عبادت بن جاتی ہے۔

باب

كسى كوجنت كي خوشخرى دينه كابيان

"عن انس بن مالك قال تُوفِيَّ رجل من اصحابه فقال يعنى رجلا (رَجُل) "أبشر بالجنة" افقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: أو لاتدرى؟ فَلَعَلّه تكلم فيما لايعنيه اوبخل بما لاينقصه". (غريب)

حضرت انس فرماتے ہیں کہ صحابہ میں سے ایک فخص کی وفات ہوگئ تو ایک فخص نے کہا تھے جنت کی بشارت ہو، اس پررسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: کیاتم نہیں جانتے ہو؟ شایداس نے کوئی فضول ہی بات کی ہویاکسی الیمی چیز کوروکا ہوجس کے خرج کرنے سے اسے نقصان نہوتا ہو۔

تشریخ: قسولسه: "اَوَلاتددی" جب بھی کلام میں حرف استفہام اور حرف عطف اس طرح جمع موجا کیں تووہاں معطوف علیہ مقدر ہوگا کیونکہ ہمزہ صدارت کلام کو تقتفی ہے اور 'واو' کو معطوفین چاہے ۔ لہذا یہاں تقذیریہ ہوگی: اَتُبَشِّرہ وَلاتدری؟"۔

جنا تزتر فدى يس ايك باب گذرائي 'باب ماجاء في الثناء الحسن على الميت ''جس يس صاف كها گيائي كم حابر رام في ايك جنازے كى تعريف كى تو آپ سلى الدعليه وسلم في فرمايا ''وجبت''اس طرح ترندی کے جنائز میں بیصدیث بھی گذری ہے: ''اذکرو احساسن موتا کم ''اس کا مطلب بیہ کہ اہل ایمان کے جنائز میں بیصد بیٹ اوران کے حاسن کا تذکرہ کر لیناچا ہے لیکن جہاں تک اُخروی فلاح کا تعلق سے تواس بارے میں تھم بیہ کہ جب تک سی مخص کے بارے میں نص معلوم نہ ہوئی ہوتب تک بی تھم نہیں لگانا چا ہے کہ وہ جنتی ہے، چنا نچے مسلم شریف میں حضرت عائشہ سے روایت ہے کہ انہوں نے ایک انصاری نے کے بارے میں فرمایا:

"طوبى لها ذا عُصفورمن عصافيرالجنة لم يعمل السوء ولم يدركه فـقال (رسول الله صلى الله عليه وسلم) أوغير ذالك ياعائشة المخ" (مشكواة ص: ٢٠ الايمان بالقدر) يعنى أتعتقدى ماقلت والحق غير ذالك وهوعدم الجزم بكونه من اهل الجنة. كذافي المرقاة.

قوله: "فلعله تكلم النح" يعنى جزم اور بشارت تواس كے بارے ميں ہے جوحاب سے آزاد ہويا حساب كے بعد جنت كاپروانہ وصول كرچكا ہواس سے پہلے بشارت نہيں دين چاہئے كيونكہ بھى مباحات پر بھى عاسبہ ہوسكتا ہے، جيسا كداوپرعرض كياجاچكا ہے كہ بے كل عمل اپنے درجہ سے اوپر ينچے ہوجا تا ہے، اى طرح بے فائدہ بخل بھى قابل كرفت ہوسكتا ہے مثلاً ايك آدى كواللہ نے صلاحيت مدريس كى دى ہے اور مدريس يا افتاء وغيره ميں كوئى ركاوٹ يا مالى نقصان بھى نہيں عمروہ اس ميں حصہ نہيں ليتا توبي ايسا بحل ہے جس سے كوئى كى نہيں ہوتى ميں بذا ذائد كھا تا ، بھلى بات ، كى كوراستہ بتا ناوغيرہ كا تھم ہے۔ حديث الباب كے سارے داوى ثقة بيں البتة اعمش كاساع النس ہے۔

حديث آخر: ـ "من حسن اسلام الموء تركه مالايعنيه". (غريب)

آدی کے اسلام کی خوبی میں سے ہے بے مقصد بات (اور کام) کو چھوڑ نا آگر غیر مسلم نضولیات میں لگا رہے قشایداس کے اسلام کی خوبی میں سے ہے بے مقصد نہیں اور نہ ہی اس نے اپنی اصلی منزل بہچانی ہے، مگر مسلمان تو اصل صورت حال اور زندگی واعمال کے مآل ہے آگاہ ہوتا ہے پھر بھی اگر وہ ایسی بات کرتا ہے یا ایسا کام کرتا ہے جواس کی ضرورت اور فائد ہے کے زمرے میں نہ آتا ہوتو اس کا کم از کم نقصان میہ ہے کہ اس کا انتہائی فیمتی وقت ضا کے ہوااگر وہ اس وقت میں اللہ کا ذکر کرتا یا آخرت کی فکر کرتا ، یا کوئی اور کا برخیر کرتا تو یقیینا اس کا بہت فائدہ ملتا، اور جب فضول بات اور لغول کا بیرحال ہو تو بھر کا ایرحال ہواس کا عالم کیا ہوگا ؟۔ بہرحال ملتا، اور جب فضول بات اور لغول کا بیرحال ہوگا گاہ ہوت کے جبرحال

''لا بعنی'' قول یا عمل وہ ہوتا ہے جس سے نہ ضرورت متعلق ہواور نہ ہی کوئی فائدہ وابستہ ہواس کا آسان ضابطہ بیہ ہے بیہ ہے کہ جس کے ترک میں ضرر نہ ہوبس وہ لا یعنی ہے۔امام نو وکٹ نے اس حدیث کی تحسین کی ہے۔

باب ماجاء في قلة الكلام

· (كم كوئى كابيان)

"ان احدكم ليتكلم بالكلمة من رضوان الله مايظن ان تبلُغ مابَلَغَت فيكتب الله له بهارضوانه الى يوم يلقاه وان احدكم ليتكلم بالكلمة من سَخَط الله مايظن ان تبلغ مابلغت فيكتب الله عليه بهاسَخَطَه الى يوم يلقاه". (حسن صحيح)

بِ فَكَ مَ مِن سے كوئى ايك الله كى خوشنودى كے مطابق بات كرتا ہے جس كاوه گمان بھى نہيں كرتا كہوه كہنچ كى وہاں جہاں تك وہ جا چى ہے لئى الله اس پراس كے لئے ملاقات (قيامت) كے دن تك اپنى رضامقدر فرمادية بيں اور بے فكت تم ميں سے كوئى ايك اليى بات كرتا ہے جوالله كى ناراضكى كاسب ہوتى ہو همان نہيں كرتا كہوہ اس مقام تك پنچ كى جہاں تك وہ كى ہے الله اس پراس كے لئے اپنى ناراضكى قيامت تك كھودية بيں۔

تشریخ: فوله: "مایطن ان تبلغ مابلغت" لینیاس که دیم وگمان میں بھی نہیں ہوگا که دو مبات میں اس قدرا چھی ہوگی یا دوسری صورت میں اس قدر بُری ہوگی ، اس سے معلوم ہوا کہ جزاء دسزاء کا دار دمدار عامل وقائل کے علم پرموتوف نہیں بلکہ قول وفعل کی اپنی ایک ماہیت وحقیقت ہے اس پرتر تب ہوتا ہے جزاء یاسزا کا۔

قوله: "المى يوم القيامة" لين المجى بات كى صورت ميں قيامت تك اس كے اعمال ميں بركت واضافہ موتار ہتاہے جيے كى نے كوئى المجھى بات كى مثلاً اس كے كہنے پرايك بادشاہ نے ملك كانظام عادلانہ بنايا اب وہ كہنے والاتو مركيا مكراس بات كے ثمرات اسے قيامت تك ملتے رہيں گے،اس كے برنكس اگركى كى بات پر بُرائى كى بنياد پر گئ تواس كے جانے كے بعد بھى اس بات كى خوست قيامت تك اس كا پيچھانبيں چھوڑ كے بات پر بُرائى كى بنياد پر گئ تواس كے جانے كے بعد بھى اس بات كى خوست قيامت تك اس كا پيچھانبيں چھوڑ كے بات پر بُرائى كى بنياد پر گئ تواس كے جانے كے بعد بھى اس بات كى خوست قيامت تك اس كا پيچھانبيں چھوڑ كے بات بر بُرائى كى بنياد پر گئى تواس كے جانے كے بعد بھى اس بات كى خوست قيامت تك اس كا پيچھانبيں جھوڑ كے بات بي بات كى بات كى بنياد بر گئى تواس كے جانے ہے بعد بھى اس بات كى خوست قيامت تك اس كا پيچھانبيں جھوڑ كے بات بي بات كى بنياد برگئى تواس كے جانے ہے بعد بھى اس بات كى خوست قيامت تك اس كا پيچھانبيں جھوڑ كے بات كى بات كى بنياد برگئى تواس كے بات بات كى ب

کتنے ایے لوگ گذرے ہیں جن کی باتوں ہے آج ہم متنفید ہورہے ہیں اور کتنے گلوکا راور شیطانی صفات کے حامل لوگ گذرے ہیں جن کی باتوں کا زہرآج بھی پھیل رہا ہے۔

باب ماجاء في هوان الدنياعلى الله

(الله كنزديك دنياكى بوقعتى كابيان)

"لوكانت الدنياتَعدِلُ عندالله جناح بعوضة ماسَقىٰ كافراً منهاشَربَةَ مَاء ". (صحيح فريب)

اگردنیااللہ کے یہاں مچھرکے پرکے برابر بھی ہوتی تواس سے کسی کا فرکوایک گھونٹ پانی کا بھی نہ پلاتے۔

تشریج: فیولد: "هوان" بوقعتی اور تقارت کو کہتے ہیں بینی اللہ کے نزدیک دنیا کی کوئی قدر نہیں حتیٰ کدا کر دنیا عنداللہ مچھر کے پر کے برابرومساوی بھی ہوتی تو پوری دنیا کیا بلکہ پانی کا ایک گھونٹ بھی کا فرکونہ دیتے حالانکہ پانی ایک عام سی چیز ہے اور اس کے ایک گھونٹ کی کوئی قدر نہیں۔

اس مدیث میں دنیا کی مثال مچھرکے پرکے ساتھ دینے کا مطلب تحقیرہے کیونکہ مچھرکا پرچھوٹا بھی ہوتا ہے اور بے وقعت بھی، مع ھذا جب ہم کا نتات میں کرہ ارض کا مواز نہ باتی اجرام فلکیہ کے ساتھ کرتے ہیں تو اس کی نسبت یقینا مچھرکے پرسے کم ہے ہاں البتہ جب دنیا کا ذکر آتا ہے تو بھی اس سے مراد دنیوی حیات ہوتی ہے اور بھی مال واسباب پراس کا اطلاق ہوتا ہے جو یہاں مراد ہیں، چونکہ دنیا کی حیثیت ایک پُل کی ہے اس لئے یہ وسیلہ اور ذریعہ آخرت تو ہے مگر بذات خوداس کی کوئی حیثیت نہیں ،خصوصاً آخرت کی نعتوں کے مقابلہ میں۔

حدیث آخر: حضرت مستورد بن شدادرضی الله عنه فرماتے ہیں کہ میں ان سواروں کے ساتھ تھا جو رکے بتے رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے ساتھ ایک بھیڑ (یا بکری) کے مرے ہوئے بیچے کے پاس ، پس رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کیاتم جانتے ہو کہ بیا پنے مالکوں کے ہاں بے وقعت ہے جب ہی تو انہوں نے بھینک ڈالا ہے؟ صحابہ نے عرض کیا (ہاں) اے الله کے رسول! انہوں نے اس کو بے قعتی کی وجہ سے ہی بھینک ڈالا ہے! آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ دنیا الله کے یہاں اس سے بھی زیادہ بے قدر ہے جتنا ہے اسکوں کے یہاں بے وقعت ہے۔ (حدیث حسن)

اس مدیث مین لفظ "سنحلة" بروزن خلة ہے بری یا بھیر کے بچے کو کہتے ہیں۔ صرف جدید تحقیق ہی

نہیں بلکہ زمانۂ غربت وجہالت میں بھی لوگ جانتے تھے کہ مراہواجانور کھانایا اپنے پاس رکھنا مفید ہی نہیں بلکہ مفرہے ای طرح جن لوگوں پراللہ نے حقیقت کو منکشف کیا ہے وہ جانتے ہیں کہ دنیا کی ماہیت کیا ہے؟ اگر چہ دنیا داراس پرایسے ٹوٹ پڑتے اور لیکتے ہیں جیسے کھیاں گندگی پر۔

صريث آخر: ـ "ان الدنياملعونة ،ملعون ما فيها إلّا ذكرالله وَمَا وَالَاه وعالم او متعلم". (حسن غريب)

بے شک دنیا ملعون ہے، جواس میں ہے وہ بھی ملعون ہے سوائے اللہ کے ذکر کے اوروہ جواللہ کو پہند ہے اور عالم وصحلم کے۔

ملعون بمعنی مبغوض کے ہے یعنی دنیا اور اس کی وہ تمام چیزیں جواللہ کی یادسے غافل کردینے والی ہیں اللہ کونا پیند ہیں 'والاہ'' بمعنی اُکٹہ لیعنی جو چیزیں واعمال وغیرہ اللہ کی طرف تھینچے اور قرب باری تعالیٰ کا ذریعہ بنتے ہیں وہ اللہ کو مجبوب ہیں بیاس صورت میں ہے جب اس کو' موالات' بمعنی دوسی ومجب سے لیاجائے اگر چہ بیاب مفاعلہ سے مجبت جانبین کو تقتفی ہے گر بھی بھی مفاعلہ وتفاعل وغیرہ ابواب میں یک طرف تعلی بھی مراد ہوتا ہے اور یہاں بھی بہی مطلب ہے لیعنی اللہ کو پیند ومجبوب ہونا۔ یا موالا ق بمعنی مقارب اور متالع کے ہے لیعنی جو چیزیں اللہ کے ذکر کی تالع اور مقارب ہیں وہ ملعون نہیں مثلاً علوم عربیت جتنے بھی ہیں اگر ان کو آن نہی اور دین کی سمجھ کی غرض سے پڑھا اور پڑھایا جائے تو بیقر آن کے تالع اور مقارب ہیں۔

قولہ: "عالم او متعلم" او بمعنی داؤہمی ہوسکتا ہے اور تنویع کے لئے بھی این ماجہ کی روایت میں سے دونوں منصوب آئے ہیں اور قاعدے کے مطابق وہی روایت اصح معلوم ہوتی ہے کیونکہ بیذ کر اللہ پرعطف ہے جو بوجہ استثناء منصوب ہے۔

عالم اور معلم کاذکر ماوالاه کے بعدان کی اہمیت اُجا گرکرنے کے لئے ہے کہ باتی لوگوں کا حال بے کار ساہے جہاں تک علاء کا تعلق ہے تو اللہ نے ان کی خیر کا ارادہ فر مایا ہے ' من یو داللہ ب حیر اَ یہ فَی قب ہ فی اللہ ین '' (بخاری جلد: اص: ۱۲) بہر حال معلوم ہوا کہ کسی چیز کا حسن وقتح اس سے متعلق غرض پر بنی ہے اگر کوئی عمل اللہ یہ تاہد کے قرب کا ذریعہ بنما ہے جیسے نیکی اور شرعی علم تو وہ اللہ کومجوب ہے جبکہ اللہ سے دور کرنے والا ہم مل اور ہر علم ملعون یعنی اللہ کو یہ وہ ساری دنیا والوں کی نظر میں محبوب ہی کیوں نہ ہو۔

اس بارے میں ضابطہ گذراہے کہ صحیح نیت وغرض کی وجہ سے مباح اور عادت کو بھی عبادت بنایا جاسکتا

ہے جبکہ غلط ارادے سے مباحات گناہ بن جاتے ہیں۔ فلیز کر

صديث آخر: - "ماالدنيافي الآخرة الامثل مايجعل احدكم اصبعه في اليم فلينظر بما ذا ترجع". (حسن صحيح)

آ خرت کے مقابلے میں دنیا بس الی ہے جیسے تم میں سے کوئی اپنی انگلی داخل کرے سمندر میں پھر دیکھے کہ وہ کتنے پانی کے ساتھ لوئتی (نکلتی) ہے۔

آج کل ماہرین نے حساب لگایا ہے کہ اگر ایک آدمی کی عمر سوسال پر شمتل ہوتو وہ قیامت کے پچاس ہزار سال کے مقابلہ میں صرف تین منٹ کے بقد رہنتی ہے ،اس میں بھی ایک منٹ بچپن کا ، دوسراسونے کا جبکہ تیسراجوانی کے جوش و بیداری کا مگر سوسال آج کس کو ملتے ہیں؟

بہر حال بیموازنہ تو قیامت کے دن کے ساتھ ہے جبکہ اس کے مابعد کی زندگی تو لامحدود ہے اس لئے کہاجائے گا کہ حدیث میں بیمثال نہیں بلکہ نظیر ہے اور تقریب الی الفہم کے لئے دی گئی ہے۔ یعنی جس طرح پانی کے ایک قطرہ کی سمندر کے مقابلہ میں کوئی حیثیت نہیں ایسائی دنیاو آخرت کا موازنہ فرض کیا جائے اور سمجھا جائے۔

باب ماجاء ان الدنياسجن المؤمن وجنة الكافر

(دنیامؤمن کی جیل اور کافر کی جنت ہے)

"الدنيا سجن المؤمن وجنة الكافر". (حسن صحيح)

دنیامؤمن کے لئے قیدفاند(کی ماند) ہے اور کافر کے لئے جنت (کی طرح) ہے

تشری : بیل میں آدی اپنی مرض سے جو کچھ چا ہے کرنے کا مجاز نہیں ہوتا بلکہ اس کے لئے محدود دائرہ ہوتا ہا کہ اس کے اندر رہنا پڑتا ہے ، بحثیت مسلمان ہرآدی کو دنیا میں اوامر دنوا ہی کے دائر میں محدود کر دیا جاتا ہے ، سارے محرمات شدید خواہش کے باوجود ممنوع ہوتے ہیں اور جس طرح بامشقت قید میں کام کاج بھی کرنا پڑتا ہے اسی طرح مؤمن پراحکام تکلیفیہ کابار بھی لدار ہتا ہے جوزندگی بھراس کے کندھوں پر پڑار ہتا ہے علاوہ ازیں بڑتا ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہوں کے کندھوں پر پڑار ہتا ہے علاوہ ازیں جیل میں دیگر مصائب کی بھی ہو چھاڑ ہوتی ہے مؤمن بھی ان مراحل سے گذرتا ہے خواہ وہ اس کے اختیار میں ہوں جیسے فقر اختیاری اور نقلی روزہ وغیر ہا۔

جب مؤمن مرتاہے توان مصائب وآلام سے آزاد ہوکر جنت میں ہرتنم کی خواہش پوری کرنے میں آزاد ہوجا تاہے جبکہ کا فرکا معاملہ اس کے بالکل برعکس ہوتا ہے۔

باب ماجاء مَثَلُ الدنيامَثَلُ اربعة نفر

(دنیا کی حالت، حارآ دمیوں کی حالت)

"للاث أقسم عليهن ، وأحَدِثكم حديثاً فاحفظوه اقال : مانقص مال عبدمن صدقة، ولاظُلِم عبدمظلمة صبرعليها إلازاده الله عِزّاً ، ولافتح عبد باب مسئلة الافتح الله عليه باب فقر الوكلمة نحوها، وأحَدِثكم حديثاً فاحفظوه افقال انما الدنيالاربعة نفر عبد رَزَقَه الله مالاً وعلماً فهويتقى رَبَّه فيه ويصل به رَحِمة ويعلم لله فيه حقاً فهذا بافضل المنازل ، وعبد رزقه الله علماً ولم يرزقه مالاً فهوصادق النية يقول لوان لى مالالعَمِلتُ بعمل فلان، فهو بنيته فَاجرُه ماسواء ، وعبدرزقه الله مالاً ولم يرزقه علماً ، يخبط فى ماله بغير علم لايتقى فيه ربه ولايصل فيه رَحِمَه ولا يعلم لله فيه حقافهو باخبث المنازل وعبد لم يرزقه الله مالا ولا علما فهو يقول: لوان لى مالا لَعَمِلتُ الله مالا ولا علما فهويقول: لوان لى مالاً لَعَمِلتُ فيه بعمل فلان فهو بنيته فَوزرُهما سواء ". (حسن صحيح)

رسول الله صلى الله عليه وسلم في فرما يا كه بين باتوں پرتتم كھا تا ہوں اورا يك حديثة م لوگوں سے بيان كرتا ہوں اس كويا در كھو! آپ صلى الله عليه وسلم في فرما يا كم نہيں ہواكسى بند كا مال صدقه دينے سے، اوركسى بند بركوئى (چھوٹى بردى زيادتى والا)ظلم نہيں كيا گيا اوراس في اس پرصبر كيا گرالله اس كى عزت ميں اضافه كرديتے ہيں داور نہيں كھولاكسى بنده في سوال كا دروازه گرالله اس پرفقر كا دروازه كھول ديتے ہيں يا سطر حكوئى بات فرمادى دريين مضمون يمى ہے اور الفاظ شايد بينہ ہوں) اور ايك حديث بيان كرتا ہوں اسے يا دكرو! پس آس سلى الله عليه وسلم في فرمايا: دنيا جا را قوروں كے درميان ہے:

(۱)اول وہ بندہ جس کواللہ نے مال اور علم دیا ہو پس وہ اس کے حوالے سے اللہ سے خوف کرتا ہے،
اور اس کے ذریعہ صلد رحی کرتا ہے اور اس کے بارے میں اللہ کاحق بھی جانتا ہے تو ایسافخض بہتر مرتبہ پر ہے۔
(۲)وم وہ بندہ جس کواللہ نے علم تو دیا ہے کین اسے مال نہیں دیا ہے پس وہ نیت میں سچا ہے (دل میں) کہتا ہے کہ اگر میرے پاس مال ہوتا تو میں بھی فلاں (امیروعالم) کی طرح عمل (خرچ) کرتا پس وہ خض

ا پی نیت کی وجہ سے ماجور ہے،ان دونوں کا اواب برابر ہے۔

(۳)سوم وہ بندہ جس کواللہ نے مال تو دیا ہے مرعلم نہیں دیا ہے وہ اپنامال بے علمی میں خراب کرتا ہے نہ تو اس کے بارے میں اللہ کا حق جانتا ہے نہ تو اس کے بارے میں اللہ کا حق جانتا (سمجھتا) ہے ہیں وہ مختص بُرے مقام برہے۔

(س).....چہارم وہ بندہ جس کواللہ نے نہ تو مال دیا ہے اور نہ ہی علم، پس وہ کہتا ہے اگر میرے پاس مال ہوتا تو میں بھی فلاں (مالدار جاہل) کی طرح عمل کرتا پس وہ اپنی نیت کے مطابق (گنہگار) ہے دونوں کا گناہ برابر ہے۔

تشريح: _قوله: "مظلمة" بفتح أميم وكسراللا مصدر بتوين تكيرك لي بــ

فوله: "عبد" چارول مقامات پرمجرور بین که نفرسے بدل ہیں۔ قبولیه: "ینحبط" بکسرالباءباب ضرب سے بمعنی روندنے ، سخت کیلئے کو کہتے ہیں یعنی بے سوچے ترجے کرتا ہے جہاں خواہش ہوئی وہاں خرج کردیا علم اورشر بعت کے نقاضوں کا خیال نہیں رکھتا۔

اس حدیث شریف میں انتہائی اہم ہا تیں فرمائی گئی ہیں ایک یہ کہ صدقہ کرنے ہے مال میں کمی نہیں آتی ہے ہا عتبار دنیا کے بھی سیح ہے کیونکہ تن آدمی کا ہاتھ بھی بھی بیبیوں سے خالی نہیں ہوتا اور باعتبار آخرت کے بھی سیح ہے کیونکہ تن آدمی کا ہاتھ بھی بھی بیبیوں سے خالی نہیں ہوتا اور باعتبار آخرت کے بھی سیح ہے کیونکہ جوصدقہ دیاجا تا ہے وہ در حقیقت کم اور ضائع نہیں ہوتا بلکہ دار آخرت کی طرف منتقل ہوجا تا ہے ہا ایسا ہے جیسے کوئی آدمی این مال کا مجھ حصہ بھی نفع بخش کاروبار میں لگائے جیسے آج کل لوگ بیکوں میں جمع کرانے کو گھٹن نہیں کہتے ہیں۔

دوسری بات یہ ہے کہ تجربہ شاہد ہے کہ جوکوئی بھی کی ذیادتی پرصبر کرتا ہے تواس سے اس کی عزت اور وقار میں اضافہ ہی ہوتا ہے۔ تیسری بات یہ ہے کہ تجربہ گواہ وناطق ہے کہ جوخص بھیک اور گدائی کاعمل شروع کرتا ہے تو زندگی بھروہ اس کو پیشہ اختیار کر کے دوسروں کے درواز ول پردستک دیتار ہتا ہے جی کہ مسجد میں بھی وہ اللہ سے ما تکنار ہتا ہے ، یہ با تیں اتنی تینی ہیں کہ ان پرآ پ علیہ السلام نے قتم کھائی ہے اور آج تک ان میں کوئی دوسر اپہلونظر نہیں آیا ہے۔ او کہ لمحہ نے وہا شک من الراوی کے لئے ہے جہاں ہوا در آج تک ان میں کوئی دوسر اپہلونظر نہیں آیا ہے۔ او کہ لمحہ نے وہا شک من الراوی کے لئے ہے جہاں تک مابعد حدیث کا تعلق ہے تو اس میں مجموعی طور پر چا راقسام کو بیان کیا گیا ہے اور تقریباً سارے افرادان میں مخصر ہیں ایک وہ جس کے پاس علم و مال دونوں کی دولت ہے اور وہ علم کے مقتضی پر چلتا ہوا مال کوخرچ کرتا ہے یہ مخصر ہیں ایک وہ جس کے پاس علم و مال دونوں کی دولت ہے اور وہ علم کے مقتضی پر چلتا ہوا مال کوخرچ کرتا ہے یہ

بے شک اچھابی آ دی ہے دوم وہ جوعالم توہے مگر مالدار نہیں تا ہم اس کا جذبہ پہلے والے مخف کی طرح ہے تواسے مھی صدق نبیت اور عزم کی وجہ سے پورا تواب ملتاہے۔

سوم وہ جو جائل اور مالدارہے وہ اپنامال خواہشات میں خرچ کرتا ہے اور جہالت کی بناء پراس کی وعید اور انجام بدسے نہیں ڈرتا ہے ای وجہ سے گئہگار ہوجاتا ہے۔ چہارم وہ ہے جوغریب بھی ہے اور جائل بھی، مگروہ باوجود غربت کے تیسرے آدمی کے مل پررشک کرتا ہے اور تمنی کرتا ہے کہ اگر مال ملاتو وہ بھی عیاشی کرے گاتو وہ اس حرص گناہ کی وجہ سے جائل مالدار کی طرح گئہگار ہوجاتا ہے۔

باب ماجاء في هَمِّ الدُّنياو حُبِّها

(دنیا کی فکر مندی اور محبت کے بیان میں)

"من نزلت به فاقة فَانزَلَهَابالناس لم تُسَدفاقته ومن نزلت به فاقة فانزلهابالله فوشك الله له برزق عاجل اواجل ". (حسن صحيح غريب)

آپ سلی الله علیه وسلم نے فرمایا: کہ جس کوفاقہ (فقر) پیش آئے اوروہ اسے لوگوں کے سامنے رکھ دے تو اس کا فاقہ بند (ختم) نہیں کیا جائےگا۔اور جس شخص کوفاقہ عارض ہوجائے اوروہ اس کواللہ کے حوالے کردے تو قریب ہے کہ اللہ اس کوجلدیا بدیررزق عطافر مادے۔

وا جل دونوں کاتعلق دنیاسے ہوتو پھرمطلب یہ ہے کہ یاجلدی دے کہ بغیر کمائے کسی ذریعہ کے اسے مالدار بنائے مثلاً وراشت کا ملنایا کسی اور ذریعہ سے اور آجل جیسے اس کی نوکری لگ جائے اور اس میں بچت شروع کردے یا تجارت وغیرہ یا اس کے بیٹے بڑے ہوکراس کی تسکین کا ذریعہ بن جا کیں۔

حدیث آخر: حضرت معاویرض الله عندابو باشم بن عتبدض الله عند جوکه بیار تھے کے پاس عیادت کی غرض سے تشریف لائے ،حضرت معاویہ کیے اے ماموں! آپ کو کیا چیز رُلاتی ہے؟ کوئی درد ہے جوآپ کواذیت دیتا ہے یا دنیا کی حرص؟ ابو ہاشم نے کہا ایسی کوئی بات نہیں البتہ رسول الله علیہ وسلم نے جھے سے عبد لیا تھا (یعنی وصیت فرمائی تھی) جو میں پورانہ کرسکا، آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا تھا: بس تمہیں مال جمع کرنے والے ایک خادم اورائیک سواری راو خدا کے لئے کافی ہے جب کہ میں آج اپنے آپ کو (اس سے زیادہ) مال جمع کرنے والا یا تا ہوں۔

تشرت: -ابوہاشم فتح مکہ کے دن اسلام لائے تھے گر پھرشام میں قیام پذیر ہوئے تھے، باب کا واقعہ وہیں پیش آیا، بیر صفرت معاویڈ کے ماموں تھے۔

قوله: "اَوَجع يشنزك" وجع دردكوكت بي اوريشير باب افعال عقاق كواورب جين و پريثان كردين كوكت بي ـ

قوله: "كىل لا"اى كل من هذين الاموين لايشئزنى لينى رونے كى وجدان دونوں ميں سے ايك بھى نہيں بلكہ اصل بات بہے كەآپ عليه السلام نے مجھے ايك وصيت فرمائى تھى جس پر ميں پورى طرح ممل نہ كرسكا، ابو ہاشم كانام شيبہ بن عتبہ بن رسيعہ ہے الكوكب الدرى ميں ہے كہ ان كى دفات كے بعدان كے پاس سولہ درا ہم شھ، تحفة الاحوذى ميں ہے كہ جب ان كى دفات كے بعدان كر كہ كى قيمت لگادى گئى تو وہ تميں درا ہم تك بننے ميا جس ميں ايك ده بيالہ بھى شامل تھا جس ميں آٹا گوندھا جاتا اور كھانا كھايا جاتا تھا۔ (بحوالدرزين)

مديث آخر: _ "لاتتُخِذُو االضيعة فترغبو افي الدنيا". (حسن)

" جا گیرمت بنا ؤورندد نیا ہی میں لگ جا ؤ کے۔"

ضیعہ مالداری کے ذرائع واسباب کو کہتے ہیں جیسے زمینداری اور باغات وباغبانی وغیرہ بیعنی کوئی بھی جائیدادخواہ زمین کی شکل میں ہویا جیسے آج کل مِلوںاور فیکٹر یوں کی صورت میں۔

حدیث کامطلب بیزبیں کہ معاش کا کوئی ذریعہ اختیار نہ کرو بلکہ معنی یہ ہیں کہ اپنے دنیوی مشاغل

اور کاروبارکوزیادہ مت پھیلا کو کیونکہ اس طرح تم اللہ کے ذکر اور آخرت کی فکر سے محروم ہوجا کو گیے تی تی تی تی تر بی شاہد ہے کہ جن لوگوں کا وسیح کاروبار ہوتا ہے وہ باتی ذکر واذکار کیا بلکہ نماز بھی نہیں پڑھتے الا ماشاء اللہ وقال ماہم، اور جب ان سے کہا جائے تو کہتے ہیں کیا کریں ٹائم بی نہیں مانا، ان کی نظر میں اپنے کام کی اہمیت نماز سے بھی زیادہ ہوتی ہے بہر حال دنیا آگر اللہ کے ذکر سے غافل کردینے والی ہے تو بید تمن ہے اور زہر آلود شہد ہے اس لئے عالم مثال کے قانون کے مطابق قبر میں آدمی پراڑ دھا مسلط کردیا جاتا ہے جو بظاہر خوشنما اور در حقیقت انہائی عالم مثال کے قانون کے مطابق قبر میں آدمی پراڑ دھا مسلط کردیا جاتا ہے جو بظاہر خوشنما اور در حقیقت انہائی المناک ہوتا ہے۔ لین آگر اسے مجھ طریقہ سے کمایا جائے اور شرعی طریقہ پرصرف کیا جائے لین آلدونت میں المناک ہوتا ہے۔ لیکن آگر اوگ اس میں کمی غیر شرعی امرکا ارتکاب نہ کیا جائے تو دنیا ہر گزندہ مونہیں بلکہ مروح بن جاتی ہے تا کہ خطرات سے بھینی طور پر بچا احتیا طرفی ہیں کرتے اس لئے شریعت میں اس سے نیخ کی ترغیب دی گئی ہے تا کہ خطرات سے بھینی طور پر بچا جائے بخرض مال میں سے حقوق اوا کرنے کے بعدوہ الیا ہوجاتا ہے جسے سانپ کا زہر نکال پھینکا جائے۔ ورندوہ جائے بخرض مال میں سے حقوق اوا کرنے کے بعدوہ الیا ہوجاتا ہے جسے سانپ کا زہر نکال پھینکا جائے۔ ورندوہ زہر یلا سانپ بن کرقیا مت میں اس کا طوق بنار ہے گا۔

102

آج کل لوگ فقر وفاقہ پر صبر نہیں کر سکتے ہیں اس لئے لوگوں کو نہدے اس معیار پر چلاناجس پر اسلاف گذر ہے ہیں ناممکن بلکہ خطر ناک ہے اور ''کا دائے فقر ان یکون کفر اُ' ایسے بی لوگوں کے لئے ہے جوایمانی حالت کے حوالہ سے کمزور ہوں اس لئے ہونا یہ چاہئے کہ خود بھی اور لوگوں کو فیجت ہیں بھی بیاصول اپنایا جائے کہ ونیا حاصل کرنے اور استعمال کرنے ہیں احتیاطی جائے ، چنانچ مشکلو قشریف میں اس کے لئے ایک جائے کہ ونیا حاصل کرنے اور استعمال کرنے میں احتیاطی جائے ، چنانچ مشکلو قشریف میں امام سفیان اُوری رحمہ باب بعنوان 'است حباب الممال و العمر للطاعة ''باندھا کیا ہے۔ اس کی فصل سوم میں امام سفیان اُوری رحمہ اللہ کا قول فقل کیا ہے:

"قال: كان المال فيمامَضىٰ يُكرَه فامااليوم فهوتُرس المؤمن وقال: لولاهذه المدنيالَة مَندَل بناهؤلاء الملوك ، وقال: من كان في يده من هذه شيء فليصلحه فانه زمان إن احتاج كان اول من يبذل دينه الخ". (ص: ٣٥١)

یعنی اسکے زمانہ میں مال معیوب سمجھاجاتا تھاجب کہ آج وہ مسلمان کی ڈھال ہے آگریدونیا (مالداری) نہ ہوتی تو بی تھران ہمیں پو نچھا بنا دیتے (یعنی اپنی ندموم غرض میں استعال کرتے اور تحقیر کرتے) اور فرمایا جس کے پاس کچھ مال ہوتو اس کی حفاظت کرے کیونکہ بیالیاز مانہ ہے کہ آگر مال کی ضرورت پڑے گی تو وہ سب سے پہلے ابنادین دنیا پر قربان کرے گا۔ آج ہم دیکھتے ہیں کہ بہت سے لوگ نوکری کی خاطر آغاخانی اور قادیانی وغیرہ بن جاتے ہیں والعیاذ باللہ، بہرحال اصل چیز اللہ کی اطاعت اور اس کا قرب حاصل کرنا ہے اس کے لئے اطمینان ، دلجمعی اور یکسوئی درکار ہے کسی کوغر بت میں عبادت کا زیادہ موقع ملتا ہے میام لوگوں کا حال ہے جب کہ بعض کو مالداری میں میں کیف نصیب ہوتا ہے۔
کیف نصیب ہوتا ہے۔

مدرس کے لئے بھی بیضابطہ ہے کوئی مدرس کم تخواہ میں سی کام کرتا ہے جب کہ بعض حصرات زیادہ تخواہ لئے کام کرتا ہے جب کہ بعض حصرات زیادہ تخواہ کے کراپنے کام کے لئے میکسوہ وجاتے ہیں ہرآ دمی اپنی حالت کے مطابق لائح عمل طے کرے۔

باب ماجاء في طول العمر للمؤمن

(مؤمن کی درازی عمر کی نضیلت)

"عن عبدالله بن قيس ان اعرابياً قال: يارسول الله امن خير الناس ؟قال: من طال عمرُه وحَسُنَ عَمَلُه". (حسن غريب)

ایک اعرابی نے پوچھا کہ اے اللہ کے رسول!لوگوں میں بہتر کون ہے؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایاوہ جس کی عمر دراز ،اور عمل اچھا ہو۔

نیک عمل پرآخرت میں بہت کچھ ملتا ہے اس لئے عمل جتنازیادہ ہوگا اُخروی تعتوں میں اس قدر اضافہ ہوگا اُلا یہ کہ اللہ عزوجل کسی کے تھوڑے سے عمل میں برکت دے۔اور کیٹر عمل کے لئے طویل مدت درکار ہے ،اس کے برعکس جس نے جتنے زیادہ گناہ کئے اس سے آخرت میں وبال پائے گااس لئے اگل حدیث میں بُر بے لوگوں کے بارے میں پوچھے گئے سوال پر فرمایا کہ بُر بے وہ ہیں جن کی عمر میں طویل اورا عمال بُر بے ہوں۔

باب ماجاء في اعمارهذه الامة مابين ستين الى سبعين

(اس امت کی عمر 60 تا 70 سال کے درمیان ہے۔) "محمر امتی من ستین سنة الی سبعین". (حسن غریب)

میری امت کی عمرسا ٹھتاسترسال ہے۔

یعنی عام طور پراوسط عمر سائھ ستر سال ہے کیونکہ زیادہ تر لوگ ساٹھ کی دہائی میں انتقال کرجاتے ہیں اگر چہ بعض لوگ ساٹھ سے پہلے اور بعض ستر کے بعد مرتے ہیں ،اسی طرح عمومی اقوام کی وندگیاں اتن ہیں بعنی اوسط ساٹھ ،ستر سال ورنہ بعض ممالک جیسے جاپان کے لوگوں کی عمریں اوسطاً ستر سے متجاوز ہوتی ہیں ،جبکہ افغانستان اور ہندوستان کے بعض علاقوں میں اوسط عمریں ساٹھ سے کم ہیں۔

حدیث کاسیاق اس بات کی تلقین ہے کہ ہرآ دمی کوسو چناچاہئے کہ وہ زیادہ عرصہ تک زندہ نہیں یہ اسکالہذاعملِ صالح کی کوشش نیز ترکردے۔

با ب ماجاء في تقارب الزمن وقصر الامكل

(زمانه کاسِمٹنا اورامید کا حچوٹا یا)

"عن انس بن مالك قال وسول الله صلى الله عليه وسلم: لاتقوم الساعة حتى التقارب الزمان ويكون السنة كالشهروالشهر كالجمعة وتكون الجمعة كاليوم ويكون اليوم كالساعة وتكون الساعة وتكون الساعة كالضَرَمَة بالنار". (غريب)

حضرت انس بن ما لک رضی الله عنه فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: قیامت قائم خبیں ہوگی یہاں تک کہ زمانہ کوتاہ ہوجائے گاچنانچہ ایک سال ایک ماہ کی مانند ہوجائے گااور مہینہ جمعہ کی طرح اور جمعہ ایک دن جیسا ہوگا اور ایک گھڑی (گھنٹے) جیسا گلے گااور ایک گھڑی آگ کی مجرک کی طرح ہوگی۔

تشری : قسو اله "ضرمة" بفتح الضادوسكون الراء بروزن رحمة اور راء كافتح بھی صحیح ہے يعنى بروزن رحمة آگ كاشعله جب بلند بوكر بُحم جائے ضرمه كہلاتا ہے ۔ زمانه كى رفآ رقو بميشہ ايك بى طرح جارى ہے كہيں بزاروں يا يستنكروں سالوں ميں ايك دوسينڈ كافرق آجاتا ہے اس لئے حديث كامطلب بينہيں كه زمانه كى بزاروں يا يستنكروں سالوں ميں ايك دوسينڈ كافرق آجاتا ہے اس لئے حديث كامطلب بينہيں كه زمانه كى موارتيز بوجائے كى پھركيا مطلب ہے؟ تو اس بارے ميں شروحات ميں متعددتو جيہات كى كئى ہيں جن ميں رائح دوبى ہيں ايك بير كمراد بركت كا الله جانا ہے كہ جوكام تھوڑى دير ميں بوسكتا ہے وہ گھنٹہ بحر ميں بوگا اور كھنٹے كا كام بورے دن ميں بوسكے كا، اس طرح دن كاكام جعہ ميں ، جمعے كا ايك ماہ ميں اور مهينہ كا پورے سال ميں چنا نچه

اسلاف نے جوکارتا ہے اپن حیات میں سرانجام دیتے ہیں آج کی لوگ مل کر بھی وہ کامنہیں کرسکتے ہیں وہ ایک بی دن میں ہزاروں احادیث یاد کرتے گرآج وہ کام سال میں بھی نہیں ہوسکتاوہ ایک دن میں ایک کتاب تصنیف کرتے جس سے آج لوگ قاصر ہیں تصنیف تو ہری بات ہے تالیف کے لئے بھی بہت وقت درکار ہے وکل ھذا القیاس ۔

دوسرامطلب میہ کے دنیاداری و مالداری بڑھے گی ادردین کا اہتمام کم یافتم ہوگا پس لوگ خرمستوں میں مصروف ہوں مے جن کی زندگی شکر اورنشہ کی حالت کی طرح گذرے گی جس میں وقت کا پہتے بھی نہیں چلے گا۔

باب ماجاء في قصرالامل

(کوتاہ امیدول کے بارے میں)

"عن ابن عمرقال اخذرسول الله صلى الله عليه وسلم ببعض جسدى قال كُن فى المدنيا كانك غريب اوعابرسبيل وَعُدَّنفسَكَ من اهل القبور، فقال لى: ابن عمرا اذا أصبحت فلا تُحدِّث نفسك بالصباح وخُذ من اصبحت فلا تحدِّث نفسك بالصباح وخُذ من صحتك قبل سَقَمِكَ ومن حياتك قبل موتك فانك لا تدرى ياعبدالله مااسمك غداً".

تشری: قوله: "ببعض جسدی"اس دوایت میں ابہام ہے جبکہ بخاری شریف میں "بِمنکبی" کی تقری ہے البذایہاں بھی کندھائی مرادہے جس کے پکڑنے سے مراد خاطب کی توجہ بات پرمرکوز کرنا ہوتی ہے۔قوله: "غویب "نامانوس اور پردلی کو کہتے ہیں۔ قوله: "عابو" عبورسے ہے بمعنی گذرنے کے "او عابو سبیل" میں اوکا لفظ شک کے لئے نہیں بلکہ تخیر کے لئے نہیں بلکہ تخیر کے لئے نہیں وتشد بدالدال عدی ہے جیسے جالس الحسن اوابن سیرین، یا بمعنی بل کے ہے۔قبوله: "عُدّ" بضم العین وتشد بدالدال عدّ یَعُدّ سے امرکا صیغہ ہے۔

قولد: "فیقال لی ابن عمد" اس میں دواخمال بیں ایک یہ کہ قال کا فاعل ابن عمر ہوعلی حد البن مرفوع موقل حد البن عرق مرفوع ہوگا اور اس کا قائل حضرت مجاہد ہوں کے پس مرفوع حدیث اہل القور پرختم ہوئی اور آ کے ابن عرق مجاهد کو هیجت فرمار ہے ہیں، بخاری کی روایت سے اس کی تائید بھی ہوتی ہے۔

دوسرااحمال بیہ کمی مرفوع حدیث کا حصہ ہواور پوری حدیث مرفوع ہوعلی جذاابن عمر میں ابن منادی مضاف کی وجہ سے منصوب پڑھا جائے گا اور حدیث کے آخری جملہ 'فانک لاتدری یا عبد الله '' سے اس کی تائید بھی ہورہی ہے۔واللہ اعلم

قوله: "مقمک" اس لفظ میں ضابطہ یہ ہے کہ اگرسین پرفتہ پڑھا جائے تو قاف کو بھی مفتوح پڑھا جائے گا جبکہ میں کے ضمہ کی صورت میں قاف کوساکن پڑھا جائے گا۔

حدیث کامطلب بالکل واضح ہے کہ دنیا میں دل لگا کراسے مستقل ٹھکانہ اور مقصد حیات نہیں بنانا چاہئے بلکہ ایک پردیسی کی طرح صرف عارضی ٹھکانہ افتیار کیا جائے گھرتر تی کر کے فرمایا کہ مسافر کی طرح بنا چاہئے جواگلی منزل طے کرنے کے لئے بچھ دیر کے لئے درخت کے پنچ استراحت کی غرض سے خمبرتا ہوا د جب پید خشک ہوجائے اور ٹاگوں میں جان آجائے تو پھرچل پڑتا ہے تا کہ منزل تک پہنچ جائے ، پھراس میں ترقی کر کے فرمایا کہ اپنے آپ کو قبروالوں میں ٹارکر ناچا ہے کہ کویاز ندگی نام کی چیزختم ہی ختم ہے اب میرامعاملہ اللہ کی عدالت میں ہے اور میں اس کے زویر و کھڑ اہوں ،اس لئے ایک دن بھرکی منصوبہ بندی بھی نہیں ہوئی چاہئے۔ اور صحت میں زیادہ میل کرے تا کہ بیاری میں ذاکد عبادت کا ثواب ملتارہے۔

یہاں یہ بات قابل ذکر ہے کہ نی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کی تعلیمات کے متعدد پہلو ہیں آپ علیہ السلام بحثیت استاذ خاطبین کی حالت کوجس طرح سجھتے اور تربیت فرماتے اس سے اچھا کوئ کرسکتا ہے بھی آپ صلی اللہ علیہ وسلم اجتماعی تعلیم دیتے اور بھی افرادی طور پر فردا فردا کوالگ الگ پیرایہ بی سمجھاتے ، بیاستاذک ذہانت ومہارت پر شخصر ہے کہ وہ ہر ہر شاگردکی صلاحیتوں کوکس طرح سجھ سکتا ہے ، اس لئے آپ علیہ السلام صحابہ کے افرادیس صلاحیتوں کو بھانپ کران کے مناسب حال تعلیم دیتے ، یہ نکتہ بہت سے مقامات میں کارآ مدہ اور

بہت سےاشکال کے حل میں معاون ومفید ہے۔

صديث آخر: - "هذاابن ادم وهذا اجله ووضع يده عند قفاه ثم بَسَطَها فقال وثَمَّ اَمَلُه وَثَمَّ اَمَلُه ". (حسن صحيح)

آنخضرت صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا بیآ دمی ہے اور بیاس کی اجل ہے اور اس کے ساتھ آپ صلی الله علیہ وسلم نے اپنا ہاتھ گردن پررکھ کر پھراسے (آگے کی طرف) پھیلا دیا اور فرمایا وہاں اس کی امید ہے، وہاں اس کی امید ہے۔ وہاں اس کی امید ہے۔ کی امید ہے۔

تشری - صدیت میں تمثیل و تشیبہ ہے کہ آدمی کی موت اس کے اتنی قریب ہوتی ہے جیسے یہ ہاتھ گردن سے کے قریب ہے شاید ' عند قفاہ '' کی تعبیر میں یہ اشارہ مقصود ہو کہ آ پ علیہ السلام نے ہاتھ مبارک کو گردن سے لگایانہ ہو بلکہ تھوڑ اسما فاصلہ گردن اور ہاتھ کے درمیا ن رکھا ہو یعنی موت آدمی پر ہروفت نگی تلوار کی طرح لئکتی اور سوار رہتی ہے اور کسی بھی وفت '' انشبت المنے المنے الطفاد ھا '' کا قضیہ صادق ہوسکتا ہے تو ایک طرف موت اپنی اجل سے کہیں زیادہ اور دور دور دور کی منصوبہ اپنے پنج گاڑنے کے لئے تھم کی منتظر ہے اور دوسری طرف آدمی اپنی اجل سے کہیں زیادہ اور دور دور کی منصوبہ بندیوں میں مصروف عمل رہتا ہے کہ موت گردن کے پاس ہے اور دنیوی احد اف وہاں دور ہیں جس کی طرف آپنی اجل سے اسلام نے ہاتھ کھیلا کر اشارہ فرمایا ہل کی خرنہیں سامان سوبرس کا۔

حدیث آخر: حضرت عبداللہ بن عمروبن العاص رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ آپ علیہ السلام ہمارے پاس سے گذر سے جبکہ ہم اپناایک چھپرہ درست کررہے تھے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا یہ کیا کررہے ہو؟ ہم نے عرض کیا کہ یہ ذرا ڈھیلا ہو گیا تھا تو ہم اسے تھیک یعنی ٹائٹ کررہے ہیں آپ علیہ السلام نے فرمایا کہ میں توامر (موت) کواس سے جلدتی (قبل) آتے دیکھر ہاہوں۔

اس صدیث میں'' نعالج ''بضم النون وکسراللا مجمعنی اصلاح کے ہےاصل میں عالَج کے کی معنی آتے ہیں از اں جملہ ایک انجام دہی اورحل نکالنا بھی آتے ہیں۔

قوله: "خُصّالنا" بضم الخاءوتشديدالصادلكرى يابانس كى جمونير كى يا چھيركو كہتے ہيں۔

قوله: "وَهيٰ" ، بمعنى ضعف يعنى سُست وكمزور موگيا ہے۔

قوله: "ماأدى الامرالع" بضم الهمرة تبعن اظن يعنى مين موت كواس جمونيرى كى وريانى سيقبل آنے والا تجھتا ہوں۔ صدیث کا مطلب ہے کہ آپ کے خیال میں طویل زندگی گذارنے کے لئے طویل المدتی رہائش گاہ کی ضرورت ہے اس لئے آپ اپنے گھروغیرہ کی مرمت میں لگے ہوئے ہو حالا نکہ آ دمی کویہ سوچنا چا ہے کہ موت اس کے بالکل قریب ہے لہذا کمبی المبی المبی کھنی چاہئے۔

پی بہاں صیغہ اگر چہ متکلم کا ہے مگر مراداس سے خاطب پرتعریض ہے کہ آپ کو اتن طویل امیر نہیں رکھنی چاہئے جیسے سورت بنس کی اس آیت' و مالی لااعبدالذی فطرنی ''میں صیغہ متکلم کا ہے مگر مقصود تعریض ہے دین 'مالکم لاتعبدون الذی فطر کم ''کیونکہ اس طرح وعظ ونصیحت زیادہ مؤثر ہوتی ہے۔ (ہذا صدیث صحیح)

باب ماجاء ان فتنة هذه الامة في المال

(اس امت كافتنه مال ميس ب)

"عن كعب بن عياض قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول:ان لكل امة فتنةً وفتنة امتى المال".(حسن صحيح غريب)

ہرامت کے لئے ایک فتنہ ہوتا ہے اور میری امت کا فتنہ مال ہے۔

تشری : قران پاک میں بھی ہے 'انسما امو الکہ و او لاد کم فتنة 'الایۃ۔شاہ و لی رحم اللہ نے اللہ اللہ میں لوگوں کے اقسام سے تفصیلاً بحث کی ہے جس کا خلاصہ یہ ہے کہ انسان کے اندردوشم کی تو تیں بین: (۱) ایک قوت ملکیہ (۲) دوم قوت بیمیہ ، چونکہ زیادہ ترلوگوں میں قوت بیمیہ کا غلبہ رہتا ہے اور زیادہ کھانے پینے سے اس کومزید فروغ بھی ماتا ہے اس لئے مال آنے کی صورت میں انسان عموماً قوت بیمیہ کے مقاضوں کو پورا کرنا اپنی ضرورت اور زندگی کا مقصد بچھنے لگتا ہے چونکہ مال کی فراوانی میں قوت بیمیہ کے تقاضی می بڑھ جاتے ہیں اس لئے فکر آخرت سے بے نیاز ہوکر آدمی عیاشی میں گھر جاتا ہے جس سے بڑا فتنہ کیا ہوسکتا ہے، برجہ صارح دوسری امتوں کے بہت سارے فتنے شے اس طرح اس امت کے فتنے بھی نیروے فتنہ کا ذکر ہے درنہ جس طرح دوسری امتوں کے بہت سارے فتنے شے اس طرح اس امت کے فتنے بھی زیادہ ہیں گر مال اکثر فتنوں کا دروازہ ہے اس لئے بطور خاص اس کا ذکر فرمایا۔

باب ماجاء لوكان لابن ادم واديان من مال لابتغيٰ ثالثاً

(اگرابن آ دم (آوی) کے پاس مال کی دوواد یال ہول تو وہ تیسری بھی طلب کریےگا)
"لوکان لابن آدم وادیاً من ذهب لاَحَبُ ان یکون له ثانیاً و لایملُافاه اِلاالتراب
ویتوب الله علی من تاب ". (حسن صحیح غریب)

اگراہن آ دم کے پاس سونے کی ایک دادی ہوتو وہ جا ہے گا کہ اس کے پاس دوسری بھی ہوا دراس کے مذکونیں بحر سکتی (کوئی چیز) سوائے مٹی کے اور اللہ رحم فرماتے ہیں اس شخص پر بھی جو بازرہے۔

تشری : شروع کتاب میں عرض کیا جاچکاہے کہ امام ترفدی اکثر و بیشتر تراجم فرکور فی الباب کی اصاد ہے سے جی اخذ کرتے ہیں اور شاذ ونا در بطورا سنباط بھی ذکر اصاد ہے سے جی اخذ کرتے ہیں اور شاذ ونا در بطورا سنباط بھی ذکر فرماتے ہیں چنانچہ یہاں باب کی حدیث میں صرف ایک وادی کا ذکر ہے اس لئے یا تو ترجمۃ الباب صحیحین کی اس صد ہے سے لیا گیا ہے جس میں وادیان کا لفظ ہے یا کہا جائے گا کہ انہوں نے حدیث کے معنی کی طرف اشارہ کرنے کے لئے بیتر جمدذ کرکیا ہے کہ حدیث الباب کو حصر پر محمول نہ کیا جائے بلکہ مراد سے کہ ابن آدم کی حرص اور ہوتی رہتی ہے وہ نہ ایک وادی پر اکتفا کرتا ہے اور نہ دواور تین وغیرہ بر۔

قدوله: "و لايملافا و الاالتواب" تراب عمرادقبرى في جاور لايملاالخ كناييم مسلسل حرص اور كوري الميملا الناييم المسلسل حرص اور حب مرجاتا جواس كا اور حب مرجاتا جواس كا مند بند موجاتا جوات المين مند بند موجاتا جوات المين مند بند موجاتا جواتا المين مند بند موجاتا جواتا المين مند بند موجاتا جواتا المين موجاتى جوجاتا المين موجاتى المين موجات المين المين موجات المين المين موجات المين المين المين موجات المين المي

قول الله الله الله الله الله عن من اشاره ہے كة دى اگر چا كيك طرف حُتِ دنيا كوليے پيدا ہوتا ہے گردوسرى طرف وہ اس محبت كے ازالہ پر مامور ہے اوراس كا ازالہ كوئى ناممكنات ميں سے نہيں كه تكليف بمالا يطاق لازم آجائے اس لئے جوشروع ہى ہے حب مال سے آبنا سينہ پاک د کھے گاوہ تو ہے ہى مرحوم گرجوكى حد تك جائے بعد ہوش فى ناخن لے كرا بنى ہوں كومزيد آ کے جانے سے دو كے اور كار كثر ہو مال كے بجائے فكر آخرت كى طرف رجوع كر ہے اور دنيا صرف ضرورت بحد كر حاصل كر ہے اور غلط آمد و خرج سے باز آجائے تو اللہ اس يہى رحم فرماتے ہيں۔ اس موضوع پر داقم نے نقش قدم ميں تفصيل سے كھا ہے۔

باب ماجاء قلب الشيخ شابّ على حُبّ اثنتين

(بوڑھے کادل دو چیزوں کی محبت میں جوان رہتاہے)

"قلب الشيخ شابّ على حُبِّ النتين طولِ الحياة وكثرة المال". (حسن صحيح) بورُ هِ فَض كادل دوچيزول (دوم) زياده بورُ هِ فض كادل دوچيزول (روم) زياده

ال۔

تشری : " دونوں بھر المحیاہ و کنو ہ الممال" دونوں بحرور پڑھنا بھی جائز ہے کہ افتین سے بدل ہیں اور فہر مبتدابنا کرمر فوع پڑھنا بھی صحیح ہے لیتن " همایا حداهماو فانیتهما " ، بوڑھے کے دل کی جوانی سے مراد، ہمت، دولی اور شوق ہے کہ جس طرح ایک جوانی شخص دراز کی عمراور کشر سے مال کو پند کرتا ہے کہ اس کے پش نظر کی خوفواہشات کی جمیل طوظ ہوتی ہے جوعراور مال پر موقوف ہوتی ہے اس طرح پوڑھا شخص باو جو دجسمانی ضعف وکم ہمتی اور موت کے قریب آنے کے ، زندگی کو طویل مدت تک جاری رکھنے میں پرعزم اور مال کی طلب میں سرگرم رہتا ہے ، چنا نچرسا مخص سال کے بوڑھے کو اگر کہاجائے کہ ایک لڑکی آپ سے شادی کرنا چا ہتی ہے گر تیری عمرزیادہ ہے جو تیری سفیدواڑھی سے معلوم ہوتی ہے قودہ کہتا ہے کہ میں تو ابھی جوان ہوں بیرداڑھی تو قبل از وقت سفید ہوئی ہے جو تیری سفیدواڑھی سے معلوم ہوتی ہے قودہ کہتا ہے کہ میں تو ابھی جوان ہوں بیرداڑھی کی محبت تو عام ت سفید ہوئی ہے چنا نچہ دہ اس کو کا لاکرتا ہے اور خود کو جوان بحوث کری تلاش کرتا رہتا ہے ،غرض آدی بات ہے اس طرح ریٹا ترمنے طفے کے بعد بھی ساٹھ سالہ پوڑھا پرائیو یے نوکری تلاش کرتا رہتا ہے ،غرض آدی بات ہے اس کو کا دائمن چھوڑنے کو تیا رئیس۔

اس مضمون کوباب کی اگلی صدیث میں یوں بیان کیاہے کہ آ دی بوڑھا ہوجا تا ہے اوراس کی دوخصلتیں جوان ہوجاتی ہیں (بعنی بدستورطاقت وررہتی ہیں) زندگی کی خواہش اور مال کی حرص ولا کچ _(حسن سیحے)

باب ماجاء في الزهادة في الدنيا

(ونیا (مال) میں دلچیسی ندر کھنا)

"الزهادة في الدنياليست بتحريم الحلال ولااضاعة المال ولكن الزهادة في الدنيا-ان لاتكون بمافي يديك اوثق ممافي يدالله وان تكون في ثواب المصيبة اذا انت أصبت بها ارغب فيها لوانها أبقيت لك. (غريب)

دنیا(مال) کے ترک رغبت کا مطلب بینہیں کہ کمی حلال کوجرام قرار دیا جائے یا مال کو ضائع کر دیا جائے بلکہ دنیا کا ترک رغبت بیہ ہے کہ تیرے ہاتھوں میں جو چیز (مال) ہے وہ اس چیز سے زیادہ قابل بھروسہ نہ موجواللہ کے قبضے میں ہے، اور یہ کہ تجھ پر کوئی مصیبت آن پڑے تو تم اس پر بوجہ کو اب زیادہ خوش ہو بمقابلہ اس کے کہ دہ تیرے لئے مؤخر کر دی جاتی (لینی وہ مصیبت آخرت تک مؤخر کر دی جاتی)۔

تشریخ: یعنی زہرکا مطلب یہ بہیں کہ آدمی دنیاسے بالکل الگ تھلگ ہوجائے کہ جنگل میں جاکر رہانیت اختیار کرے نہ مال کمائے اور نہ کھائے ہے ، نہ شادی کرے اور نہ لباس زیب تن کرے کیونکہ یہ تو شیطان کا دھوکہ ہے جو آدمی سے حلال چیزوں کو حرام کراتا ہے بلکہ زہدکا مطلب سے ہے کہ جب تیرے پاس کوئی مادی طاقت ہوجیسے زروز مین ، دوا اور بندوق وغیرہ تو ان پرپورااعتاد نہ ہوبلکہ یہ یقین ہوکہ اگر اللہ کا فیصلہ ان اسباب کے مسببات کے خلاف ہوتو یہ سب اسباب فیل ہوجا کیں گے نہ زروز مین کار آمہ ہوگی اور نہ ہی دوا اور بندوق پی کے درمیان کہ مسلمان اسباب تو اختیار کر لیتا ہے لیکن بندوق کی کھی کہ کہ کا فرکو اسباب پرناز ہوتا ہے۔

قوله: "وان تکون فی ثواب المصیبة اذاانت أصبت بها" بصیغه مجهول یعن جب تحمد پرکوئی مصیبت مسلط کردی جائے ۔اس جملے کے دومطلب ہو سکتے ہیں: ایک وہ جواو پرتر جمہ میں ظاہر کیا گیا ہے لیمی مصیبت کے وقت یہ و چنا چا ہے کہ مصیبت کا آنا تو تھا ہی یا دنیا میں یا پھر آخرت میں (جیسا کہ عام ضابطہ ہو اگر چہون لوگ اس ہے مستنی ہوتے ہیں کہ یا توان کی دنیا و آخرت دونوں پر بادہوتی ہیں یا دونوں بہتر ہوتی ہیں مرعموماً دنیا و آخرت مدمقابل ہیں اگر یہاں نعمت ملتی ہے تو وہاں سے کٹ جاتی ہے اور یہاں مصیبت ملتی ہے خار آلام وغیرہ کوئی بھی تکلیف ہتواس کے بدلے آخرت میں تواب ملتا ہے جبکہ یہاں کی پرتیش زندگی آخرت کی مصیبت کی تھنئی ہے) تو اچھا ہوا کہ دنیا میں آگئ ورند آخرت میں یہ صیبت و تکلیف آتی تو نا تا بل برداشت اور اللّٰد کی ناراضکی کا اثر ہوتا۔

دوسرامطلب بیہ کمصیبت کاباتی رہنا تیرے نزدیک ختم ہونے سے زیادہ محبوب ہو کیونکہ جب تک تکلیف جاری رہے گا، بظاہر پہلامطلب زیادہ اچھاہے۔ تکلیف جاری رہے گا، بظاہر پہلامطلب زیادہ اچھاہے۔ حدیث عثمان بن عفائ :۔ "لیٹس لابن ادم النے" یعنی آدمی کوان خصال (چاراشیاء) کے علاوہ

سی چیز میں (حصول کا)حق نہیں ایک گھر جس میں رہے اور کپڑا جواس کے ستر کو چھپائے ،اورخشک روٹی اور یانی۔(حدیث میح)

قوله: "جلف" بكسرائجيم وسكون اللام بروزن سدر ختك موثى روثى جوبغير سالن كے مواس كولام ك فته كے ساتھ پڑھنا بھى جائز ہے بروزنِ عنب روثى ركھنے كے ظرف كو كہتے ہيں تا ہم يہاں مراد مظروف يعنى روثى كا كلزاہے۔

حق سے مراد ضروریات زندگی بھی لے سکتے ہیں اوروہ اسباب بھی ہوسکتے ہیں جو جائز صورت میں حصول کے باوجود قیامت میں سوال کا موجب نہیں بنیں گے جبکہ ان سے زیادہ کے متعلق قیامت میں سوال ہوگا کہ کہاں سے کمایا؟ کیسے کمایا، کہاں خرچ کیا اور شکر کتنا کیا؟؟؟ وغیرہ

مطلب بیہ کہ مونا بیچا ہے کہ آدمی اقل قلیل پراکتفاء کرے تی کہ اگر بیچار چیزیں آدمی کوئیسر ہوں توان سے زیادہ کی تعب وطلاب میں لگنے کے بجائے عبادت میں لگنا چاہئے کیونکہ زیادہ کی تو حذبیں لہذا ابتدائی حدود سامان زندگی کو اپنا نا چاہئے ورنہ ساری زندگی دوڑ دھوپ میں گذر جائے گی اور پھر بھی احد اف حاصل نہیں ہوں گے، یہاں وہ ضابط محوظ رکھا جائے کہ آپ علیہ السلام صحابہ کی بطور خاص تربیت کرنا چاہئے اور جائے تھے فاہر ہے کہ ایسے اصول ہرا یک کے بس کی بات نہیں لہذا اہلِ دنیا کواعتر اض کا کوئی حق نہیں کہ زندگی کوئک بنادیا گیا۔ تد ہر

صدیث عبداللدین الجنجیر: دعرت مُطَرِ ف بیان کرتے ہیں کہ ان کے والد (عبداللہ بن فیخیر) بی صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس اس وقت پنچ جب آپ ملی اللہ علیہ وسلم المتحالات ان پڑھ رہے جے آپ ملی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا آدم زاد کہتا ہے کہ میرامال میرامال حالانکہ تیرامال تو صرف وہی ہے جو تو نے صدقہ کرکے روانہ کردیا (یعنی اللہ کے پاس) یا کھا کرفتا کردیا پہن کر کہ اناکر دیا۔ 'المها کے التحاثو' کا مطلب مشہور تفیر می کرمطابق یہ ہے کہ کم کو عافل بنادیا بہتا ہے اور یہ بھتا ہے کہ وہ مال ای کا ہے حالانکہ آدمی کا مال میں سے مطابق آدمی اپنے مال پراترا تا ہے اور یہ بھتا ہے کہ وہ مال ای کا ہے حالانکہ آدمی کا مال میں سے فقط اتنا حصہ ہوتا ہے کہ یا تو صدقہ کر کے اللہ کے یہاں بھیج دے یا جتنا کھا لے اور زیب تن کر کے ختم کردے، اس کے علاوہ جو پھے ہے وہ محض خوش فی میں جتلا کردیئے والا ہے لہذا اس سے دھو کر نہیں کھا نا چا ہے ''یہ حسب ان مالہ انحلدہ '' آدمی بھیتا ہے کہ وہ اور اس کا مال سَد ابا تی اور ساتھ رہیں گے ''کر نہیں وہ مال یہ بھیتا ہے کہ وہ اور اس کا مال سَد ابا تی اور ساتھ رہیں گے ''کر '' ہرگر نہیں وہ اللہ بھینا بھینا بھیتا ہے کہ وہ اور اس کا مال سَد ابا تی اور ساتھ رہیں گے ''کر '' ہرگر نہیں وہ مال یا بھینا بیچے مالہ انحلدہ '' آدمی بھیتا ہے کہ وہ اور اس کا مال سَد ابا تی اور ساتھ رہیں گے ''کر '' ہرگر نہیں وہ مال یہ بھیال بھینا بھینا بھینا بیچے

رہنے والا ہے۔ (ھذا حدیث حسن محج

حدیث افی امامة: -آپ علیه السلام نے فر مایا: اے ابن آدم! اگرتم زائد چیز خرج کرو گے تو یہ تیرے لئے بہتر ہوگا اور اگر اسے روکو گے تو تیرے لئے بُر ابوگا اور تیری ملامت نہیں کی جائے گی گذارہ کرنے پر ، اور خرج کرنے میں اس سے شروع کر جو تیری عیال داری میں ہے اور او پر کا (دینے والا) ہاتھ ، ینچے (لینے والے) سے بہتر ہے ۔ (حسن میح علی)

یعنی کاملین کوچاہئے کہ بقدر کفاف اور قوت لا یموت پراکتفاء کریں کیونکہ اتن قلیل مقدار کا آخرت میں حساب نہیں ہوگا جبکہ ذائد پرسوال وحساب ہوگالہذا حساب کی زحمت سے بچناچاہئے اگر چہ حقوق اواکرنے کے بعد مال جع کرنا جائز ہے مگر خطرناک بھی ہے لہذا خطرہ مول لینے سے بچنا ہی احتیاط ہے ،اور خرچ کرنے میں ضابطہ بیہ ہے کہ پہلے اپنے بچوں ، بیوی ، ماں باپ وغیرہ الاقرب فالاقرب جن کے نان نفتے کی ذمہ داری آدمی پر عائد ہوتی ہے کومقدم رکھے ایسا آدمی جودوسروں پر خرچ کرتا ہے دنیا وآخرت میں لینے والے سے افضل ہے لہذا آدمی کوافضل بنے کی کوشش کرنی جائے۔

صدیث عمر بن الخطاب :- "لمو انکم تو تحلون علی الله حق تو کله النے" آپ سلی الله علیه وسلم فرمایا اگرتم الله پراس کے شایان شان تو کل کرتے تو تم اس طرح رزق دیے جاتے جیسے پرندوں کودیا جاتا ہے کہ وہ صح خالی پید بعن بھو کے جاتے ہیں اور شام کو پیٹ جرے والی لوٹے ہیں - (حسن صح ح)

قول د: "نغدو" صح جانے کوغد وہ کہتے ہیں جبکہ تروح روحۃ سے بمعنی شام کو چلنے کو کہتے ہیں یہاں مرادشام کواپنے گونسلوں میں واپسی ہے۔ قولہ: "بیعماصاً" بروزن کتاب خمیص کی جمع ہے جبکہ بطان بھی کتاب کے وزن پر بطین کی جمع ہے جمعی البطن اس وقت کہتے ہیں جب پیٹ اندرکوہ وجائے لیمن خالی ہوجائے کنا یہ ہوک کی شدت سے جبکہ بطان اس کے برعکس پنیٹ کی عظمت اور بروصنے کے لئے آتا ہے مرادسیر ہونا اور بیٹ کا بحرجانا ہے۔ حاصیہ قوت میں بحوالہ امام ہیگی " کھا ہے کہ اس حدیث میں ترک اسباب پرکی طرح کی بیٹ کا بحرجانا ہے۔ حاصیہ قوت میں بحوالہ امام ہیگی " کھا ہے کہ اس حدیث میں ترک اسباب پرکی طرح کی دلالت نہیں ہوتی کیونکہ پرندوں کے ساتھ تشہید سے اسباب اختیار کرنے کی طرف اشارہ ہے البتہ آتی بات ضرور ہے کہ درزق کمانے کے لئے اتنا بے تاب نہیں ہونا چاہئے کہ اس کے لئے حرام ذریعوں کو استعمال میں لایا جائے ، نہوٹ کی پرواہ کرے اور زرکسی کی جن تافی کی پرواہ ہوبس صرف کمانے سے خرض ہووہ خواہ جیسا بھی ہو یہ خاط ہے، ہونا یہ چاہئے کہ آدمی پرندوں کی طرح شیح نظلے اور یقین رکھے کہ اللہ نے اس کے لئے جورزق مقرد کیا غلط ہے، ہونا یہ چاہئے کہ آدمی پرندوں کی طرح شیح نظلے اور یقین رکھے کہ اللہ نے اس کے لئے جورزق مقرد کیا غلط ہے، ہونا یہ چاہئے کہ آدمی پرندوں کی طرح شیح نظلے اور یقین رکھے کہ اللہ نے اس کے لئے جورزق مقرد کیا

ہے وہ اسے ضرور ملے گاوہ کوئی دوسر انہیں چھین سکتا اور جواس کارز قنہیں وہ اسے بھی بھی حاصل نہیں کرسکتا ،اس طرح وہ رز ق بھی باسانی حاصل کرے گا اور سکون سے اپنی عبادت کو بھی برونت کرسکے گا۔

169

حدیث الس : حضور صلی الله علیه وسلم کزمانه یس دو بھائی تضان میں سے ایک نی صلی الله علیه وسلم کے پاس آیا کرتا تھا اور دوسرا کام کاج میں لگار بتا تھا چنانچہ اس کاروباری بھائی نے نی صلی الله علیه وسلم سے ایک بھار بتا ہے) تو آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا کہ باور کرو تھے اس کی وجہ سے رفق ویا جاتا ہے۔

رفق ویا جاتا ہے۔

قوله: "يحتوف" جرفت سے جمعن اتھ كے ہنر، پيشاورعادت كة تا ہے يہال مطلق اسباب معاش اختيار كرنے كے معنى ميں جہ قوله: "لعلك" شارع كى كلام ميں جب بحل كالفظة جائے تو تردد وترجى كے معنى ميں نہيں آتا بلكہ بمعنى يقين كة تا ہے ہال اگر تربى خاطب كا عتبار سے ہوتو كھرمعنى تربى كا مجح بنا ہے اور ترجمہ يوں ہوگا كم اميدركھو۔

حدیث کامطلب ہے ہے کہ ان دو بھائیوں ہیں ہے ایک اپنے کارروزگار ہیں معروف رہتا اور دوسرا
آپ علیہ السلام کی خدمت ہیں علم ومعرفت حاصل کرنے کی غرض ہے آتا، دوسرے بھائی نے اس کی آپ صلی
الشعلیہ وسلم سے شکایت کی کہ میرے ساتھ تعاون تو کرتائیں اور خرچ ہیں مثلاً شریک رہتا ہے، آپ ملی الشعلیہ
وسلم کے جواب کا مقصد ہے کہ پچھ ایسے تخلی اسباب ہوتے ہیں جو فاہری اسباب سے زیادہ مغید ہوتے ہیں
لہذائم بین سجھوکہ تم جو پچھ کمارے ہووہ بس تیرے ہزادر کمال کا نتیجہ ہے بلکہ اللہ تبارک وتعالی تیرے بھائی کی
بہاں آمد کی وجہ سے تیرے کاروبار میں برکت ڈالآ ہے لہذائم اس کوائی کمائی تصور مت کروبہ تم دونوں کی
ہاں آمد کی وجہ سے تیرے کاروبار میں برکت ڈالآ ہے لہذائم اس کوائی کمائی تصور مت کروبہ تم دونوں کی
ہاں آمد کی وجہ سے تیرے کاروبار میں برکت ڈالآ ہے لہذائم اس کوائی کمائی تصور مت کروبہ تم دونوں کی
کامیاب نہیں ہوتے اس کے برعش مجمی ایک بی بھائی کما تا ہے اور باقی سب بھائی پڑھتے ہیں مگر ان
کامیاب نہیں ہوتے اس کے برعش مجمی ایک بی بھائی کما تا ہے اور باقی سب بھائی پڑھتے ہیں مگر ان

باب كى آخرى حديث: _حضرت مبيدالله بن محسن محافى فرمات بين كدرسول الله ملى الله عليه وسلم فرمايا: تم مين سے جوفض مج كواس حال مين الشے كدوه اپنے كمر مين محفوظ مواور جسمانى احتبار سے تكدرست موراس كے باس ایک دن كاخر چه موتو كوياس كے لئے دنيا سينى كئى ہے۔ (حسن غريب)

قوله: "وكانت له صحبة" چونك عبيدالله ين صحن كامحابيت مس اختلاف تماس لي امام ترفي ق

نے صحابی ہونے کی تصریح فرمادی اور بہی محقق قول ہے۔ قبولہ: "فیی سِسَوبه" پر لفظ ہروزن قربمعنی بیت اور گھر کے آتا ہے جواو پر ترجمہ میں لیا گیا ہے جبکہ بکسرالسین ہروزن سِد بہعنی نفس کے آتا ہے بعنی جوفارغ البال اور خوش حال ہو، اور عبدوشم کے وزن پر بہعنی راستے کے آتا ہے بناہر ہر تفقد سرمطلب بیہ ہے کہ وہ خض خوداوراپ خوش حال ہو، اور عبدوشم کے وزن پر بہعنی راستے کے آتا ہے بناہر ہر تفقد سرمطلب بیہ ہے کہ وہ خض خوداوراپ اہل وعیال کے ساتھ گھر میں اور باہر، ہر لحاظ سے بخوف ہونہ دیمن کا خطرہ ہواور نہ کوئی بیاری ہواور گھر میں اس دن کے کھانے پینے کی اشیاء بھی موجود ہوں تو بس بیابیا ہے جیسے اس کے لئے ساری و نیا کو جمع کردیا گیا ہے، کیونکہ جس کے پاس ساری دنیا ہوگی وہ بھی تو صرف اتنابی کھا سے گا جننا پیخض کھا تا ہے باتی تو خوش فہی اور افتخار کا سامان ہے عظمند کے زدیک دونوں میں کوئی معتد بفر ق نین جیسے ایک آدی کا وزن ساختھ کلو ہے اور دوسر کا کا دوسوکلو گرام، بظاہر دوسوکلو والا ایجا لگتا ہے گراسے اپنے جسم سے جتنا فائدہ پہنچ رہا ہے اس لاغرکا فائدہ جسمانی کا دوسوکلو گرام، بظاہر دوسوکلو والا ایجا لگتا ہے گراسے اپنے جسم سے جتنا فائدہ ہے سے مصافی کے میں بلہ شایدہ وزیادہ ایجا ہو۔ قولہ: "مُعَافَی" باب مفاعلہ سے اسم مفعول کا صیغہ ہے۔ اس سے کی طرح کم نہیں بلکہ شایدہ وزیادہ ایجا ہو۔ قولہ: "مُعَافَی" باب مفاعلہ سے اسم مفعول کا صیغہ ہے۔

باب ماجاء في الكفاف والصبرعليه

(کفایت و قناعت کے بیان میں)

"ان اَغبَطُ اوليائى عندى لَمؤمن خفيف الحاذذوحظٌ من الصلواة اَحسَنَ عبادة ربه وَاطَاعَه في السروكان غامضافى الناس لايُشاراليه بالاصابع وكان رزقه كفافاً فصبرعلى ذالك، ثم نقربيده فقال عُجِلت منيّته قَلّت بَوَاكِيه قَلّ تُراثُه ... وبهذاالاسناد...قال عَرَضَ خَلَى ربى لِيجعل لى بطحاءَ مكة ذهباً ،قلت: لايارب ولكن اَشبَعُ يوماً واجوع يومااوقال ثلاثاً اونسحوهذا فساذا جُعيتُ تضرّعتُ اليك وذكرتك واذاشبِعتُ شكرتُك وحمدتُكَ". (حسن)

آپعلیدالسلام نے فرمایا میرے دوستوں میں سب سے زیادہ قابل رشک میر بے زدیک وہ مؤمن ہے جوہلکی بار برداری والا ہونماز میں حصدر کھنے (ملا نے) والا ہون اپنے رب کی عبادت خوبی کے ساتھ کرنے والا ہون اور خلوت میں (بھی) اس کی اطاعت کرتا ہووہ لوگوں میں چھیا ہوا (غیر معروف) ہون اس کی طرف الگلیوں سے اشارہ نہ کیا جاتا ہو (یعنی کسی طرح شہرت کا حامل نہ ہو) اور اس کا رزق برابر سرابر ہواوروہ اس پر قناعت وصبر کرنے ، (یعنی اپنی گمنامی ، اور کفایت طعامی کی حالت پر صبر کرتا ہو) پھر آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک ہاتھ (کی

الگیوں) کو دوسرے ہاتھ (کی الگیوں) پر مارااوراس کے ساتھ فرمایا اس کی موت جلد ہی بھیج دی گئی ہو، اس پر رونے والی عورتیں کم ہوں اوراس کا متر و کہ مال بھی تھوڑ اسا ہوا ہی سند ذکور ہے آپ سلی اللہ علیہ و کلم کا بیار شاد بھی مروی ہے آپ سلی اللہ علیہ و کلم نے فرمایا میرے رب نے جھے پیش ش کردی کہ میرے لئے مکہ کی سرز مین کو سونا بناویں، میں نے عرض کیا اے میرے رب! ایسانہ کیجئے کیونکہ میں یہی پندکر تا ہوں کہ ایک دن سیر رہاکروں اور ایک دن جوکار ہوں (راوی کوشک ہے کہ ایک ون فرمایا یا تین دن) یا اس کی مانشہ بات فرمائی ، پس جب موج کے گئے تو تیری طرف کریے وزاری کروں اور جھے کویا دکروں اور جب سیر ہوجا و ان تو تیراشکر اداکروں اور تیم کے مرکروں۔

قولسه: "فی السر" عموانسوص میں ایبا بوتا ہے کہ بھی مقابل اشیاء میں سے ایک جانب کوذکر کیا جاتا ہے اور دوسری کوظا بر ہونے کی وجہ سے حذف کیا جاتا ہے جیسے "و مسر ابیل تقیکم الحر" حالانکہ لباس سردی سے بھی حفاظت اور بچاؤکا سامان ہے اس لئے تقدیر اس طرح ہے: "تیقیکم الحر و البرد" یہاں بھی مطلب یہ ہے کہ جیسے جلوۃ میں وہ عبادت گذار دہتا ہے توای طرح خلوت میں عبادت کرتا رہتا ہے کوئکہ صرف علانی عبادت کر بیر تی عبادت کے دیا دو کھا وے کی نشانی ہے جومفیز ہیں ۔قول ہ: "غامضاً" یعنی وہ معاشرہ میں دنیوی مقام ندر کھنے کی وجہ سے چھچا ہوا ہو کیونکہ لوگ تو مالدار کو یا دکر تے ہیں جبکہ غریب کوقابل ذکر نہیں سمجاجاتا ہے۔

قوله: "لایشاد الیه الخ" عامعاً کابیان ہے کیونکہ الدارآ دی جہاں سے گذرتا ہے لوگ اس کی طرف اشارہ کرتے ہیں کہ فلاں صاحب جارہا ہے جبکہ غریب کے گذرنے کا پیتہ بھی نہیں چاتا بہر حال بیکنا بیہ عدم شہرت سے یعنی شخص مشہور نہو۔

قوله: "قم نقربیده" جب سی چیز کی سرعت اشارے سے ظاہر کی جاتی ہے تو چکی بجائی جاتی ہے اور کھی دونوں ہاتھ کی انگلیاں یا ہتھیلیاں ایک دوسرے پر مارنے سے۔ یہاں دوسری صورت مراد ہے، اور مطلب سے کہاسے امکلے جملے یعنی سرعت موت کو سمجھانے کے لئے اشارے کے طور پر بجایا اور سرعت موت

سے مراد بیہ ہے کہ اس مخض کا دل ویسے بھی آخرت میں معلق تھا اس لئے جب موت آئی تو اس نے فوراً سینے سے لگادی پیمطلب نہیں کہ جوانی میں جلدی انقال کرگیا، (تدبر) بخلاف مالدار کے کہ عموماً اس کی جان اگر چہ سفرآ خرت کے وقت بستر مرگ یر، پرواز تو کررہی ہوتی ہے مگروہ اپنی دنیوی دولت، گاڑیوں، حسین وجمیل عورتوں اورکوشیوں میں بھنسی رہتی ہے اس لئے بدن سے نکلنے کوگوارانہیں کرتی ،یامطلب یہ ہے کہ لوگوں کوغریب کی بیاری کاعلم نہیں ہوتا وہ اس کی موت کواچا نک سجھتے ہیں ہاں البتہ بداعز از اس غریب کوحاصل ہے جواپنی حالت کذائی پرصبر کرے در ندوادیلا کرنے والاتو فیل درامتحان ہوجا تا ہے،اس کی غربت قابل رشک نہیں ہے۔

147

پھر جب وہ خص مرتا ہے تو اس پررونے والی زیادہ عورتیں بھی نہیں ہوتیں کیونکہ عورتیں تو مالداروں ہے رشنة اورتعلق جوزتی بین اوراس کی موت کوهیقی صدمتهجمتی بین غریب جوعمو مآلوگون اورخصوصاً عورتون کی نظرون میں بے کا رہوتا ہے اس کی موت اس قابل نہیں ہوتی کہ وہاں جمع ہوکر مصیبت کا اظہار کیا جائے۔

قولسه: "تراثه" بضم الآءاس مين تاءوادك بدلين آئى بقر آن مين ب: "وتساكلون السواث الحلاكك كمة " (الفجرآيت: ١٩) موت كے بعد جومال ومتاع وغيره ربتا ہے اسے ميراث اورثراث كہتے

قوله: "عرض على" يعنى محصافتيارد دوياكة باي توبطاء كميعنى يور عكمكويا كمدك شکریزوں اور چٹانوں کوسونا بنا کرآ ہے کو اس کا ما لک بنا دوں، میں نے کہانہیں میں مادی دولت کے بجائے غربت اختیار کرتا ہوں تا کہ نعت کی قدر معلوم ہواوراس پرشکر گذار رہوں اور بیت ہی ہوتا ہے جب بھوک گئے اوررزق کی طلب پیدا ہو، طلب کے لئے میں دعا مانگوں اور ملنے پر تیراشکرادا کروں _معلوم ہوا کہ فقراختیاری مع الصمر مالداری ہے افضل ہے۔

صديث ابن عمر: - "قدافلح من اسلم ورُزِق كفافاً وقنّعه الله ". (حسن صحيح) يقيناً وهخض كامياب رباجس كوبرا برسرا بررزق ديا كيااورالله في اسياس برقا نع بنايا السامخص جسے یقین ہوکہ اس کے مقدررزق سے زیادہ نہیں مل سکتان لئے وہ کم پر بھی صبر کرتا ہے، زیادہ کے لئے نہیں تر پااوراین حا دراور بساط کے مطابق پیر پھیلا کرعبادت میں لگار ہتا ہے بقینا یہ برافخص ہے بشرطيكه وه انقتيا دوحكم الهي كى فرما نبرداري كرتا هو_

حديث فَصَالة بن عبيد :-اس كامضمون بهي ابن عمر كى حديث كمطابق بالبته يهال فلاح كى

جگہ طوبیٰ یعنی خوش خری کا ذکر ہے کہ بقدر کفاف رزق والے صابر کے لئے خوش خبری ہے یعنی رضائے اللی، کامیابی اور جنت کی۔ (حدیث صحح)

141

با ب ماجاء في فضل الفقر

(غربت كى فضيلت كابيان)

"عن عبدالله مُعَفَّل قال قال رجل للنبي صلى الله عليه وسلم : يارسول الله او الله انى الأحبُّك فقال: أنظر ماتقول، قال والله انى لاحبك ثلاث مَرَّاتٍ، قال : إن كنتَ تُحِبَّني فَاعِدُ للفقر تِجفافاً فان الفقر اسرع إلىٰ مَن يُحِبُّني من السَيل إلىٰ مُنتهاه". (حسن غريب)

ایک شخص نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے کہاا ہے اللہ کے رسول بخدا میں آپ سے مجت کرتا ہوں تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم سے کہاا ہے اللہ کے رسول بخدا میں آپ سے محبت کرتا ہوں تا اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اس مجھ کے جوں اس نے تین بارکہا کہ بخدا میں آپ سے محبت کرتے ہوتو فقر کے لئے جھول تیار دکھو کیونکہ فقر مجھ سے محبت کرتے ہوتو فقر کے لئے جھول تیار دکھو کیونکہ فقر مجھ سے محبت کرنے والے کی طرف سیلاب سے جوانی انتہاء کی طرف بردھتا ہے ذیادہ جلدی دوڑتا ہے۔

تشری :۔ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم سے محبت کرنے والے توسارے اہل ایمان ہیں مگر مع فرقِ مراتب کے ساتھ یہاں محانی کے دعوے کا مقصد فرطِ محبت یعنی شدید جا ہت مراد ہے۔

قولیہ: 'تعجفافاً'' کبسرالیاءوسکون الجیم بروزن مقاح زرہ کی طرح ایک جال ہوتا ہے جولڑ ائی کے وقت گھوڑ ہے کو پہنا تے ہیں تا کہ دشمن کے وارسے محفوظ ہوار دومیں اس کو چھول کہا جاتا ہے۔

آپ سلی اللہ علیہ وسلم کے جواب کا مقصد رہے کہ تیرے دعویٰ کے مطابق اب تجھ پرفقر کا بحران آئے گا اس کی رفتار وشدت سیل رواں سے بھی زیادہ ہوگی اگرتم اس کے لئے تیار ہوتو فقر سے لڑائی جیتنے کے لئے جھول تیار کر کے رکھو کہ ایسانہ ہو کہ اس کے اچا تک حملہ سے شکست کھالو۔

اس مدیث سے نقر اختیاری کی فینی مع شکرگذاری پرفضیلت معلوم ہوئی اگر چدا یسے غنی جواپنامال طاعات میں خرج کرتا ہے کے بھی بہت سے فضائل ہیں ذکو ق ، قح وغیرہ بہت سارے امور خیر کا حصول مال پر بنی ہے مگر آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا ذاتی عمل ، فقراختیار کرنے کار ہاہے جیسے سابقہ باب میں گذراہے اس لئے کہاجائے گا کہ فقراختیاری مالداری سے افضل ہے اگر چہ آج لوگوں کواس کی زیادہ ترغیب دینانہیں چاہے کہ

عام اوك "كادالفقوان يكون كفراً"كزمر عين آت بير والداعلم وعلمه اتم واحكم راكرچ "كادالفقر" والى حديث ضعيف ب-

باب جاء ان فقراء المهاجرين يدخلون الجنة

قبل اغنياء هم

(غریب مہاجر، مالدارمہاجروں سے پہلے جنت میں جائیں گے)

"عن ابى سعيد قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: فقرآء المهاجرين يدخلون الجنةقبل اغنيائهم بخمس مائة عام". (حسن غريب)

فقیرمہاجرین امیرمہاجروں سے پانچ سوسال قبل جنت میں داخل ہوں گے۔

تشری : پیچے عرض کیا جاچکا ہے کہ جس سے دنیا میں کوئی نعت روک دی جاتی ہے تو اس کے بدلہ میں عُقٰیٰ میں نعت ملتی ہے وبالعکس چونکہ فقراء دنیا میں بہت ساری نعتوں کو دیکھ کرحصول کے لئے ترسے ہیں جبکہ اغنیاء بآسانی ان تک رسائی حاصل کر لیتے ہیں اس لئے آخرت میں نقراء کو جنت کی خوشبوسو تکھنے اور منظر دیکھنے کے بعد زیادہ انتظار اور ترزیخ کی زحمت نہیں اٹھا نا پڑے گی جبکہ اغنیاء ان کے مقابلہ میں اپنے حساب و کتاب کی وجہ سے اور پچھ دنیوی نعتوں کے حصول کے بدلے میں پچھ عرصہ انتظار کر کے پھر داخل ہوں گے تا ہم ہیدت تعددر دایات میں مختلف آئی ہے۔ باب کی تین احادیث میں پانچ سوسال کا ذکر ہے جبکہ دو میں چالیس کا۔

یفرق نقراء کے مراتب کی بناء پرہے کیونکہ بعض نقراء کا فقرطویل صبر آزما ہوتا ہے اوراس کا حامل اپنے معاشرہ میں ذلیل سمجما جاتا ہے اس کے برنکس بعض نقراء کا نقرزیا دہ تکلیف دو نہیں ہوتا کیونکہ وہ نقیر ہونے کے باوجود معاشرہ میں قدر کی نگاہ سے دیکھے جاتے ہیں۔

البتہ بیتصوریکا ایک رخ ہے تصوریکا دوسرارخ بیہ کے اغنیاء میں سے وہ لوگ جواللہ کاشکرادا کرتے ہیں اور مال خرچ کرکے نیکیوں میں اضافہ کرتے رہتے ہیں وہ اگر چہ میدان محشر میں وقت نسبتا زیادہ گذاردیں سے مگر جنت میں داخل ہونے کے بعدا پنے اعمال خیرات ،صدقات ودیگر تیم عامات کی وجہ سے او نیچ مقامات پرفائز ہوں گے "ذالک فضل الله یؤتیه من یشآء "۔

غرض ہررنگ کی اپنی اپنی خصوصیت وشرافت ہے اس لئے آپ علیہ السلام کی حیاۃ طیبہ میں دونوں رنگ نظرآتے ہیں مجھی پیٹ پر پھر باندھنے کی نوبت آتی اور بھی بحرین وغیرہ اکناف واطراف سے آیا ہوا مال اتناخرج فرماتے کہ اس کا کوئی حساب نہیں ہوتا بلکہ جو جتنا لے جانا چاہتاوہ اس میں کمل باختیار ہوتا۔حضرت عباس نے چا دراتی بحردی کہ اٹھانہ سکے۔

حدیث انس : رسول الله صلی الله علیه وسلم نے اپنی دعا میں فرمایا: اے اللہ! مجھے مسکین (متواضع)
رہنے کی زندگی عطا کردیں اورموت مسکنت کی حالت میں دیں ،اور قیامت کے دن مساکین کی جماعت میں
میراحشر فرمادیں، پس حضرت عائش نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! ایسا کیوں؟ آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا
اس لئے کہ فقراء جنت میں چالیس سال اغنیاء سے پہلے داخل ہوں گے، اے عائش اسمکین کو خالی مت لوٹا خواہ
اسے مجود کا ایک فکڑائی کیوں نہ دینا پڑے، اے عائش خریوں سے محبت کرواوران کو اپنے قریب بٹھا دیا کرو
(یعنی جب حدیث بیان کروتو ان کو آگے بٹھا کی) اس پراللہ کھنے قیامت کے دن اپنا قرب عطاء فرما کیں گے۔

ابن جوزی رحماللہ نے اس صدیث کوموضوعات میں شار کیا ہے جیسا کہ حاهید قوت میں ہے حافظ نے بھی ' تلخیص' میں اسے ضعیف ما نا ہے۔ (کما فی التحقة) بصورت صحت مسکین سے مراد متواضع ہے اس طرح ان احادیث سے تعارض نہیں آئے گاجن میں آپ علیہ السلام نے نقرسے پناہ ما تی ہے ، غرض مسکنت الگ چیز ہے اور فقر الگ ، فقیر تو غریب ہی کو کہتے ہیں جبکہ مسکین مجھی ہمتی متواضع بھی آتا ہے ابن تُحنیه نے '' تاویل مختلف الحدیث' میں کھھا ہے:

"ومعنى السمسكنه في قوله "احشرني مسكينا"التواضع والإخبات كانه سأل الله تعالى ان لا يجعله من الجبّارين والمتكبرين ولا يحشره في زمرتهم الخ . (ص: 100)

اس میں مزید تفصیل اور دلیل بھی ہے۔ حافظ ابن جڑ نے المخیص میں یون تطبیق دی ہے کہ آپ سلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی من بھر سے بناہ ما تکی ہے وہ قلبی نقر ہے کیونکہ غناوفقر قلبی بھی ہوتے ہیں قلبی نقریہ ہوتا ہے کہ آ دی کاول مال کی محبت اور جمع میں لگ جائے یہ بہت بڑا عیب ہے مال کا آنا عیب نہیں ہے۔ کے قلبی نقر اللہ کی یا دسے عافل کر دیتا ہے نہ کہ خلا ہری حال غرض فکر معاد میں ہر معاون چیز ، غافل کر دیتے والی سے افضل ہے۔

با ب ماجاء فی معیشة النبی عَلَّاتِهُ و اهله (نبی صلی الله علیه و اهله در نبی صلی الله علیه و الم الله علیه و الله و الله

"عن مسروق قال دخلت على عائشة فدعت لى بطعام وقالت ـ: مااَشبَعُ من طعام فَا الله على على عائشاءُ أن اَبُكِى إلابكيتُ قال قلت: لِمَ؟قالت: اَذكرُ الحال التي فارق عليهارسول الله صلى الله عليه وسلم الدنياو اللهِ ماشَبِعَ من خبزولحم مرتين في يوم". (حسن) اخرجه مسلم

حضرت مسروق فرماتے ہیں کہ میں حضرت عائشہ (رضی اللہ عنہا) کے بیہاں واخل ہوا تو انہوں نے میر بے لئے کھانا منگایا اور فرمانے گئیں کہ میں جب بھی پیٹ بھر کر کھانا کھاتی ہوں اور رونا چا ہتی ہوں تو رو پڑوں، مسروق کہتے ہیں کہ میں نے پوچھاالیا کیوں؟ فرمانے لگیں مجھے وہ حالت یا دآتی ہے جس میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم دنیا سے جدا ہوئے ہیں ، بخد ا آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک دن میں دومر تبہ سیر ہوکرروثی اور گوشت نہیں کھایا ہے۔

تشریخ: حضرت عائشرضی الله عنها کی اس صدیث کا مطلب بیہ ہے کہ میں جب بورا کھانا کھاتی ہوں تو مجھے آپ علیہ السلام کی حالت یا داتی ہے ادراس کے ساتھ مجھے رونا بھی آتا ہے اگر میں چا ہوں کہ رونے لگوں اور دنا ضبط نہ کروں تو میں یقینارونے لگوں مگر میں رونے کوضبط کرتی ہوں اور نہیں روتی۔

حفرت عائشرضی الله عنها کی اس حدیث کا آخری کلز ابظا ہر حفرت جابرض الله عنه کی حدیث سے معارض ہے جو 'نساب فی توک الوضوء مماغیرت الناد '' میں گذری ہے اور شائل میں بھی آرہی ہے کہ ایک انصاد یعورت نے آپ علیہ السلام کی دعوت کی آپ نے ظہر کی نماز سے پہلے ذرج شدہ بحری کا گوشت کھایا پھر نماز کے بعدوالیسی پر بچاہوا گوشت پھر خدمت عالیہ میں پیش کیا گیا آپ علیہ السلام نے اس سے تناول فر مایا پھر عمر کی نماز پڑھی۔

اس کا ایک جواب میہ کہ حضرت عائشہ ملی حدیث باب میں آپ علیہ السلام کے گھر کے حال کا بیان ہے جبکہ حضرت جا بھی کہ حضرت عائشہ ملی حدیث بالگ الگ ہے ، یا پھر حضرت عائشہ کی میں موسکتا ہے کہ آپ علیہ السلام نے اس بکری کے گوشت میں دوبارہ تھوڑ اسا تناول فر ما یا ہولہذا ایک دن میں دو ذوہ شکم سیری ٹابت نہیں ہوئی۔

پرحضورصلی الله علیه وسلم کای فقرافتیاری تھا آپ علیه السلام کے پاس جو پھھ آتا آپ صلی الله علیه وسلم اسے بطورایثارد وسرول کوعطاء فرماتے: ''والسک مسال فسی الایشار لان العبادة بالاختیار اولیٰ من الاضطواد''۔ (تدبر)

اور یہی وجہ ہے کہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم کے گھر میں لگا تاریے دریے دو تین دنوں تک کھانے کا انتظام نہیں ہوتا تھا جیسا کہ باب کی دوسری اور تیسری حدیث میں ہے۔

قولد: "قباعاً" بروزن كتاب كامطلب بدرب ب، پر جب كهانا بكا تفاتوه و بهى صرف اتنابوتا تقاكداس سے پختانبیں تقاگویا صرف بقدر كفاف ہوتا تھا، بلكہ بھی تو نوبت بہاں تك پنچی كه كئ كئ دنوں تك گھر میں كھانے كو پچھنیں ملتا حالانكدان كاعام كھانا جوكی روٹی تقی گرآپ صلی الله عليه وسلم اورآپ كے گھروالے خالی پیٹ سوجاتے اور رات كا كھانانہیں ہوتا تھا۔ "طاویا" كے معنی جا تعابموكا اور خالی پیٹ كے ہیں۔

اوربیحالت کوئی اضطراری بھی نہیں تھی اور نہ ہی اس پرناراضکی ہوتی بلکہ آپ فرمائے: ''اللّہم اجعل رزق ال مسحم حدق و تا'' قوت اس کو کہتے ہیں کہ عبادت پر قدرت کے بفتر رکھانا ملے اور بہت زیادہ نہ ہویہ دراصل معتدل حالت اور درمیاندراستہ ہے کہ نہ تو آدمی بھوک سے اتنا کمزور ہو کہ عبادت بھی نہ کر سکے اور حقوق بھی ادانہ کر سکے اور خوق بھی اور نہ ہی اتنا زیادہ کھائے کہ مالک سے نظر ہٹ جائے۔

"عن انس" قال كان النبي صلى الله عليه وسلم لايدّخرشيئاً لغد"

آپ سلی اللہ علیہ وسلم کل کے لئے کوئی چیز ذخیرہ نہیں کرتے تھے، یعنی اپنی ذات کے دنیوی فائد کے لئے کسی چیز کارکھنا آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی عادت نہیں، جہاں تک کپڑوں، سواری اور ہتھیار کاتعلق ہے تو وہ دین کی خاطر رکھتے تھے اور جب دینی ضرورت نہ رہی تو ان کے بارے میں فرمایا کہ ہماری کوئی میراث نہیں یہ سب صدقہ ہے، البتہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم از واج مطہرات کے لئے نتو حات کے بعد سال بحرکا نفقہ بطور تملیک دیتے تو کو یا بطور ذاتی ملک کے ذاتی فائدہ کے لئے کوئی چیز نہیں رکھتے البتہ بطور تملیک یا بیت عبادت رکھنا خابت ہے لہذا روایات میں کسی طرح تعارض نہیں پھر جونفقہ از واج مطہرات کا ہوتا وہ بھی مہمانوں کی آمد یا بعجہ تقد تی کسال سے پہلے پہلے جتم ہوجاتا اور سال کے اخیر میں فاقوں کی نوبت آجاتی ۔ اس باب میں حضرت انس کی دوسری حدیث تر ذری شریف جلد دوم کے بالکل شروع باب میں گذری ہے ترجہ ومطلب وہاں دکھے انس کی دوسری حدیث تر ذری شریف جلد دوم کے بالکل شروع باب میں گذری ہے ترجہ ومطلب وہاں دکھے

حدیث آخر: حضرت بهل بن سعد ہے پوچھا گیا، کیارسول الدُصلی الله علیہ وسلم نے تق یعنی باریک پہاہوا آٹا (میدے کی روٹی کو) کھایا ہے؟ انہوں نے کہا کہ آپ صلی الله علیہ وسلم نے وفات تک دیکھا بھی نہیں ہے ، کہا آپ کے پاس چھلنیاں ہوتی تھیں؟ فرمایا نہیں تھیں پوچھا گیا پھر آپ لوگ جو کے ساتھ کیا کرتے تھے (یعنی اس میں تو موٹی موٹی ہوتی ہے) فرمایا بس بھو نکتے تو اس سے اڑنے والی چیز (بھوی) اڑجاتی پھر ماقی میں یانی ڈال کر کوندھ لیتے۔

قوله: "نقى" بروزن غنى جو تحلكے سے صاف ہو چونكه زیادہ بار یک پینے سے چھلكاختم ہوجاتا ہے اس لئے اس كى تفسير حوارى لیعنی میدہ سے كى گئى اس سے مرادگندم كا آٹالیتازیادہ مناسب ہے اگر چہ جوكو بار بارپینے سے بھی وہ بار یک بن جاتا ہے، نیز چھانے سے بھی صاف و باریک بن جاتا ہے۔ یہاں نفی رؤیت یا تو مبالغہ پر بنی ہے یا حقیقت پر کیونکہ مدینہ اور مکہ میں گندم كا استعمال اور جوكو باریک پینے كارواح نہ تھا اس لئے وہاں میدہ نظرنہ آناكو كی بعیر نہیں اور چھانے كاشوق بھی نہ تھا، لیكن اگر اس روایت كوچے مانا جائے جس كے مطابق آپ علیہ السلام كاقبل اللہ وتشام جانا نه كور ہے تو چھر نفی مبالغہ برجمول كرنا اولى ہے۔ واللہ اعلم

مديلة باب ماجاء في معيشة اصحاب النبي عَلَيْسِهُ

(صحابه کرام کی معاشی زندگی کابیان)

"عن قيس قال سمعت سعدبن ابى وقاص يقول انى لَاوّلُ رجل اَهرَاقَ دَماً فى سبيل الله وانى لَاوّلُ رجل اَهرَاقَ دَماً فى سبيل الله وانى لَاوّلُ رجل رَمىٰ بسهم فى سبيل الله ولقدرايتُنِى اَغزُوفى العصابة من اصحاب محمدصلى الله عليه وسلم ماناكل الاورق الشجروالحُبلة حتىٰ ان احدناليَضَعُ كما تضع الشاة ثم اصحبت بَنُواسَديُعَزِّرُوننى فى الدين لقد خِبتُ اذن وضَلَّ عملى". (حسن صحيح)

حضرت قیس سے مروی ہے کہ میں نے سعد بن ابی وقاص کو یہ کہتے ہوئے ساہے کہ بے شک میں پہلا وہ مخض ہوں جس نے اللہ کی راہ میں خون بہایا ہے اور میں وہ پہلا مخص بھی ہوں جس نے اللہ کی راہ میں خون بہایا ہے اور میں وہ پہلا مخص بھی ہوں جس نے اللہ کی راہ میں تیر چلایا (پھینکا) ہے اور میں نے خودکو ایسی حالت میں پایا ہے کہ میں محمصلی اللہ علیہ وسلم کے صحابہ کی ایک جماعت کے ہمراہ جہاد کرتا ، ہم سوائے درختوں کے پتوں اور خار دار جھاڑیوں کے پھل (یا کیکرے پھل) کے سوا پھی نہیں

کھاتے (لینی اس کے علاوہ کوئی غذانہ ہوتی) یہاں تک کہ ہم میں سے ہرایک ای طرح ا جابت کرتا جیسے بکری اوراونٹ ا جابت کرتا جیسے بکری اوراونٹ ا جابت کرتا جیسے بکری اوراونٹ ا جابت (میکنیاں) کرتے ہیں (مگراس کے پاوجود) اب بنواسد مجصد بین کے بارے میں طعنے دیتے ہیں (لینی مجھے نماز کی تعلیم دیتے ہیں کہتم صحیح نہیں پڑھتا) ماتھینا ایسے میں تو میں تامراد ہوں گااور میراسب عمل برباد ہوگا۔

تشری : اگل روایت میں بجائے ابی وقاص کے مالک آیا ہے جس کا مطلب یہ ہے کہ حفزت سعد اللہ کے والد کا تام مالک تفاور ابود قاص کنیت تھی اگل روایت میں خبلہ کے بعد سرکا بھی اضافہ ہے جو سرة کی جمع بمعنی کیرے ہوئی الحاد اردر دخت کیکر کے ہم جبکہ خبلہ بضم الحاء کیکر کے پہل کو کہتے ہیں جولو بیا کے مشابہ ہوتا ہے بعض نے مطلق خاردار درخت کے پہل کو کہتے ہیں جولو بیا کے مشابہ ہوتا ہے بعض نے مطلق خاردار درخت کے پہل کو کہتے ہیں جولو بیا کے مشابہ ہوتا ہے بعض نے مطلق خاردار درخت کے پہل کو کہتے ہیں جولو بیا کے مشابہ ہوتا ہے بعض نے مطلق خاردار درخت کے پہل کو کہتے ہیں جولو بیا کے مشابہ ہوتا ہے بعض الحق خاردار درخت کے کہا کہ کا میں مقابل کی کہتا ہے۔

یروایت بخاری شریف بیل مجی ہے (منا قب جلد: اس: ۵۲۸ کی روایت بیل ہے): 'ماله خلط ''
ینی پیٹ سے جونصلہ خارج ہوتاوہ ایک دوسرے سے بیل چپتا پوجشدت خیکی کے اس کواو پرترجہ بیل بیگنیوں
سے تجبیر کیا گیا ہے چونکہ بنواسد نے ان کی شکایت در بارخلافت آب بیل کی تھی جیسا کہ بخاری کی مندرجہ روایت
میں ہے: ''و کانو اوَ شو ابه الی عمو قالو الا یعسن یصلی '' یعنی سے نماز نہیں پڑھا سکتے ہیں تو حضرت سعد میں ہے ہیں کہ بیل سابق الاسلام ہونے کے باوجوداگر ان لوگوں کی تعلیم کامختاج رہوں تو پھر میری سبقت
سال می کا کیا فائدہ؟ اور بیا گر چے بظاہر اپنی مدح ہے گربطورا ظہار شکر وتحدیث بالعمت اورا حقاقی تن کے لئے ایا
کرنا جائز ہے جیسا کہ یوسف علیہ السلام نے فرمایا تھا" انسی حفیظ علیہ ''۔

حفرت شاہ صاحب فے عرف العدى ميں فرمايا ہے كہ حاشية ترندى پر جمع المحار كے حوالے سے بنواسد كائنے ہواسد كائنے ہے العدى ميں فلط ہے۔ كائنے ہے بنواسد

حافظ این جرسے فرمایا کہ بنواسدوہ لوگ ہیں جوابو بکرصدیق رضی اللہ عنہ کے دورخلافت میں مدی نبوت طلیحہ بن خویلداسدی کی پیروی میں مرتد ہو گئے تھے اور حضرت خالد بن ولیدنے ان سے جہا دکیا تھا پھرطلیحہ جب تو بہتا ئب ہوئے تو ماجی اتباع نے بھی تو بہ کرلی اور ان کی آکثریت کوفد میں مقیم ہوئی۔

مافظ مینی نے لکھا ہے کہ حضرت سعدین الی وقاص "عشرہ مبشرہ میں سے ہیں سالے دیں حضرت عمر فی اسے میں سالے دی اور کوفتے دی اور کے خلاف ڈیڑھ لاکھ کائڈی دل تک۔ تاریخ این خلدون میں ہے کہ ان دنوں میں یزدگردنے مسلمانوں کے خلاف ڈیڑھ لاکھ کائڈی دل

لشکرنہاوند میں جمع کیا تھا،حضرت عمر نے تفتیش حال کے لئے محمد بن مسلمہ کو بھیج دیا تھا،تفتیش سے معلوم ہوا کہ صرف بنوعبس شکایت کررہے ہیں۔ (ص:٣٦٥ج: انفیس اکیڈی)

یدروایت بخاری ج:اص: ۱۴ اپرتفصیل سے آئی ہے جس کے مطابق تفیش کا یمل ہر مجد میں جاری رہاچنا نچہ سب لوگوں نے حضرت سعد کی تعریف ہی کی یہاں تک کہ بنوعیس کی مجد میں فقط ایک آدمی جس کا نام اسامہ بن قنادہ تھانے الزام تراشی کرتے ہوئے کہا کہ وہ سراینہیں بھیجنا تقسیم میں انصاف نہیں کرتا اور فیصلہ میں عدل سے کام نہیں لیتا ہے اس جھوٹے الزام پر حضرت سعد نے اس کو بددعاء دی جس کے نتیجہ میں وہ انتہائی بڑھا ہے میں راستوں میں لڑکیوں کو چھیڑتا تھا اور جب اس سے کہا جاتا تو کہتا تھا: ''اَصَابت نے دعوہ سعد '' بجھے سعد کی بددعا گی ہے۔ (باب و جوب القرآء فالامام والماموم فی الصلوات النے)

حدیث آخر: محربن میرین رحمه الله سے روایت ہے کہ ہم ابو ہریرہ کے پاس تھے جو گیرو میں رنگے ہوئے سن کے دو کیڑے پہنے ہوئے تھے پس انہوں نے ان میں سے ایک سے ناک صاف کی پھر فر مایا واہ ، واہ ابو ہریرہ (اس وقت) سن کے (اعلیٰ) کیڑے سے ناک صاف کررہا ہے جبکہ میں نے خود کوالیں حالت میں بھی بایا ہے کہ میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے منبراور عاکشہ کے گھر کے درمیان بھوک کی وجہ سے بہوش ہوکر گرجاتا تھا تو آنے والا آکرا پنا پیرمیری گردن پر مکھتا وہ یہ بھتا کہ مجھے د ماغی خلل کا دورہ ہے حالا تکہ مجھے کوئی دیوانی نہیں ہوتی وہ تو صرف بھوک ہی تھی (جوستایا کرتی تھی کوئی مرگی وغیرہ نہتی)۔ (حسن تیجے)

قوله: "مُمَشِقان"ای مصبوغان بِالمِشق مِثْق بَسرهُ میم سرخ قتم کی می ہے جے کیرو (گے رُو) کہتے ہیں۔

قوله: "كتان" بفتى كاف وتشديدالتاء ئن (پٹس) كريشه كے بينے ہوئے كپڑے كو كہتے ہیں اس میں دوسرا تول ہے ہے كہ كتان ألى (ال ى) كريشے سے بنے ہوئے كپڑے كو كہاجا تا ہے الى تقريباً دوفث كا يودا ہوتا ہے جس كے نج كاتيل بھى نكالا جاتا ہے۔

> قوله: "بَخ بَخ" بفتح الباء وسكون الخاء تعجب كوفت بولاجا تاب -قوله: "يَتَمَخُّطُ" تَخُطُ مُخاطب ناك سِنكن كم عنى مين ب-

بیا یک روایق علاج تھا کہ لوگ جبطی اور دیوانہ یا مرگی کے مریض کی گردن پر بیرر کھتے تھے جیسے آج کل اسے جوتا سونگھائے ہیں یعنی لوگ میری بیرحالت دیکھ کر مجھے مجنون سجھتے ، حالا نکہ اصل واقعہ بیہوتا کہ ہیں بھوک کی وجدسے بوش ہو چکا موتا ، غربت میں صبر کیا اور احمت برشکر کیا۔

صدیم فضالہ بن عبیر : رسول الله صلی الله علیہ وسلم جب لوگوں کونماز پڑھاتے تو بجھ لوگ بھوک کی وجہ سے کھڑے ہونے (کی تاب نہ لاکر) نماز میں گرجاتے بیلوگ اصحاب صفہ تھے، یہاں تک (بیہ شاہرہ زیادہ تھا) کہ اعرائی لوگ کہتے بیلوگ دیوانے (خبطی) ہیں چنانچہ جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم نماز سے فارغ ہوجاتے تو ان (اصحاب صفہ) کی طرف متوجہ ہوکر فرماتے اگرتم لوگ جانے کہ اللہ کے یہاں تمہارے لئے کتنا (یاجتنا) اجرہے تو تم آرز وکرتے کہ تمہارا فقروفاقہ اور زیادہ ہوتا حضرت فضا لیا فرماتے ہیں کہ میں اس دن (جب بیار شاوفر مایا) رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے ساتھ تھا۔

قوله: "المحصاصة" بفتح الخاءِنقروفا قد كوكهتي بين شديد بعوك پر بھى اس كااطلاق ہوتاہے اور يہاں يهى مراد ہے۔

قول دا الصحاب الصف " صفیضم الصادوتشد بدالفاء چبوتر کو کہتے ہیں یہاں مراد مخصوص چبوتر الصحاب الصف " میں میں غرباء ومساکین صحابہ کرام رہتے جن کا اپنا گھربار نہیں ہوتا تھا اغنیاء صحابہ کرام وانصاران پرتصدق کرتے ،ان کی تعداداوسطاً سرتھی جیسا کہ حاصیہ ترندی پرہے۔

میانبی حضرات صحابہ کرام طلاق کی مختوں کی برکات اور صبر آزمامشکلات کے شرات ہیں کہ آج ہم دین کی روشن سے روشناس ہوئے ہیں کسی نے اپنا گھر بارچھوڑ کر ہجرت کر کے حضورا کرم صلی اللہ علیہ وسلم کا دامن فیض پیڑا تو کسی نے اپنامال اللہ کی راہ میں بہادیا اس طرح سب یجان ہوکر دین کے پروانے بنے اور ہمارے لئے تاریک رات میں مطلع اسلام اورافق دین ہیں کے ستارے بنے ، پس انہی کے قش قدم پرچل کر کا مرانی وکا میا بی سے ہمکنار ہونا ممکن ہوا ہے آگر کوئی چا ہے تو ان سے رہنمائی لے ورنداین تباہی کا انتظار کرے۔

عليه وسلم نے فرمايا اے عمر التم كوكيا چيز لے كرآئى ہے؟ انہوں نے فرمايا كدا سے اللہ كے رسول بھوك (نے آنے ير مجوركيا) آب صلى الله عليه وسلم نے فرمايا مجھ بھى كچھ بعوك كى ہے، چنانچہ بيد حضرات ابوالهيثم انصاري كے كھرك جانب تشریف لے گئے ابوالہیٹم ایسے آدمی سے جن کی بہت سی مجور (کے درخت) اور بکریاں تھیں (لینی غنی ومالدارآ دی تھے) مع ہذاان کے کوئی خادم نہ تھے، تووہ ان کو کھر میں نہیں ملے، توان کی بوی سے بوچھا کہ تیرامیاں کہاں ہے؟ وہ کہنے گئی کہوہ ہمارے لئے مٹھایانی لینے گئے ہیں ابھی انہوں نے زیادہ درنہیں گذاری تھی كدات ميں ابوالہيم بانى كى مشك اٹھائے ہوئے اور قامنے كى كوشش كرتے ہوئے آگئے جلدى سے اس کورکھا، پھرآ کر نی صلی اللہ علیہ وسلم سے بغل میر ہوئے (یعنی لیٹ مجے) اور آ ب صلی اللہ علیہ وسلم براینے مال باپ کوتربان کرنے کے الفاظ دہراتے رہے ، پھران سب کوایے باغ میں لے مجعے ، وہاں ان کے لئے فرش بچھایااورخودایک درخت کے پاس مجے اور یکا یک ایک مجھا (مجورکاتو ٹرکر)لائے اوران کے سامنے رکھ دیاحضور صلی الله علیه وسلم نے (شاخ و مکھ کر) فرمایا کہ (بجائے پوری شاخ کے) تم نے صرف تازہ محجوری کیوں نہیں توڑیں (یعنی چن چن کرلاتے تا کہ باقی ضائع نہ ہوتیں) توانہوں نے عرض کیاا ہے اللہ کے رسول! میں نے جاہا کہ آپ خود پندفر مالیں یا فر مایا کہ آپ کوجو کی اور نیم پختہ (کدر) پند ہوں خودتو ڑویں (کیونکہ شاخ اور درخت سے تو ڑنے کا مزہ الگ ہوتا ہے) چنانچے انہوں نے کھایا اوراس یانی میں سے پیا، تورسول الله صلی الله عليه وسلم نے فر مايا بخداميكها نا بينا اوراكرام وغيره ان نعتوں ميں سے ہے جس كے متعلق قيامت كے دن تم سے سوال کیاجائے گا، مُصندا سامیہ ،تازہ تھجوریں اور مُصندایانی ہے، پھرابوالہیثم چلے محتے تاکہ ان کے لئے کھانا تیار کریں تو نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے آواز دی کہ دودھ والی بکری ہرگز ذیج نہ کرنا چنانچہ انہوں نے بکری کی بچی یا پیروزی کردیا اور لاکران کی خدمت میں پیش فرمایا (بعنی بھونے کے بعد) چنانچے سب سے ال کر کھایا تو ہی صلی الله علیه وسلم نے فرمایا تیرا کوئی خادم ہے؟ فرمایانہیں !آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایاجب مارے یاس (دشمن کے) قیدی آ جا کیں تو تم اس وقت میرے پاس آ جانا (تا کتہبیں خادم دے دو) پس آ پ صلی اللہ عليه وسلم كے ياس صرف دوبى غلام لائے محتان كساتھ تيسر أنہيں تھاچنا نجد ابوالبيثم آپ سلى الله عليه وسلم ك خدمت عاليه مين حاضر موع توني صلى الله عليه وسلم في فرمايا دونون مين جونسا جا مولي الوالم بيثم في كهاا م الله كے نبی! آپ بى ميرے لئے منتخب (وپند) فر ماليں پس نبي سلى الله عليه وسلم نے فر ماياب شک جس سے مشورہ لیاجائے وہ امانت دارہوتا ہے (اسے اچھامشورہ ہی دینا چاہئے البذا)تم بیدوالا لے جاؤ کیونکہ میں فے

اسے نماز پڑھتے ہوئے دیکھا ہا اوراس کے ساتھ اچھاسلوک کرنے میں میری وصیت قبول کرونچنانچ ابوالہیشم اسے لے کراپی بیوی کے پاس (گھر) لوٹے اوراسے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمان (وصیت وتا کیدید) کے بارے میں بتایا تو ان کی بیوی نے کہاتم وہ کام پورائیس کرسکو کے جونی صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کے متعلق (اچھائی کا تھم) فرمایا ہے سوائے اس صورت کے کہ آپ اس کوآ زاد کردیں ، ابوالہیشم نے فرمایا کہ وہ آزاد ہے پس نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے (معلوم ہونے پر) فرمایا کہ بے شک اللہ نے کسی نبی اور خلیفہ کوئیس بھیجا گراس کے دوراز دار ہوتے ہیں ، ایک راز داروہ ہوتا ہے جواسے بھلائی کا تھم دیتا ہے اور یُرائی سے روکتا ہے رایدی مشورہ دیتا ہے اور در ارائی کونقصان بنجانے میں کوئی کسرائی انہیں رکھتا اور جسے یُرے داز دارسے مخفوظ کیا گیا ہے دو (شرسے) بیادیا گیا۔ (حسم میح)

قوله: "والشاء " شاة كاتح به قوله: "خَدَمَ" بَعْ بِه فادم كى قوله: "يستعذب" سين طلب ك لئ بعض يانى كوكت إلى -

قولہ: "یز عبھا" مجراہوامشکیزہ چونکہ کندھے سے پھسل جاتا ہے اس لئے اسے بار باراو پر کی طرف محینچا پڑتا ہے عموماً مثک بردار آ دی کواسے نیچے سے او پر کی طرف جھٹکا ودھکا دینا پڑتا ہے۔

قوله: "تنقیت"إنتقاه و تَنقّاه محنی پند کرنے کے بینی تم خود ہی ہارے لئے اس میں سے اچھی اچھی اور پختہ مجور آوڑے تو سارا کچھا ضائع نہ ہوتا۔

قوله: "ذات دُرّ" وَردود هكوكم إلى ذات دريعي وودهوالي

قوله: "عَناقاً" بروزن حاباً برى كى بكى "جدياً" بچاينى ز (برے) كو كہتے ہيں دونوں كے درميان لفظ "او" راوى كے شك كے لئے ہے۔

قسولسه: "مئبسى" قىديول كوكېتى بىن عموماً اس لفظ كااطلاق عورتوں پركياجا تا ہے كيونكه وه دلول كواسير بناتى بين "بو أمسين" يعنى غلامين _

قوله: "إ مستوص به"اس كابار عيس ميرى وصيت مانواور قبول كرد-

قول، "بطانة" كبسرالبابطن معنى بوشيده كاستركيمي كبيخ بين اورجم راز ومصاحب وبعي

کہاجا تا ہے یہاں آخری معنی مراد ہیں ،مراد فرشتہ اور شیطان ہے بعض نے کہا کہ نفس لوّ امہ دامّارہ بالسوء ہے گمراس کوعام رکھنا افضل ہے یعنی اچھی قوت ومحرک اور بُری۔

قوله: "لاتالوه" لاتقصر كرتا بى نهيس كرتا يعنى موقع ضائع نبيس بونے ديتا ہے۔قوله: "خبالا" فساد، بگاڑ اور نقصان كو كيتے بيل 'فقدوقى ' اى الشر مشكوة ص: ١٨ اباب فى الوسوسة ميں مسلم كى مديث ہے:

مامنكم من احدالاوقد و كِلَ به قرينه من الجن وقوينه من الملائكة قالوا
واياك يارسول الله ؟قال واياى ولكن الله اعاننى عليه فاسلم فلايامرنى الا
بغير ".

لہذا صلی اللہ علیہ وسلم کو بھی جانہ ہو کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو بھی والعیاذ باللہ وسلم کو بھی والعیاذ باللہ وسے آتے ہوں گے، کیونکہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کواس سے محفوظ بلکہ معصوم بنادیا گیا تھا۔ حدیث میں خلیفہ سے مرادنبی کا جائشین ہے۔

پوچھ بغیر کرناچا ہے چنانچ دھزت ابراہیم علیہ السلام کے بارے میں آیت ہے: ''فوراغ المی اہلے فجاء بعد جب سسمین'' ہاں البتہ اگران کا منٹاء معلوم کرنا ہوا ور بے تکلفی بھی ہوتو وہ الگ بات ہے۔ (۹) عمہ کھانا پیش کرنا چاہئے۔ (۱۰) مہمان کوچاہئے کہ میز بان کوزیادہ نقصان اٹھانے سے بچانے کی کوشش کرے۔ (۱۱) مناسب وقت پرمیز بان کی مہمان نوازی کا عملی شکریہ یعنی پھے سلوک کرناچاہئے۔ (۱۲) اور یہ کہ ہرندت پراللہ کاشکرادا کرناچاہئے۔ آواب برائے مہمان اور ضیافت کے آواب راقم نے نقش اخلاق یانقش قدم کامل میں: ''آواب ضیافت' میں ذکر کئے ہیں تفصیل ورکار ہوتو رجوع فرمائیں (چوتھاباب حصہ دوم ص:۳۲۳)۔ (۱۳) مشورے کی وج بھی بتانی چاہئے: ''فانی دائیتہ یصلی'' یعنی گرفتاری کے بعد مسلمان ہواہے۔ (۱۳) مشورے کی وج بھی بتانی چاہئے۔ ''فانی دائیتہ یصلی'' یعنی گرفتاری کے بعد مسلمان ہواہے۔

حدیث آخر:۔ہم نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے بھوک کی شکایت کی اور اپنے اپنے پیٹ (پر بند ھے ہوئے) ایک ایک پھرسے کپڑا (دامن) اٹھا کر (آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو دکھایا) تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے (بند ھے ہوئے) دو پھروں سے کپڑا ہٹایا۔ (غریب)

جدید تحقیق کے مطابق معدہ کے اندر کچھ حسی خلیے ہیں جن کوریسپٹر کہتے ہیں یہ نظام ہضم کا اہم ترین عضر ہیں چنانچہ جب ان پر دباؤ پڑتا ہے تواس سے بھوک اور پیاس کا احساس ختم یا کم ہوجاتا ہے چنانچہ جب بھوکا شخص کھانا کھاتا ہے یا پیاسا پانی پیتا ہے تواس کی تحلیل سے بھوک و پیاس کا احساس فوراً ختم ہوجاتا ہے پھروغیرہ باندھنے سے بھی ان خلیوں پر دباؤ آجاتا ہے اور بھوک کا احساس کم ہوجاتا ہے۔

حدیث آخر: دعفرت سماک بن حرب کہتے ہیں کہ میں نے حضرت نعمان بن بشیر سے بی فرماتے ہو کے شناہے کہ کیاتم لوگ کھانے ہینے کی آسودگی میں نہیں ہو؟ جیماتم چاہتے ہو (ویمائی کھاتے ہو) جبکہ میں نے آپ کے نبی سلی اللہ علیہ وسلم کود یکھا ہے جن کوردی مجور بھی اتنی نہلتی جوآپ کے پیٹ کو بھردیتی ۔ (حسن سیح کے اس کے خاطب ہیں ، یہ بھی حضرت نعمان کا خطاب یا تو متا خرین صحابہ کرام سے ہے یا تابعین آپ کے مخاطب ہیں ، یہ بھی

ہوسکتا ہے کہ مجمع میں دونوں تشم کے حضرات موجود ہوں۔

قوله: "نبیکم" میں نبی کی اضافت ضمیر خاطب کی طرف ان کواحساس دلانے کے لئے ہے کہ آلوگوں نے اپنے میں کہ استدام میں کوتا ہی بر تناشروع کی ہواد میش و مشرت کی طرف برجے لگے ہو۔

قوله: "دقل" بفتحتین" خشک اور دی مجود کو کہتے ہیں جوسب سے زیادہ ستی ہوتی ہے، غرض آپ
لوگ اپنے نی سلی اللہ علیہ وسلم کی معاثی زندگی کو طوظ رکھیں وہ پیٹ بحر کرمعمولی غذا جیسے دقل وغیرہ بھی نہیں کھا کتے
ہے جبکہ تم لوگ آج ہرتم کی نعتوں میں کھرے ہوئے ہو، آپ کے نی سلی اللہ علیہ وسلم کو مال جمع کرنے کا شوق نہ
تفا بلکہ ایٹار کا جذبہ تھا اور اتنا کہ تیز ہواؤں سے بھی زیادہ خرچ فرماتے ، محرتم دنیا جمع کرنے میں مشغول ہو گئے
ہوجس سے لگتا ہے کتم لوگوں نے ابنا نصب العین تبدیل کردیا ہے، یہ سب بطور تو نی کے ہے۔

باب ماجاء ان الغِنى غِنَى النفس

(اصل بے نیازی دل کی ہوتی ہے) (تو گری بدول است)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :ليس الغِنى عن كثرة العرض ولكن الغِنى غِنى النفس". (حسن صحيح)

حصرت ابوہرری فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ تو مکری (دولت مندی) زیادہ ساز وسامان سے نہیں بلکہ اصل بے نیازی تو دل کی تو مگری ہے۔

تشری : بیسراهین مالداری جس کی وجه ہے آدمی دوسروں کا محتاج نہیں رہتا بلکہ بے نیاز وستغی ہوجا تا ہے 'عرض ''سامان ومتاع کو کہتے ہیں۔

مطلب یہ ہے کہ بعض دفعہ آدمی کے پاس مال نہیں ہوتا گراس کادل اس حالت پر مطمئن رہتا ہے کہ اس کے جھے میں صرف وہی آئے گا جواللہ نے مقدر فرما یا ہے اس کے وہ نہ تواس حالت پرزیادہ پر بیثان رہتا ہے اور نہ ہی لوگوں کی چیزوں کی طبع رکھتا ہے اس کے برعکس بہت سے لوگ مالدار ہونے کے باوجود مزید دولت کمانے کے لئے بے چین اور جمہ وفت متحرک رہتے ہیں اس حالت میں دنیا سے چلے جاتے ہیں تو کیا فائدہ ہوا ان کی کثرة مال کا؟

امام غزال "ف احیاء العلوم میں حصرت علی کا بیقول نقل فرمایا ہے کہ اگر آدمی تمام زمین کی چیزوں کو حاصل کرے مگرنیت خدائی کی خاطر ہوتو وہ زاہد ہی رہے گا، جبکہ دنیا کی تمام چیزیں چھوڑنے والے کی نیت اگر خداکے واسطے نہ ہوتو وہ زاہد ہی اللہ خداکے واسطے نہ ہوتو وہ زاہد ہیں ہوگا، البذاول دنیا میں نہیں ڈو بنا چاہئے ، مولا نارومی رحمہ اللہ نے مثال دی ہے کہ اگر کشتی پانی کے اوپراوپر چلتی رہے تو محفوظ ہوگی کیکن اگر پانی اس کے اندر چلا جائے تو یقینا وہ ڈوب جائے گی:
"کر کشتی پانی کے اوپراوپر چلتی رہے تو محفوظ ہوگی کیکن اگر پانی اس کے اندر چلا جائے تو یقینا وہ ڈوب جائے گی:
"ولا تحبو اللہ نیافت کو نو امن المخاسوین"۔

باب ماجاء في اخذالمال بحقه

(مال كمانے كاطريقه)

"ان هـذاالـمـال خـضـرة حـُلوة من اصابه بحقه بورك له فيه،ورُبٌ مُتَخَوِّضِ فيما

شاء ت به نفسه من مال الله ورسوله ليس له يوم القيامة إلاالنار". (حسن صحيح)

یہ مال ہرا، ہرا، میٹھا میٹھا ہے ، جس نے اس کو جائز طریقہ سے لیا تو اس کے لئے اس میں برکت دی جائے گی اور بسااوقات وہ گھنے والا اللہ اوراس کے رسول کے مال میں (اپنی مرضی کے مطابق) جیسااس کا دل کرے، قیامت کے روزاس کے لئے آگ کے سوا کچھنہ ہوگا۔

تشری : یہاں مال سے مراد دنیا ہے اس کو سبز اور میٹھا کہنا باعتبار تشبیہ کے ہے کہ جس طرح سبز وشاداب منظر جاذب نظر اور دکش ہوتا ہے اس طرح دنیا بھی حسین وعزیز لگتی ہے ایس جوشف بفتر رحاجت، بفتر رکفایت اور جا تزطر یقہ سے لے گااس کے حق میں دنیا مفید ثابت ہوگی کیونکہ وہ اس سے اپنی ضرور میات پوری کفایت اور جا تزطر یقہ سے لے گااس کے حق میں دنیا مقید ثابت ہوگی ، مگر جوشخص اس میں بے بنگم تصرف کرے گاوہ قیامت کے دن ملاک ہوگا کیونکہ ایسے میں دنیاز ہر کے سوا کہ بھی نہیں تو جس طرح سانپ کوئیر اہا تھ لگا سکتا ہے اور انا ٹری اس سے مرجا تا ہے اس طرح حال دنیا کا ہے، اس مضمون کی حدیث پہلے گذری ہے۔

قوله: "متحوض" خوض سے بمعنی پانی میں گھنے کے آتا ہے لیکن یہاں مراد تصرف ہے البتداس میں ایک باریک تشبیہ ہے کہ جس طرح آدمی دنیا میں دولت و دنیا کے اندر گھنا اپنا مقصد بناتا ہے اور جائز و ناجائز کی کوئی برواہ نہیں کرتا تو اسی طرح و ہ قیامت کے دن آگ میں گھنے گا۔اعاذ نا اللہ منھا

اوپرمتنِ حدیث میں مال کی اضافت آپ علیہ السلام کی طرف اگر چہ بیت المال کی طرف مثیر ہے گریہاں بیت المال کے علاوہ عام مال بھی لینا درست ہے جیسا کہ تشریح میں گذراہے لیعن بے جاسوال کرنا، ہرطرح کی کمائی اور خرچ کوشامل ہے۔

باب

"أُعِنَ عبدُ الدينار أُعِنَ عبدُ الدرهم". (حسن غريب) ليني ديناراوردرهم كابنده لمعون ہے۔

چونکه دنیاوی مال ومتاع میں بنیادی کردار پییوں کا ہے اس لئے دینارودرهم کی تخصیص کی گئی ورنه مراداس سے مطلق وُنیااورتیش ہے، دنیا کی عبدیت وغلانی اس وقت ہوتی ہے جب آدمی اپنی ساری زندگی اور ساری تو انائی اس کے دریے کردے، اس سے بفتر رضرورت لینے کی فرمت ٹابت نہیں ہوتی، قال الله: "اَرابت

من المنحلفظ لله مقوال "ط (الفرقان آیت: ۳۳) معلاد کیرتواس کوجس نے پوجنا اختیار کیاا پی خواہش کا العنی خواہش کا العنی خواہش کا العنی خواہش کا ایسے مانتے ہیں جیسے خدا کا ماننا چاہئے ایسے لوگ ملعون خواہش کی ایسے مانتے ہیں جیسے خدا کا ماننا چاہئے ایسے لوگ ملعون خہیں تو کیا ہیں؟ حفظ نا اللہ

باب

"ماذِئبان جائعان أرسلافي غنم بافسدَلهامن حِرص المرء على المال والشرف لدينه". (حسن صحيح)

وہ دو بھو کے بھیڑ ہے جو بکریوں میں چھوڑ دیئے جائیں ان (بکریوں) کے لئے ،آ دی کے نیب مال وجاہ کی اس کی دینی تباہی سے زیادہ تباہ کن نہیں ہیں۔

تشری : شرف سے مراد جاہ وعزت ہے اور' لدینه' 'جار بحرور' بِافسکد' 'کے ساتھ متعلق ہے یعنی آدمی کی بید دخصلتیں جو مُتِ مال اور مُتِ جاہ ہیں دین کوان دو بھو کے بھیٹریوں سے بھی زیادہ تباہ کردیتی ہیں جو بھیٹر بکریوں کے دیوڑ میں آزاد چھوڑ دیئے جا کیں حالانکہ بھیڑیا اتنا حریص ہوتا ہے کہ اس خوف کے چیش نظر کہ کہیں بیسب بکریاں بھاگ نہ جا کیں پہلے ان کو جان سے مارنے کی کوشش کرتا ہے اور جو رہ جاتی ہیں وہ بھاگ نکلی ہیں اس طرح ساراریوڑ تر بتر ہوجاتا ہے گر حتِ مال وحب جاہ دونوں آدمی کے دین کوان بھیڑیوں سے بھی زیادہ نقصان پہنچاتی ہیں۔

حب مال وجاه اورديكررذ ائل اخلاق كي تفصيل راقم في تقش قدم مين دى بي فن شاء النفصيل فليراجع

باب

"عن عبدالله قال نام رسول الله صلى الله عليه وسلم على حصيرفقام وقداَثَّرَ في جنبه فقلنا: يارسول الله الواتخذنالك وِطاءً؟ فقال: مالى وللدنيا؟ ماانافى الدنيا للاكراكب استظل تحت شجرةٍ ثم رَاحَ وتركها". (صحيح)

حضرت عبدالله بن مسعود رضی الله عند سے مروی ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم ایک چٹائی پرسوئے پس جب اُسٹے تو پہلو پر چٹائی نے نشا تات بنا لیئے تھے، ہم نے عرض کیااے اللہ کے رسول! اگر ہم آپ کے لئے بساط بنا (کر بچھا) لیتے (تواچھا ہوتا) تو آپ صلی الله علیہ وسلم نے فر مایا مجھے دنیا سے کیا مطلب؟ ؟؟ میں دنیا میں

بس الیابی ہوں جیسے ایک سوار (مسافر) ہوتا ہے جو کسی درخت کے نیچے سابی (آرام) حاصل کرنے کے لئے رُکے اور پھرچل پڑے اوراسے (درخت کو) چھوڑ دے۔

تشريح: لفظ 'لو' يهال پرجمعنى شرط زياده مناسب بهنسبت تمناكى كــ

قول د: "وطاء" کا مطلب تو بالکل داختی ہے کہ اگر ہم ایسا کرتے تو آپ کویہ تکلیف ندا کھانی پڑتی ،جبکہ مسعود کے عرض کرنے کا مطلب تو بالکل داختی ہے کہ اگر ہم ایسا کرتے تو آپ کویہ تکلیف ندا کھانی پڑتی ،جبکہ جواب کا مطلب ہیں ہے کہ دنیا کی مثال ایک سایہ دار درخت کی ہے اور مومن کی مثال ایک مسافر کی ما نند ہے مسافراگی منزل کے سفر کی غرض سے تازہ دم ہونے کے لئے درخت کے پنچ تھوڑی دیر کے لئے از کر قبلولہ کرتا ہے وہ وہ بال مستقل پڑا وہ ہیں کرتا کیونکہ زیادہ آرام سفر میں سستی کا باعث بنتا ہے ۔راقم کواس کا تجربہ کہ جب ہم گرمیوں میں صبح سے شام تک گھاس کا شخ تو دو پہرکو کھانے کے بعد جب جلدی کام شروع کرتے جب ہم گرمیوں میں صبح سے شام تک گھاس کا شخ تو دو پہرکو کھانے کے بعد جب جلدی کام شروع کرتے تو ٹھیک رہتے جبکہ زیادہ دیر تک سایہ کے پنچ بیٹھنے سے سست ہوجاتے اور پھرا ٹھنے کی ہمت نہ رہتی ۔ چنا نچ مثاہدہ ہے کہ اگر کنڈیشنڈ کمروں میں نرم بستروں پرمحو خواب لوگ عوماً تبجد بلکہ ضبح کی جماعت سے یہ جاتے ہیں مثاہدہ ہے کہ اگر کنڈیشنڈ کمروں میں نرم بستروں پرمحو خواب لوگ عوماً تبجد بلکہ شبح کی جماعت سے یہ جاتے ہیں مثاہدہ ہے کہ اگر کنڈیشنڈ کمروں میں نرم بستروں پرمحو خواب لوگ عوماً تبجد بلکہ شبح کی جماعت سے یہ جاتے ہیں مثاہدہ ہے کہ اگر کنڈیشنڈ کمروں میں نرم بستروں پرمحو خواب لوگ عوماً تبجد بلکہ شبح کی جماعت سے یہ جاتے ہیں مثابدہ ہے کہ اگر کنڈیشنڈ کمروں میں نرم بستروں پرموخواب لوگ عوماً تبجد بلکہ شبح کی جماعت سے یہ جاتے ہیں مثابدہ نے کہ اگر کنڈیشنڈ کمروں میں نرم بستروں پرموخواب لوگ عوماً تبجد بلکہ شبح کی جماعت سے یہ جاتے ہیں ہو اس کی دور کی کا مستروں میں نرم بستروں کی بھور کی جماعت سے یہ جاتے ہیں ہو اس کی دور کی کی جاتے ہو تک کی جماعت سے یہ دور کی کھور کے کو کی جماعت سے یہ دور کی کی جماعت سے یہ دور کی کی کی کی کی کھور کی کے دور کی کی کو کو کو کی کی کھور کی کی کی کی کی کھور کی کو کی کی کو کی کو کی کی کی کی کے کی کھور کے کو کی کی کھور کی کی کھور کی کی کھور کی کی کی کی کی کھور کی کو کی کو کی کو کی کھور کی کو کی کی کو کی کو کو کی کی کھور کی کھور کی کو کی کی کھور کی کو کو کی کی کو کی کو کی کو کی کو کی کی کو کی کو کی کو کی کو کی کو کو کی کو کو کی کو کی کو کی کو کی کو کی کو کو کی کو کو کو کی کو کی کو کی کو کی

غرض ،عرض دنیاوراحت طلی سفرآخرت لینی عبادت کی راہ میں ایک رکاوث ہے۔ اپی ہمت کے مطابق اس سے پچنا چا ہے۔ اپنی ہمت کے مطابق اس سے پچنا چا ہے۔ وبقدر الکد تُکتسبُ المعالی

باب

دوی کااثر

"الرجل علیٰ دین خلیله فلینظر احد کم من یُخالِل ؟ (حسن غریب) آدمی اینے دوست کے دین پر ہوتا ہے ہی تم میں سے ہرایک کود کھناچاہئے کہ وہ کس سے دوتی کرر ہاہے؟

تشریخ:۔ترندی کے حادیہ توت المعندی پرسراج الدین قزوینی سے نقل کیا ہے کہ بیر حدیث موضوع ہے اوراس کی ذمہ داری موی بن ور دان پرڈالی گئی ہے لیکن بیتا کڑٹھیک نہیں بیر حدیث کم از کم حسن ہے جیسا کہ امام ترندیؓ نے فرمایا ہے جبکہ اس کامضمون بالکل صحیح ہے کیونکہ۔۔ (۱) محبت صالح ثرًا صالح كند محبت طالح ثرًا طالح كند (۲) پسر نوح چول بابدال به نشست خاندان نوتش هم شد

مجرب ہے۔ صحبت کے اثرات پرعلاء نے مستقل کتابیں لکھی ہیں ، راقم نے بھی نقش قدم میں اس پر تھوڑ اسالکھا ہے ، بہر حال دوئی میں استھے دوست کا انتخاب انتہائی اہم اور لازمی امرہے ہرکس وٹاکس سے مراسم رکھنے سے آخرت کی تباہی ممکن ہے۔

باب

دنیافانی اور عمل خیرجاویدانی ہے

"يتبع الميتَ ثلاث فيرجع اثنان ويبقىٰ واحد، يتبعه اهلُه ومالُه وعملُه ، فيرجع اهلُه ومالُه وعملُه ، فيرجع اهلُه ويبقىٰ عملُه ". (حسن صحيح)

تین چزیں میت کی پیچھ چلتی ہیں ہی دوتو لوٹ کرواپس آ جاتی ہیں جبکہ ایک رہ جاتی ہے چنانچہ اس کے اہل و مال اور عمل اس کے ساتھ (پیچھے) جاتے ہیں تو اس کے اہل و مال تو واپس آ جاتے ہیں اور اس کاعمل (اس کے ساتھ قبر میں) باتی رہ جاتا ہے۔

اس صدیت پاک میں ایک اہم مضمون کوذکر فر مایا ہے کہ جب آدی کا انقال ہوجاتا ہے تواس کے مال وعیال جیسے اُ قربہ واَجَتِه ، کا نفع اس کی قبرتک رہتا ہے مال کافائدہ یہ ہوتا ہے کہ اس سے لوگ تعلق قائم کرنے کی کوشش کرتے ہیں اس طرح اس کے دوستوں کا حلقہ قائم ہوجاتا ہے دور، دور کے دشتہ دار قربی رشتہ فاہت کرنے کی کوشش کرتے ہیں گریہ سب لوگ فن تک اس کا ساتھ دے سکتے ہیں اور بردی بردی گاڑیاں اس کے ساتھ قبرستان تک جاسکتی ہیں جب وارث والیس آجاتے ہیں تواس کے مال (میراث) کوتھیم کرکے اس پر بقضہ کرلیتے ہیں اور پھرایک وقت ایسا آتا ہے کہ لوگ اس کو بھول جاتے ہیں سوائے صدقہ جاریہ اور دوا گوئیک کرلیتے ہیں اور پھرایک وقت ایسا آتا ہے کہ لوگ اس کو بھول جاتے ہیں سوائے صدقہ جاریہ اور دوا گوئیک اولاد کے ، مگروہ بھی عمل میں داخل ہیں ۔ یہ تیسری چیز یعنی اس آدمی کا عمل اس کے ساتھ ہمیشہ رہتا ہے قبر ہیں بھی اور حشر ہیں بھی لہذا ہم عاقل کو چاہئے کہ وہ خود ہی فیصلہ کرلے کہ وہ ان مینوں دوستوں میں سے س کو زیادہ اہم اور حشر ہیں بھی لہذا ہم عاقل کو چاہئے کہ وہ خود ہی فیصلہ کرلے کہ وہ ان مینوں دوستوں میں سے س کو زیادہ اہم

سمجھے اور کس پرزیادہ اعمّاد کرے، رشتہ داروں پر؟ مال پر؟ یائمل پر پھراسے جوزیادہ نفع بخش اور مفید لگے اس کی طرف زیادہ توجیدے۔

باب ماجاء في كراهية كثرة الأكل

زیادہ کھا نامکروہ ہے۔

"مَامَلًا دميٍّ وِعاءً شَرًا من بطن ،بحسب ابن ادم أكلاتٌ يُقِمن صُلبَه فان كان المحالة فَثُلثٌ لِطعامه وثُلثٌ لِشرابه وثُلثٌ لِنفَسِه". (حسن صحيح)

انسان نے پیٹ سے زیادہ بُر اکوئی ظرف نہیں بھرا، آدی کے لئے تو چند کھے کافی ہیں جواس کی کمرکو سیدھار کھیں، لیکن اگرزیادہ ہی ناگز بر ہے تو (پھر) ایک تہائی (معدہ) اس کے کھانے کے لئے ہواور ایک تہائی چینے کے لئے ہواور ایک تہائی سانس لینے کے لئے ہونا چاہئے۔

تشری : قول د: "بحسب النع" اس میں باءزائدہ ہاور حسب بمعنی کفایة وکافی کے ہے جبکہ انگسلات بضمتین اس کی خبر ہے اکلات اُکلة بضم الہمزہ و کون الکاف کی جمع ہے نوالہ کو کہتے ہیں جسیا کہ حاشیہ میں ہے۔

قوله: "فان سحان الامحالة" لين اگر پيك بحرنالاز مي سمجهة في جرسارا پيك نه بحرك بلكه بقدرا يك تهائى كهائه اس حديث سے معلوم بواكه بهت زياده كھانا مكروه ہے جيسا كهام تر فدى نے ترجمة الباب ميں ذكر فرمايا ہے ، پہلے بھى يەمسئله گذرا ہے ، فليرا جع خلاصه يه ہے كه بذات خود زياده كھانا معيوب ہے البتہ غرض محمود كے تحت پيك بحرك هانا جائز ہے جيسے حرى زياده كھانے سے مراد تقویت على العبادة كاحصول بويا مہمان كے ساتھ وغيره ، الا شاہ والنظائر ميں ہے:

"وقالواالاكل فوق الشبع حرام بقصد الشهوة وان قصدبه التَّقَوِّى على الصوم اومؤاكلة الضيف فمستحب". (ص:٣٣ تدي كتبنانه)

بعض نام نہاد حکماء نے اس حدیث پراعترض کیاتھا کہ انسان تو عناصرار بعد سے مرکب ہے جبکہ اس حدیث میں چوشے عضر بعن آگ کا ذکر نہیں ہے ،اس کا جواب سے ہے کہ آگ کے عضر ہونے میں حکمائے انثراقین ومشا کین کا اختلاف تو تھاہی مگرجد یدسائنس کے تمام ماہرین اس پرمشنق ہیں کہ آگ بذات خودکوئی

عضر نہیں بلکہ ایک قوت ہے جو کسی مادہ سے لگتی ہے۔

بہرحال حدیث باب میں زیادہ کھانے کو ناپند کیا گیاہے،اس کے مفاسد کابیان تشریحات میں پہلے گذراہے۔آج کل جدید بیاریاں مثلاً شوگروغیرہ زیادہ کھانے سے جنم لیتی ہیں۔اخلاقی عیوب اس کے علاوہ ہیں کیونکہ اس سے بیمیت بردھتی ہے اور قوت ملکیہ کمزور ہوجاتی ہے۔

باب ماجاء في الرياء والسمعة

(دکھاوے اور شہرت پبندی کابیان)

"من يُرَاثي ،يُراثِيَ الله به ومن يُسَمِّع يُسَمِّع اللَّهُ به". (حسن غريب)

جوفض (اپنے اعمال لوگوں کو) دکھا تا ہے اللہ (قیامت کے روز)اس (کے عیوب وباطن) کو ظاہر فرما کیں گئیں گے اور جوفض (لوگوں کو) کمنا تا ہے (یعنی اپنے کسی قول دعمل سے شہرت چا ہتا ہے) تو اللہ (قیامت کے دن) اس (کے عیوب) کی تشہیر فرما کیں گے۔اور آپ علیہ السلام نے فرمایا جوفض لوگوں پر مہر بانی نہیں کرتا اللہ تعالی اس پر بھی رحم نہیں فرماتے۔ (حسن غریب)

تشری :- "نیوافی اور یکسقیع" دونول معتدی افعال بین تا ہم پہلا باب افعال سے اور دوسراباب افعیل سے حدیث کا مطلب یا تو وہ ہے جواو پر ترجمہ میں ظاہر کیا گیا ہے بعنی جوشن اپنی نیکیوں سے دنیوی شہرت کا مُتال شی ہوتو اللہ تبارک و تعالی قیامت کے روز اس کے عیوب لوگوں پر ظاہر فرما کیں گے تا کہ سب لوگوں کے سامنے اس کی رسوائی ہواور ایس کی و نیوی عزت اُنے وی ذلت میں تبدیل ہو۔

یا پھرمطلب سے کہ جوشن دنیوی شہرت کے حصول کے لئے نیک اندال کوسٹر ھی بنائے گا تو اس کو دنیا میں شہرت توسلے گا مگر یہی اس کی جزاء بن جائے گی اور وہ آخروی ثمرات وثو اب سے محروم کر دیا جائے گا جیسا کہ باب کی آگلی طویل حدیث میں ہے۔اور سور ہ ھود کی آیت نمبر ۱۶۱۵ کے ظاہر سے بھی اس کی تا ئید ہوتی ہے:

"من كان يريدالحياوة الدنياوزينتها أوقِ اليهم اعمالهم فيهاوهم فيها لايُبخسون 0 اولئك الله ين ليس لهم في الآخرة الاالناروحبط ماصنعوا فيها وبطِل ماكانوا يعملون 0" فيها وبطِل ماكانوا يعملون 0" اگرچاس آيت كامصداق يهوديا منافقين بي _ حدیث کے یہی دومطلب ظاہر ہیں آگر چہاس میں دیگراقوال بھی ہیں۔بہرحال اس سے اخلاص کی قدر کا مجھے اندازہ لگایا جاسکتا ہے۔

حديث شُقيًا: حضرت شُفَيًا الاصبحى في عقبه بن مسلم كوبيحديث بيان كى بكروه (شفيا) مدينه میں داخل ہوئے تو دیکھا کہ ایک شخص کے گر دلوگ جمع ہیں شفیانے یو چھار شخص کون ہیں؟ تو لوگوں نے بتایا کہ ابو ہررہ ہیں تو میں (یعن شفیا) اس کے قریب گیا یہاں تک کدأن کے آ کے بیٹھ گیا جبکہ آپ لوگوں کو حدیث بیان فرمارے تھے پس جب ابو ہریرہ خاموش ہو گئے اور تنہارہ گئے (لینی لوگ چلے گئے) تو میں نے ان سے کہا کہ میں آپ سے صحیح صحیح بات بو چھتا ہوں کہ آپ مجھے وہی حدیث سُنا یے جو آپ نے خودرسول الله صلی الله علیہ وسلم سے سنی ہواور مجھی ہواور وہ آپ کو یاد بھی ہوتو ابو ہر رہ ان نے فر مایا: میں ایسا ہی کرتا ہوں ، میں تجھے ایسی ہی حدیث سنا تا ہوں جورسول الله صلى الله عليه وسلم نے مجھ سے بيان فرمائى ہے اور جسے ميں نے سمجھ لياہے اور يادكياہے، پھر ابو ہریرہ سسکیاں لے کر بے ہوش ہو گئے (بعن مجبوب دوعالم صلی اللہ علیہ وسلم کی یا دسے یا آخرت کے ہولناک مظرکے ذہن میں گردش کرنے سے)تھوڑی در کے بعد پھر ہوش میں آ کر کہنے گئے میں تحقی ایسی حدیث سُنا تاہوں جے رسول الند سلی الندعلیہ وسلم نے مجھ سے اس گھریس بیان کیا ہے جبکہ ہمارے ساتھ میرے اور آپ صلی الله علیه وسلم کے سواکوئی نہ تھا۔اور پھرابو ہریرہ اسسکیاں بھرتے ہوئے زیادہ بہوش ہو گئے، پھران كوافاقه موااورايين چېر يكويو نچه ليا اور فرمايا مين تيراكام كرتا مون مين تخصي ايس حديث بيان كرتامول جورسول الله صلى الله عليه وسلم نے مجھ سے بيان فرمائي تھي، ميں اورآ پ صلى الله عليه وسلم اس كھر ميں اكيلے تھے ہمارے ساتھ میرے اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے علاوہ کوئی بھی نہ تھا ،اور پھراس کے ساتھ ابو ہریرہ بہت زیادہ سسکیاں لیتے ہوئے بے ہوش ہو گئے اور مُنہ کے بل جمک کرگرنے لگے تو میں نے ان کو کافی دیر تک سہارا دیا چنانچہ وہ پر ہوش میں آ گئے ، تو فرمانے گےرسول الله صلى الله عليه وسلم نے مجھ سے بيان فرمايا ہے كدبے شك الله تعالى قیامت کے روز بندوں کی طرف (اپی شان کے مطابق) نزول فرمائیں گے تاکدان کے درمیان فیصلہ فرمادیں اور ہرامت گفتنوں کے بل بیٹھی ہوگی ہیں سب سے پہلے وہ جس کو (حساب کے لئے) کا کیں سے وہ ایک ایبافخف ہوگا جس نے قرآن یا دکیا ہوگا اورنمبر ۱ ایک ایبافخف ہوگا جواللہ کی راہ میں قل کیا جاچکا ہوگا اورنمبر ۱۳ ایک مالدا ومخص ہوگا چنا نچہ اللہ تبارک وتعالیٰ اس قاری سے فرما کیں گے، کیامیں نے تجھے اس (قرآن) کاعالم نہیں بنایا تھا جو میں نے اپنے رسول پراُ تارا تھا؟ وہ کہے گا کیوں نہیں اے میرے رب! (لیتن بے شک تونے مجھے علم

قرآنی سے نوازاتھا) اللہ عز وجل فرمائیں مے تو پھرتونے اپنے علم پر کتناعمل کیا؟ وہ قاری کے گامیں دن رات کے اوقات میں اس قرآن کے ساتھ لگار ہتاتھا (لیمنی پڑھنے پڑھانے اور نماز میں قراَت وغیرہ میں مشغول رہتا) پس الله اس سے فرمائیں محتم نے جموث بولا اور فرشتے بھی کہیں محتم جموث بولتے ہواللہ فرمائیں مے کہ تمہاری چاہت تو پیھی کہ کہا جائے (لینی پیرچرچاہو) کہ فلال مخض قاری ہے، پس وہ گفتگوتو ہوچکی (لینی تخیے دنیا میں شہرت مل می اور مالدارکو پیش کیا جائے گا تو اس سے الله فرمائیں سے کیا میں نے تجھے مال کی فراوانی نہیں دی تھی؟ یہاں تک کہ میں نے تخفے کسی کا محتاج نہیں چھوڑا؟ وہ عرض کرے گا کیوں نہیں اے میرے رب! تو اللہ فرمائیں مے پس تونے میرے دیتے ہوئے میں کیا کیاتھرف کیاتھا؟وہ کے گاکہ میں نے صلدرحی کی اور صدقات دیتار ہا!اللہ اس سے فرما ئیں محتم نے جھوٹ بولا اور فرشتے بھی کہیں گے کہتم نے جھوٹ بولا ہے،اللہ فر مائیں گے کہ تیرامطلب (اس خرج سے) پیٹھا کہ بیچ جا ہو کہ فلاں تی ہے تو ابیا ہو گیا ہے (لیعن و نیامیں) اور اس كے ساتھوہ (تيسرا) فخص بھى لايا جائے كاجوجهاديس ماراكيا موكا الله است فرمائيس كے كم مسلئے مارا عما تها؟ وه كم كاكرتون اين راه من جهادكرن كاحكم دياتها چنانچه من از تار بايبان تك كول كياعميا، الله اس سے فرمائیں سے کہتم نے جھوٹ بنایا اور فرشتے بھی کہیں سے کہتم نے جھوٹ بنایا ہے اللہ فرمائیں سے بلکہ تیری غرض بیتھی کہ کہاجائے کہ فلال شخص بہت بہادرہے ہیں وہ بات کی گئ ہے پھررسول الله صلی الله علیہ وسلم نے میرے مھنے پر ہاتھ مارااور فرمایا اے ابو ہریرہ!اللد کی مخلوق میں یہ تینوں وہ پہلے لوگ ہوں سے جن سے قیامت کےروز دوزخ کی آگ جوز کائی جائے گی۔

وليدابوعثان مدائن فرماتے بين كه عقبه نے جھے (يہ بھی) بتلايا كُفَنَ بى وہ خض بين جوحظرت معاوية كياس كے اوران كويه حديث سُنائى ، ابوعثان فرماتے بين كه علاء بن ابى عيم نے جھے بتايا كه وہ (يعنى علاء بن ابى عيم) حضرت معاوية كے جلاو تھے چنا نچه علاء بن ابى عيم كہتے بين كه امير معاوية كي پاس (ورباريس) ايك آدى (فُننى) داخل ہوا (چونكه علاء فُئى كؤيس جانے تھاس لئے نام كے بجائے رجل كہا) اوران كوابو بريرة كى يہ حديث بيان كى توامير معاوية نے فرمايا كه بيه معاملہ توان تينوں كا ہوا باتى لوگوں كا كيا حال ہوگا؟ پر حضرت معاوية بہت زيادہ روئے حتی كه ہم تو يہ سمجھ كه اب يہ فوت ہوجا كين كے اور ہم نے (آپس ميں يا دلوں ميں) كہا كہ فيخض (فيميا) ايك خطرناك خبر لے كرآيا پر حضرت معاوية كوافا قد ہوا اور چېرے كو پو نچھ ليا اور فرمايا كہ الله اوراس كے رسول نے بچ فرمايا ہے: ''من كان يسو يسدال حياوة الدنياو زينتھانوف اليہم اعمالهم الشداوراس كے رسول نے بچ فرمايا ہے: ''من كان يسو يسدال حياوة الدنياو زينتھانوف اليہم اعمالهم

فيها"_الآية (مورآيت:١٦،١٥)

جس مخص نے زندگانی دنیااوراس کی رونق ہی کومقصد بنالیا تو ہم ان کے اعمال خیر کا صلہ (دنیا ہی میں) پوراپورادیتے ہیں اور (دنیا ہیں) اس کے صلہ میں پھھ کی نہیں کی جاتی (سو) یہ ایسے لوگ ہیں کہ ان کے لئے آخرت میں نارجہنم کے سوا پھھ نہیں اور جو پھھ انہوں نے عمل خیر کیا، آخرت میں سب ضائع ہوگا۔ (حسن غریب)

تشرت : قوله: "شُفَى" تفغير كاصيغه ب قوله: "بحق وبحق "كرار برائ تاكيد ب اوربازائد ب قوله: "لَمّا" بمعن "إلا" ك ب -

قوله: "نَشَعَ" لَمِهِ مانس، اورسكيال بَعرفُ كوكتِ بين قوله: "جاثية" كَتَّنُول كِ بلسرتكول كوكتِ بين -

قنولیہ: 'خور ہ'' خرور سے بمعنی گرنے کے ہے جیسا کہ اوپر بیان کیا جاچکا کہ بیآ یت دراصل کا فروں یا منافقین کے بارے میں نازل ہوئی ہے گر حضرت معاویہ کااس سے استدلال باعتبار عموم الفاظ کے ہے لیمن ریا کار حسب ریا ایپ نیک اعمال کے شمر است سے محروم ہوں کے کفار بالکلیداور کس خروم ہوں کے جبکہ اہل ایمان اخلاص کی کمی کے بقدرواللہ اعلم ۔ تا ہم مؤمنین کے لئے اس کوخاصیت مفرد کہیں گے بہر حال باب کی احادیث سے ریا ود کھاوے کی قباحت بین طریقے سے معلوم ہوئی اورا خلاص کی قدر بھی اُجا گر ہوئی۔

باب

ريا كاتلخ ثمره

"تَعَوّذواب الله من جُبِّ الحُزن! قالوا يارسول الله ما جُبُّ الحُزن؟ قال وادٍ فى جهنم يتعوذ منه جهنم كُل يوم مائة مرة، قيل يارسول الله ومن يدخله؟ قال القرّاء المراؤون باعمالهم". (غريب)

رنج کے بڑے کویں (گڑھے) سے اللہ کی پناہ مائنوصحابہ نے بوچھااے اللہ کے رسول! جب المحزن کمیا چیز ہے؟ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فر ما یا جہنم میں ایک وادی ہے جس سے دوزخ بھی روز اندسومر تبدیناہ ما تکتا ہے عرض کیا گیا اللہ کے رسول!اس میں کون لوگ داخل ہوں گے؟ فر مایا وہ قراء (عبادت گذار) جواپی

(قر اُت و)عمادت میں ریا کارہوں۔

تشرت : قسول در السلام کے مقابل میں مقابل ہے کہ جنت میں سلامتی وخوشی ہوگ جبد وزخ میں اکم ورخ ہوگا۔

قول د: "قراء" قاری کی جمع ہے قرآن پڑھنے والے اور عالم کوبھی کہتے ہیں اور عبادت گذار کوبھی، یہاں متنوں معانی مراد ہیں لینی جومض اپنی نیکی سے دنیوی فائدہ ہی حاصل کرنا چاہتا ہوخواہ وہ شہرت کی شکل میں ہویا جاہ وعزت اور دولت کی صورت میں وہ اس عمل کے ثواب سے محروم ہوگا۔

بَابٌ

"قال رجـل يـارسـول الـله!الـرجل يعمل العمل فيُسِرُّه فاذااطُّلِعَ اَعجبه ،قال ،قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :له اجران اجرالسِرِّ واجرالعلانية". (غريب)

ایک خفس نے پوچھا اے اللہ کے رسول! ایک خفس کوئی عمل کرتا ہے اور اسے چھیا تا ہے تا ہم جب اس کا پہتے چاہا ہے وہ اس شہرت پرخوش ہوجا تا ہے) رسول پت چاہا ہے (ایمنی کسی کومعلوم ہوجا تا ہے) تو اس کوخوش ہوتی ہے (ایمنی وہ اس شہرت پرخوش ہوجا تا ہے) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اس کے لئے دگنا اجر ہے ایک پوشیدہ عمل کا اور دوسر اظاہری عمل کا ۔ (کیونکہ ہرایک پہلواچھی نیت پربنی ہے وانعمال جالنیات)

تشری :۔اس مدیث پربعض نسخوں میں ترجمۃ الباب 'عمل السر' ، ہے بیمدیث مشکوۃ میں بھی آئی ہے اوروہاں تصریح ہے کہ پ سلی الله علیہ وکلم سے پوچھے والے خود ابو ہریر المبیں۔

قول ہے: "فیسرہ" سرورہمعی خوشی نے بیس بلکہ اسرار بمعنی چھپانے کے ہے بینی باب افعال کے مضارع کاصیغہ ہے اورمطلب رہے کی مل کرتے وقت نیت ریا کاری کی نہ ہو بلکہ دورانِ عمل یا بعدازعمل اس کاعلم دوسروں کو ہوجا تا ہے۔

قوله: "أعجبه" يهال مراداعجاب ياعجب ممنوع نهيس اورنه بى رياوالى خوشى ہے بلكه مطلب يہ ہے كه چونكه لوگ زيين برالله كے گواہ بيں للبذا وہ قيامت كے دن اس كى گوابى ديں كے اورموت كے بعداس كاذكر خيركريں كے جوآخرت ميں مفيد ہوگايا خوشى اس وجہ سے ہونى مراد ہے تاكہ لوگ اس عمل ميں اس كى پيروى كريں اورية من سَنّ سُنة حسنة كان له اجو هاو اجو من عمِل بها" كامصداق بن جائے جيسا كمامام

ترندیؓ نے نقل کیا ہے ایسے مخص کو یقینا و ہراا جرماتا ہے ،اورا گراطلاع پرخوشی دنیوی فائدہ کے لئے تو یہ عین ریا ہے۔

خلاصہ بیہ ہے کہ تعلیم وترغیب یا کسی اور مصلحت کے پیشِ نظر عمل کا اظہار ممنوع نہیں بلکہ بعض دفعہ اس کا ثواب کئ گنا بڑھ جاتا ہے خصوصاً فرائض وشعائر کا ، ہاں نوافل میں اگر تعلیم وغیرہ مرادنہ ہوتو اخفاءافضل ہے۔

باب المرأمع من أحَبُّ

(آدی اس کے ساتھ ہوگا جس سے وہ محبت کرتاہے)

"المرأمع من أحَبُّ وله مااكتَسَبّ". (حسن غريب)

یعنی آ دی کاحشراس شخص کے ساتھ ہوگا جس سے وہ محبت کرتا ہے اوراسے وہی ملے گا جواس نے دوستی (کی غرض) سے حاصل کیا ہوگا۔

تشری : آخرت میں معیت ومفارقت کادارومدارد نیوی محبت ومنافرت پہنی ہے یہاں کی دوئی وہاں مزید معیت کوہنم و یتی ہے تا ہم دنیا میں نیکو کاروں کی دوئی وہاں مزید منظم ومضبوط بنے گی جبکہ بدکاروں کی دنیوی دوئی آخرت میں لعن وطعن کاموجب بنے گی بخرض الجھے لوگوں سے دوئی اخروی دوئی کومتلزم ہے اوران سے نفرت ودوری آخرت میں دوری کومتلزم ہے، پھروہاں کی معیت دنیوی دوئی میں ملنے والے اثر ات وثمرات کے تفاوت پربنی ہوگی جوشخص دنیا میں جتنے نیک ثمرات حاصل کرے گاوہ وہاں اسی تناسب سے دوست ومجبوب کے قیاوت پربنی ہوگی جوشخص دنیا میں جتنے نیک ثمرات حاصل کرے گاوہ وہاں اسی تناسب سے دوست ومجبوب کے قیادت پربنی ہوگی جوشخص دنیا میں جوگا، اگر چدان کے درجات ومنازل الگ الگ ہوں گے۔

صدیث انس آ خر: ایک محض رسول الله سلی الله علیه وسلم کے پاس آ کر کہنے لگا اے الله کے رسول!
قیامت کا وقوع کب ہوگا؟ تو نبی سلی الله علیه وسلم (کوئی جواب دیئے بغیر) نماز کے لئے کھڑ ہے ہوگئے ہیں جب
آپ سلی الله علیه وسلم نے نماز پڑھ لی تو فرمایا کہاں ہے وہ محض جو قیامت کی آمد کے بارے میں پوچھ رہا تھا؟؟؟ وہ محض کہنے لگا میں حاضر ہوں اے اللہ کے رسول! آپ سلی الله علیہ وسلم نے فرمایا تم نے قیامت کے لئے کیا تیاری کردھی ہے؟ (جواس کے آنے میں جلدی کرتے ہو؟) اس نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! میں نے نماز وں اور روز وں کے حوالے سے تو کوئی بڑی تیاری نہیں کی ہے (لیتی نوافل وغیرہ کا ذیادہ اہتمام تو نہیں کیا ہے) البت میں الله اور اس کے رسول سے عبت ضرور کرتا ہوں تو رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: آدی ای

کے ساتھ ہوگا جس سے وہ محبت کرتا ہواورتم بھی اس کے ساتھ ہوں مے جس سے تہمیں محبت ہے حضرت انس اللہ اللہ اللہ اللہ فرماتے ہیں کہ میں نے مسلمانوں کو اسلام لانے کے بعداس بات سے خوش جتنا خوش ہوئے نہیں دیکھا تھا۔ (صحیح)

کیونکہ وہ اللہ ورسول صلی اللہ علیہ وسلم سے محبت کرنے والے تھے جب ہی تو اپنی جانوں پر کھیلتے تھے اور اس فرمان میں زبر دست خوش خبری تھی اس لئے سب خوش ہوئے۔

حدیث صفوان: ایک بلندآ وازگنوارآ کر کینے لگا مے مدالیک آدی کی ایک قوم سے مجت تو کرتا ہے۔ تاہم وہ ابھی تک ان (قوم) سے ملائیس (تو کیاوہ ان سے پیچھے اورالگ ہی رہے گا؟) تورسول الله سلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ ہرآدی اس کے ساتھ رہے گاجس سے وہ مجت کرتا ہے۔ (حدیث میچے)

قول : "جھوری" بمعنی بلنداورز وردار کے ہے جیسا کہ عام دیہا تیوں کی زور سے بولنے کی عادت ہوتی ہے چونکہ وہ لوگ آ داب سے عموماً مُکّر کی ہوتے ہیں اس لئے آپ علیہ السلام کواس بلند آ وازی سے کوئی تکلیف نہیں کینی پس رفع صوت کی علت جمانعت جوایذ اءوسوءاَ دب ہے تقت نہ ہوئی للہٰ دایدر فع ممنوع میں داخل نہوئی فلا اشکال۔

ان صاحب کا مقصد بی تھا کہ میں حضوراقد س طی اللہ علیہ وسلم اور آپ سلی اللہ علیہ وسلم کے قریبی مجابہ کرام سے مجت تو بہت کرتا ہوں اوران جیسا ممل کرنے کی کوشش کرتا ہوں جیسا کہ لفظ ' لَسمّا ' میں اس کی طرف اشارہ ہے مگر میں ان جیسے ممل کرنے سے قاصر رہتا ہوں ہاں البتہ مجت میری تجی اور کی ہے، آپ علیہ السلام کے جواب کا مقصد یہ ہے کہ بیمویت بھی جالب ممل اور مفید قرب ہے اس کی بدولت آدمی اپنے محبوبین کے مقام اور قرب کے حصول میں کا میاب ہوجاتا ہے چونکہ اللہ والوں سے محبت کی بنیا واللہ سے مجبت پرقائم رہتی ہے اور قرب کے حصول میں کا میاب ہوجاتا ہے چونکہ اللہ والوں سے محبت کی بنیا واللہ سے مجبت پرقائم رہتی ہے اور اللہ تا ہے اس لئے تمام محبین اور محبوبین حب اور اللہ تا ہے اس لئے تمام محبین اور محبوبین حب تفاوت میں کا میاب مواسلے سے بابلا واسط اللہ عزوجل رمن ورجیم کے قریب رہیں گے۔ السلہ سے معلنا منہم المین یاد ب المعلمین

باب حسن الظن بالله تعالى ا

(الله تعالى يرنيك كمان كرنے كابيان)

''اِن الله تعالیٰ یقول اناعندظن عبدی بی وانامعه اذا دعانی ''.(حسن صحیح) بیحدیث قدی ہے''اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ میں اپنے بندے کے میرے بارے میں گمان کے پاس (مطابق) ہوں اور میں اس کے پاس ہوتا ہوں جب وہ مجھے پکارے۔

تشری : _ یعنی آدمی کواللہ تبارک و تعالی ہے جس طرح توقع ہوگی اور جسیا یقین ہوگا اس کے ساتھ اللہ عزوجل کا معاملہ بھی اسی طرح ہوگا جسیا کہ مشاہدہ ہے جب آدمی کا یقین ہوتا ہے کہ عزت و ذلت دینے ولا صرف اللہ ہے ، رزق عطا کرنے والا فقط اللہ ، بیاری اور اس پر تواب اس کے دست قدرت میں ہے ، غیبی مدد کرنے والا اور آہ سننے والا اور دعا ئیں قبول کرنے والا وہی ہے تو ویسا ہی اس کے ساتھ سلوک کیا جاتا ہے ، اس کے برعس جس کی نظر مادی اسباب پر رہتی ہے تو وہ اسباب کا ہمیشے تاج رہتا ہے اس کا کام پھر بظا ہر بغیر اسباب کے ہوتا نظر جس کی نظر مادی اسباب پر رہتی ہے تو وہ اسباب کا ہمیشے تاج رہتا ہے اس کا کام پھر بظا ہر بغیر اسباب کے ہوتا نظر نہیں آتا ہے ہی تو دنیا کا حال ہے جب کہ آخرت میں فقط وہ لوگ کا مران وسرخ رُوہوں گے جن کا گمان یعنی نیس آتا ہے ہی تو دنیا کا حال ہے جب کہ آخرت میں فقط وہ لوگ کا مران وسرخ رُوہوں گے جن کا گمان یعنی فقین اللہ پر ہی ہومادی اسباب وغیرہ سے تمام ناتے ٹوٹ جا کیں گے۔

باب ماجاء في البر والاثم

(نیکی وبدی کے بیان میں)

"ان رجلاً سأل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن البِرِّوالاثم فقال النبى صلى الله عليه وسلم : البِرِّ حسن النُحلق والاثم ماحاك في نفسك وكرِهتَ ان يَطَّلِعَ الناس عليه". (حسن صحيح)

حضرت نو اس بن سمعان رضی الله عنه سے روایت ہے کہ ایک شخص نے رسول الله صلیہ وسلم سے نیکی و بدی (اچھائی و بُر ائی) کے بارے میں پوچھاتو نبی صلی الله علیہ وسلم نے فر مایا نیکی خوش اخلاتی ہے اور بُر ائی وہ ہے (لیتن اس کی پیچان میہ ہے) کہ جو تیرے دل میں کھنے اور اس پرلوگوں کی آگی تہمیں نا گوارگذر ہے۔ تشریح : قوله: "بِر" بکسرالناءوتشد بدالراء دراصل إحسان، شفقت اور مهر بانی کو کہتے ہیں جوخوش

اخلاتی کے ساتھ لازم ہے جبکہ بداخلاتی میں جفاظم اور بدسلوکی ہوتی ہے، چونکہ ایمان ایک نورہے اور ہرگناہ ظلمت ہے دونوں میں تضادہاں لئے دل نیکی سے مطمئن رہتا ہے کہ نیکی بھی نور بروھانے کا سبب ہے جبکہ گناہ سے دل جوکل ایمان ہے کے اندر بے چینی پیدا ہوتی ہے کہ دومتضاد چیزیں ایک محل میں جمع نہیں ہوسکتی ہیں یا کم از کم موافق نہیں رہتی ہیں پھراس سے ایما ندار کوشر مندگی بھی ہوتی ہے کیونکہ میضیر کے منافی ہوتا ہے خصوصاً جب دومروں کواس کی اطلاع ہوجائے تو شرمندگی اور بھی بڑھ جاتی ہے۔

باب ماجاء في الحب في الله

(الله بي كے لئے محبت كرنے كابيان)

"قال الله عزّوجل :المُتَحَابُون في جلالي لهم منابرٌمِن نوريغبِطُهم النبيُّون والشهداء". (حسن صحيح)

(بیری جدیث بھی قدی ہے) اللہ عزوجل نے فرمایا جمری جلالت وعظمت کی بناء پر مجبت کرنے والوں کے لئے (قیامت کے دن) نور کے منبر ہول مے جن پر انبیاء اور شہداء بھی (گویا) رشک کریں گے۔

تشری : یعنی جن لوگوں کے آپس میں خوشگوار تعلقات اور محبت واُلفت کی بنا چھن اللہ تبارک و تعالی کی رضا کے حصول پر ہو بایں طور کہ ان میں سے ہرا یک دوسرے کواس لئے بڑا سمجھ کرمحبوب بنا تا ہے کہ وہ اللہ کا مقرب اور نیک بندہ ہے ،اس کے علاوہ کوئی دنیوی و ذاتی لالج نہ ہوتو قیامت کے دن میلوگ ایک عظیم نعمت سے سر فراز ہوں گے چونکہ ان کی محبت کا مقصد عالی تھا اس لئے ان کونور کے میناروں پر بٹھا دیا جائے گا جہاں وہ دوسروں کے لئے قابل رشک ثابت ہوں گے۔

قوله: "بغبطهم" بمسرالباءغبطه سي بمعنی رشک کے ہے، یہاں محفی نے بیہ مطلب بیان کیا ہے کہ جوش کی علم یا مل سے آراستہ ہوجا تا ہے تو اس کواس شخص علم وعمل کی وجہ سے مخصوص ورجہ دیا جا تا ہے جواس کے علاوہ کسی کو حاصل نہیں ہوتا اگر چہاس سے ارفع واعلی درجات پر بھی فائز لوگ ہوتے ہیں تا ہم ان میں سے بعض درجات ایسے بھی ہوں گے جوعالی مراتب والے بھی ان پر شک کریں گے از ال جملہ ایک مرتبہ نور کے مینار بھی ہیں۔ کین حضرت گنگوہی نے اس رائے کومستر دفر مایا ہے وہ کو کب میں فرماتے ہیں کہ اس کا مطلب ہے کہ اگر انبیاء کو یہ مقام حاصل نہ ہوتا تو وہ بھی اس پر دشک فرماتے کو یا یہ مبالغہ ہے، مگر چونکہ انبیاء علیہم السلام تو اس

محبت سے یقینا سرشار ہیں اس لئے ان کو غبطہ کی ضرورت ہی نہیں ہڑے گی۔

حدیث آخر: بروایت حضرت الوجریره یا حضرت ابوسعید خدری رضی الله عنها میں کمی ایک سے مروی ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ارشاد فر مایا: سات لوگ ایسے ہیں جن کواللہ تعالیٰ اپنے سایہ عاطفت میں رکھے گااس دن جس روز اللہ کے سایہ رحمت کے سواکوئی سایہ نہ ہوگا(۱) انصاف کرنے والا بادشاہ (۲) وہ جوان جس کی نشو ونما اللہ کی عبادت میں ہوئی ہو (۳) وہ خض جس کا دل مسجد میں اٹکا ہوا ہو جب اس (مسجد) سے نکلے ، تا آئکہ اس کی طرف لوٹ جائے (۴) اور ایسے دو خض جو کش اللہ کے لئے باہمی محبت کرتے ہوں ای پر ملتے ہوں اور اس کی طرف لوٹ جائے (۴) وہ شخص جو خلوت میں اللہ کو یا دکر بے تو اس کی آئکھیں آنسو بہادیں ملتے ہوں اور اس کی ورسوخ اور حسن و جمال والی خاتون اپنی طرف کلائے تو یہ جواب دے کہ میں اللہ کو وجمل سے ڈرتا ہوں (۷) اور وہ شخص جوکوئی چیز صدقہ کر بے تو اسے اتنا خفیدر کھے کہ اس کے بائیں کو بھی پہتہ نہ علی کہ دایاں کیا دے رہا ہے؟ (حسن صحیح)

تشری : پونکہ بیسا توں امور بہت مشکل بھی ہیں اور مع ہذا بغیر اخلاص کے ممکن بھی نہیں بلکہ یوں کہنا چاہئے کہ اللہ تارک و تعالی کی محبت کا ملہ کے بغیر ممکن نہیں کہ آ دمی پر جب تک اللہ کی محبت غالب نہ آئے تو وہ ان امور کی انجام دہی سے سی بھی ایک کوسرانجام دے تو وہ اس کے جوآ دمی ان امور میں سے سی بھی ایک کوسرانجام دے تو وہ اس کی محبت کا ملہ کی دلیل ہے اس کے اللہ تبارک و تعالی اس پر قیامت کے روز خصوصی مہر بانی فر ما کیں سے کہ اس کو عرش کے کہ اس کوعرش کے قریب مقام عطاء فر ما کر امتیازی عنایت فر ما کیں گے۔

ظل وسامی اضافت اللہ کی طرف تشریف کے لئے ہمرادع ش کا سامیہ ہوتا ہے۔ دونوں صورتوں میں ہیں اپنی خصوصی رحمت کے قریب کردے گا کیونکہ ہرشے کا سامیاس کے قریب ہوتا ہے۔ دونوں صورتوں میں نسبت مجازی ہے اورع ش کے نیچ کا مطلب بیز ہیں کہ باتی اشیاء عرش سے باہر ہیں کیونکہ سورج سمیت ہر چیز اور ساری کا تنات عرش کے نیچ ہے بلکہ مطلب بیہ کہ بیلوگ بمقابلہ دوسروں کے اقرب اور میدان محشر میں ایسے مقام پر ہوں گے جہاں سے جنت کے مناظر نظر آئیں گے ، شنڈی ہوائیں ان تک پہنچیں گی محشر میں ایسے مقام پر ہوں گے جہاں سے جنت کے مناظر نظر آئیں گے ، شنڈی ہوائیں ان تک پہنچیں گی اور جنت کی خوشہو سے گھرے ہوئے ہوں گے جب کہ اشقیاء دوز نے کے قریب اور اس کی تپش اور دھویں میں گھرے ہوئے ہوں گے ، اعافر نا اللہ منعا۔ پھر جس طرح اہل ایمان کے باعتبار قرب کے درجات ہیں اسی طرح کے فریب اعتبار ترب کے درجات ہیں اسی طرح کے فریب اعتبار بعد کے طبقات ہوں گے۔ بہر حال اگر کوئی آ دمی کمز در ہویا مامور ہوعدل پر تو اس کا عدل بادشاہ کفر کے باعتبار بعد کے طبقات ہوں گے۔ بہر حال اگر کوئی آ دمی کمز در ہویا مامور ہوعدل پر تو اس کا عدل بادشاہ

ے عدل کی طرح نہیں ، بوڑھے کی عبادت گذاری جوان کی طرح نہیں مجدیں بے شوق جانا یا بھی بھار جانا خواہشندگی طرح نہیں ، اور نھی تعلق رکھنے والے اللہ کی خاطر مجتنع ومتفرق ہونے والوں کی ماننز نہیں اور کسی عام عورت کی دعوت بدی کو تھکرانا شہرت اور عزت اور حسینا کی دعوت کے مستر دکرنے کی طرح نہیں اور علائیے صدقہ نفلیے ، خفیہ کی طرح نہیں اس لئے ان امور براس عظیم انعام کا ترتب ہوتا ہے۔

قوله: "حتى لاتعلم شماله الخ" مبالغه بإخفاء يس يعنى اگر ہاتھ كولم ہوتا تو بھى ہائيں كو پية نہ چلنا كددائيں ہاتھ نے كياديا ہے چونكد ديناسيد ھے ہاتھ سے ہوتا ہے اس لئے نسبت يمين كی طرف كی گئى ہے اور يہی سيح ہے مسلم كى روايت بيس اس كے برعکس ہے گروہ راوى كاسہو ہے، بعض حضرات نے بيمطلب ليا ہے كہ بائيں جانب والے خض كومعلوم نہ ہوكددائيں والے كوكيا ديا گيا؟ گراول معنى اظہر واسح ہے۔

باب ماجاء في اعلام الحُبّ

(محبت کے إظہار کابیان)

"اذااَحَبّ احدُكم اخاه فَليُعلِمه ايّاه ". (حسن صحيح غريب) جبتم ميں سے كوئى ايك اسي (اسلامى) بھائى سے عبت كرے تواس كو بتلادے

تشریخ:۔چونکدرضائے اللی کی غرض ہے باہمی محبت آپس کے خوشگوار تعلقات کے لئے نیج کی طرح ہے اورا ظہار محبت اس کے لئے تاہوں تاکہ اس فریق کی ماندہ اس لئے بتادینا چاہئے کہ میں تم سے محبت کرتا ہوں تاکہ اس فریق کی طرف سے بھی محبت میں اضافہ ہوجائے۔ پھر''فیلیعلمہ''اگر چہامر کا صیغہ ہے گریہاں وجوب اعلام کے لئے نہیں بلکہ ندب واستخباب کے لئے ہے۔

باب کی اگلی حدیث میں اس پریہ بھی اضافہ ہے کہ اس سے اس کے نام ، والد کے نام اور قبیلہ کے بارے میں بھی پوچھے' فیانه او صل لِلمحبة ''کیونکہ بیسوال (وجواب) محبت کوزیا دہ جوڑنے والا اور مضبوط کرنے والا ہے کیونکہ جیسے جیسے تعارف بوھتا ہے ویسے ویسے مجبت بوھتی ہے اور بیہ مجرب ومشاہد ہے ، اور اس لئے بھی کہ آئندہ ضرورت پیش آنے کی صورت میں رابط بھی آسان ہوجا تا ہے آج کل لوگ موبائل نمبر دیت بیں یہ بھی ہے۔

باب كراهية المدحة والمداحين

(تعریف اورتعریف کرنے والوں کی ناپندید گی کابیان)

"عن ابى معمرقال: قام رجل فاثنى على اميرمن الامراء فجعل المقداد بن الاسود يسحشو في وجهه التراب ،وقال: اَمَرَنا رسول الله صلى الله عليه وسلم ان نحثوفى وجوه المداحين التراب". (حسن صحيح)

ابومعمرے مردی ہے کہ ایک شخص اٹھااورامراء میں سے کسی ایک امیر کی تعریف کرنے لگا تو حضرت مقداد بن اسوڈ نے اس کے منہ پرمٹی پھینکنی شروع کی اوراس کے ساتھ فرمانے لگے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہم کو تھم فرمایا ہے کہ ہم تعریف کرنے والوں کے مونہوں پرخاک ڈالیں۔

تشريح: - "حَشَاالتواب حَشُواً"، معى جررمى بهينك وبعى كيت بي اورنفس مى بهينك كوبعى كهاجاتا ہے۔ یہاں مَدَّ احین ہے مرادوہ بیشہ ورلوگ ہیں جولوگوں کی تعریف مال کے حصول کا ذریعہ بناتے ہوں عربوں میں جیسے نیاحت ونو حد کرنے والے بیشہ ور ماہر ہوتے تھے تو اس طرح مداح بھی ہوا کرتے تھے،اس حدیث میں ان کے اس پیشہ کونا پسندگر دانا گیاہے کہ ایسے لوگوں کونا مرادلوٹا ؤتا کہ وہ اس پیشہ کو چھوڑ دیں کیونکہ جب ان کی پیہ حقیر مراد بوری نه ہوگی تو مجوراً ان کواسے چھوڑ نا پڑے گا،اس سے معلوم ہوا کہ ہراس پیشہ ورآ دمی کی حوصل شکنی مونی چاہے جس کا پیشہ تا جائزیا نامناسب ہو۔ بہرحال یہاں مٹی ڈالنے سے مراد، نامرادلوٹا ناہے آگر چہ حدیث کے دوسرے معانی بھی بیان کئے گئے ہیں ،مثلاً بعض نے اس کوظا ہر پرحمل کیا ہے جبیا کہ حدیث باب کے راوی حضرت مقداد بن عمرو في نيائي ، جبك بعض حضرات فرمات مين كمطلب بيه كدان كو يكون كود يناجا بيع تا کہوہ مخالف بن کر ججود مذمت نہ کرنے لگے جیسا کہ ان کی عادت ہے البتہ چونکہ دنیا ایک حقیر چیز ہے اس لئے اس کوتر اب سے تعبیر کیا۔ مگر ظاہروہی ہے جواو پراولا ذکر ہوا بعنی محروم کر دینا، جس سے زودرزُ ومدح کی کراہیت معلوم ہوتی ہے جیسا کہ ترجمۃ الباب میں ہے چونکہ مُنہ پرمدح وتعریف سے عُب وغیرہ امراض پیدا ہوتے ہیں اس کئے اس کی ممانعت فرمادی گئی البتہ جہاں بیوجہ نہ ہوجوآج کل ناممکن ہے تو وہاں روبروتعریف کرنے میں کوئی حرج نہیں بشرطیکہ مدحیہ کلام حقیقت پڑئی ہو چنانچہ امام نو ویؒ نے اس کی بہت ساری مثالیں نقل کی ہیں از ال جمله ایک بیرکه آنحضور صلی الله علیه وسلم نے الحج عبدالقیس سے فرمایا: ''ان فیک لـخـصـلتیـن یـحبهمـاالله

الحلم والاناة"اس برام مووى" تحريفرمات بين:

"وفيه جوازالشناء على الانسان في وجهه اذالم يخف عليه فتنة بِإعجاب ونحوه وامااستحبابه فيختلف بحسب الاحوال والاشخاص واماالنهى عن السمدح في الوجه فهوفي حق من يخاف عليه الفتنة بماذكرناه وقد مدح النبى صلى الله عليه وسلم في مواضع كثيرة في الوجه الخراجع نووى شرح مسلم. (ج:اص:۳۲)

190

قوله: "ویکنی ابامعبدو انمانسب الی الاسو دالخ" یعی حفرت مقداد" کی کنیت ابومعبر به اوراسود کی طرف ان کی نسبت بوجه تبنی کے ہے جبیا کہ عربوں میں جابلی رسم تھی ان العربی نے عارضہ میں کھا ہے کہ ابومعبر کنیت نقل کرنے میں امام ترفدی مفرد ہیں گتا ہے کہ یقیف ہے اصل میں ابوسعیر ہے اور یہ کہ این ججر نفر مایا کہ ان کی نسبت اسود کی طرف شروع اسلام میں تھی کیکن جب یہ آیت نازل ہوئی "ادعو هم آئی سے انہ مقداد بن عمروی رہا آئیت کے بعد بجائے مقداد بن اسود کے ان کا نام مقداد بن عمروی رہا آئیت کے بعد بجائے مقداد بن اسود کے ان کا نام مقداد بن عمروی رہا دو اشتھر و بھا کشھر ته بابن الاسود"۔ (عارضہ ج می ۱۷۰۰)

باب ماجاء في صحبة المؤمن

(مؤمن كے ساتھ رہنے كى ترغيب وللين)

"الاتصاحِب إلامؤمناً والاياكل طعامك إلاتقى".

ساتھی (اور دوست)مت بناؤمگرمؤمن کواور تیرا کھا نامتقی شخص کےعلاوہ کوئی نہ کھائے۔

تشریخ: یعنی دوستانہ تعلقات اورخوشگوارمراسم صرف مومن کے ساتھ ہی قائم کرو کیونکہ کفار ومنافقین کی دوستی تعلق نقصان دہ ہے، یہ بھی ہوسکتا ہے کہ یہاں مومن بمقابل کا فرکے نہ ہوبلکہ بمقابلہ کمزورمومن کے دوستی وقع کے ملائے مومن کی دوستی میں خطرہ اورسستی وکا بلی متوقع ہے علی ہولیتن اپنی دوستی کا ملین کے ساتھ قائم کرو کیونکہ ضعیف مومن کی دوستی میں خطرہ اورسستی وکا بلی متوقع ہے علی ہذا جب کمزورا بیان والوں کی دوستی سے منع فر مایا تو کفار ومنافقین سے دوستانہ تعلق بطریت اولی ممنوع ہوا۔

صحبت صالح ترا صالح كند صحبت طالح ثرا طالح كند جہاں تک کھانے کی بات ہے تو یہاں مراد ضیافت و حاجت کا کھانا نہیں بلکہ وہ کھانا ہے جواکرام کے طور پر کھلا یا جا تا ہے جیسے کسی کی دعوت کرنا چونکہ خصوصی دعوت محبت بڑھانے کا مؤثر ذریعہ ہے اس لئے فرمایا کہ ایسا کھانا صرف پر ہیزگارلوگوں کو کھلا نا چاہئے تا کہ ان سے ایکھے تعلقات قائم ودائم رہے ، نیز ان کی تطبیب خاطر میں اللہ کی خوشنو دی بھی حاصل کی جاتی ہے اوراچھی محفل کے ٹمرات و برکات کا حصول بھی تقریباً بھینی ہے بشرطیکہ میں اللہ کی خوشنو دی بھی حاصل کی جاتی ہے اوراچھی محفل کے ٹمرات و برکات کا حصول بھی تقریباً بھائر ہے۔ میں معانے اور صدقات نقلیہ کا تعلق ہے تو وہ کا فرکو بھی کھلا نا جائز ہے۔

194

باب في الصبرعلى البلاء

(تكليف ومصيبت برصبر كرنے كابيان)

"اذاارادالله بعبده الخيرعَجُلَ له العقوبة في الدنياواذا اراد بعبده الشر امسك عنه بنذنبه حتى يوافي به يوم القيامة "وبهذا الاسنادعن النبي صلى الله عليه وسلم قال: ان عُظم البحزاء مع عُظم البلاء وان الله اذا أَحَبَّ قوماً ابتلاهم فمن رَضِيَ فله الرضى ومن سَخِطَ فله السَخَطُ". (حسن غريب)

جب اللہ تعالیٰ سی بندے کی بھلائی کا ارادہ فرماتے ہیں تواس کو (گناہوں پر) دنیا میں ہی جلد سزا دیتے ہیں اور جب سی بندے کے ساتھ بُرائی کا ارادہ فرماتے ہیں تواس سے اس کے گناہ کی سزا کوروک لیتے ہیں تا آئکہ قیامت کے دن اس گناہ پر پوری سزادیں۔اوراسی اسناد کے ساتھ آپ علیہ السلام سے مروی ہے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جزاء کا بڑھاؤ آزمائش کے بڑھاؤ سے فسلک ہے اور اللہ تعالیٰ جب کسی قوم سے مجبت کرتے ہیں تواس کو آزماتے ہیں ہیں جوراضی رہے تواس کے لئے رضامندی ہے اور جوغصہ ہوجائے تواس کے لئے عصہ ہے۔

تشری : _ آزمائش عموماً تکلیف کی شکل میں ہوتی ہے جیسے غربت ، مرض اور کسی محبوب شخص یا شے کا فراق وغیرہ گوبھی بھاردولت وراحت اور صحت کی صورت میں بھی ہوتی ہے بنابر ہر تقدیرا متحان و آزمائش بھی گنا ہوں کی نحوست کے طور پر ہوتی ہے اور بھی رفع درجات کے لئے جیسا کہ باب کی اگلی حدیث میں ہے باب کی اس پہلی حدیث میں ہے باب کی اس پہلی حدیث میں لیننی سنداول والی میں گناہ پر مزاکا بیان ہے جس کا خلاصۂ مطلب ہے ہے کہ اللہ جس شخص کو پہند فرماتے ہیں اور جس سے راضی ہوتے ہیں تواسے اس کے گناہ پر دنیا میں ہی سزاد سے ہیں جبکہ نا پہند بدہ شخص

کی سزا آخرت تک کے لئے ذخیرہ کردی جاتی ہے چونکہ دنیاہ آخرت کی سزاؤں میں نا قابل نصور فرق ہے کہ دنیا کی سزا آخرت تک سے لئے ذخیرہ کردی جاتی ہے چونکہ دنیاہ قرت کے مقابلہ میں گویا کچھ بھی نہیں اس لئے یہ اللہ کی سزا انتہائی مختصوصی نرمی وشفقت و مہر بانی کا اگر ہے جبکہ کرے آدمی پر دنیا میں گناہوں سے پھھ آفت نہیں آتی مگراس کا حشر آخرت میں انتہائی درجہ کا سخت ہوتا ہے کیونکہ وہ سزاوانی لینی پوری بھی ہے اور بحر پور بھی ، والعیاذ باللہ اللہ باللہ مانانسنلک النحیر و العفو و العافیة و المعافاة فی الدنیاو الآخرة

قوله: "ان عُظم المجزاء مع عظم المبلاء" بضم العين وسكون الظاء بمعنى عظمت وزيادتى كے به لين و نيا ميں جتنى آز مائش خت اور مشكل ہوگى اى تناسب سے اس كا اجروثو اب بھى زيادہ ہوگا اور چونكه آز مائش وامتحان كى حيثيت ٹرينگ كى ہے اس لئے اس كے لئے اُن لوگوں كا انتخاب ہوتا ہے جواچى استعداد وصلاحيت كے حامل ہوں ہاں البتہ جو خض امتحان ميں فيل ہوجاتا ہے تو وہ بجائے كاميا بى كے فيل ہوكرا پنے درج سے بھى ينجے چلاجاتا ہے اس پر الله كى تاراضكى تازل ہوتى ہے اس لئے انتہائى ضرورى ہے كہ مصيبت كے وقت رضا بالقضاء كادائمن ہاتھ سے نہ جائے وار تازيبالفاظ زبان پر ندا نے ديا جائے ۔ تا ہم بي قاعدہ اكثر بيہ ورئے جہنی جہنی خض بھى اپنے گناہ كى وجہ سے و نيا ميں جتلائے عذاب ہوتا ہے جیسے ماں باپ كا نافر مان اور بھى غير محبوب بھى آزمائش ميں جتلاء كيا جاتا ہے تا كہ وہ بے صبرى كى وجہ سے مزيد پستى ميں چلاجائے جيے فرعون والوں پر طرح طرح كے عذاب آئيں مگر انہوں نے عبر سے نہيں كيڑى بلكہ پورى قوم مزيد بھڑى ۔

"قالت عائشة مارأيت الوجع على احداشدّمنه على رسول الله صلى الله عليه وسلم". (حسن صحيح)

عرب وجع بیماری کو کہتے ہیں پس مطلب سے ہوا کہ میں نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے مرض سے زیادہ سخت بیماری کسی کی نہیں دیکھی ہے،اس کی مزید وضاحت اگلی حدیث سے بآسانی معلوم ہو سکتی ہے۔

حدیث آخر: حضرت سعدین ابی وقاص سے روایت ہے کہ میں نے بوچھاا سے اللہ کے رسول!
سب سے مشکل آ زمائش کن لوگوں کی ہوتی ہے؟ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا انبیاء کی پھرزیا دہ افضل کی ، آ دمی
اپنے دین کے مطابق آ زمایا جاتا ہے لیس اگراس کے دین میں صلابت (پچنگی) ہوگی تواس کا امتحان بھی سخت
ہوگا اورا گراس کے دین میں کمزور کی ہوتی ہے تو دین (کی قوت وضعف) کے بفتر راسے آ زمایا جاتا ہے لیس ابتلاء
آ دمی کے ساتھ لگار ہتا ہے تا آ نکہ اسے چھوڑ دے زمین پر چلنا ہوا دراں حالیہ اس کا کوئی گناہ (باقی) نہیں رہتا۔

مطلب یہ ہے کہ اللہ والے تکلیفات سے اللہ کی طرف مزید جھکتے ہیں اس لئے ان کے رقع درجات کے پیش نظران کوتکلیفات میں بہتلا کیا جاتا ہے کیونکہ مصیبت اوراس پر صبر کی بدولت آدمی کو جنت کے اس درجہ تک پہنچانا مقصود ہوتا ہے جہاں وہ اپنے عمل کی وجہ سے نہیں پہنچ سکا اگر چہ مقربین کے اعمال انتہائی عالی ہوتے ہیں کیکن اللہ کے قرب اور جنت کے درجات بھی بے شار ہیں تو پھھا عمال کی وجہ سے اور پھھ آزمائش کی بناء پر بطور فیبی مدد کے حاصل کے جاتے ہیں گویا آزمائش بھی سیرالی اللہ اور سلوک کے زمرہ میں آتی ہے لیں جولوگ فنانی السیر ہیں ان کی آزمائش ان کی شمان کے مطابق یعنی خت ہوتی ہے تا کہ ان کی سیراور سفر ورفقار مزید تیز ہو، جبکہ ان استعداد کے مطابق مکلف بناد سے جاتے ہیں اور جولنگڑ ہے ہوتے ہیں وہ حکیا اس مقابلے میں شریک بھی نہیں کر دیئے جاتے جبکہ اند صفح آ ایک قدم بھی نہیں چل سکتے البتہ لنگڑ اکوشش تو گویا اس مقابلے میں شریک بھی نہیں کرتا ہے اورا ہے عمل کے مطابق نمبر حاصل کرتا ہے جبکہ اند صفح آ ایک سیروروں میں شار بھی نہیں ہوتا۔

باب ماجاء في ذُهاب البصر

(نابیناہونے کا ثواب)

"ان الله يقول: اذا أخذت كريمتى عبدى في الدنيا لم يكن له جزاء عندى إلا الجنة". (غريب)

حدیث قدی ہے اللہ فرماتے ہیں کہ جب میں اپنے بندے کی دونوں آنکھوں (کی بینائی) لیتا ہوں دنیا میں قومیرے یاس اس کی جزاء جنت کے سواکوئی اور چیز نہیں۔

تشریک: قسولید: "ذهباب" بفتح الذال ختم ہونے اور چلے جانے کو کہتے ہیں جبکہ بکسرالذال بارش کوکہا جاتا ہے۔

 ارشادہ: "من آفھیٹ حینیئی فصیرواحتسب لم ارض له ثواباً دون الجنة "لین میںجس کی دونوں آکھیں ختم کروں یعنی نابینا بنادوں اوروہ اس پرمبر کرے اور ثواب کی نیت کرے تو میں اس کے لئے جنت سے کم ثواب پرراضی نیس ہوں۔ (حسن میچ)

صديث آخر: - "بَوَد اهل العافية النه" ينى قيامت كدن جبمصيبت زده لوكول كو (ب صاب) ثواب دياجائ كاتو (دنيايس) تندرتى سرب والتيمناكرين كدكاش ان كى كمالول كودنيايس فينجيول سي كاث ديا بوتا ـ

یدروایت اگرچ عبدالرخمن بن مَغراء کی وجہ سے قوی سندسے ثابت نہیں بلکہ امام ترفدیؓ کے بقول غریب ہے تاہم اصولی طور پریہ طے ہے کہ ہرمصیبت پرصبراورا حساب اجرجزیل کا سبب ہے اللہ عزوجل کارشادہ نے 'اِنسمایو فیی الصابرون اجر هم بغیر حساب ''(زمرآیت:۱۰)اور پھرکون ہوسکتا ہے جو ہے صاب اور پھرکون ہوسکتا ہے جو ہے صاب اور کھرکر شک بلکتمنی نہرے؟

حدیث آخر: - "مامن احدید موت إلاندم المخ" کوئی شخص ایمانیس ہے جومرتے وقت نه پچتائے محاب نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! اس کے افسوس (صرت) کرنے کی کیا وجہ ہے؟ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اگروہ نیکوکارہ تو افسوس کرے گا کہ اس نے زیادہ عمل کیوں نہیں کیا، اورا گر بدکردار ہوتو وہ اس پر ندامت کرے گا کہ وہ برائی سے باز کیوں نہ آیا (یعنی کیوں قبتا نب نہ ہوا)۔

بیروایت بتفری امام ترفدی ضعیف ہے البتہ بیدامریقین ہے کہموت کے وقت نشه اُتر جاتا ہے اور حقیقت ہرایک پر منکشف ہوجاتی ہے تفصیل مطلوب ہوتوا حیاء العلام الله " وجمة الله البالغه لشاہ ولی الله " کی طرف مراجعت کی جائے۔

صدیم آخر: قوله: "یخوج فی آخرالز مان رجال یختلون الدنیابالدین الغ" آخرز ماند میں ایسے اوگر آئیں مے جودنیا کودین کے بدلے دھوکے سے کما ئیں مجے اوگوں کوفریب دینے کے لئے بھیڑی کمالیں نری دکھانے کی خاطر پہنیں مجان کی زبانیں شکر سے زیادہ میٹھی ہوں گی جبکہ ان کے دل بھیڑیوں کے دلوں کی مانند (سخت) ہوں مجے ،اللہ فرماتے ہیں: کیاتم میرے ساتھ غرور کرتے ہویا میرے سامنے یہ جرائت کرتے ہو، پس میں اپنی شم کھا تا ہوں کہ میں ایسے لوگوں پران ہی میں سے ایسا فند ضرور بھیجوں گاجو بُر د بار خفس کو بھی جیرت زدہ کردے گا۔

قوله: "یختلون" ختل دراصل دھوکہ دہی کو کہتے ہیں پہلفظ بھیڑ ہے کے لئے اس وقت استعال ہوتا ہے جب وہ چھپ کر شکار پرحملہ کرے یہاں مرادیہ ہے کہ بیلوگ اسلامی شعارا پنا کراس سے دنیا شکار کرنا چاہیں گے ، چنا نچہ وہ بھیڑی کھال سے بناہوالباس پہنیں گے جسے پوشین جوزاہدلوگ پہنا کرتے ہیں تا کہ وہ لوگوں کو اپنے دینداروزاہدہونے کا باور کراسکیں ، بیتوالفاظ کا ظاہری مطلب ہے اس کا دوسر امطلب ہیہ کہ یہ کنا ہیہ فاہری نری اورخوش اخلاتی سے اور'نمن اللین "قیدسے اس معنی کی تائید معلوم ہوتی ہے یعنی وہ دنیا داروں سے پیش آنے میں ہوئے شکا ندازاور میٹی اور نرم بیان ہوں گے جس سے وہ دنیا داروں کے دل اپنی طرف ماکل کرنا چاہتے ہوں گے ، مگر یہ میٹھا اندازاور میٹھی زبان ایک تکلف کے سوا کچھ نہ ہوگا کیونکہ اندر سے وہ بالکل بھیڑ سے کی طرح خراب ہوں گے ، چونکہ ان کا یہ فیل انتہا کی خودغرضی ، دھو کہ دبی اور قساوت قلبی پڑی ہے اس لئے اللہ عزوجل نے خراب ہوں گے ، چونکہ ان کر وں گا جس سے خراب ہوں گے ، چونکہ ان کر وں گا جس سے خراب ہوں گے ، چونکہ ان کر وں گا جس سے خراب ہوں گے ، چونکہ ان کر وں گا جس سے خراب ہوں گے ، چونکہ ان کر وں گا جس سے اس کے اللہ عزوجل نے دیال کی قسم کھا کر فر ما یا کہ ایسے مغروروں اور الی جسارت کرنے والوں پر ایسا فتہ ناز ل کروں گا جس سے بیجے کی صورت عالم ونتھ ندی کی جو میں ہی نہیں آئے گی چہ جائیکہ عام آدی کو تجھ آئے۔

اگلی حدیث کامضمون بھی اس سے ملتا جلتا ہے تا ہم اس میں بجائے شکر کے مسل یعنی شہد کا ذکر ہے یعنی ان کی زبانیں شہدسے زیادہ میٹھی اور دل ایلواسے زیادہ کڑو ہے ہوں گے چونکہ ایلواشہد کو فاسد کرتا ہے اس لئے ان کو کوں کی بیشیرین زبانی ان کے کڑوے دلوں کے سامنے کسی طرح مفید ثابت نہیں ہوں گی۔

قوله: "لُاتِيحَتْهم" بروزن لَاقيمنَّهُم، اتاح يتيحُ بابافعال عنتكم بانون تُقيله كاصيغه ب بعن بلاقيدُرُنَّ لهم ولا تُولُن بهم يعن مين ضروران ك لئيمقدركرون گاياضرورنازل كرون گاالخ (حسن غريب)

منعبیہ: ان آخری دونوں حدیثوں کا ترجمۃ الباب'' ذھاب البھر''کے ساتھ کوئی مناسبت نظرنہیں آتی اس لئے بعض شارعین کی رَائِے میں بیدونوں حدیثیں کسی مستقل باب کے تحت ذکر ہوئی ہیں مگر ناسخ کے قلم سے وہ باب مع الترجمہ یا اگر بلاتر جمہ تھا تو وہ ساقط ہوا ہے۔واللہ اعلم وعلمہ اتم واحکم

باب ماجاء في حفظ اللسان

(زبان کی حفاظت کابیان)

"عن عُقبة بن عامرقال قلتُ يارسول الله ماالنجاة؟قال: املِك عليك لسانك

وَلَيْسَعَكَ بِيتُك وأَبِكِ على خطِيئتِك". (حسن)

حضرت عقبہ بن عامرض اللہ عنہ سے روایت ہے فرماتے ہیں کہ میں نے پوچھاا سے اللہ کے رسول! نجات (کاسبب) کیا ہے؟ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اپنی زبان کواپنے قابویس رکھاور تیرا گھر تیرے لئے کشادہ موتا جا ہے اور یہ کہ تواپنی خطاء پر رویا کر (یعنی نادم مواکرو)۔

مدیث الی سعید خدری رضی الله عند: ۔ جب آدی صبح کرتا ہے تو (اس کے) سارے اعضاء زبان سے عاجز اند اپیل کرکے کہتے ہیں: تو ہمارے خاطر اللہ سے ڈرو کیونکہ ہمارا دار دیدار جھھ پرہے اگر تو سیدھی رہے گ تو ہم بھی سیدھے رہیں گے اورا گرتو ٹیڑھی ہوجائے گی تو ہم بھی ٹیڑھے ہوجا کیں گے۔ (اخرجہ ابن خزیمۃ فی صبحہ)

قوله: "تكفو اللسان" تكفير بين بين بين الفاء بمعنى متواضع اور عاجز مونے كے ہے جوعموماً اس وقت موتا ہے جب میں کا تعظیم کو خور کھتے ہواس كے آگے سر جھكا كر شير ها كھڑ اموجائے۔ بيد مكالمہ بربان قال بعی ممكن

ہادر برنبانِ حال بھی ، چونکہ زبان تر جمان قلب ہاس لئے اعضاء اس سے درخواست کرتے ہیں تا کہ وہ ان کی بات کو بات باہر لے جاتی ہے تواس طرح دل تک بھی ہماری درخواست کہنا دے۔ تدبر

غرض کلام میں مجاز ہے ،تو جس طرح ملک کے سفیر پریدذ مدداری عائد ہوتی ہے کہ وہ کوئی الٹی سیدھی بات نہ کرے ورنہ سارا ملک مشکلات سے دوجا رہوگااس طرح زبان کو سمجھا دیاجا تا ہے کہ وہ نبی تکی بات سے ادھرادھر منحرف نہ ہو۔

حدیث سبل بن سعدر منی الله عنه: آپ سلی الله علیه وسلم نے ارشادفر مایا که چوشی مجھے اپنے دونوں جبڑوں کے درمیان (زبان) اور دونوں پیروں کے مابین (شرمگاہ کی حفاظت) کی صانت دی تو میں اسے جنت کی صانت دیتا ہوں۔ (حسن مجھ غریب)

قوله: "يتوكل واتوكل" مصرى ننخ مين "يتكفل واتكفل" بهالذاتوكل بمعى تكفل يعنى ذمه دارى كے ہے بخارى ميں "يضمن" كالفظ آيا ہے جو زيادہ صرتے ہے۔

چونکہ زبان اور شرمگاہ پر قابو پانا بہت ہی دشوار ہے اس لئے جوشی ان دونوں پر قابو پانے میں کا میاب ہوگا وہ دوسر ہے اعضاء پر قابو پانے میں بطریق اولیٰ کا میاب رہے گا اور ظاہر ہے کہ ایس شخص فرشتہ صفت ہوتا ہے جو جنت میں اولا یا عالی درجات حاصل کرنے میں کا میاب رہتا ہے اور کا میابی بھی ایسی جس کی آپ سلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی کا مخاکش ختم ہوجاتی ہے چونکہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم کا نطق بھکم خداوندی ہوتا ہے اس لئے کوئی اعتراض وار ذبیس ہونا چاہئے کہ اللہ پرتو کوئی چیز واجب نہیں پھر صفانت کا کیا مطلب ہے ہے کہ اللہ نے اس کا وعدہ فرمایا جس کی عادت ہے کہ وہ این اوعدہ فرمایا جس کی عادت ہے کہ وہ این اوعدہ ضرور پورا فرماتے ہیں آگر چہ واجب نہیں ہوتا۔ تد بر

بعض حفزات نے دونوں جبڑوں کے درمیان کو پورے منہ سے کنایہ بنایا ہے تا کہ کھانے پینے کوشامل ہوجائے مگراس کی ضرورت نہیں کیونکہ اولاً تو بغیر زبان کے کھایا پیانیں جاسکتا ٹانیا یہاں ان معظم الامور کا تذکرہ ہے جومشکل ہوں جبکہ حرام غذاء سے پر ہیز آسان ہے اس لئے اس کا درجہ مؤخر ہے۔ تدبر ثانیا۔

قوله: "وِقايه" بچانے کو کہتے ہیں۔

حديث سفيان بن عبداللا تقفى رضى الله عنه: فرات بي يس في عرض كياا الله كرسول!

مجھے ایسی چیز (بات یا عمل) بتادیجے جے میں مضبوط پکڑلوں آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرما یا کہو ' رہے اللہ ''میرا رب اللہ ہے پھراسی پرقائم رہو، فرماتے ہیں میں نے عرض کیاوہ کیا چیز ہو سکتی ہے جس سے آپ میرے بارے میں زیادہ خوف محسوس فرماتے ہیں ؟ تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنی زبان پکڑلی پھر فرمایا '' اس' (سے)۔ (حس صبحے)

استقامت علی الدین ایک مشکل ترین ذ مدداری ہے اس کا پوراحق اس وقت تک اوانہیں کیا جاسکا جب تک آدمی اپنی خواہشات کو بالائے طاق رکھ کراپی تمام تر جدوجہداللہ کی مرضی میں ندلگائے اس لئے جب نی صلی اللہ علیہ وسلم سے محابہ نے فرمایا 'قداسس ع الیک الشیب ''یعنی آپ پر برد جا ہے کہ آثار جلدی طاہر ہوئے تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ' شیبت نی ہو دو اخواتھا '' کیونکہ سورہ ہود میں تھم تھا ''فاستقم کما اللہ علیہ وسلم خواص بی کا میں باب کی حدیث اور اس جیسی احادیث قرآن کی آبیت 'ان الذین قالو اربنا الله فیم استقامو ا' اللیة کے مطابق اور جوامع الکیلم میں سے ہیں۔

حدیث ابن عمرض الله عنهما: الله کے ذکر کے علاوہ زیادہ باتیں مت کرواس لئے کہ الله کے ذکر کے علاوہ زیادہ باتیں مت کرواس لئے کہ الله کے ذکر کے موازیادہ بولنادل شخت ہونے کا سبب ہے اور بلاشبہ الله (کی رحمت) سے زیادہ دورلوگوں میں سے وہ مخض ہو۔

قوله: "قسوة للقلب" امامرازی رحمه الله تغییر کمیر میں تحریفر ماتے ہیں کہ جو چیز جس مقصد کے لئے بنائی گئی ہواوروہ اس مقصد کو حاصل کرنے سے قاصر رہے تو اسے قاس کہتے ہیں چونکہ قلب کا نتات میں غور اور الله کے احکام کے آھے منقاد ہو کر تغییل اور پندو قسیحت قبول کرنے کے لئے پیدا کیا گیا ہے تو جب وہ اس مقصد اعلیٰ سے ہے جاتا ہے تو وہ قاس کہلاتا ہے زیادہ فضول گوئی اور خصوصاً غلط گوئی اس قسوة کا توی سبب ہے۔

راقم نے نقش قدم کامل میں زبان کی تباہ کاریوں اور قسوۃ قلبی پر تفصیل سے لکھا ہے تن شاء فلیراجع، پھر قلب سے مرادایک فیبی لطیفہ ہے جو قلب لینی ول کے اوپر عطائے ربانی کے طور پرودیعت کیا گیا ہے اصل ادراک اس کا ہوتا ہے۔

باب كى آخرى حديث: - نى پاك صلى الله عليه وسلم كى الميدام المؤمنين حضرت ام حبيبه رضى الله عنها سه روايت هم كرآ پ صلى الله عليه وسلم في فرمايا كه ابن آدم كى جربات اس كے خلاف جاتى ہے سوائے امر بالمعروف يا نبى عن المسكر يا الله كي ذكر كے - (حسن غريب)

روایت کاییرجمد که این آدم کی بربات اس کے خلاف جاتی ہے اس صورت پر محمول ہے کہ مدیث مبالغہ پر محمول بوجس کا مطلب یہ بنتا ہے کہ ذکورہ نینوں باتوں کے علاوہ تمام باتیں نقصان دہ بیں اس میں مباح بھی داخل ہے جس سے گویا سدذ رائع کے طور پردو کنامقصود ہے کیونکہ احتیاط کا تقاضا یہ ہے کہ مباح باتوں سے غلطی کے امکان کے پیش نظر پر بیز کیاجائے ، قبال الله تعمالی : یہا ایہا الله ین امنوا اجتنبوا کثیراً من المنظن ان بعض المطن إثم " (جمرات آیت: ۱۲) دیکھئے اس آیت میں بہت سے گمان کرنے سے روکا ہے حالا نکہ گناہ ان میں سے بعض ہوتا ہے دوسرا مطلب ہیہ کہ "لاک فہ" " کو نیسر ہے لینی علیہ سے مراد غیر مفید ہے اور ظاہر ہے کہ مباح اگر چم معز نہیں گئین مفید بھی نہیں ۔ تیسرا مطلب ہیہ ہے کہ کلام میں تقدیر ہے "کل مباح الله کا در خام وہ مباح کیوں نہ کے حالام ابن آدم حسرة علیه "اور ظاہر ہے کہ ذکورہ نینوں باتوں کے علاوہ تمام باتیں خواہ وہ مباح کیوں نہ ہوں موجب افسوس ہوں گی کم از کم اتنا افسوس تو ضرور ہوگا کہ ان کے بجائے اللہ کا ذکر کیا ہوتا یا پھر خاموش رہتا ۔

باب

"عن عون بن أبى جُحيفة عن ابيه قال اخى رسول الله صلى الله عليه وسلم بين سلمان وابى الدرداء فزارسلمان اباالدرداء فراى أمَّ الدرداء مُتَبَدِّلةً ،قال ماشانكِ مُتَبَدِّلةً؟ قالت: ان اخاكَ اباالدرداء ليس له حاجة فى الدنيا،قال فلماجاء ابوالدرداء قرّب اليه طعاماً فقال: كُل فانى صائم، قال ماانابِاكِل حتى تأكُل قال فاكل فلماكان الليل ذهب ابوالدرداء ليقوم فقال له "فَمُ "فنام فلماكان عندالصبح فقال له ليقوم فقال له "نَمُ "فنام فلماكان عندالصبح فقال له سلمان قُمِ الأنَ فقامافصَلَّيافقال: ان لِنفسك عليك حقاً ولربك عليك حقاً ولِضيفك عليك حقاً وان لِاهُ لِكَ عليك عليك حقاً فاعطِ كل ذى حق حقه فاتياالنبى صلى الله عليه وسلم فذكر اذالك له فقال صدق سلمان ". (صحيح)

حضرت ابو بحیفه (وهب بن عبدالله) رضی الله عنه سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیه وسلم نے سلمان (فارسی) اور ابودرداء کی زیارت وسلم نے سلمان (فارسی) اور ابودرداء کی زیارت را ملاقات) کرنی کے لئے آئے تو ام درداء کوشنگی میں دیکھا، پوچھا تیری بیھالت کیسی؟ کہ پُرانے میلے کچیلے کیٹرے بہن رکھے ہیں، وہ کہنے گئی آپ کے بھائی ابودرداء کودنیا کی کوئی حاجت نہیں ہے۔ فرماتے ہیں کہ پس

جب ابودرداء آئے تو انہوں نے حضرت سلمان کے سامنے کھا نارکھااور فر مایا آپ کھائے کہ ہیں روزہ دارہوں سلمان نے کہا ہیں کھانے والنہیں جب تک آپنہیں کھائیں گے زمایا تو ابودرداء نے کھایا لیس جب رات ہوئی تو ابودرداء اُٹھ کرجانے گئے تا کہ نماز پڑھے تو سلمان نے ان سے کہا سوجائیں لیس وہ سوگئے ، پھروہ دوبارہ جانے گئے تا کہ نماز پڑھے انہوں نے فر مایا سوجائیں وہ بہت کے کا وقت قریب ہواتو سلمان نے ان سے کہااب اُٹھ جا کین ، چنانچ دونوں نے کھڑے ہو کر نماز پڑھی ، پھر حضرت سلمان نے فر مایا بے شک آپ برآپ کا نسس کا حق ہے ، آپ کے درب کا حق ہے ، اور آپ کے مہمان کا بھی حق ہے اور بے شک آپ برآپ کے گھر والوں کا بھی حق ہے ، الہذا ہر حق والے کے حق کوادا سے بچنے پھر دونوں نی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور اس واقعے کا دونوں نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم سے تذکرہ کیا ، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا :

Y+0

تشری : ابن قیم رحمہ اللہ نے زادالمعادیں تحریفر مایا ہے کہ جمرت کے بعد جب نی پاک صلی اللہ علیہ وسلم مجد نبوی اور حفزت عائشہ اور حضرت سودہ رضی اللہ عنہما کے نجر تین کی تغییر سے فارغ ہوئے تو مہاجرین وافعا ہرائ چارہ) فرمائی جن کی تعداد نوے 20 تقی آ دھے مہاجرین اور آ دھے انصار سے پھروہ واقعہ بدر تک ایک دوسرے کے وارث بھی بنتے رہے گر جب بی آیت 'و او لسوا الار حسام افسار سے پھروہ واقعہ بدر تک ایک دوسرے کے وارث بھی بنتے رہے گر جب بی آیت 'و او لسوا الار حسام بعضہ ماولے نی بسعض ''(احزاب) نازل ہوئی تو تو ارث خونی رشتہ کی طرف لوٹا دیا گیا۔ (مخضر زادالمعاد ص: ۱۵ افسل فی بناء المسجد) چنا نچہ حضرت سلمان رضی اللہ عنہ ای بناء پراپ بھائی کے گھر ملا قات کرنے اور خبر گیری کی غرض سے تشریف لے گئے چنا نچہ دیکھا کہ ان کی بھا بھی گھر کے عام کپڑے سے بہنے ہوئے تھی۔

قول د: "متبدلة" بسيغة اسم فاعل تشديد ذال كساته يذلة كام كان ك كررول كوكت بيل چونكه شادى شده عورت كوگھر ك كام سے فارغ ہونے پراورخصوصاً جب شوہر ك آن كاوقت ہوجائے ذينت اعتيار كرنى چاہئے بايں طور كه صاف ہوكر اورا گرہو سكے تو يخ گرے بهن كر بناؤسنگار كرے خصوصاً عرب عورتوں ميں شوہر كا بہت زياده كحاظ ركھنے كا دستور تفاجبكه ام الدرداء رضى الله عنها پر آرائش نظر نہيں آربى تقى اس لئے حضرت سلمان شنے توجب كرك اس كى وجه بوچى ،ام الدرداء في جوجواب ديا ہے كه ابوالدرداء كو دنيا يعنى ديوى عورتوں وغيره ميں كوئى دلچيى نہيں توبيا ايك شم كاشكوه بھى ہوسكا ہے اور بيانِ عذر بھى ،كه جب وه ميرى طرف كوئى خاص رغبت نہيں ركھتے تو پھر بناؤسنگاركا كيا فائده؟؟؟

بخاری کی روایت یس بے 'فجاء ابو الدرداء فَصَنَعَ له طعاماً فقال کُل فانی صائم''۔ (ج:اص:۲۲۳ قد یک کتب خانه)

جواب میں حضرت سلمان فی ان کوشم دے کر فر مایا '' أقسمتُ علیک لَتُفطِرَن '' جیسا کہ بزار کی روایت میں ہے یعنی میں تمہیں فتم دے کر کہتا ہوں کہ آپ روزہ کھولیں مقصدیہ تھا کہ ایک توان کواعتدال فی العادت والعبادت پرلا ناتھا اور دوم حضرت ام الدرداء کی شکایت کا از الہ تھا جیسا کہ حدیث کے اخیر میں تصریح ہے، نیز اصل مقصد تکثیر عبادت نہیں بلکہ اللہ کی رضا ہے۔ تدبر

باب

"عن رجل من اهل المدينة قال كتب معاوية الى عائشة ان أكتبى إلَى كتابا توصينى فيه ولاتكثرى عَلَى ،قال فكتبت عائشة الى معاوية اسلام عليك امابعد! فانى سمعت رسول الله عليه وسلم يقول: من التمس رضى الله بسَخط الناس كفاه الله مؤنة الناس ومن التمس رضى النه بسَخط الناس بسَخطِ الله وكله الله الى الناس والسلام عليك.".

مدیندوالوں میں سے ایک شخص روایت کرتا ہے کہ حضرت معاویہ نے حضرت عائشہ کوخط لکھا کہ آپ جھے ایک خط لکھے جس میں مجھے وصیت (وقعیحت) کیجئے گا اور زیادہ نہ لکھئے گا (تا کہ یاد کرنا آسان ہو) رادی نے کہالیس حضرت عائشہ نے حضرت معاویہ کو کھے بھیجاتم پرسلامتی ہو بعداس کے بچھشک نہیں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے بیفر ماتے ہوئے ساہے کہ جس نے لوگوں کے ناراضگی کی پرواہ کئے بغیر اللہ کی خوشنودی تلاش کرنا چاہی تو اللہ تعالی اس کے لئے لوگوں کے تعاون کی طرف سے کافی ہوجاتا ہے (یعنی غیب سے اس کی مدد کرتا ہے) اور جس نے اللہ کی ناراضگی مول کرلوگوں کوخوش کرنے کی کوشش کی تو اللہ تعالی اسے لوگوں کے حوالے کردیتا ہے تم پرسلامتی ہو۔

تشری : یعنی جس شخص کی نظراللہ پر ہوتو اللہ تبارک دنعائی اس کواسباب اور مخلوق کے ضرر ہے محفوظ بنادیتے ہیں اگر چہ دنیا وار الاسباب ہے اور پھی نہ بچھ اسباب پر تکید کرنا پڑتا ہے مگر اسباب پراعتا دکرنے والے کو جتنے قوی اسباب سے فائدہ ہوتا ہے اس مردمومن کواس سے کہیں گنا کم سے فائدہ ملتا ہے وہ جب تک سب سے بڑے ہیتال جا کر بڑے واکٹر سے علاج نہ کرائے اسے فائدہ نہیں ہوتا جبکہ اس کوعام اور معمولی حیلہ سے بڑے ہیتال جا کر بڑے وہ اکثر سے علاج نہ کرائے اسے فائدہ نہیں ہوتا جبکہ اس کوعام اور معمولی حیلہ

اختیار کرنے سے فائدہ ہوتا ہے وعلی القیاس ،ای طرح اسباب اور مخلوق پر نظرد کھنے والے کو جتنا نقصان کمزور ترین سبب سے ہوٹ ہیں ہوتا آپ غور فرما کیں اسباب پر یفین ترین سبب سے ہوٹ ہیں ہوتا آپ غور فرما کیں اسباب پر یفین رکھنے والے دعا کیں ہمی مائلے ہیں محرقیول نہیں ہوتیں کیونکہ ان کی زبان پر یارت تو ہوتا ہے مگر ان کامشن لوگوں کوراضی رکھنا لیعنی اسباب تلاش کرنا ہوتا ہے جبکہ اللہ والوں کے مریض کی شفایا بی اور بہت سی مشکلات محض دعا ول سے حل ہوجاتی ہیں ۔غرض حکمر ان کے لئے بھی اپنی نظر اللہ ہی کی رضا پر کھنی چا ہے کہ حکوشیں عارض ہوتی ہیں ۔ضاحب تحقد نے امام منذری کی دوالتر حیب ''سے نقل کیا ہے کہ این حبان نے اپنی سے میں اس صدیت کا صرف مرفوع حداث کے اپنی حجا ہیں ہے روایت غیر مرفوع آئی ہے۔



ابواب حيفة القيمة

(احوال قيامت كابيان)

قیامت کی وجہ تسمیدایک بیربیان کی گئی ہے کہ اس روز لوگ میدانِ محشر میں کھڑ ہے ہی کھڑے رہیں گے اس لیے قیام کی وجہ سے اس کو قیامت کہتے ہیں گو کہ مقربین کوجلد حسب درجات مختلف نشستوں پر بٹھا دیا جائے گا۔ جب احکام ودیگر متعلقہ مباحث سے فارغ ہوئے تو قیامت اور جنت ودوزخ کے بیان کا آغاز فرمایا۔

باب ماجاء في شأن الحسا ب والقصاص

(بدلداورحماب کی کیفیت کے بیان میں)

"مامنكم من رجل إلاسَيُكلِمه رَبّه يو م القيامة وليس بينه وبينه تُرجُمان، ثم ينظرا يسمَنَ منه فلايرى شيئاً الاشيئاً قدمه ثم ينظرا شأم منه فلايرى شيئاً الاشيئاً قدمه ثم ينظر الله عليه وسلم :من استطاع منكم ان يقى وجهة النار ولوبشِقِ تمرة فليفعل ". (حسن صحيح)

نہیں تم میں سے کوئی آدمی مگراس کارب قیامت کے دن ضروراس سے بات فرمائیں گے جب کہ اُس کے اوراس کے درمیان کوئی ترجمانی کرنے والانہ ہوگا، پھروہ شخص اپنی دائنی جانب دیکھے گا تواسے کوئی چیز نظرنہ آئے گی سوائے اس چیز کے جواس نے آگے (پہلے) بھیجی ہوگی، پھروہ اپنی بائیں طرف دیکھے گا تو آگے نظر نہیں آئے گاعلاوہ اس کے جواس نے آگے بھیجا ہوگا پھروہ اپنے سامنے کی طرف دیکھے گا تو آگ استقبال کرتی ہوئی (نظر) آئے گی، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: تم میں سے جوابیا کرسکے کہ اپنا چرہ آگ سے بچاسکے اگر چہ کھور کے نکر سے ہی ہوتو وہ ایسا (ضرور) کرلے۔

تشری :۔اس حکم سے وہ لوگ مشٹیٰ ہیں جو بغیر صاب کے جنت میں داخل ہوں گے۔

قول ان بین کرے اس میں " و مخف جوا یک زبان کا ترجمہ دوسری زبان میں کرے اس میں "ت" " پوفتہ اورضمہ دونوں جائز ہیں جبکہ جیم مضموم ہے، لین قیامت کے دن مرشخص اپنے رب کے سامنے رو بروپیش کیا جائے

گاورخلاصی کی کوئی صورت بھی نہیں ملے گی سوائے ان نیکیوں کے جواللہ تبارک وتعالی کی رضا کا سبب ہیں چنانچہ اس گفتگو کے دوران آدمی دائیں بائیں دیکھے گا کہ کوئی راہ نجات ہے؟ یا کوئی دادری کرنے والا ہے؟ تو کوئی صورت نظر نہیں آئے گی ہاں اگر کوئی نیک عمل کیا ہوگا تو وہ آدمی کے دائیں بائیں کھڑا ہوگا'' ایمن واشا م'' دونوں منصوب بنا برظر فیت ہیں بمعنی میین و ثمال کے ہیں اور''منه '' کی خمیر کواگر چہموقف کی طرف راجع کرنا صحیح ہے مگر'' نہلے او جہم ہوتا ہے کہ مراداس فیض کے مین و ثمال ہے لہٰذا ضائر کا مرجع و ہی فیض لینا اصح بلکہ شعین ہے۔

سامنے آگ ہونے کا مطلب سے ہوسکتا ہے کہ محشر کے دائیں بائیں آگ ہی آگ ہوگی اورآ گے بل صراط ہوگا جس کے پنچ بھی آگ ہوگی اورنجات کی واحد صورت سے ہوگی کہ وہ بل صراط کوعبور کر ہے۔ اورعبور کی صورت سے کہ وہ نیک عمل کی طاقت اپنے ہمراہ لے کرجائے خصوصاً صدقہ آگ بجھانے ہیں بانی کی طرح ہے اگرزیادہ نہ ہو سکے تو کھورکا ایک کلڑالیعنی معمولی چیز کا صدقہ کرے تاکہ آگ کی لیٹ سے نی سکے، چونکہ آدمی عموا آفت کے وقت اپنے منہ اور چرے پر غیراختیاری طور پر ہاتھ رکھ کراسے بچاتا ہے اس لئے حدیث میں آفت کے وقت اپنے منہ اور چرے پر غیراختیاری طور پر ہاتھ رکھ کراسے بچاتا ہے اس لئے حدیث میں آفت کے وقت اپنے منہ اور چرے پر غیراختیاری طور پر ہاتھ رکھ کراسے بچاتا ہے اس لئے صدیث میں آفت کے وقت اپنے منہ اور پر مراد پوراجسم ہے۔

قوله: "فلمافوغ و کیع من هذاالحدیث النے" ابوالسائب فرماتے ہیں کہ ایک مرتباہام وکی نے ہم سے بیروایت بیان فرمائی اور جب تحدیث سے فارغ ہوئے تو فرمایا کہ یہاں جو خراسانی طلبہ ہیں وہ اس روایت کوایٹ علاقہ میں بیان کرنے میں تواب کی نیت کریں بینی تواب کما کیں کیونکہ خراسان پر ہم بن صفوان مبتدع کا اثر ورسوخ زیادہ ہے اور جبمہ لوگ اللہ تبارک وتعالی کی صفت کلام کے مکر ہیں جبکہ اس حدیث میں کلام باری تعالی کی تصریح کی گئی ہے تواس سے ان کی بدعت نظریہ کی تروید کرے تواب حاصل کریں بینی دگنا اجرو تواب، ایک بیانِ حدیث کا اور دوسرافرقہ باطلہ کے دعم کی تردید کا۔

حدیث آخر: حضرت عبداللہ بن مسعودرضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ قیامت کے دن آ دی کے قدم اپنے رب کے پاس سے ملنے نہ پائیں گتا آ نکہ اس سے پانچ خصلتوں کے بارے میں نہ پوچھا جائے۔(۱) اس کی عمر کے متعلق کہ سمقصد میں گذاری ہے؟ (۲) اوراس کی جوانی کے بارے میں نہ پوچھا جائے۔(۱) اس کی عمر کے متعلق کہ سمقصد میں گذاری ہے؟ (۲) اوراس کی جوانی کے بارے میں کہ اسے کہاں سے حاصل بابت کہ س مشغلہ میں لگا کرختم کی ہے؟ (۳) اوراس کے مال کے بارے میں کہ اسے کہاں سے حاصل کیا ہے (س) اورکس کس مدیس خرچ کیا ہے؟ (لیمن حلال فریعہ سے کمایا ہے یا حرام سے اور جا تر طریقے سے کیا ہے (س) اورکس کس مدیس خرچ کیا ہے؟ (لیمن حلال فریعہ سے کمایا ہے یا حرام سے اور جا تر طریقے سے

خرج كياب ياناجائز؟)(٥) اوريك ايغلم بركتناعمل كيابي؟_ (غريب واشار المصنف الى ضعفه)

اس صدیث میں جوانی کاذکر عمر کے بعد بطور خاص ، قوت وطاقت کی فراوانی کی وجہ سے ہے کہ زندگی کے چھ میں بیدوہ زمانہ ہوتا ہے جس میں عبدیت کا ثبوت دینازیادہ اجرکا سبب ہے اور آخری سوال میں کلام کا اسلوب تبدیل کرنے میں علم کی اہمیت اور اس برعمل کرنے کے اہتمام کو اُجا گر کرنا مقصود ہے۔

باب کی آگلی حدیث جوحفرت ابوبرزہ اسلمی رضی الله عنہ سے مروی ہے اس میں یہی مضمون ہے البتہ اس میں شاہ ہے کیونکہ جوانی میں صحت اس میں شاہ ہونی کے بجائے جسم کاذکر ہے لیکن دونوں کا مطلب ایک ہی بنتا ہے کیونکہ جوانی میں صحت المجھی رہتی ہے عبادت کی طاقت زیادہ ہوتی ہے آگر تھوڑی بہت بیاری لاحق بھی ہوجائے تو وہ عبادت پراورمعمولات پراثر انداز نہیں ہوسکتی۔ (حسن سیحے) اس حدیث سے سابقہ حدیث کی تائید ہوتی ہے چونکہ اس کی سند سیحے ہوا۔

حدیث آخر: حضرت ابوہریہ رضی اللہ عنہ سے مردی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: کیاتم جانے ہوکہ مفلس کون ہوتا ہے؟ صحابہ کرام نے عرض کیا کہ ہم ہیں سے (بینی دنیا ہیں) تو مفلس وہ کہلاتا ہے جس کے پاس درہم (پیسے) اور سامان (بینی مال) نہ ہو، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: میری امت میں مفلس وہ ہے جو قیامت کے دن نماز، روزہ اورز کو ق لے کر آئے گاچنا نچہوہ پیش ہوگا دراں حالیہ اس نے کسی کوگا لی دی ہوگی اور کسی پر زناوغیرہ کا الزام لگایا ہوگا اور کسی کا مال کھایا ہوگا (بینی ناجا تز طریقے سے) اور کسی کا خون (ناحق) بہایا ہوگا اور کسی کو (بلاوجہ) مارا ہوگا ہیں وہ (شخص) بیٹے جائے گا تو وہ آکر بدلے میں اس کی نیکیوں میں سے لے لے گا ہیں آگر اس کی نیکیاں ختم ہوجا کیں قبل اس کے کہ اس کے ذری کے دیا وہ پر ڈالے اس کے کہ اس کے ذری کے دیا وہ پر ڈالے جائیں گاراس کے دور اس کے اور پر ڈالے جائیں گاراس کے دور کو میں بھینکا جائے گا۔ (حس صحیح)

یے صدیث مسلم شریف میں بھی ہا ام نوویؒ نے اس کی تشری میں اکھاہے کہ جس کے پاس مال و متاع نہ ہووہ حقیقی مفلس نہیں کیونکہ دنیوی غربت وافلاس تو عارض ہے وہ جلدی ختم ہوجا تاہے یا مالداری سے یا پھرموت سے جبکہ حقیقی مفلس وہ ہے جو قیامت کے دن اپنی تمام نیکیوں سے محروم کردیا جائے گا اور خالی ہاتھ بیٹھ جائے گا پھرا مام مازریؒ نے فقل کیا ہے کیفض مبتد عہ نے اس صدیث کوفر مان باری تعالی 'ولائے و وزد وزد قوزد کا خری '' (فاطر آیت ۱۸) سے معارض قرار دیا ہے گران کا موقف غلط ہے اوران کی جہالت واضح ہے کیونکہ اس

مفلس کواینے بی مظالم کی پاداش میں بیخمیازہ بھکتنا پڑے گانہ کہ کسی اور کی۔ (نووی برسلم ص: ۲۰۳۰ج:۲ باب تحریم الظلم ، کتاب البروالصله والا دب)

حضرت گنگوہی کو کو ہے میں فرماتے ہیں کہ جس طرح دنیا میں وہ مفلس زیادہ کری حالت میں ہوتا ہے جو پہلے امیر ہواور پھر مفلس بن جائے اس طرح بیخض جب اپنی نیکیوں سے ہاتھ دھو بیٹھے گا تو اسے بخت تکلیف ہوگی۔(اس اذیت اور رنج کی مثال نہیں ملتی)

حدیث آخر: - "رَحِم اللّه عبداً المنح" الله السبند پردم فرمائیں جس پرکسی (مظلوم) کا (بدله) ظلم باقی ہوخواہ آبرو سے متعلق ہو یا مال سے، پس وہ (ظالم خص) اس مظلوم کے پاس جا کراس سے بل از ربدلہ) ظلم باقی ہوخواہ آبرو سے متعلق ہو یا مال سے، پس وہ (ظالم خص) اس مظلوم کے پاس جا کراس سے بل ان مؤاخذہ معاف کرائے (بعنی موت سے پہلے پہلے) جہاں (قیامت میں) نہ دینارہوگا اور نہ بی درہم، (جس کے ذریعہ جس اواکر ہے) پس (وہاں) اگراس کی نیکیاں ہوں گی توان میں سے (اُن کاحق) وصول کیا جائے گا کے ذریعہ جس اور بیروہ بوجہ گناہ دوزخی بن جائے گا)۔ لیکن اگر نیکیاں نہیں ہوں گی تو وہ لوگ اس پراپنے گناہ لا ددیں کے (اور پھروہ بوجہ گناہ دوزخی بن جائے گا)۔ (حس صححے)

صديث آخر: "لَتُودُنُ العصفوق الخ" حقوق ضروراداك جاكي محتى كسينكون والى بكرى معينكون والى بكرى معينك والى بكرى معينك والى بكرى كابدله لياجائكا

قول ه: "لَتُودُّ الدحقوق" حقوق مرفوع بنائب فاعل ب قول المنه الاحوذى الدون المسلم المرحين "حقة الاحوذى المسلم الاحوذى كمتن برالفاظ المرحين "حتى يُقادلِلشاة المجَلجَاء من الشاة القرناء" (مسلم بابتح يم الظلم من : ٣٦٠ ج.٢) برجمى الى طرح ب يعنى بعين بعين جبول ، جلجاء بالمد بغير سينك والى بكرى كو كهته بيل جبكة ترناء قرن سے به معنى سينگول والى ملاعلى قارى في نه التو دن "كوجع معلوم كاصيغة قرار ديا ہے على بذاحقوق كومنعوب يرد هنا موكا مكر قريشتى "في معروف كوغير محكم كها ہے۔

اس مدیث کے مطلب میں علماء کا اختلاف ہے حضرت شاہ صاحب نے العرف الشذی میں ابوالحسن اشعری سے نقل کیا ہے کہ قصاص اور مجازات کا دارو مدارا فعال تکلیفیہ پرہے چونکہ جانور مکلف نہیں اس لئے یہ صدیث تمثیل پرمحمول ہوگی لیعنی ہر ظالم خص سے مظلوم کے لئے بدلہ لیا جائے گا پس قرناء سے مراد ظلوم ہے، جبکہ امام نووی اور حافظ ابوالخطاب مغربی فرماتے ہیں کہ حدیث اپنے ظاہر پرمحمول ہے اور ظاہر حدیث سے ناکہ تا تکہ ہوتی ہے امام نووی شرح مسلم میں فرماتے ہیں کہ مدیث جانوروں کے قیامت اور ظاہر حدیث سے ان کی تا تکہ ہوتی ہے امام نووی شرح مسلم میں فرماتے ہیں کہ بیحدیث جانوروں کے قیامت

کون زندہ ہونے پرصرت ہے اور قرآن کی آیت: 'واذا الوحوش حشرت ''(سورة النکویر آیت: ۵)
سے بھی اس کی تائید ہوتی ہے اور چونکہ بلاوجہ نصوص کو ظاہر سے نہیں چھیرنا چاہے اس لئے ظاہری مطلب ہی سیح
ہےر ہاجانوروں کا مکلف نہ ہونا تو یہ بدلہ بطور تھم تکلیمی کی خلاف ورزی پڑئیں بلکہ بطور مقابلہ یعنی برابری کے لئے
ہے۔ (ص: ۳۲۰ ج: ۲)

المستر شدعرض كرتا ہے كه واذا الوحوش حشوت "فخداولى وفائيد كے درميان كے چهر 6احوال ميں سے ايك واقعہ ہے وہر 6احوال ميں سے ہے اوران جانوروں كا جمع ہونا خوف كے مارے موگانه كدوبارہ زندہ ہونے كى وجہ سے ۔ تدبرواللہ اعلم

بابٌ

"اذاكان يوم القيامة أدنِيَتِ الشمسُ من العبادقِيدَ ميل او اثنتين قال سليم بن عامر: لاادرى أَى الميليين عَنى المسافة الارض ام الميل الذى يُكحل به العين؟ قال فتصهرُهم الشمس فيكونون فى العَرَقِ بقدراعمالهم فمنهم من يأخذه الى عَقِيبَيه ومنهم من يأخذه الى رُكبَتيه ومنهم من يأخذه الى حقويه ومنهم من يُلجِمُه البَاما فرايتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يشيربيده الى فيه اى يُلجمُهُ الجاما". (حسن صحيح)

جب قیامت کادن ہوگا تو سورج بقتر را یک یادومیل کے بندوں کے قریب کردیا جائے گاسلیم بن عامر راوی کہتے ہیں کہ میں نہیں جانتا کہ دونوں میلین میں سے کون کا قتم مراد لی ہے زمین کی مسافت یاوہ میل (سلائی) جس سے تکھول میں سرمدلگایا جاتا ہے۔ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا کہ سورج ان کو پھلاد ہے گا، پس وہ لوگ اپنے اپنے اعمال کے مطابق پینے میں ڈو بے ہوئے ہوں گے پس ان میں سے بعض ایسے ہو نگے جن کو پینے نے ایر ایوں تک گھیرلیا ہوگا، اور بعض ایسے ہو نگے جن کو دونوں گھٹوں تک پھنسایا ہوگا، اور ان میں سے کوئی ایسا بھی ہوگا کی جگہ تک ڈبویا ہوگا اور ان میں سے کوئی ایسا بھی ہوگا کہ اور ان میں سے کوئی ایسا بھی ہوگا جس کو پینے نے اگام دی ہوگ (یعنی لگام کی طرح منہ کے نچلے جسے تک پھنسا ہوگا اس معنی کو ظاہر کرنے کے لئے جس کو پینے نے لگام دی ہوگا (یعنی لگام کی طرح منہ کے نچلے جسے تک پھنسا ہوگا اس معنی کوظاہر کرنے کے لئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے منہ کی طرف اشارہ کیا چنا نچے راوی کہتا ہے کہ) میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو دیکھا جواسینے ہاتھ سے منہ کی طرف اشارہ کر ہے تھے یعنی لگام پہنا نے کی طرح۔

تشری : قوله: "قید" بکسرالقاف مقدار کو کیتے بین سلم کی روایت بین ہے دسمے دانے میل" کا بر بہی ہے کہ کیل سے مراد مسافت ہے۔ "صبھو" بمعنی بیسلے کے جبکہ "حقوہ" شلوار یا ازار با تدھنے کی جگہ جوعموماً ناف بنتا ہے، لگام سے مرادیہ ہے کہ پیندان کے مندتک آجائے گاتو جس طرح مند بین لگام بولنے سے مانع بنتی ہے ای طرح پیلوگ بھی بولنے سے قاصر بوں گے، اگلی روایت میں آدھے کا نوں تک کے الفاظ بین کیونکہ جب وہ لوگ مند میں پیند آنے کی وجہ سے او پردیکھیں کے تو پیننے کی سطح نصف کا نوں تک پہنچ جائے گی ،البتہ یہ حالت تمام لوگوں کی نہیں ہوگی بلکہ عصاق کی ہوگی انبیاء میں اسلام اوردیگر اولیاء واتقیاء بالانشین ہوں گے، اللہ ان کواس مصیبت سے محفوظ رکھے گا۔

وواعتراض: ایک اعتراض بدوارد ہوتا ہے کہ ایک ہی میدان میں پینے کی سطح میں اس طرح اون خی خی کیے ممکن ہے؟ حالانکہ پیپنہ مالیے سیّال مادہ ہے۔ اس کا ایک جواب توبیہ کہ آخرت کے واقعات میں بطورخرق عادت کے کوئی واقعہ دونما ہونا کوئی تعجب خیز بات نہیں کیونکہ وہ عالم دارالا سباب نہیں ہے ممکن ہے کہ وہ پینہ موم کی فرح ان کے کر دج مع ہوتا ہو، یہ جھی ممکن ہے کہ میدان محشر کی سطح ساری بکسال نہ ہو بلکہ اس وقت یا بعض مقامات پراس میں اتار چڑھا واورنشیب وفراز پایاجاتا ہوجیسے ساحل سمندر پر جوشف زیادہ آ کے ہوتا ہے وہ اس تناسب سے پانی کے اندرڈ وب جاتا ہے جبکہ خشکی کے قریب ترضی کم پانی میں ہوتا ہے ۔ غرض ہوسکتا ہے کہ دہ ہال کوئی نشیب میں ہواورکوئی نسبتا بلندی پراگر چے شروع میں سطح ہموار ہوگی۔

دومرااعتراض: بیہ کدوہاں سورج کہاں ہوگا؟ اور یہ کہا تنا قریب آجانا کشش تقل کے بموجب تصادم یا کم اذکم ملاپ کوستلزم ہے۔

اس کا جواب یہ ہوسکتا ہے کہ سورہ تکویر کی پہلی آ یت سے سورج کا بے نور ہونا ٹابت ہے ''اذا الشمس کھورت و اذا السنجوم انکلوت ''جس کا مطلب یہ ہوسکتا ہے کہ سورج ابھی تک اپنی تابی کے مل سے گذر ربا ہوگا اس کا موجودہ درجہ حرارت اگر چہ بہت حدتک کم ہوچکا ہوگا تا ہم وہ اپنی ذات میں پھر بھی بہت گرم ہوگا ، یہ بھی ممکن ہے کہ سورج ٹوٹ بھوٹ کا شکار ہوا ہوا در پچھ حصہ زمین کے اس قدر قریب آگیا ہویا پھر اس کا جم چھوٹا ہوجائے گاجیا کہ ''کورٹ 'کھوٹ کے مطرف اشارہ ہے، اور جہال تک کشش تقل کا تعلق ہے تو بیاس دارفانی کا تھم ہے وہاں ہر چیز کی طافت ختم ہوجائے گی الل ماشاء اللہ۔

يم مكن ب جيما كم باقى روايات ونصوص كوسامن ركفت موع معلوم موتاب كداجرام فلكيد اور

خصوصاً سورج زمین سے بُون جائے گاجس سے سمندرکا پانی آگ میں تبدیل ہوجائے گا، چونکہ دوکروی جسمول کے باہم ملنے سے ملنے والی جگہ میں فاصلہ کے باہم ملنے سے ملنے والی جگہ میں فاصلہ انتہائی کم اور ذراآ کے ایک میل پھر مزیدآ کے بہت زیادہ ہوتا ہے، یہ لوگ اسی میل والے فاصلے کی جگہ پر ہوں کے پھر جب بل صراط کے ذریعہ اہل جنت نکل اور چڑھ جا کیں گے تو یہ ساری فیفا دوزخ میں شامل کردی جائے گی سوائے مقامات مقدسہ کے جیسے مساجد، جمراسوداور کعبہ وغیرہ۔

باب ماجاء في شأن الحشر

(لوگوں کے جمع ہونے کے احوال کابیان)

"يحشرالناس يوم القيامة حُفاةً عُراةً عُرلاً كما عُلِقوائم قَراً "كما بَدَانا اول حلق نعيده وعداً علينا انا كنا فاعلين "واول من يكسى من الخلائق ابراهيم، ويؤخلمن اصحابى برجال ذات اليمين وذات الشمال فيقول (فاقول) يارب! اصحابى افيقال: انك لا تدرى مااحدثوا بعدك، انهم لم يزالوا مرتدين على اعقابهم مُنذ فارَقتَهم فاقول كماقال العبدالصالح: ان تعذبهم فانهم عبادك وان تغفرلهم فانك انت العزيز الحكيم ". (اخرجه الشيخان)

لوگوں کو قیامت کے دن نگے ہیر، نگے جسم، بغیر ختنہ کے جمع کر دیا جائے گا ایسے ہی جیسے وہ پیدا کئے گئے تھے پھرا پ صلی اللہ علیہ وسلم نے بیا ہیت پڑھی ' جس طرح ہم نے پہلے پیدا کیا تھا اسی طرح دوبارہ پیدا کردیں گئے (بیہ) وعدہ لازم ہے ہم (ایبا) ضرور کرنے والے ہیں (انبیاء آیت ۱۰۴) اور سب سے پہلے تخلوق میں سے جے لہاس پہنایا جائے گاوہ ابراہیم ہوں گے اور میرے محابہ (یاامت) میں سے پچھلوگوں کودا کیں (جنت) اور باکس پہنایا جائے گاوہ ابراہیم ہوں گے اور میرے محابہ (یاامت) میں سے پچھلوگوں کودا کیں (جنت) اور باکس (دوزخ) طرف لے جایا جائے گاتو آپ صلی اللہ علیہ وسلم فرما کیں گے (بخاری میں ہے میں کہوں گا) اسے میرے رب! بیرمیرے صحابہ (یاامتی) ہیں پس کہا جائے گاآپ کوئیس معلوم کہ انہوں نے آپ کے (وصال کے بعد کیا کیا تئی چیزیں نکالیس سے لوگ اس وقت سے جب آپ نے ان کوچھوڑ اتھا الٹے پاؤں واپس جاتے رہے (بعنی اسلام کوچھوڑ کریا سنت کوچھوڑ کر) پس میں ایسانی کہوں گا جیسے اس نیک بندے (حصرت عیسی علیہ ربے (بعنی اسلام) نے کہا تھا۔ ان تعذبی ما للام) نے کہا تھا۔ ان تعذبی ما للام

تشريح: ـ قوله: "حُفاةً عُراةً غُرلاً" تيول بضم الاول بي حفاة عافى كى جمع ب عُراة عارى كى اور

غولا افرل کی جمع ہے، جس کا ختنہ نہ کیا جمیع ہے ختنہ پروہ زائد کھال موجود ہوگی جس کا مطلب بیہ ہے کہ انسانی اعضاء میں سے کوئی حصہ کمشدہ نہ ہوگا۔ مسلم ص:۲۸۳ج:۲ میں بیحد یث ہاس میں بیجی ہے کہ حضرت عائش فی جو چھا کہ مرداور عورتیں جب سب نظے ہوں گے تو پھر تو دہ ایک دوسرے کونظر آئیں گے آپ سلی اللہ علیہ وسلم فی فرمایا: اے عائش معاملہ اس سے زیادہ بحت ہوگا کہ وہ ایک دوسرے کود مکھ سکیں۔

اس مدیث سے ذکورہ آیت کی تغییر بھی معلوم ہوئی کاس میں تشبیہ سے کیا مراد ہے۔

قولسد: "بارب اصحابی" یعنی با کی طرف والوں کے لئے میں کہوں گا کہ بیتو میر بے صحابہ ہیں دراصل بیلوگ کہ بیتو میر بے حض کوثر پر آرہے ہوں سے جن کوفر شتے روک لیں سے بلکہ با کیں موڑ دیں سے ان کو پہچان کر آپ علیہ السلام بی ارشادفر ما کیں سے ... یہ کون لوگ ہوں سے؟ تو حدیث کے ظاہر سے معلوم ہوتا ہے کہ بیدہ ولوگ ہوں سے جو آپ علیہ السلام کے وصال کے بعد مرتد ہو گئے تھے چو تکہ آپ کی حیات میں وہ مسلمان تھاس لئے آپ ملی اللہ علیہ وسلم فرما کیں سے اصحابی الخ۔

دومراقول: یہ ہے کہ یہ و مبتدعین ہوں کے جوانی بدعت کی وجہ سے اسلام سے خارج نہ ہوئے ہوں کے یہلوگ اگر چہ ابتدا م چہنم میں جائیں گے اور سنت کے پیر دکار نہ ہونے کی وجہ سے حوض کو ثر سے محروم کر دیتے جائیں گے مگر وہ مخلد فی النار نہیں ہوں مے علی ہذا کھرا صحافی سے مراد آثار وضوء کی وجہ سے عام نحر و تجلین ہیں اما نو وک ؓ نے حافظ ابن عبد البرّ سے قل کیا ہے کہ ہر مبتدع حوض سے دھتکارا جائے گا۔

"كل من احدث في الدين فهومن المطرودين عن الحوض كالخوارج والروافض وسائر اصحاب الاهواء قال وكذالك الظلمة المسرفون في الحوروطمس الحق والمُعلِنُون بالكبائرقال وكل هؤلاء يخاف عليهم ان يكونواممن عنو ابهذا المخبر"والله اعلم. (شرح ملم ص:١٢١-١٥)

اس حدیث میں 'اول من یکسی من المنحلات ابراهیم ''سے بیشبہ نہیں ہونا چاہئے کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام خاتم النہین صلی اللہ علیہ وسلم سے افضل ہیں اس سے زیادہ سے زیادہ جزوی فضیلت حاصل ہوتی ہے کیونکہ آمخضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی افضلیت کے دلائل واضح وشہور ہیں۔ دہایہ مسئلہ کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام کوسب سے پہلے کیوں (سفید) کپڑے پہنائے جائیں محے؟ تواس بارے میں متعددا توال

(۱) آیک سیب کہ جب ان کوآگ میں پھینکا جار ہاتھا تو ان کے کپڑے اتار لئے گئے تھا اس لئے ان کوبطور خاص انعام سے نواز اجائے گا۔ (۲) دوسرایہ ہے کہ انہوں نے سب سے پہلے شلوار کی سنت مشروع فرمائی ہے (۳) وہ ابوالا نبیاء اور نبی پاک صلی الله علیہ وسلم کے جدا مجد ہونے کی بناء پر مقدم کئے جا کیں گے یعنی ابوت کی فضیلت کی وجہ ہے۔

قوله: "رِجالاً" بسرالراءراجل كى جمع بمعنى پيدل پاچلنوالا۔ قوله: "ركباناً" بضم الراءراكب كى جمع بمعنى سواركے ہے۔

قوله: "و تحرّون " بسيخ مجهول تهمین مند کے بل کھیٹاجائے گایا چلایا جائے گالیعن کاملین سوار ہوں کے اور ناقصین پیدل اور بعض الٹے ہوں گے۔ رِجال کی تقدیم رکبان پر کثرت تعداد کی وجہ سے ہے۔

باب ماجاء في العرض

(پیش ہونے کا بیان)

"يعرض الناس يوم القيامة ثلث عَرَضات فَامَّاعرضتان فجِدالٌ ومعا ذير واما العرضة الثالثة فعند ذالك تطير الصُحُفُ في الايدى فَاخِذَبيمينه واخذَبشماله".

قیامت کے دن تین پیشیاں ہوں گی پس دوجو ہوں گی ان میں جت بازی اور معذرتیں ہوں گی اور جب تیسری پیشی ہوگ تو اس وقت اعمال نامے اُڑ کر ہاتھوں میں آ جا کیں گے، پس کوئی اپنے داہنے ہاتھ سے تھا ہے ہوئے ہوگا۔

تشری : قوله: "عرصات" بفتح العین والراء الله تبارک و تعالی کے حضور پیش ہونا مراد ہاں تینوں میں ہے پہلی پیش کے وقت جدال بعنی انکار وجت بازی کی س صورت ہوگی کہ مجرم لوگ کہیں گے ہم کود تو تنہیں پیشی عارضة الاحوذی میں ہے کہ جدل کہتے ہیں جت کا مقابلہ جمت سے کرنے کو جبکہ مجادلہ مناظر ہے کو کہتے ہیں غرض وہ لوگ انکار کریں گے مگر اللہ کی جمت غالب رہے گی۔ اس طرح دو مری پیشی میں مجرم لوگ معاذیر یعنی اعذار پیش کریں گے کہ جب انکار سے کا منہیں بنے گاتو وہ اعذار پر آجا کیں گے کہ ہم مجبور سے باس سے وغیرہ وغیرہ لیکن ان کی ایک بھی نہیں سی جائے گی۔ اور تیسری پیشی میں ان کے اعمال نامے خوابی ونا خوابی ان کے ہم مجمود سے جائے گی۔ اور تیسری پیشی میں ان کے اعمال نامے خوابی ونا خوابی ان کے ہم تھا دیے جائیں گے میں تاریخ انکار سے کا تو ہو ہو گارے سے موجب کی مدیث کا یہ مطلب حاشیہ پر لمعات کے ہم تھا دیتے جائیں گے یہاں طیران کتا ہے ہم عرصت وقوع سے ، حدیث کا یہ مطلب حاشیہ پر لمعات کے ہم تھا دیتے جائیں گے یہاں طیران کتا ہے ہم عرصت وقوع سے ، حدیث کا یہ مطلب حاشیہ پر لمعات کے ہم تھی دیتے جائیں گے یہاں طیران کتا ہے ہم عرصت وقوع سے ، حدیث کا یہ مطلب حاشیہ پر لمعات کے ہم مورث کا یہ مطلب حاشیہ پر لمعات کے بیں گارے میں معاد یہ کا یہ محدیث کا یہ مطلب حاشیہ پر لمعات کے بیں سے بی کو دو سے بی کو دیث کا یہ مطلب حاشیہ پر لمعات کے بی کو دو سے بی کو دو سے بی کر دیث کا یہ مطلب حاشیہ پر لمعات کے بی کو دو سے بی کر دو سری کی کی کی کو دو سے بی کو دیک کو دو سے بی کر دو سے بی کر دو سے بی کر دو سے بی کو دو سے بی کر دی بی کر دو سے ب

حوالہ سے بیان کیا گیا ہے تخفۃ الاحوذی میں فتح الباری سے نقل کیا گیا ہے کہ پہلی پیشی کفار کی ہوگی چونکہ وہ اللہ کو کما حقہ نہیں جانتے اس لئے وہ انکار کی وجہ سے اپنے آپ کوآزاد کرنا چاہتے ہوں گے۔ جبکہ دوسری پیشی اللہ کو کما حقہ نہیں جانتے اس لئے وہ انکار کی وجہ سے اپنے آپ کوآزاد کرنا چاہتے ہوں گے۔ جبکہ دوسری پیشی اور معذر تیں انبیا علیم السلام سے متعلق ہول کی کہ ہم نے ان تک اللہ کے پیغامات پہنچائے ہیں۔ اور تیسری پیشی سب مؤمنین سے متعلق ہوگی اس کوعرض اکبر کہتے ہیں۔ یہ مطلب بھی صبحے بن سکتا ہے۔ غرض جو کا میاب ہوگاوہ سید سے ہاتھ میں تھا ہے گا۔
سید سے ہاتھ میں نامہ اعمال پکڑے گا اور جونا مراد ہوگاوہ الئے ہاتھ میں تھا ہے گا۔

بدروایت منقطع ہے جیسا کہ امام ترفدیؓ نے تصریح فرمائی ہے تا ہم یدروایت ابن ماجہ ۱۳۱۷ پر ' باب ذکرالبعث' میں''عن الحسن عن ابی موک الاشعری''سے بھی مروی ہے، جیسا کہ امام ترفدیؓ نے اخیر میں تصریح فرمائی ہے۔

باب منه

"عن عائشة قالت سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: من نُوقِش المحساب هَلَكَ، قلتُ يارسول الله! ان الله يقول: فَامَّامن أُوتى كتابه بيمينه فسوف يحاسب حساباً يسيراً ؟ قال ذاك العرض". (حسن صحيح)

حضرت عائشدض الله عنها سے مروی ہے فرماتی ہیں کہ میں نے رسول الله علیہ وسلم سے فرماتے موت عائشہ من الله علیہ وسلم سے فرماتے موت سُنا ہے کہ جس سے حساب میں گرماگرم بحث ہوگئی تو وہ ہلاک ہوگیا میں نے کہااے اللہ کے رسول! اللہ نے نوفر مایا ہے' سوجے ملااس کا عمال نامہ داہنے ہاتھ میں تو اس سے حساب لیس گے آسان حساب'؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا وہ (صرف) پیش ہے۔

تشری : قوله: "نوقش الحساب" حاب میں مناقشہ یہ کہ اس سے ہرایک بات کے بارے میں بوچھاجائے اور فردہ گیری سے لبریز گر ما گرم بحث ہو یقینا ایسافخص ہلاک ہوگا یعنی عذاب کا مستحق ہوگا چونکہ یہاں بظاہراس حدیث کا مندرجہ بالا آیت سے تعارض کا شبہ ہوسکتا تھا کہ یہاں مطلقا اس فخص کو قابل ہلاکت قرار ویا ہے جس کے ساتھ حساب ہو جبکہ آیت میں حساب کو یسریعنی آسان حساب کہا ہے جس کا مطلب یہ ہے کہ حساب کی ایک صورت خی کہ بعض حساب آسان بھی ہوتا ہے، اور آپ علیہ السلام کے جواب کا مطلب یہ ہے کہ حساب کی ایک صورت خی سے بوچھ بچھ کی ہے جو یہاں حدیث میں مراد ہے اور دوم نری سے اعمال اس فخص کے سامنے بیان کرنا ہے

جوآیت میں مراد ہے لہٰذا کوئی تعارض نہیں، پھر حساب بیسر کی دوصور تیں ہیں ایک بید کہ سرسری جائزہ کے بعداسے جنت کا پروانہ دے دیا جائے گا اور عذاب بالکل نہ دیا جائے دوسری بید کہ اسے دائی عذاب تو نہ دیا جائے مگر پچھ عذاب گناہوں پر دیا جائے پھر جنت میں داخل کیا جائے بید دونوں اہلِ ایمان کے لئے ہیں جبکہ کفار عذاب سے کسی صورت نہیں بچیں مے ان کا عذاب د حساب بہر حال سخت ہوگا۔

باب منه

"يُجاء بِابن ادم يوم القيامة كَانَه بَدَجٌ فيوقف بين يدى الله تعالى فيقول الله: أعطيتُك وخَولتُك وانعمتُ عليك فما ذاصنعتَ ؟ فيقول: يارب جمعتُه وثمّرته وتركتُه اكثرماكان فارجِعنى الإك به كله افيقول له: أرِنى ماقلُمتَ؟ فيقول يارب جمعته وثمّرتُه فتركته اكثرماكان فارجعنى الك به كله، فاذا عبد لم يقدّم خيراً فيُمضى به الى النار".

قیامت کے دن آ دی کولا یا جائے گاجو کو یا بھیڑکا بچہ ہوگا (لیمن گھرا بہٹ سے سمٹ گیا ہوگا) سواسے اللہ تعالیٰ کے حضور کھڑا کردیا جائے گا ، اللہ فرما کیں گے میں نے تخفے دولت دی ، نوکر چاکردیے اور (دیگر) انعامات کے تخفے پر تو تم نے کیا کیا؟ پس وہ کے گاا ہے میرے رب! میں نے وہ مال جح کیا اور بڑھایا اور زیادہ سے زیادہ چھوڑ چکا بوں پس جھے واپس لوٹادیں میں وہ سارا مال تیرے پاس لاتا ہوں ، اللہ اس سے فرما کیں گے جھے دکھا وُتم نے آ کے کیا بھیجا ہے؟ (لیمن موت سے پہلے) وہ (پھر) کے گاا ہے میرے رب! میں نے اسے جمع کیا ہوں بڑھے اور زیادہ سے زیادہ چھوڑ اے پس جھے واپس جانے دیں میں وہ سب تیرے سامنے پیش کرتا ہوں (لیمن صدقہ کرتا ہوں) چنا نچے جب اس خفس نے پھھے ہملائی نہیں کی ہوگی تو اسے جہنم کی جانب چلنا کیا جائے گا۔

تشریخ: قوله: "کانه بذج" بروزن سَبَبّ بھیر اورد نے کے بچے کو کہتے ہیں یہاں مراد تقارت اور خوف کے مارے سکر ناہے۔

قوله: "خولتك"اى اعطيتك خولاً، خول فتن خادم، نوكر چاكر وغيره كوكت إيى، آج كل گاريال اورديگرتمام شينيل الله بيل آي يك كونكه بيسب انسان كي خادم بيل قوله: "فموته" بتشديد ألميم تثمير زياده كرنے اوراضاف كوكتے بيل كونكه ثمره ايك ذاكد چيز بهوتا ہے۔

اس حدیث میں اگراین آدم سے مراد کا فرہوتو پھر مطلق صدقہ وانفاق فی سبیل اللہ پڑسل کیا جائے گا کیونکہ کا فرنہ تو صدقہ نفلیہ مانتا ہے اور نہ ہی واجی الیکن اگریہ مطلق ابن اوم ہوخواہ مسلمان کیوں نہ ہوتو پھریہ سزاوگرفت زکو ہو ودیگر صدقات واجبیہ میں کوتا ہی کی بناء پر ہوگی کیونکہ صدقہ نفلیہ کے ترک پر سرزنش نہیں ہے اگر چاس کا فائدہ بہت ہے۔

حدیث آخر: ایک بندہ قیامت کے دن لا یاجائے گااس سے اللہ تبارک و تعالی فرمائیں گے: کیا میں گے: کیا میں نے بختے سنے اورد یکھنے کی قوت نہیں دی تھی اور دولت واولا ذہیں دی تھی اور چوپائے اور کھنے کی قوت نہیں دی تھی اور دولت واولا ذہیں دی تھی اور چوپائے اور کھنے کی قوت نہیں کہ تا ہوا اور چوتھائی حصہ مال کالیتا ہوا نہیں بنایا تھا؟ تو کیا تہمیں یقین آرہا تھا کہ تم اس دن سے آملو ہے؟ تو وہ کے گانہیں! تو اللہ اس سے فرمائیں گے آج ہم تھے ای طرح (جہنم میں) چھوڑ دیں گے جس طرح تم نے ہم (سے ملنے) کونظرانداز کیا تھا۔ (صحیح غریب)

قوله: "تواس"رأس اوررئيس بيثواكو كهتية بين يعني تم سرداري كياكرتا تقار

قولسه: "تسربع" رُلِع لِين مال مِن سے چوتھائی حصد لينے و كتے بين جيسا كرز ماند جا الميت مِن سردارغنيمت اورديگر پيداوارسے چوتھائی وصول كرتے تھے۔

قولی: "آنساک" ینست بطورمشاکلت کے ہے چونکہ اس آدمی کی طرف نسیان کی نسبت کی گئے ہے۔ اس لئے اللہ کی طرف بھی نسبت کی گئی ، مرادترک ہے جیسا کہ امام ترندیؓ نے تصریح فرمائی ہے لیمنی جس طرح، بھولی ہوئی چیز کے بارے بیں نہیں پوچھاجا تاہے ایسا ہی تم کوچھوڑ دیا جائے گا۔

باب منه

"يـومــئد تُحَدِّث احبارها"قال الدرون ما احبارها؟ قالوا: الله ورسوله اعلم،قال: فان اخبارها ان تشهدَعلى كل عبد أو اَمَةٍ بِما عمل كذا وكذا في يوم كذاوكذا قال بهذا (هذا) امرها". (حسن غريب)

حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے بیآیت پڑھی: اس دن (زمین) کہ والے گی اپنی باتنی ، آ ہے سلی اللہ علیہ وسلم نے بوچھا کیا تم جانتے ہوکہ اس کی باتنی کیا ہیں؟ صحابہ کرام نے عرض کیا اللہ ورسولہ اعلم ۔ آ ہے صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: اس دن (زمین) کی باتنیں بیہوگی کہ وہ

گواہی دے گی ہر بندے اور ہر باندی کے بارے میں کہ اُس نے اِس کی پشت پرفلاں فلاں وقت میں فلاں فلال عمل کیا ہے؟ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اسی طرح کو یائی کا اللہ نے اس کو تھم دیا ہوگا۔

تشریح: بعض شخول مین فه المه ها "اور بعض مین امرها" کے بجائے " احبادها " ہے ہیں " امرها " والے نسخ کے مطابق امرها میں کو مفتوح ماضی کے صیفہ سے پڑھا جائے گا جبکہ هذا امرها میں میم ساکن ہے یعنی مصدراور حذاکی خبرہے اس طرح اخبار حابجی حذاکی خبرہے۔

حاصل مطلب یہ ہے کہ زمین پرجو بھی نیکی بدی کاعمل کیاجا تا ہے زمین اس کار یکارڈ اپنے پاس محفوظ رکھتی ہے اور قیامت کے روز ساراڈیٹا اور تمام تفصیلات، س،مہینہ اور وقت بتا کر گواہی دے گی کہ س نے کس وقت کیا کیا ہے اور یہ سب کچھاللہ تبارک و تعالی کے تھم سے ہوگا۔

باب ماجاء في الصور

(صور پھو نکنے کا بیان)

"جاء اعرابي الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال:ماالصُّور؟ قال:قَرن يُنفَخُ فيه". (حسن صحيح)

حضرت عبدالله بن عمروبن العاص رضی الله عنهما سے مروی ہے کہ ایک اعرابی نبی صلی الله علیه وسلم کی خدمت میں حاضر ہوااور پوچھاصور کیا چیز ہے؟ آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا کہ سینگ (کی طرح ایک چیز ہے) جس میں پھوٹکا جائے گا۔

تشری : "صور "بضم الصادوسکون الوا دُوُق اور نستگھے کو کہتے ہیں بعض حضرات نے اس کوصور الموقی کی جع قر اردیا ہے گویابضم الواؤپڑھا ہے مگر حجے اول ہی ہے کیونکہ یمن کی اصطلاح ولغت میں صور قرن کو کہتے ہیں۔

قول : "قرن" بسکون الراء بگل کو کتے ہیں ، سوال گویا اس آیت سے ناشی و پیدا ہوا" و نفخ فی المصور "یا کسی اور آیت سے جبکہ جواب کا مقصدیہ ہے کہ صور بگل کی مانندایک آلہ ہے جو حضرت اسرافیل علیہ السلام پھونکیں گے، اس کی پوری حقیقت اللہ تبارک و تعالیٰ ہی جانے ہیں تا ہم اس قتم کی تعبیرات لوگوں کو سمجھانے کے لئے ہوتی ہیں کیونکہ لوگ تو بگل جانے ہیں اصل صور تو کسی نے نہیں دیکھا گراس کے مشابر ترچز چونکہ قرن

مقى اس لئے اسے قرن سے تعبیر کیا گیا۔

عارضة الاحوذي ميں ہے كے صور تين مرتبہ پھونكا جائے گا ايك بار پھونكنے سے سب انہائى خوف زده ہوجائيں گے۔اگر ہوجائيں گے۔ اگر اسے قول ضعیف کے دوسری مرتبہ ہو ہوجائيں گے۔اگر اسے قول ضعیف کے مطابق جمع صورالموتی مانا جائے تو مطلب بیہ بنے گا كه مردول ميں ارواح ڈالی جائيں گے۔ اگر حدیث افی سعید: رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: میں کیے شاد مال رہوں جبکہ بگل والے حدیث افران) نے قرن کومنہ میں لیا ہوا ہے اور کان لگائے رکھے ہیں كہ كب اسے پھو كئے كا كا مطاقاتا كه وہ فورا ہی پھونك دے تو كویا ہے بات نبی صلی الله علیہ وسلم کے صحابہ پر سخت گراں گذری، چنانچہ آپ صلی الله علیہ وسلم نے محاب پر سخت گراں گذری، چنانچہ آپ صلی الله علیہ وسلم نے محاب پر سخت گراں گذری، چنانچہ آپ صلی الله علیہ وسلم نے ان سے فرمایا کہو: حسبنا الله المنے ''۔ (حسن)

قبولمه: "انعم" بعیغه واحد منظم نعمة بفتح النون سے بمعنی خوش وخرم کے ہے بینی بین کیونکر سرور ور وراحت کی زندگی گذاروں جبکہ صورت حال بہت محمبیر ہے یہاں کیف سے پہلے "واؤ" کا اضافہ ہے مگر سور ہور زمر کی تفسیر میں بغیرواؤکے آیا ہے اور بظاہروہی لیغنی بغیرواؤکے زیادہ صحح ہے۔

قوله: "المتقم" لقمدونوالد بنانالینی صور پھو گئے پر مامور فرشتہ حضرت اسرافیل علیہ السلام منہ میں قرن النے تھم کے منتظر ہیں اوراس کے لئے گویا ہم تن گوش بن گئے ہیں، اس روایت کو ظاہر ہی پرمحول کیا جائے گا۔
ابواب النفیر میں ہے کہ صحابہ نے آپ علیہ السلام سے پوچھا ہم کیا پڑھیں آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے مذکورہ دعاء کی تلقین فرمائی کیونکہ جب آدی اپنے آپ کواللہ بی کے حوالے کردیتا ہے اوراسے اپنا کفیل ووکیل اورکانی سیحے لگتا ہے تو اللہ اس کی حفاظت ضرور کرتا ہے۔

باب ماجاء في شأن الصراط

(ئل مراط کی کیفیت کابیان)

"عن المغيرة بن شعبة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : شِعار المؤمنين على الصراط ربِّ سَلِّم، سَلِّم".

نگ مراط پرایمان والول کی شناخت ' دب سَیِّم سَیِّم '' ہوگی یعنی اے رب امان میں رکھ ، حفاظت میں رکھ۔ 777

پھر بیضروری نہیں کہ ہرآ دمی بیدعاء پڑھتارہے بلکہ ہرامت کی طرف سے اس کا نبی ایبا پڑھتے رہیں گے چنانچ اکیس دوایت میں ہے 'ف اکون اول من یجیزُ و دعاء الرسل یو مَعِلِد : اللّٰهم سلّم سلّم سلّم ''علٰی هذاامت میں جوبیدعاء پڑھے گاوہ اس کی محمدی ہونے کی نشانی ہوگ۔

حدیث انس بھی آپ سے نہ اس انتہاں اللہ علیہ وسلی سے بہلے مجھے بل صراط پر ڈھونڈ و، میں نے کہا اگر بل صراط پر آپ سے نہ ل سکوں؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلی نے فرمایا: پھر مجھے میزان کے پاس تلاش کرو، میں نے عرض کیا تو اگر میزان کے پاس بھل آپ سے نہ ل سکا؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلی من فرمایا تو پھر مجھے حوض (کوڑ) کے پاس ڈھونڈ و کیونکہ بلاشبہ میں ان تین مقامات سے ادھرادھ نہیں ہوں گا۔ (حسن غریب)

لینی شفاعت کے لئے میں ان تین مقامت میں کسی نہ کسی مقام پرضر ور ملوں گا، اس صدیث کی ظاہری ترتیب سے معلوم ہوتا ہے کہ صراط پہلے ہے پھر میزان ہے اور اخیر میں حوض ہے اور یہی بعض شارعین کی رائے ہے، امام بخاری نے بھی حوض کی صدیث اخیر میں ذکر کر کے اسی ترتیب کی طرف اشارہ فرمایا ہے، کیکن اصح بیہ کہ حوض مقدم ہے پھر میزان لینی حساب ہے اور اخیر میں صراط ہے، نہ کورہ باب کی صدیث کی ترتیب باعتبار ہولنا کی کے ہے لینی سب سے اشد ضرورت بل صراط پرسفارش باعتبار تریب کی کہ وہ انتہائی ہولناک منظر ہے پھر بعدہ میزان ہے اور پھر نسبۂ آسان حوض ہے، علی صدا اور دیگیری کی پڑے گی کہ وہ انتہائی ہولناک منظر ہے پھر بعدہ میزان ہے اور پھر نسبۂ آسان حوض ہے، علی صدا

''اَوُّلُ ماتسطىلىنى ''باعتبار ضرورت كے ہے يعنی سب سے زيادہ ضرورت سفارش كى بل صراط پر پڑے كى پھر ميزان بر۔

حاشیر ندی پرمفرت عائشہ فلی حدیث قل کی گئی ہے کہ ایک وفعہ وہ رونے لکیں تو آپ سلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی م وسلم نے وجہ بوچھی مفرت عائشہ نے فرمایا کہ جھے آگ یا دائم ٹی اس لئے رونے کی پھر کہنے ککیس:

"فهل تـذكرون اهـليكم يوم القيامة ؟قال صلى الله عليه وسلم أمَّافي ثلثة مواطن فلايذكر احدً احداً عند الميزان ".الحديث

لین اس حدیث سے قرمعلوم ہوتا ہے کہ ان بین مقامات پر سفارش نہیں ہوگی جبکہ حدیث باب سے اس کا شہوت ملتا ہے اور بیتو تعارض معلوم ہوتا ہے، اس کے متعدد جوابات دیئے گئے ہیں گر میری کوتاہ بچھ میں بی توجیہ آتی ہے کہ ان دونوں میں کوئی تعارض نہیں ہے کیونکہ حضرت عاکشہ کی حدیث میں ہے 'دھل سل سلہ کے سرون اہلی کی جان دونوں میں کوئی تعارض نہیں ہے کیونکہ حضرت عاکشہ کا اس میں شفاعت کی نفی میں جواب دیا ہے بین کہ جواب دیا ہے بین کہ کوئی بھی یا ذہیں آئے گااس میں شفاعت کی نفی نہیں کی گئی ہے بلکہ بتلا نا بیا جواج ہیں کہ معاملہ انتہائی سخت ہوگا جس کی بناء پرکوئی بھی یا ذہیں رہے گاہاں اگر کوئی سامنے آجائے جیسا کہ حضرت انس کی معاملہ انتہائی سخت ہوگا جس کی بناء پرکوئی بھی یا ذہیں رہے گاہاں اگر کوئی سامنے آجائے جیسا کہ حضرت انس کی حدیث باب میں ہے تو پھراس کی سفارش کی جاسکتی ہے۔

باب ماجاء في الشفاعة

(سفارش کے بیان میں)

"عن ابسى هريرة قال أتى رسول الله صلى الله عليه وسلم بلحم فَرُفِعَ اليه اللراع فلك عن ابسى هريرة قال أتى رسول الله صلى الله عليه وسلم بلحم فَرُفِعَ اليه اللراع فلك وكان يعجبه فَنهَ منه نهشة ثم قال: اناسيّدالناس يوم القيامة هل تدرون لِمَ ذاك؟ يجمع الله الناس الاولين والآخرين في صعيدواجد فيسمِعُهم الداعى وينفذهم البَصَرُ وتدنوا الشمس منهم فيبلغ الناس من الغم والكرب مالايطيقون ولايتَحَمَّلُون فيقول الناس بعضهم لبعض : الله ترون ماقدبلَغكم؟ الاتنظرون من يشفع لكم الى ربكم؟ فيقول الناس بعضهم لبعض عليكم بادم فيأتون ادم فيقولون: انت ابوالبشر خَلقَكَ الله بيده ونفخ فيك من روحه وَامَرَالملائكة فَسَجَدُوالكَ إشفَع لناالى ربك اَمَاترئ مانحن فيه الاترئ ما قد بَلَغَنَا

فيقول لهم ادم :ان ربي قدغضِب اليوم غضَباً لم يغضب قبله مثله ولن يغضب بعده مثله وانه قد نَهَاني عن الشجرة فَعَصيتُه نفسي نفسي نفسي اذهبواالي غيري اذهبواالي نوح فيأتون نوحاً فيقولون :يانوح انت اول الرسل الى اهل الارض وقدسمّاك الله عبداً شكوراً إشفع لَنَاالِي ربك أَ لا ترى ماقد بَلَغَنا ؟ فيقول لهم نوح: ان ربى قد غضب اليوم غضباً لم يغضب قبله مشله ولن يغضب بعده مثله وانه قدكانت لي دعوة دعوتهاعلى قومي نفسي نفسي نـفهسـي اِذهبواالي غيري اِذهبواالي ابراهيم فيأتو ن ابراهيم فيقولون:ياابراهيم اأنتَ نبي الله وخليله من اهل الارض فاشفع لنا الى ربك آلاتري مانحن فيه؟فيقول ان ربي قدغضب اليوم غضباً لم يغضب قبله مثله ولن يغضب بعده مثله وانى قدكذبتُ ثلاث كَذِ بات فذكرهن ابوحيان في الحديث، نفسى نفسى، اذهبوا الى غيرى اذهبواالي موسى افياتون موسى فيقولون ياموسى اأنتَ رسول الله فَضَّلَكَ الله برسالته وكلامه على الناس اشفع لناالي ربك آلاتري مانحن فيه؟فيقول: أن ربي قدغضب اليوم غضباً لم يغضب قبله مثله ولن يغضب بعده مثله واني قدقتلتُ نفساً لّم أومر بقتلهانفسي نفسي نفسي اذهبوا الى غيرى اذهبو االى عيسى إفياتون عيسى فيقولون :ياعيسى اأنتَ رسول اللهو كلمته القاها الى مريم وروح منه وكلَّمتَ الناس في المهداشفع لناالي ربك آلاتري مانحن فيه فيقول: عيسىٰ ان ربى قدغضب اليوم غضباً لم يغضب قبله مثله ولن يغضب بعده مثله ولم يذكر ذنباً نفسى نفسى نفسى اذهبواالي غيرى اذهبواالي محمدصلي الله عليه وسلم قال فيأتون محمداً صلى الله عليه وسلم فيقولون: يامحمد!انت رسول الله وحاتم الانبياء وغُفِرَلكَ ما تقدم من ذنبك وماتأخراشفع لناالي ربك اآلاتوى مانحن فيه فَأنطلِقُ فاتِّي تحت العرش فَاخِرُ ساجداً لِربي ثم يفتح الله عَلَي من محامده وحسن الثاء عليه شيئاً لم يفتحه على احدقبلي ثم يقال يامحمد اارفع رأسك سَل تُعطّه واشفع تُشَفّع افارفع رأسي فاقول يارب! امتى يارب امتى يارب امتى افيقول يامحمد اأدخِل من امتك من لاحساب عليه من الباب الايسمىن من ابواب الجنة وهم شركاء الناس فيماسوي ذالك من الابواب ثم قال:والذي نفسى بيده ان مابين المصراعين من مصاريع الجنة كمابين مكة وهجرو كمابين مكة

وبُصرى ". (حسن صحيح واحرجه البحارى في كتاب الانبياء باب قول الله عزوجل "ولقدار سلنانوحاً الى قومه" (ص ٢٥٠ ج ١) وكتاب التفسير باب قوله ذرّية من حملنامع نوح النح (ص ١٨٨ ج٢) واخرجه مسلم في كتاب الايمان (ص ١٨٨ ج ١) باب اثبات الشفاعة النح وكذا اخرجه ابن ماجه واحمدو البزار وابويعلى وابن حبان في صحيحه)

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہرسول الله صلی الله علیہ وسلم کی خدمت میں موشت پیش کیا گیاسوآ پ صلی الله علیه وسلم کی طرف ایک بازوا تھادیا گیا آپ صلی الله علیه وسلم نے کھایا آپ کوذراع پسند تھا تو آ پ صلی الله عليه وسلم نے اس سے نوچ نوچ کر تناول فرمايا پھرآپ نے فرمايا ميں قيامت كے روزلوگوں کامردار ہوں، کیاتم جانے ہو کہ یہ کیوں؟ (اس لئے کہ) اللہ اگلے بچھلے سب لوگوں کوایک ہی (ہموار) میدان میں جمع فرمائیں عے (بایں طور کہ) ایک پُکارنے والا ان سب کوسُنا سکے گا اور ایک نظرسب تک مینیے گ اورسورج ان کے قریب ہوجائے گا، پس لوگ غم ومصیبت کے اس درجہ تک پہنچ جائیں سے جس کی وہ (صبرکی) قدرت نہیں رکھیں سے اور نہ ہی تاب لا سکیں سے، پس لوگ ایک دوسرے سے کہیں سے کیاتم نہیں و سکھتے ہووہ مصیبت جوتہیں پیچی ہے؟ کیاتم غورنہیں کررہے ہوا لیے خص کے بارے میں جوتہاری سفارش کرے تہارے رب سے؟ پس لوگ ایک دوسرے سے کہیں گے بس تم سب آدم بی کے پاس چلے جا وَا چنا نچہ وہ آئیں گے آدم كے پاس اور كہيں كے كرآپ سب انسانوں كے پر ہيں الله نے آپ كوائے دستو (قدرت) سے پيداكيا ہے اورآب میں اپی طرف سے روح والی ہے (یعنی بلااسباب) اور فرشتوں کو تکم دیا تو انہوں نے آپ کو تجدہ کیا (اس لئے) آپ اپنے رب سے ہماری سفارش کیجئے ؟ کیا آپ وہ مصیبت نہیں دیکھ رہے ہیں جس میں ہم مبتلاء ہیں؟ کیا آپنہیں دیکھ رہے ہیں جوآفت ہم پرآ پڑی ہے؟ سوفر مائیں گے آدمٌ بلاشبہ میرارب آج ایساغصہ ہواہے کہ نہ تواس طرح مجھی پہلے غصہ ہوا تھا اور نہ ہی مجھی بعد میں ایسا غصہ ہوگا اور بے شک اس نے مجھے ایک درخت (کھانے) سے روکا تھاسومیں وہ تھم پورانہ کرسکا مجھے اپنی فکر دامن گیرہے،تم میرے علاوہ کسی اور کے یاس جاور بلکہ)تم نوع کے پاس ملے جاؤاچنا نجے لوگ نوح کے پاس آئیں گے اور کہیں گے اے نوح! آپ زمین والوں کی طرف پہلے (بھیج محے)رسول ہیں،اور تحقیق الله نے آپ کانام عبد شکور (شکر گذار بندہ) رکھا ہے آپ اپنے رب سے ہاری شفاعت کیجے! کیا آپنہیں دیکھ رے جس مصیبت میں ہم گرفتار ہیں؟ کیا آپ نہیں دیکھ رہے جومصیبت ہم برآ گئی ہے؟ پس حضرت نوح ان سے فرمائیں گے: میرارب آج اتنا غصہ ہوا ہے

جواس طرح نتهمى يهلي غصه موا تفااورنه بي مجمى بعديس ايساغمه موكاب شك ميرے لئے ايك ستجاب دعاء تقى تودہ میں نے ماتکی ہے (یاخرج کی ہے) اپن قوم کی ہلاکت کے لئے جھے تو اپن فکر کی ہے .. تم میرے سواکسی اور ك ياس جاؤ (بلكه) جلے جاؤتم لوگ ابراہيم كے ياس چنانچدلوگ حضرت ابراہيم كے ياس آئيس كے اوران ے عرض کریں گے کہاے ابراجیم! آپ اللہ کے نبی بیں اورز مین والوں میں سے اللہ کے دوست بیں سوآپ ا ہے رب سے ہمارے لئے سفارش کیجے! کیا آپ ہیں و کھورہے ہم جس مصیبت میں پڑے ہیں؟ تووہ فرما کیں مے میرارب آج اتنا غصہ ہواہے جتنا نہ مجی اس سے پہلے غصہ ہوا تھا اور نہ اتنا بھی بعد میں غصہ ہوگا اور میں نے تین جموٹ (لینی بصورت جموٹ) بولے ہیں (چنانچہ ابوحیان راوی نے وہ تین باتیں اپی روایت میں ذکر فرمادیں۔) مجھے اپنی فکرلاحق ہے .. ہم کسی اور کے یاس جاؤہم لوگ موسیٰ کے یاس جاؤہں وہ لوگ موسیٰ کے یاس آئیں کے اور گذارش کریں مے کہا ہے موئ! آپ اللہ کے رسول ہیں اللہ نے اپنی رسالت اوراپنے کلام کے ذریعہ آپ کولوگوں پر برتری دی ہے (لبذا) آپ اپنے رب سے جاری سفارش کیجئے! کیا آپ نہیں دیکھ رہے ہم جس بلامیں ہیں؟ تووہ فرمائیں مے تحقیق میرارب آج اس قدرغضبناک ہے جواس طرح نہ پہلے غضبناک ہواہے اور نہ مجی بعد میں ہوگا، بے شک میں نے ایک جان کو مارڈ الاتھا جس کے مارنے کا مجھے حکم نہیں ہواتھا (یعن قبطی کو) مجھے اپنی فکر درپیش ہے ..تم میرے علاوہ کسی اور کے پاس چلے جاؤہتم عیسیٰ کے پاس جاؤ! چنانچہوہ لوگ عیسیٰ کے پاس آئیں گے اور کہیں گے اے عیسیٰ! آپ اللہ کے رسول ہیں اور اس کا کلمہ (کن) ہیں جوڈ الا ہے اس نے مریم کی طرف اور اس کی (طرف سے) روح ہیں (یعنی آپ کو بغیر اسباب کے لفظ کن سے پیدا کیاہے)اورآپ نے گہوارے میں اوگوں ہے بات کی ہے (یعنی پیدائش کے فوراً بعد) آپ ہارے لئے این رب سے سفارش سیجتے! کیا آپنہیں د مکھر ہے وہ تکلیف جس میں ہم تھنسے ہوئے ہیں؟ پس علیہ السلام فرمائیں ہے: بے شک آج میرارب اتناغفیناک ہے جونہ تو کہمی اس سے پہلے اتناغفیناک ہواتھااورنہ ہی کہمی بعدمیں ہوگا وہ کسی کوتا ہی کا ذکر تہیں فر مائیں مجھے اپنی فکرنے بے چین کیا ہے،تم میرے علاوہ کسی اور کے یاس جا وائم محرصلی الله علیه وسلم کے باس جا وافر مایا پس وہ لوگ محرصلی الله علیه وسلم کے باس آئیں مے اور کہیں مے اے محد! آب اللہ کے رسول ہیں اورسب انبیاء میں آخری نبی ہیں اور بخشے محتے ہیں آپ کے اسکے پچھلے سب بارخاطر بوجھ آپ اینے رب سے ہماری سفارش سیجے! کیا آپنیں و کھورہے وورنج جس میں ہم گھرے ہوئے ہیں؟ پس میں چلاجاؤل گااور عرش کے نیجے آؤل گاپس اینے رب کی تعظیم کے لئے سجدہ میں گر بروں گا، پھراللہ پنی جمداورا پھی اچھی تحریفوں کے وہ کلمات جھ پر کھولے گا (یعنی میری زبان اور جنان پرجاری فرمائے گا) جو جھے سے پہلے اللہ نے کسی پڑیس کھولے ہوں کے پھرارشاد ہوگا اے جمد (صلی اللہ علیہ وسلم) ایناسرا ٹھا وَامائوسیس ویا جائے گا (یعنی سوال قبول ہوگا) اور شفاعت کروتیری شفاعت قبول کی جائے گ اتو ہیں اپناسرا ٹھا وَامائوسیس ویا جائے گا (یعنی سوال قبول ہوگا) اور شفاعت کروتیری شفاعت قبول کی جائے گ اتو ہیں اپناسرا ٹھا وَں گا اور کہوں گا: اے میرے رب!میری امت!اے رب!میری امت! میری امت! (یعنی ہیں اپنی امت میں سے ان امت کی نجات و بخشش ما نگا ہوں) کیس اللہ فرمائیس کے:اے محمد (صلی اللہ علیہ وسلم)! پنی امت میں سے ان لوگوں کو جن پر حساب نہیں جنت کے دا ہے درواز دے سے داخل کر داور دہ (امتی) جنت کے باتی مائدہ درواز دوں میں جسل اللہ علیہ وسلم نے فرمایات مے باس کی جس کے قبضے میں میری جان ہے جنت کے (درواز دوں کے) پٹوں میں سے علیہ وسلم نے فرمایات تا فاصلہ ہے جتنا مکہ اور تیم کے درمیان ہے بیصے مکہ اور بھر کی کے مابین ہے۔

تشرت : قوله: "فرداع" بروزن كتاب اصل مين كلائى يعنى كمهن سے تقيلى تك كے مصاوكہتے ہيں جسماعد بھى كہاجا تا ہے۔

قوله: "وكان يعجبه" آپ علي السلام كو باته كاكوشت اس لئے پندتھا كريكندگى كى جگد سے دور بوتا ہے اور جلدى بھى كي جاتا ہے كھ مزيد وجو بات ابواب الاطعمة ك"باب ماجاء أَى اللحم كان احب الى رصول الله عَلَيْنَ " مُن كذرى ہے، فليرا جح _

قول ہ: "فنہ ش"اس کے لئے ابواب الاطعمة میں ستقل باب گذرا ہے،خلاصہ یہ کہ مسبکت بسین مہملہ اور بھین معجمہ بین بہش دونوں مترادف المعنیٰ جمعنی دانتوں سے نوچنے کے ہیں بعض حضرات کہتے ہیں کہ اگلے دانتوں سے نوچ کرکھانے کے لئے نہس بغیر نقطوں کے آتا ہے اور داڑھوں سے نوچا جائے تواس کے لئے نہش بالشین معجمہ آتا ہے۔

قوله: اناسید الناس النه " بیلطورتحدیث بالعمة کفر ما یا نیز آپ علیه السلام این مقام متعارف کرانے پر مامور بھی شے البتہ اس موقعہ پراس ارشا وفر مانے کی کیا وجہ ہو سکتی ہے؟ توبی تض اتفاق بھی ہو سکتا ہے اورایک غلط بھی کے ازالہ کے طور پر بھی ہو سکتا ہے کہ کوئی آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی سنت کو معمولی یا خلاف اوب اور بے شاکنتگی نہ سمجھے بلکہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی جرسنت برکت اور خیر کی باعث بلکہ خیرو برکت سے لبرین ہے۔ سیدے مراد مالک نہیں بلکہ وہ ہے جس کے گردلوگ مصیبت و پریشانی کے وقت جمع ہوجاتے ہیں بہ

وصف آگر چہ آپ علیہ السلام کودنیا میں بھی حاصل رہاہے کہ صحابہ کرام ہر پریشانی میں آپ سلی اللہ علیہ وسلم کے پاس جمع ہوجا کیں گے ہوجا کیں گے ہوجا کیں گے ہوجا کیں گے تو ہوجا کیں گے تو سالہ اللہ ماری کے معنی ومصداق میں کی طرح ابہام یا کسی کوا نکار نہیں رہے گا بلکہ سب لوگ آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی تعریف کریں گے جس کی وجہ سے آپ کا مقام مقام محمود کہلائے گا۔

قبول ہے: "فی صعید" یہاں مراد صعید سے بالا تفاق روئے زمین ہے جس سے حننیہ کے قول کی تائید ہوتی ہے کہ تیم مطلق جنس ارض سے درست ہے گھریہ میدان باعتبار بادی نظر کے بھی مراد ہوسکتا ہے علی حذا یہ زمین کی گولائی کے منافی نہیں مگریہ بھی ممکن ہے کہ وہ در حقیقت بھی ہموار ہوعلی حدا ہوسکتا ہے کہ ذمین قیامت کے حادثہ یا جرام فلک کے نظرانے سے گولائی کی خاصیت سے نکل کرایک شختے کی شکل اختیار کرجائے۔
قیامت کے حادثہ یا جرام فلک کے نظرانے سے گولائی کی خاصیت سے نکل کرایک شختے کی شکل اختیار کرجائے۔
قیولہ: "ینفذھم المصر" یعنی وہ اس طرح کھلے میدان میں ہوں گے کہ آواز اول تا آخر سائی دے گی اور نظر اخیر تک گذر کر پنچے گی، یہ لفظ نفاذ سے بمعنی تجاوز کے ہے یعنی آواز اخیر تک گذر کر پنچے گی، یہ لفظ نفاح الیاء و مراد کلوت کی نظر ہے کیونکہ اللہ کا دیکھنا کی شرط یہ موقوف نہیں۔ (تد بر)

قوله: "والكرب" شديرُم ورنج كوكت بير قوله: "خلقك الله بيده النخ" يعنى بغيرتولداور بغير معروف طريقه ك_

قوله: "من دوحه" من بعيض كے لئے نہيں بلكه ابتداء كے لئے ہے فليتنه قوله: "قدغضب الميسسوم" الله تبارك و تعالى جس طرح جسميت وحيوانيت سے پاك ہے ای طرح جسمانی وحيوانی صفات ولواز مات سے بھی منزہ و پاك ہے لہٰذا يہاں مرادغضب سے گنهگاروں كے عقاب كاارادہ اورانقام كے مظاہر بيں كدوز خ جوش ميں ہوگا وغيرہ وغيرہ ۔

قوله: "نفسی نفسی نفسی" یینی میرانفس خوداس قابل ہے کہ کوئی اس کی شفاعت کرے۔
قوله: "انت اول الرسل الی اهل الارض" اگر حفرت ادریس علیه السلام وہی حضرت الیاس علیه السلام ہوں جیسا کہ قاضی عیاض نے نقل کیا ہے تو پھر تو کوئی اشکال نہیں کیونکہ وہ بنی اسرائیل میں حضرت ہوشے میں نون علیہ السلام کے زمانہ میں مبعوث ہوئے تھے لیکن اگر مؤذمین کی بات مانی جائے کہ حضرت ادریس معرت نون علیہ السلام اورادریس کی رسالت یعن بعثت حضرت آدم وشیث علیم السلام اورادریس کی رسالت یعن بعثت

کفاری طرف نہ تھی بلکہ اپنی اولا دکی طرف ایمان وطاعة کی دعوت کے لئے تھی جبکہ حضرت نوح کی رسالت کفارکو بلغ کے لئے تھی۔ (کذا قالہ النووی علی مسلم ص:۸۰۱ج:۱)

المستر شد: عرض کرتا ہے کہ چونکہ اللہ تبارک و تعالی کو یہ منظورتھا کہ شفاعت کم کی کا یہ اعزازی تاج خاتم النبین رحمۃ للطلمین حضرت محمصلی اللہ علیہ وسلم کے سرپرر کھے اس لئے ان انبیاء کی اسلام سے چھ نہ کھ ایسے قصور کروائے جواگر چہ زمرہ عمناہ میں نہیں آتے تا ہم انہوں نے اپنے علق مقام کی جبہ سے ان کواپ لئے گویا عناہ تصور کیاا در سفارش سے معذرت فرمالی سیالیا ہے جیسے کسی انتہائی ہوشیار اور تابع فرمان خادم کی راہ میں پانی وغیرہ ڈالا جائے جس کی بناء پروہ آتے ہوئے جسل جائے اور ہاتھ میں پیالہ کی چائے کے چند قطر سے کرجائیں اور مرادیہ ہوکہ وہ کہیں سفارش نہ کردے چانچہ وہ ذریک خادم شرمندہ ساہوجا تا ہے اور زبان کھولئے کی ہمت بارجا تا ہے۔ تد ہر

اس مدیث سے ایک طرف معز لد وغیرہ کے ندہب کی تر دیدہ وئی جوشفاعت کے منگر ہیں۔امام تر فدئی فی جوشفاعت کے منگر ہیں۔امام تر فدئی نے یہ باب اس مقصد کے لئے قائم کیا ہے، پھرشفاعت کی پانچ صورتیں واقسام ہیں:(۱) اول یہی جو باب کی حدیث میں فدکور ہے اس کوشفاعت گمری کہتے ہیں(۲) دوم رفع درجات کے لئے اس شم کے وقوع کے معز لہ بھی قائل ہیں، کیونکہ ان کے نزدیک جوشف ایک مرتبہ دوزخی بن جائے تو پھر بھی بھی وہ جنت میں نہیں جاسکا۔اس اختلاف کا دارو مداراس پر ہے کہ آیا گناہ سے آدمی ایمان سے خارج ہوتا ہے یانہیں؟ تو معز لدوخوارج نئی ایمان کے قائل ہیں جبکہ اہلست والجماعت کی گناہ کی وجہ سے کی کوخارج از ایمان قر از ہیں دیتے۔ یہ مسئلہ ان شاء اللہ ابواب الایمان میں آجائے گا۔ (۳) سوم بلاحساب وخول جنت کے لئے (۳) چہارم فذہین کے خروج من

النارکے لئے (۵) پنجم ستی نارکے لئے یعنی تا کہ وہ دوز نے سے پہیں۔ان میں پعض کو بعض سے خم کر کے تعداد کم بھی ہوسکتی ہے۔ حضرت شاہ صاحب فرماتے ہیں کہ آپ علیہ السلام کا بہ سجدہ سات دنوں تک جاری رہے گا۔دوسری طرف بیصدیث قادیانی ملعون کی صاف تردید کرری ہے، غرض آپ علیہ السلام خاتم النہین ہیں، بید روایت بخاری میں بھی ہے آگر آپ علیہ السلام کے بعد کوئی نبی ہوتا تو یہ اعزاز اس کول جاتا کیونکہ وہی اکمل وکا مل ہوتا بہر حال جب آپ علیہ السلام کی شفاعت حساب و کتاب کے لئے قبول کی جائے گی تو اس کے بعد آپ سلی اللہ علیہ وسلم اپنی امت کے لئے شفاعت کریں مے اور فرمائیں مے یارب امتی الحے۔ (کذافی الکوکب الدری)

ای طرح اس مدیث سے ان لوگوں کے قول وزعم کی بھی صاف تر وید ہوگی جوآپ علیہ السلام کے لئے اعلم غیب ثابت کرنے کی کوشش کرتے ہیں العرف الشذی میں ہے کہ ایک مدیث میں ہے ' انسسی لااعسلسم السم علمنی اللہ ایتا ہا وقت الشفاعة و انمااطلع علیها فی المحشر فما شان جهل من النح '' پھرانبیا علیہ السلام توسب معصوم ہیں گرآپ علیہ السلام کواس عصمت کاعلم دنیا ہی میں دیا گیا تھا تا کہ وہ قیامت کے دن اس شفاعت کری کے لئے تیار ہیں۔

قول د: "هَجَو" بِفَخْتِين هِم دو بِن ايك بحرين مِن جويهان مراد ہے اور دوم مدينہ كے پاس ہے اور حديث قلتين مِن اى كے مكے مراد بِن قول : "بُصرى "بضم الباء والف مقصورہ كے ساتھ شام كقريب بجانب فجاز ايك معروف بلدہ ہے۔

چونکہ مِصر اع بکسر آمیم دروازے کے کنارے کو کہتے ہیں تو مطلب یہ ہوا کہ جنت کے دروازے کے دونوں کناروں کے مابین مذکورہ فاصلہ ہے بیاس کی وسعت کی طرف اشارہ بلکہ تصریح ہے۔

باب منه

"قوله علیه السلام:"شفاعتی لاهل الکبائرمن امتی ". (حسن صحیح غریب) میری شفاعت میری امت کے کبائر کے مرتکب لوگوں کے لئے ہوگی۔

تشری : شفاعتی میں اضافت عہد کے لئے ہے بینی جس سفارش کی قبولیت کا اللہ تبارک و تعالیٰ نے مجھ سے وعدہ کیا ہے اور جو میں نے خفوظ رکھ لی ہے وہ میں قیامت کے دن امت کے گنبگاروں کی نجات کے لئے کروں گا، جہاں تک رفع درجات کے لئے سفارش کا تعلق ہے قودہ امت کے تمام اتقیاء واولیاء کوحاصل رہے

گی، ای طرح امت کے سلحاء وعلاء کو بھی حق شفاعت ویا جائے گا کہ وہ کسی کی نجات کے لئے سفارش کریں مگریہ سب شفاعت سن تخصور صلی اللہ علیہ وسلم کی شفاعت کری کے بعد بول گی، العرف الشدی میں ہے تھم بعد ها شفاعات کئے بعد ہول گی، العرف طوعیو هم "گویا شفاعت کری اور شفاعت کری اور شفاعت کری اور تیسر کے بلاحساب جنت میں داخلے کی شفاعت آپ علیہ السلام کے ساتھ مخصوص ہیں جو سابقہ باب میں پہلے اور تیسر کے نمبر یرذ کری کئی ہیں۔

معزله وخوارج لنی شفاعت پر بعض آیات سے استدلال کرتے ہیں مثلاً ''ف مات نفعهم شفعة الشافعین '' (المدرُص: ۴۸) وغیره جبکہ اہلست والجماعت باب کی صدیث وغیره ان نصوص سے استدلال کرتے ہیں جن میں شفاعت کا صاف جوت ہے۔ معزلہ کے استدلال کے دوجواب ہیں ایک بید کہ وہ تمام نصوص جن سے نفی شفاعت معلوم ہوتی ہے یا تو کفار کے بارے میں ہیں یا پھرون فی شفاعت قبری پر محمول ہیں لیمی کوزیردی سفارش کرنے کا ہرگزی نہیں ہوگا ہاں جب اجازت ال جائے گی تو شفاعت اذنی شروع ہوجائے گی مخلاصہ یہ کنی والی نصوص کا محمل شفاعت اذنی شروع ہوجائے گی ، خلاصہ یہ کنی والی نصوص کا محمل شفاعت اذنی ہے۔ تد بر

حدیث افی المعنظ: حضرت ابوا مامدرضی الله عند سے مروی ہے کہ میں نے رسول الله سلی الله علیه وسلم سے ارشاد فرمات ہوئے سنا ہے: میرے رب نے مجھ سے وعدہ فرمایا ہے کہ وہ میری امت میں سے سنٹر ہزار آ دمیوں کو جنت میں داخل فرما کیں محرجن پرند حساب ہے اور نہ ہی عذاب، جبکہ ان میں ہر ہزار کے ساتھ مزید سنٹر ہزار ہوں کے اور تین لپ بحری ہوئی میرے دب کی لیوں سے۔ (حسن غریب)

قوله: "مع كل الف مبعون الفاً" يزيادتى مع بين بين بين با الكوضع في المراس كوضع في المراس كو مع في المراس كو كا الف مبعون الفاً" يزيادتى مع بين بين المراس كا مطلب يه بين المراس كا مطلب يه بين المراس كا مطلب يه بين من براداً مُدوم توعين مول مي اوران كي ساته داخل مون والله الناس كا مطلب يه بين من براداً مُدوم توعين مول مي اوران كي ساته داخل مون والله الناس كا مطلب من من المراس كا الناس كا مطلب من من المراس كا المراس

قوله: "حثیات" بفتح الحاء والآء حثیة کی جمع ہا کیہ ہاتھ سے یاد ونوں ہاتھ ملاکر یکبارگی مجرکرکوئی ۔ چیز دینے کو کہتے ہیں۔ اگر ثلاث کو مرفوع پڑھا جائے تو یہ سبعون پر عطف ہوگا اوراس صورت میں مبالغہ زیادہ ہوگا کیونکہ اس طرح ترجمہ بول ہوگا کہ ہر ہزار کے ساتھ ستر ہزارا ور مزید تین لپ کے بقدرلوگ ہوں ہے، علیٰ حذالیوں کی تعداد دوسودس 210 ہوجائے گی جبکہ ثلاث نصب کی حالت میں سبعین پرعطف ہوگا اور یدخل کامفعول بے گا، علی هذا ترجمہ بیہ ہوگا کہ اللہ میری امت سے سر ہزار اور بقد رتین لپ کے لوگ جنت میں بلاحساب وعذاب واظل فرما کیں گے اس صورت میں حثیات کی تعداد صرف تین ہوگی، بنابر ہر تقدیر مراد کثر ت کابیان ہے کیونکہ لپول سے دینے میں تعداد کھوظ نہیں ہوتی ہے نیز سبعین کا عدد بھی تکثیر کے لئے استعال ہوتا ہے، میصدیث یعنی ثلاث حثیات کے الفاظ متثابہات میں سے ہیں جس کی تفصیل (تشریحات ترفری ابساب مساجاء میں سے ہیں جس کی تفصیل (تشریحات ترفری ابساب مساجاء فی نسزول الرب تبارک و تعالیٰ الی السماء الدنیاکل لیلة ''ابواب الوتر سے تین باب پہلے جلد دوم ص: ٤٣٠ پرگذری ہے) اعادہ کی ضرورت نہیں جسے قصیل جا ہے وہیں پرملاحظ فرما کیں۔

حدیث آخر: حضرت عبداللہ بن شفق " سے روایت ہے فرماتے ہیں کہ میں ایلیاء میں ایک جماعت کے ساتھ تھا تو ان میں سے ایک شخص نے کہا کہ میں نے رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم سے سُنا ہے جوفر مار ہے تھے:
میری امت میں سے ایک شخص کی سفارش سے بن تمیم (قبیلہ) سے بھی زیادہ لوگ جنت میں داخل ہوں گے،
عرض کیا گیا اے اللہ کے رسول! وہ (شخص) آپ کے علاوہ ہے؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا وہ میر سے سوا
ہے، پھر جب وہ شخص (راوی حدیث) کھڑا ہوا (اور جانے لگا) تو میں نے پوچھا یہ کون ہے؟ حاضرین نے کہا کہ
ہیا بن ابی جَد عان (رضی اللہ عنہ) ہیں۔ (حسن صحیح غریب)

قوله: "رهط" بروزن شمس آدمی کے خاندان کو کہتے ہیں اس لفظ کا مفر داستعال نہیں ہوتا البتہ اس کی جمع الجمع آتی ہے جیسے ارهط ،ارها ط ،واراهط دس سے کم پراطلاق ہوتا ہے وقبل الی الاربعین جن میں عورت نہ ہو۔ (کذافی العارضة الاحوذی) قوله: "ایلیاء" بکسرالہز قبروزن کبریاء یعنی بالمد جبکہ الف مقصورہ کے ساتھ پڑھنا بھی جائز ہے۔ بیت المقدس میں مشہور شہر کا نام ہے۔

قوله: "فقال رجل" يه حضرت عبدالله بن ابي جذعان رضى الله عنه حابى بين جيبا كه مديث كة خريل مين تقري هي الله عنه عنه الله عنه عنه الله عنه عنه الله عنه عنه الله عنه وحضرات عنها مول كو كي كو تواس بار م مين كوئي حتى بات كهنام شكل ها البته ذخيرة احاديث مين دوحفرات كنامول كود كي كربعض حضرات نے فرمايا هم كه يه حضرت عثمان ذوالنورين رضى الله عنه بين جيبا كه ترفدى كه بعض شخول مين اسى باب مين حن بصري كي مرسل روايت مين قسال رسول الله صلى الله عليه وسلم بعض شخول مين اسى باب مين حن بصري كي مرسل روايت مين قسل ربيعة ومُضَر "جبكهاى مضمون كى ايك روايت ابن عدي الله عليه والله عنه الله عليه والله عنه ابن عباس مين اويس بن عبدالله قرني كانام هيد (كذا في المرقات لعلى القارى في ابن عباس مين اويس بن عبدالله قرني كانام هيد (كذا في المرقات لعلى القارى

على المشكوة)

پھرصحابہ کرام رضوان الله علیم اجمعین کا سوال کرنا: یارسول الله سواک؟ تعجب پرمبنی ہوسکتا ہے کہ اتن فضیلت غیرنی کے لئے تعجب سے خالی نہیں اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ بھی نبی صلی الله علیہ وسلم اُمت میں سے شار ہوتے ہیں اس لئے ان کو پوچھنا پڑا کہ وہ آپ ہیں یا کوئی اور؟علی ھذا یہاں کوئی اعتراض وار ذبیس ہوا کہ "مسن امتی" کے لفظ کے بعد انہوں نے یہ کیسے سوال کیا؟ تد بر۔

قول ه: "فِ مُ الْهُرْ ة بعدالفاء بروزن كتاب لوكوں كى بؤى تعداد كے لئے استعال ہوتا ہے بظاہر يہاں مرادقبائل ہيں كونك آگے قبيل كالفظ بتار ہا ہے كہ فعام اس سے زيادہ ہيں جوقبائل ہى ہوسكتے ہيں بعض نے فعام كو بغير ہمزہ كے بھى پڑھا ہے لينى فيام، اس كالفظى مفرد تونہيں ہوتا البتہ معنوى مفردفئة ہوسكتا ہے۔ قولہ: "عصبة" بضم العين دس اور جاليس كے درميان كى تعداد ميں لوگوں كو كہتے ہيں۔

قوله: "حتى يدخلوا الجنة" يعنى ان كى شفاعت كى جائے گى يہال تك كه مشفوعين جنت ميں داخل ہوجا كيں يامطلب بيہ شفاعت كاسلسله اس وقت تك جارى ہوگا جب تك پورى امت جنت ميں داخل نہيں ہوجاتى _(حديث حسن)

حدیث عوف بن مالک : رسول الله سلی الله علیه وسلم نے فرمایا میرے پاس میرے رب کی جانب سے آنے والا آیا (یعنی فرشتہ) پس اس نے مجھے افتیار دیا ہے ان دوصور توں میں کہ اللہ میری امت کا آ دھا جنت میں داخل کرے یا پھر (ان کی) شفاعت ہوجائے تو میں نے شفاعت کا انتخاب کیاوہ ان لوگوں کے لئے ہوگ جو اللہ کے ساتھ کسی طرح شرک کے بغیر مرجا کیں یعنی تو حید ورسالت پر'۔

اس بہترین انتخاب کی وجہ واضح ہے کہ شفاعت تو پوری امت کوشامل ہوسکتی ہے اگر چہ بعض گنہگار دوزخ میں جائیں گے مگر شفاعت کی برکت سے ایک ندایک دن تو نکل جائیں گے۔

قولد: "نصف امنی" سے مرادامت اجابت ہے کیونکہ امت دعوت میں سے جوایمان نہلائے وہ جنت میں کو سے جوایمان نہلائے وہ جنت میں کی صورت نہیں جاسکتا للبذاوہ موضوع بحث اور قابل شفاعت نہیں اگر چہ شفاعتِ کبری کا پچھ فائدہ ان کو بھی ہوگا۔

باب ماجاء في صفة الحوض

(حوش كور كاحوال كابيان)

"ان فی حوضی من الاہاریق بِعَدَدِنجوم السمآء". (حسن صحیح غریب) حضرت انس سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: میرے حوض میں آسان کے ستاروں کی تعداد میں صراحیاں ہیں۔

فولسد: "ابادیق" ابریق کی جمع ہے پانی کے جگ اور صرائی کو کہتے ہیں جو لمی گردن کا چھوٹا برتن ہوتا ہے یہ کنایہ ہے کثرت سے، یہ جی ممکن ہے کہ تحدید مراد ہوا ور ستاروں کے ساتھ ان برتنوں کی خاص مناسبت ہو کیونکہ ان کی تعداد اگر چہ معلوم نہیں کیونکہ ان کی تعداد اگر چہ معلوم نہیں تا ہم ما ہرین اس پر تنفق ہیں کہ یہ تعداد کھر بول سے متجاوز ہے، اس سے مسلمانوں کی کثرت بابر کت اور حوش کوثر کی وسعت کا انداز ونگایا جاسکتا ہے جوا گلے باب میں فہ کور ہے۔

باب كى وومرى حديث: _ "إنّ لِكل نبى حوضاً وانهم يتباهون أيُّهم اكثر واردةً وانى ارجوان اكون اكثرهم واردةً". (حسن غريب)

ہرنی کا کیک وض ہے اور وہ آلی می فخر کریں گے کہ کس کے پاس زیادہ پینے والے آتے ہیں جبکہ میں امیدر کھتا ہوں کہ میرے وض پرآنے والوں کی تعداد سب سے زیادہ ہوگی۔

تشری : "اِنَّ لِهُ لِمُ لِنَّ مَوضاً" اس کوظاہر پرجمول کرنا متعین ہے آگر چیطبی نے فرمایا کہ اس کو معنی مجازی یعنی ہدایت پر بھی محول کیا جاسکتا ہے تا ہم مالا دونوں میں کوئی فرق نہیں کیونکہ جوخص دنیا میں ہدایت تبول کرتا ہے تواس کووض کی سیرانی نصیب ہوگی، مگر نصوص کوظاہر پر رکھنا اور محول کرنا اولین راستہ ہے ہاں بصورت ضرورت تاویل بھی جائز ہے۔ پھرجس طرح ایک نبی کی است بری اور ذیادہ ہوگی تواسی تناسب سے حوض بھی وسیح ہوگا چونکہ ہمارے نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کی است سب سے زیادہ ہاسکا نقاضا یہ ہے کہ ان کا حوض بھی اسلام کے حوضوں سے زیادہ کشادہ ہوگا۔

قوله: "يتباهون" اى يتفاخرون كيونكديمنت كثرات مينخكاسب ساعلى وموزون رين موقد موكا اگر چه تمام انبياء كرام عليم اللهام سادے كسادے كامياب بين محركاميابي كى سندحاصل كرنے

والوں میں بھی درجات ہوتے ہیں ہیں جس کی امت زیادہ ہوگی وہ اس قدرخوش ہوگا اس لئے انبیاء کرام علیم السلام فخر فرما کیں گرج حدا کی کوشر مندگی نہیں اٹھانی بڑے گی کونکہ مجبت کرنے والے بھائی آئیں میں تفاوت کے باوجودخوش رہتے ہیں اور بیر وعالم آخرت کی بات ہے جہاں عام لوگوں کے دلوں سے حسدو کیند کی برختم کردی جائے گی تو انبیاء کی تو البیا کی امت ایک وہرشاید ہے کہ اس وقت آپ سلی الشملیہ وسلم کو پیام نہیں دیا گیا تھا کہ آپ کی امت ایک وہرشا کی تعداد سابقہ تمام امتوں کے جموعہ سے زیادہ ہے۔ مشتمل ہوگی ، بہر حال ہے ہے کہ آپ علیہ السلام کی امت کی تعداد سابقہ تمام امتوں کے جموعہ سے زیادہ ہے۔ مشتمل ہوگی ، بہر حال ہے ہے کہ آپ علیہ السلام کی امت کی تعداد سابقہ تمام امتوں کے جموعہ سے ذیار دس خریب کا تحم لگایا ہے اور بعض میں صرف غریب کا۔ تدی کے تو کو اس کی سے اس مورن غریب کا تحم لگایا ہے اور بعض میں صرف غریب کا۔

باب ماجاء في صفة اواني الحوض

(حوض کوڑ کے برتنوں کا احوال)

"عن ابى سلام الحُبُشِى قال بَعَث إلى عمربن عبدالعزيز فَحُمِلتُ على البريد فلما دَخَلَ عليه قال: يامير المؤمنين لقلشَق عَلَى مركبى البريد افقال يا ابا السلام مااردث انَ أشتى عليك ولكن بَلَغَنى عنك حديث تحدِّثه عن ثوبان عن النبى صلى الله عليه وسلم فى الحوض فاحببتُ ان تُشَافِهنى به إقال ابوسلام ثنى ثوبان عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: حوضى من عَدَنَ الى عَمَّانَ البلقاء ماؤهُ اشد بياضامن اللبن واحلى من العسل واكوابه عدد نبجوم السماء، من شَرِبَهامنه شربة لم يظمأ بعدها ابداً ، اوّل الناس وروداً عليه فقراء عدد نبجوم السماء، من رووساً ، الدنس ثياباً ، الذين لاينكحون المتنعمات ولايُفتح لهم السدد، فقراء قال عُمر: للكنى نكحتُ المتنعمات وفتحت لى السُدَدُ ، نكحتُ فاطمة بنت عبدالملك لاجرم انى لا اغسل رأسى حتى يَشعَتُ ولا اغسل ثوبى الذى يلى جسدى حتى يتسِخ".

حضرت ابوسلام مبثی فرماتے ہیں کہ عمر بن عبدالعزیر نے میرے پاس پیغام بھیجا (کہ ہیں ان کی خدمت میں صاضر ہوجا وں) چٹانچہ جمعے برید (خچر) پر بھادیا گیا ہی جب بدان کے پاس پہنچ تو عرض کیا اے

تشریخ: ابوسلام بتشد بداللام ان کا نام مطور ہے جبشی جبش کی طرف منسوب ہے عارضة الاحوذی میں ہے کہ ابن ماجہ کا یہ کہنا درست نہیں کہ ابوسلام نی صلی اللہ علیہ وسلم کے خادم تنے بلکہ انہوں نے یہ حدیث نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے خادم حضرت ثوبان سے روایت کی ہے جبیسا کہ ابوداؤدونسائی نے فرمایا ہے اور ترفدی کی روایت سے بھی اس کی تا ئیر ہوتی ہے۔

قبولیہ ''البرید'' فاری لفظ ہے اور ہریدہ دم کامخفف ہے خچرکو کہتے ہیں۔ چونکہ نشانی کے طور پرڈاک کے خچرکی دم کائی جاتی تھی اس لئے اس کو ہرید کہا جاتا تھا۔اگر چہ پھرییم طلق ڈاکیہ کے لئے استعال ہونے لگا۔ کذافی العارضة الاحوذی والتحقة الاحوذی

قول "مااردت ان اشق علیک الخ" مشقت بمعنی تعب و تعکان کے ہے۔ عمر بن عبدالعزیز رحمہ الله اس جملے میں معذرت کرنا چاہتے ہیں کہ جب جمھے پت چلا کہ آپ کے پاس دوش کوڑ کے بارے میں ایک حدیث ہے قیمی آپ کے پاس الحجی سواری جمینے کے لئے انظار نہ کرسکا بلکہ جومیسر تھا لیمی برید بس وہی بھیج کرآ ہے وزحت دی۔

قوله "تشافهنی" لین بالمشافهة اکی آپسے براه راست آسندسا من بین کرسنول ۔قوله "من عدن" یمن کے مشہور شہرکانام ہے۔

قوله "عمان البلقاء" بفتح أهين وتشديد أميم بروزن شدادشام كتريب ايك علاقے كانام باور بلقاء جوفلسطين كا علاقد باس عُمَان سے تمييز واحرّ از كے لئے ذكر فرمايا جو بحرين كے قريب باور بروزن غراب ہے۔ بح عُمَان جومشہور ہے وہ اسى بحرين والے عمان كى طرف منسوب ہے۔

قوله "واكوابه" كوب كى جمع ہے جوبغير دستداور بغير گردن كے چھوٹا سابرتن ہوتا ہے جوعموماً ملى كابنا ہواہوتا ہےاسے آبخوارا كہتے ہيں۔ پيالداور گلاس كا ترجمہ بھى ميچ ہے۔

قوله "لم يظمأ بعدها ابداً" تاجم جنت مين مشروبات كااستعال ربع كامروه بياس بجهانے ك لئے نہيں بكد لطف اندوز ہونے كے لئے ہوگا جيسے دنيا ميں بہت سارے مشروبات كا استعال النذ اذكى غرض سے ہوتا ہے۔

قوله "الشعث دؤوسا" بضم الشين اهدف كى جمع براكنده بالون واليكوكية بين دؤوساً تمييز ہائى طرح ثياباً بھى منصوب بنا برتمييز ہے۔ وُنس بضم الدال وسكون النون وَنُس بفتين كى جمع ہو وَنس ميل كوكية بين، اس روايت كا ابوداؤدكى روايت سے تعارض نہيں جس ميں آپ عليه السلام في سرك بالوں كى ميل كوكية بين، اس روايت كا ابوداؤدكى روايت سے تعارض نہيں جس ميں آپ عليه السلام في سرك بالوں كى مديث براكندگى اور كيڑوں كے ميلا ہونے كونا پندفر مايا ہے كيونكہ وہ حالت اختيار برجمول ہے جبكہ باب كى حديث اضطرارى حالت برجمول ہے بين يوگ ايسے غريب و مفلس بين يا امور آخرت ميں ايسے منہمك بين كه وہ اين اس حالت كوتبديل نہيں كرسكة۔

تشریحات ترفدی میں پیچھے عرض کیا جاچکا ہے کہ اضطراری تکالیف پرمبری صورت میں ثواب ماتا ہے اختیاری تکلیف پرمبری صورت میں ثواب ماتا ہے اختیاری تکلیف پر اجز نہیں ماتا، مثلاً ایک آدمی اللہ کی راہ میں گردآ لود جوجائے تواس پر جہنم کی آگ حرام ہوتی ہے لیکن اگرایک شخص مٹی لے کرسر پر ڈالدے تو وہ یہ مقام حاصل نہیں کرسکتا، اس لئے شہادت اورخودکشی دوالگ الگ چیزیں ہیں۔

قوله: "المتنعمات" بسيغة اسم فاعل خوش عيش عورتو ل كركت بير_

قسولسد: "النسدد" بضم السين وفق الدالسدة كى جمع بمطلق درواز كوكمت بين چونكديمواً بندر بتاب ال لئ عارضه مين لكھتے بين كدرواز ب بندر بتا باس كئ اس كوسدة كهاجا تا ہے كويا يرسّد بمعنى بندك ہے، ابن العربی عارضه مين لكھتے بين كدرواز ب

کاوپر بارش سے بیچنے کے لئے جوسائبان ہوتا ہےاسے بھی کہتے ہیں، بہر حال مراداس سے دروازہ ہے۔

اور حدیث کا مطلب یہ ہے کہ ان لوگوں کو معاشرہ میں کوئی حیثیت نہیں دیجاتی نہ تو امیر کھر انوں میں ان کا نکاح ہوتا ہے اور نہ بی ان سے ملنا اور دعوتوں میں مرعوکیا جاتا گوارا کیا جاتا ہے، اگر اس کا مصداق مہاجرین صحابہ کرام رضی اللہ عنہ نہیں تو پھرکون ہو سکتے ہیں؟ ہاں البتہ بیخ شخبری کسی زمانہ کے ساتھ مختص نہیں ہے۔

عمر بن عبدالعزیز کے جواب کا مقصدیہ ہے کہ جہاں تک آخری دونوں خصلتوں کاتعلق ہے تو ہدیرے
بس کی بات نہیں کیونکہ دشتہ رد کر نااور دروازہ بند کر ناایہ بس کی بات نہیں بلکہ یہ دوسرے پر موقوف ہوتا ہے البتہ
پہلی دونوں باتوں کا میں التزام کرسکتا ہوں جس کا مطلب یا تو عدم تکلف ہے کہ میں زیب وزینت میں زیادہ
وقت ضائع نہیں کروں گا بلکہ اصل مقصد کی طرف توجہ دوں گا۔ یا مطلب سے ہے کہ میں مہاجرین اولین سے
مثابہت اختیار کرنے کے لئے فقراضیاری پڑمل کروں گا کہ بس ایک جوڑ ار کھ لیادہ جب میلا ہوجائے تب
دھوؤں گا اور شسل کر کے اسے پہنوں گا۔

المستر شد: عرض کرتا ہے کہ متعمات سے شادی کرنے میں وقت کا بے تحاشہ ضیاع مشاہدہ عام ہے کہ کھی ایک مارکیٹ میں ،آج کل تو متعمات کی کہ کھی ایک مارکیٹ میں ،آج کل تو متعمات کی اکثریت نمازی و متشرع شو ہرکو پند بھی نہیں کرتیں پھران کی رضا کی خاطر داڑھی کو بھی صاف کرتا پڑتی ہے اور دیگر بہت سے غیر شرکی امور مثلاً ان کی فرمائشوں کو پورا کرنے کے لئے حلال وحرام مال کی تمیز کئے بغیر ہاتھ یا دَل بھی مارتا پڑتے ہیں۔

حدیث آخر: حضرت الوذر رضی الله عند سے مروی ہے فر ماتے ہیں ہیں نے عرض کیا کہ اے اللہ کے رسول! حوض کے برتن کتنے ہیں؟ آپ نے فر مایاتم ہے اس کی جس کے قبضہ میں میری جان ہے کہ بلاشبہ اس کے برتن آسان کے برتن آسان کے ستاروں کی تعداد اور اندھیری رات میں صاف آسان پر چیکنے والے ستاروں سے بھی زیادہ ہیں، وہ جنت کے برتنوں میں سے ہیں جوان میں پیئے گاوہ آ بخر تک (لیعنی بھی بھی) پیاسانہیں ہوگا، اس حوض کی چوڑ ائی اس کی لمبائی کی برابر ہے (لیعنی مربع و چوکور ہے) ممان سے ایلہ تک جتنی (مسافت) ہے اس کا پانی دودھ سے زیادہ میٹھا ہے۔ (حسن میحے)

قوله: "نجوم السماء و كو اكبها" نجم ادركوكب دونول ستارول كوكت بين تاجم نجم ميل الجرف ادرظهور كمعنى يائ جات بين اوركوكب مين حيك كر، يرتولغوى فرق سام محروف مين كوئى خاص فرق نبين

ہالبت فلکیات کے عرف میں بعض نے بیفرق کیاہے کہ کوکب وہ ستارہ ہے جوسورج کے گردگھومتاہے اس کومشہورا صطلاح کے مطابق سیارہ کہاجاتا ہے۔

قوله: "مُصبحيّة" اسكاوزن بحى مظلِمَة كى طرح يعنى بعينة اسم قاعل مصحت السماء يا اسحت السماء اسماء المحت المبل وقت كهاجا تا ہے جب آسمان ميں گردو فباراور بادل كہيں نہ بوطلع بالكل صاف بوان دونوں قبود كافاكده تكثير ہے كيونك جا عمل المراح ومطلع ميں زياده ستار منظم في المحت ا

قولسه: "عرضه مشل طوله مابین عمان النع" یروش کی کیفیت اور وسعت کابیان ہے تحدید مراذبیں اس لئے بھی بدالفاظ آتے ہیں اور بھی من عدن الی جمان جیسا کر سابقہ حدیث میں گذرا ہے اور بھی ایک مینے کی مسافت کا ذکر ہے وغیر حابی سب تقریب الی الفہم کے لئے ہے کہ حوض کم از کم اتناوسیج موگا، چونکہ حوض کوڑ اور بل صراط وغیر وسب امور مکنہ ہیں اور ان کی خبر صادق ومصدوق علیہ السلام نے دی ہے اس لئے ان کی تقدیق لازی ہے جیسا کہ شرح مقائد ہیں اس کی تقریح کی گئی ہے۔

"عن ابن عباس قال لمّاأسرِى بالنبى صلى الله غليه وسلم جَعَلَ يَمُرُبالنبى والنبيين ومعهم الحدحتى مَرً ومعهم القوم والنبى والنبيين وليس معهم احدحتى مَرً بسوادعظيم، فقلتُ من هذا؟ قيل موسى وقومه ولكن اوفع وأسك فانظرفاذاسواد عظيم قدسَدُ الاُفقَ مِن ذاالجانب ومِن ذاالجانب، فقيل هؤ لآء أمتك وسوى هؤ لآء مِن امتك سبعون الفايد خلون الجنة بغير حساب، فَدَخَلَ ولم يسئلوه ولم يفسِّر لهم فقالوا نحن هم، وقال قائلون هم أبناء الذين وُلِدُواعلى الفطرة والاسلام فَخَرَجَ النبى صلى الله عليه وسلم فقال: هم الذين لايكتووُن ولايسترقون ولايتطيّرون وعلى ربهم يتوكلون فقام عُكاشة بن محمَّنِ فقال انامنهم فقال سَبقكَ بها محمَّنِ فقال انامنهم فقال سَبقكَ بها عُمَاشة". (حسن صحيح)

حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ جس پات کو ٹی صلی اللہ علیہ دسلم کو (معراج کے لئے)
لے جایا گیا تو آپ علیہ السلام گذر ہے ایک نبی اور دونبیوں کے پاس سے اور ان کے ساتھ قوم (امت) تھی اور گذرے ایک ایک دودو

نیوں کے پاس سے دراں حالیہ ان کے ہمراہ کوئی ایک شخص بھی نہ تھا، یہاں تک کہ گذر ہے آپ صلی اللہ علیہ وسلم اللہ علیہ وسلم اللہ اللہ اللہ جم غیر برتو میں نے بو چھا یہ کون ہیں؟ کہا گیا یہ موی اوران کی قوم (امت) ہیں، لیکن اپناسراٹھا کراو پر و کھے! پس ایک زبردست ہجوم تھا جس نے افق کو بجردیا تھا اِس طرف سے (بھی) اورا س جانب سے (بھی) لیل کہا گیا یہ آپ کی امت میں سے ستر ہزارا آدی بغیر حساب کے جنت میں داخل ہوں گے، (اس ارشاد کے بعد) آپ صلی اللہ علیہ وسلم گھر میں داخل ہوگئے اورلوگوں نے ان سے دریافت نہیں کیا (کہ وہ ستر ہزارکون ہیں؟) اور نہ ہی آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے صحابہ کووضا حت فرمائی، چنانچ صحابہ کہنے گئے وہ ہم لوگ ہوں گے جبکہ بعض کہنے والوں نے کہا یہ وہ بچے ہوں گے جو فطرة اسلام پر پیدا ہوئے ہوں گے جو نداغ کرتے ہیں اور نہ ہی اور نہ ہی اور اپ کہا یہ وہ کے جو نہ ان کر تے ہیں اور نہ ہی اللہ علیہ وہاکی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہیں اور نہ ہی اور نہ ہی ان میں سے ہوں؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں منظم نے فرمایا دوسے اور کہا اے اللہ علیہ وسلم نے فرمایا وہ نہ کہا ہوں گئے ہیں۔

''ہاں'' پھرآپ کے پاس ایک اور خوض آیا اور پو چھا ہیں بھی ان میں سے ہوں؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اس میں عکا شہم پر سبقت لے گئے ہیں۔

''ہاں'' کھرآپ کے پاس ایک اور خوض آیا اور پو چھا ہیں بھی ان میں سے ہوں؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اس میں عکا شہم پر سبقت لے گئے ہیں۔

تشری : قوله: "بسوادع ظیم" جب بهت سارے لوگ جمع بوجاتے ہیں تواس مقام پرایک سیابی می نظر آتی ہے کثرت رؤوں کی وجہ سے اس لئے اسے سواد کہتے ہیں۔

قوله: "ولكن ادفع دأسك" السياسامت كى رفعت معلوم بوئى كيونكهاو پرد كيمنا بلندى كى طرف بوتا ہے۔ طرف بوتا ہے۔

قوله: "سد الافق"سد كم من چُهائ كي بي اورافق آسان ك كنارول كوكيتي بير ـ قوله: "فقالو انحن هم" كيونكه صحابه كرام امت ك افضل ترين لوگ بير ـ

قوله: "هم ابناء الذين ولدواعلى الفطرة الخ"اضافت موصوف الى الصفة بت كرام كى اولادكو بھى شامل موجائے تقديراس طرح ہوگى "هم الابناء الذين الخ" "يعنى بيروه ني جي جوفطرة اسلامى برپيدا موئے بين اور بلوغت سے بہلے انقال كرگئے بين وه بغير حساب كے جنت بين جائيں گے۔

قوله: "فقام عُكَاشة" بضم العين وتشديدا لكاف اس وتخفيف كساته برهنا بهى جائز ہے، بدرى صحابى بين غزوة بدريس ان كى تلوار أو كى تقى تو آپ عليدالسلام نے ان كو تجور كى خشك شاخ دے دى جوتلوار بن

گئی، پینتالیس ۱۵۶ سال کی عمر میں حضزت ابو بکرصدیق کے دور خلافت میں انقال کر گئے ہیں۔ (کذافی الا کمال فی اساءالر جال لصاحب المشکوۃ)

قوله: "فه جاء اخوالخ" ال دوسرے آدی کے بارے میں شارطین کے بہت سے اتوال ہیں کہیں کون تھا؟ امام نووی نے شرح مسلم میں سیح اور دانج قول اس کوتر اردیا ہے کہ آپ علیہ السلام کوبذر بعیہ وی معلوم ہواتھا کہ عمکا شہ کی درخواست اس حوالے سے تبول کی جائے گی دوسرے کی نہیں۔ (نووی برمسلم علی اس اس اللہ عملات کی درخواست اس حوالے سے تبول کی جائے گی دوسرے کی نہیں۔ (نووی برمسلم علیہ السام کے جواب کا مطلب بیہ ہے کہ عکاشہ کی طرح تم ان صفات میں درجہ علیاء پڑہیں ہوکہ میں تمہیں علیہ السلام کے جواب کا مطلب بیہ ہے کہ عکاشہ کی طرح تم ان صفات میں درجہ علیاء پڑہیں ہوکہ میں تمہیں بوحہ بین السطور مختصر الفاظ میں بیان کیا گیا ہے۔ بحساب والوں میں ہے ہونے کی خبر دے دول ، دونوں توجیعین کو بین السطور مختصر الفاظ میں بیان کیا گیا ہے۔ او پرصا حب مشکو ق کی اسماء الرجال کتاب کے حوالے سے حضرت عکاش کے کو کل کے معیار کا اندازہ لگیا جا اسکتا ہے جن کے ہاتھ میں کنڑی بھی تلوار بن گی اگر چہ بیہ آپ علیہ السلام کا مجزہ ہے کہ حوانتہائی خاص لگیا جا سکتا ہے۔ جن کا مطلب بیہ ہے کہ بغیر حساب کے جنت میں وہ لوگ جا کمیں گے جوانتہائی خاص ضرورت نہیں ہوں گے، رہاداغ ، دم یعنی جھاڑ بھو تک اور تطبی کا مسلہ تو یہ سب تنصیل سے گذراہے اعادہ کی ضرورت نہیں داغ کے لئے (تشریخات تر نہ کی تحالے الرقیة ... والرف تھ نی ذاک ''اور رقیہ کے لئے دیکھ خلاشت میں داغ کے لئے (تشریخات تر نہ کی راھیة الرقیة ... والرف تی نی ذاک '')

جس کا خلاصہ یہ ہے کہ داغ کومؤثر گرداننا جائز نہیں البتہ بطور سبب کے بوقت ضرورت علاج کے لئے جائز ہے۔ اس طرح رقیہ یعنی جھاڑ پھونک بھی سبب کے درجہ میں جائز ہے بشرطیکہ وہ الفاظ غلط مضمون پر شمل نہ ہوں۔ ید خصت عام ہے اورعوام کے لئے ہے جہاں تک خاص الخاص الوگوں کا تعلق ہے تو وہ تکلیف پر صبر کرتے ہیں اور صحت یا بی کے لئے اللہ سے دعا ئیں ما نگتے ہیں اسباب پر تکرینہیں کرتے۔ جہاں تک بدشگونی اور بدفالی کا تعلق ہے تو وہ کسی طرح کسی کے لئے بھی جائز نہیں ہے۔ تطیر کی تفصیل کے لئے و کیھئے (تشریحات تر ندی جلد پنجم ص: ۲۵ می اطرح کسی کے لئے بھی جائز نہیں ہے۔ تطیر کی تفصیل کے لئے و کیھئے (تشریحات تر ندی جلد پنجم ص: ۲۵ می اطرح کسی کے لئے بھی جائز نہیں ابواب السیر)

حدیث آخر: ابوعمران جونی رحمہ اللہ ہے مروی ہے کہ حضرت انس رضی اللہ عنہ نے فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے زمانہ میں ہم جس چیز (اموردین) پر تضاب اس میں سے کوئی چیز (اسی حالت میں) نہیں دیکھ رہا۔ میں (ابوعمران) نے کہانماز کہاں ہے؟ (یعنی نماز توبا تی ہے) انہوں نے فرمایا کیاتم لوگوں نے نہیں دیکھ رہا۔ میں (ابوعمران) نے کہانماز کہاں ہے؟ (یعنی نماز توبا تی ہے)

نماز میں وہ (کوتابی) نہیں کی ہے جوتم جانتے ہو۔ (حسن غریب اخرجہ البخاری الینیا)

اس مدیث کے دومطلب ہیں: ایک جوظا ہری ہے اور ترجہ میں اس کی طرف اشارہ کیا گیا ہے جس کے مطابق حضرت انس اعلی میں تقفیراور کوتا ہی پر ناراضگی کا اظہار فر مارہے ہیں چونکہ یہ ارشاوانہوں نے اس وقت فر مایا تھا کہ جب جاج بن بن پوسف نے نماز کومؤخر کیا اور حضرت انس نے جاج بس پر حضرت انس نے خام اور مایا گرماتھیوں نے ازرو کے شفقت ان کوئع کیا کہ ہیں ان کی جان نہ چلی جائے جس پر حضرت انس نے گھوڑے پر سوار ہو کر جاتے ہی کورہ ارشاد فر مایا حافظ نے طبقات ابن سعد سے نقل کیا ہے کہ اس پر یہ می اضافہ ہے آپ سے احدہ ان لااللہ الااللہ ، توایک آدی نے کہا اے ابوجزہ ! نماز جو ہے؟ آپ نے فر مایا کہ تم لوگوں نے ظہر کومغرب کے وقت رکھا ہے تو کیا یہ رسول اللہ علیہ وسلم کی نماز تھی؟ (کذائی تحفۃ الاحودی) لوگوں نے ظہر کومغرب کے وقت رکھا ہے تو کیا یہ رسول اللہ علیہ وسلم کی نماز تھی؟ (کذائی تحفۃ الاحودی) میں مارہ مطلب یعنی تبد بلی کوخت نا لیند کیا ہے بلکہ اسے جا ہلا نہ قر اردیا ہے کیونکہ صحابہ کرام کے بارے میں اس کا تصور بھی نہیں کرنا چا ہے کہ انہوں نے اعمال میں کی طرح تبدیلی کی ہوگی کیونکہ قر آن نے گوائی دی ہے کہ وہ کی ملامت کرنے والے کی ملامت سے نہیں ڈرتے بھی حذا مطلب یہ ہے کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے زمانہ میں دوشم کی ترمیس تھیں ایک مادی وہ میں ایک دیوں میں دیتی تعین تبدیلی میں اور دوسری دندی دو ترم کی ترمیس تیں دوشم کی ترمیس تھیں ایک دیوں میوں میں سے فیم اور کیشر حصہ اور دوسری دندی، دینی رحمت تو قر آن وسنت کی صورت میں باتی ہے گردندوی رحموں میں سے فیم اور کیوں میوں میں سے فیم اور کور کیوں میاتی میں میں دینی رحمت تو قر آن وسنت کی صورت میں باتی ہے گردندوی رحموں میں میں میں میں میاتی ہے کہ آپ کور

اس لئے اب نماز میں بھی وہ خلوص ،حضور اورخشوع وغیرہ نہیں رہا۔ لاانهم احدثوا تغییراً فی ارکانها، إنتن

تاہم اگر پہلی تو جیہ میں اس قید کا اضافہ کردیں تو وہ بھی درست ہوسکتی ہے یعنی آپ علیہ السلام کے عہد پاک میں اعمال کے ظاہر وباطن کی جو حالت تھی آج وہ بعینہ باتی نہیں کیونکہ اس کا روحانی پہلو کمزور ہو گیا ہے اگر چہ ظاہری شکل اور ڈھانچہ جوں کی توں باتی ہے۔

حدیث آخر: حضرت اسمآء بنت عمیس رضی الله عنها سے مروی ہے فرماتی ہیں کہ میں نے رسول الله الله علی الله علیہ وکا م مسلی الله علیه وسلم کو بیدار شاد فرماتے ہوئے سُنا ہے کہ بُر ابندہ ہے وہ فخص جوخود پسندی میں مبتلا ہواور اِترا تا ہواور بزرگ وبرتر (خدا) کو بھول گیا ہواور بُر ابندہ ہے وہ فخص جو تکبر کرتا ہے اور حدسے بڑھتا ہے اور بھول گیا وہ سب سے بڑے اورسب سے بالاتر (خدا) کو، گرابندہ ہے وہ خض جو خفلت کرتار ہتا ہے اور کھیلار ہتا ہے، اور قبروں اور ہڑیوں کے گل سر جانے کو بھول جاتا ہے، گرابندہ ہے وہ خض جو فساد (وتکبر) کرتا ہے اور سرکٹی اختیار کرتا ہے اور مودین کے ذریعہ دنیا وہ بھول جاتا ہے اپنی ابتدام (خلقت) کو اور انہتاء (کار) کو، گرابندہ ہے وہ شخص جودین کے ذریعہ دنیا حاصل (کرنے میں بھیڑ یے کی طرح چال بازی) کرتا ہے، گرابندہ ہے وہ شخص جو شخص جو شخص جو شخص جے موس کمراہ کرتی ہے، گرابندہ ہے وہ شخص جے موس کمراہ کرتی ہے، گرابندہ ہے وہ شخص جے حرص ذلیل کرتی ہے۔ (ھذا حدیث ... لیس اسنادہ بالقوی)

قول د: "تَعَفَيْلَ واختال" پہلا بروزن تَفَقُل ہے دونوں صغے خُیالاء بمتی عجب وَتکبر کے ہیں لینی وہ فخض دل میں اپنے آپ کو دوسروں سے افضل و برتہ مجھتا ہے واخت ال اور ظاہر میں چال چلن سے بردا ہونے کا تا ثر دیتا ہے، جبکہ بردائی و کبریائی تو صرف اور صرف اللہ عز وجل کا وصف خاصہ ہے جو تخلوق کی صفات سے پاک اور منزہ ہے گریہ نا دال فخص اس کو بعول جاتا ہے اس لئے خود کو برا سجھتا ہے۔

قوله: "وَجَبَو" وه تكبرجس سے آدمی دوسرول كوتقير مجھكران كوكسى كام پرمجبوركرتا ہو۔

قول اعتدی " اعتداء صد سے برجے کو کہتے ہیں یعنی اس متکبری بات اگر نہ مانی جائے تو وہ اتن سخت سز ادبتا ہے کہ محدکوتو ڑتا اور پامال کرتا ہے، جیسے جاہل وڈیروں کی عادت ہوتی ہے حالانکہ بیتو خدائی وصف ہے کہ اللہ تبارک و تعالی اگر کمٹی مخالف کوسز اویں تو اس کے لئے کوئی حداور کوئی پابندی نہیں مگر بیہ بے وقوف شخص اس تنہارہ عالب کو بھول جاتا ہے جوسب کے اوپر ہے۔

قول ہے: "سَهَا" حق سے عافل ہوگیا ہے۔اور 'لها" الہویعی نضولیات اور بے فائدہ چیزوں میں مستغرق ہوگیا ہے گوکہ اس سے کچھ ظاہری اور وقتی فائدہ محسوں ہوتا ہے جیسے دنیوی مال ومتاع، جبکہ عظمند کو دور ائدیشیسے کام لینا چاہئے کہ اس دنیا کے بعد قبر میں جانا ہے اور وہاں ہڑیوں کا بوسیدہ ہونا ہے۔قبولہ: "بِسلسی" بکسرالباء بروزن الی سرخ جانے کے معنی میں ہے۔

قوله: "عَتا"عتو سے بمعنی شرارت کرنے اوراس میں برصت رہنے کے ہے۔

قول د: "طغی" یہ بھی عمّا کی طرح بروزن علی کے ہے طغیان شروفساد میں صدیے بڑھنے کو کہتے ہیں حالانکہ اگرد یکھا جائے تو کسی کو بیر حرکت وعادت زیب نہیں دیتی کیونکہ آ دمی ایک حقیر ناپاک پانی سے بناہے اور بالآخر پھرسڑی ہوئی بد بودارلاش اور گندہ مادہ میں تبدیل ہوگا گردہ بدمعاش اس حقیقت کونظر انداز کر رہاہے۔

قوله: "يختل الدنيابالدين" كبسرالنا وهوك وكتيج بين خصوصاً جبكه بهيريا اپني شكارك كي حجيب كرحمله كرتا ہے تو كہا جاتا ہے حكل الذيب الصيدَ ، مطلب واضح ہے اور آج كل اس كى امثله و كيفا بہت آسان ہے۔

قوله: "یختِل الدین بالشبهات" ابن العربی عارضة الاحوذی میں لکھتے ہیں "کلماعوضت له مسئلة یحرمهاالشوع اعتمدعلی شبهة فیها فَا حَلّها "یعنی جب کوئی ایبامئلدور پیش ہوجائے جوحرام ہوگراس میں ایک پہلو بظاہر جواز کامعلوم ہوتا ہوتو پی پہلواور شبہ کافائدہ اٹھا کراس مسئلہ کوجائز قرار دے کراس پیلو بیا کرتا ہے، امور مشتبہ پرتفصیلی بحث (تشریحات تر فدی جلد: ۵ص: ۱۲۱) پر بیوع کے پہلے باب میں گذری ہے۔ خرض جومن اللی جمنواہشات اور حرص کے دریے ہووہ بُر ابی ہے۔

حدیث آخر: حضرت ابوسعید خدری رضی الله عنه کی مرفوع حدیث ہے کہ جومؤمن کسی بھو کے مؤمن کی الله عنه کی مؤمن کو پیاس کے کو کھا نے کھا نے کو اللہ اس کو قیامت کے دن جنت کے کھلا سے کھلائے گا،اور جومؤمن کسی نظے مؤمن کو د آت (پانی) پلائے گا تو اللہ اسے قیامت کے روز رحیق مختوم سے پلائے گا،اور جومؤمن کسی نظے مؤمن کو (لباس) پہنائے گا تو اللہ اس کو جنت کے سبز حلوں سے پہنائے گا۔ (غریب)

قوله: "دحیق" بروزن رفیق شراب کو کہتے ہیں جبکہ استحسوم "جِنام سے بمعنی مُمرِ لگی ہوئی یعنی سَر بمہرکو کہتے ہیں۔

قولیہ: "غُدی" بضم العین وسکون الراءم ادعر فی نزائے ہے بین جس کے پاس مناسب حال لباس نہ ۔

قوله: "خضر" بضم الخاء وسكون الضاد اخضر كى جمع ہے بمعنی سبز كے كيونكه بيخوبصورت رنگ ہوتا ہے يعنى اگر چه لباس تو ہرجنتى كو سلے گا مگراييا شخص بطور خاص سبز حله ميں ملبوس ہوگا جوانتيازى حسن كا حامل ہوگا جيسے عام پرندوں ميں سبز طوطے كارنگ بہت ہى دكش ہوتا ہے۔

صدیث الی هرمیق طنت آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا: جوڈرا تو وہ رات کے پہلے پہر میں چلا اور جو اوّل شب سے چلا وہ منزل کو پہنچا آگاہ رہو! کہ اللّٰہ کی پونجی گراں قیت ہے، آگاہ ہو! کہ اللّٰہ کی پونجی جنت ہے۔ (حسن غریب)

قوله: "أدلَجَ" رات كي شروع من لكلا

قوله: "سِلعة" سامان ومتاع اور پونجی کو کہتے ہیں یہاں مراد جنت ہے جیسا کہآ گے تقری ہے۔
مطلب بیہ کہ دیمن کے لئکرسے بیچنے کی غرض سے جو خص رات کا اندھیرا ہوتے ہی نکے تو صبح جب
ویمن کا لئکراس بستی میں داخل ہوگا اس کا خاندان بہت دور نکلا ہوگا جہاں تک دیمن کی رسائی ممکن نہیں ہوگی ایساہی
جومؤمن ابھی سے اپنی تیاری جاری رکھے گا تو موت کے وقت اللہ کے عذاب سے بہت دور ہوگا۔ اور جنت کی
نعتیں انتہائی گراں قدر مہنگی ہیں دہ قیمت دے کر ہی وصول وحاصل کی جاسکتی ہیں لہذا عمل کی صورت میں قیمت
اداکر کے دہنمتیں حاصل سے بحنے!

صدیث آخر: حضرت عطیہ سعدی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: کوئی بندہ متقبوں میں سے ہونے کے درجہ تک اس وقت تک نہیں پنچ گا جب تک نہ چھوڑے اس چیز کوجس میں کوئی حرج (سمبرہ وغیرہ) ہے۔
(گناہ وکرا ہیت) نہیں اس چیز سے نیچنے کی خاطر جس میں حرج (شبہہ وغیرہ) ہے۔

چونکہ تقوی کے تین مراتب ہیں: (۱) ایک کفروشرک سے پچنا تا کہ عذاب خلودودائم سے بچے (۲) دوم گناہ سے پر ہیز کرنا اگر چہ صغائر ہوں (۳) اور سوم غیراللہ میں دل لگانے اور تفکر سے بچنا، اس لئے حدیث میں متقین سے درجہ دوم بھی لیا جاسکتا ہے کہ آدمی جب تک گناہ کے ذرائع واسباب کونہیں چھوڑے گاوہ متی نہیں بن سکے گا کیونکہ گناہ کے قریب جانے سے گناہ میں مبتلاء ہونا گویالازمی ہی بات ہے، کین زیادہ بہتر یہ معلوم ہوتا ہے کہ مراداس حدیث میں درجہ سوم کے متی ہیں لیعنی جب آدمی لا لیعنی چیزوں کوچھوڑے گا تو وہ حقیقی متی بن جائے گااس کی طرف اشارہ ہے اس آیت میں 'اتقو اللّه حق تقاته''۔ (اعراف: ۹۲)

حدیث آخر: حضرت حظله اُسیدی رضی الله عند فرماتے ہیں که رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا: اگرتم (ہروقت)و بسے ہی رہوجیسے میرے پاس ہوتے ہوتو فرشتے اپنے پروں سے تم پرسامیہ کرنے لگیس گے۔ (حسن غریب)

حظلہ اُسیدی بالصغیر کو حظلہ کا تب بھی کہتے ہیں یے نسیل الملائکہ کے علاوہ ہیں کوفہ میں حضرت علیٰ کے بعد وفات یائی ہے۔ بعد وفات یائی ہے۔

بیروایت مخضر ہے مسلم شریف میں پوری روایت اس طرح آئی ہے اور آ گے ترفدی میں بھی آ رہی ہے کہ حضرت حظلہ کی ملاقات ابو بمرصدیق سے ہوئی ان کے دریافت کرنے پرانہوں نے جواب دیا کہ حظلہ تو منافق ہوگیا ہے ابو بکڑنے فرمایا سجان اللہ! یہ آپ کیا کہہرہے ہو؟ میں نے کہا کہ جب ہم رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس ہوتے ہیں اوروہ ہمیں دوز خ وجنت کی یاد ولاتے ہیں توابیا لگتاہے جیسے وہ مناظر ہمارے سامنے ہوں پھر جب ہم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے یہاں سے نکل آتے ہیں اور بیوی بچوں اور کام کاج میں مصروف ہوجاتے ہیں تو بہت بچھ بھول جاتے ہیں ، پس ابو بکڑنے فرمایا بخدا سے معاملہ تو میرے ساتھ بھی ہے پس میں اور ابو بکر دونوں چلے یہاں تک کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس داخل ہوئے ، میں نے کہا اے اللہ کے رسول! حظلہ منافق ہوگیا ہے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے بوچھا کیسے؟ میں نے عرض کیا کہ ہم جب آپ کے پاس ہوتے ہیں ... الی بوری صورت حال بتادی۔ پس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا بخدا! اگرتم اسی حالت ہوتے ہیں ... الی بوری صورت حال بتادی۔ پس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا بخدا! اگرتم اسی حالت بہوتے ہوئے جو میرے پاس تمہاری حالت ہوتی ہے اور ہمیشہ ذکر کر رہے ہوتے تو فرشتے تمہارے بستر وں پر اور داستوں میں تم سے مصافحہ کرتے لیکن حظلہ کوئی گھڑی کیسی ہوتی ہے اور کوئی کیسی۔ (ج:۲مس:۳۵ اللہ کوئی گھڑی کیسی ہوتی ہے اور کوئی کیسی۔ (ج:۲مس:۳۵ التوبة)

حدیث آخر: "إِنَّ لِكل شيء شِرَّةً ولكل شِرَّةٍ فترةًالخ "برچيزى ایک تيزى ونشاط بوتى ہے اور برتيزى (كے پیچے اس) كى كرورى بوتى ہے لس اگروہ نشاط والامياندراہ چلے اور حق كر يب رہ تواس كى كاميا بى كى اميدر كھوليكن اگراس كى طرف الكيوں سے اشارہ كياجانے گے تواسے (صالحين كى اميدر كھوليكن اگراس كى طرف الكيوں سے اشارہ كياجانے گے تواسے (صالحين كے) شاريس ندلاؤ۔ (حديث مجے غريب)

قول ه: "شرة" بسرالشين وتشديدالراء، تيزى، پهرتى، نشاط، پُستى اور حرص كوكتے ہيں۔قول ه: "فتوة" بفتح الفاءوسكون الثاء ضعف، كمزورى اور سستى كوكتے ہيں بعض نے شرة كوراء كے بجائے وال كساتھ ليعني هِدّة وَنقل كيا ہے مطلب دونوں كا ايك ہے۔

قوله: "سَدّه" بَتْ مَد يدالدال الاول سدادراست روى، مياندروى اور قول و فعل كى درسكَّى كو كهتي بير _ قوله: "فارجوه" اى فلاحه _

قوله: "فلاتعدّوه" ای بِمُفلح ، پی مطلب بی بواکه بس فضی کوعبادت اور نیکی کام کرنے کے اسباب اور جوش مل جائے تو اگر اس نے راہ راست پر چلنے کی کوشش کی اور چونکہ بالکل سیرها چانا تو مشکل ہے لہذا اگروہ قریب الی الحق رہاتواس کی کامیابی کی امیدرکھوکہ وہ کامیابی سے ہمکنار ہوجائے گا گرا گروہ مشارالیہ بالبنان بن جائے یعنی لوگوں میں عزت وشہرت پائے تو پھراس کوسلیاء دکامیاب لوگوں میں سے شار نہ کرو کیونکہ وہ البنان بن جائے یعنی لوگوں میں عزت وشہرت پائے تو پھراس کوسلیاء دکامیاب لوگوں میں سے شار نہ کرو کیونکہ وہ اب ریاکاری کاشکار ہوئی گیا ہے جہاں تک اس کی قوت وشہرت کا تعلق ہے تو وہ بھی ایک ندایک دن ختم ہوجائے

گی یا کم ہوجائے گی کیونکہ ہرتر تی کے بعد تنزلی کانمبرآتا ہے۔ ہاں جس پراللہ کاخصوصی فضل ہوتو وہ مشکیٰ ہے جیسا کہ اگلی حدیث میں ہے خرض عبادت میں بھی افراط وتفریط کے مابین چلنا محفوظ ترین راستہ ہے کہ اس میں دوام بھی نصیب ہوتا ہے جواللہ تبارک وتعالیٰ کو پہند ہے اور پیطریقہ حُب جاہ سے بھی دورہے اور شہرت سے بھی کنارہ پر ہے جبکہ نیکی کے کسی عمل میں تیزی لانے کا انجام جلدی شہرت مانا اور پھر حب مال وحب جاہ کے جال میں پھنٹا ہے، لہذا دیگر عبادت گذاروں کی طرح کسی مصنف کو بھی اپنی تقنیفات کی تعداد محض شہرت کی خرض میں بیٹس بڑھانی جائے کہ بیا خلاص کے منافی ہے۔ واللہ اعلم

حدیث آخر: "بحسب إمرِئِ من الشران یشار الیه بالاصابع فی دین او دنیا الامن عصمه الله "کی فض کی بربادی کے لئے رہمی کافی ہے کہ اس کی طرف الگیوں سے اشارے کئے جا کیں خواہ دین کے بارے میں ہویا و نیا کے حوالے سے سوائے اس کے جس کو الله (بربادی و تباہی سے) بچائے۔

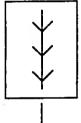
بیحدیث معلق ہے امام بہتی " نے شعب الایمان میں بسند ضعیف اس کی تخری کی ہے، اور مطلب اس کا بیہ کے گئے تک کی ہے، اور مطلب اس کا بیہ کہ کہ شہرت چاہے دینی ہویا دنیوی جیسے سیاست وغیرہ وہ عموماً آ دمی کو وادی ہلاکت کی طرف بہادیتی ہے کہ ایسے میں آ دمی تکبر ودیگر رذائل اخلاق کا شکار ہوجاتا ہے تا ہم جسے اللہ تبارک وتعالی محفوظ فرمادیں تو شہرت اس کو نقصان نہیں پہنچاسکتی کیونکہ اللہ والوں کی نظر میں اپنی مدح اور ججودونوں برابر رہتی ہیں۔ "بمحسب" میں باء زائد ہے ای یک فیدہ۔

حدیث آخر: حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عندؤ رماتے ہیں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہمارے (سمجھانے کے) لئے ایک چوکور لکیر تھینی اوراس مرابع خط (شکل) کے اندرا یک اوراکیر تھینی اوراک مرابع خط اس مرابع کے باہر کھینی اوراس خط کے اردگرد (یعنی دونوں طرف) بھی لکیریں تھینی جودرمیان میں تھا پھر آپ علیہ السلام نے فرمایا ہی (مجموعہ) ابن اوم ہے اور بی (چوکور) اس کی اجل ہے (لیمنی موت ہے) جواسے تھیرے ہوئے ہاور بید فط جودرمیان میں ہے انسان ہے اور بید (اردگردکے) خطوط اس کے وارض ہیں (یعنی آفات اور بلیات) اگروہ ایک سے نکی جائے تو دوسرااس کوئوج دے گا جبکہ (چوکور سے) باہر جانے والا خط اس کی اُمید ہے۔ (حدیث سے افرجہ ابخاری ایشاً)

قول، "مربع" جومیری کی اصطلاح میں وہ چوکور خط یا شکل جس کے چاروں اصلاع لینی کونے اور چاروں کوشے برابر ہوں یہاں یہی مراد ہے۔ قوله: "هذاابن ادم" يعنى يشكل اورخصوصاً درميان والاخط انسان كى مثال بــ

قول د الاعروص د العنی انسان کوئی مصیبتوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے اور موت سے قبل اسے ان آلام ومصائب نے گھیرر کھا ہے ایک سے بیجے تو دوسراا سے آگھیرتی ہے ، اس گھیرا کو کھی سے ایک چیز کے ڈسنے سے تعبیر کیا کیونکہ یہ تمام مصائب تکلیف وہ ہیں ، ہاں البتہ نہش مطلق دانتوں سے نوچنے کو بھی کہتے ہیں مطلب دونوں کا ایک ہے۔

حدیث پاک کامطلب بالکل واضح ہے کہ انسان کی خطرات سے گھر اہوا ہے اس کے ہرجانب سائل ہی مسائل اور مصائب ہی مصائب ہیں اگروہ ان میں سے کسی ایک سے نجات حاصل کرلے تو دوسر بے کا نمبر آتا ہے اس کشکش میں زندگی گذرتی رہتی ہے یہاں تک کہ موت کا نمبر آتا ہے جس نے اس کوچا دول کا خمبر آتا ہے جس نے اس کوچا دول اطراف سے گیررکھا ہے گرنا دال انسان کی امیدیں موت کے دائرہ سے باہر ہیں وہ موت کا شکار ہوجاتا ہے اور سارے یا اکثر منصوب ادھورے رہ جاتے ہیں۔



سامان سو برس کا ہے، بل کی خبر نہیں مثال کی تقریب الی الفہم کی غرض سے شکل پیش ہے:

(طول الل سے متعلق بحث راقم کی کتاب "نقش قدم" میں دیکھی جاسکتی ہے۔)

صديث آخر: "يهرم ابن ادم وتشبّ منه اثنتان الحرص على المال والحرص على العمر". (حديث صحيح اخرجه الشيخان وغيرهما)

آ دمی بوژ هاموجا تا ہے جبکہ اس کی دوخصلتیں جوان ہوجاتی ہیں ایک مال کی حرص دوسرے عمر (زندگی) ہرص۔

> قوله: "يهوم" بفتح الراء،هرم كمزورى اور بردها بي كو كهتے ہيں۔ قوله: "تشِبُ" بتشد يدالباء شباب سے ہے بمعنی جوان ہونے كے۔

قوله: "منه"ای من احلاقه و ملکاته یعنی اس کے اخلاق و خصال میں دوچیزیں ایسی ہیں جوآ دی
کے بوڑھے ہوجانے کے باوجود طاقت وررہتی ہے چنانچہ بوڑھا آ دمی مال کے شوق اور عمر کی محبت ولگن میں کسی
طرح جوان آ دمی سے پیچھے نہیں ہوتا اگر چہ اس کے جسم پرزوال کے بادل منڈلاتے نظر آتے ہیں غرض ایسانہیں
ہونا چاہئے بلکہ حقیقت حال کو تسلیم کرنا اور اس پرنظر کرنا چاہئے تا کہ موت کی تھنٹی سُن کر پچھ تیاری کی جائے۔

صديث آخر: مُشِّلَ ابن ادم والى جنبه تسعة وتسعون مَنِيَّة ان اَخطاتهُ المناياوقع في الهَرَم". (حسن صحيح)

آدم زادکوبنایا (یعنی پیداکیا) جاتا ہے درال حالیہ اس کے پہلویس (یعنی اردگرد) ننانوے اموات (مہلکات) ہیں اگر بیسب چوک جاکیں تو بالآخروہ بڑھا ہے ہیں بتلا ہوجاتا ہے (یہاں تک کہ مرجاتا ہے)۔

یہ حدیث ابواب القدر میں گذری ہے دیکھئے (تشریحات ترندی ج: ششم ص: ۴۹۸،۴۹۷ باب
بلاتر جمہ) جس کا خلاصہ یہ ہے کہ کوئی انسان موت سے نہیں نی سکتا اگر چہوہ ہر بیاری کا علاج کرواتا رہے لیکن
بالآخر بڑھا پا ایک ایبامرض ہے جس کی گرفت سے وہ بھی بھی نی نہیں سکے گاو ہاں اس پریداضا فہ ہے ' حت سے بھو ت''۔

حدیث آخر: حضرت ابی بن کعب فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم المصح جب دو تہائی رات گذرجاتی اور فرماتے اے لوگوں! الله کویاد کرو! آگی لرزانے والی چیز (نخمہ اولی) اس کے در بے ہدو مری (نخمہ فنیہ) موت اپنا اندر (چھے ہوئے برزخ وقیامت) کے احوال لئے ہوئے آگی ہموت اپنا احوال کے ساتھ آگئی حضرت اُبی نے فرمایا کہ میس نے عرض کیا اے الله کے رسول! میں آپ پر بہت درود پر هایا کہ میں نے عرض کیا اے الله کے رسول! میں آپ پر بہت درود پر هایا کہ میں نے عرض کیا اے الله کے رسول! میں آپ پر بہت درود پر هایا کہ والیا کہ میں نے کہا چو تھائی؟ آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا جمتانی جو تا تازیادہ برتم ہوگا اند علیہ وسلم نے فرمایا تیری مرضی اگرزیادہ کرو گے تو وہ زیادہ مفید (تیرے لئے) میں نے کہا چو ایک پر هایا کروں گا آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا تم جتنا چا ہوا گرتم نے زیادہ کرلیا تو وہ افضل ہوگا! میں نے کہا بس میں اپنی دعاء کے بجائے تمام اوقات میں آپ پر درود پر هوں گا آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ پھر تو تیرے سب کام پورے کردیے جا کیں گا در تیرے گناہ بخش دیے جا کیں گے۔ علیہ وسلم نے فرمایا کہ پھر تو تیرے سب کام پورے کردیے جا کیں گا در تیرے گناہ بخش دیے جا کیں گے۔ دسن)

قوله: "المراجفة" ربعن سے بمعنی لرزنے اور کا پہنے کے چونکہ پہلی بارصور پھو نکنے سے ساری دنیالرز اٹھے گی اس لئے اسے رابضہ کہااور اس کے بعد ایک فخہ دوسر ابھی ہوگا کہ جولوگ پہلے فخہ سے مرگئے تھے وہ اور باقی سب لوگ دوسرے سے زندہ ہوجائیں گے اس لئے اسے راد فہ کہا چیسے ردیف وہ خض جوسواری کی پچھلی نشست پر بیٹھا ہو کہلاتا ہے۔ قوله: "جاء الموت بمافيه" باء بمعنى مع كے ہے يعنى مع مانيد يعنى جان نكلنے كى تكليف قبر كے تهن حالات اور مابعد كے احوال ـ

چونکہ بیارشادآپ علیہ الصلوٰۃ السلام نے رات کے آخری پہر میں فر مایا ہے اس لئے کہا جائے گاکہ آپ کے خاطبین سوئے ہوئے لوگ ہیں خواہ وہ کسی بھی زمانہ کے ہوں لینی خواب مفرورت کے بعد مزید سونا خواب غفلت کے زمرے میں آتا ہے اور کسی مسلمان کے لئے مناسب نہیں کہ وہ ہولناک واقعات کے آنے کا یقین کرنے کے باوجود سوتارہے اور تیاری سے اور اللّٰدی یا دسے عافل رہے۔

حفرت ابی بن کعب کے سوال کا مقصدیہ ہے کہ میں رات کونماز پڑھتا ہوں اوراپنے لئے دعاء مانگنا ہوں اورآپ پردرود پڑھتا ہوں تو دعاء کے مقابلے میں یانماز کے مقابلے میں درود پڑھنے کا حصہ کتنا مقرر کرلوں؟ مثلاً دو گھنٹوں کے معمولات میں چوتھائی لینی آ دھا گھنٹہ؟ اور جواب کا مطلب واضح ہے۔

قولسه: "اذاً تُکفیٰ همک" تکفیٰ فعل مجبول کا صیغہ ہے دومفعولین چاہتا ہے اوّل مرفوع ٹائب فاعل اور دوم منصوب، یہال مفعول اول "انست" ہے اور حمک مصدر بنی للمفعول مفعول ٹائی منصوب ہے حم تصد واراد ہے کو کہتے ہیں مگر ٹی للمفعول کی صورت میں بمعنی محموم بعنی کا م ہوگیا کیونکہ کا م کا ارادہ کیا جاتا ہے مطلب یہ ہے کہ جبتم پوراوقت درود پڑھنے میں لگاؤ کے تو تیرے دنیاو آخرت کے سارے کام من جانب اللہ پورے کردیے جائیں گے۔

حدیث آخر: حضرت عبدالله بن مسعود سے مروی ہے کہ آپ سلی الله علیه وسلم نے فرمایا: "استحدوا
من الله حق الحیاء النح "الله سے ایمانی شراؤ جیسااس سے شرائے کاحق ہے! ہم نے کہاا ہے اللہ کے نی
الحمداللہ ہم توحیاء کرتے ہیں! آپ سلی الله علیه وسلم نے فرمایا کہ حیاء کا اتاساحی نہیں (یعنی پیر حقیق حیاء نہیں) بلکہ
مجر پور حیاء اللہ سے یہ ہے تم سراور جو کھاس میں ہے کی حفاظت کرلے (یعنی گلہداشت کی جائے) اور پیٹ کی
اور جس کو پیٹ شامل ہے کی حفاظت کرلے، اور تم موت اور ہڈیوں کے گل سر جانے کو یا در کھا ور جو خفس آخرت
اور جس کو پیٹ شامل ہے کی حفاظت کرلے، اور تم موت اور ہڈیوں کے گل سر جانے کو یا در کھا ور جو خفس آخرت
(کا ثواب) چا ہتا ہے وہ و دنیا کی زیبائش چھوڑ دیتا ہے، پس جس نے ایسا کیا تو بے فک اس نے (حقیقی) حیاء کی
لیمنی اللہ سے شرائے کاحق اوا کیا۔ (غریب)

قسولسه: "وَعَیٰ" وَی حفاظت کرنے اور جمع کرنے کو کہتے ہیں مطلب بیہ کدمر کے اندر کے تمام حواس جیسے آنکھیں، کان اور دماغ م غیر حاحتیٰ کہا فکار وتصورات کو بھی گناہ سے بچائے رکھے۔ قوله: "حَوَى" حوى الشي كمعن بقنه كرف اور شمل مونى كات من جوجو چز پيك معلق بي معلق بي معلق بين جوجو چز پيك معلق بين ماه اورخوا مثات ان كوقا بوش ركهنا ـ

صريث آخر: "الكيّس من دَان نفسَه وعمل لمابعدالموت، والعاجزمن اَتبَعَ نفسَه هَوَاهاو تمنّاعلى الله". (حسن)

عقلندوہ ہے جوایے آپ کا حساب کرتارہے اور موت کے مابعد (والی زندگی) کے لئے عمل کرے اور ناتص وہ ہے جوایے نفس کوخواہشات کے تالع بنادے اور اللہ سے توقعات رکھے۔

قوله: "الكيّس "صاحب بصيرت.

قوله: "دان" دان يدين كے كئ معانى آتے ہيں يہاں مناسب ترجمه ومطلب وہى ہے جوامام ترفد گ نے بيان كياہے جسے اوپر ترجمہ ميں اختيار كيا كيا ہے لينى نفس قابو ميں ركھنے كے لئے ہروقت اس كاحساب ركمنا اوراس كى كلم داشت اور گرانى كرنا۔

قوله: "والمعاجز" مجز كمعنى قاصر بونا خواه كى بعى اعتبار سے بوچونكد يدفظ كيس كے مقابلہ يس آيا ہے اس لئے مراد بي بعيرت اور بوقوف بعى لے سكتے ہيں اور "عمل لما بعد الموت" كے مقابل آنے سے بمعنى كم عمل والا بعى مراد ہوسكا ہے اس لئے اس كا ترجمہ ناتص سے كيا كيا تاكہ دونوں صورتوں كوشائل بوصائے۔

قوله: "اتبع نفسه هواها" إنباع سے بہمنی درپ کرنے اور تالی بنانے کے۔ قوله: "وقسمنّاعلی الله" لینی ووضی انتا بے دوف ہے کہ ایک طرف ہوس کا غلام بن گیا ہے اور دوسری طرف آخرت اوراس کے اعلیٰ درجات سے آس لگائے بیٹھا ہے، حالانکداگریہ ہوشیار ہوتا تو اپنی حالت کے پیش نظر کہ وہ اپنے نفس سے ہارگیا ہے اورگنا ہوں میں وُھت ہے استغفار کرتالیکن استغفار تو کرتانہیں اور تمنائے کرتا ہے۔

خلاصة مطلب: يه ہے كہ ہوشيار خص وہ ہے جوحساب اكبرسے پہلے ہى اپناحساب صاف كركے اور پورى طرح تيارى كركے جوكس رہے جبكہ بے وقوف اپنے نفس كے آگے بے بس رہتا ہے نفس كى غلاى جھوڑ تانہيں اور سريرتاج عزت وجنت سجانے كايقين ركھتا ہے۔

صدیث آخر: حضرت ابوسعید خدری سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اپنے مصلی (جائے نماز) میں داخل ہوئے تو کچھلوگوں کو دیکھا جوگویا ہنس رہے تھے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: آگاہ رہوا! اگرتم لذتوں کو دیکا کیے ختم کردینے والی چیز (موت) کو کثر ت سے یا در کھتے تو وہ تہمیں اس (ہننے) سے جو میں دیکھ رہاہوں عافل کردیتی پس ہاذم اللذات کو بہت یا دکیا کرویعنی موت کو، کیونکہ قبر پرکوئی دن نہیں آتا مگروہ (قبر) آواز دیتی ہے (یعنی بربان حال) چنانچہ وہ کہتی ہے میں نامانوسی (وحشت) کا گھر ہوں میں تنہائی کا گھر ہوں، میں مٹی کا (بناہوا) گھر ہوں، میں کیڑوں کا گھر (جگہ) ہوں، چنانچہ جب کوئی مؤمن بندہ فن کر دیاجا تا ہے تو قبراس سے کہتی ہے 'مرحباواھلا'' بلاشہ میری پشت پر چلنے والوں میں تم میر ابہت پیارا تھا پس اب جبکہ میں آج تیرے کا می متولی ہوئی اور تو میری طرف آگیا تو بہت جلد دیکھے گامیر احسن سلوک تجھ سے، پس اب جبکہ میں آج تیرے کا می متولی ہوئی اور تو میری طرف سے ایک دروازہ کھول دیا جا تا ہے۔

اورجب فاجریافرمایا کہ کافرآ دی کودفایاجا تاہے تو قبراس سے کہتی ہے: کجھے کوئی خوش آمدید نہیں!

آگاہ ہو! تم مجھے میری پیٹے پر چلنے والوں میں سب سے پُر الگنا تھا تو جب آج تھے کومیری تحویل میں سونیا گیاہے اور تو میرے پاس آگیا تو بہت جلدتم دیکھو گے میراسلوک تجھ سے، آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا پس قبراس پر دونوں طرف سے) جُوجاتی ہے یہاں تک کہ دونوں جانب سے اس پر بل جاتی ہے، اور اس کی پسلیاں آر پار ہوجاتی ہیں راوی نے کہا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنی انگلیوں سے اشارہ کرتے ہوئے بعض کو (یعنی موجاتی ہیں راوی نے کہا کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے اپنی انگلیوں سے اشارہ کرتے ہوئے بعض کو (یعنی ایک ہاتھ کی انگلیوں) میں واض کیا آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا کہ اس پرسر ادر ہم مقرر کرد سے جاتے ہیں اگران میں سے ایک بھی زمین پر پھونک مارد ہے تو رہتی دنیا تک کہ لے جایا جائے گوئی چیز (گھائی وغیرہ) بھروہ اثر دھے اس کو دانتوں سے کا شع ہیں اور نوچتے ہیں یہاں تک کہ لے جایا جائے

گا ہے حساب کی طرف راوی نے کہا کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا بے شک قبر جنٹ کے باغات میں سے ایک گڑھوں میں سے ایک گڑھوں میں سے ایک گڑھا ہے۔ (حدیث غریب)

قوله: "مصلاه" ملاعلی قاری مرقات میں فرماتے ہیں کہ بظاہر مراد جنازہ گاہ ہے کہ آ ب علیہ السلام جنازہ دیکھتے وفت فکر مندوکم گونظر آتے۔

قسولسه: "به محتشسرون" بمعنی یضحکون کے ہے تاہم کشربالشین وہ ہنی کہلاتی ہے جس میں دانت نظرآ نے ہوں۔ پھرراوی کا بیکہنا کہ "کسسانھم،"اس کی طرف مشیر ہے کہ وہ لوگ کا شرین نہ تھے مگر چونکہ وہ ہشاش بشاش تصاس لئے گویا کہ وہ ہنس رہے تھے۔

قوله: "هاذم اللذات" مرادموت ہے هذم تیزی سے کاٹنے اور جلدی کھاکرخم کردینے کو کہتے ہیں جبکہ هدم وال مہملہ کے ساتھ مسار کرنے اور ڈھانے کو کہتے ہیں۔ موت سے ساری لذتیں یکبارگ خم ہوجاتی ہیں۔ م

قوله: "انابيت الغربة" يعنى اين لئے ساتھى كا انظام كراوجوكرنيكمل بـ

قولیہ: "المفاجو او المحافو" لفظ اور اوی کے شک کے لئے ہا گرفا جرسے مراد کال فاجر لیا جائے تو بمعنی کا فربن جائے گاتا ہم عصاۃ المؤمنین کے لئے بھی عذاب قبر ثابت ہے جیسا کہ شرح عقا کداوراس کے متن میں تصریح ہے اور ابواب البحائز میں بھی گذراہے۔

قوله: "وقد ختلف اضلاعه" ضلع پهلی کو کہتے ہیں اور تختلف کا مطلب بیہ کہ دونوں جانبین کی پہلیاں آپس میں مل جاتی ہیں ادر گذمتہ موجاتی ہیں ادھری اُدھر ادراُ دھر کی اِدھر چلی جاتی ہیں۔

قوله: "يُقيّض" مسلط كرديّے جاتے ہيں قيض اصل ميں اندے كے تھلك كوكها جاتا ہے۔

قوله: "تِنبَنا" بَكسرالنَّاءوتشد بدالنون المكسورة بمعنی اژدها کے قوله "فینهشه" دانتوں ہے۔ نوچنے کواورخدش زخمی کرنے کو کہتے ہیں لینی وہ اسے کا شتے اور ڈستے رہتے ہیں تفصیل جنائز میں گذری ہے۔ نوچنے کواورخدش زخمی کرنے کو کہتے ہیں لینی وہ اسے کا شتے اور ڈستے رہتے ہیں۔تفصیل جنائز میں گذری ہے۔

قوله: "في حديث عمر رضى الله عنه فاذاهو متكئ على رملِ حصير فرأيتُ اثْرَةَ عَلَى " جنبه" وفي الحديث قصة طويلة".

حصرت عرفر ماتے ہیں کہ میں رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے پاس داخل ہوا تو دیکھا کہ آپ صلی الله علیہ وسلم بنی ہوئی چٹائی پر تکمید کا سے جنانچہ میں نے بناوٹ کا اثر آپ صلی الله علیہ وسلم منی ہوئی چٹائی پر تکمید کا سے بہاد پر دیکھا۔

حسرچانی کو کہتے ہیں جبہ رال بنتے الراء وسکون المیم چانی کی پتیوں کی بناوٹ اور بُنائی کو کہتے ہیں اور کہنے کا مقصدیہ ہے کہ آپ علیہ السلام کے جمداطہراور چائی کے درمیان کی بستر ، فرش یا کپڑے کا واسطہ ندھا بلکہ آپ علیہ السلام زمین پر بچھائی ہوئی چائی یا چار پائی پر بغیر کی زم کپڑے کے لیٹے ہوئے ہے جس سے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے پہلومبارک پر چٹائی کے نشانات صاف نظر آ رہے ہے فاص کر جب بغیر قیص کے آ دی لیٹ جائے تو نشانات واضح بنتے ہیں ، اس سے آپ علیہ السلام کا زھد ثابت کرنا مراد ہے۔ کہ سیدالکو نین ہوتے ہوئے تو نشانات واضح بنتے ہیں ، اس سے آپ علیہ السلام کا زھد ثابت کرنا مراد ہے۔ کہ سیدالکو نین ہوتے ہوئے تھی سہولت و آسائش سے بچے رہے ، بی صدیث پوری تفصیل کے ساتھ سیجین ہیں بھی آئی ہے اور خودامام تر فدی نے ابواب النفیر میں سور تو کی میں ابن عباس سے نقل فرمائی ہے جو ''اِن تَشُو بَاالٰی اللّٰہ فقد صَعَت تر فدی نے ابواب النفیر میں سور تو کھنے کے لئے موقعہ کی تلاش میں جھے پی ایک مرتبہ حضر سے عراے کو ضوء کے دوران پانی ڈالتے وقت پو چھنے کا موقعہ لی گیا جس کے جواب میں حضر سے عرائے پوراقصہ بیان فرمایا کمامیا تی ان اللہ دوران پانی ڈالتے وقت پو چھنے کا موقعہ لی گیا جس کے جواب میں حضر سے عرائے پوراقصہ بیان فرمایا کمامیا تی ان اللہ دوران پانی ڈالتے وقت پو چھنے کا موقعہ لی گیا جس کے جواب میں حضر سے عرائے پوراقصہ بیان فرمایا کمامیا تی ان

صدیم عمروبن عوف : رسول الله صلی الله علیه وسلم نے ابوعبیدہ بن جراح کو بھیجا، تو وہ بحرین سے پچھے مال لے کرآئے تو افسار نے ابوعبیدہ کی آمد کے بارے میں شنا، چنانچہ وہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے ساتھ فجر کی نماز میں آکر شریک ہوئے لیں جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم نماز پڑھ بچے تو (لوگوں کی طرف) متوجہ ہوئے اور (دوسری طرف) ان لوگوں نے خودکو پیش کرنے کا تا ثر دیا چنانچہ جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ان کود یکھا تو مسکرا نے اور پھر فر مایا میرا خیال ہے کہ آپ لوگوں نے شنا ہے کہ ابوعبیدہ پچھ مال لائے بیں؟ انہوں نے کہا بال اے الله کے رسول! آپ صلی الله علیہ وسلم نے فر مایا کہ خو خجری سنواور تو تع رکھو (لیخی کہ وہ آپ اور کہ بیاں امیدر کھنی چاہئے) اس کی جو تہیں خوش کرے گا (لینی مال) بخد! بیس تم پر نقر سے نہیں ڈرتا ہوں کہ تبہارے لئے دنیا اس طرح کشادہ کر دی جائے گی جیسے تم ہے اگلوں کے لئے بھیلادی گئی تھی بھرتم بھی اس میں دلچہی لینے لگو سے جیسے وہ لوگ اس میں دلچہی لینے گئے تھے پھرونیا تمہیں بھی اس میں دلچہی لینے لگو سے جیسے وہ لوگ اس میں دلچہی لینے گئے تھے پھرونیا تمہیں بھی اس میں دلچہی لینے لگو سے جیسے وہ لوگ اس میں دلچہی لینے گئے تھے پھرونیا تمہیں بھی اس میں دلے بھیلادی گئی تھی ، پھرتم بھی اس میں دلچہی لینے لگو سے جیسے وہ لوگ اس میں دلچہی لینے گئے تھے پھرونیا تمہیں بھی اس میں دلچہی لینے لگو کے جیسے وہ لوگ اس میں دلچہی لینے گئے تھے پھرونیا تمہیں بھی اس میں دلچہی لینے گئے تھے پھرونیا تمہیں بھی

قوله: "فوافوا" بمعنى أتوا_

قوله: "فتعوضوا" تعریض کی کلام یا کام کی آ ژمیں مقصد کو اُجا گرکرنے کو کہتے ہیں جیسے کوئی غریب آدمی امیر کی ملاقات کرے اور کہے کہ میں سلام کرنے کے لئے آیا ہوں ، اور مقصد پیسے وصول کرنا ہو۔ قوله: "املوا"الل يا تاميل سے ہوقع اوراميدكوكتے ہيں۔قوله: "فتنافسوها"اس ش ايك تاء محذوف ہے تافس كى چيزى طرف ميلان كوكتے ہيں۔

حدیث کا مقصدوا منح ہے کہ غربت پرمبر کرنا آسان ہوتا ہے اس میں بگڑ جانے کا خطرہ کم رہتا ہے جبکہ مالداری پرمبر کرنا مشکل ہوتا ہے اور عمو مالداری ہے آدمی بگڑ جاتا ہے اللہ ید کہ کوئی بہت ہی مضبوط ایمان کا حال اور صفت زہد میں کامل ہوچنانچہ عارضة الاحوذی میں ہے:

"قال الصحابة في الحديث الصحيح: أبتلينابالضراء فصبرنا وأبتلينا بالسراء فلم مؤمن والايصبر بالسراء فلم نصبر، وقدقال العلماء يصبر على البلاء كل مؤمن والايصبر على العافية إلاصديق" مرك تفيل يجهد كري بـــ

(تشريحات ترزى: ٢٠٠٥ تا٠٠ باب ماجاء في العبر")

حوالہ بالا میں پہلامقولہ ترفدی میں اگلی صدیث سے پوستہ صدیث میں ہمی ہے۔

حدیث آخر: حضرت علیم بن حزام رضی الله عند فرماتے ہیں کہ یس نے ما تگارسول الله صلی الله علیہ وسلم ہے (یعنی مال) تو آپ صلی الله علیہ وسلم نے عطاء کیا جھے کو، یس نے پھر ما نگاتو آپ صلی الله علیہ وسلم نے پھرادا کیا، پھرآپ سلی الله علیہ وسلم نے فر مایااے علیم!

پھردیا، یس نے پھرطلب کیاتو آپ سلی الله علیہ وسلم نے پھرادا کیا، پھرآپ سلی الله علیہ وسلم نے فر مایااے علیم!

یہ مال ہراہراہ (لیمنی فوشما ہے) پیشھا پیٹھا ہے ہی جس نے سخاوت نفس سے لیا (لیمنی بغیرسوال واصرارولا کی لیے اس میں برکت دی جاتی ہے ہی جس نے سخان لا کی وطع سے عاصل کرتا ہے تو اس کے لئے اس میں برکت نہیں دی جاتی اوروہ اس محض کی طرح ہوجاتا ہے جو کھائے مگراس کا پیٹ نہ بھر اوروہ اللہ کے اس کی بہتر ہے، پس عیم سے جو کھائے مگراس کا پیٹ نہ بھر اللہ کے اللہ کے اللہ کے رسول! بشم ہے اس کی جس نے آپ کو سے دیں کے ساتھ بھیجا ہے میں آپ کے بعد کسی کا مال پھی نہ گھٹا دیں گا دیسی کہ بھر ہے اس کی جس نے آپ کو سے پھر بھرابو بکر اس کا کہ اور جا دن اس میں برکت کی کا مال پھی نہ گھٹا دی گا دلیا کے ساتھ بھیجا ہے میں آپ کے بعد کسی کا مال پھی نہ گھٹا دی گا وہ میں کی میں ہے کہ بھر کہ کہ بھر اور کا حق) دے دیں گروہ والیا نے سلی اور ان کا حق) دے دیں گواہ بنا تا عطایا لینے کے لئے کہ کا تے مگروہ لینے سے انکار فرماتے ، پس عرفر نے فرمایا اے مسلمانوں کے گروہ! بھی تھمیں عیم پر گواہ بنا تا کہ دوں کہ میں ان کا حق ان کو کو بیش کہ بی تو کھوں نہ کیا کہ بیاں تک کہ حورت کی میں نے فرول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعدلوگوں کی کوئی چیز نہ گھٹائی (لیمنی کھومی قبول نہ کیا) بہاں تک کہ عکیم تے دول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعدلوگوں کی کوئی چیز نہ گھٹائی (لیمنی کھومی قبول نہ کیا) بہاں تک کہ علیہ حس کے بعدلوگوں کی کوئی چیز نہ گھٹائی (لیمنی کھومی قبول نہ کیا) بہاں تک کہ عبدلوگوں کی کوئی چیز نہ گھٹائی (لیمنی کھومی قبول نہ کہا) بہاں تک کہ علیہ کے بعدلوگوں کی کوئی چیز نہ گھٹائی (لیمنی کھومی قبول نہ کیا کیا کہاں تک کہ علیہ کیا تھور نہ کیا کیا کہاں تک کہ دیا کہاں تک کہ حس کے اور کیا کیا کہاں تک کہ دیا کہا کے کہا کہاں تک کہاں تک کیا کہاں تک کہا

وفات ياكى _ (حديث صحيح)

قوله: "باشراف النفس" يعنى لا مل كرساته لينا، يهى بوسكتاب كرمراددين والى كى ناخوش بور قوله: "لاارزأ" اى لاانقص بالطلب

قوله: "بعدک" یعنی آپ علیه السلام کی وفات کے بعد کیونکہ آپ علیه السلام کے ہاتھ مبارک سے لینے میں برکت تھی اور قبول نہ کرنے میں سوءادب کا اندیشہ تھا اس لئے بعد ہذائبیں کہا بلکہ 'بسعددک' فرمایا حضرت تھیم مؤلفة القلوب میں سے تھے گرجو بات کہی اس مریختی سے عمل کیا کما تریٰ۔

حدیث آخر: حضرت عبدالرحمٰن بن عوف فرماتے ہیں کہ ہم رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے ساتھ تحق کی حالت (فقروفاقہ) میں آزمائے گئے تو ہم نے صبر کیا پھرآپ صلی الله علیہ وسلم کے بعد ہم آسودگی میں آزمائے گئے تو ہم صبر نہ کرسکے۔ (حسن)

قوله: "ضراء اور سراء "دونول متفاد معنول كالفاظ بين دونول مؤنث كے لئے استعال ہوتے بين -سراء كے معنی خوش حالی اور مسرت وشاد مانی كے آتے بين جبكہ ضراء تكليف كی حالت كو كہتے ہيں جيسے غربت وسكنت يا يمارى يہال مرادفقروفاقہ ہے۔ يہال صبر كے تينول معانی كولمح ظرر كھاجائے يعنی صبرعن المعصيت، صبرعلی الطاعت، حدیث كا مطلب آسان بھی ہے اور پہلے بھی دودفعہ گذراہے۔ فليحفظ صبرعلی الطاعت، حدیث كا مطلب آسان بھی ہے اور پہلے بھی دودفعہ گذراہے۔ فليحفظ

حدیث آجیز: جس کا مقصود آخرت ہوتو اللہ اس کے دل میں بے نیازی ڈال دیتا ہے اوراس کے کاموں کو یکجا کردیتا ہے ، اورجس کا مقصود دنیا کاموں کو یکجا کردیتا ہے ، اورجس کا مقصود دنیا ہوتو اللہ اس کی تختی آسان بنادیتا ہے اوردنیا نہیں ہوتو اللہ اس کی تختی ہوتو اللہ اس کی تختی ہوتو اللہ اس کی تختی مقدر ہو۔ آتی ہے) جتنی مقدر ہو۔

قوله: "همّة" كانت كى خرب على هذا السے منصوب پڑھا جائے گانيت اور قصد كے معنى ميں آتا ہے۔
قوله: "شملَه" اس كے كى معانى آتے ہيں يہاں بمعنى شيرازه بعنی انتظام كے ہے، پس مطلب حديث كايد ہوا
كہ جو محض آخرت كو اپنا مقصود ومطلوب بناتا ہے تو اللہ تبارك و تعالى اس كا انتظام غيب سے كرديتا ہے بايں طور كه
تحوڑى سى سعى اور محنت اس كى ضروريات كے لئے كافى بناديتا ہے جبكہ دنيا كو مقصد بنانے والے كے انتظامات
كو خراب كرديتا ہے جيسا كہ مشاہدہ ہے كہ عبدالدينا روعبدالد نيا ہيچارے كے پاس نماز پڑھنے كا وقت بھى نہيں
ہوتا سارى زندگى بھاگ دوڑ ہیں گذر جاتى ہے اور خالى ہاتھ قبر ميں جاتا ہے۔ والعیاذ باللہ

اس صدیث برامام ترندی نے کوئی تھم نہیں لگایا ہے تاہم اس کی سندیس بزیدرقاشی کو حافظ ابن جُرِّنے تہذیب التہذیب الم تہذیب التہذیب میں ضعیف قرار دیا ہے جبکہ امام منذری نے الترغیب والتر هیب میں 'لابساس به ''کہا ہے۔ (کذانی تخفة الاحوذی)

باب کی آخری حدیث: (یہ حدیث قدی ہے) اللہ فرماتے ہیں اے ابن اوم! تم میری عبادت ہیں مصروف رہوتو ہیں تیراسینہ بے نیازی سے مجردوں گا اور تجھ سے تنابی کو دور رکھوں گا اور آگرتو ایسائیس کرے گا (یعنی میری عبادت کے لئے خود کو فارغ نہیں کرے گا) تو میں تیرے دونوں ہاتھوں کو (محنت ومزدوری کی) مصروفیات سے مجردوں گا اور تیرے فقروفا قد (محتاجی) کو دور نہیں کردں گا۔ (حسن غریب وقال الحاکم محج الاسناد) چونکہ سب لوگ محتاج ہیں اس لئے فقروفا قد اور محتاجی دور نہ کرنے سے آدی خود بخو د محتاج ہو جانے گا بھروہ کمانے کی کوشش کرتار ہے گا مگراس کا دل بے نیاز نہیں سنے گا بلکہ بمیشہ محتاج رہے گا کیونکہ اصل غزا تو دل کا ہوتا ہے۔ جبکہ عبادت گذار کو اللہ قلیل پرصبر عطاء کرتا ہے اور دنیا کی چیزوں سے اس کو بے نیاز بنا تا عب قولہ: "اَسُدُنْ" بد ادبکسر السین سے بمعنی رو کئے ہے۔

باب

"عن عائشة قالت كان لناقرام سَترفيه تماثيل على بابى فراه رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال: إنزَعِيه فانه يذكّرني الدنيا،قالت :وكانت لناسَمَلُ قطيفة عَلَمُهَا حرير كنا نَلبَسُهَا". (حسن صحيح غريب)

حضرت عائشہ طفر ماتی ہیں کہ ہمارے ہاں ایک باریک پردہ تھاجس پرتصوری تھیں وہ پردہ میرے دروازے پرتفالی اسے رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے دیکھا تو فر مایا اسے اُتاردواس کے کہ یہ جمعے دنیا کو یاد دلاتا ہے، وہ فرماتی ہیں کہ ہمارے پاس ایک پُرانی جمالردار چادرتھی اس میں ریشم سے نشان (نقوش) بنے ہوئے تھے ہم اسے اوڑ ھے تھے۔

قولمه: "قوام" بروزن كتاب باريك پردے كوكہتے ہيں بعض نے اس كااطلاق اون كرنگ برنگ خوب تفونك كرئے ہوئے كپڑے پر بھى كياہے، اس كى اضافت ستركى طرف توب تيص كى طرح ہے۔ قوله: "سمل قطيفة" سمل پرانا كپڑ ااور قطيفہ وہ چادر ياكمبل جس كى روئيں اور جمالر نكالے محتے ہوں۔ حضورعلیہ السلام نے جس پردہ پرانکارفر ہایا گراس میں تماثیل سے مرادنقوش ہوں لیمنی غیرجانداری
اشکال ہوں تو کئیرکا مطلب ہے ہے کہ اس میں ایک گونہ ذینت وزیبائش ہے جس کود کھے کردل میں خوشی اور دنیا کی
طرف میلان سامحسوس ہوتا ہے ، لیکن اگر تماثیل سے مراد جاندار کی تصاویہ ہوں تو پھرننی اور نمی کی وجہ ظاہر ہے
کونکہ تصاویر خواہ وہ کسی بھی جاندار کی ہوں نا جا کزییں۔ اس لئے ان کی گھر میں رکھنے کی کوئی مخبائش نہیں ، آج کل
کی الکیٹر ویک تصاویر بھی تصویر محرم میں داخل ہیں راقم کی اس پر مستقل کتاب بنام 'شعاعی تصاویر کی حقیقت
اور فری حیثیت' ہے اگر چہ خواہش کے لئے کمزور فتوئی بھی کا فی ہوجا تا ہے۔ جہاں تک ریشم کے استعال کا تعلق
ہوتیہ مسئلہ ابواب اللہاس کے شروع میں گذرا ہے اعادہ کی ضرورت نہیں۔ (دیکھنے تشریحات ترفہ کی ص: ۵۳۱)

حدیث آخر: ۔ حضرت عائشہ "فرماتی ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ دسلم کاوہ تکیہ جس برآپ صلی الله علیہ وسلم لیٹنے (یا فیک لگاتے) تھے چڑے کا تھا، بھرتی اس کی مجور کی چھال تھی ۔ (حدیث سیجے حسن)

قولدہ: "وسادہ" سرکے نیچ رکھنے کی چیز جیسے تکیہ کو بھی کہتے ہیں اور عالیج کیے نوش کو بھی کہاجا تا ہے یہاں معنیٰ دوم لینازیادہ ظاہر ہے بقرینۂ یضطحع کے۔

قوله: "حشو"اندرى چزىين جسكى چزى برائى كى جائے جيسے تكيداور لحاف يس روئى۔ قوله: "ليف" كجورى جمال -

سبحان الله زبد کااس سے برانمونه کیا ہوسکتا ہے جوساری زندگی الیم گذرجائے کہزم گدے وبستر پر ایک رات بھی نہوے اگرآپ چا ہے تو دنیا کیا بلکہ جنت کے نمونے بھی آپ کی خدمت میں پیش ہو سکتے تھے گر وہ دنیا والوں کی طرح نہ تھے کہ دوسروں کو صبر کی تلقین کریں اورخو دنرم قالین کا استعمال کریں ، آپ علیہ السلام نے مسلسل زبد کا بے نظیم کمی نمونہ پیش کیا جو دنیا کے سامنے کھلی کتاب ہے۔

حدیث آخر: دهنرت عائشه فر باتی بین که انهوں نے ایک بکری ذیج کی تو نبی سلی الله علیہ وسلم نے پوچھا: اس سے کتنافی گیا ہے؟ حضرت عائشہ نے جواب دیاس سے سوائے ایک شاخہ کے پیچھیں بچاہے آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: وہ ساری باقی رہی سوائے اس کے شاخہ کے۔ (حدیث صحیح)

چونکدانہوں نے ایک بازو، وشانہ کھر کے لئے پکانے کی غرض سے چھوڑ کر باتی پورا کوشت صدقہ کیا تھا اس لئے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا کہ صدقہ کا کیا ہوا سارا باقی ہے کہ اس پر تواب مل کیا اور تواب باقی ہوتا _ جبكة خودكما كراستعال والاحمد كما كرفتم موجائ كاقال الله تعالى :"مَاعِندَكُم يَنفَدُوَ مَاعِندَالله بَاقِ" (فحل ياره: ۱۳ آيت: ۹۲)

109

حدیث آخر: مصرت عائشہ فرماتی ہیں کہ ہم ال محرا سے تھے کہ ہم پوراپورام بینہ گذارتے اور آگ نه جلاتے (لین کھوند ایک ہے) اس ہماری خوراک مرف یانی اور مجورتھی۔ (صحح)

قوله: "إن كنا ال محمد" إن مُففِّ من المثقله سِهيني إنَّا كنَّاالخـ

اس میں شک نہیں کہ مجود کامسلسل استعال انتہائی مشکل ہے بنی اسرائیل نے تو من وسلوی برہمی صبر نہ کیا تھا مرآ قائے دوجہاں کے محروالوں نے اگراس کا ظہار فرمایا ہے توفظ آ پ صلی اللہ علیہ وسلم کے زہد کی حالت بتانے کی غرض سے اور آسودگی سے خوف کے پیش نظر تھا جو اُسوہ حسند کی تعلیم ہے۔

حديث مخر: حضرت عائشه طفر ماتى بين كررسول الله صلى الله عليه وسلم كي وفات موكى تو بهارے ياس کچے جو (رہ گئے) تھے پس ہم اس سے کھاتے رہے جتنا اللہ کومنظور تھا، پھر میں نے جاریہ سے کہا کہ اسے مای لو چنانچاس نے مایااسے پھرزیادہ دیرندلگائی اس (جو)نے کہتم ہوافر ماتی ہیں کداگرہم اس (ناپنے) کوچھوڑتے تواس سے کھاتے اس سے زیادہ مدت تک (مدیث محے)

قوله: "شطو" اس كمعنى امام ترزي في بيان كي بين يعنى شيئا من شعير اس مديث سيمعلوم ہوا کہ کیل اوروزن سے برکت گھٹ جاتی ہے جبکہ ایک اورروایت میں کیل کا تھم آیا ہے" کیلواط مسام کم يسارك لسكم فيسه"جس سےمعلوم ہوتا ہے كدبركت كيل كرنے ميں ہے، يہ بظاہرتعارض ہے۔اس كے دوجواب ہوسکتے ہیں: ایک بدکر کیل کا حکم خریدنے کے وقت سے متعلق ہے جبکہ ترک کیل گھر میں لانے کے بعد خرچ کے وقت سے متعلق ہے، بہ جواب تخفۃ الاحوذي ميں ہے، حضرت كنگوہي نے الكوكب ميں تطبيق يوں دي ہے کہ پکانے کے لئے جتنالیا جائے وہ ناپ یاوزن وغیرہ حساب سے لیا جائے اور جو باقی رہے یعنی شاک کے طور پراسے ناب یا وزن نہ کیا جائے۔

اس طرح بدروایت بظامردوسری روایت سے بھی متعارض ہے کہ آپ علیہ السلام نے وفات کے وقت كهند ي وراتم "ماترك رسول الله صلى الله عليه وسلم عندموته ديناراً ولادرهماً ولاشيئاً "اسكا جواب بیہے کہآپ علیہ السلام نے ذاتی ملک میں پھے نہ چھوڑ اتھا جبکہ صدیث باب میں اس شے (جو) کا ذکر ہے جوآب عليه السلام نے حين حيات عا كشم مديقه "كى ملك ميں دےركھى تقى يعنى بطورنان نفقه كے۔ صدیث آخر: حضرت انس فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: ہیں ڈرایا گیا ہوں الله کی راہ ہیں ایدا و بیس ڈرایا گیا ہوں الله کی راہ ہیں ایدا و بیس کہ این اور ہیں ایذاء دیا گیا ہوں الی کہ ایذا و بیس دیا گیا ہے کوئی کھانا کوئی۔ اور بے شک مجھ پڑئیں شب وروز گذرے (لیمنی لگا تار) دراں حالیکہ میرے اور بلال کے لئے کوئی کھانا نہ تھا جے کوئی کھانا نہ تھا جے کوئی کھانے سوائے اس معمولی شے کے جے بلال کے بخل نے چھپادیا تھا۔ (حسن صحیح)

اس حدیث میں ''أخفِتُ یُخاف اور أو ذیت ویو ذی ، ججہول کے صیغے ہیں اور مطلب یہ ہے کہ اللہ کے دین کے اظہار وہلغ ہے دوکئے کے لئے مجھے جتنا ڈرایا اور دھمکایا گیا ہے ایسی صورت حال کا سامنا کسی کوئیس کرنا پڑا ہے، چنا نچہ ایسا بھی ہوا کہ میرے اور بلال کے پورت میں دن کے خریجے کے لئے صرف اتن چیز تھی جو بلال نے بغل میں دبا دی تھی لیعنی تھوڑی سی غذاء۔

امام ترفدی نے اس کامطلب یہ بیان کیا ہے کہ جب آپ علیہ انسلام حضرت بلال کے ہمراہ مکہ سے بنظر حفاظت نکلے تھے تو انتا سا کھانا لے گئے تھے جو حضرت بلال کے بغل میں آسانی سے آسکا تھا۔

یخ عبدالحق محدث دہلوئ فرماتے ہیں کہ شاید بید طائف کے سفر کا واقعہ ہوسکتا ہے کیونکہ ہجرت مدینہ میں حضرت بلال آپ علیہ السلام کے ہمراہ نہ سے جبکہ سفر طائف میں بھی حضرت زید بن حارثہ سے جبیا کم حشی نے دیا ہے، تا ہم ملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ بلال کے ہونے سے زید بن حارثہ کی فل ازم نہیں ، یہ بھی ممکن ہے کہ رکوئی اور واقعہ ہو۔

یہاں بظاہر بیاشکال ہوتا ہے کہ آپ علیہ السلام کی مدت حیات زیادہ نہی جبکہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم سے قبل انہیاء علیم السلام میں ہے بعض کو بھی ہخت تکلیفات وایذ اکیں دی گئی ہیں لیکن اس کا جواب یہ ہے کہ جن انہیاء علیہم السلام نے تکلیفات ہرواشت کی ہیں وہ اولاً تو تبلیغ کی وجہ سے نہ تھیں مثلاً حضرت یوسف علیہ السلام اور حضرت ابوب علیہ السلام کی تکلیفات جبکہ صدیث باب میں اس پہلوکا ذکر ہے، دوم آپ علیہ السلام کی امت کے حضرت ابوب علیہ السلام کی تکلیفات جبکہ صدیث باب میں اس پہلوکا ذکر ہے، دوم آپ علیہ السلام کی امت کے افراد کو اور آپ علیہ السلام کے صحابہ کرام ملکہ کو بہت ستایا گیا یہ تکلیفات ذاتی تکلیف سے کسی طرح کم نہیں اور یہ سلمار تا تیا مت جاری رہے گا، جس کاعلم اللہ نے اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کوعنایت فر مایا تھا، تو جس طرح کم نواز دو اولا دکی تکلیف کوآسانی سے ہرواشت نہیں کرسکن تو جو ماں باپ سے زیادہ اولی وشفیق ہووہ ان تکلیفات کو کیوکر نظر انداز کرسکتا ہے؟

حدیث آخر: حضرت کی بن ابی طالب فرمات ہیں کہ میں جاڑے کا یک دن رسول الشملی اللہ علیہ وسلم کے گھر سے انکا جبکہ میں نے ایک بد بودار چڑا جس کے بال جھڑے ہوئے تھایا ہیں کا ف ڈالا میں نے اس کونی سے رایعن اس میں سوراخ کردیا) اوراس میں اپنی گردن (سر) کودافل کر دیا اورا پی کرمیں نے زور سے باندھی (بایں صورت کہ) ہی با ندھا میں نے اس کو مجور کی شاخ سے، اور جھے شدید ہوک گئی تھی، اگر رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے گھر میں چھ کھانا ہوتا تو میں کھالیتا اس میں سے، چنا نچہ میں کی (کھانے کی) چیز کی تلاش کرتا ہوا الکلا سوگذرا میں ایک یہودی پر جوا ہے مال (مولی اور باغ) میں تھاجو پانی پلار ہا تھا پی چی سے قو میں کے دیوار کے سوراخ سے اس کوجھانکا اس نے کہا: اے اعرابی! کیا (دیکیا) ہے؟ کیا تو ایک مجبور پر ڈول کھنچ کا؟ میں نے کہا: اے اعرابی! کیا (دیکیا) ہے؟ کیا تو ایک مجبور پر ڈول کھنچ کا کوئی میں نے کہا: اے اعرابی! کیا وروازہ کھولا اور میں اندر کیا چیا نچا سے نے کہا کہ اس نے میں ایک کہ جب میری مشمی بھرگئی تو میں نے اس کا ڈول چھوڑ دیا اور میں اندر کیا گئی ہے میں نے وہ مجبور کھائی اور پھر دونی نے اس کا ڈول چھوڑ دیا اور میں نے کہا کہ بس سے میں نے وہ مجبور کھائی اور پھر دونی نے کا فی ہے میں نے وہ مجبور کھائی اور پھر دونی نے کہا کہ بس سے میں نے وہ مجبور کھائی اور پھر دونی نے بالی کیا اور میں اندر میں اندر میں اندر میں اندر میں اندر میں میں موجود پایا۔ (حسن غریب)

قوله: "شات"ای بارِ د_

قوله: "من بیت رسول الله صلی الله علیه وسلم" شایدیه جرت کابندائی ایام کی بات موکد جب مفرت علی گی شادی نبیس موئی تقی اورنه بی پردے کے احکام نازل ہوئے تھے، والله اعلم ۔

قوله: "إهاباً" بغيرد باغت والاجرايامطلق كمال.

قوله: "معطوناً" جس من بديومي موادربال بمي جمر مح موال

قوله: "فعومته" هذ دشكابيان ہے ليني ميں نے اس كو مجور كے پتے (شاخ) سے اپني كر پر باندھ ليا تا كه وه مث جائے۔

قوله: "بهكوة" بكره چرخى كوكيت بين جس سيرى بندهى بوئى بوتى سيادراسي كلماكردول كمينيا جاتا ہے۔

قوله: "فلمة" بروزن لتمة سوراخ اوردراز كوكت بير.

قوله: "جرّعت" تجرّع تعورُ اتعورُ اينالين كمون كمون يين كوكت بيل.

اس روایت سے محابہ کرام اورخصوصاً مہاجرین کی قرباندوں اور بختیاں جھیلنے کا اندازہ لگا نامشکل نہیں کہ

حفرت علی ایک طرف سردی سے بیچنے کے لئے غیرمد ہونے چڑا جس سے بد ہوبھی آتی ہوکوتیص نما بنا کرسردی سے بحیخ کا انظام کررہے ہیں اور دوسری طرف بھوک کا بیانی کھینج بیخ کا انظام کررہے ہیں اور دوسری طرف بھوک کا بیانی کم ہے کہ ایک مجور پر یہودی کے لئے ایک ڈول پانی کھینج رہے ہیں، بیسب تکلیفات انہوں نے دین کی خاطر برداشت کیس کو یا وہ خودکومٹا کردین کو بچانا چاہتے تھے مگراللہ نے دین کے ساتھ ان کو بھی ابدی حیات طیبہ سے نوازا۔ ان اللہ لایضیع اجو المعصنین

یہ توعام مہاجرین کا حال تھاجہاں تک امحاب صفہ کی حالت کاتعلق ہے تووہ نا قابل تصور حد تک مبر آز ماہے جس کی ایک جھلک آئندہ ابو ہربرہ گی حدیث میں نظر آرہی ہے کہ اُنہیں شدید بھوک گی تورسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کوایک ایک بھور عطافر مائی۔

حدیث آخر: حضرت جارین عبداللہ طفر ماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہمیں بھیجا جبکہ ہم تین سولوگ ہے ہم اپنا تو شداپئی گردنوں پراٹھائے ہوئے ہے (یعنی ہرایک کے پاس معمولی زادراہ تھا) چنا نچہ وہ تو شہری ختم ہونے تا دی گاورن میں صرف ایک کھجور ملتی تھی ،ان سے وہ تو شہری ختم ہونے لگا اورنو بت یہاں تک پنچی کہ ہم میں سے ہرآ دمی کودن میں صرف ایک کھجور ملتی تھی ،ان سے پوچھا گیا کہ اے اباعبداللہ! آ دمی کے لئے ایک کھجور سے کیا بندا ہوگا؟ حضرت جابر نے فرمایا کہ ہم نے تو اس ایک کھجور) کا فقدان بھی پایا (لیعنی وہ ایک ایک بھی ملنا ہند وختم ہوا) کہ جب وہ سب ختم ہوئی ۔ پس ہم سمندر کے (ایک کھور) پاس آئے تو یکا یک وہاں ایک مجھلی ہمیں ملی جوسمندر نے کھینک دی تھی تو اس سے ہم اٹھارہ دن شکھائے رہے جتنا ہم جاہ در صرفیحی)

یے روایت بخاری شریف میں متعدد مواضع پر آئی ہے جس کے مطابق اس سریہ کے امیر حضرت ابوعبیدہ بن جراح رضی اللہ عنہ تھے۔

اس حدیث سے متعلق بحث کرآیا سمندری جانورسب کے سب حلال ہیں یا صرف مجھلی جائز وحلال ہے؟ ای طرح سمک طافی کا مسئلۃ بالنفصیل "ہاب ماجاء فی البحر انه طهود" میں گذراہے فلانعید ہا۔
(ویکھے تشریحات ترذی ص: ۲۳۰ تاص: ۲۳۲ج:۱)

حدیث آخر: حضرت علی رضی الله عند فرماتے ہیں کہ ہم مجد میں رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے ساتھ بیٹے ہوئے تھے کہ استے میں مُصعَب بن عمیر ہم پر نمودار ہوئے ان کے جسم پر صرف ایک چا در تھی جس میں پوشین کے بیوند کئے ہوئے تھے جنانچہ جب ان کورسول الله صلی الله علیہ وسلم نے دیکھا تورونے کئے بوجہ اس نعت کے جس میں مصعب پہلے تھے (یعنی مکہ میں قبل از قبول اسلام) اور جس میں آج ہیں، بھررسول الله صلی الله علیہ وسلم جس میں مصعب پہلے تھے (یعنی مکہ میں قبل از قبول اسلام) اور جس میں آج ہیں، بھررسول الله صلی الله علیہ وسلم

نے فرمایا کیا حال ہوگا تہارا کہ جبتم میں سے ایک می کوایک جوڑے میں ہوگا اور شام کو دوسرے میں ہوگا (لینی دن میں دوسرت کی گر اور در سے گا) اور دکھا جائے گا اس کے سامنے ایک برتن کھانے کا اور دوسراا شایا جائے گا اور تم اپنے گھروں کو پر دوں سے اس طرح آ راستہ کرو گے جیسے کعبہ کو پر دوں سے ڈھانیا جاتا ہے (لیمی خوراک و پوشاک کی کوئی کی نہ ہوگی) صحابہ نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! پھر تو اُس دن ہم آج کی ہسبت زیادہ اچھے موں می کوئی کی نہ ہوگی) صحابہ نے عرض کیا اے اللہ کے دورکام کی زحمت سے بھی بچیں می تو رسول اللہ صلی اللہ علی سے تو رسول اللہ صلی اللہ علی سے تو رسول اللہ صلی اللہ علی سلم نے قرمایا 'دونہیں' تم آج کے دن بہتر ہوائن دنوں کی ہسبت ۔ (حدیث غریب)

قوله: "بُردة" وه جادرجس ملسياه وسفيدرتك مول-

قوله: "مرقوعة"اس من بيوند ككي تقد"بفرو" يستين يعز يكي

قوله: "بكى للذى كان فيه" آپ ملى الله عليه وسلم كابيروناز وال نعت ياتمنائ دولت كى وجه سے نه تقا بكه مصرت مُصعب بن عمير (بضم أميم وفق العين وعمير بالصغير) كى قربانى كى وجه سے تقا كه نازونعت سے زم ومشقت كے اس ورجه يريخ محكن ہے كہ آپ ملى الله عليه وسلم كارونا خوشى كى بنا يرمو۔

قوله: "اذاغدا"ای ذهب ای طرح" راح" بمنی ذهب کآتا بالبته غداصی جانے واورراح بعدالروال جانے و اورراح بعدالروال جانے و کی بعد اللہ بین میں ایک جوڑا پہنے گااور شام کودوسرا۔ قبوله: "کما تستو الکعبة" بیکعبد کی امتیازی شان ظاہر کرتا ہے۔

قوله: "لاانتم اليوم حيوالخ" يعن غربت وسكنت يس عبادت كالذت وكثرت كاتوقع بمقابله غنا، ودولت مندى كے زمانه كے زياده ہے جيها كه مشاہدہ ہے كيونكه غريب كى اميديں مخقراور محنت محدود موتى بيں جبكه امير كى آمال ومنصوبہ بندياں بہت لبى چوڑى ہوتى بيں وه عبادت كے لئے كہاں فارغ ہوتا ہے۔

عارضة الاحوذى بين م كرحفرت مصعب بن عمير "كمه بين حين وجمال اور برقتم كي بوشاكى فعتون سي آراسته تنه ، آپ ملى الله عليه و المارق محلة و الاانعم المعتون سي آراسته تنه ، آپ ملى الله عليه و المارة من مصعب بن عمير "معزرت مصعب بن عمير "معزرت مصعب بن عمير المعارض من مصعب بن عمير "معزرت مصعب بن عمير الماراملام قبول فرما يا اورائي مان باب اورتوم ك خوف س ا بي اسلام كى دعوت دية بين توومان جاكراسلام قبول فرما يا اورائي مان باب اورتوم ك خوف س ا بي اسلام

کوچھپائے رکھا تا آ تکہ ایک دن عثان بن ابی طلح نے ان کوئماز پڑھتے دیکھا تو ان کی ماں اور قوم کواطلاع کردی چنانچوانہوں نے ان کوقید کردیا۔ پھرانہوں نے سب سے پہلے جبشہ کی طرف بجرت فرمائی۔ اسی طرح غزوہ بدر میں بھر بھی شرکت کی اور سُونی پط بن حرملہ نے۔ آپ علیہ السلام نے عقبہ کا نیے کے بعد ان کو عدید روانہ کیا تھا جو اہل مدید کوقر آن پڑھاتے جس کی وجہ سے ان کوقاری ومقر کی کہاجانے لگا انہوں نے بھی مدینہ میں سب سے پہلے جمعہ ادافر مایا (جس کا مسئلہ پہلے گذراہے) ان کے بعد عروین ام مکتوم بھار بن یاسر، سعد بن ابی وقاص، این مسعود و بلال اور پھر حضرت عربین خطاب بیس بعد عمروین ام مکتوم بھار بن یاسر، سعد بن ابی وقاص، این مسعود و بلال اور پھر حضرت عربین خطاب بیس شہمواروں کے ہمراہ مدینہ تشریف لاتے رضی اللہ عنہم ۔ حضرت مصعب بن عمیر غزوہ اصد میں شہید ہوتے اس سے وقت ان کی عمراہ کی کھی، زہد کا عالم یہ تھا کہ ان کے پاس صرف ایک جا درتھی جب اس سے سرڈھا نیخ تو پرکھل جاتے اور جب پیرچھپاتے تو سرنگا ہوجا تا۔ آپ علیہ السلام نے فرمایا ان کے پاول سرڈھان کے تاریک گائی دیں۔ رضی اللہ عنہ وارضاہ پراذخر (گھاس) ڈال دیں۔ رضی اللہ عنہ وارضاہ

صدیث آخر: حصرت ابو ہر برہ وضی اللہ عنہ سے روایت ہے فرماتے ہیں: "کسان اہل المصفة اصباف اله الم اللہ النہ " لینی اہل صفہ سلمانوں کے مہمان سے رہائش کے لئے کسی اہل وہ ال کے پاس نہیں جاتے (کیونکہ مدینہ میں ان کانہ گھر تھا اور نہ خاندان) اس اللہ کی تم ہے جس کے سائے کسی اہل وہ ال کے پاس نہیں جاتے (کیونکہ مدینہ میں ان کانہ کو تھا اور نہ خاندان) اس اللہ کی تم ہی کے سائے کہ وجہ سے اور ہا نہ حتا تھا پھر اپنے برجموک کی وجہ سے اور ہا نہ حتا تھا پھر اپنے برجموک کی وجہ سے اور ہا نہ حتا تھا پھر اپنے بیٹ پرجموک کے مارے بختیق آبک ون میں ان کے اس راستہ پر بیٹھ گیا جہاں سے وہ لوگ نگلتے تھے چنا نچہ گذر ہے جم پر ابو بکر تو میں نے ان سے قرآن کی ایک آیت کے بارے میں پوچھا، میں نے ان سے صرف اس کے لئے پوچھا تھا تا کہ وہ جمجھا ہے ساتھ (کھا نے کے لئے) لے جائے گروہ چلے گئے اور ایسانہ کیا۔ پھر عمر گذر ہے تو جب انہوں تو میں نے ان سے کتاب اللہ کی ایک آب ہے گھر ابوالقاسم میلی اللہ علیہ وسلم گذر ہے تو جب انہوں نے بیٹے میں ان کہا لیک یارسول اللہ! آپ مسلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میر سے ساتھ چلوہ آپ آگے جلے اور ان میں کے پیچھے چل پڑا، آپ اپنے گھر میں داخل ہوئے ، تو میں نے فرمایا میر سے ساتھ چلوہ آپ آگے اور ان میں کے پیچھے چل پڑا، آپ اپنے گھر میں داخل ہوئے ، تو میں نے اور ابوالقاسم میلی اللہ علیہ وسلم میں دودھ کا (بھر ابوا) ایک اندر آنے کی اجازت کی اجازت کی اجازت جا جائے تو وہ کہاں سے ملائے آپ لوگوں کو ؟ آپ کو بتایا گیا کہ یہ ہدیہ بیر بیجہا ہے مارے لئے بیالہ پایا آپ نے پوچھا ہے دارے سے اس سے سے لوگوں کو ؟ آپ کو بتایا گیا کہ بید ہدیہ بیر بیجہا ہے مارے لئے بیالہ پایا آپ نے بی چھو جہاں سے ملائے آپ لوگوں کو ؟ آپ کو بتایا گیا کہ بید ہدیہ بید بیر بیجہا ہے مارے لئے بیالہ پایا آپ نے بیکھوں کہا کہ بید میں بھر بیر بیجہا ہے مارے لئے بیالہ پایا آپ نے بھر بیر بیجہا ہے مارے لئے بیالہ بھر بیکھوں کو بیالہ بھر بیر بیجہا ہے مارے لئے بیالہ بھالے بیالہ بھر بیر بیجہا ہے مارے لئے بھر بیر بیکھوں کو بیالہ بھر اس کو بیکھوں کو بیالہ بھر بیر بیکھوں کو بیالہ بھر بیر بیکھوں کو بیالہ بھر بیر بیکھوں کو بیکھوں کو بیکھوں کے بیالہ بھر بیر بیکھوں کے بیالہ بھر بیالہ بیالہ بیں دور بھر بیالہ بیالہ بھر بیر بیکھوں

فلان نے پس رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمايا: ابو ہريره ايس نے كها حاضر خدمت مول آپ نے فرمایاجا وائل صفہ کے یاس ال کوئلا وءوہ اہل اسلام کے مہمان تھے وہ بڑا ونہیں ڈالتے تھے کسی خاندان یا گھریں، جب آپ کے پاس صدقہ آتاتو آپ ساراان کے پاس بھیج دیتے اورخوداس سے پھے بھی ند لیتے مرجب آپ کوہدیدماتا تو خودمجی اس سے لیتے تھے اوران کوبھی اس میں شریک فرماتے ، چنانچہ مجھے یہ بات نا گوارگذری (لینی آب کا مجھے بھیجنا کہ جا والل صفہ کو بلائ اور میں نے (دل میں) کہااس پیالے کی اہل صفہ كسامن كياحيثيت ع؟ دوسرى طرف مين جونكدابل صفه كوبكان مين آپ كا قاصد بول تو پر (جب وه لوگ آئیں مے) آپ مجھے حکم دیں مے کہ میں یہ پالہ تھماؤں ان سب پر (بعنی پہلے ان کو پلاؤں) تو شاید ہی مجھے اس سے چھول جائے حالانکہ مجھے خوشی ہو چلی تھی کہ مجھے اس سے اتنا ملے گا جومیری بھوک کی کفایت کرے گا، مگراللداوراس کے رسول کے حکم ماننے کے سواکوئی جارہ نہیں تھاچنا نجدیش ان کے پاس آیا اوران کوئلایا، پس جب وہ لوگ آپ کے باس آئے اورائی اٹی جگہوں پر بیٹھ گئے،آپ نے فرمایا:ابو ہریرہ اید بیالدلواوران کودو(لینی پلاؤ)چنانچہ میں نے وہ پیالہ لیااور شروع ہوامیں وہ ایک شخص کوریتاوہ پیتایہاں تک کہ سیر ہوجاتا پھرواپس کردیتاتو میں دوسرے کودے دیتا یہاں تک کہ میں (اس دورکو بورا کرتا ہوا)اسے رسول اللہ صلى الله عليه وسلم كے ياس لے آيا جبكه سب لوگ سير مو يك عنے، پس رسول الله صلى الله عليه وسلم نے وہ بياله لیاادراسے این ہاتھ پردکھا، پرآپ نے اپنا سرمبارک (میری طرف) اُٹھایاادرمسکراکرفرمایاابوہریہ!تم پوتو میں نے پیاآپ نے چرفر مایا اور پوچنانچ میں پتیاجار ہاتھا اور آپ فرماتے جاتے ہو، پیر میں نے کہائتم ہاس کی جس نے آپ کو سیج دین کے ساتھ بھیجا ہے میں اس کے لئے اور مخباکش نہیں یا تاتو آپ نے وہ بیالہ لیااورالله کی حمداوربسم الله کمی اورپیا_(صحیح)

قوله: "لاعتمدبكبدىواشدالحجوعلى بطنى" يبجوك كاحماس خم كرنے كے لئے ايمار تح جن كا من كار اللہ كا اللہ كے اللہ كا

قولہ: 'لِيست بعنی'' مجھا ہے در پے کرد سے بعنی اپنے ساتھ کھر لے جائے گویا بیم لی تعریض تھی ، پھر حضرات شیخین کا ابو ہریرہ کونہ لے جانا دواعتبار سے ممکن ہے کہ یا تووہ ان کے سوال کوواقعی استفہام پرمحمول کر بچکے یا پھران کے گھروں میں کھلانے کے لئے کچھ تھا ہی نہیں۔ قوله: "فسهامونى ان ادبوه" كيونكد حفرت ابوبريه آپ طيدالسلام كفادم خاص تصاور مهمانوں كي خدمت خادم سے كرائي جاتى ہے۔

اس صدیث پاک سے اہل صفہ کے زہر ہملم دوئی ، صبر اور حضور علیہ السلام کے مجزے کا بین ثبوت ملتا ہے ، صفہ دراصل سائبان اور چھپر کو کہتے ہیں گریہاں مرادوہ کمرہ ہے جو مسجد نبوی کے پچھلے کوشہ میں ان مہاجرین کے لئے بنایا گیا تھا جن کا مدینہ میں اس کے علاوہ کوئی اقتظام قیام وطعام کا نہ تھا یہ لوگ بخرض تعلیم اسلام یہاں جمع ہوئے بنایا گیا تھا ان کی تعداد سوسے متجاوز تھی البتداس تعداد میں کی بیشی ہوتی رہتی تھی۔

حديث آخر: "عن ابن عمرقال تَجَشّار جل عندالنبي صلى الله عليه وسلم فقال: كُفّ عَنّاجُشَآءً كَ فان اكثرهم شبعاً في الدنيااطولهم جوعاً يوم القيامة". (حسن غريب)

ایک مخف نے نی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے ڈکار لی، تو آپ نے فرمایا: اپنی ڈکارکوہم سے دور کھ (یاروک دو) کیونکہ دنیا میں پیپ زیادہ مجرنے والے قیامت کے روز لیے عرصے تک بھو کے رہیں گے۔

قسو لسه: "جُشاء ک" بُشابضم الجُم والمدؤ کارکو کہتے ہیں بوعمونا معدہ بھرجانے سے آتی ہے، آج جبہ دنیا بھر میں غذائی مواو پانی اور گیہوں وغیرہ کے مسائل نے سراٹھایا ہے آگراس حدیث کے مطابق ہوخص اپنے کھانے میں تعوثری کی لائے تو صرف پاکتان میں پومیہ کروڑوں روٹیوں کی بچت ہو کتی ہے۔ یہ ڈکار لینے والے حضرت ابو تحیفہ رضی اللہ عنہ شخص کی حدیث کی طرف امام ترفدیؓ نے وفی الباب میں اشارہ کیا ہے، اور جے امام حاکم پنے نقل فرمایا ہے کہ میں نے روٹی اور گوشت کی ٹرید کھائی پھر آخصور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوااورڈکارلی" فقال: یا ھلاکف المنے "چونکہ ڈکارروکنا آدی کے بس سے باہر ہاس لئے مطلب ڈکار کے سبب لینی زیادہ کھانے سے روکنا ہوا، حاشیہ ترفدی پر ہے کہ انہوں نے اس کے بعد بھی پیٹ بھر کرکھانا نہیں کھایا، چونکہ میصام حاسم کے بعد بھی سے ہواس لئے کہا جائے گا کہ بچپن سے انہوں نے کھرت اکل کوخیر باد کہدیا۔

ھدیث آخر: حضرت ابوموی اشعری رضی الله عندسے مردی ہے انہوں نے اپنے صاحبزادے سے فرمایا اے میرے بیٹے !اگرتم ہمیں دیکھا درال حالیکہ جب ہم نبی سلی الله علیه وسلم کے ساتھ ہوتے اور ہم پر بارش ہوتی تو تم یہ محتا کہ ہماری او بھیڑ جیسی ہے۔ (صحح)

العنى بم اونى مولے كررے بہناكرتے تقاق جب بارش بوتى اس سے مارے لباس ميں بديو بدا بوق _

قوله: "ونحن مع النبى "اور" واصابتنا السماء "دونول جملے حاليہ بين اى لور أيتناحال كوننامع النبى صلى الله عليه وسلم وحال كونناقداصابتناالسماء لين يه بد بواس زمانے ميں بارش كردوران كرماتھ خاص تھى كرغربت تى اوركوئى متبادل انظام نہ تھا اس لئے كيلے كرئروں ميں بد بوہ وجاتى مديث آخر: - "من توك اللباس تو اضعاً لله النے "لينى جوش (عمده) لباس محض الله كے لئے تواضع كى خاطر چھوڑ دے حالانكہ دو اس (الجھ لباس) كى قدرت ركھا ہوتو اللہ تعالى اسے قيامت كردزتمام خلائق كرمائيون اللہ تاكہ اسے جونسا پسندكر كے خال كے سامنے (روبرو) بلائے گاتا كہ اسے اختيار دے كہ دو (ائل) ايمان كے جوڑ دوس سے جونسا پسندكر كے دو لے ليے ۔

ینی لباس زینت کاترک کی خرم مقصد یالا اُبالی پن کی وجہ سے نہ ہوبلکہ حقیقی تواضع کی بناء پر ہوتو چونکہ اس سے دنیاوی شہرت ختم یا کم ہوگی اس لئے اللہ تبارک وتعالی اس کے بدلے میں اسے ظیم شہرت اور دائی عزت سے نوازیں گے کہ جب میدان محشرسب خلائق سے بھرا ہوا ہوگا اسے ان کے سامنے مرعوکیا جائے گا اور اللی ایمان کے لئے جوجنتی لباس تیار کیا گیا ہوگا اسے افتیار دے کر کہا جائے گا کہ ان میں جو تھے پند ہو لو۔ حضرت شاہ صاحب العرف الشذی میں فرماتے ہیں کہ صابر فقیراور شاکر امیر میں کون انسل ہے؟ اس میں اختلاف ہے احادیث سے معلوم ہوتا ہے کہ فقیر صابر افضل ہے تا ہم شیخ محدث عبدالحق و بلوی کی رائے اس کے برکس ہے وہ '' ذالک فیصل الله یؤ تیه من یشاء ''کے تحت کہتے ہیں ' فیم دلیسل علی ان الغنی افضل من الفقیر اذا استوت اعمالہم ''۔ (مشکلو ق حاشیہ ۱۹۸۸)

المستر شد: عرض کرتا ہے کہ فقراختیاری سب سے افضل ہے کیونکہ آپ علیہ السلام اور صحابہ کرائے نے
اسے اختیار فرمایا اور صدیث باب سے بھی بہی معلوم ہوتا ہے جبکہ غیراختیاری فقر مع العمر اور غنامع الشکر دونوں
فضائل میں سے بین ان میں افضل کون ہے ہے کہنامشکل ہے کیونکہ دونوں کی جھلکیاں انبیا علیم السلام میں دیکھی
جاسکتی ہیں۔امام منذری نے بحوالہ تر نہ کی اس صدیث پر صن کا تقام فقل کیا ہے اگر چہ ہمارے نسخ میں نہیں ہے۔
ماسکتی ہیں۔امام منذری نے بحوالہ تر نہ کی اس صدیث پر صن کا تقام فقل کیا ہے اگر چہ ہمارے نسخ میں نہیں ہے۔

مديث آخر: ـ "النفقة كلهافي سبيل الله الاالبناء فلاخير فيه". (غريب)

(جائزوٹری) خرج سارااللہ کی راہ میں (لیعنی باعث اجر) ہے سوائے تغیر (کے خرچ) کے کہ اس میں خیر (ہملائی وثواب) نہیں ۔ (حدیث غریب)

یعی جونقیر کمروغیرہ کی خالی از فائدہ دیدیہ ہوگی اس پرخرچ کی جانے والی رقم سے کوئی اواب نہیں ماتا

بلکہ بہت ساری تغیرات تو وہال ہیں جیسا کہ آگے ابراہیم نختی کول میں ہے ''کل بناء وہال '' برتغیر وہال ہے یہ وہ تغیرات ہیں جو حاجت سے زائد یا گناہ کے اڈے ہوں جیسے سینماہال وغیرہ حسب تفاوت شناعت وہال ہوں گی تاہم جو تغیرات ضروریات و زندگی اور منافع شری کی بناء پر ہوں گی وہ یقینا وہال سے خالی بلکہ باعث اجرو قواب ہیں جیسے مساجد و مدارس، خیراتی میتال اور دیگر رفائی تغیرات غرض حدیث بالا کوعدم ضرورت سے مقید کرنالازی ہے۔

حدیث آخر: حضرت حارثہ بن مضر ف فرماتے ہیں کہ ہم حضرت کتاب کے پاس آئے ان کی عیادت کرنے کے لئے جبکہ انہوں نے سات داغ لگوائے تھے، توانہوں نے فرمایا کہ میری بیاری بہت لمبی ہوگی اگر میں رسول الله صلی وسلم سے بیفرماتے نسن چکا ہوتا کہ ''تم موت کی آرز ومت کرو!' تو بے شک میں ضروراس کی تمنا کرتا ، اور آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا ہے کہ آدی کو ہر فرچ کرنے پراجر ملتا ہے سوائے مٹی کے یا فرمایا کہ ٹی میں فرچ کے سوا، کہ اس پر تو اب نہیں۔ (صحیح) اس حدیث میں ٹی سے مراد تعیر ہے۔

بیصدیث ابواب البخائز میں مع التشریح گذری ہے۔ (دیکھئے تشریحات ترفدی: ص:۲۲۴ج: ۴۴ باب ماجاء فی النہی عن التمنی للموت) نیز داغ کا پہر تھم ابواب الطب میں بھی گذراہے۔

حضرت ابراہیم خن فرماتے ہیں کہ ہرتھ پردبال ہے (ابوتمزہ کہتے ہیں کہ) میں نے پوچھاہتا کے جس تغیر کے بغیر کوئی چارہ کارنہ ہو؟ انہوں نے فرمایا نہ اس میں اجرہے اور نہ وبال ہے، یعنی بصورت ضرورت تغییر مباح ہیں ہے ہے ہے گراو پر بیا ن ہوا کہ تغییرات کی بعض صورتوں پرثواب بھی ماتہ ہے، بہرحال ان روایات سے تغییرات کے شوق کو کم کرنا مقصود ہے تا کہ لوگ فکر آخرت کو نہولیں کیونکہ جب کنکریٹ کی تغییرات میں رئیں اور مسابقت کی رفتار تیز ہوگی تو اس کے لئے طویل المدتی منصوبہ بندیوں کی ضرورت اور فکر آخرت سے بے نیاز ہونے اور خفلت کی اشد ضرورت ہوگی، جو ہلاکت بصورت حیات ہوگی اور قریا ساری انسانیت اس دلدل میں پھنسی ہوئی ہے؟

حدیث آخر: حصرت حمین بن ما لک کونی فرماتے ہیں کہ ایک سائل آیا اور ابن عباس سے بھیک مائل آیا اور ابن عباس سے بھیک مائل تا اللہ '' کی گوائی دیتے ہو؟ اس نے کہا'' ہاں' آپٹ نے فرمایا: کیا تو گوائی دیتا ہے کہ مسلی اللہ علیہ وسلم اللہ کے رسول ہیں؟ اس نے کہا جی'' ہاں' آپٹ نے فرمایا کیا تم رمضان کے روز سے رکھتے ہو؟ اس نے کہا بالکل رکھتا ہوں ابن عباس نے فرمایا تم نے خیرات مانکی ہے اور مانکنے

والے کاحق ہوتا ہے اور بات ہے کہ ہمارے اوپرلازم ہے کہ تیرے ساتھ نیک سلوک کریں چٹانچہ آپ نے اس کوایک کپڑا (جوڑا) دیا پھر فرمایا کہ میں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے بیدار شاوفر ماتے ہوئے سنا ہے کہ کوئی مسلمان ایسانہیں کہ پہنا و ہے ہی مسلمان کوکوئی کپڑا مگروہ الله کی حفاظت میں رہے گااس وقت تک جب تک اس کپڑے کا ایک مخلوا اس کے بدن پر باقی رہے۔ (حسن غریب)

قول ان کسلمان ہونے کے اورابن عباس کا کا سائل سے سوالات پوچھ کرائل کے مسلمان ہونے کے اطمینان کرنے سے معلوم ہوا کہ یفنلیت اور ٹواب ذی کو کپڑے دیے سے حاصل نہیں ہوتا اور ساتھ ساتھ سیمی معلوم ہوا کہ سائل جتناد بندار ہوگا اتنائی خیرات کا ٹواب زیادہ ہوگا کیونکہ وہ صدقہ نیکی وجھلائی کی راہ میں استعال ہوگا یہ تو صدقہ نفلیہ کے بارے میں ہے، زلوۃ ودیکر صدقات واجبیہ کا ٹواب بھی اگر چہم فرف کے عمدہ ہونے سے بردھ جاتا ہے تا ہم نفس ذکوۃ کی اوائیگی ہی بھی نقیر کو دینے سے ہوجا ہے گی بشر طیکہ وہ مسلمان ہو، البت صدقات نقلیہ غیر مسلم کو بھی دینے جاسکتے ہیں مسئلہ ذکوۃ میں گذرا ہے۔

حدیث آخر: حضرت عبداللہ بن سلام "فرماتے ہیں کہ جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم تشریف لائے لیعنی مدینہ ہو لوگ آپ کی طرف دوڑے اور کہا جانے نگا کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم آئے ، ہو ہیں بھی لوگوں کے ساتھ آیا تا کہ آپ کودیکھوں چنا نچہ جب ہیں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم کا چہرہ کمل کردیکھا تو ہیں سمجھ گیا کہ ان کا چہرہ کمی جھوٹے مخض کا چہرہ نہیں ہے اور سب سے پہلے الفاظ جو آپ نے کہ جھے یہ جھے کہ آپ نے فرمایا: اے لوگوں! سلام پھیلا کا در کھا تا کھلایا کرواور نماز پڑھا کروجب لوگ سور ہے ہوں (لیمن تہد) داخل ہوجا کے جنت ہیں بے خونی وسلامتی سے ۔ (صبحے)

قوله: "يعنى المدينة" يبعض راويول كى طرف سي بيان مرادي-

قوله: "إنجَفَلَ"اى دهبوا مسرعين، جَفَلَ، اَجفَلَ وإنجَفَلَ تيزى عي چلخ كوكت بير. قوله: "فلماإستبنتُ"استبان الشنى بمعنى ظهرة يتن الحجى طرح واضح ونمايال بونا-

قدوله: "والمناس نيام" نائم كى جمع بيعن جب لوكول كى غالب اكثريت سورى موچونكهاس وتت ايك وتت الكوت ولك الله وتت الكي والكوت والكوت الكوت والكوت الكي والكوت والكوت الكي والكوت الكي والكوت والكوت الكي والكوت والكوت الكي والكوت والكوت والكوت الكي والكوت والكو

چونکہ حضرت عبداللہ بن سلام یہودی جبر تے اس لئے آپ کے چرو انور کے نقوش دیکھتے ہی توراۃ وغیرہ کے آئیدیں نی آخرالز مان سلی اللہ علیہ وسلم کاعکس نظر آنے لگا اللہ نے ان براینافضل کر کے ان کوعنادے

محفوظ كرك مشرف باسلام فرمايا

حدیث انس : ۔ جب نی صلی اللہ علیہ وسلم مدینہ آئے تو مہاجرین ان کے پاس آئے اور عرض کیا کہ
اے اللہ کے رسول! ہم نے اس قوم جس کے در میان ہم انزے ہیں سے بڑھ کراتن کثرت سے خرچ کرنے اور
مال قلیل میں اتن غم خواری کرنے والی کی قوم کوئیں و یکھا ہے، بلا شہرہ انہوں نے ہم کوعت سے فارغ وکھا اور
راحت میں ہم کو شریک رکھا، یہاں تک کہ ہمیں خوف ہونے لگا ہے کہ (ہمار ااور اپنا) سار الثواب وہ لے جا کیں
گے، پس نی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: "نہیں" جب تک تم ان کے لئے اللہ سے دعاما تکتے رہو گے اور ان کی
تحریف (شکریدادا) کرتے رہو گے۔ (حسن سے علی غریب)

لینی جومها جرین صحابہ کرام " آخضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی ججرت سے پہلے مدیدہ منورہ آ چکے تھے وہ حضورصلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور فدکورہ بالاتا کڑات بیان کئے، چونکہ مہا جرین سارے یا اکثر قریش سے تعلق رکھتے تھے جو تاوت میں ممتاز تھے لین یہاں آ کر جب انصار کا جو دو تاویکھا تو وہ یہ کہنے پر مجبور ہو گئے کہ جس کے پاس نم ہے دہ بھی خواری مجبور ہو گئے کہ جس کے پاس کم ہے وہ بھی خواری وہدردی میں کی سے پیچھے نہیں اور صرف بہی نہیں بلکہ کا مسارا خود ہی کرتے ہیں جبکہ آرام اور قیام وطعام میں جمیس برابر کے شریک کرتے ہیں، ہمیں توبید ڈرہے کہ بیدلوگ ہماراسارا اثواب بھی اپنے نامہ اعمال میں لے جا کیں برابر کے شریک کرتے ہیں، ہمیں توبید ڈرہے کہ بیدلوگ ہماراسارا اثواب بھی اپنے نامہ اعمال میں لے جا کیں گئے کیونکہ ہم تو دنیاوی مشقت سے بالکل بے نیاز ہو گئے ہیں اور تیار کھانا کھا کر پیڈئیس کہ الی عبادت پر جمیں توبی ہے وہ ان ہمیں تواب کے گام کر اس کے ایک میں بات نہیں کہ وہ کا ارس کو میں ہمیں توبی ہمیں کہ اس کے دورات کی توبی ہمیں کروگے، کیونکہ آپ کی دعا اور شکر گذاری ان کے اصانات کا ان کے لئے دعا گور ہو گے اورات میان فراموثی نہیں کروگے، کیونکہ آپ کی دعا اور شکر گذاری ان کے اصانات کا بدلہ بن جا کیں گے اوراس طرح تم اور وہ برابر ہوجا کیں گے بینی انصار کا اجراکٹر واثمر ضرور ہوگائیکن آپ کی بیت ہمرت وعیادت بھی ہے از زاس طرح تم اوروہ برابر ہوجا کیں گے بینی انصار کا اجراکٹر واثمر ضرور ہوگائیکن آپ کی نیس بی جرت وعیادت بھی ہے اثر نہ ہوں گی۔

قوله: "من كثير" ابذل معنعلق ب_اور "من قليل" مواساة كساته متعلق بـ وقوله: "من قوم" ابذَل و أحِسَنَ دونول كساته بنابرتنازع متعلق بـ

قسول، "المهنا" بفتح الميم والنون جو چيز آدمي كي ضروريات كے لئے كافي مونيز جو چيز بغير تعب و مشقت كيل جائے اسے بھى كہاجا تاہے۔ يہال يهى آخرى معنى مناسب ہے كيونكدانصار في مهاجرين كا بحر پور خیال رکھانہ صرف ان کے کھانے پینے اور دہائش کا انظام کیا بلکہ بعض حضرات نے اپنی ہویوں میں سب سے زیادہ خوب صورت کو طلاق دے کرمہاجرین کا گھر آباد کیا۔

ریافظ ہمارے پاس موجو ذلسخہ میں بغیر میم کے ہے یعنی منا واور حاشی قوت میں بھی اسے بروزن سحاب دیا ہے والمعنا و ما

حديث آخر: "الطاعم الشاكربمنزلة الصائم الصابر". (حسن غريب)

کھانے والاشکر گذارمبر کرنے والے روزہ دار کی مانندہ، یعنی دونوں کا تواب برابرہ تاہم ہے مساواة وبرابری نفس تواب میں ہے اور بھی نفس شے میں تشبیدی جاتی ہے مرز وائد کا تفاوت مجوظ ہوتا ہے

پی مطلب بیہ ہوا کہ دونوں کو اب ملتا ہے اگر چہ روزہ دارکا تو اب زیادہ ہے مثلاً زیدادر عمر ودونوں خنامیں برابر میں کہ برایک صاحب نصاب ہے اور ان پرز کو قانہیں ہوتی لیکن زید کا مال زیادہ ہے عمر و سے،اس سے معلوم ہوا کہ فقرافقیاری افضل ہے کیونکہ اسے یہاں مشہر بربنایا گیا ہے۔ (تذبر)

صريث آخر: سالا أخسر كم بسمن يحرُم على الناروتحرُمُ عليه النار العلى كل قريب هَيِّن سهل ". (غريب وفي نسخة حسن غريب)

کیا تہمیں نہ بتا ول وہ جوآگ پرحرام ہے اورآگ اس پرحرام ہے؟ ہرتا بعدار، آسانی کرنے والے اوراگول سے زد یک والے پرآگ حرام ہے۔

یہاں تحرم علیہ النار پہلے جملے کی تاکیدہ، جبکہ عین اور بہل دونوں قریب المعنی الفاظ بیں لیعنی آسانی پیدا کرنے والے مطلب سے کہ جو تحض الوگوں کی بات ما نتا ہے اور ان کے کام بیس می کرتا ہے اور اپنے اخلاق وکردار کی وجہ سے لوگوں کے قریب رہتا ہے۔ کونکہ ایسے فنعس کو ہرایک پہند کرتا ہے اور اس سے ایسے تعلقات ومراسم رکھتا ہے تو دہ اینے اس طرز عمل کی وجہ سے آگ پر حراح اور آگ ایسی وزخ اس پر حرام ہے۔

حدیث آخر: دعرت اسودین بزیدفر ماتے ہیں کہ پی نے معرت عائش سے ہو چھا کہ نی سلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی داخل ہوتے تو کیا کام کرنے لگتے تھے؟ انہوں نے فرمایا کہ گفر (والوں) کی خدمت (کام کاج) کرنے لگتے اور جب نماز کاوقت آجا تا تو کھڑے ہوکر نماز پڑھتے ۔ (میح)

قسولسه: "مهنة" بروزن رحمة كام كائ اورخدمت كوكت بيل بعض نے كہا كة خت محنت كوكتے بيں، مطلب سے ہے كہ گھر كاسارا كام ازواج مطہرات پر نہ چھوڑتے بلكه ان كے ساتھ برابر كے شريك رہنے كى كوشش فرماتے، جيسے بكرى كا دود هددوهنا، اپنے جوتوں يا كيڑوں بيس پوندلگا ناوغيره، غرض آپ كامزاج گرامى آرام طلى وتعلى كانہ تھا بلكہ خيررسانى ، فم خوارى اور دوسروں كے لئے زيادہ سے زيادہ آسانی وراحت دينے كا تھا، اس سے آپ كى تواضع كا بھى اندازہ لگا يا جاسكتا ہے، اور سے كركوئى د نيوى كام آپ كونماز سے فافل نہيں بنا تا۔

حدیث آخر: حضرت انس فر ماتے ہیں کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم سے کوئی شخص ملتا اور مصافحہ کرتا تو آپ اپنا ہاتھ اس کے ہاتھ سے اس وقت تک نہ تھینچتے جب تک وہ شخص خود ہی نہ تھینچتا، اور اپنا چہرہ اس کے چہرے سے نہ چھیرتے تا آئکہ وہ شخص اپنا منہ خود ہی چھیرتا، اور آپ کوئیس دیکھا گیا در اس حالیکہ آپ اپنے ہیر پھیلائے ہوں اپنے ہم نشین کے آمے۔ (غریب)

اس مدیث میں ملاقات اور محفل کے عظیم آداب ہیں اور بیکہ آپ باد جوداعلیٰ ترین مقام انسانیت کے اپنے ماتحوں کا کسی مقام انسانیت کے اپنے ماتحوں کا کسی مقدر خیال رکھتے کہ سی کوا حساس کمتری کا اثر لینے کا موقع ہی نہیں دیتے ، صلی اللہ علیہ وسلم تسلیما کثیر آ۔

مديث آخر: "خرج رجل ممن كان قبلكم في حلة له يختال فيها الخ".

تم سے اگلے لوگوں میں سے ایک شخص اپنے ایک (نئے)جوڑے میں نکلا، وہ اس میں اترا تا تھا، پس اللّٰہ نے زمین کو تھم فر مایا چنانچہ اس کوزمین نے پکڑا (یعنی نگل دیا) پس وہ زمین میں دھنستا چلا جار ہا ہے یا فر مایا کہ وہ قیامت تک اس میں گروش کرتارہے گا۔ (صحیح)

قوله: "يختال" إختيال چلني مين تكبركرنے يعنى اترانے كو كہتے ہيں۔

قوله: "يتجلجل"اى يغوص ويضطرب فيها لينى وفضى مسلسل حركت كرتار به تا اور كهستا جاد باب جلجله آواز كي ساته كهست اوردهن كوكت بير-

حضرت شاہ صاحبؒ العرف الشذى ميں فرماتے ہيں كہ ميخض قارون ملعون تھا جوحضرت موئ عليہ السلام كا پچپاز اوتھا جس كا قصدمشہور ہے كہ وہ حضرت موئ عليہ السلام كا پچپاز اوتھا جس كا قصدمشہور ہے كہ وہ حضرت موئ عليہ السلام كا پچپاز اوتھا جس كا قصدمشہور ہے كہ وہ حضرت موئ اللہ عام كے وعظ اس كے دعا ما تكى وہ مال دار ہوگيا ہور كو قا دينے سے محكر ہوگيا اور ايك عورت كو تياركيا كہ وہ موئ "كے وعظ كے دوران كھڑى ہوكر الزام تراشى كرے كہ يہلے ميرے وہ يسے تو اواكر وجورات كوميرے ساتھ زناكى وجہ سے

آپ پرلازم ہوئے ہیں، حفرت مویٰ گوخصہ آیا اللہ نے اس عورت کو پچ ہولنے پر گویا کردیا اس طرح قارون کارچایا ہواڈ رامہ ظاہر ہو گیا اللہ تبارک وتعالی نے حضرت موٹی کا کواختیا ردیا چنا نچہ آپ کے کہنے پرزمین نے اس کو پکڑلیا، اس کا خزانہ بھی اس کے اوپرڈالا گیا جیسا کہ فسرین نے تفصیل سے نقل کیا ہے۔

مديث آخر: _يحشر المتكبرون يوم القيامة امثال الذّر في صور الرجال الخ".

قیامت کے دن متکبرلوگوں کوچھوٹی چھوٹی چیونٹیوں کی مانندانسانی شکل میں جمع کردیا جائے گا،جن کو ہر طرف سے ذات گھیرے ہوئے ہوگی، ہنکائے جائیں گے جہنم کے ایک قیدخانہ کی طرف جو بولس نام سے یادکیا جاتا ہے، چھائی رہے گی ان پرآگوں کی آگ، پلائے جائیں گے دوز خیوں کارستا ہوا مادہ (پیپ وغیرہ) جو بد بودار کیچڑ ہے۔ (حسن)

جارے پاس والے نسخ میں امام ترفدیؓ نے اس پرحسن کا تھم لگایا ہے مگر عارضة الاحوذی اور تحفۃ الاحوذی کی اور تحفۃ الاحوذی کے متن پرحسن کے ساتھ تھے بھی ہے۔

قوله: "امشال الذّر" ذرة كى جمع به ايك چهوئى سرخ چيوئى كهلاتى به بعض حفرات نهاس كومعنى مجازى پرحمل كيا به يعنى متكبرلوگ حقارت و به وقعتى ميں چيونيوں كى طرح ہوں گے گويا كه ية شبيه حقارت والم انت ميں به نه كه مغر ميں مگر دوسرى رائے بيہ كه ية شبيه حقيقت پر محمول به اور مطلب بيہ كه ان لوگوں كى شكل وصورت تواني يعنى انسانى ہوگى مگر تكبركى سز الكے طور پران كوچو ثابنا ديا جائے گا، تو جس طرح "من تواضع مثل وصورت تواني يعنى انسانى ہوگى مگر تكبركى سز الكے طور پران كوچو ثابنا ديا جائے گا، تو جس طرح "من تواضع الله رفعنه الله " خاصين عالى المرحبة اور حقد الرجنت بناديئے جائيں گے، اسى طرح متكبرين پستى وئيستى كة تحرى نقطة تك پنجيا ديئے جائيں گے، البتداس سے بيلازم نہيں آتا كه وہ بميشدا سے جھوٹے ہوں ہوسكتا ہے كه وہ ميدانِ محشر كے كسى وقفے ميں يا حشر سے فيصلہ وجہنم ميں داخلے تک چيونيوں كى بقدر بموں اور باتى احوال ميں برے بول -

قوله: "بولس" بفتح اللام جبكه باء كافته وضمه دونوں جائز ہیں بیاس جیل كانام ہے جہاں ان متكبروں كو ركھا جائے گا، علاوہ ازیں آگوں كی آگ یعن سخت ترین آگ ان كو ہر طرف سے گھیرے ہوئے ہوں گی، حاشیہ قوت میں ہے كہ انیار بمعنی نیران جمع نارہے جیسے اریاح بمعنی ریاح ہے۔

قوله: "من عصارة اهل النار" بضم العين اصل مين نچو رُكوكت بين يعنى الل جهنم كجسمول يه جوماده فيك كاجسه بيب ،خون اورزرد پانى اورشيره -قسولسه: "طِيسنة السخبال" عصاره سے بدل ہے

لہذا مجرور ہے، خبال بفتح الخاء اصل میں فسادو بگاڑ کو کہتے ہیں یہاں مرادسڑی ہوئی بد بودار ہے بینی بد بودار کیچڑ (اعاذ ناالله منها)

صدیث آخر: ۔ "من کے ظم غیظا النے"جس نے غصر ضبط کرلیا دراں حالیکہ وہ اس کی تعفیذ پر قادر مواللہ تعالیٰ اس کو قیامت کے دن ساری مخلوق کے سامنے نکا کراسے اختیار دیں گے کہ وہ جس حور کو چاہے لے لے۔ (حسن غریب)

(اس مدیث کی تشریح تشریحات جلد:۲ ص:۳۰ سر گذری ہے باب ماجاء فی کظم الغیظ)

حدیث آخر: حضرت جابر تفر مائے ہیں کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ تین چیزیں ہیں وہ جس میں ہول گی اس پراللہ تعالی اپنا گفت کھیلائیں گے (بعنی قیامت کے دن) اور اسے جنت میں داخل فرمائیں گے (ا) کمزور کے ساتھ نرمی (۲) والدین پرشفقت (۳) مملوک (لونڈی،غلام اورنوکر) پر احسان ۔ (غریب)

قول۔: " کَنفَه" اصل میں باز وکو کہتے ہیں گریہاں مرا دلازم المعنی ہے بینی رحمت وحفاظت جیسا کہ متشابہات کے بارے میں پہلے گذراہے، پھرمملوک سے مرادعام ہے خواوا پناہو یا کسی دوسرے کا بیعنی ناکسوں کے ساتھ حسن سلوک مراد ہے۔

حدیث آخر: حضرت ابوذررضی الله عند سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: الله عزوج لفرمات ہیں: اے میر ب بندو! تم سب گراہ ہوگر جے ہیں ہدایت دوں پس تم جھ سے ہدایت ما نگوتا کہ ہیں تہمیں ہدایت دوں، اورتم سب نا دار ہوگر جے ہیں غنی کروں، سوتم مجھ سے ما نگوتا کہ ہیں تہمیں رزق دوں، اورتم سب گنہگار ہوگر جے ہیں بچاؤں (گناہ سے) پس تم ہیں سے جو یقین رکھے کہ ہیں مغفرت پرقدرت والا ہوں اوروہ مجھ سے بخشش طلب کر ہے تو ہیں اس کو بخشا ہوں، اور میں اس کی پرواہ نہیں کرتا اورا گرتمہارے اکھی بچھلے اور زند ہے اور مرد سے اور تر وخشک سب کے سب میر سے بندوں ہیں سے سب سے زیادہ تقی دل پرجم ہوجا کیں تو ہو ایر نام کے بیکھیلے میں تو ہو ایر ترجم ہوجا کیں تو ہو اور ندے ومرد سے اور تر وخشک سارے میرے بندوں میں سے سب سے بد بخت کے دل پرجمع ہوجا کیں تو ہی میری سلطنت میں مچھر کے پر کے برابر اضا فرنہیں کر سکے گا اور آگر تمہارے اور ندے ومرد سے اور زندے ومرد سے اور زندے ومرد سے اور زندے ومرد سے اور زندے ومرد سے اور ندے ومرد سے اور ندک سارے میرے بندوں میں سے سب سے بد بخت کے دل پرجمع ہوجا کیں تو ہو میری سلطنت میں مجھمر کے پر کے برابر کی نہیں کر سکے گا، اور آگر تمہارے اگلے، پچھلے اور زندے ومرد سے اور ندے اور تر وخشک میران (خالی ہموارز مین) میں جمع ہوجا کیں اور پھر ہوخص اتنا ما نگے جہاں تک اس کی آرزو

پنچتی ہے، اور میں تم میں سے ہرسائل کودوں تو یہ عطاء کم نہیں کرے گی میری سلطنت میں سے پھے بھی گرا تناسا جیسے تم میں سے بھی بھی گرا تناسا جیسے تم میں سے کوئی ایک سمندر پر گذر ہے اور اس میں ایک سوئی ڈیود ہے اور پھراسے نکا لے، اور یہ (کم نہ ہونا)
اس لئے کہ میں بہت زیادہ فیض کرنے والا ہوں، ہر چیز میں خود فیل ہوں اور وسعت وشرف والا ہوں، کرتا ہوں جو چا ہتا ہوں، میرادینا فقط کلام ہے اور عذاب میرا فقط کلام (عکم) ہے اور بے شک میرا تھکم کسی چیز کے لئے جب میں چا ہتا ہوں یہی ہے کہ میں اسے کہتا ہوں 'مہر وہا' بس وہ ہوجا تی ہے۔ (حسن)

قول ہ: "باعب دی کلکم" بظاہر خطاب تھلین سے ہا گرچ آگے مدیث میں 'فسال کل انسان "سے خطاب صرف انسانوں سے معلوم ہوتا ہے، لیخی تم سب گراہی کی طرف جارہ ہوگرجس کو میں ہدایت کردوں وہ گراہی سے بچتا ہے یاباز آتا ہے پھر ہدایت کرنا نبیاء علیم السلام کی بعثت کے ذریعہ، ولائل سمجھانے اورانقیادی صلاحیت پیدا کرنے کے ذریعہ مراد ہے۔

قوله: "و کملکم مذنب" سب کے گنهگار ہونے کا مطلب بیہے کہ ہرانسان میں گناہ کی بنیاد قائم ہے، جیسے قوت شہوانیہ اور قوت غصبیہ جوآ دمی کو گناہ کی طرف لے جاتی ہیں جیسا کہ قوت عاقلہ غوایت و گراہی کی طرف لے جاتی ہے، پھراللہ ان قو کی کواعتدال میں رکھنے کی جس کوتو فیق دیتا ہے بیقو تیں فضائل اخلاق جنم دیت ہیں جن کو بالتر تیب عفت، شجاعت اور حکمت اور تینوں سے مرکب کوعدالت کہا جاتا ہے۔

قوله: "اجتمعواعلیٰ اتقیٰ قلب عبد، وقوله اجتمعواعلی اشقیٰ قلب عبدالخ" یعنیا اگر سب خلائق سب سے متی فخص جیسے محمطی الله علیہ وسلم یا جرکیل کی طرح متی ہوجا کیں تواس سے میری سلطنت میں ذرہ برابراضا فنہیں ہوگا کیونکہ اضا فی توت وسلطنت میں تب ممکن ہوتا ہے جب اس میں کوئی کی ہوجبکہ الله کی قوت وسلطنت میں کوئی نقص نہیں، اس کے برعس اگر ساری مخلوق سب سے بد بحنت جیسے ابلیس لعین یا دجال وفرعون کی طرح ہوجائے تو الله کی سلطنت میں مجھر کے پر کے برابر کی نہیں کر سکے گی کونکہ الله عزوجل کی سلطنت مخلوق کی مرہون منت نہیں ہے الله تعالی واجب لذات ہے اوراس کی صفات از لی ہیں وہ حدوث کے شائبہ اوراحتیاج سے منزہ ہے جبکہ مخلوق ساری حادث ہے اورالله کی صفات کے مظاہر ہیں۔

قوله: "فی صعیدو احد" اس قیریس اس کی طرف اشاره ہے کہ اگر تمام خلائق سب ل کریکبارگ سوالات کریں جوبنسبت و تفے و تفے سے ما تکنے سے انسان کومشکل لگ رہا ہے تو بھی ان سب کووہ تمام اشیاء دینے سے اللّٰہ کی سلطنت اور خزانوں میں کوئی کی نہیں آئے گی۔ قوله: "إلا كسالوان احد كم النع" بيمثال نهيں ہے بلك نظير ہے جوتقريب الى الفهم كے لئے ہے كيونكه سوئى پرجتنى نمى آبئ كى اس مقدار ميں سمندركا بإنى كم ہوجا تا ہے كيونكه سمندر متنا ہى ہوتا ہے اور متنا ہى سے متنا ہى الله كرنے سے كى آجاتى ہے، جبدالله كى سلطنت لا متنا ہى ہے اور لا متنا ہى سے متنا ہى عليم و كرنے سے كوئى منا ہى آبى گرچوں كے بال لئے فركور و كى نہيں آتى مگر چونكه شريعت كى اصطلاحات واطلاقات ميں لوگوں كى سمجھ كى رعايت كى جاتى ہے اس لئے فركور و نظير پيش كى گئ اور اس لئے بھى كہ بادى نظر ميں سوئى كاسمندر ميں آلود و آب ہونے سے كوئى كى محسون نہيں ہوتى۔ قوله: " جواد" كشير المجود ۔

قىولىە: "واجد" دەجو،جوچىزچائە درجىيےچائە درجب بھى چائەدەموجود موكوكى چىزغىر حاضريا غىرموجود نېيىل موسكتى مولىينى جو بھى بھى كسى چىز كامتاج نەبو

قسول ان المعنی ہیں وسعیت شرف کا نام ہے پس معنی ہیں وسعیت شرف کا نام ہے پس معنی ہیں وسعیت شرف وکرم والا ، واضح رہے کہ بعض علاء نے اللہ تبارک وتعالی پر''نی ''کااطلاق مناسب نہیں سمجھا ہے کیونکہ سخاوت بعض اللہ لفت کی نظر میں وہ ہے جو ما نگنے والوں کودے یاصاحب حق کواس کاحق دینا سخاوت ہے جبکہ اللہ بغیر ما نگے اورغیرِ مستحق کو بھی دیتا ہے۔

حدیث آخر: حضرت عبراللہ بن عمر قسے مردی ہے فرماتے ہیں کہ ہیں نے نبی سلی اللہ علیہ وسلم سے مناہے جوا کیے حدیث بیان فرماتے اگر ہیں بی حدیث نہ سنتا بلکہ صرف ایک مرتبہ یاد ومرتبہ یہاں تک کہ گرنا سات تک (تو ہیں بیہ بیان نہ کرتا) لیکن ہیں نے بیسات بارسے زیادہ می ہیں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو بیہ ارشا و فرماتے ہوئے سنا ہے کہ بی اسرائیل کا کھنل (نا چض کی گناہ کے کام سے گریز نہیں کرتا تھا، چنا نچہ اس کے پاس ایک عورت آئی تو اس نے اسے ساٹھ دیناردیے اس شرط پر کہ وہ اس سے جماع کرے گا، پس جب وہ اس عورت کے پاس بیٹھا اس طور سے جیسا کہ ایک مردا پی بیوی کے آگے بیٹھتا ہے تو وہ کا نبی اوررونے گی، کفل نے کہا کیا چیز تہمیں رُ ولا تی ہے؟ کیا ہیں نے تجھ پر جبر وز بردی کی ہے؟ وہ بولی نہیں گریہ ایک ایسار گندہ) کام ہے جو میں نے بھی نہیں کیا ہے اور جمحے اس (کام) پرضر ورت نے آمادہ کیا ہے (لیخن غربت نے) کفل کہنے لگا اچھاتم بیکام (بجبوری) کرتی ہواور (اس سے قبل) تم نے نہیں کیا ہے؟ جاؤیہ پیسے (مفت نے) کفل کہنے لگا اچھاتم بیکام (بجبوری) کرتی ہواور (اس سے قبل) تم نے نہیں کیا ہے؟ جاؤیہ پیسے (مفت میں) تیرے ہوئے اوراس کے ساتھ کھل نے (توبہ تا ب ہوکر) کہا بخد اہیں اس کے بعد بھی بھی اللہ کی میں اللہ کی نفر مانی نہیں کروں گا چنا نچہ اس کا انتقال ہوا، جبح کواس کے درواز سے پر کھا ہوا تھا کہ اللہ نے کفل

کوبخش دیا۔ (حسن)

قوله: "لولم اسمعه النح" شرط باور جزاء مقدر به ای لم احدثه ولکتی النح قوله: "كفل" بسرالكاف وسكون الفاء ابن العرق نے عارضة الاحوذی میں ان حفرات پر سخت نارافسکی كااظهاركيا به جو كہتے ہیں كہ بیرون دوالكفل نبی به كونكه ايك تو دونوں كے نام بھی الگ الگ ہیں دوم به كه كفل نے توبه كرلى مراس سے بل گناموں سے نہیں پختا تفاج بكه انبیاع لیم السلام معموم ہوتے ہیں قوله: "ارعدت" ای زلز لت من حشية الله ليمن الله كنوف سے كا بيئے كی اور رونے كی قوله: "فاصبح مكتوب النے" يعنی رات كولكها كيا تفاج وسے نظر آيا۔

صدیث آخر: حصرت عبداللہ بن مسعود نے دوحدیثیں بیان فرمائیں: ایک اپنی طرف سے (یعن موقوف یا ذاتی رائے کے طور پر) اور دوسری نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے قال عبداللہ (یدائی طرف سے فرمایا کہ) موس ایخ گنا ہوں کو ایسامحسوس کرتا ہے جیسے دہ گویا پہاڑی جڑ (دامن) ہیں بیٹھا ہوا ورڈر رہا ہو کہ پہاڑاس پر آن پڑے گا جبہ فاجرا ہے گنا ہوں کو کھی کی مانند بختا ہے جواس کی ٹاک پیٹھی اور اس نے ہاتھ سے اشارہ کیا لیس وہ آڈگئی، قدال دسول اللہ صلی اللہ علیہ و سلم (یدوہ مرفوع اور دوسری صدیث ہے) بلافہ اللہ میں ایک کی تو بہ پراس آدمی سے بھی زیادہ خوش ہونے والا ہے جو بے آب وگیا، ہلاکت خرچیٹیل زیبن میں ہواس کے ایک کی تو بہ پراس آدمی سے بھی زیادہ خوش ہونے والا ہے جو بے آب وگیا، ہلاکت خرچیٹیل زیبن میں ہواس کے ساتھ اس کی اونٹی کو لیس وہ اس کی تلاش میں لکلا (اور گھو معے پھرتے تھک گیا) یہاں تک کہ موت سرتے ہیں کھودیا اس نے اس اونٹی کو لیس وہ اس کی تلاش میں لکلا (اور گھو معے پھرتے تھک گیا) یہاں تک کہ موت رکے اسباب) نے اس کو گھیر لیا تو اس نے سوچا (یعنی دل میں کہا) کہ میں واپس اس جگہ کی طرف لوٹا اور اس کی آخونگ کی اور جیسا ہی کھویا ہے میں نے اس اونٹی کو تا کہ وہاں مرجا کوں، لیس وہ اس مقام کی طرف لوٹا اور اس کی آخونگ کی اور جیسا ہی جاگا تو بیا گیو کیا گید کہ دس کی اس کی اور خوش کی اس کی اور خوش کی اس کا کھا تا بینا اور ضوح کی کا سامان ہے۔ (حسن صوح کی)

قول دوم محذوف ہاں المومن بری ذنوب النے "ذنوب پری کامفعول اول ہے اور مفعول دوم محذوف ہاں کا لببال جو کھ أب الن جو کھ أب الن سے معلوم ہوا، چونکہ ایمان ایک معیار ہاں گئے اس پر نیکیوں اور گنا ہوں کو جانچا اور پر کھاجا تا ہے پس یہ سوئی جتنی اچھی ہوگی اس تناسب سے تمیز بھی صاف ہوگی اس لئے اعلیٰ ایمان پرگناہ پہاڑی مانند بھاری کھتے ہیں جبکہ فاجر کے کمزورایمان پرگناہ کے بُرے اثرات کا کوئی بوجوزیادہ محسوس نہیں ہوتا۔

دوسری بات یہ ہے کہ ایمان معرفت باری تعالیٰ کا ذریعہ ہے تو ایمان کے قوی ہونے کی صورت میں معرفت میں وسعت ہوتی ہے اس لئے خشیت میں اضافہ ہوتا ہے جبکہ کمزورایمان سے زیادہ معرفت نصیب نہیں ہوتی اس لئے گناہ کی شناعت مخفی رہتی ہے۔

قوله: "فَكَلاة دَوَيَّة" فلا ةوه دشت وصحراء جس ميں پانی نه ہوعرف ميں بھی اس کوصحراء ہی كہتے ہیں۔ جبكه "دوية" بفتح الدال وتشديدالوا دُوالياءوه صحراء جہاں كوئى سبزه دنبا تات يعنى گھاس نه ہو۔ قبوله: "مهلكة" بفتح الميم جبكه لام كافتحة وكسره دونوں جائز ہیں ظرف كاصيغہ ہے يعنی جائے ہلاكت۔

صديث آخر: كل ابن ادم خطاء وخير الخطائين التوّابون ". (غريب) برابن ادم خطاكارول من بهتر توبكر في وال بين -

قولہ: "خطّاء" مبالغے کاصیغہ بمعنی کثیرالخطاء ہے پہلے نطاء کومفر دذکر کیا بیلفظ کُلُ کودیکھتے ہوئے جبکہ دوسری بارجع کے صیغے سے ذکر فر مایا بیکل کے معنی کے اعتبار سے ۔اس مدیث سے انبیا علیہم السلام متثنیٰ ہیں حضرت گنگوہی الکوکب میں فر ماتے ہیں کہ خطاء سے مرادوہ عمل ہے جوکرنے والے کے مقام اور شان کے مناسب نہ ہو علیٰ صدا بھراستناء کی ضرورت نہیں انتخل کیونکہ انبیاء علیہم السلام کے بعض خلاف اولی کام اگر چہ ہمارے بارے میں تو نکیاں ہیں مگروہ ان پر باوجو درخصت کے بار خاطر گذرتے مثلاً بیان جواز کے لئے خلاف معمول یا خلاف اولی کام ایک دومرتبہ کرنا۔

باب

"عن ابى هريرة عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: من كان يؤمن بالله واليوم الآخو فليكرم ضيفه، ومن كان يؤمن بالله واليوم الآخو فليقل خيراً واليصمُت". (حديث صحيح) جو شخص الله اور آخرت برايمان ركمتا موتواسا بين مهمان كا كرام كرنا چا بيئ اور جو شخص الله اور آخرت كدن برايمان ركمتا موتواسے چا بيئ كرم كي باخاموش (چپ) دب _ _

تشریخ: حدیث کاپہلاحصہ جومہمان کی تعظیم سے متعلق ہے ابواب البروالصلہ میں تفصیلاً گذراہے۔ (ویکھئے تشریحات ترندی' ہاب ماجاء فی الضیافة و غایة الضیافة کم هو؟''ص:۲۳۲ج:۲)

ام مرزدی نے اس صدیث کی طرف و فسسی البساب سیں ابی شریح الکعبی کہدکراشارہ کیا ہے۔
قول اللہ دولوں سے قول اللہ بیا ہے کہ بیتا ہے ایمان آدمی پرلازم ہے کہ وہ بات کرنے سے پہلے سوچ کہ اس کی بات آتا ہے۔ مطلب بیہ کہ بیتا ضائے ایمان آدمی پرلازم ہے کہ وہ بات کرنے سے پہلے سوچ کہ اس کی بات پرکوئی ہُرے اثرات تو مرتب نہیں ہول کے پس اگروہ بات اچھی گلے تو کہہ دے ورنہ چُپ رہے کہ وہ کہ اس کی بات امن سے ہے جونساد کی ضدہ لہذا مؤمن ہوتے ہوئے دگاڑ وفساد کی بنیا در کھنا جا ترنہیں، واضح رہے کہ یہ ارشادمباح کلام کے بارے میں پہلے تفصیل ارشادمباح کلام کے بارے میں پہلے تفصیل گذری ہے (ابواب الفتن میں اس کے لئے دونین ابواب ہیں ' باب ماجاء فی الا مربال معروف و النہی عن المنکو ''اوراس کے بعددوباب شریحات ازمن ۲۵۲۳ سے ۲۵۲۳ کے ۱

باب کی دوسری صدیث میں ہے' من صمت نجا ''جو پی رہاس نے جات پائی اس روایت میں ابن لہیعد ہیں جوضعیف کہلاتے ہیں بہر حال مطلب بیہ ہے کہ جوشف کری بات کہنے سے گریزاں رہاتو وہ اس بات کے غلط نتائج سے دنیاوآخرت دونوں میں محفوظ رہا۔ زبان کی حفاظت کے متعلق کچھ ابحاث ابواب البروالصلہ میں گذری ہیں جبکہ تفصیلی مباحث راقم کی کتاب 'نقش قدم کامل حصد دوم یانقش اخلاق' میں دیکھے جاسکتے ہیں۔ فنن شا فلیرا جع

باب

"عن ابى موسى قال سُئِل رسول الله صلى الله عليه وسلم: إى المسلمين افضل؟ قال: من سلِم المسلمون من لسانه ويده ". (صحيح غريب)

حضرت ابوموی اشعری رضی الله عنه سے روایت ہے فرماتے ہیں کدرسول الله صلی الله علیه وسلم سے پوچھا گیا کہ مسلمانوں میں کون اچھاہے؟ آپ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا: وہ جس کی زبان اور ہاتھ سے مسلمان بچر ہیں (لیعنی دونوں کی اذیت سے)۔

تشريح: - چونكه سوال مين 'أي الناس "كعنوان كے بجائے 'أى المسلمين "كما كيا ہاس لئے مطلب میہ ہوا کہ سائل کا مقصد محض لوگوں میں سے افضل کا سوال نہیں بلکہ مسلمانوں میں سے افضل کے بارے میں سوال کرنامقصودہے چونکہ مسلمان تووہ ہوتاہے جواللہ تبارک وتعالی پرایمان رکھتا ہواوراس کے تقاضوں کو پورا کرتا ہوا گرچہ ایمان کے مقتضیات میں لوگوں کے ساتھ بلکہ پوری مخلوق کے ساتھ اچھاسلوک ونیک برتاؤ کرنا بھی شامل ہے کیونکہ مخلوق کی حیثیت سرکاری اموال واملاک کی ہے جس کی حفاظت اور خیال رکھنا ہرشہری کی فرمہ داری ہے تا ہم یہ پہلوکلمہ شہاوت میں صراحة موجود نبیس اس کے آپ نے فرمایا ''مهن مسلم المسلمون المنع "ليعنى افضل اورسب سے احجمامسلمان وہ ہے جوحقوق الله كے ساتھ ساتھ حقوق العباد كابھى بحر پورخیال رکھے جس کااد نی درجہ رہے کہ وہ دوسرے مسلمانوں کواپنی زبان ادر ہاتھ کی ایذاء سے بچائے جو ہر مسلمان کے بس کی بات ہے کیونکہ اس پرکوئی پیسہ وغیرہ خرج کرنانہیں پڑتااس سے زیادہ احسان بھی اگر چہ مستحسن بلكه مطلوب ومرغوب بيتاجم وه اضافي افضليت ميس آتاب جوخدمات وصدقات اورتبرعات كضمن میں شامل ہے اور چونکہ یہاں اونیٰ مؤمنِ افضل کی بات ہورہی ہے اس لئے 'مسن سَلِمَ الناس ''نہیں کہااگر چِہ ذى كوبھى ايذاء بلاوجه بيس پہنچانى جا ہے ہاں البتة ابن حبال كى ايك روايت ميں "من سلم الناس" بھى آيا ہے۔ یس مطلب بیہوا کہ جومسلمان لوگوں کی ایذاءرسانی سے اجتناب نہ کرے وہ افضل مسلمان نہیں اگر چہ نفسِ ایمان واسلام رہتا ہے کیونکہ کلام میں اصل قیدہوا کرتی ہے جبیبا کہ علامہ نے مطوّل میں اس کی تصریح

فر مائی ہے، پھرلسان کی تقتریم اس کی شدت تا ثیروعموم کی وجہ ہے ہے کہ ہے

جسراحسات السِّسنسان لهساالتيسام ولايسلتسام مساجسرح السلسسان

پھر تول کے بجائے اسان کالفظ ارشاد فرمایا تا کہ زبان سے طنزیہ اشارہ کو بھی شامل ہواور چونکہ عام ایذاء رسانی انہی دونوں سے ہوتی ہے اس لئے آنکھوں کے اشارے اور پاؤں کے ذکر کوضروری نہیں سمجھا گیاا گرچہوہ بھی مرادین یا یوں کہنا چاہئے کہ 'ید' سے مراد مطلق عمل ہے خواہ وہ کسی بھی جارحہ اور عضوسے ہو۔

اس حدیث پاک میں اور بھی عمدہ نکات اور نفیس ابحاث علاء شار حین نے بیان فر مائی ہیں جو بخاری ومشکلو ق کی شروحات میں دیکھی جاسکتی ہیں ، ہمارے پیش نظریہاں ضروری تشریح واختصار ہے۔

عديث آخر: ـ "من عَيْرَ اخاه بذنب لم يمت حتى يعمله ". (حسن غريب)

جس نے اپنے (اسلامی) بھائی کوکسی گناہ پر عار دِلا یا وہ خف نہیں مرے گااس وقت تک جب تک وہ گناہ نہ کرے۔

امام ترفدگ نے اپ شخ احمد بن منج سے قتل کیا ہے 'فسالموا مدن ذنب قد تساب مدند ''لینی اس گناه پرعار دِلانے کی ممانعت مراد ہے جس سے اس نے تو برکر لی ہو، یہ جھی ممکن ہے کہ احمد سے مرادامام احمد بن خبیل ہو۔

میردوایت اگر چہ بتقری امام ترفدگ منقطع ہے کہ خالد بن معدان کا ساع حضرت معاقی سے عابت نہیں مگر پھر بھی امام ترفدگ نے اس کو صن کہا ہے جس سے معلوم ہوا کہ صحت وضعف کا دارو مدار صرف انصال وانقطاع یارادی کے ضعف و نقابت برنیس بلکہ اس میں خارتی محرکات ودیگر قر ائن و شواہد کو بھی برداوغل ہے۔

اگر کوئی شخص گناہ سے تو بہ کر چکا ہوتو اسے عار دِلا نا بہر حال ممنوع ہے مگر جوشص تو بہ نہ کرر ہا ہوتو اسے اگر کوئی شخص گناہ سے تو بہ کر چکا ہوتو اسے عار دِلا نا بہر حال ممنوع ہے مگر جوشص تو بہ نہ کرر ہا ہوتو اسے گناہ سے دو کئی کوشش ہونی چاہئے جس میں خیرخواہی اور حکمت و نری کھو نے ہوئی چاہئے کیونکہ بغیر خرواہی اور کئی ہے کہ وقتی خواہی کے ابنا نقصان بھی لازی ہے کہ بجب و تکبریار یا کاری بہت ندموم وصف ہے اور بھی بے موقعہ و تختی ایرا یا کاری بہت ندموم وصف ہے اور بھی بے موقعہ و تختی ایسا ہو جس النا نکاتا ہے کہ وہ شخص ضد کرنے لگت ہے اور گناہ کے کام میں مزید آگے جا لگاتا ہے البتہ اگر کوئی شخص ایسا ہو جس کے بارے میں یقین ہو کہ وہ تحزیر یا تعییر سے گناہ چھوڑ د سے گاتو اس صورت میں عار دلا نا بھی جا تر ہے۔ اس کی کے بارے میں یقین ہو کہ وہ تحزیر یا تعییر سے گناہ چھوڑ د سے گاتو اس صورت میں عار دلا نا بھی جا تر ہے۔ اس کی کہا تھوں نی باب ما جاء فی تعظیم المؤمن 'میں بھی گذری ہے ' ابواب البر والصلہ ' میں (دیکھے تشریحات تر ندی

باب

"عن واثلة بن الاسقع قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: الأتظهِر الشّمَاتَةَ لِاحْدِيك فيرحمه الله ويبتليك ". (هذاحديث حسن غريب)

حضرت واثله بن اسقع رضی الله عندفر ماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ارشاد فر مایا: کہتم اسپنے (اسلامی) بھائی (کے غم) پرخوشی کا ظہار مت کروور نہ الله اس پررتم کردیے گااور تخفی (اس میس) مبتلا کردیے گا۔ گا۔

تشرت : قولسه: "الشماتة" رشمن يا مخالف كى مصيبت پرخش ہونے كو كہتے ہيں قوله: "ويبتليك" كيونكرتم نے اس كوحقير مجھ كرخودكو بلندوعالى مجھاتھا جواللہ كو پيندنہيں آيا۔

محتی نے تقریب سے نقل کیا ہے کہ سند میں ''امیۃ بن القاسم'' کے بجائے سیح '' قاسم بن امیہ' ہے حاشیہ قوت المغتذی میں ہے کہ اس حدیث کوسراج الدین قزوین نے موضوع کہا ہے اس طرح ابن جوزیؒ نے بھی اس کوموضوعات میں شار کیا ہے کیونکہ اس میں عمر بن اساعیل ضعیف ہیں تا ہم اس حدیث کی دوسری سند سے عمر بن اساعیل کا تفرختم ہوگیا ہے لہذا حدیث قابل قبول ہے، امام ترفریؒ نے آگے کیول کا تذکرہ فرمایا ہے جس کامقصد کھول شامی اور کھول از دی کے درمیان فرق کرنا ہے۔

قولہ:''ندائم'' فاری کلمہ ہے جس کے معنی''میں نہیں جانتا ہوں'' ہیں کیونکہ بین جمی تھے ابن سعد نے بعض اہل علم سے نقل کیا ہے کہ کھول'' کا بل'' کے رہنے والے تھے۔

باب

"عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :ماأحِبُ الى حكيثُ آحَداً وان لى كذاوكذا". (حسن صحيح)

حضرت عائشہ فرماتی ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: میں پیندنہیں کرتا ہوں کہ میں کسی کی نقل اتاروں اگرچہ مجھے اتجا اتنا (مال) ملے۔

تشریخ: قوله: "حکیت، کسی کام کی نقل کرنا که مثلاً وه یوں چاتا ہے اور مقصداس کی تحقیر اور طنز ہوگو یا پیملی غیبت کے لئے استعال ہوتا ہے۔ قوله: "ولوان لى كذاو كذا" جمله حاليه به ينى مين كى كاعيب نقل كرنا برگز پندنيين كرتا اگر چه اس كه بدله او دنيا كابهت كهدديا جائه -

بيارشادني پاكسلى الله عليه وسلم نے اس وقت فرمايا جب حضرت عائش نے اپنے ہاتھ سے اشاره كركے حضرت صفية كولا كي سى كوظا ہركرنا چا ہا تھا چنا نچروہ خود فرماتی ہيں كہ ہيں نے كہا ''يساد سول الله ان صفية امو أة وقالت بيدها ''اے الله كرسول! صفيه الي عورت ہا دراس كے ساتھ اپنا تھ سے اشاره كي ''تعنى قصيوة ''ينى اشاره سے بيظا ہركرنا چا ہتى تقى كرصفية مكن ہيں يعنی چھوٹے قدى عورت ہيں آپ سلى الله عليه وسلم نے فرمايا: 'لقد مَوْج ب كلمة لومُوْج بهاماء البحول مُوْج "' تم نے الي بات الل كے (اپنى باتوں ميں) كداكراس ميں سمندركا يانى شامل كيا جائے تو وہ بھى شغير ہوجا کے گاليون خراب ہوجا ہے گا۔

اس سے معلوم ہوا کہ کسی کے عیب کی نقل اُ تارنا جا ئزنہیں خصوصاً جب وہ غیرِ اختیاری ہو جہاں تک اختیاری کا تعلق ہے تو اگروہ بطورز جرنقل اتارتا ہے اور اس میں اپنے نفس کا علواور منقول عنہ کا تمسخر مرادنہ ہوتو جا ئز ہے جبکہ اچھے کام کی نقل اتارنا جائز ہے۔

باب

"عن شيخ من اصحاب النبى صلى الله عليه وسلم أراه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: ان المسلم اذاكان يُخالِطُ الناس ويصبرعلى اذاهم خيرمن المسلم الذى لا يُخالِطُ الناس ولا يصبرعلى اذاهم قال ابن ابى عدى كَانَّ شُعبة يرى انه ابن عمر".

نی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کے اصحاب کرام میں سے ایک بزرگ سے مروی ہے (یجی بن وٹاب راوی کہتے ہیں کہ) میں گلات کے میں گلات کے ایک برزگ سے مروی ہے (مرفوع) ہے آپ نے فرمایا: جومسلمان لوگوں میں میل ملاپ رکھتا ہواوران کی ایذاء پر صبر کرتا ہووہ اس مسلمان سے بہتر ہے جونہ لوگوں سے میل جول رکھتا ہواورنہ بی ان کی ایذاؤں پر صبر کرتا ہو۔

تشریخ:۔ان ہزرگ کانام بچیٰ بن وثاب نے ذکرنہیں کیا ہے مگرشعبہ نے کہا کہ شایدوہ ابن عمر ہیں۔ اورابن ملجہ میں بیروایت ابن عمر ہی سے مروی ہے لہذا شعبہ کا گمان سچے ہے۔ قولد: ''اُر ۵'' بضم الہمز قالی اظن، میں سمجھتا ہوں۔ حدیث کامطلب بیہ کہ جو خص لوگوں کے ساتھ رہتا ہوتو اگر چہان کی وجہ سے اس کو تکلیف تو اٹھانی پڑتی ہے مگر اس کی وجہ سے ان کوفائدہ پہنچ رہاہے دوسری بات نیہ ہے کہ اس تکلیف پرصبر کرنا بذات بھی ایک نیکی ہے اس لئے وہ خص علیجدگی اختیار کرنے والے سے افضل ہے جو کسی طرح لوگوں کو خیر نہیں پہنچارہا ہے۔

المستر شد:عرض كرتاب كه يتم اس وقت ب جب لوگول كساته خالطت مين اين دين وغيره كانقصان نه بوتا بهواورلوگول كوفا كده پنچان كى اميد جارى ياباقى بواگريه صورت حال پيدا بهوجائ كه اختلاط محض شربن جائة في مرعز لت شينى افضل ب جس كى تفصيل گذري ب - (د يكهي تشريحات تر فذى ص: ۳۲۱ ج.۳ شرب باب مساجاء فى الرجل "بساب مساجاء فى الرجل يكون فى الفتنة "من الواب الفتن)

صدیث آخر: ـ "إيّا كم وسُوء ذات البين فانهاالحالقة". (صحيح غريب) تم آپي كى ناچاقى سے بچوكيونكه وه موند نے والى ب (دين كو) ـ

امام ترندیؓ نے ''سوء ذات البین'' کی تفسیر عداوت اور اُنفض سے اور حالقہ کی دین کے مونڈ وینے لیعنی صفایا کردینے سے کی ہے۔

عارضۃ الاحوذی میں ہے کہ لوگوں کے آپس کے تعلقات جب اچھے ہوں تو ان کوصلاح کہتے ہیں جبکہ پُر ہے تعلق کوئوء کہاجا تا ہے بشرطیکہ وہ مسلسل اچھے یابُر ہے ہوں گویا کبھی کبھار کی خوش گواری ورنجش پران کا اطلاق نہیں ہوتا۔

المستر شد: عرض کرتا ہے کہ شاید موتڈ نے کا مطلب بیہ ہے کہ آپس کی چپقاش وعداوت سے عبادات متاثر ہوجاتی ہیں اور دلجمعی سے کوئی بھی دین کا منہیں ہوسکتا گویا، یا تو آدمی عبادت کرتا ہی نہیں ہے یا اگر کرتا ہے تو اس میں جان وروحانیت نہیں ہوتی ہے اس طرح آدمی کا دین سے رشتہ تقریباً ٹوٹ جاتا ہے، بی تو جیہ اس لئے کی گئی کہ ہمارے اہل السنة والجماعة کے نزدیک تفر کے علاوہ باقی گنا ہوں سے نیک اعمال آگارت وضا کے نہیں ہوتے ہیں اگر چے معتز لداور این قیم اس کے قائل ہیں۔

حدیث آخر: حضرت ابودرواء فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: کیا میں تمہیں روزے، نماز اور صدقہ سے زیادہ بہترعمل نہ بتاؤں ؟ صحابہ نے فرمایا: کیوں نہیں (یعنی ضرور بتلا کیں) آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: آپس کے اچھے تعلقات ہیں کیونکہ آپس کی چھوٹ مونڈ نے والی ہے۔ (صحیح)

اس کے بعدامام ترمذیؓ نے ایک معلق روایت نقل کی ہے کہ آپ نے فرمایا کہ میں یٹھیں کہتا کہ بیر بالوں کومونڈتی ہے بلکہ دین کا صفایا کرتی ہے۔

اس حدیث میں صیام وقیام وغیرہ سے مرافظی روز ہے، نماز اور صدقات ہیں، البتہ بھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ ایک خص فرائض کا تو پابند ہوتا ہے مگر دوسری جانب وہ قاتل ، چغلخو راورڈ اکو بھی ہوتا ہے، ایسے میں شایدوہ شخص افضل ہو جونمازی تو نہیں مگر حقوق العباد اور اصلاح معاشرہ میں بھر پورکوشش کرتا ہو، واللہ اعلم ۔ (''اصلاح ذات البین''کا ایک مستقل باب ابواب البروالصلة میں گذرا ہے، تشریحات ترندی:ص:۱۹۸ج:۲)

صريث آخر: - "دَبّ اليكم داء الامم قبلكم الحسدو البغضاء هي الحالقة الخ".

تم ہے پہلی امتوں کی بیاری حسداور بغض (نفرت)تم میں سرایت کر چکی ہے۔

وہ مونڈ نے والی ہے میں نہیں کہتا کہ وہ بالوں کو مونڈ تی ہے بلکہ وہ دین کا استیصال کرتی ہے۔ اور اس ذات کی تتم ہے جس کے قبضے میں میری جان ہے ہتم جنت میں داخل نہیں ہوں گے جب تک مؤمن نہ ہوں گے اور مؤمن نہیں بن سکو گے جب تک ایک دوسرے سے محبت نہیں کرو گے اور کیا تہ ہیں نہ بتاؤں وہ چیز جو تہمیں محبت پر جمائے رکھے'' آپس میں سلام کوڑ وہ کے دو'۔ (حسد اور تباغض کی بحث ابواب البروالصلة میں گذری ہے تشریحات :ص: ۱۹۲،۱۹۳ ہے۔

قولسه: "دَبّ بفتح الدال وتشد بدالباء ، سرایت کرنے اور چپ کر چلنے کو کہتے ہیں چونکہ نیکیوں اور برائیوں کے بھی شجرے ہوتے ہیں ان کی جڑیں اور شاخیں باہم ایک دوسرے سے مسلک ہوتی ہیں اس لئے نیکی جالب ہے نیکی کو اور بدی ، بدی کوجنم دیت ہے ، اس لئے جب سلام عام ہوگا تو محبت پیدا ہوگی اور جب محبت پیدا ہوگی تو آپس کی نفرت وعداوت ختم ہوکراس کی جگہ محبت آجائے گی اس طرح ایمان مضبوط اور جنت میں جانے کا ذریعہ بنے گا ، اس کے بر عکس ترک سلام سے بیراری عمارت منہدم ہوگتی ہے کہ بنیاد پکی ہوتو کس بھی وقت حادث پیش آسکتا ہے۔ (تدبر) قال المنذری اسنادہ جید کذافی تحفة الاحوذی۔

باب

"عن ابى بكرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :مامن ذنب اجدرُ ان يُعَجِّلَ الله لَصاحبه العقوبة في الدنيامع مايدّخوله في الآخرة مِن البغي وقطيعة الرحم". (صحيح)

حصرت ابوبکر ڈفرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ کوئی گناہ بنی (بغاوت) اور قطع رحم سے لائق ترنہیں کہ اللہ اس کے مرتکب کوجلد ہی دنیا میں سزادے بمع اس عذاب کے جواس کے لئے آخرت میں جمع کردے۔

تشری : قوله: "مامن ذنب" ذنب کره سیاق فی مین عموم کے لئے ہے یعنی ندکوره دونوں گناہوں کی سزااس اعتبار سے سب سے زیادہ اور قابل ذکر ہے کہ وہ دنیاو آخرت دونوں میں ملتی ہے البتہ اس کے لئے لفظ" اجد "استعال فر مایا ہے جس کے معنی" احسری "کے ہیں یعنی لائق جس کا مطلب ہے کہ ان دونوں گناہوں پر عاجلا و آجلا دونوں سزائیں مرتب ہوتی ہیں لہذایہاں افعل الفضیل کو صرف اسی معنی میں لینا بہتر ہے کیونکہ آخرت میں کفری سزابہت سخت ہے تا ہم وہ باوجود اشد ہونے کے صرف آخرت میں ملتی ہے دنیا میں تو کا فرمزے کرتا ہے۔

قوله: "من البغى" امام كے خلاف خروج اورظلم كوكہتے ہيں، ابن العربی عارضه ميں لکھتے ہيں كه چونكه بغی سے افساد حال ہوتاہے اور قطعية الرحم سوء ذات البين ہے جواشد الفسا دہے اس لئے بي عجلت براكو تقضى ہيں۔

غرض ان دونوں سے حقوق کا ضیاع اور خلق کو ایذ اءرسانی ہوتی ہے جو اللہ تبارک و تعالیٰ کی سخت نار اضگی کا سبب ہیں اس لئے سز ابھی جلد مرتب ہوتی ہے تو جس طرح اصلاح ذات البین اور صلد رحی پر دنیا وی خوش حالی میں نصیب ہوتی ہے اسی طرح ان کی اضداد پر بھی دنیوی واُخروی دونوں سز ائیں مرتب ہوتی ہیں۔ حدیث آخر:۔" حصلتان من کا نتافیہ کتبہ اللہ شاکو اً صابر اً الحے".

دوخوبیال ہیں جس میں وہ پائی جا کیں، اللہ اس کوشکر گذار، صبر کرنے والا لکھے گااور جس میں وہ نہیں ہوں گی اللہ اسے نہ شاکر لکھے گااور نہ ہی صابر، (وہ خوبیال یہ ہیں)(ا) جواہینے وین کے حوالے سے اس کود کھے جواس سے ہوں گی اللہ انے استہار سے اس پرنظر کرے جواس سے کمتر ہوتو اللہ نے اسے جتنی نفسیات کمتر پردی ہے اس پراللہ کاشکر کرے تو اللہ اسے شاکر وصابر لکھتا ہے اور (اس کے ہوتو اللہ نے اسے جتنی نفسیات کمتر پردی ہے اس پراللہ کاشکر کرے تو اللہ اسے شاکر وصابر لکھتا ہے اور (اس کے برکس) جوشی اینے وین میں اس کود یکھے جواس سے کمتر ہواور اپنی دنیا میں اس کود یکھے جواس سے زیادہ (مالدار) ہواور پھر اس پرافسوں کرے جواس کونیوں ملاہے تو اللہ اسے شاکر وصابر نہیں لکھتا۔ (حدیث غریب) اس حدیث میں ایک عمرہ ضابطہ بیان فرمایا کہ چونکہ انسان میں طبعی طور پر مسابقت اور دلیس کا جذبہ پایا

جاتا ہے اس لئے دین میں اپنے ہے آگے والے کی طرف دیکھنا چاہئے تا کہ اعمال کی رفقار اور تیز تر ہوجائے جبکہ دنیا میں اپنے سے پیچھے والے اور نیچے والے کودیکھنا چاہئے تا کہ آ دمی کے پاس جتنا ہے اس پرشکر اوا کرے اور جونہیں ہے اس پرمبر کرے، دوسری بات کہ دنیا میں مسابقت مطلوب ومحموز نہیں ہے اس لئے جب آ دمی آگے والے اور او پروالے کودیکھے گا تو ایک تو ناشکری کرے گا دوسرے وہ اپنی دنیوی تلاش کومزید برصائے گا۔

اس مضمون کواگلی حدیث میں خطاب کے صینے میں بیان فرمایا ہے کہ دنیا میں اپنے سے نچلے کو دیکھوٹو ق والے کو نہ دیکھو کیونکہ بیزیا دہ لائق ہے کہتم اللہ کی نعمت کو تقیر نہ جا نو گے۔

قوله: "لاتنو دروا"ای لاتحقروا - چنانچ تجربده مشاہده بھی بی ہے کہ جب آدی سلاء کے پاس بیشنے یا اپنا بیشنا ہے تواپنا عمل معمولی نظر آتا ہے اور زیادہ عمل کرنے کا جذبہ پیدا ہوتا ہے۔ جبکہ فساق کے پاس بیشنے یا اپنا موازندان سے کرنے سے جب پیدا ہوتا ہے کہ میراعمل توان سے بہت اچھا ہے، ای طرح جب آدی غریبوں کے پاس بیشنا ہے تواپی و نیوی حالت پراللہ کاشکر کرتا ہے۔ جبکہ امیر لوگوں کے پاس جانے اور بیشنے سے مایوی اور ناشکری جنم لیتی ہے، چنانچ آج امت کی اکثریت نے جب یہ نے نظر انداز کردیا تو دنیا کی ریس میں لگ تی اور دین سے پیچے جانے گی۔

باب آخر: حضرت حظاء اُسيديٌّ ہے دوایت ہے جورسول الله صلی الله علیہ وسلی ہیں ہے سے آخر: است مسر ہابی بک و هوید کی النے ''فرماتے ہیں کہ وہ گذر ہالو بکر ﷺ کی ہو دوایت ہیں کہ وہ گذر ہالو بکر ﷺ کے باس دراں حالیہ وہ الاحظالہ) رور ہے تھے تو ابو بکر ؓ نے بوچھا حظاء تہمیں کیا ہوا؟ انہوں نے جواب دیا کہ حظالہ تو منافق ہوگیا اے ابو بکر! کہ جب ہم رسول الله صلی الله علیہ و سلم کے پاس ہوتے ہیں اور وہ ہمیں دوزخ اور جنت کی یا ددلاتے ہیں تو ابیا لگتا ہے جیسے ہم آئھوں ہے دیکھتے ہیں (لیکن) پھر جب ہم ان کے پاس سے لوٹے ہیں تو اپنی ہیدوں اور ابیا لگتا ہے جیسے ہم آئھوں سے دیکھتے ہیں اور بہت ساری باتوں (لیمی نصحتوں اور کیفیات) کو بحول کام کاخ (کی چیزوں) میں مشغول ہوجاتے ہیں اور بہت ساری باتوں (لیمی نصحتوں اور کیفیات) کو بحول جاتے ہیں ، ابو بکر ٹے فرمایا بکند اہمارا بھی یہی حال ہے چلو ہمار ہے ساتھ رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے پاس ، جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ان کود یکھا تو چھا اے جنانچہ ہم آپ سلی الله علیہ وسلم نے باس کے پاس جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ان کود یکھا تو پو چھا اے حظالہ تمہیں کیا ہوا؟ انہوں نے کہا کہ اے اللہ کے رسول! حظلہ منافق ہوگیا ہے، کیونکہ جب ہم آپ کے پاس ہوتے ہیں تو گویا ہم آئکھوں سے دیکھر ہو ہوتے ہیں گور جب ہم آپ کی پار دینا کے کام کاخ (کی اشیام) میں مشغول ہوجاتے ہیں تو ای بی تو یوں اور (دنیا کے) کام کاخ (کی اشیام) میں مشغول ہوجاتے ہیں تو ایک بار کام کاخ (کی اشیام) میں مشغول ہوجاتے ہیں واپس (اپ گھروں کو) جاتے ہیں تو ای بی بویوں اور (دنیا کے) کام کاخ (کی اشیام) میں مشغول ہوجاتے ہیں واپس (اپ گھروں کو) جاتے ہیں تو ایک ہوں اور دنیا کے) کام کاخ (کی اشیام) میں مشغول ہوجاتے ہیں واپس واپس کی کیا میں مشغول ہوجاتے ہیں واپس کی کی دولا کے ایک کی کی دولا کے بی تو یوں اور دنیا کے) کام کاخ (کی اشیام) میں مشغول ہوجاتے ہیں واپس کو کی کی دولا کے بی کو کی دیا ہو ہوں کی کو کی دولوں کی کو کی کو کی کو کی کو کی کی دولوں کے بی کو کی کی کو کو کی کو کو کی کو کو کو کی کو کی کو کی کو

ادر بہت ساری باتوں کو بھول جاتے ہیں (یعنی وہ سابقہ کیفیت باتی نہیں رہتی) پس رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اگرتم اس حالت پر جس کے ساتھ میر ہے پاس سے اٹھتے ہو ہمیشہ باقی رہو، تو فرشتے مصافحہ کریں تم سے تمہاری مجلسوں میں اور تمہارے بچھونوں پر ، اور تمہارے راستوں میں ولیکن اے حظلہ! کوئی گھڑی کیسی ہوتی ہے اور کوئی کیسی!۔ (حسن صبحے)

قوله: "كُتّاب" بضم الكاف وتشديد التاء كاتبين وى كى تعدادتقريباً بار كقى

قوله: "نافق حنظله" یعی نفاق کا خدشہ واندیشہ پیدا ہوا اور اندیشے کی وجہ انہوں نے خود ذکر فر مائی ہے کہ جب ہم آپ کے پاس ہوتے ہیں تو ہماری حالت کچھ الی ہوتی ہے جیسے ہم گویا جنت و دوز نے کو رو ہر و دکھتے ہیں گر جب بہاں سے اٹھ کر چلے جاتے ہیں تو وہ کیفیت باتی نہیں رہتی بلکہ ہم دنیا کی چیز وں جیسے ہویوں اور کھیتوں وغیرہ میں مشغول ہوجاتے ہیں ، حالانکہ آپ کی خدمت میں حاضری کے وقت ان چیز وں میں دل ہر گرنہیں لگتا، چونکہ بیتو گویا دوڑ نی ہوئی اس لئے نفاق کا گمان ہوتا ہے، اس کے جواب میں آپ نے فر مایا کہ یہ نفاق نہیں ہے بلکہ دلوں کا حال کچھ ایسا ہی ہوتا ہے کہ بعض اوقات میں صاف تھرے ہوجاتے ہیں اور بعض اوقات میں ساف تھرے ہوجاتے ہیں اور بعض اوقات میں گھ دنیا وی خواہشات و خیالات ان میں داخل ہوجاتے ہیں اگروہ ہمیشہ دنیا کی آمیزش سے خالی اوقات میں ہے چھڑتو آوی فرشتہ یا فرشتہ صفت بن جائے گاوہ انسان کب باقی رہے گا، غرض بینفاق نہیں ہے بلکہ قلب کے لواز مات میں سے ہے چنا نچہ ای بناء پراسے قلب کہتے ہیں کہ انقلابات کی زدمیں رہتا ہے، اس لئے آخرت کا تذکرہ بکثرت ہونا چا ہے۔

حدیث آخر: حضرت انس سے مروی ہے کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: کوئی تم میں سے (کامل) مؤمن نہیں بن سکتا یہاں تک کہ وہ اپنے (اسلامی) بھائی کے لئے وہ پیند کرے جوابی لئے پیند کرتا ہے۔ (صبح)

یعنی آ دمی جتناا پے بارے میں خیرخواہ ہوتا ہے اتنائی ہمدرداور خیرخواہ ہونا اپنے بھائی کے لئے لازی ہے جس کی نشانی یہ ہوگ کہ وہ جو چیز اپنے لئے پسند کرتا ہے بعینہ وہی چیز اپنے اسلامی بھائی کے لئے بھی پسند کر بھت اسلامی بھائی کے لئے بھی پسند کر بے توابیا خص کامل مؤمن ہے یعنی بیفرض کیا جائے کہ اگر میں اس آ دمی کی جگہ ہوتا اور میں اس جیسے ہوتا تو میں اپنے لئے کیا پسند کر تا توجب وہی چیز دوسروں کے لئے پسند کر بے گا تو وہ یقینا ان کے ساتھ خیرخواہی کے معیار پر پورا اُر نے میں کامیاب ہوگا اور نتیجہ میں اس کا ایمان کامل شار ہوگا۔

حديث آخر: ــ "ياغلام انى أُعَلِّمُكَ كلمات، احفظ الله يَحفَظُكَ احفظ اللهَ تجده يُحفظ اللهَ تجده يُحاهَكَ الخ".

حضرت عبداللہ بن عبال سے روایت ہے فرمائے ہیں کہ ایک دن میں نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے پیچے (سواری پر) تھاتو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: اے لڑے! میں تجھے چند کلمات بتلا تا ہوں" تم اللہ (کے حقوق واحکام) کی حفاظت کیا کروہ تیری حفاظت کرے گائم اللہ (کے حقوق واحکام) کی حفاظت کروہم اس کو ایپ روبروپاؤگے اور جب سوال کرو تو اللہ بی سے مدد ما گلواور جب مدد ما گلوتو صرف اللہ بی سے مدد ما گلواور جان لوکہ اگر سب لوگ جمع ہوجا کیں اس پر تا کہ تہمیں نفع پہنچا کیں تو وہ ہر گرنچھ کونفع نہ پہنچا سکیں کے مرصرف اثنا اللہ نے تیرے لئے لکھا ہے۔ اور اگر سب اس پر مجتمع ہوجا کیں تا کہ تجھے نقصان پہنچا کیں کسی چیز سے تو ہر گرنچھ کھونا سے بھی اٹھا لیے گئے ہیں اور صحیف نہیں پہنچا سکیں گئے جی اور صحیف خسک ہو گئے ہیں۔ (حسن مجھے)

قوله:"احفظ الله" دونول جگهول میں مرا داللہ کے ادامر دنوائی پڑمل پیرا ہونا اور اللہ کی رضا تلاش کرنا اور تقوی کے تقاضوں کو پورا کرنا ہے۔

قوله: "يحفظ ك الله "يعنى الله ونياوا خرت من تجمِّع مصائب سے بيائى ا

قول د: "تجاهک" بروزن کتاب جبکه بعض نے تاء کاضمہ بھی جائز مانا ہے چونکہ اللہ تبارک و تعالی جہت اور سمت سے پاک ہاں گئے مطلب یہ ہے کہ اللہ تبارک و تعالی کی مدوہر وقت تیرے ساتھ شامل حال رہے گی۔ چونکہ مسلمان ایک مسافر کی طرح ہوتا ہے اور مسافر کی نظر آ کے منزل پر ہوتی ہے اس لئے یہاں مدد ومعیت کو تجاہ سے تعبیر کیا گویا کامیا بی تیرے مقابل سامنے ہوگی۔

قوله: "دفعت الاقلام وجفّت الصحف" كنايه بعدم تغير سي يعنى جو يهي تيريح من من مقدر بها سي مقدر بي المعتاب المعتاب من تبديلي موسكتي بها تب الكين جب كاتب لكيف سے فارغ موتا بها كا غذسو كھ جاتا ہاں لئے عدم تبديل كو جفاف يعنى سوكف سے تجير كيا۔

صديث آخر: - "قال رجل بارسول الله اعقلها واتوكل ؟ او اطلقها وَ اَتُوكل؟ قال اعقلها و تَوكل ؟ قال اعتمال اعقلها و تَوكل ؟ قال المناطقة المن

ا یک شخص نے یو چھاا ہے اللہ کے رسول! کیااس (سواری) کو باندھوں اور تو کل کروں یا آزاد چھوڑ کر

توكل كرون؟ آب نے فرمایا با ندمواورتوكل كروا۔

سائل کامقعدیه تفاکه اسباب کے ساتھ توکل کروں یا بغیراسباب کے؟ آپ صلی الله علیه وسلم نے جواب دیا کہ اسباب افتیار کرو گرسبب کومسبب میں مؤثر نہ مانو بلکه اعتاد بہر حال الله عزوجل پر کرو ، اس طرح اسباب افتیار کرنا توکل کے منافی نہیں ، اس کی وضاحت پہلے گذری ہے۔ (دیکھے تشریحات تر ندی : ص: ۳۳ ساب افتیار کرنا توکل کے منافی نہیں ، اس کی وضاحت پہلے گذری ہے۔ (دیکھے تشریحات تر ندی : ۳۳ ساب افتیار کرنا تو کل کے منافی نہیں ، اس کی وضاحت پہلے گذری ہے۔ (دیکھے تشریحات تر ندی : ۳۳ ساب کراھیۃ البول فی جند "دباب ماجاء فی الدواء والحد علیہ "(ابواب الطب) وص: ۱۳۹ ایوار ناواب الطبارة)۔

صديث آخر: "عن ابن النحوراء السعدى قال قلت لحسن بن على: ما حَفِظتَ مِن رسول الله صلى الله عليه وسلم "دع ما يُرسول الله صلى الله عليه وسلم "دع ما يُريبُكَ الني ما لايريبك "فان الصدق طمانية وان الكذب رِيبة". (وفي الحديث قصة). (صحيح)

ابوالحوراء سعدی فرماتے ہیں کہ میں نے حسن بن علی سے پوچھا کہ آپ نے رسول الله سلی الله علیہ وسلم سے کیا یاد کیا ہے؟ انہوں نے فرمایا کہ میں نے رسول الله سلی الله علیہ وسلم سے یہ یاد کیا ہے کہ: جوچیز تجھے شک میں ڈالے اسے چھوڑ کراس چیز کی طرف منتقل ہوجا وجو تجھے شک میں نہ ڈالتی ہو! اس لئے کہ سچائی سے دل میں الممینان حاصل ہوتا ہے ادر جھوٹ سے بے چینی پیدا ہوتی ہے۔

حفرت شاہ صاحبؓ العرف الشذى ميں فرماتے ہيں كه شافعيہ نے قنوت الوتر ميں ابوالحوراء كى روايت عن الحسن بن على پرانقطاع كاجواعتراض كياہے وہ سيح نہيں كيونكہ امام ترذكؓ نے اس سند پر يہاں صحت كاسم لگاياہ۔

حضرت منگونگ فرماتے ہیں کہ حضرت حسن کی مرادیٹیس کہ صرف یہی ایک بات مجھے یادہے وہی بلکہ مطلب بیہے کہ مجھے آپ کا بیفر مان بھی یادہے۔

قسولسه: "دع مسايسويبك" اس يس يا وكافتح وضمد دونول جائز بيس ريب بفتح الراء سي بمعنى شك ورد دك ہے جبك وان الكذب ريبة" ميس را كسور ہے بمعنی قلق واضطراب كے۔

مدیث پاک کامطلب بیہ کہ بے غبارا ممال سے دل مطمئن رہتا ہے جبکہ مظکوک کاموں سے دل بے جین ہوجاتا ہے اور دوہ کام کرنے چاہیے جن بے جین ہوجاتا ہے ابداان افعال سے بچناچاہیے جن سے مؤمن کادل گھراتا ہواوروہ کام کرنے چاہیے جن

ي بحيثيت مسلمان دل خوش ومطمئن ربتا مو-

قول : "وفى الحديث قصة" يقصد منداحدين بكر حضرت من ترات بين كريس ني منداحد من بكر حضرت من ترات بين كريس ني مدقات كي مجودول سے ايك مجود لے كرمنديں والى تورسول الله صلى الله عليه وسلم ني اسے لعاب كے ساتھ فكال مجينك دياباتى مجودوں ميں ايك خض نے كہا اگريه (بچه) كھا ليتے تو كيا حرج تھا آپ نے فرمايا ہم صدقہ نہيں كھاتے قال و كان يقول "دع مايويبك النے"۔

حدیث آخر: حضرت جابر ففرهاتے ہیں کہ نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں ایک فض کا تذکرہ کیا گیاعبادت وریاضت کے حوالے سے اور دوسرے کا ذکرورع (تقویٰ) کے حوالے سے کیا گیاہ تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ورع کے برابرکوئی چیز (عبادت وخصلت) نبیس ہوسکتی۔ (غریب)

قوله: "واجتهاد" ليني عبادت من تخت بحث كرتا بــقوله: "بِرِعة" رعة بكسر الراء بِوَدْعِ ال

قوله: "لا یُعدَلُ بِالْوِعة" لین لا یعدل بالوعة شی البذامفول الم یسم فاعلد مقدر ہے جوکش کے ہے۔ پس مطلب یہ ہوا کہ ورح اور تقوی کے ساتھ کی چیز کو برابر ومساوی نہیں کیا جاسکتا ، یہ بھی ہوسکتا ہے کہ بعدل بیل مطلب یہ ہوا کہ ورح اور تقوی کے ساوی نہیں کیا جاسکتا کیونکہ ورح بیل بیل مخیرا جہادی طرف لوئی ہولیتی اجتهاد فی العبادات کو ورح وتقوی کے مساوی نہیں کیا جاسکتا کیونکہ ورح بیل حرام ومشتبراشیاء سے اجتناب کیا جاتا ہے جبکہ بوے سے بردا عبادت گذار بھی بھی عدم ورع کی وجہ سے حرام بیل جتلا ہوجاتا ہے حالانکہ وفع معنرت جلب منفعت پر مقدم ورائ ہے یعنی ایسے دوآ میوں بیل سے جوفر اکفش کی جتلا ہوجاتا ہے حالانکہ وفع معنرت جلب منفعت پر مقدم ورائ ہے یعنی ایسے دوآ میوں بیل سے جوفر اکفش کی پابندی کے بعدا یک نظی عبادت میں بہت زیادہ آگے ہوا وردو سراتقوی لیمن محربات سے اجتناب بیل بہتی افسل ہا بھی تقیم آجا ہے بنا بر بر تقدیر "لا یعدل" نظل جمول ہے۔

حدیث آخر: - "من اکل طیباً و عمل فی سُفید امِن الناس بو انقه دَخَلَ الجنة النے".

جس نے حلال کھایا اور سنت کے مطابق عمل کیا اور لوگ اس کے شرسے حفوظ رہے تو وہ فخص جنت میں جائے گا، پس ایک فخص نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! ایسے لوگ تو اس زمانہ میں بہت ہیں؟ آپ نے فرمایا:
میرے بعد کے زمانوں میں بھی ہوں گے۔ (غریب)

لین جس کےمعاملات اورعبادات شرع شریف کےمطابق ہوں اوروہ مخص ای مالت طبیبہ پرزندگی

بر کرتا ہوا مرجائے تو بغیر عذاب کے جنت میں جائے گا۔

سائل کے سوال کا ایک مطلب یہ ہوسکتا ہے کہ بطور شکر اس نے کہا کہ الحمد للدا یے لوگ تو آج بکثرت پائے جاتے ہیں اور جواب کا مقصد بھی اظہار شکر ہے کہ الحمد للدامت کے آنے والے لوگوں میں بھی ایسے لوگ ہوں گے۔

دوسرامطلب بیہوسکتا ہے کہ آج کل توالیے لوگ بہت ہیں تو کیا آنے والے وقت میں بھی ایسے لوگ ہوں گے؟ آپ نے فرمایا کہ ہاں اس امت کے ہردور میں ایسے افراد ہوں گے اگر چہ تُر ب زمانہ میں زیادہ اور اُعدِ زمانہ میں قلیل ہوں گے لیکن مجموعی اعتبار سے امت ایسے لوگوں سے خالی نہیں ہوگی۔

قوله: "بوانقه" بائقة كى جمع بمعنى مصيبت كے يهال بمعنى شركے ہے۔

صريت آخر: "من اعطىٰ لِله ومَنعَ لِله وَاحَبّ لِله واَبغَضَ لِله واَنكح الله فقداستكمل الله عند الله عند المعانه ". (حديث منكر اوحسن وصححه الحاكم)

جس نے اللہ ہی کے لئے دیا اور اللہ ہی کے لئے روکا اور اللہ ہی کے لئے محبت کی اور اللہ ہی کے لئے نفرت کی اور اللہ ہی اللہ ہی کے لئے نفرت کی اور اللہ ہی کے لئے (اپنی بیٹی، بہن وغیرہ کی) شادی کردی تو اس نے اپنا ایمان کمل کردیا۔

یعنی جس آدمی کوان امور میں اللہ کی رضا کے سواکوئی لا کج اور طبع نہ ہوبلکہ محض اللہ کی خوشنودی کے حصول کی غرض سے بیسب کام کرتا ہوتو چونکہ بیکام وہی کرسکتا ہے جس پرلٹہیت کاغلبہ ہواس لئے اس مخض کاایمان کامل واکمل ایمان ہے۔

اس میں شک نہیں کہ بیامور بغیر کسی لالج کے آج نہ صرف مشکل ہیں بلکہ تقریباً ناممکن ہیں ممکن ہے کہ ایسے لوگ آج بھی پائے جاتے ہوں جو صرف اللہ کے لئے بات کرتے ہوں اور کام کرتے ہوں لیکن جب آز مائش کی گھڑی آتی ہے تو اکثریت فیل ہوجاتی ہے اللہ ہمیں ثابت قدم رکھے۔ آمین

ابواب حيفة الجنة

جنت کے احوال کا تذکرہ

باب ماجاء في صفة شجر الجنة

(جنت کے درختوں کے احوال کاباب)

"عن ابى سعيدالحدرى عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: فى الجنة شَجَرَةٌ يسير الراكب فى ظلها مائة عام لايقطعهاقال وذالك "الظل الممدود". (حديث صحيح رواه مسلم ص: ٣٤٨ ج: ٢)

حفرت ابوسعیدخدری سے مروی ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جنت میں ایک ایسادرخت ہے کہ سے کہ نبیط کی ایک ایسادرخت ہے کہ سواراس کے سامیہ میں سور100 سال تک جاتارہے اسے ختم (عبور) نبیس کرسکے گافر مایا میڈل محدود (طویل سامیہ) ہے۔

قوله: "فی البحنة" ج،ن، اوه میں فرصکناور چھپانے کے معنی پائے جاتے ہیں۔ چونکہ جنت کے اشجار وہاغات میں آدمی جھپ جاتا ہے جیسے گھنے درختوں میں اس لئے اسے جنت کہتے ہیں اور اس لئے بھی کہ وہ ونیا سے نظر نہیں آتی بلکہ بمیشہ دنیا والوں سے اوجھل رہتی ہے۔ اگر چہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے کئی مرتبہ اس کا مشاہدہ فرمایا اور اہل البنة والجماعة کے نزدیک جنت اور دوزخ دونوں حالاً موجود ہیں اس بارے میں معزلہ اور خصوصاً جہائی نے جواختلاف کیا ہے وہ شرح عقائد میں علامہ نے مدلل انداز سے مستر دکیا ہے، پھر جنت چونکہ کیمارگی نعتوں اور لذتوں میں جنتی کو چھپاتی ہے اس لئے بھی اس کو جنت کہتے ہیں کیونکہ فعلة وزن مرة کے معنی میں آتا ہے۔ نیز جنت کے درخت زمین کو چھپاتے ہیں۔ (تدبر)

عارضة الاحوذى من ہے كہ چنتوں كى تعدادچارہے: دوكے برتن وغيره سونے كے بين جبكدووكے برتن وظروف چائدى كے بين جبكدووكے برتن وظروف چائدى كے بين قبال الله تعالى: "ولسمن خاف مقام ربه جنتان" وقال : "ومن دونهما جنتان" جبكدان كة محدورازے بين "وقيل هى سبع جنات"، پھر جولوگ سات جنتوں كة اكل بين وه

سات آسانوں کوئی جنات مخمراتے ہیں مگر بیفلط ہے بلکہ جنات ساوات کے اقطار واطراف سے خارج ہیں جن کی چھست رحمٰن کاعرش ہے خصوصاً جنت الفردوس کی۔

پھر منداحمہ میں ہے کہ جنت کے آٹھ دروازوں میں سے صرف ایک درواز وہاب التوبة کھلاہے باتی سب بند ہیں۔ باب التوبة بھی سورج کے مغرب سے طلوع ہونے کے ساتھ بند ہوجائے گا، دوزخ کے سات دروازے دراصل اس کے سات درج ہیں۔ کذائی عارضة الاحوذی۔ ہوسکتاہے کہ ہر طبقے کا درواز والگ ہو۔

قوله: "شبعوة" ابن جوز گفرماتے بین کدیرطوبی درخت ہمکن ہے کہ ہردرخت اتا کھیلا ہوا ہو۔

قوله: "فی ظلها" چونکہ جنت میں سورج نہیں اس لئے وہ سایدو ہاں نہیں ہوگا جو یہاں دنیا میں معروف ہے بلکہ
صح سورج کے طلوع ہونے سے پہلے اسفار کے بعد جیسا وقت ہوگالہذا یہاں ایک گونہ تشید اور تعت ولذت مراد
ہے کہ جس طرح گرم علاقوں میں ساید داردرخت کے نیچا یک راحت محسوس ہوتی ہے اس طرح اس درخت کے
تحت ایک لطف محسوس ہوگا گرچہ وہ لطف دنیاوی سایہ سے بے شار درجہ اعلیٰ ہوگا، یہ بھی ہوسکتا ہے کہ سایہ سے
مراد پھیلا کہویعنی وہ درخت ہر طرف اتنا پھیلا ہوا ہوگا کہ گھوڑ ہے پرسوار بھی اگر اسے اخیر تک دیکھنا چاہے تو سو
سال میں بھی نہیں دیکھ سے گا پھراس روایت کے اخیر میں اس آیت کی طرف اشارہ فرمایا جوسورہ واقعہ میں ہے
"وظل معدود" نہیں ہیں۔
"وظل معدود" نہیں ہیں۔

صريث آخر: - "مافى الجنة شجرة إلاوساقهامن ذهب ". (غريب حسن) جنت مين كوئى درخت ايرانبين جس كى شاخ (تنًا) سونے كى ندبو۔

قوله: "ساقها" بعض روایات میں "جدوعهامن ذهب وفروعهامن زَبَر جَدِ ولُؤلُؤءِ" آیا ہے لینی جنت کے درختوں کے سے سونے کے اور شاخیس زبر جداور موتیوں کی ہوں گی، جس سے معلوم ہوتا ہے کہ جنت کے سارے درخت ایک طرز آورایک ہی رنگ کے نہیں بلکہ مختلف النوع ومختلف اللون ہیں جس سے باغات کی خوبصورتی مزید بردھ جاتی ہے، پھر جب ہوا چلے گی توبیشاخیس بجنے آئیس گی جن کی آواز آئی سُر یلی اور خوبصورت ہوگی کہ سننے والوں نے ایسی لذیذ آواز بھی نہیں سنی ہوگی للمذاوہ لوگ خسنِ منظر کے ساتھ حسن صوت شریعی لطف اندوز ہوں گے۔

باب ماجاء في صفة الجنة ونعيمها

(جنت اوراس كي نعتول كاحوال كابيان)

حضرت الا بریرہ رضی اللہ عنظر ماتے ہیں کہ ہم (صحابہ کرائم) نے عرض کیا کہ اے اللہ کے رسول! ہمارا بیعال کیوں ہے کہ جب ہم آپ کے پاس ہوتے ہیں تو ہمارے دل زم رہتے ہیں اور دنیا سے بذار ہوتے ہیں اور ہم المل آخرت سے ہوتے ہیں گر جب ہم آپ کے پاس سے نکل جاتے ہیں اور گھر والوں کے ساتھ مشخول ہوجاتے ہیں اور اپنے بیوں کو (پیاروعیت کرکے) سو گھتے ہیں، تو ہم اپنے دلوں کو متغیر پاتے ہیں (پینی سابقہ حالت سے قتلف) پس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا اگرتم ای طرح ہوتے جب تم میرے پاس سے نکلتے ہوا ورتم اپنی ای حالت پرقائم رہتے تو ضرور تم سے فرشتے تہارے گھروں میں ملتے اورا گرتم گناہ نہ کروتو البت اللہ دوسری مخلوق (تہارے سول) پیدا فرما کیوں کے تا کہ وہ گناہ کرے اور اللہ ان کے گناہوں کو معاف کریں (پینی محض اپنے رقم سے یاان کی تو بہ کی بدولت) فرماتے ہیں کہ ہیں نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! مخلوق (انبان) کی جزے ہیں ہی ہی ہے اپنی (نطفہ) سے ایس نے پوچھاجنت کی بناہ (عمارت) کس چیز سے پیدا کی گئی ہے؟ آپ نے فرمایا پانی (نطفہ) سے ایس نے پوچھاجنت کی بناہ (عمارت) کس چیز کے ہیدا کی گئی ہے؟ آپ نے فرمایا پانی (نطفہ) سے ایس نے بوچھاجنت کی بناہ (عمارت) کس چیز کی ہے؟ (پھرسے بنے ہے یاکسی اور چیز سے) آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ایک اینٹ عیادی کی ہے اور کین کی ہے اور کیز سے بیدا کی گئی ہے باکسی اور چیز سے) آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ایک اینٹ عیادی کی ہے اور کی ہے والے کی کے اور کیا کہ کی ہے اور کیا ہوں کی کے اور کی ہے والے کیا کہ کی اور چیز سے کا کیا کی کیا کی کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کو کیا کہ کو کیا کہ کو کیا کیا کہ کیا کہ کر کیا کہ کو کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کور کیا کی کور کیا کہ کور کیا کہ کور کیا کہ کور کیا کہ کور کیا کیا کہ کور کیا کور کیا کہ کور کیا کہ کور کور کور کور کیا کہ کور کیا کور کیا کہ کور کور کی کور کیا کہ کور کیا کور کور کیا کور کی کور کیا کہ کور کیا کہ کور

ایک سونے کی، جبکہ اس کا گاراعمہ مبک والی کستوری کاہے، اور کنگریاں اس کی موتی اور یا قوت ہیں (لیمن خوبصورتی اورصفائی میں) اورمٹی اس کی زعفران ہے (لیمن زردو خوشبودارہے) جواس میں داخل ہوگاوہ خوش باش رہے گااور ہمیشہ (زیمہ) رہے گا، مرے گانہیں نہان کے کپڑے خوش باش رہے گااور ہمیشہ (زیمہ) رہے گا، مرے گانہیں نہان کے کپڑے کہرانے (پوسیدہ) ہوں گے اور نہ ہی ان کی جوانی ختم (یا کم) ہوگی پھرآپ نے فرمایا تین (لوگ) ایسے ہیں جن کی وعار فہیں کی جاتی (ا) عادل بادشاہ (۲) روزہ دار جب روزہ کھولتا ہے (۳) اورمظلوم کی دعا جسے اللہ بادلوں کے دوروازے کھول دینے جاتے ہیں اور اللہ تبارک وتعالی فرماتے ہیں میری عزت کی فتم ہے کہ میں ضرور تیری مدکروں گا گرچہ کچھ دیر کے بعد کروں۔

قوله: "وشمسمنا او لادنا" ظاہری معنی پر بھی محمول کر سکتے ہیں کیونکہ چھوٹے بچوں کی اپنی مخصوص خوشبوہوتی ہے جبکہ ان کی مائیں ان کو معطرر کھنے کا اہتمام بھی کرتی ہیں تاہم یہ پیارومجبت سے کنایہ بھی ہوسکتا ہے، حدیث کے اس مکڑے کا مطلب وہی ہے جو حصرت حظلہ اُسیدی کی حدیث میں عفریب گذراہے فلانعیدہ۔

قوله: "ولولم تذنبوالَجَاء الله بحلق جدیدالنے"اس کا بیمطلب ہرگزنہیں کہ نبی پاکسلی الله علیہ وسلم صحابہ کرام کی گناہوں پرہمت افزائی کرناچاہتے ہیں بلکہ مطلب یہ ہے کہ ایک طرف تمہاری جبلت وفطرت کچھاس طرح ہے، کہم ایک حالت پرنہیں رہ سکتے ہواوردوسری طرف الله تبارک وتعالیٰ کی صفات ہیں سے عنوودرگزر کے مظاہر کے لئے ایک ایک مخلوق کا ہونا بھی ضروری ہے جوان صفات کا مظہر بن سکے اس لئے کہ جس طرح اللہ کو یہ بات پہند ہے، کہ اس کی ممل اطاعت وفرما نبرداری کی جائے اورسرمواس کی نافرمانی نہ کی جائے تواس طرح اللہ کو یہ بات پند ہے، کہ اس کی ممل اطاعت وفرما نبرداری کی جائے اورسرمواس کی نافرمانی نہ کی جائے تواس طرح اس کو یہ بھی پند ہے کہ وہ کسی گنہگار کی بخشش فرمادیں للہذااگرتم سے گناہ نہ ہوجائے تو کوئی اور مخلوق آجائے گی ۔ اور یہی وجہ ہے کہ فرشتوں کے ہوتے اللہ نے انسان کو پیدا فرمایا تواگرتم فرشتوں کے ہوتے اللہ نے انسان کو پیدا فرمایا تواگرتم فرشتوں کے ہوئے اللہ نے انسان کو پیدا فرمایا تواگرتم فرشتوں کے مور کے اللہ نے انسان کو پیدا فرمایا تواگرتم فرشتوں کے ہوئے اللہ نے انسان کو پیدا فرمایا تواگرتم فرشتوں کے ہوئے اللہ نے الکم "ای اَبقیتم علیٰ حالکم"ای اَبقیتم علیٰ حالکم "علی ھذا کلام میں تکرانہیں۔ (تدبر)

قوله: "مِم خلق المحلق "جب حضرت الوجرية في سابقه جواب سے بھانپ ليا كه كناه كرنا كويا انسان كے ساتھ لازم ہے، تو انہوں نے بيجانے كى كوشش كى كه آيا بيانسانى طبيعت كا نقاضا ہے يا ايك امر عارض وطارى كى وجہ سے ہے۔ لہذا يہاں سوال انسان كے بارے ميں ہے اور جواب كا مطلب بيہ كه كمناه كرناطبى عمل ہے اورانسانی مزاج وتقاضوں کی تبدیلی بھی طبعی ہے کیونکہ اس کی اصل پانی ہے اورانسانی نطفہ ایک طرف مختلف النوع اشیاء سے بنتا ہے اور دوسری طرف ایک حالت پڑہیں رہتا۔

قوله: "و دعوة السعظلوم يرفعها فوق الغمام النخ" كناييب مرعت قوليت سے قوله: "ليس اسنده بذالك القوى" يعنى يه تفصيلى روايت متصل فيل ہے اور مرسل بھى ہے اور چونكه يروايت وراصل چارا صاديث سے مركب ہے كما فى تحفة الاحوذى اس لئے كہاجائے گاكه يه تمم مجموى روايت كا ہے، پس السكا يہلا جزء "مالنا النخ "منداحم ميں ہے، دوسراجزء" ولمولم تذنبوا النخ "مسلم ميں ہے تيسراجزء" مم خسلتى السخسلتى "امام احمد، دارى، براراورام طرانى نے ذكركيا ہے، اور چوتھا جزء يعنى "فسلات النخ" منداحم دوارى، براراورام طرانى نے ذكركيا ہے، اور چوتھا جزء يعنى "فسلات النخ" منداحم دوارى منداحم دوارى منداحم دوارى منداحم دوارى منداحم دوارى منداحم دوارى مندكي نے بھى دوات ميں ذكر فرمايا ہے۔ كذا فى التحم عن التر غيب دالتر حيب)

باب ماجاء في صِفة غُرَف الجنة

(جنت کے بالا خانوں کے احوال کاباب)

"عن على قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان فى الجنة لَغُرَفاً يُرى ظهورها من بطونها وبطونهامن ظهورها، فقام اليه اعرابى فقال: لمن هى يانبى الله؟ قال: هى لمن اطَابَ الكلام واَطَعَمَ الطعام وَاَدَامَ الصيام وصلى لِلله باليل والناس نيام!" (حديث غريب) (احرجه احمدوابن حبان فى صحيحه)

حضرت علی سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا جنت میں ایسے بالا خانے ہیں جن کا بیرونی منظراندرسے دکھائی دے گا اوراندر کا باہرسے نظرائے گا، پس ایک اعرابی نے کھڑے ہوکر پوچھا اے اللہ کے رسول! یہ س کے لئے ہیں؟ آپ نے فرمایا جو (حق گوئی میں) شیریں گفتگو کرے اور کھا تا کھلائے اور کھڑت سے روزے رکھے اور دات کونما زیڑھے جب لوگ سور ہے ہوں۔

(ال حديث كى تشريح ابواب البروالصله مين گذرى ہے، د يكھئے تشريحات ترفدى بص٢٥٣ ج:٢ "باب ماجاء فى قول المعروف")

حديث آخر: ــ "ان في الجنة جنتين من فضة انيتهما ومافيهما الخ".

بے شک جنت میں دوباغ ایسے ہیں کران کے برتن اور جو کھوان میں ہیں سب جا ندی کے ہیں اور

دوہاغ ایسے ہیں کدان کے ظروف اورجتنی چیزیں ان میں ہیں تمام کی تمام سونے کی ہیں (یعنی آرائش وزیبائش اور بیٹھنے کا ساراسامان)اورلوگوں (جنتیوں) اوران کے رب کی طرف و کیھنے کے درمیان بڑائی کی جاور کے سواکوئی مانغ نہیں ہوگا جواس کے وجہ پر ہوگی ، وہ لوگ خلود کی جنت میں ہوں گے۔

ائی سند کے ساتھ یہ بھی مردی ہے کہ جنت میں ایک خیمہ ہے اندر سے تراشے ہوئے موتی کا اس کی چوڑائی ساٹھ میل ہے، اس کے ہر کوشے میں (جنتی کے) اہل خانہ ہیں وہ ایک دوسرے کوئیس و کیمنے (گویا دوری ان کے درمیان پردہ ہے) مؤمن ان پر چکرلگا تارہےگا۔ (حسن سیحے)

قوله: "ان في الجنة جنتين النع" جنت سے مراد مطلق اور مطلح جنت ہے جو مسلمانوں ك ذ أن ميں ہواد جس كى ديواروں كى ايك اينك سونے كى اور دوسرى چا عدى كى ہے اس كے اعدر دو، دوجنتي الى جي جن ميں ہود وكاسب كھے چا ندى كا ہے اور دوكا خالص سونے كا ہے۔ انيتهما بمع معطوف كے مبتدا مؤخر ہے جن ميں سے دوكاسب كھے چا ندى كا ہے اور دوكا خالص سونے كا ہے۔ انيتهما بمع معطوف كے مبتدا مؤخر ہے اور من فضة خبر مقدم ہے۔ قبوله: "إلار داء الكبرياء على وجهه" بي تشابهات ميں سے ہے جوتقريب الى الله مالهم كے لئے ہے اور وجهه سے مراد ذات ہے لينی جنتيوں كا اپنے رب كود يكھنے سے مانع كبرياء اور اليبت ہوگی اس بيبت كورداء سے تجير كيا ہے تاكہ غير مركى كى تشبيه بالمركى سے كلام كامفہوم سجھ ميں آ جائے ليس الله تبارك وتعالى وقا فو قاس جا دروج اب نورانى كو الله اكبري ميں مان خاس خاد خاص سے منتو خاص ہے۔

قوله: "فی جنة عدن" قوم کے لئے ظرف ہیں لیمی بینی ہے نتی ان باغات میں ہمیشہوں گے، چونکہ اللہ تبارک و تعالیٰ ہر تم کے ظرف زمان و مکان سے پاک ہے اس لئے اس کور بھم کے لئے ظرف بناناغلط ہے۔ قوله: "عرضهاستون میلا"، لیمی ہر طرف سے ساٹھ میل چوڑ اہوگا۔

قوله: "اهل" لینی حور عین قوله: "یطوف" ای یجامع کویا جماع وغیره سے کنامیہ اورایک سے طخ وقت دوسری حور عین کونظرنہ آناعلت حیاء پر بنی ہے تاکی قربت اس کے آزاداند ملاپ پراثر اندازند ہو۔

باب ماجاء في صفة درجات الجنة

(جنت کے درجوں کابیان)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : في الجنة مائة درجة مابين كل درجتين مائة عام". (حسن غريب) حضرت ابو ہریرہ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: جنت میں سو درج ہیں ہردودرجوں کے درمیان سوسال کا فاصلہ ہے۔

ایک اورروایت میں دودر جول کے درمیان پانچ سوسال کی مسافت فدکور ہے لیکن چونکہ اصل مراد کھثیر ہے لیکن تعارض نہیں اس طرح ان دودر جول کے درمیان بھی بہت ساری منازل ہیں جوکل ملا کرقر آن کی آتھوں کی تعداد کے برابر ہیں گویا بوے بردے درجات سو ہیں اوران کے مابین او پرسے نیچ تک قرآنی آیات کے عدد کے مطابق ہیں یااس سے بھی زیادہ ہیں لہذا اس صدیث کا ابواب الدعوات کی صدیث سے کوئی تعارض نہیں:

"يقال يعنى لِصاحب القرآن اقرأوارق ورتِّل كماكنت ترتَّل في الدنيافا ن منزلتك عندآخر آية تقرأبها". (مدامديث صنيح، تذي من ١١٩. ٢: ٢)

حدیث آخر: حصرت معافین جبل رضی الله عند سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا جس نے رمضان کے روزے رکھے اور نماز (پابندی سے) پڑھی اور بیت الله کا جج کیا (راوی نے کہا) میں نہیں جانتا کہ ذکو قا کا ذکر فرمایا نہیں گراللہ پرکریمانہ ق ہے کہ اس کو بخشے خواہ وہ اللہ کی راہ میں بجرت کرے یا اسی خبر لوگوں کو خددوں؟ تو رسول الله سلی الله علیہ وسلم اسی خبر لوگوں کو خددوں؟ تو رسول الله سلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: چھوڑ دولوگوں کو تاکہ (زیادہ) عمل کرتے رہے کیونکہ جنت میں سودر ہے ہیں، ہردودر جوں کے درمیان آسان وزمین کا جتنا فاصلہ ہے اور فردوس سب سے بالا اور سب (جنتوں) سے افغل ہے اور اس کے اوپر رضن کا عرش ہے اور اس سے جنت کی نہریں بہتی ہیں، پس جبتم اللہ سے (جنت) ما گلوتو فردوس ما گلو۔ (وہذا عندی اصح وکذار واہ ابخاری)

قوله: "إلا كان" معناز ائد ب_قوله: "حقاً على الله" يعنى الله كوعده كمطابق توجس طرح الكه وغدى باوشاه كى كودين كاوعده كرتاب اور چرتوقع سے بھى زياده ديتا باور وعده خلافى بھى نہيں كرتا تو مالك المك كوعدے كاكيا حال موگا۔

قوله: "آلااُخبِر بهاالناس" لينى تاكرلوگ خوش بوجائيں قوله: "والفر دوس اعلىٰ البعنة واوسطها" يينى فاكن بحى بےسب جنتوں پراورافضل وبہتر بھى ہے مع بذاكشاده اوروسيع بھى ہے اور چونكدوه عرش كنبو كي بحى ہے اس كے اس كاحسين اور منور بونا بھى بديبى ہے پھراس كا اعلى علين خاتم النبيين صلى الله

علیہ وسلم کے لئے ہے جبکہ عرش کے مقابل فرش کی جانب اسفل السافلین ابلیس علیہ الملعثۃ ہوگا، پس ضابطہ یہ ہوا کہ جو کہ جو جتناعرش کے قریب ہوگا وہ اتنابی افضل ہوگا اور جو جتنا فرش کے نزدیک ہوگا وہ اتنابی ارذل ہوگا۔ اگلی روایت میں نہروں کی تعداد بھی ذکر فر مائی ہے جن کا تذکرہ قرآن مجید میں بھی ہے یعنی پانی، دودھ، شراب اور شہد کی چار نہریں۔

باب کی آخری حدیث میں جنت کے درجات کی وسعت کا ایک انداز ہ بتلایا ہے کہ اگر سب خلائق ایک بی درجہ میں جمع ہوجا کیں توسب ساجا کیں گی۔

باب ماجاء في صفة نِساء اهل الجنة

(جنتول کی بیبوں کے احوال کے بارے میں)

"عن عبدالله بن مسعودعن النبى صلى الله عليه وسلم قال: ان المرأة من نِساء اهل المجنة لَيُرى بياض ساقهامن وراء سبعين حُلّة حتى يُرى مُخّهُ او ذالك بان الله تعالى يقول: "كانهن الياقوت والمرجان"فاما الياقوت فانه حَجَرلو ادخلتَ فيه سِلكاً ثم اِستَصفيتَه لاريتَه من وراثه ".

حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ ہے مروی ہے کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اہل جنت کی عورتوں میں سے ایک عورت کی پنڈلی کا گورا پن سر جوڑوں (کپڑوں) کے اندر سے دیکھا جائے گا، یہاں تک کہ اس کی ہڈیوں کا گودا بھی دیکھا جا سکے گا اور یہ اس بناء پر کہ اللہ تعالی ارشاد فرماتے ہیں ''وہ عورتیں (خوبصورتی میں) گویایا قوت اور مرجان ہیں'' پس یا قوت جو ہے وہ ایک (قتم کا ہیرا) پھر ہے اگرتم نے اس میں ڈورا ڈالا اور اس (پھر) کو صاف کیا تو وہ ڈورا تہہیں اندر سے دکھائی دے گا۔ (بیروایت صحاح ستہ میں سے صرف امام ترفدی نے نقل کی ہے ان کے علاوہ ابن حبان نے اپنی صحیح میں اور امام منذری نے الترغیب والتر ھیب میں بحوالہ ابن ائی اللہ نیا بھی ذکر کی ہے، تا ہم حدیث کا اکثر حصہ باب کے اخیر میں صحیح سند سے مروی ہے۔

قوله: "ان الموأة" يعنى بنس عورت يامخصوص ايك عورت.

قوله: "لَيُرى "بصيغة مجهول قوله: "مخها "يضم أميم وتشديد الخاء

قوله: "الساقوت والمرجان" يا قوت كساته تثييه صفائي من باورمرجان كساته بياض

دسفيدي ميل-

امام ترندیؓ نے "بساب ماجاء لادنیٰ اهل الجنة من الكرامة اللي الكي ضعيف سند كساتولقل كياہے كدادنیٰ جنتی كو بهتر حوريں مليں گی۔

دنیا کی عورتیں جنت میں کس کے نکاح میں ہول گی؟ ندکورہ حدیث میں مردجنتیوں کا تھم بیان ہواہ جوجنتی عورتیں ہیں ان کے بارے میں یتفصیل ہے کہ جوعورت دنیا میں جس مرد کے نکاح میں تھی وہ اس کے نکاح میں دیا ہے۔

کے نکاح میں رہے گی چنا نچہ ابن الجوزیؒ نے ''احکام النساء'' میں حصرت عاکشہ "کی مرفوع حدیث نقل کی ہے: "المسسر أة المنحسر ازواجها"اس سے متعدد شوہروں والی ہیوہ یا مطلقہ کا تھم بھی معلوم ہوا علاوہ ازیں مندرجہ بالا کتاب میں متعدد احادیث روایت کی گئی ہیں جواس پرناطق ہیں کہ دنیاوی نکاح اور آخری نکاح میں رہنے والی خاتون اپنے دنیوی اور آخری شوہر کے پاس رہے گی تا ہم اسے مجبورتیس کیا جائے گا بلکہ اصل وارو مداراس کی مرضی پرہوگاوہ اگراسینے شوہر کو پہند کرتی ہے ور نداس کے لئے حورمرد کا انظام کیا جائے گا۔

احسن الفتاوی میں ایک سوال کے جواب میں لکھاہے'' بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ آخری شوہرکو ملے گی اور بعض سے معلوم ہوتا ہے کہ واس شوہرکو ملے گی اور بعض سے معلوم ہوتا ہے کہ عورت کو اختیار دیا جائے گا جس کے ساتھ زیادہ موافقت ہواس کو اختیار کرے اور بعض حضرات نے یول تطبیق دی ہے کہ اگر سب شوہر حسن خلق میں مساوی ہوں تو آخری شوہرکو ملے گی ورندا ختیار دیا جائے گا''۔

"عن ام سلمة "قلت يارسول الله! المرأة تزوّج الزوجين والثلاثة والاربعة

ثم تسموت فتمدخل المجنة ويدخلون معهامن يكون زوجها منهم؟ قال انهاتُ خَيَّرُ فتختاراً حسنهم خُلقاً في دارالدنيا فزوّجنيه، يا ام سلمة! ذهب الخُلق بخير الدنياو الأخرة".

(بحوالة عمطراني: ج:٣١٨ ٣١٨ عديث نمبر ٨٤)

اس سے یہ بھی معلوم ہوا کہ جس مخص کی متعدد شادیاں ہوں وہ سب مورتیں اس کولیں گی بشرطیکہ وہ کل یا بعض راضی ہوں۔

جہاں تک کواری اور مطلقہ کا تعلق ہے توان کو بھی اختیار دیا جائے گا کہ جس مروکو چاہیں پہند کرلیں ، اگر کسی کو پہند نہ کر یہ اور کا کہ جس مروکو چاہیں پہند کر لیں ، اگر کسی کو پہند نہ کر یہ اور پیدا فرما کیں گے اور ماتت قبل ان تعزوج تعجیر ایضاً ان رضیت بالدمی زوجت منه وان لم توض فائلہ یعلق ذکراً من العور العین فیزوجها منه "۔ (مجوعة الفتاو کی بحوالہ عرائب احسن الفتاو کی بچ وعد الفتاو کی بھی ۔ اس

صديث آخر: "عن ابى سعيدعن النبى صلى الله عليه وسلم قال ان اول زُمرة يدخلون المجنة يوم القيامة على مثل ضوء القمر ليلة البدروالزمرة الثانية على مثل احسن كوكب دُرِّى فى السماء لكل رجل منهم زوجتان على كل زوجة مبعون حلة يُرى مُخَ ساقها مِن وَرَائها". (حسن صحيح)

اولین جاعت جوجنت میں واخل ہوگی قیامت کے دن وہ چودھویں کے چاندی طرح خوبصورت ہوگی اور دوسری جماعت آسان کے چیکدارخوبصورت ستارے کی طرح ہوگی ،ان میں سے ہرایک خفس کے لئے دوییں اس ہوں گی۔ ہر بیوی پرستر جوڑے ہوں گے جن کے پیچھے (اندر) سے اس کی پنڈلی کا گوداد یکھا جا سکے گا۔
تاہم پہلی جماعت انبیاء کیہم السلام کی ہوگی جبکہ دوسری ان کے انتباع کی ہوگی تاہم ان کے درجات ومقامات متفاوت ہوں گے مثلاً صدیقین وعلاء تمام انباع میں نمایاں ہوں کے پھر فحبداء وصلحاء حسب مراتب آسان کے ستاروں کی طرح مختلف چیک کے حامل ہوں گے۔

باب کی احادیث سے جنتی عورتوں کا حسین ہوتا البت ہوتا ہے کہ ان کا تھیں اتنا نمایاں ہوگا اور ان کے کپڑے اسے لطیف ہوں کے کہ سر جوڑوں کے باوجودان کے جسم کا گوراپن مجسپ نہیں سے گا اور ان کے جسم استے شفاف ہوں کے کہ بڑی کا گودا بھی دکھائی دیے گا جیسے بلور اور جیرے کے اندرسے دھاگا دکھائی دیتا ہے،

غرض و یکنے والے کو کیڑوں کے زیب وزینت سے می لطف اندوز ہونے کا موقع مے کا کیونکہ برہنہ مورت میں وہ کشش نہیں ہوتی جولیاس وائی میں ہوتی ہواوروہ لباس اس کے جم کو کمل جمپائے گا بھی نہیں جس سے جسمانی خوبصورتی محظوظ ہونے کا بھی موقع ملے گاہیں جمتاجا ہے جیسے کوری مورت اپنے چہرے پرسیاہ بالوں کا جال فرا اللہ وہا الریک پردہ جس میں بیاض جملک ہواس طرح اندراور باہر دونوں مناظر یکواہ ہونے سے حسن دوبالا ہوجا تا ہے، مع هذاوہ مورتیں حسن صورت کے ساتھ حسن سیرت سے بھی کمل آراستہ ہوں گی، پس کوئی کدورت، لینے کی بداوی با بداخلاتی کی بدمرگی وہاں نہیں ہوگی "فطوبی لمن کن له و کان لهن"۔

باب ماجاء في صفة جماع اهل الجنة

(جنتیون کی قوت جماع کابیان)

"عن انس" عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: يُعطى المؤمن فى الجنة قوة كذا وكذا من الجماع قيل يارسول الله الويطيق ذالك؟قال يُعطى قوة مائة". (صحيح غريب) مؤن كوجنت من اتى اتى اتى (عورتول سے يامرتبه) طاقت جماع كرنے كى دى جائے كى عرض كيا كيا الله الله كرسول! كيا ده اس كى تاب لا سكى كا؟ آپ نے فرمایا: اسسوآ دميوں كى توت دى جائے گی۔

تفری ایک وقت جماع کرے گایا کنایہ ہے مرات سے لین حورین سے بیک وقت اتن اتن وفد مثلاتیں یا چالیس وولوں سے بیک وقت جماع کرے گایا کنایہ ہے مرات سے لین حورین سے بیک وقت اتن اتن وفد مثلاتیں یا چالیس وفعہ ہمستری کرسکے گااور جب اس پر محابہ کرام و کو تجب ہوا کہ ایک آدی بیک وقت اتن زیادہ مجامعتیں کیوکر کرسکا ہے کیونکہ جماع سے فراغت پر فتو رکا طاری ہونا ایک ناگز برحقیقت ہے، تو آپ نے ان کے تجب کے ازالہ کے لئے فرمایا کہ جنتی کوسو (وغوی) آدمیوں کی بقدر طاقت دی جاتی ہے لہذا اس کے لئے کئی مرتبہ جماع کرنے میں کوئی مسئل جب بلکہ وہ جماع کے متعمل بھی ہشاش بشاش اور تروتا زہ رہے گا، اور صرف بی نہیں بلکہ اس کی بدی بھی تازی اور بکارت کے مرفوب وصف پر قائم وہائم رہے گی، تا کہ جنتیوں کے شغل کے تنگسل میں کوئی کی نیک بیک نیک الا ہماری وہ اوگ ہم وقت ہم تن شغل میں خوش باش رہیں گرد صوب الاو تاد، فکن الا ہمکار ، نہد جا رحمل علیٰ خوا الا نہاد "۔

باب ماجاء في صفة اهل الجنة

(جنتول کے احوال کابیان)

"عن ابى هريرة قسال قسال رسول الله صلى الله عليه وسلم : اوّل زُمرة تلج الجنة صورتهم على صورة القمرليلة البدر لايبصُقون و لايَتَمَخَّطُون و لايتغوَّ طون انيتهم فيهامن الله هب وامشاطهم من اللهب والفضّة ومَجَامِرهم من الا لُوَّةِ ورشحهم المسك ولكل واحد منهم زوجتان يُرى مُخُ سُوقهامن ورآء اللحم من الحسن لااختلاف بينهم ولاتباغُضَ، قلوبهم قلبُ رجل واحديسبحون الله بُكرةً وَعَشِيّاً". (حديث صحيح)

اولین گروہ جو جنت میں جائے گاان کی صورتیں چودھویں رات کے چاند کی طرح ہوں گی نہ وہ تھوکیں گے، نہ ناک سیس گے اور نہ ہی وہ پا خانہ کریں گے ، ان کے برتن جنت میں سونے کے ہوں گے اور کنگھیاں ان کی سونے چاندی کی ہوں گی اور ان کی دھونی (کی انگیشیاں) آگر (لکڑی) کی ہوں گی اور ان کا پسینہ مشک کی طرح خوشبودار ہوگا ، ان میں ہرایک کے لئے دو ہویاں ہوں گی ویکھا جاسکے گاان کی پنڈلیوں کا گودا گوشت کے طرح خوشبودار ہوگا ، ان میں ہرایک کے لئے دو ہویاں ہوں گی ویکھا جاسکے گاان کی پنڈلیوں کا گودا گوشت کے باہر (پیچھے) سے بوجہ خوبصورتی کے ، اور جنتیوں کے درمیان کوئی اختلاف نہیں ہوگا اور نہ کوئی دوسرے سے بغض (عداوت) رکھے گاان کے دل ایک ہی آدی کے دل (کی طرح متحد) ہوں گے وہ صبح وشام اللہ کی شبج کرتے ہوں گے رابعین ہمیشہ ہمیشہ)

تشرت : -قوله: "لايبصقون" بُصاق سے بمعن تقول کے ہے۔

قوله: "و لایتمخطون" مُخاطبه عنی رین کے ہے دونوں مصدر غراب کے وزن پر ہیں لیمنی نہ تو جنتی تھوکیس کے اور نہ ہی ناک پھینکیں گے کہ وہ ان عیوب سے پاک ہوں گے۔ای بناء پر غا لط لیمنی برا اور چھوٹا پیشا ہے ہی نہیں کریں گے تو جس طرح ہمارے جسم میں موجود خلیوں کا نظام ہے کہ جب ان کی زندگی ختم ہوجاتی ہے تو دوسرے خلیے یا تو ان کوجسم سے خارج کرتے ہیں اور اگروہ کار آ مد ہوں تو ان کو کسی طرح کام میں لایا جاتا ہے اس طرح جنتیوں کی غذا خلیوں کی طرح خوشبودار بیسینے کی صورت میں ہمضم ہوگی اور منی کی شکل میں خارج ہوگی غرض اس غذا میں فضلہ نہیں ہوگا۔

قوله:"انيتهم الخ" ترندي كاروايت عمعلوم بوتاب كدان كي برتن سون كي بيخ بوك

ہوں گے جبکہ کنگھیاں سونے اور چاندی سے مرکب ہوں گی مگر بخاری شریف کی روایت میں اس کے برعکس ندکور ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ جرروایت میں ایک ایک جانب اختصار کیا گیا ہے یا ایک طرف کو دوسری پر قیاس کیا گیا ہے جسیا کہ عمو ما ہوتا ہے، یہ بھی ممکن ہے کہ یہ عکم الگ الگ درجات کے اعتبار سے ہو کہ بعض جنتیوں کو دونوں طرح کی چیزیں ملیں گی جبکہ نسبتا اونی درجے والوں کوایک قتم کی صرف سونے یا صرف چاندی کی اشیاء مہیا ہوں گی، پھر سونے چاندی کا ایک مطلب یہ ہوسکتا ہے کہ جرچیز دونوں دھاتوں سے مرکب ہواور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ ان کے الگ الگ سیٹ ہوئے ہوں۔

قولہ: "مجامو ھم" مِحمر کی جمع ہے مجمر اگر بکسرہ میم اول ہوتو آنگیشھی کو کہتے ہیں جس میں ایندھن جلایا جاتا ہے جبکہ مُجمر بضم المیم اول ہوتو خوشبو کے لئے جلائی جانے والی چیز کو کہتے ہیں اور یہاں پریمی معنی مراو یا کم از کم زیادہ مناسب ہے۔

قسولسه: "الالموة" اس ميس بهمزه كافتحه وضمه دونول جائز بين جبكه لام ضموم اور دال مشدد ہے عود بهندى اور اگر كى ككڑى كو كہتے ہيں جس سے اگر بتيال بھی بنتی ہيں اور بازاروں ميں عام لمتی ہيں اگر چهان ميں اصلی كم بی ہوتی ہيں پس مطلب سه ہوا" بُون هم بسالالموّة" كھران اعواد سے خوشبو حاصل كرنے كے لئے آگ جلانا اور جنت ميں آگ كا ہونالازى نہيں كيونكم آج كل تو اس كي صورت بہت آسان ہے جيسے بجلى كے آلات ميں اس كامشاہده كيا جاسكتا ہے۔

قول ه: "ورشحهم المسك" يعنى دائحة عرقهم كرائحة المسك ان كي پينى دائحة عرقهم كرائحة المسك ان كي پينى خوشبواورتم تم كى نعتول كى بُهتات وفراوانى بوگى، اوران نعتول كى مانند بوگى، غرض و بال طرح طرح كى خوشبواورتم تم كى نعتول كى بُهتات وفراوانى بوگى، اوران نعتول كى وجه سان كة پس ميل كوئى اختلاف، حسداوركينه بحى نهيل بوگا كيونكه يه رذائل اخلاق و بال جنم ليت بيل جهال نعتول كى محدود مقدار پائى جاتى بواوراس كے حاصل كرنے والے بهت بول جبكه جنت ميل قلت اور كى نعت كا تصور بحى نهيل بوگا و ان كا ماده بى ان كے دلول سے تكال با بركيا جائے گا قال الله تعالىٰ الله علىٰ شرو متقبلين" (حجر آيت ٢٧))

پی ان کے دل آپی میں ایسے موافق ہوں کے جیسے ایک شخص کا دل ہوتا ہے تو جس طرح ایک شخص این جسم کے بعض حصوں اور دل کے بعض اجزاء سے عداوت ویشنی نہیں کرتا ای طرح وہ لوگ جسد واحد کی مانند ہول گے،اس لئے آئخ ضرب صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: 'السمنو مسنون کے وجل و احدان اشتکیٰ عینمه

إشتكىٰ كله"_(الحديث رواه ملم) (تدبروتشكر)

رہی ان کی تبیع کرنے کی نعت تو پہنہ مجھا جائے کہ اس میں مشقت ہوگی کیونکہ مشقتوں کی جگہ دنیا اور پھر دوز خ ہے جنت ہرگز زحمت ومشقت کی جگہ ہیں اس لئے اس ممل تبیع سے راحت بڑھے گی جیسے ہمار انظام تنفس ہے۔

صريث آخر: "لوان مايُقِلُ ظُفُرممافى الجنة بَدَالَتَزَخرفت له مابين خوافق السموات والارض ولوان رجلاً من اهل الجنة إطّلَعَ فبدا اساوِرُه لَطَمَسَ ضوء الشمس كماتطمِسُ الشمس ضوء النجوم". (غريب)

اگراتی (تھوڑی)س چیز جوناخن اٹھا تاہے جنت کی (دنیامیں) ظاہر ہوجائے تو آسانوں اورزمین کے کناروں کے درمیان سب چیز ہی اٹھیں گی اس کی وجہ سے،اوراگر جنتیوں میں سے کوئی شخص (دنیا کی طرف) جھا تھے اوراس کے نگن ظاہر ہوجا کیں تو وہ سورج کی روشنی کومٹادیں گے جیسے آفاب ستاروں کی روشنی کو ماند کردیتا ہے۔

قوله: "مايُقِلُ" بضم الياء والقاف المكسورة وتشديد اللام جَبَد لفظ ما موصوله باس كاعا مُدمَد وف ب يعني ما يُقِلُه الشي اى حَمَلَه يعنى جس كواتها ئ الخ

قوله: "ظفر" بضمتين ناخن ـ

قوله: "لتزخرفت "اي تزينت،

قوله: "خوافق" خافقة كى جمع ہے جوانب اور كناروں كو كہتے ہيں يعنى تا حدثگاہ چاروں جانب كافق تك سب چكيں گے۔

قولہ:"اساوِر" بوارک جمع ہے بروزن کتاب بمعنی نگن کے لیعنی جنت کی اشیاءانتہائی روثن ہیں۔ اور جنتی لوگ انتہائی حسین ہیں۔

باب ماجاء في صفة ثياب اهل الجنة

(جنتيول كيلباس كااحوال)

"اهل الجنة جُردُمُردُكُ حلى لايَفنَىٰ شَبَابِهِم ولاتبلىٰ ثِيابِهم". (غريب)

جنت والے بےرلیش نوخیز سیاہ پلک ہوں گے نہ توان کی جوانی کبھی ڈھلے گی اور نہ ہی ان کے کپڑے پُرانے ہوں گے۔

تشریخ: قوله: "جُود" اجردی جمع ہے جس کے جسم پربال ندہوں یعنی غیر ضروری جیسے بغلوں کے بال اور زیرناف وغیرہ جبکہ مُر دامردی جمع ہے جس کی داڑھی ابھی نہ لگلی ہویہ صرف لڑکے کے لئے استعال ہوتا ہے امراً قاجردا نہیں کہاجاتا کیونکہ اس کی داڑھی کی تو تعنہیں کی جاتی۔

قوله: "کے حلی" کیل کی جمع ہے سرمکین آنکھوں والے کو کہتے ہیں بمعنیٰ کھول جس کی پلکیں پیدائش سیاہ ہوں جیسے تازہ مُر مدلگایا ہوا ہونے نیزان کی پلکیں سیاہ ہونے کے ساتھ کمبی ہوں گی۔

یعنی اہل جنت ہمیشہ عمر کے اس اسٹنے ومرحلہ پر ہوں گے جوزندگی بحر میں سب سے خوشگوار موڈ ہوتا ہے اور بیوہ دور ہے جہاں آ دمی جوانی میں پہلاقدم رکھتا ہے۔ اس میں اندرونی تمام تُو کی جوش مارتے ہیں اور آ دمی اسپنے آپ کوانتہائی چُست وقو انامحسوں کرتا ہے وہ خوش وفرم ہونے کے ساتھ عورتوں کی طرف بھی بھر پور میلان رکھتا ہے اور عورتیں اس کی جانب بھی مائلات ہوتی ہیں ،غرض اہل جنت شاد مانی کی دائی کیفیت سے مکیف اور دِلشاد و مسرور ہوں مے۔

صدیث آخر: حضرت ابوسعید خدری سے مروی ہے کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے 'وَفُوشِ مَّر فُوعَة '' (الایة) کی تغییر میں فرمایا کمان فرشوں کی بلندی اتنی ہوگی جتنی آسان وزمین کے درمیان ہے لینی پانچ سوسال کی مسافت ہے۔ (هذا حدیث غریب و احرجه احمدو النسائی و ابن حبان فی صحیحه)

قوله: "ارتفاعها" مبتدا باور لكسمابين السماء والارض "خرب اور مسيرة الخ" يا تو خربعد الخرب يابيان يامات بدل بـــ

فرش لیعن جنتیوں کے بستر وں کی او نچائی کا مطلب کیا ہے؟ تو امام ترندیؒ نے خوداس کی تغییر نقل فرمائی ہے لیعنی مراد بستر وں اور پچھونوں کی بلندی نہیں بلکہ بلندوعالی درجات میں ان کا بچھایا جانا مراد ہے کہ وہ در ہے انتہائی بلند ہوں گے جن کی وجہ سے وہ بچھونے بھی بلند ہوئے۔ گرامام ترندیؒ نے ابواب النفیر میں سورہ واقعہ کی اس آیت کے تحت مرفوعہ کی نفیر کچھ یول نقل کی ہے' وار تفاعها کیمابین السماء النح قال ارتفاع الفوش اس آیت کے تحت مرفوعہ کی الدرجات النح ''جس سے معلوم ہوتا ہے کہ امام ترندی ' نفس فرش کی او نچائی لیمنی موٹائی پر بھی المدر جات النح ''جس سے معلوم ہوتا ہے کہ امام ترندی ' نفس فرش کی او نچائی لیمنی موٹائی پر بھی راضی ہیں نیز انہوں نے وہاں اس حدیث کوسن کہا ہے، بعض شارحین نے دونوں کا مطلب ایک ہی بیان کیا ہے

مربه دوالگ الگ مطلب بھی ہوسکتے ہیں لہذا کہا جائے گا کہ دونوں مطلب صبح ہوسکتے ہیں کہ مرفوعة نفس فرش کے اعتبارے ہویا مرفوعہ تو درجات ہوں البیتہ ہیہ بستر ان درجوں کے بالائی حصوں میں بچھے ہوئے ہوں محے جس ہے بستر بھی بلندو بالانظرآتے ہوں گے۔

پھرا گرنٹس بستر بلند ہیں تواس کا کیامطلب ہے؟ توحضرت علیٰ سے مروی ہے کہ فُہرُ میں میوف وعة على الامسرة ليني وه پلنگوں ير بجيے ہوئے ہوں مے بعض مفسرين كہتے ہيں كدوه ايك دوسرے كے اوپر بجھے ہوئے ہوں کے جیسے آج کل لوگ فوم کے گذ ہاک دوسرے پر بچھا کر بلنگ کی طرح بلند کرتے ہیں جبکہ بعض مفسرین نے ''فسر ش مسر فسوعة'' سے مرادعورتیں لی ہیں اور عرب عورت برفرش کا اطلاق کرتے ہیں لیعنی عالی القدرعورتيں ہوں گی۔

باب ماجاء في صفة ثِمار الجنة

(جنت کے بھلوں کا بیان)

حضرت اساء بنت الى بكررضى الله عنها فرماتى بيس كه ميس في رسول الله صلى الله عليه وسلم سے سُناہے انْهُول في سِدرة النتهى كا وكرفر ما ياءآي في طرمايا "يسيسوالسواكب في ظل الفَسَن منهاماتة سنة او يستظل بظلهامائة راكب شكّ يحيى فيهافراش الذهب كان ثمرهاالقِلال ' ـ (برامديث صن متحج غریب)

سواراس کی شاخ کے سابیہ میں سوسال تک جاسکتا ہے یا فر مایا کہ سو(۱۰۰) سواراس کے سابیہ تلے سابیہ کریں گے (تعبیرالفاظ میں راوی) کیچیٰ کوشک ہے اس (سدرہ) میں سونے کے پیٹکے ہیں گویاسدرۃ المنتہیٰ کے کھل ملے ہیں۔ (ایعنی ملے کی طرح بدے بوے بیر للکے ہیں)

تشريح: _قوله: "سدرة المنتهى "آخرى بيرى كادرخت يعنى جهال اس عالم كى انتهاء بوجاتى ب کہتے ہیں کہ بید درخت ساتویں آسان کے او برعرش رخمن کے دائیں واقع ہے اس کے منتبیٰ ہونے کی متعدد وجوہات بیان کی گئی ہیں مثلاً وہاں تک جنات پھیلی ہوئی ہیں اس ہے آ محیوش ہے۔ یاوہاں تک ملائکہ کاعلم پینچ سكتا ہے اس سے آ كے كوئى نہيں جانتا كەكيا ہے سوائے الله تبارك وتعالى كے۔

قوله: "الفنن" بفتحتين غصن وشاخ كوكبت بي جمع افنان آتى باس بيرى كردخت يرسوني

کے پٹنگوں کا مطلب یہ ہوسکتا ہے کہ چونکہ درخت پر پٹنگے لیکتے ہیں ای طرح اس سدرہ پر بھی پٹنگے ٹوٹ پڑتے ہیں ہیں وہ یقیناً نورانی پٹنگے ہوں گے مگران پر سونے کا اطلاق خوبصورتی کی بناء پر کیا گیا، اگر چہاس کوظاہر پر بھی محمول کیا جاسکتا ہے کہ وہ واقعتا سونے کے ہوں بنابر ہر تقدیر تتلیوں اور پر وانوں سے درخت کاحسن بر حتا ہے خواہ وہ سونے کے ہوں یا کس بر اس بیں بڑی خوشخبری ہے کہ وہ اس دکش منظر سے محظوط ہوں گئے اس میں بڑی خوشخبری ہے کہ وہ اس دکش منظر سے محظوط ہوں گئے۔ واللہ اعلم

باب ماجاء في صفة طيرالجنة

(جنت کے پرندوں کا بیان)

"عن انس بن مالك قال سُئِل رسول الله صلى الله عليه وسلم ماالكوثر؟قال: ذاك نهر اعطانيه الله يعنى في الجنة اشد بياضاً من اللبن واحلى من العسل فيه طير اعناقها كاعناق المجزر قال عمر: ان هذه لَنَاعِمَة فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: اكلَتُهاانعَمُ منها". (حسن)

حضرت انس فرماتے ہیں کہ درسول الله سلی الله علیہ وسلم سے پوچھا گیا کہ کوثر کیا ہے؟ آپ نے فرمایا کہ وہ ایک نہر ہے جو جھے اللہ نے عطافر مائی ہے (راوی کہتا ہے) بعنی جنت میں جودودھ سے زیادہ سفیداور شہد سے زیادہ میں ایسے پرندے ہیں جن کی گردنیں اونٹوں کی گردنوں کی مانند (لمبی) ہیں (حضرت) مرش نیادہ نے فرمایا ہی تو بوٹ نے خوش عیش ہیں تو رسول الله علیہ وسلم نے فرمایا ان کے کھانے والے ان سے بھی زیادہ خوش عیش ہوں گے۔

تشری :۔ اس نبر کوڑے میدان محشر میں حوض کوڑ کو بھراجائے گا جس کا تذکرہ ابواب صفة القیمة میں گذراہے اس جلد میں و کیھئے ''باب ماجاء فی صفة اوانی الحوض''۔ الحوض''۔

قوله: "الجُزُد" بضمتين بَرُّ وربفت الجم كى جمع ہے وہ اونٹ يا اوْ ٹَى جَنے وَ وَذَ كَ كَ لِيَحْقَ كَيا مَيا هو چونكہ جنتی ان پرندوں كا گوشت كھا ئيں گے اور آ ہے كوثر پئيں گے اس لئے ان كے بڑے مزے ہوں گے۔ قولمہ: "اكلتھا" بروزن طلبۃ ويُرَرَة بھى پڑھ سكتے ہيں اور فاعلۃ وناحمۃ كےوزن پربھى ، پہلى صورت ميں آكل کی جع ہے ادر دوسری صورت میں آکل کی تانیث مستعمل جمعنی جمع ہے۔

قول انعم"اسم تفضیل بالنبۃ الى الناعمۃ کے ہے یعنی وہ پرندے اگرچہ بہت خوش باش ہوں گے مگران کے کھانے والے ان سے بھی زیادہ خوش باش ہوں گے اگرچہ فی نفسہ دونوں ہی خوش نصیب ہیں۔ جنت میں پرندوں کا ثبوت قرآن کی آیت اور متعددا حادیث سے ہوتا ہے" و لَحم طیرِ مِسمّا یَسْتَهُونَ "۔ (واقعہ آیت: ۳۱) خواہ آئی ہوں یا غیر آئی ہرتم کے پرندے ہوں گے۔

باب ماجاء في صفة خيل الجنة

(جنت کے گھوڑوں کا حال)

"ان رجلاً سَتَلَ النبي صلى الله عليه وسلم فقال: يارسول الله! هل في الجنة من خيل؟ قال: إن الله أدخ لك الجنة فلا تشاء ان تُحمَلَ فيهاعلى فرس من ياقوتة حمرًاء تطير بك في الجنة حيث شئت (الافعلت!)قال وسأله رجل فقال يارسول الله هل في الجنة من ابل؟ قال فلم يقل له ماقال لصاحبه فقال إن يدخلك الله الجنة يكن لك فيهامااشتهت نفسُك ولذت عينُك". هذا حديث ليس اسناده بالقوى)

حفرت بریدہ بن تصیب رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ایک شخص نے پوچھا نبی سلی اللہ علیہ وسلم سے پس وہ کہنے لگا اے اللہ کے رسول! کیا جنت میں گرڑے ہوں گے؟ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: اگر اللہ نے کجنے جنت میں داخل کیا تو تم نہیں چا ہو گے کہ سوار کردیتے جا ویا توت کے سرخ گھوڑے پراوروہ تجھے اُڑ اگر جنت میں وہاں لے جائے جہاں تو چا ہے گا گر ایسا ہی ہوگا۔

رادی نے کہا کہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم سے ایک اور خص نے پوچھا،اس نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! کیا جنت میں اونٹ ہوں گے؟ پس آپ نے اس کووہ جواب نہیں دیا جیسے اس کے ساتھی (پہلے سائل) کودیا تھا، آپ نے فرمایا: اگر اللہ نے تھے جنت میں داخل فرمایا تو تیرے لئے وہ سب کچھ ہوگا جو تیرا جی حاور آٹکھیں لطف اندوز ہوں!

ام ترندی فرماتے ہیں کہ عبداللہ بن مبارک کی حدیث جوسفیان ٹوری سے مروی ہے اور مرسل ہے حدیث باب یعنی مسعودی کی روایت سے زیادہ صحیح ہے کیونکہ سفیان بمقابلہ مسعودی اوثق واتقن ہیں۔

تشری : قوله: "إن الله أد حَلك الجنة "شرط باور جزاءا كرنسخول مي مقدر باين الله علت "إلا فعلت "موجود به محرفت العند العند الله علت "موجود به محرفت الله علت "موجود به محروف بهى موجول بهى ، واحدمون شمعروف بهى صحح به (تدبر) محروف بهى ومجول بهى ، واحدمون شمعروف بهى صحح به (تدبر) معروف بهى ومجول بهى ، واحدمون شمعروف بهى صحح به (تدبر) معروف بهى الله ميل إن الله ميل المراليمزه به كرش طيب جبكه لفظ الله مرفوع على شريطة النفير به -

قوله: "ان تحمل" بصيغه مجهول_

آپ نے جواب علی اسلوب انحکیم دیا یعنی جنت میں دنیوی گھوڑ وں کی ضرورت نہیں ہوگی بلکہ وہاں کی مرحز کے خواب کی ہرچیز کی طرح گھوڑ ہے جس انتہائی نفیس اورعمہ و صرین ہوں کے چاہے آپ اسے فرش پرچلا کیں یا فضاء میں اڑا کیں جیسے موٹر ،سکوٹر اور جہاز وغیرہ۔

آپ نے دوسرے سائل کو جواب قاعدہ کلید کی شکل میں دے دیا تا کہ سوالات کا غیر معمولی سلسلہ قائم نہ ہوجائے بلکہ ہرخواہ شمند کے لئے بیضا بطہ ہے کہ وہ جو چیز بھی پہند کرے گا وہ اسے ملے گی خواہ وہ گھوڑ ایا اونٹ ہو یا اور طرح کی سواری چونکہ ایک زمانے کے لوگوں کے تصور میں آنے والے وقت کی اشیاء نہیں آتی ہیں اس لئے قاعدہ بتلا دیا کہ جو پچھو دنیا میں ہے وہ جنت میں بھی ہے تا ہم دنیاوی چیزیں صرف ماڈل اور نمونے ہیں جبکہ جنتی اشیاء اصلی جقیقی اور لافانی وجاویدانی ہیں۔

باب کی اگلی حدیث کامضمون بھی اس کے مطابق ہے البتداس میں یہ اضافہ ہے کہ اس گھوڑے کے دو پر (بازو) ہوں گے، تجھے اس پرسوار کردیا جائے گا پھروہ تجھے اُڑا کرنے جائے گا جہاں تو چاہے گا، اگر چہ پہلی حدیث سے بھی معلوم ہوتا ہے کہ وہ گھوڑا اُڑنے کی صلاحیت بھی رکھتا ہے جیسا کہ لفظ 'فیطیت بیک ''سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ گھوڑا اُڑنے کی صلاحیت بھی رکھتا ہے جیسا کہ لفظ 'فیطیت بیک ''سے معلوم ہوا کہ وہاں معنی مجازی یعنی ہوسکتا ہے دوسری حدیث سے معلوم ہوا کہ وہاں معنی مجازی یعنی سرعت سیرمراذبیں بلکہ اڑنا مرادہ کے کوئکہ جنا حان اڑنے کی تصریح کرتے ہیں۔

باب ماجاء في سَنِّ اهل الجنة

(جنتیول کی عمر کے بارے میں)

"يمدخمل اهمل المجنة الجنة جرداً مرداً مكحّلين ابناء ثلاثين اوثلاث وثلثين سنة". (حديث حسن غريب) جنت والے جنت میں بالوں سے صاف بے رکیش سُر مہ گوں آٹکھوں والے داخل ہوں گے جوتیں سال کے یا فرمایا کہ تیننتیں سال کے ہوں گے۔

تشری: -حدیث کاپہلاحصہ 'باب ماجاء فی صفۃ ثیاب اهل الجنۃ '' میں عنقریب گرراہے۔

اس روایت میں اہل جنت کی عمر کے حوالے سے رادی کوشک ہے کہ ۳۰ سال ہوگی یا ۳۳، گرامام احمدٌ، امام بیبی ت ، امام طبرانی اور این ابی الدنیا ت نے بغیر شک کے ۳۳ سال نقل کیا ہے۔ کذائی تحفۃ الاحوذی یہاں بیاشکال بظاہر وار دہوتا ہے کہ جب داڑھیاں نہیں نگلی ہوں گی تو پھروہ ۳۳ سال کے کیسے ہوں گے؟ اس کا جواب یہ ہے کہ باعتبار ابتدائی عروج شاب کے بے ریش ونوعمر ونو جوان ہوں گے مگر ہڈی واعصاب کی توت کے کاظ سے اپنے کمال وانتہاء کو پہنچے ہوں گے ملی ہذاان میں ابتدائی جوانی اور انتہائی طاقت دونوں صفات مجتمع ہوں گے جوس سال ہیں۔ (تدبر)

باب ماجاء في كم صف اهل الجنة

(جنتيول کي شيس کتني ہول گي؟)

"اهـل الـجـنة عشـرون ومـاثة صف ثـمـانـون منهامن هذه الامة واربعون من ساثر الامم". (حسن)

حفرت بُریدہ بن تصیب سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فر مایا: جنت والوں کی ایک سومیس (۱۲۰) صفیں ہوں گی استی (۸۰) ان میں سے اِسی امت کی ہوں گی اور جالیس (۴۰۰) صفیں باقی (سب) اُمتوں کی ہوگی۔

تشریخ: علامہ طبی گنے فرمایا کہ بیاسی (۸۰) صفیں باتی چالیس کی مساوی فی العدد ہوں گی تا کہ اس روایت کا آنے والی اوراُن دیگر روایات سے تعارض نہ آئے جن میں اس امت کواہل جنت کا نصف قرار دیا گیا ہے، لیکن شخ عبدالحق محدث دہلوی نے اس تو جیہ کور دکرتے ہوئے فرمایا کہ ظاہر حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ بیہ تمام صفوف باہم مساوی ہوں گی علی ھذا امت محمد بیعلی صاحبہا الف الف تحیة وتسلیما باتی اہل جنت کے مقابلے میں دونہائی ہوگی اور جن روایات میں ربع مثلث اور نصف فرمایا گیا ہے تو وہ اولین اطلاع اور آپ کی رجاء کے میں دونہائی ہوگی اور جن روایات میں ربع مثلث اور نصف فرمایا گیا ہے تو وہ اولین اطلاع اور آپ کی رجاء کے

مطابق ہے اور جیسے جیسے امت مرحومہ پراللہ کافضل برکۃ النبی ملی اللہ علیہ وکلم بردھتا گیا تو ان کی تعداد میں اضافہ موتار ہاتا آ ککہ ان کی تعداد الل جنت کی نسبت بہت زیادہ ہوگئی جیسا کہ اس حدیث میں ہے۔

حدیث آخر: حضرت عبداللہ بن مسعود "فرماتے ہیں کہ ہم تقریباً چالیس آ دی نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ ایک خیے میں تھے پس آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہم سے فرما یا کہ کیا تم اس پرداخی ہو کہ تم اہل جنت کے چوتھائی رہو؟ سب نے کہا'' ہاں بی' آپ نے فرما یا کیا تم اس پرخوش ہو کہ تم جنت والوں کے جہائی رہو؟ صحابہ نے جواب دیا'' بی ہاں' آپ نے فرما یا کیا تم اس پر رضا مند ہو کہ جنت والوں کے بھائی رہو؟ موا یا کہ خور مایا کہ شرک ہو گھر مایا کہ فرما یا کہ کوئی (غیر مسلم) واخل نہیں ہوگا ہتم اہل شرک کی نسبت نہیں ہوگر استے) جیسے کا لے بیل کی کھال پر سام کی کھال پر سیاہ بال کی طرح۔ (حس صححے)

یعنی شرکین کی تعداد کے مقابلہ میں اس امت کی تعدادالی ہے جیسے کا لے بیل کے جسم پر سفید بالوں کی تعداد یا سرخ بیل کے بدن پر کا لے بالوں کی ، جبکہ اہل جنت کے مقابلہ میں امنہ مرحومہ کی تعداد نصف ہوگ گراہ پر بیان ہوا کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کوشر وع سے یہی امید تھی گراللہ نے ان کی توقع سے زیادہ آپ کوراضی فرایا ورتعداد دو تہائی فرمادی قال اللہ تعالیٰ: ' وَ لَسَوفَ یُعطِیکَ رَبُکَ فَتَر ضَیٰ''۔ (انضحی آیت: ۵)

باب ماجاء في صفة ابواب الجنة

(جنت کے درواز ول کا تذکرہ)

"بابُ امتى اللذى يلدخلون منه الجنة عرضه مسيرة الراكب المجوّدثلاثاً ثم انهم ليُضغَطُونَ عليه حتى تكادمناكبهم تزول". (غريب)

حضرت عبدالله بن عمرض الله عنه فرمات بن كدرسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا جس درواز ب معرى امت جنت ميں داخل موگ اس كى چوڑائى تيز رفتار كھڑ سوار كے تين (دن ياسال) كى مسافت ہے، پھر بھى اتنا تُحكُوم موگااس درواز بے پر كمان كے كند ھے اُتر نے كے قريب موجائيں۔

تشریخ:قوله: "السواکب المحود" بسینداسم فاعل را کب کاوصف بھی بن سکتا ہے اورسواری این گھوڑے کا بھی ، تجوید کے جیں این گھوڑے کا بھی ، تجوید کے معنی جید اور عمدہ بنانے کے جیں لینی جوخوب تیز چلنا ہو جبکہ " ثلاثا" بیں بھی دواخمال جیں کہ مراد تین دن ہویا تین سال کی مسافت ہو۔

قوله: "لَيْسَغُطُونَ" فَعُط كَمْعَىٰ دب جانے اور دبانے كے بيں يعنی رش واز دحام كی وجهان كائد ها پی جگہ ہے ہے ہے نے كتر يب ہوجائيں گے۔ يہ كنايہ ہے كثر ت سے ورنہ جنت ميں ياس ميں داخل ہونے ميں كی طرح تكليف نہيں ہوگی اگر چصراط پر پچھ کم وبيش مسائل ضرور بعض اہل ايمان كو پيش آئيں گے، مگر جنت كی حدود ميں واخل ہونے كے بعد يہ تمام مسائل ختم ہوجائيں گے، مع حذا يہ حديث سند كے اعتبار سے كمزور بھی ہے جيسا كرام م ترنہ گئے نے تصریح فرمائی ہے كرام م بخاری نے فرمایا ہے: "لِنحال دبن ابی بكر مناكير عن سالم بن عبدالله "۔

باب ماجاء في سُوق الجنة

(جنت کے بازار کے متعلق)

"عن سعيدابن المسيب انه لقى اباهريرة فقال ابوهريرة اسالُ اللهَ ان يجمع بيني وبينك في سوق الجنة فقال سعيداً فيهاسوق؟قال نعم الخ". (حديث غريب)

حضرت سعید بن میتب سے مروی ہے کہ ان کی ابو ہریرہ سعید نے بوچھا کیا اس (جنت) ہیں اللہ سے دعا کر تاہوں کہ وہ جھے اور آپ کو جنت کے بازار ہیں جمع کردے ہو سعید نے بوچھا کیا اس (جنت) ہیں بازار ہے؟ حضرت ابو ہریرہ نے نے فرمایا ہاں ہے! رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے جھے بتلایا ہے کہ جب اہل جنت اس (جنت) ہیں داخل ہوں کے تو وہ اپنے اپنے اعمال کے تفاضل کے مطابق اس میں سکونت پذیر ہوں گے، چھرد نیوی دنوں کے صاب سے (ہفتہ بھر کے بعد) بروز جمعہ ان کو تکلایا جائے گاتو وہ اپنے رب کی زیارت کے، پھرد نیوی دنوں کے صاب سے (ہفتہ بھر کے بعد) بروز جمعہ ان کو تکلایا جائے گاتو وہ اپنے رب کی زیارت (دیدار) کریں گے (گویا سب ایک مقام پرجمع ہوجا کیں گے) اور ان کورب کا عرش دکھائی دے گااور ان کے لئے بھر خبر نور کے اللہ تبارک و تعالیٰ جلوہ افروز ہوں گے جنت کے باغات میں سے ایک باغ میں ، اور ان کے لئے بھر خبر نور کے اللہ تبارک و تعالیٰ جائے ہیں گے در ان حالیہ جنت میں کوئی کمٹر نییں) مشک اور کا فور کے شیاوں پر وہ سے کے اور ان صالیہ جنت میں کوئی کمٹر نمیں) مشک اور کا فور کے شیاوں پروہ سے نہیں سمجھیں گے کہ کرسیوں پر بیٹھنے والے ان سے افضل ہیں نشستوں کے اعتبار سے (حضرت ابو ہریرہ فرماتے بیں کہ میں نے عرض کیا اسے اللہ کے در موالی کیا ہم اپنے رب کود کھے کیس گے؟ آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں از بان "ہمالکیا تمہیں سورج کے دیکھنے میں یا چوھویں رات کے چاند میں شک ہو کہا کہ نہیں! آپ

نے فرمایاای طرح تم شک نہیں کرومے اپنے رب کے دیدار میں (لیمن کوئی ابہام باتی نہیں رہے گااور نہ ہی استبعاد رہےگا)۔

چنانچاس مجلس میں کوئی نہیں بیچ کا مگراس سے روبرواللد کفتگوفر مائیں کے بالشاف، یہاں تک کدان میں سے ایک مخص سے فرمائیں مے اے فلان ولدِ فلان ! کیا تھے وہ فلان دن یاد ہے جبتم نے ایسا ویسا کہا تھا؟ چنانچہاسے دنیا کی کچھ بے وفائیاں اس کی یاد دِلائیں گے(لینی گناہ) پس وہ مخص کیے گااہے میرے رب! كياتم نے مجھے بيں بخشا ہے؟ الله فرمائيں مح كيول بيس ميرى وسعتِ مغفرت بى كى بدوات توتم اپنے اس درجه برفائز ہوا، دریں اثناءوہ ای مفتکو میں مشغول ہوں سے کدان کے اوپر سے ایک بادل ان کوڈ ھانپ لے گا سووہ ان پرایی (عمرہ) خوشبو برسائے گا کہ انہوں نے اس کی خوشبوکی طرح کوئی چیز نہیں یائی ہوگی، اور ہارا رب فرمائیں مے جاواس کرامت کی طرف جومیں نے تہارے لئے تیاری ہے،اور جوجا ہووہ لے لو، چنانچہ ہم ایک بازار میں آئیں مے جس کوفرشتوں نے گھیرر کھاہوگا (اس بازار کاعالم یہوگا کہ) نہ تو آٹھوں نے اس جیسا تجھی دیکھاہوگااور نہ بی تجھی کانوں نے سُناہوگا،اوردلوں میں اس کاتصورتک نہیں گذراہوگا،وہاں ہمارے سامنے ایس چیزیں پیش کردی جا کیں گی جیسا ہی ہم جا ہیں مے حالا نکہ نہ تو وہاں نیچ ہوگی اور نہ ہی شراء،اوراس بازار میں اہل جنت ایک دوسرے سے ملیں گے،آپ نے فر مایا کہاو نیجے در ہے والا ایک مخض اس جنتی کی طرف متوجه بوكر ملے گاجواس سے درجہ میں كمتر ہوگا حالانكه و ہال كوئي (دراصل) كمترنبيس ہوگا پس اس كم درج والے کووہ لباس پندائے گاجو بلندورجہ والے برہے، پس ابھی اس سے بات چیت ختم نہیں ہوگی کہ اس کےجسم برظا ہر ہوگا اس سے بھی اچھالباس ،اور بیاس لئے کہ کسی جنتی کے لئے مناسب نہیں کہ وہ جنت میں بریثان ہوجائے، پھرہم اپنے اپنے محلات کی جانب لوٹیس کے تو ہماری ہویاں ہمار استقبال کریں گی (یعنی ملنے کے لئے آئیں گی) سووہ ترحیب وہلیل لینی خوش آمدید کہیں مے اور یہ کدیقینا آپ جس حالت میں ہارے پاس سے علے محکے تصاس سے زیادہ حسن و جمال لے کرآئے ہیں! پس ہم جواب میں کہیں مے کہ آج ہم نے اپنے رب بروردگارکے ساتھ (بلابیانِ وتصورکیف) مجالست کی ہے اس لئے ہم جس طرح لوٹے ہیں ہم اس کے سزاوار ہیں۔

تشری لغات: قوله: "فی مقداریوم الجمعة" اس سراددیوی بفتے جتناوقفہ بھی ہوسکتا ہے گرزیادہ ظاہر ریدہے کددینوی سات دن کے بقدر جمعہ والا دن مراد ہے لین ہر جمعہ کے روز۔

قوله: "ويبرز"اى يظهر

قوله: "وَيَتَبَدَّىٰ"بَدَايَبدُوبمعنى يظهرويَتَجلّىٰــ

قوله: "ویجلس ادناهم" چونکه اونی بمعنی کم گرید اور نیلی درجے کے بھی آتا ہے جو یہاں مراد ہے لینی او پردالے درجوں سے نیچے اور بمعنی خسیس و نکته کے بھی آتا ہے جن کوعرف میں سفلکہ کہاجاتا ہے جو یہاں مراز بین اس لئے احتمال ثانی کی نفی فرمادی که "و مافیهم من دنی" یعنی جنت میں کمین اور نکمہ کوئی نہیں ہے۔ قوله: "نتمادون" مریة بکسرائمیم سے بمعنی شک کرنے کے ہے۔

قوله: "إلا حَاضَرَه" محاضره آمنے سامنے گفتگویعنی مکالمہ کو کہتے ہیں بینی اس بات چیت کے دوران کوئی حجاب یا کوئی تر جمان نہیں ہوگا۔

قوله: "غدراته" بفتاتٍ غدرة كى جمع باصل ميں بوفائى كواورد هوكه كوكتے ہيں گرگناه ميں چونكه عهد ربوبيت والتزام حقوق كى خلاف ورزى ہوتى ہاس لئے معصيت كوغدركها جاتا ہے، يتذكير إزديا وِشكر كے لئے ہے۔قوله: "مسالم تنظر "موق سے بدل ہے يعنى "ناتى سوقاً لم تنظر العيون النح "- قوله: "فيروعه"اى فيعجبه يعنى اس ادنى كواعلى جنتى كالباس پندآ جائے گا۔

قوله: "حتیٰ یُخیّلُ الیه"بصیغه مجهول ای یظهر علیه الن یعنی اول ملاقات میں اونی جنتی کے دل میں اعلیٰ لباس پررشک آئے گاتو ابھی ان کی بات چیت ختم نہیں ہوئی ہوگی کہ اس کے بدن پراس سے بھی اچھالباس ظاہر ہوجائے گا، اس سے ملتے جلتے مضمون کی حدیث حضرت انس سے مسلم میں بھی مروی ہے۔ (مسلم: ج:۲ص ۳۷۹)

صدیث آخر:۔ جنت میں ایک بازارہے جس میں خرید وفروخت نہیں ہے مگرتصاویر (شکلیں) ہوں گی مردوں اور عورتوں کی پس جب کو کی شخص کو کی شکل پیند کرے گا تو وہ اس میں داخل ہوجائے گا (لیعنی اس کی شکل اسی طرح بن جائے گی)

اس مدیث کوابن جوزیؒ نے موضوعات میں سے شار کیا ہے جیسا کہ حاشیہ توت السعندی پرہے بوجہ عبدالرحمٰن بن اسحاق کے مگرامام حاکم " نے ان کی دوسری حدیث کی تھیج کی ہے اور ابن خزیمہ نے اپنی تھی میں ان کی حدیث کی خزیم کے میں ان کی حدیث کی خزیم کے میں ان کی حدیث کی خزمایا ہے کہ "لیس بشنی منکو المحدیث"۔

چونکہاس حدیث میں'' دخل فیھا'' کےالفاظ سے بظاہر بیمعلوم ہوتاہے کہ وہ جنتی اس تصویر کے اندر

داخل ہوگا حالا تکہ بیقو مستبعد ہے اس لئے اس کی سند پر کلام ہوا گراس کا بید مطلب ہوسکتا ہے کہ تصویر سے مرادشکل ہونا ہے اور اس میں داخل ہونے سے مراد متشکل ہونا ہے لیعنی اس کی شکل مرکی شکل کی طرح ہوجائے گی لہذا اس میں استبعاد نہیں ہے۔

بناء بر ہرتقذ بریہ تبدیلی ذات میں نہیں ہوگی بلکہ ادصاف میں ہوگی ادر جنتی لوگ مسلسل حسن و جمال میں ترقی کرتے رہیں مے تو جس طرح دنیا کے فیشن کی کوئی انتہاء نہیں ہے اور وقاً فو قام نیانیا فیشن آتار ہتا ہے اس طرح جنت میں بھی ہوگا۔ (تد ہر)

باب ماجاء في رؤية الله تبارك وتعالى

(الله تبارك وتعالى كے ديدار كے بارے ميں)

"عن جريربن عبدالله البَجَلَى قال كُناجلوساعندالنبى صلى الله عليه وسلم فنظرالى القمر ليلة البدرفقال: انكم ستُعرضون على ربكم فَتَرونه كما ترون هذاالقمر، لاتضامون فى رؤيته فان استطعتم ان لاتُغلبُواعلى صلواة قبل طلوع الشمس وصلاة قبل غروبهافافعلواثم قرأ: "فسيح بحمدربك قبل طلوع الشمس وقبل الغروب". (صحيح)

حفرت جریر بن عبداللہ بحلی رضی اللہ عندسے مروی ہے فرماتے ہیں کہ ہم نبی سلی اللہ علیہ وسلم کے پاس بیٹھے تھے تو آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے چودھویں رات کے چا ندی طرف دیکھا اور فرمایاتم اپنے رب کے سامنے پیش کئے جاؤگے پس تم اس کودیکھو گے جیسا کہ دیکھتے ہواس چا ندکو، اس کے دیکھنے ہیں تمہارے سامنے کوئی آرٹہیں کی جائے گی (یاز حمت نہیں اٹھا وکے) پس اگرتم سے ہوسکے کہ (اپنے کا موں کی وجہ سے) تم سورج نکلنے سے پہلے اور اس کے غروب سے پہلے کی نمازوں میں مغلوب نہ ہوں تو ایسا ہی کرد! پھر آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے بہاے اور اس کے غروب سے پہلے کی نمازوں میں مغلوب نہ ہوں تو ایسا ہی کرد! پھر آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے بہاے اور اس کے خروب سے پہلے کی نمازوں میں مغلوب نہ ہوں تو ایسا ہی کرد! پھر آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے بہاے اس کے خروب سے بہلے کی نمازوں میں مغلوب نہ ہوں تو ایسا ہی کرد! پھر آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے بہاے اور اس میں مغلوب نہ ہوں تو ایسا ہی کرد! پھر آپ سلی اللہ علیہ وسلی ایسا ہوں کی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی کی تمازوں میں مغلوب نہ ہوں تو ایسا ہی کرد! پھر آپ سلی اللہ علیہ وسلی کی تعلیم کی اس کرد! پھر آپ سلی کرد! پھر آپ سلی کی تعلیم کی اس کرد! پھر آپ سلی کی نمازوں میں مغلوب نہ ہوں تو ایسا ہی کرد! پھر آپ سلی کی نمازوں میں مغلوب نہ ہوں تو ایسا ہی کرد! پھر آپ سلی کے دو کرد کی اس کرد! پھر آپ سلی کی نمازوں میں مغلوب نہ ہوں تو ایسا ہی کرد! پھر آپ سلی کی نمازوں میں مغلوب نہ ہوں تو ایسا ہیں کرد! پھر آپ سلی کرد! پھر کرد! پھر آپ سلی کرد! پھر آپ سلی کرد! پھر آپ سلی کرد! پھر آپ سلی کرد! پھر آپ

تشری : قول ان الاتُضامون "بضم الماء جبکه میم کو بالتشد پدوالتخفیف دونوں طرح پڑھ سکتے ہیں تخفیف کی صورت میں ضیم سے ہے بمعنی ظلم کے بعنی کوئی کسی کے آٹر نے ہیں آئے گا اور رکاوٹ نہیں ہے گا بلکہ سب لوگ باسانی دیکھ سکیں گے، جبکہ تشدید کی صورت میں انضام کے معنی میں ہے بمعنی از دحام کے بعنی اس دیدار میں کسی طرح مزاحمت نہیں ہوگی کہ بعض نہ دیکھ سکے بلکہ سب لوگ بغیر زحمت و بغیر از دحام کے اس طرح دیدار میں کسی طرح مزاحمت نہیں ہوگی کہ بعض نہ دیکھ سکے بلکہ سب لوگ بغیر زحمت و بغیر از دحام کے اس طرح

ویکھیں سے جیسے چودھویں کا چاند بغیروش کے دیکھا جاسکتاہے، بناء بر ہرتقد برتشید کا مقصدیہ ہے کہ نہ تو وہاں کوئی کسی برظلم کر کے اس کا حق دیدارچھین سکے گااور نہ ہی رش کی وجہ سے کوئی زحمت اٹھانی پڑے گے۔

بیصدیث اورای طرح و گیر متعددا حادیث اور قرآنی آیات الله تبارک و تعالی کی رویت پرصری ناطق

بیس کدابل ایمان آخرت میں دیدار الہی کی نعمت عظی سے سرفراز ہوں گے، اور یہی اہل النة والجماعة کا متفقہ
عقیدہ ہے جیسا کہ شرح عقا کدوغیرہ میں تفصیلا بیان ہوا ہے جبکہ معزز لدائی تمام نصوص میں تاویل کرتے ہیں
کیونکہ دہ ویدار الہی کے متل ہیں جیسا کہ ان کے اصول ہیں کہ ہر حکم کو مادی فلسفہ واسباب پر، پر کھتے ہیں تو بقول
ان کے چونکہ الله تبارک و تعالی کے دیدار میں بھی وہی شرائط ہونی چاہئے جو مادی اشیاء کے دیکھنے کے لئے
ضروری ہیں جبکہ اللہ عزوج ل ان اسباب سے عالی ویا کہ ہاس لئے اس کودیکھنامکن نہیں پس اس آیت "اللسی
فروری ہیں جبکہ اللہ عزوج ل ان اسباب سے عالی ویا کہ ہاس لئے اس کودیکھنامکن نہیں پس اس آیت "اللسی
زبھا ناظرة" ای طرح باتی نصوص ہیں بھی تاویل کرتے ہیں۔

ہمارے اہل السنة والجماعة كنزديك اليى تمام نصوص كوبلاتا ويل ظاہر پرد كھنااور حقيقى ويدار پر محمول كرنالازى ہے۔ كرنالازى ہے۔ كيونكہ تاويل خلاف ظاہر ہے اور جہاں تك معتزله كى وليل كاتعلق ہے تواس كا جواب يہ ہے كہ عالم آخرت كے احوال كودنيا كے حالات واسباب پر قياس كرنا قياس مع الفارق ہے۔ جب يہ پردہ أنهم جائے محالة اسباب كى تمام عمارات منہدم ہوجائيں گى۔

پھرصدیث باب میں ان دونمازوں کاذکران کی زیادہ اہمیت کے لئے بھی ہے اوراس لئے بھی کہ ان دونمازوں کے بھی کہ ان دونمازوں کاذکران کی زیادہ اہمیت کے لئے بھی ہے اوراس لئے بھی کہ ان دونمازوں کے قضاء ہونے کا خدشہ پایاجا تاہے۔ کہ جس کا دونمازوں کے عصر کا وقت مصروفیات کی بناء پر تنگ وخضر سامحسوس ہوتا ہے، نیز دیداراللی جس وشام ہوگا اس لئے ان نمازوں کی تاکید فرمائی۔
تاکید فرمائی۔

اس حدیث سے معلوم ہوا کہ نماز دیدار خداوندی کا ذریعہ ہے لہذا آ دمی جتنی زیادہ نمازیں پڑھے گا اتنائی کثرت سے دیدار نصیب ہوگا۔ علادہ ازیں جب کوئی کی سے ملنے جاتا ہے تواس کی ضیافت بھی کی جاتی ہے اور ملا قات بھی ، توشرف ملا قات کا ثبوت تو یہاں سے معلوم ہوا اور ضیافت کا ثبوت مسلم وغیرہ کی صحیح حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ آ دمی جتنی مرتبہ مجد میں جاتا ہے تو ہر مرتبہ جانے کے وض جنت میں اس کے لئے نول لین مہمان نوازی کا کھاتا تیار کیا جاتا ہے۔ (تدیر)

حدیث آخر: حضرت صُہیب رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے اس آیت "لملذین احسنواالم نحسنی و زیادہ" ۔ (یونس) جن لوگوں نے نیک کام کئے ہیں ان کے لئے بردی خوبی یعنی جنت ہے اوراس پر زیادتی ہے، کے بارے میں فرمایا کہ جب جنتی جنت میں داخل ہوجا کیں گے تو ایک پکار نے والا پکار کر اوراس پر زیادتی ہے، کے بارے میں فرمایا کہ جب جنتی کہیں گے کیا اللہ نے ہمارے چروں کوروشن ہیں کیا؟ اور ہمیں دونے سے جات ہیں بخشی؟ اور ہمیں جنت میں داخل نہیں فرمایا (پھرکون ساوعدہ؟) وہ (منادی) کہیں گے کیول نہیں! اس کے ساتھ ججاب اٹھا دیا جائے گا آپ نے فرمایا بخدا اللہ کود یکھتے سے زیادہ کوئی پسندیدہ نعمت ان کو عطانہیں کی (یعنی جائے ورانی رفع ہوگا)۔

صريت آخر: ــ "ان ادنيٰ اهل الجنة منزلةً لَمَن ينظر الى جِنانه وزوجاته الخ".

بِشَک جنتیوں میں سب سے کم درج والا وہ ہوگا جوا ہے باغات، اپنی بیویوں، اپنی نعتوں، اپنے فادموں اور اپنے تختوں (پلنگوں) کی طرف دیکھے گاجو ہزار سال مسافت کی بقدر بھیلے ہوئے ہوں گے جبکہ جنتیوں میں سے سب سے معزز اللہ کے نزدیک وہ ہوگا جواللہ کی ذات کوئیج وشام دیکھے گا، پھررسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے بیآ یت پڑھی: 'و جو وہ یہ و مشلِد نساضرة الی دبھاناظرة ''بہت سے چرے اس دن تروتازہ ہوں گے۔ مول گے، اپنے رب کی طرف دیکھتے ہوں گے۔

قوله: "لَمَن ينظر النع" يهال كلام مين تقديم وتاخير باصل مين لَمَن ينظر النع اسم إنَّ باور ادنى اهل المجنعة خرمقدم بي يونكه اصل مطلب بيب كه جوفض بزارسال كى مسافت بريجيلى موئى نعتول كى طرف ديكه كاوه ادنى جنتى باورجوفض الله كاديدار صح وشام كركا وه معزز جنتى بــــ

قوله: "جنانه" كبسرالجيم جمع جنت كى ہے۔

قوله: "زوجاته "زوجة کی جمع ہے۔

قوله: "نعيم" جمع نعت.

قوله: "خدم" جمع خادم اور 'سُور ' بلقسمتين جمع سريري ہے، دونوں حديثوں كى سند پرامام ترنديًّ في مختل منظم بنتي نبيس لگايا ہے۔

باب

"عن ابى سعيدالخدرى قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان الله يقول لاهل المحنة: يااهل الجنة فيقولون لبيك وسعديك إفيقول: هل رضيتم افيقول مالنالانرضى وقد اعطيتنامالم تُعطِ احداً من خلقك فيقول: اناعطيكم افضل من ذالك، قالواواى شئ افضل من ذالك قال أحِلَّ عليكم رضوانى فلااسخط عليكم ابداً". (حسن صحيح)

حضرت ابوسعیدخدری رضی الله عنه فرماتے ہیں که رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا بے شک الله تارک و تعالیٰ جنتیوں سے فرمائیں گے: اے جنت والو! پس وہ کہیں گے: لبیک اے ہمارے رب وسعد یک! پھر فرماویں گے: کیاتم راضی ہو گئے؟ تو وہ عرض کریں گے کہ کیا ہوا ہم کو کہ ہم خوش نہ ہوں گے حالا تکہ آپ نے ہمیں وہ سب کچھ عطافر مایا جوا بنی مخلوق میں سے کسی کوعطانہیں فرمایا، پس الله تبارک و تعالیٰ فرما کیں گے: میں تمہیں ان سب سے بہتر چیز و در رہا ہوں! جنتی پوچھیں گے: ان سب سے افضل کیا ہوسکتا ہے؟ الله جل جلاله فرما کیں گئے کہ میں تم پراپی رضامندی نازل کر رہا ہوں، چنانچے میں بھی بھی تم سے ناراض نہیں ہوں گا۔

تشریخ: قوله: "لبّیک و سعدیک" اس کے نغوی معنی اور صیغوں کے متعلق تحقیق" باب ما جاء فی التلبیة" جسم: ۳۵۵ پر گذری ہے فلیرا جع

قوله: "أحِلَّ عليكم دضوانى" بضم البمزة وكسرالحاء بمعنى انزل اتارد بابون، چوتكه جنتى مهمانوں ك طرح تياركھانوں سے لطف اندوز ہوتے رہتے ہيں نہ كمانے كى فكراورنہ ہى پكانے كى اليكن مهمان كے لئے صاحب خانہ كی طرف سے قدرواكرام كااظهار ضيافت كى تمام انواع سے بردى اطمينان بخش تكريم ہاں لئے الله تبارك وتعالى جنتوں كوسارى نعتيں فراہم كرنے كے بعدان كوسلى واطمينان دلائيں گے كہ ميں تم سے خوش موں اور يقينا بيالى بات ہے كہ برجنتى كول سے برتشم كااحساس كمترى، شرمندگى اور ماضى كى تمام كوتا ہيوں كے تصور سے تحبر المدن كاز الدكرتى ہے قال الله تعالى : "وعدالله المؤمنين والمؤمنات جنت تجرى من تحديد الانهار خالدين فيهاومسكن طبّبة فى جنّت عدن ورضوان من الله اكبر "" و التوبة آيت ٢٤٠٠) اور جب رضامندى ہوگى تو الل جنت الله كے ديدار سے بھی مستفيد و مخطوظ ہوتے رہيں گے۔

باب ماجاء في ترائى اهل الجنة في الغُرَفِ

(جنتیون کابالا خانون سے ایک دوسرے کود کھنا)

"عن ابى هريرة عن النبى صلى الله عليه وسلم قال ان اهل الجنة لَيَتَرَاءَ ونَ فى الغُرفة كسمايَتَرَاءَ ونَ المُرك كب الغربى الغارب فى الأفق او الطالع، فى تفاضل المدرجات فقالوايارسول الله! او لمنك النبييون؟ قال: بلى والذى نفسى بيده و اقوام امنوا بالله ورسوله وصَدَّق المرسلين". (حسن صحيح)

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جنتی ایک دوسرے کو بالا خانوں میں سے دیکھیں سے جیسے وہ (دنیا میں) دیکھتے ہیں شرقی ستارے کو یا مغربی تارے کوافق (کنارہ) میں ڈو جتا ہوایا طلوع ہوتا ہوا۔ درجات میں تفاوت کی بناء پر، پس صحابہ کرام نے عوض کیا:اے اللہ کے رسول! کیا بیان ہوں گے؟ آپ نے فرمایا ' آہاں' اور بخدا (انبیاء کے علاوہ) وہ لوگ بھی ہوں گے جواللہ پراوراس کے رسول پرایمان لائے ہول گے اور پنجبروں کی تقدیق کی ہوگی۔

تشری : قول این تساور کا مطلب بیا که خیلے درجوں والے اوپر کے درجات والوں کواس طرح دیکھیں گے بیسے دنیا میں ستاروں کو آسان کے کناروں پر طلوع وغروب کے وقت دیکھا جاسکتا ہے، یعنی بیٹا ت اورجنتیوں کے بیسے دنیا میں ستاروں کو آسان کے کناروں پر طلوع وغروب کے وقت دیکھا جاسکتا ہے، یعنی بیٹا ت اورجنتیوں کے محلات چونکہ لا متنائی خلاء میں واقع ہیں اور اس خلاء کا صابطہ بیا ہے کہ ہر جگہ سے دوسرا مقام ایسائی محسوس ہوتا ہے جیسا کہ ہم چاند کواو پر اور افتی پر محسوس کرتے ہیں ای طرح جوخص چاند پر ہوگا وہ زمین کو بھی چاند کی ما نندیا ستارے کی طرح اوپر یاافتی پر محسوس کرتے ہیں ای طرح جوخص خاند وردی کے دیکھنے میں کوئی دکا و نہیں ہوتی ہے البتہ کا کناتی نظام میں سیارے اپنی محدری حرکت کی وجہ سے غائب موجاتے ہیں جبکہ جنت میں محلات اپنی اپنی جگہ ساکن رہیں گے اورجنتی ہوجاتے ہیں جبکہ جنت میں محلات اپنی اپنی جگہ ساکن رہیں گے اورجنتی جب می جا ہیں تو ایک دوسر سے کود کھے سکیں گے البتہ وہاں کوئی عرش سے زیادہ قریب ہوگا اور کوئی کم قریب جس سے ان کے درجات متفاوت ہوں گے۔ (تد ہر)

باب ماجاء في خلود اهل الجنة واهل النار

(اہل جنت واہل دوزخ کے ہمیشہر ہے کابیان)

"عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: يجمع الله الناس يوم القيامة فى صعيدواحدثم يطلع عليهم رب العلمين فيقول: أ لَا يتَّبعُ كُلُّ انسان ماكانوايعبدون فيُمثِّلُ لصاحب الصليب صليبه ولِصاحب التصاوير تصاويره ولصاحب النارناره فيتبعون ماكانوا يعبدون ويبقي المسلمون فيطلع عليهم رب العالمين فيقول: أَ لَاتتبعون الناس؟فيقبولون نعوذ بالله منك ونعوذبالله منك؟الله وبناوهذامكانناحتي نَرى ربنا، وهويامرهم ويثبتهم ثم يتوارئ ثم يطلع فيقول أكاتتبعون الناس؟ الخ ". (حسن صحيح) حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ متارک وتعالیٰ قیامت کے روزلوگوں کوایک کھلے میدان میں جمع کریں گے اور پھررب الخلمین ان پرجلوہ فرما کیں گے اور فر مائیں گے: کیا ہر مخص اینے اپنے معبود کی پیروی نہیں کرتا (یعنی جوجس کی عبادت کرتا تھاای کے پیچھے جلا جائے) پس صاحب صلیب (سولی) کے لئے اس کی صلیب پیرمحسوں بنادی جائے گی اور مور تیوں والوں کے لئے ان کی مورتیاں ،اورصاحب نار کے لئے اس کی آتش (یعنی جوجس چیز کی عبادت کرتا تھاوہی معبوداس کے سامنے اُ بھرے گا) پس وہ تمام لوگ ان ان معبودوں کے پیچیے چلے جائیں سے جن جن کی وہ عبادت کیا کرتے تھے جبکہ مسلمان باتی رہ جائیں سے پس ان پررب العلمین جھانکیں سے (یعن بچلی فر مائیں سے) اور فر مائیں سے كياتم ان لوگوں كے پیچينېيں جاتى بس اہل ايمان كہيں محر ہم جھے سے الله كى بناه مائكتے ہيں وَ نَعُوذُ بالله منک، ہارایر وردگار (لینی معبود) تواللہ ہی ہاور یہی ہاری جگہ ہے (لینی ہم یہیں رہیں گے) یہاں تک کہ ہم اپنا پروردگارد مکیے لیں ،اوروہ (اللہ) بھی ان کو گھبرنے کا تھم دیں گے اوران کو ثابت قدمی دیں گے، پھراوجھل ہوکر پھر بجلی فرمائیں گے اور فرمائیں گےتم کیوں لوگوں کے ساتھ نہیں جاتے؟ وہ کہیں گے ہم جھے سے اللہ کی پناہ ما تکتے ہیں نعو ذہاللہ منک! ہارارب واللہ بی ہاورہم ای جگدانظار کرتے رہیں کے یہاں تک کدایے رب کودیکھیں!اوراللہ بھی ان کو تھرنے کا حکم دیں گے اور ان کو ثابت قدم رکھیں گے۔ صحابہ کرامؓ نے عرض کیااے اللہ کے رسول! کیا ہم اللہ کودیکھیں گے؟ آٹے نے فرمایا کیاتم چودھویں

رات کے چاندد کیسے میں ضرر پاتے اور پہنچاتے ہو؟ (لینی کوئی کئی کے دیکھنے میں مزاحم بنتاہے؟) صحابہ نے فرمایا جبیں اے اللہ کے رسول! آپ نے فرمایا توجمہیں بھی اُس وفت (لیعنی دیدار خداوندی میں) کسی طرح کا ضرر نہیں ہوگا، پھر اللہ تبارک و تعالی آن سے فائب ہوجائے گا اور پھراو پرسے ظاہر ہوکران کواپٹی پہچان کرائیں گے، پھر فرمائیں گے۔ اوراس ساتھ کے، پھر فرمائیں گے۔ اوراس ساتھ کے، پھر فرمائیں گے۔ اوراس ساتھ کے بل صراط رکھا جائے گا (لینی نصب کیا جائے گا) پس لوگ اس پرسے تیز رفار گھوڑے اور تیز اونٹ کی طرح گذریں گے اوران کا دربول 'اس بل پر'نسکم سکیتم "ربیا دیجا دیوگا)۔

اور باتی یہ جا کیں کے دوز نی لوگ توجب ان میں سے ایک گروہ جہنم میں ڈالا جائے گا تو اس سے پہر پو چھا جائے گا؛ کیا تو بھر گی ؟ تو وہ کہے گی : کیا اور بھی ہیں؟ چنا نچہ ایک گروہ مزید ڈالا جائے گا، اس سے پھر پو چھا جائے گا؛ کیا تو بھر گی ؟ (غرض گروہ درگروہ ڈالتے ڈالتے) یہاں تک کہ جب سب اس کے اندر جھونک دیئے جا کیں گے تورخمن اپنا قدم اس پررکھ دیں گے (کسمایلیتی بیشانه) اور جہنم کا ایک حصد دو سرے حصد ہے سے جائے گا گھر اللہ پو چھے گا'دہ س!' وہ کہے گا ہیں! ہس! ہیں جب اللہ تعالی جہنم کا ایک حصد دو سرے حصد ہے سے سے گا گھر اللہ بوجھے گا'دہ س!' وہ کہے گا ہیں! ہس! ہیں جب اللہ تعالی جنت والوں کو دوز خ میں، تو موت کو لایا جائے گا گریبان (گردن) سے پیر کرکر، پس اسے اس دیوار پر کھڑ اکر دیا جائے گا جو اہل جنت واہل تارک درمیان ہوگی، پھر کہا جائے گا گواہل جنت واہل تارک درمیان ہوگی، پھر کہا تو وہ خوش ہو کر جھا تکیں گے کھر پکارا جائے گا اے اہل تار! تو وہ خوش ہو کر جھا تکیں گئے کہ ایک خالے اہل تار! تو وہ خوش ہو کر جھا تکیں گئے کہ اہل جنت واہل دوز خ سے کہا جائے گا ،کیا تا وہ وہ خوش ہو کر جھا تکیں گئے اس کو پہچا نے ہو؟ تو بیا دروہ مسب کہیں گے ہم نے اس کو پہچا نیدوہ موت ہے جو ہم پر مقرر دو مسب کہیں گے ہم نے اس کو پہچا نا ہوہ موت ہی جو ہم پر مقرر دو مسب کہیں گئے ہم نے اس کو پہچا نا ہوہ موت ہے جو ہم پر مقرر دو مسب کہیں گئے ہم نے اس کو پہچا نا ہے وہ می پر مقرر دو مسب کہیں گئے ہم نے اس کو پہچا نا ہی وہ موت ہیں آئے گا اور دیوار پر اچھی طرح ذرخ کر دیا جائے گا (یعنی کیک بارگی خاتمہ کر دیا جائے گا : اے جنت والو اقرام ہے گا : اے جنت والو اقرام ہے گا : اے جنت والو اقرام ہوت نہیں آئے گی اور اے دوزخ والو! اب کردیا جائے گا : اے جنت والو اقرام ہوت نہیں آئے گی اور اے دوزخ والو! اب ہوشد ندہ در ہوائے گا : اے جنت والو اقرام ہوت نہیں آئے گی اور اے دوزخ والو! اب ہوشد ندہ در ہوائے گا : اے جنت والو ان میں ہوشد نہیں آئے گی اور اے دوزخ والو! اب

تشریخ:قوله: "فی صعید" کشاده، بموارز مین قوله: "فه یطلع علیهم" طلوع کالفظ عمواً نورانی مخلوق کے الفظ عمواً نورانی مخلوق کے محاور دوث کی جمیع نورانی مخلوق کے موارد ہونے کے لئے استعال ہوتا ہے چونکہ اللہ تبارک وتعالی کا دیدار سات سے منزه، پاک و متعالی ہے اس لئے یہاں مراد ظہور یعنی جلی ہے، پھر قیامت میں اللہ تبارک وتعالی کا دیدار کس سات سے منزه، پاک و مقالی ہوتا ہے جہ اللہ البالغة کے باب " ذکر عالم المثال "میں اس پر تفصیلی کس طرح نصیب ہوگا؟ تو حضرت شاہ ولی اللہ نے جمة الله البالغة کے باب " ذکر عالم المثال "میں اس پر تفصیلی کے معالی کے معالی کے معالی کے معالی کا دیدار کا معالی کا دیدار کے معالی کا دیدار کے معالی کے معالی کے معالی کا دیدار کی معالی کے معالی کے معالی کے معالی کی معالی کے معالی کی معالی کی معالی کے معالی کی معالی کے معالی کی معالی کی معالی کے معالی کے معالی کی معالی کی معالی کی معالی کی معالی کے معالی کی معالی کی معالی کے معالی کے معالی کی معالی کے معالی کی معالی کے معالی کی معالی کے معالی

بحث فرماتے ہوئے ابن الماجنون كا قول نقل كيا ہے:

"ان كل حديث جاء في التنقل والرؤية في المحشر فمعناه: انه يُغَيِّرُ ابصارَ خلقه فيَسرَونَه نازلاً مسجليًا ويناجى خلقه ويخاطبهم وهوغير متغيّر عن عظمته ولامنتقل ليعلمواان الله على كل شيع قدير".

یعنی ہروہ حدیث جواللہ تعالی کے نظل ہونے اور محشریں اسے دیکھنے کے بارے میں ہو، تواس کا مطلب یہ ہے کہ وہ اپنی مخلوق کی آنکھوں میں تبدیلی کردیں گے پس وہ لوگ اللہ تعالیٰ کواُتر تا ہوا، بخلی کردیں گے پس وہ لوگ اللہ تعالیٰ کواُتر تا ہوا، بخلی کرتا ہوا دیکھیں گے اور اپنی مخلوق سے سرگوشی فرمائیں گے اور ان سے بات چیت کریں گے جبکہ وہ اپنی عظمت سے نہیں بدلیس گے اور نہی منتقل ہوں مے (بیصرف اس لئے) تا کہ لوگ جان لیس کے اور نہی منتقل ہوں مے (بیصرف اس لئے) تا کہ لوگ جان لیس کے اور نہی منتقل ہوں مے (بیصرف اس لئے) تا کہ لوگ جان لیس کے اور نہی منتقل ہوں مے (بیصرف اس لئے) تا کہ لوگ جان لیس کے اور نہی منتقل ہوں میں اس کے اور نہیں کہ اللہ تعالیٰ ہر چیزیر تا در ہے۔

اگرچہ امام شاہ ولی اللہ نے ایسی تمام روایات کوظا ہر پرحمل کرتے ہوئے عالم مثال پردلیل بنایا ہے اوراصولی طور پرنصوص کوظا ہر پرمحمول کرنا ہی اسلم طریقہ ہے اِلا بید کہ کوئی ناگز بروجہ تا دیل کوضروری کردے، تب تاویل کاراستہ اپنایا جائے گا۔

یہاں ابن الماجشون کا قول صرف تقریب الی الفہم کے لئے نقل کیا گیاہے کیونکہ اس سے حدیث الباب کے بیجھنے میں بڑی حد تک مدد ملتی ہے کہ اہل اسلام بھی اس کونہیں پہچانمیں سے اور بھی پہچان لیس گے۔ (تدبر)

قول المسلمون "الروايت مين كوياس مقام پراخقار ج جبكه هي المسلمون "الروايت مين كوياس مقام پراخقار ج جبكه هي سي كه : "و تبقی هذه الامة فيها منافقو هاالنخ الين باقی الل اديان چل جائيں ع جبكه السامت كے مسلمان اور منافق ميدان محشر ميں باقی ره جائيں عے جبيا كه حديث كة خريس بهي اس كی طرف اشاره ہے كه الل جنت تو تيز گھوڑوں اور اونٹوں كی طرح چلے جائيں عے "و يبقى اله الساد النح "اگر چه يهاں الل نار سے مراد دوسرے كفار بهي بوست روى كى وجه سے ابھى تك راسته ميں بول عے۔

قوله: "فیقولون نعو ذبالله منک " عارضة الاحوذی میں ہے کہ چونکہ ان اوگوں نے ابھی تک اللہ تارک وتعالی کونہیں بچپانا ہوگاس لئے وہ سیجھ کرکہ اللہ تو فحشا اور باطل کا حکم نہیں دیتا بھر ہمیں کیے کہا جارہا ہے کہ آن اہل باطل کے ساتھ کیوں نہیں جاتے ؟ شاید ریکوئی استدراج ہے اس لئے وہ پناہ مانگیں گے، کیونکہ دنیا میں تو وہ اپنا میں کی جانے تھے کہ اللہ تبارک وتعالی ہمیشہ تی بات فرماتے ہیں اور اس لئے جب

اللَّدا خرى باران كوايى بيروى كاحكم ديس محتووه فورا أخف كمر عبول محـ

قول ان الله المحارون المنهم الآء جبكراء كى تشديد وخفيف دونوں جائز إلى شدكى صورت ميں به ضرر سے شتق ہے جبكة خفيف كى صورت ميں ضير سے شتق ہے معنى دونوں صورتوں ميں ايك ہى ہے۔ كيونكه خمير راجح ہے ضرركى طرف يعنى جس طرح تهميں چودھويں رات كے جاند كھنے ميں كوئى ضرر نہيں ہوتا اسى طرح الله كديدار ميں بھى كوئى ضرر نہيں ہوگا يعنى مزاحت نہيں ہوگى، پھر تصارون باب تفاعلى كى خاصيت كى بناء پرجانبين سے ديدار ميں بھى كوئى ضرر نہيں ہوگا يعنى مزاحمت نہيں ہوگى، پھر تصارون باب تفاعلى كى خاصيت كى بناء پرجانبين سے تعلى كوئة تعنى ہے، يعنى كوئى كى كا مزاحم نہيں بنتا ہے گا جيسے بدرد كيھنے ميں كوئى كى كا مزاحم نہيں بنتا۔ قولد: "فيم يتو ادى" يعنى مكالم شقطع فرمادے گا۔

قوله: "فَيُعَرِّفُهم نَفْسَه" الم ترفريُّ نے باب كَ آخريس اس كا مطلب بيان كيا ہے يعن 'يتجلّىٰ لهم "يعن ان صفات كے ساتھ جَلَىٰ فرما كيں گے جن كواہل ايمان جانتے ہيں۔

قوله: "مثل جیادالمحیل المخ" یہاں اختصارہے جبکہ دیگر سیح روایات میں ہے کہ بعض بحلی کی طرح صراط عبور کریں گے، گویایہاں عام اہل ایمان کا ذکرہے جبکہ دوسری روایات میں تفصیل ہے۔ قوله: "اُوعِبُوا" بصیغہ مجہول ایعاب مکمل کرنالینی سارے ڈالے جائیں گے۔

قوله: "فَدَمَه النج" بي متشابهات ميں سے بحس كے بارے ميں امام ترفدي في اسلاف كا قول اس باب ميں بھى نقل كيا ہے اور ہم نے اس پر تفصل بہلے بحث كى ہے فلا نعيد ها۔ (ويكھئے تشريحات ترفدى: ص: ٢٠٠٥ مناب ماجاء فى نزول الرب تبارك وتعالى الى السماء الدنيا كل ليلة "قبيل ابواب الوتر) غرض منصوص كا انكار نہيں كيا جائے گا اور كيف بيان كرنے سے اجتناب ضرورى ہے جبكہ عندالضرورت مناسب تاويل كى جائے گا۔

صدیث آخر: "اُتِی بالموت کالکبش الاملح الخ" یعنی قیامت کون موت کولا یا جائے گا جوسفید مائل بسیا بی رنگ کے مینڈھے کی شکل میں ہوگی سابقدروایت میں تھا کہ 'مُلَبًّا'' ہوگی یعنی گردن سے پکڑی گئی ہوگی اتبداصل میں اس کو کہتے ہیں جس کے پڑے یا گریبان بنسلی کی ہڈی پرجمع کرکے پکڑا جائے، چنانچہ اسے ذریح کرنے مائل جنت کی خوشی کی انتہاء ندرہ کی اور دوزخ والوں نے م کاکوئی منتہاء ندہوگا حی گیا گرکوئی خوشی یا تم سے مرتا تو یدونوں فریق مرجاتے مگروہاں تو موت نہیں آتی ، ابن تیمیدوابن قیم جہنم کے فناء کے قائل ہیں مگریہاں کا تفرد ہے۔ جیسا کہ پہلے بار ہاعرض کیا جاچکا ہے کہ عالم مثال میں معانی کا مجسم ہونا کوئی

انہونی بات نہیں فتذکر حضرت شاہ صاحب نے جہ الله البالغه میں عالم مثال برتفصیلی بحث کی ہے حاشیہ قوت المعندی میں دوسری توجیہ ذکر کی گئی ہے جوآسان ترب فلیظر من شاء۔

باب ماجاء حُقَّتِ الجنة بالمكارِه

وحُقَّتِ الناربالشهوات

(جنت نا گوار بول کے ساتھ اور جہنم ہؤ سُوں کے ساتھ گھیری گئی ہے)

"عن انس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: حُفّتِ الجنة بالمكاره وحُفّتِ النار بالشهوات". (حسن غريب صحيح)

جنت کو تکالیف کے ساتھ گھیرا گیا ہے اور دوزخ کوشہوتوں کے ساتھ گھیرا گیا ہے۔

تشرت : قوله: "محفّت "بسیخه بحبول هانسب بمعن جاب کرنے، وُها پنے اورا حاط کرنے کا تا ہے۔ قبوله: "الممکاره" کروه کی جمع ہے جو چیز طبیعت کونا گوارگذرے، لینی جنت اور جہنم دونوں کو جابوں میں مجوب بنایا گیا ہے تاہم جنت کے پردے امور شاقہ ہیں جبکہ جہنم کے بجاب امور مرغوبہ ہیں البتہ اتنا سافر ت ہے کہ جنتی دراصل جنت کا طالب ومتلاثی ہوتا ہے گر جنت میں جانے کے لئے اُس جاب کوچاک کرنا اور عبور کرنا پڑتا ہے جو مشقتوں کا مرقع ہے جیسے جہاد، نماز، روزہ وغیرہ جبکہ جہنمی دراصل ان خواہشات کے میچھے بھا گا ہے اور پھران میں واقع ہوجا تا ہے جو دوز خ کے اوپر جاب کی صورت میں موجود ہیں گران میں گھتے ہی وہ جہنم میں جاگرتا ہے یا مستحق ہوجا تا ہے۔

غرض جنت ہیں جانے کے لئے جنت ہی کی طلب ضروری وناگزیر ہے۔جبکہ دوزخ میں جانے کے دوزخ کی نیت وطلب شرطنیں بلکہ جہنم کے إردگر دخواہشات کے جال ہیں پھنسنا بھی کافی ہے۔ (تدبر) حدیث آخر:۔ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا جب اللہ نے جنت اور جہنم کو پیدا کیا تو جرئیل امین کو جنت کی طرف بھیجا اور فرمایا جنت دیکھ لواوران چیزوں کو دیکھ وجو میں نے جنت والوں کے لئے اس میں تیار کی ہیں، چنانچہ جرئیل نے جنت کی طرف نظر کی اوران نعمتوں کی طرف بھی جواللہ نے اہل جنت کے لئے اس میں تیار کی ہیں، آپ نے فرمایا پس وہ (جرئیل) واپس نعمتوں کی طرف اور فرمایا بس وہ (جرئیل) واپس لوٹے اللہ کی طرف اور فرمایا بس وہ (جرئیل) واپس لوٹے اللہ کی طرف اور فرمایا بس داخل ہوگا!!! پس

اللہ نے اس کے بارے میں تھم دیا۔ چنا نچہ وہ دھواریوں کے ساتھ گھیری گئی پھر قرمایا دوبارہ اس کی طرف جا وَاور ان پیز وں کی طرف دیکھوجو میں نے جنت والوں کے لئے اس میں تیار کی ہیں آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے قرمایا کہ حضرت جرمیان واپس جنت کی طرف لوٹے تو وہ کھا کہ وہ تو وہواریوں کے ساتھ گھیر دی گئی ہے تو وہ واپس اللہ کی طرف لوٹے اور عرض کیا تیری عزت کی تم ! اب یقینا مجھے ڈرہ کہ اس میں کوئی وافل نہیں ہوگا ، اللہ نے فرمایا جا وَجہٰم کی طرف اور اس کی طرف اور ان کی طرف بھی جو میں نے جہنیوں کے لئے اس میں تیار کی فرمایا واجہٰم کی طرف اور اس کی طرف اور ان کی طرف ور بہت کہ رہا ہے (یعنی شدت جوش سے متلاطم ہیں، پس انہوں نے ویکھا کہ اس کا ایک حصہ دو سرے حصے پر چڑھ رہا ہے (یعنی شدت جوش سے متلاطم ہیں، پس انہوں نے ویکھا کہ اس کا ایک حصہ دو سرے حصے پر چڑھ رہا ہے (یعنی شدت جوش سے متلاطم ہیں، پس انہوں نے ویکھا کہ اس کا ایک حصہ دو سرے حصے پر چڑھ وہ ہو ہو اس کے بارے ہیں جو بھی سے گا وہ اس کے بارے ہیں جو بھی سے گا وہ اس کے بارے ہیں جو بھی اور عرض کرنے گئی جبر کیل سے اب جا واس کے باس چنا نچہ جر کیل اس کے باس آئے (اور لوٹ کرآئے) اور عرض کرنے گئی تیری عزت کی اس کی جس کی گر می گا وہ اس میں داخل ہوجا ہے گا ہر حس سے کوئی نہیں بھی سے کوئی نہیں کی سے گا ہر خص اس میں داخل ہوجا ہے گا۔ (حس سے کی کوشش میت کے احوال سن کراس کی طبح کرے گا اور اس میں جانے کی کوشش ور فواہش کرے گا۔

قوله: "لقدخف أن الايدخلَهَا اَحَد" لعن جنت مين جاناچونكمشقتول كى برداشت برموتوف كرديا گيا بها انديشه به كدان تكاليف كوكى برداشت نبيل كرسك كا، كيونكنفس توخوابشات كدر په ربتا به-

قوله: "لایسمع بهااحدفید خلها" یعنی دوزخ کے بارے میں جوبھی سُنے گا کروہاں آگ ہو ہو۔ اس سے ڈرے گا اور بچنے کی ہرمکن کوشش کرے گا۔

غرض جنت ودوزخ اورانسان کے درمیان کچھ واسطے ہیں جونفس سے شروع ہوکران دونوں پرختم ہوجاتے ہیں تاہم جنت اورنفس کے ماہین واسطہ وسلسلہ دشوار یوں کا جموعہ ہے، جسے عبور کرنے کے لئے نفس کواس دشوار گذار پہاڑ پر چڑھانا، تھکانا اور ماندہ کرنا پڑتا ہے۔ جبکہ دوزخ اورنفس کے درمیان خواہشات کی ایک ایک دلدل پھیلی ہوئی ہے کہ اس میں قدم رکھنے سے آدی خود بخو ددھنستار ہتا ہے اللّا یہ کہ اللّه کافضل شاملِ حال ہوکرآدی کی دشکیری فرمائے، وہ مباح امور جونفس کوم غوب ہیں لیکن وہ حرام خواہشات کی طرف تھینچتے ہیں وہ موکرآدی کی دشکیری فرمائے، وہ مباح امور جونفس کوم غوب ہیں لیکن وہ حرام خواہشات کی طرف تھینچتے ہیں وہ مولیاس دلدل کے سواحل ہیں۔

باب ماجاء في احتجاج الجنة والنار

(جنت اور دوزخ میں بحث ومباحثه کابیان)

"إحتَجَّتِ البحنة والنارفقالت البحنة يدخُلُنِي الضعفاء والمساكين وقالتِ الناريد خلني التعقم بِكِ مِمّن شئتُ وقال النارانتِ عذابي اَنتَقِمُ بِكِ مِمّن شئتُ وقال للجنة انتِ رحمتي اَرحمُ بِكِ مَن شِئتُ". (حسن صحيح)

جنت اوردوزخ میں تکرار (بحث) ہوئی پس کہاجنت نے میرے اندر کمز وراور مسکین (غریب) لوگ آئیں گے اور کہادوزخ نے میرے اندر کر شالم) اور مغرورلوگ داخل ہوں گے! پس اللہ نے (محاکمۂ) فرمایا جہنم سے تو میراعذاب ہے میں تیرے ذریعہ بدلہ لیتا ہوں جس سے چاہوں! اور جنت سے فرمایا تو میری رحمت (کااثر) ہے تیرے ذریعہ میں جس بر چاہوں مہر بانی کرتا ہوں۔

تشرت : قوله: "إحتجت"احجاج اورمحاجه اسن اسن موقف پر نجب یعنی دلیل قائم کرنے کو کہتے ہیں مطلب سے سے کہ جنت نے اپنی برتری وبہتری کے لئے سے دلیل دی کہ میرے اندرا یسے لوگ آئیں گے جواگر چہ بظاہر حقیرلگ رہے ہوں گے معرعنداللہ وہ بہت کبیر ہوں گے۔لہٰذا میں بڑوں کی آرام گاہ ہوں تو میں تجھ سے افضل ہوئی۔

جہنم کا استدلال یہ تھا کہ میرے اندر بڑے بڑے متکبر (تمیں مارخان) آئیں گے اور میں ہی ان کو کچل کے رکھ دوں گی اور جواپنے قدم کے بنچ ایسے ایسے مغروروں کوروند دے اس کی بڑائی وافضلیت میں کیا شہرہ ہوسکتا ہے؟؟؟

پس دونوں میں اللہ عزوجل نے فیصلہ فرمایا کہ ایک کو اپنے اولیاء پرمہر بانی کے لئے بنایا ہے اور دوسر کے کو شمنوں سے انتقام لینے کے لئے پیدا کیا ہے۔ لہٰذا ہرا کیکا کام الگ الگ ہے جبکہ تفاضل وہاں ہوتا ہے جہاں مجانست ہوتو جب ہرایک کی ذمہ داری ہی الگ الگ ہے تو تفاضل کا سوال ہی پیدائیس ہوتا جیسا کہ فقہاء فرماتے ہیں کہ اختلاف جنس کی صورت میں رہائے تفاضل نہیں ہوتا۔ (تدبر)

پھرظا ہریہ ہے کہ یہ مکالمہ ومحاجہ تولی شکل میں ہوا ہے اور اس کے لئے شعور کا ہونا آگر چہ لازی نہیں لیکن جنت ودوزخ میں اس مکالمہ کے دوران شعور پیدا کرنا اللہ کے لئے کوئی مشکل نہیں اور یہ بھی لازمی نہیں کہ ان میں یہ شعورا بھی بھی باتی ہو۔ (تفکر)

باب ماجاء مالاً دنى اهل الجنة من الكرامة

(سب سے کم درجے کے جنتی کے اعزاز کابیان)

"ادنى اهل الجنة الذى له ثمانون الف خادم واثنتان وسبعون زوجة وتنصب له قبّة من لؤلؤوزبرجد وياقوت كمابين الجابية الى صنعاء". (غريب)

ادنیٰ (معمولی) جنتی وہ ہے جس کے ای ہزارخادم ہوں گے اور بہتر بیویاں ہوں گی اور اس کے لئے موتی، زمرداوریا قوت کا (اتنابرا) خیمہ نصب کیا جائے گاجتنا جاہیا ورصنعاء (مقاموں) کے درمیان فاصلہ ہے۔

ای سندسے ریجی مروی ہے کہ اہل جنت میں سے جوبھی مرتا ہے چھوٹا ہویا بڑاوہ جنت میں تمیں ۲۰۰۰ سال کا بنادیا جائے گاوہ اس سے بھی بھی متجاوز نہیں ہوں گے اور یہی عمر اہل تار کی بھی ہوگی۔

ای سندسے بیجھی مردی ہے کہان (جنتیوں کے سر) پرتاج ہوں گے جن کا ادنی موتی مشرق ومغرب کے درمیان کوروشن کرےگا۔

تشری : قوله: "زبوجد"زمر دے مشابدایک قیمی پھر ہے جو مختلف رنگوں کا ہوتا ہے مصری ہرے رنگ کا اور قبر می کا زردرنگ کا ہوتا ہے۔

قوله: "یاقوت" مشهور قیمتی پھر ہےاس کے بھی مختلف رنگ ہوتے ہیں سُرخ، نیلا، زرداور سفید۔ قبوله: "جابیه" شام کے ایک علاقے کا نام ہے جبکہ "صنعاء " بمن میں ہے۔ یعنی پینے مہان مختلف قیمتی پھرسے مرکب ہوگا پھریہ بہتر عور تیں جو رعین بھی ہو سکتی ہیں اور دنیا کی عور تیں بھی۔

قوله: "يو دون" اى يُصيَّرُونَ يعنى ان كَوْسِ سال كى عمر مِن لا ياجائے گا پس چھوٹوں كى عمر بوحادى جائے گى اور بروں كى كم كردى جائے گى كويا يہاں تين سال كى كسر ذكرنبيں كى گئى ہے للبذااس كا معاذين جبل كى حديث سے تعارض نہيں ہے نيز بيحديث ضعيف بھى ہے۔

چونکہ بیروایت ضعیف بھی ہاں لئے اس کامسلم کی روایت سے بھی تعارض نہیں کہ''صف ادھم دع امیص المجند '' بعنی جنتیوں کے بچے کیڑوں کی طرح بلاروک ٹوک اپنی مرضی سے گھومتے ہوں گے،اگر اس حدیث کوچے مانیں تو پھرتطیق دوطرح دی جاسکتی ہے کہ ان کو پیٹہیں چلے گا کہ ہم پہلے دعامیص کی طرح لیمی چھوٹے سے تھے، یا مطلب بیہ ہے کہ دعامیص جنتی بچوں لیمی فیلمان کے لئے فرمایا گیا ہے۔ قوله: "التيجان" كبسراليا وتاج كى جمع ہے۔

قوله: "منها"اي من التيجان_

قوله:"لتضيئ "اي تنوّر ـ

حديث آخر: المؤمن اذااشتهي الولد في الجنة كان حمله ووضعه وسِنّه في ساعة كما يشتهي". (حسن غريب)

مؤمن جب جنت میں اولا دکی خواہش کرے گا تواس کاحمل، زیگی اوراس کی عمر (یعنی جنتیوں کے برابر)ای وفت ہوجائے گی جیسا ہی وہ چاہےگا۔

امام ترفدی نے اس مدیث کے بعداہل علم کے دوقول نقل فرمائے ہیں کہ آیا جنت میں ہے پیداہوں کے یا نہیں؟ ترجیح اس کودی ہے کہ اگر چاولا دہو سکتی ہے تا ہم جنتی لوگ اولا دکی خواہش نہیں کریں گے۔ چونکہ دنیا میں اولا دکی خواہش کچھ عوارض پر بین ہے مثلاً کام کاج میں تعاون، گھر کی رونق نسل کی بقاء وغیرہ وغیرہ اور یہ عوارض جنت میں نہیں ہیں اس لئے وہاں خواہش کا مجھ مطلب نہیں، دنیا میں بہت سے لوگوں کود یکھا گیا ہے جو کی اور عمرہ کرنے کی استطاعت رکھتے ہیں مگر وہ یہ سعادت حاصل نہیں کرنا چا ہتے وہ یورپ کوتو بار ہا جانا لیند کرتے ہیں کیکن ترمین کی طرف کو چ نہیں کرتے جبکہ اس کے بھس بہت سے ایسے بھی ہیں جو بجائے یورپ کے اپنی جمع ہیں تو بجائے یورپ کے اپنی جمع ہیں جو بجائے یورپ کے اپنی جمع ہیں جو بجائے یورپ کے اپنی جمع ہیں جو جائے یورپ کے اپنی جمع کے دعمرہ پر خرچ کرتے ہیں لہذا کی چیز کا امکان اس کی خواہش کو مستمرم نہ سمجھا جائے۔

باب ماجاء في كلام الحورالعين

(حورعين كي تفتكو كابيان)

"ان في الجنة لَمُجتَمَعاً لِلحور العين يرفعن باصوات لم يسمع الخلائق مثلها يَقُلنَ:

ندسن السخدالدات فسلا نبید
وندس السنداعدات فسلا نبید
وندس السراضیات فسلا نسخط
وندس السراضیات فسلا نسخط
طُوبی لِسمن کان لنساو کُنسا لسه (حدیث غریب)
حضرت علی رضی الله عندسے مروی ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ بلاشبہہ جنت میں

حور عین کے جمع ہونے کی ایک جگہ ہے وہ (وہاں جمع ہوکر) ایسی آوازیں بلند کرتی ہیں (یعنی گاتی ہیں) کہ خلائق نے جمعی و لیکی (نئر یلی) آواز نہیں سن ہے (بیگانے ہمارے وزن شعری پراگر چے نہیں مگران کے کہنے کے مطابق ہوں گے) کہتی ہیں:

''ہم سدار ہنے والی ہیں بھی فنانہیں ہوں گی ہے ہم ناز ونعت میں پلنے والی ہیں بھی محتاج نہیں ہوں گی۔ ہے ہم شاد ماں رہتی ہیں بھی ناراض نہیں ہوں گی ہے مبارک ہواس کو جو ہمارے لئے ہیں اور ہم اس کے لئے ہیں۔''

تشری : قوله: "المحود "مورآ می جع بے بمعنی گوری کے اور عین بکسرالعین جع ہے عینآ می جس کے معنی بڑی آئھوں کا سفید حصہ تیز سفید اور سیاہ حصہ تیز سیاہ مور تی کا بیں۔ تیز سیاہ مودونوں صور تیں خوبصور تی کی بیں۔

قوله: "لَمُجتَمعاً"لام تاكيد إورمجمم ظرف كاصيغه-

قوله: "خِالدات "اى دائمات_

قوله: "فلا نبيدُ اي لانهلگ ولانموت_

قوله: "بَادُ" بَمعنى فَنَاكِ آتاب_

قوله: "ناعمات" بمعنى متعمات كے ہـ

قوله: "فلانباس"ای لانفتقر ولانحتاج۔

قوله:"الراضيات"اى عن ربناياايين شومرول سيراضى راتى يس

قوله: "فلانسخط"اى لانغضب بم تاراض بيس موتى بيس كى حال يس بحى _

قسولسه: "طُسوبسی" خوش خری اورخوش گواری کو کہتے ہیں، ارشادر بانی ہے: 'فہسم فسی روضة یُحبرون ''۔ (روم، آیت: ۱۵) ترجمہ: وہ (بہشت کے) باغ میں خوشحال ہوں گے۔

چونکہ حواس کالذتوں میں اپنااپنا حصہ ہوتا ہے جو ہرایک کا دوسرے سے مختلف ہوتا ہے لہذا جنت میں ان سب لذتوں کا انتظام کیا گیا ہے۔ وہاں کھانے کی اشیاء بسیار ومزیدار ہیں، سوٹکھنے کے لئے بے شاراً عطار، دکھنے کے لئے لئے اروآ بشار، انہاروکو ہساراور طرح کے دیگر حسین مناظر اور غلمان وحور قطار دیں۔ اور چھونے کے لئے گل بدن حوریں ابکار، انتہائی حیاء دار ہوئی اور گنگنانے کے لئے کلمات

طیّبات جبکہ سننے کے لئے حورعین کے نغے اور صرب الاوتبار علی شبط الانھار ، تعت الاشجار ، مع هذا ضیافة الجبار و فض الابكار اور سب سے بوی تمت باری تعالی کا دیدار ہے جس پرخواہشات وتمناؤں کی انتہاء و تحیل ہوجاتی ہے۔

باب ماجاء في صفة إنهار الجنة

(جنت کی نهروں کابیان)

"ان في الجنة بحرالهاء وبحرالعسل وبحراللبن وبحرالخمرِثم تَشَقَّقُ الانهار بعدُ". (حسن صحيح)

روایت ہے حضرت معاویہ بن حیدہ رضی اللّٰدعنہ سے کہ نبی صلّی اللّٰدعلیہ وسلّم نے فر مایا: جنت میں (چار دریا ہیں) پانی کا دریا ہے اور شہد کا دریا ہے اور دودھ کا دریا ہے اور شراب کا دریا ہے، پھراس کے بعد نہریں پھوٹی ہیں (یعنی جنت کے باغات اور محلات میں)۔

تشریخ: قوله: "بحوالماء النع" يهال بحرسه مرادسمند رئيس بلكددريا ب جيد وجلدوفرات اور دريائ سنده وغيره جبكه انهارس مرادوبي عرفی نهريس بيس جودريا كی شاخ موتی ب جيس نهر زبيده - يه بحی موسکتا ب كدان بحارس مرادسمندر مول -

قولد: "شم تَشَقَّقُ الانهار بعد" لين جب بنتى جنت ميں داخل بوجا كيں محتويہ بيران كى جنت ميں داخل بوجا كيں محتويہ بيران كى جنتوں ميں بہادى جاكيں كى يامطلب يہ ہے كہ پہلے يہ شروبات ان بزے دريا وَل ميں چلتے ہيں اور پجھ فاصلہ مطرفے كے بعد جنتوں كے باغات ميں منتسم كركے بہاد يے جاتے ہيں۔

ان چاروں دریاؤں کا ذکر قرآن پاک کی سورہ محمد میں بھی آیاہے:

"فيهاانهارمن مآء غير آسن وانهارمن لبن لم يتغير طعمه وانهارمن خمر لذة للشاربين وانهارمن عَسَل مُصَفّى".

حدیث آخر: حضرت انس بن ما لک سے روایت ہے کدرسول الله طلبہ وسلم نے فرمایا جوش الله سے اللہ اللہ علیہ واضل فرمااور جوش جہنم سے اللہ اس کو جنت میں داخل فرمااور جوشن جہنم سے تین بار پناہ مائے تو جہنم کہتی ہے اے اللہ اس کو دوز خ سے بناہ دیں۔ (بیروایت ابن ماجہ ونسائی میں بھی ہے تین بار پناہ مائے تو جہنم کہتی ہے اے اللہ اس کو دوز خ سے بناہ دیں۔ (بیروایت ابن ماجہ ونسائی میں بھی ہے

اورابن حبان نے اپنی سی میں بھی نقل کی ہے)۔

بدعائے جنت ان الفاظ کے ساتھ بھی جے 'اللّٰھم ادخلنی الجند' اور یوں بھی جے 'اللّٰھم انسی اسالک الجند '' جبکدووز خے پناہ کی دعاء کے الفاظ یہ بین'اللّٰھم اَجوزی من النار ''یدونوں دعا کیں تین تین مرتبہ اللّٰی چاہے اگراس کوسی وشام کامعمول بنایا جائے توشاید بیزیادہ مفید ہے۔

قوله: "قالت المجنة" يعنى بزبان حال اور بزبان قال بهى موسكتا بـــ

حدیث آخر: حضرت ابن عرفر ماتے ہیں کدرسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا تین مخص ایسے ہیں جو مشک کے ٹیلوں پر ہو نگے (راوی کہتا ہے) میرا گمان ہے کہ آپ نے فرمایا قیامت کے دن، ان پراگلے اور پچھلے رشک کریں گے: (۱) وہ مخص جو ہرشب وروز پانچوں نماز وں کے لئے اذان دیتا ہے (۲) وہ مخص جو لوگوں کی امامت کرے اور وہ لوگ اس سے خوش ہوں (۳) اور وہ غلام جواللہ کاحق بھی ادا کرتا ہواور اپنے آفاوں کاحق بھی نبھا تا ہو۔ (حسن غریب)

به حدیث ابواب البروالصله میں بھی گذری ہے۔(دیکھئے تشریحات ترمذی:ص:۲۵۶ج:۲° باب ماجاء فی فضل الملوک الصالح وباب فی الحب فی الله من صذاالمجلد ۷)

حدیث آخر: حضرت عبداللہ بن مسعود سے مروی ہے ادروہ اس کومرفوع روایت کرتے ہیں: تین آدی ایسے ہیں جن سے اللہ عز وجل محبت کرتے ہیں۔

(۱) وہ خض جورات کوائھ کر قرآن کی تلاوت کرتاہے۔

(۲) اور وہ مخص جواپنے دائیں ہاتھ سے کوئی صدقہ دیتاہے جس کووہ مُٹھیا تاہے (راوی) کہتاہے میرا گمان ہے کہاہنے بائیں سے (مُٹھیا تاہے)۔

(۳) اوروہ فخض جوکس دستے میں ہوتا ہے پس اس کے ساتھی فکست کھاجاتے ہیں اوروہ (تنہا) دشمن کا مقابلہ کرتارہے۔ حدیث غریب غیر محفوظ والصحیح مادواہ شعبة النے بینی اس روایت میں ابو بکر بن عیاش ضعیف ہیں اس کے شعبہ کی روایت جوابو ہریرہ کی صدیث کے بعد آرہی ہے سے جے۔

قوله: "أداه من شماله" لين باكي باتي باته سي كنابي بانتها في إخفاء سيحتى كدباكي باته كوجى يه ينبيل چلتا كدواكي سنة المار معلب بيب كدباكي بهاديل جوفض بينها بواس كويدة تك نه چلك داكين والله كالم والكوكياديا؟ بنابر برنقذيراس بين داكين باته سه دين كه استجاب كي طرف اشاره بـ قدوله:

"سبوية" لشكر كاحصه جس كى وضاحت ابواب السير مين گذرى ہے۔

صديث آخر: "يوشك الفرات يَحسِرُ عن كنزمن اللهب فمن حَضَرَه فلايأخذمنه شيئاً. (صحيح)

حضرت ابوہریرہ سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا بعنقریب وریائے فرات سونے کخزانے سے ہٹ جائے گا، پس جو خص اس موقع پر موجودرہے وہ اس میں کچھ بھی ندلے۔

قبوله: "يوشک الفُرات " بروزن عُراب عراق کامشہوروريا ہے اس کامنی جنوب مشرق ترک ہے جو برات میں داخل ہو کر بھر ہ کے پاس د جلہ سے ملتا ہے، ان کی مجموعی لمبائی تقریباً انتیس سوکلومیٹر یعنی دریا کے سندھ جتنی ہے۔

چونکدایک حدیث میں فرات کو انہارِ جنت میں سے شارکیا گیا ہے شایداس مناسبت سے امام تر فدگ نے میددیث یہاں ذکر فرمائی۔

بعض حفرات نے فرمایا کہ اس حدیث کو یہاں لانے کی وجہ سے کہ فرات کے ینچے کاخزانہ لینااسباب جہنم میں سے اور ترک، اسباب جنت میں سے ہے۔

قول ه: "يحسِر" ال مين سين كاكره اورفته دونول جائز ہے بمعنی" يكشف" كے ہے يعنى بروزن يمشر بون وائر ہے بمعنی" يكشف" كے ہے يعنى بروزن يمشر بونوں جائز ہے بظاہر بيصورت حال فرات كے بإنى كے ختك ہونے سے پيدا ہوگى، پھر سلم كى روايت ميں بھل ہوائلى روايت ميں بھل ہے" يحسر المفرات عن جبل من ذهب "يعنى سونے كى كان كھل جائے گى، جس كے حصول كے لئے سخت الوائى ہوگى حتى كدنوانو نے فيصد لوگ القمد اجل بن جائيں گے۔ بعض حضرات فرماتے ہيں كہ بيصورت حضرت عينى عليه السلام كے بعد پیش آئے گى۔ بعض نے اس كو حضرت مهدى كى آ مدسے قبل يعنى متصل قبل مانا ہے۔

آج کل زیرز مین معد نیات کے بارے میں جوانکشافات جاری ہیں، بعیر نہیں کہ فرات کا بینزانہ بھی جلد دریافت ہوجائے۔

بہرحال اس خزانہ سے لینادنیوی واخروی خطرات سے خالی نہیں اس لئے حدیث میں لینے سے ممانعت فرمادی گئی۔

حدیث آخر: _ تین آدمیوں سے الله عبت كرتے ہیں اور تین مخصول سے نفرت كرتے ہیں ہى وہ

لوگ جن سے اللہ محبت فرماتے ہیں:

(۱) ایک وہ مخص ہے جو کسی قوم کے پاس آیا اور ان سے اللہ کے نام پر مانگا کسی باہمی قرابت کی وجہ سے نہیں مانگا گران لوگوں سے علیجدہ ہوکراس سے نہیں مانگا گران لوگوں سے علیجدہ ہوکراس کو پہنے سے دیا، جس کا عطیہ سوائے اللہ اور سوائے دینے والے کے کسی کومعلوم نہ ہوسکا (تو یہ دینے والامجوب کھیرا)۔

(۲) اور پھھلوگ رات کوسفر کرتے رہے، یہاں تک کہ نیندان کو ہراس چیز سے زیادہ عزیز ہوگئی جواس کے مقابل ہو (بعنی رُکاوٹ ہو) توانہوں نے اپنے سرر کھ دیئے (بعنی سو گئے) اور پیخض اٹھااور میری خاطر داری کرتار ہااور میری آیتیں پڑھتار ہا (تو پیخض بھی اللہ کومجوب ہے)۔

(٣) اوروہ مخض جوکس چھوٹے لظکر میں تھادہ لشکر دیمن سے نبردآ زماہوا، پس اس کے ساتھیوں نے کشکست کھائی گمریڈخص سینہ سپر ہوکرآ کے بڑھتا گیا یہاں تک کہ مارا گیا یا فتح مند ہوا (یہ بھی محبوب اللی ہے)۔

اوروہ تین لوگ جن سے اللہ نفرت کرتے ہیں.(یہ ہیں)(۱)بوڑھازنا کار(۲)اِرّانے والافقیر (۳)اورمالدارظالم(بیعنی ش رو کنےوالا)۔(صحیح)

قوله: "فَتَخَلَفَ بِأَ عَيَانِهِم" تخلف كمعنى يهال پرتا خرجى بوسكتا جادرتقدم بھى يعنى وہ اپنے ساتھيوں سے پیچھے بوجا تا ہے اوا تا ہے اصل مقصد ساتھيوں سے عُد ابونا ہے تا كه اس كے عطيه كاكسى كو پية نہ چل سكے اورصدقہ محض للد بن جائے" باعیاتھم" اى باشخاصھم يعنی ان ساتھيوں كروپ سے الگ بوجا تا ہے۔

قوله: "يتملقنى" تَمَلُّق " چاپلوى آ وَ بَهَّت اور خُوشا مرك كَتِ بِي قُوله: "مختال" يعنى متكروم فرور _

قول د: "المطلوم" يعنى حقوق كى ادائيكى ميں ٹال مول كرنے والا چونكه ما بق الذكر تين لوگ الله كو شدودى حاصل كرنے ميں بہت زيادہ جدوجهد كرتے ہيں۔ حتى كه اپنى جان ومال اور داحت وآرام كواس پر قربان كرتے ہيں اور مجت تو جانبين سے ہواكرتى ہاں كئے اللہ بھى ان كو پندفر ما تا ہے، جبكه آخر الذكر تين مختص خواہ تخواہ كى نافر مانى اور نفنول كناہ اختيار كرتے ہيں كيونكه بوڑ ہے كى زناكارى ايك بلذت سے شوق اور معمولى محرك كے عناہ كا نتيجه ہے، جبكه فقير كا غرور بھى بغير سبب تكبر كے ہے اور بالدار كا حقوق اداكرنے سے اور معمولى محرك كے عناہ كا نتيجه ہے، جبكہ فقير كاغرور بھى بغير سبب تكبر كے ہے اور بالدار كاحقوق اداكرنے سے

گریز کرنامحف ظلم اورستانے کاشوق ہی ہوسکتا ہے۔ لہذا سیتیوں محف شیطانی گناہ ہوئے چونکہ ہرگناہ ویسے بھی اللہ کے غضب کا ذریعہ ہے اورخصوصاً جب وہ گناہ حیوانی ہونے کے بجائے شیطانی ہوتو اس سے تو اللہ کی ناراضگی کے سوا کچھ بھی حاصل نہیں کیا جاسکتا۔

اعاذناالله منهاومن كل اثم. ولاحول ولاقوة الابالله العلى العظيم.



ابواب حيفة جيب

عن رسول الله صلى الله عليه وسلم (جنم كاحوال كابيان اعاذنا الله منها)

لفظ جہنم غیر منصرف ہے البتہ سبب منع صرف میں دوتول ہیں :ایک بیر کہ مجمی ومعرفہ ہے کہ آخرت کی آگا تام ہے۔دوسرا بی کہ کر بی ہے علیت وتا دیث کی وجہ سے 'نبر جھنام'' گہرے کنویں کو کہتے ہیں یاسخت وغلیظ چیز کو جہنم کہتے ہیں اور دوز خ بھی بہت تخت وغلیظ ہے۔

کا نئات میں اوپر اور نیچے کا تعین بہت مشکل ہے کیونکہ زمین اپنی تحوری ترکت کی وجہ سے ہرجانب کے کئے مساوی نبیت رکھتی ہے، البتہ عالم میں جس جانب عرش واقع ہے وہ اوپر ہے اور اس جانب سب جنتیں واقع ہیں، جبکہ دوز خ اس کے بالکل مقابل جانب میں ہے اس اعتبار سے ہم کہہ سکتے ہیں کہ زمین کے اوپر جنتیں ہیں اور نیچے دوز خ ہے جس کی لیٹ قیامت کے دن زمین تک پہنچ جائے گی، اور اس کے ساتھ جنتیوں اور زمین کے درمیان صائل آسانوں کا غلاف بھی فتم کردیا جائے گا جس سے اصل صورت حال کھل طور پرواضح ہوجائے گی۔

باب ماجاء في صفة النار

(دوزخ كاحال)

"عن عبدالله بن مسعودقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :يُوتىٰ بجهنم يومئدٍ لهاسبعون الف زِمام مع كل زِمام سبعون الف ملك يَجُرُّونها". (والثورى لايرفعه)

اس (قیامت کے) دن جہنم کولایا جائے گااس کی ستر ہزارلگامیں ہوں گی، ہرلگام کے ساتھ ستر ہزار فرشتے ہوں گے۔ ہرانگامی سے سیروایت حفص بن غیاث کے طریق سے مرفوع بیان کی گئے ہے لیکن فرشتے ہوں گے جواسے محفی کی گئے ہے لیکن امام سفیان ڈری اس کومرفوع نقل نہیں فرماتے تا ہم حفص کی نقابت کی بناء پراسے مرفوع کہنے میں کوئی حرج نہیں۔ تشریح :۔ جیسا کہ او پرعرض کیا جاچا کہ جنت اور دوزخ ایک دوسرے کے بالکل مقابل جہات پر

واقع بیں اور چونکہ دنیا دارالتکلیف ہے اس لئے آز مائش کا تقاضایہ ہے کہ بید دنوں انسان وجن کی نظروں سے دور واوجھل ہوں البنداان کو بہت دوررکھا گیا ہے جن کے اثر ات دنیا تک نہیں چنچتے مگر جب قیامت قائم ہوگی تو دونوں کو قریب لاکرر کھ دیا جائے گا۔

اس لا متناہی خلاء میں جہنم جہاں واقع ہے وہاں سے لانے پر فرشتے مقرر ہیں جیسا کہ حدیث باب میں فرکورہے وہ دوزخ کو تقسیت کرلائیں گے۔ دوسری طرف جنت بھی قریب کردی جائے گی، جنت متعین کوخوش رکھنے کے لئے نزدیک لائی جائے گی۔ جبکہ جہنم متکبرین کوخوف زدہ کرنے کے لئے اور منکرین کوشر مندہ ونادم کرنے کے لئے تاکہ وہ جس سے انکار کرتے اب اسے اپنی آنکھوں سے دیکھ کریقین کرلیں اور انبیاء کیہم السلام کی کھلے عام تھدین ہوسکے۔

صريث آخر: - "يَخررُ جُعُنُقٌ من الناريوم القيامة له عينان تُبصِران واذنان تسمعان ولسان ينطق الخ". (حسن صحيح غريب)

قیامت کے دن جہنم سے ایک گردن نظے گی،اس کی دوآ تکھیں ہوں گی جودیکھیں گی اوردوکان ہوں کے جوسیٰں کے اور زبان ہوگی جو بولے گی وہ (گردن) کہے گی میں تین شخصوں پرمسلط کی گئی ہوں، ہرسرکش ضدی پراور ہراس شخص پرجواللہ کے ساتھ کسی دوسر کے دیکارتا تھا اور تصویریں بنانے والوں پر۔

قول ان الکوکب میں فرماتے ہیں: "ای طانفہ منہ انکوکب میں فرماتے ہیں: "ای کصورہ رقبہ ورأس جبکہ میں فرماتے ہیں: "ای طانفہ منہ ان دونوں تولین کا مطلب ایک ہے کصورہ رقبہ ورأس جبکہ میں خبکہ میں شکل گردن اور سرجیسی ہوگی اس میں آئکھیں بھی ہوں گی اور کان و لیمن آگ کا ایک حصہ وشعلہ عظیمہ نظے گاجس کی شکل گردن اور سرجیسی ہوگی اس میں آئکھیں بھی ہوں گی اور کان و زبان بھی ، اس سے معلوم ہوا کہ جہنم میں بھی اللہ نے بیصلاتیں وو بعت فرمائی ہیں اور اس میں کسی استبعاد کی ضرورت نہیں کہ اللہ جا جائے ہوائے میں کہ اللہ جبھے گذراہے کہ جیسے جیسے قیامت آتی رہے گی تو خوارق میں اضافہ ہوتا رہے گالہذا قیامت کے دن خوارق میں اضافہ ہوتا کے جمال وجلال کا بھر پورا ظہار کیا کارونما ہوتا کسی طرح بھی تجب خیز نہیں ہیوہ دن ہوگا جہاں اللہ تبارک وتعالی کے جمال وجلال کا بھر پورا ظہار کیا جائے گالہذا وہاں خوارق دیکھیے کا خوب موقع ملے گا۔

قوله: "جباد عنيد" جبارسركش اورعنيد حدس برصنه واليكوكة بين مكر لاعلى سے برصنه والے كوئيں بلكہ جان يُو جه كرتجا وزكرنے والے والے و

چونکہ سرکش ومتکرآ دمی فلق خدا کونقصان پنچا تاہے اور مشرک زمین میں فساد پھیلا تاہے اور نصور پنانے والاتخلیق خداوندی کی مشابہت کرتاہے اس لئے بیسب کا م اللہ تبارک وتعالی کی حکومت اور تدبیر مملکت میں دخل اندازی ہے اس لئے ان کوخت عبر تناک سزادی جائے گی، تصویر پر راقم نے ستقل کتاب کھی ہے "شعاعی تصویر کی حقیقت اور شرع حیثیت "۔

باب ماجاء في صفة قعرِ جهنم (جنم كي كرائ كايان)

"ان الصخرة العظيمة لتُلقى من شفيرجهنم فتهوى فيهاسبعين عاماً ماتُفضِى الى قرارها، قال: وكان عمريقول: اكثِرواذِ كرالنارفان حَرَّهاشديد وان قعرهابعيدوان مقامِعَها حديد". (لانعرف للحسن سماعاً عن عُتبة الخ)

حضرت حسن بھری رحمہ اللہ سے روایت ہے کہ حضرت عتب بن غزوان رضی اللہ عنہ نے ہمار مے منبر لیعنی بھرہ کے منبر پرنی صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا کہ آپ نے فرمایا: پھری بڑی چٹان اگر جہنم کے کنار ہے سے بھینکی جائے اور وہ جہنم میں ستر سال گرتی رہے تب وہ اپ ٹھمکانے (گہرائی) تک نہیں پنچ گی۔ اور حضرت عتبہ شمن جائے اور وہ خرمایا کرتے تھے کہ دوزخ کا تذکرہ بکشرت کرو (یا دوزخ کو کشرت سے یادکرو) کیونکہ اس کی تپش شخت ہے اوراس کی جہہ بہت دور ہے اوراس کی موگریاں (گرز) لوہے کی ہیں۔

تشریخ: قوله: "الصخرة" فاءساكن بے كوفته بھى جائز بے چان كو كہتے ہيں۔ قوله: "شفير" كناره-

قولہ: "مقامعھا" مِقْمَعَة کی جمع ہے او ہے کی وہ سلاخ جس کا سِر امرُ اہوا ہوا سے موگری کہتے ہیں۔ یہ کوڑے دسلاخیس دوز خیوں کے مارنے کے لئے ہیں۔

جہنم کی گہرائی اوروسعت انسانی تصور سے بھی بالاتر ہے تاہم باب کی روایت منقطع ہے جبیا کہ امام ترفدیؓ نے فرمایا ہے۔ کہ حضرت حسن بھریؓ کی ولا دت حضرت عشر کے دورخلا فت کے آخر میں ہوئی ہے جبکہ حضرت عشبہ "کی وفات اس سے پہلے ہو چکی تھی اس لئے ساع ولقاء ٹابت نہیں کیونکہ جس وقت حضرت عشبہ لدینہ سے بھر ہ آئے تھے اس وقت حضرت حسن بھریؓ بیدا بھی نہیں ہوئے تھے۔ حاشیہ کوکب پراسدالفابہ سے نقل کیا گیا ہے کہ حضرت مقبہ کا اسلام ساتویں نمبر پرہے جبکہ ان کی عمر چالیس برس کی تھی، جرت حبشہ بھی کر چکے تھے، حضرت عرشے ان کو بھرہ پرمقرر فرمایالیکن ہے جبکہ ان کی غرض سے گئے اور حضرت عرشے ورخواست فرمائی کہ جمھے دوبارہ بھرہ نہ جبجیں، ورخواست منظور نہ ہوئی، انہوں نے دعاء مائلی کہ اے اللہ! جمھے دوبارہ بھرہ نہ جبجیں چنانچہ سواری سے گر کرفوت ہوگئے۔ فلا ہرہے ایسے میں حضرت حسن بھری کی ملاقات ان سے میکن نہیں ہے۔ بنا برصحتِ حدیث سالبہ عدم وجود موضوع میں بھی صادق رہتا ہے۔

صديث آخر: ــ "الصعودجبل من ناريتصعد فيه الكافرسبعين خَرِيفاً ويهوى فيه كذالك ابداً". (غريب)

لین اسار بھٹ کے معود پر چڑ صادوں گا۔ کے بارے میں ایسے (کافرکو) صعود پر چڑ صادوں گا۔ کے بارے میں آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: صعود آگ کا ایک پہاڑے جس پرکافرستر سال تک چڑ سے گااوراتی ہی مدت میں اس سے گرے گا بیسلسلہ ہمیشہ جاری رہے گا۔ (بیآ یت ولید بن مغیرہ مخزوی کے بارے میں نازل ہوئی ہے)۔

قوله: "بتصعدویهوی" کاتر جمد معروف کے صینوں کا کیا گیا ہے اگران کو مجبول مانا جائے جیسا کہ ملاعلی قاریؒ کی رائے ہے۔ تو مطلب یہ ہوگا کہ کا فرکواس پہاڑ پرستر سال تک چڑھایا جائے گا اورستر سال گرایا جائے گا اس صورت میں یقیناً تکلیف زیادہ ہوگی، جیسا کہ ظاہر ہے کہ ایک شخص چڑھ نہیں سکتا ہوگراہے مار مارکر مجبور کیا جاتا ہوتو تکلیف ڈبل ہوجاتی ہے۔قولہ: "خویفاً" شِوال مراد سال ہے۔

بظاہریہ اشکال ساہوتا ہے کہ آگ تو لطیف ہے کھراس کے پہاڑکا کیا مطلب ؟لیکن اس کا جواب آسان ہے کہ بھی لطیف چیز بھی تھوس جسم بن جاتی ہے۔ چنانچہ ہوابارش میں تبدیل ہوجاتی ہے اور بارش کا پانی برف بن جاتا ہے۔ چنانچے زمین وغیرہ بھی ہزبان سائنس گیسوں میں عملِ تکا تھف کی بناء پر بن ہے۔

باب ماجاء في عظم اهل النار

(الل ناركے بوےجسموں كابيان)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : ضرس الكافريوم القيامة

مثل أُحُدٍ وفحده مثل البيضاء ومقعده من النارمسيرثلاث مثل الرَبَذَة والبيضاء جبل". (حسن غريب)

کافر کی داڑھ احد پہاڑ کے برابر ہوگی اوراس کی ران بینیاء جتنی ہوگی اور آگ بیں نشست (بیٹھنے کی جگہ) تین دن کی مسافت کے برابر ہوگی جتنی رَبَدُ و تک ہے۔

تشری : قوله: "البیضاء" امام ترفدی فی اس کی تغییر فرمانی کدایک پها ژکانام ہے، چونکہ کافری داڑھ احد پہاڑ کے برابر ہوگی اور فخذ لینی ران تو داڑھ سے بہت بڑی ہوتی ہے اس لئے کہا جائے گا کہ بیضاء پہاڑ احدے کی گنا بڑا ہے۔

قوله: "ربَذَه" بالفتحات مدينه سيتن ون كى مسافت برب جهال حضرت ابوذرغفار كل مؤن بين، چونكه بدارشاد نى عليدالسلام نے مدينه ميں فرمايا تھااس لئے مطلب وى ہواجوا مام ترفدي نے نقل كيا ہے يعنى مدينه سي مسافت كوده كير كاربيضاء بهاڑاى ربذه كے ياس ہے۔

کافرے جسم میں زیادتی کر تاعذاب کے احساس کو بوصانے کے لئے ہے کیونکہ جسم کا جتنازیادہ حصہ متاثر ہوتا ہے اتنابی تکلیف میں اضافہ ہوتا ہے جبکہ کم جگہ میں احساس کم ہوتا ہے چنانچہ اگر ہم سوئی گرم کر کے اس کا بر اجسم پر دکھدیں تواحساس شہونے کے برابر ہوتا ہے بعض دفعہ ڈاکٹر انجکشن لگا تا ہے لیکن مریض کو پہتہ بھی نہیں چاتا کیونکہ سوئی بہت باریک ہوتی ہے اور معمولی سوراخ بلکہ مسام سے داخل ہوجاتی ہے جبکہ بندوق کی گولی یادیگر زخموں کو برداشت کرنا آسان نہیں ہوتا ہے۔ (تدبر)

حديث المن عمر : - "ان الكافرليسَحبُ لسانه الفرسخ والفرسخين يَتَوَطَّأُه الناس". (غريب)

كافرائي زبان بقدراك فرسخ ، دوفرسخ محسيط كاجس كولوگ روندتے رہيں مے۔

عارضة الاحوذى ميں ہے كہ يه كافر قهار الرجال تعاجس في مسيلمه كذاب كى جموثى نبوت كى جموثى مواتى دى تجو أن كوابى دى تقى الرسالة "اس پر بنوطنيفه في مسيلمه كوابى دى تقى الرسالة "اس پر بنوطنيفه في مسيلمه كوابى دى تقديق كى حالانكه اس كو نبى عليه السلام في الى يمام كو تعليم دينے كے لئے جميع اتعامراس في خيانت كى۔

قوله: "ليسحب" كى چيزكوزين پر كھينے كوكتے ہيں۔

قول، "الفرسخ" تين ميل كى سافت كوفرى كيت بين ،حضرت كنكوبى فرمات بي كماس ممك

قوله: "يتوطاه" وَطِاه يطأه بمنى كيلغ اوردوندنے كة تاب يعنى ميدان محشر ميں لوگ اس كى زبان پريا وَل ركھتے ہوئے چلتے رہيں گے۔

صديث الياهريرة: ـ "ان غِلظ جلدالكافراثنتان واربعون ذراعاً وان ضرسه مثل احدوان مجلسه من جهنم مابين مكة والمدينة". (حسن صحيح غريب)

کوئی شک نہیں کہ کافری کھال کی موٹائی بیالیس گز ہوگی اوراس کی داڑھ احد پہاڑجتنی ہوگی اور دوزخ میں اس کے بیٹھنے کی جگہ مکہ اور مدینہ کے مابین جتنی مسافت کے بقدر ہوگی۔مطلب وتشریح اوپر گذرگئی ہے۔

باب ماجاء في صفة شراب اهل النار

(دوزخ والول کے مشروب کابیان)

"عن ابى سعيدعن النبى صلى الله عليه وسلم فى قوله: "كَالمُهلِ "قال كعكر الزيت فاذا قَرّبَه الى وَجهِه سَقَطَت فروة وَجهِه فيه". (هذا حديث لانعرفه الامن حديث رِشدين بن سعدالخ).

حضرت ابوسعید خدری نبی سلی الله علیه وسلم سے آیت ' سیالم ملے ''کے بارے میں روایت کرتے ہیں کہ آپ نے فرمایا: جیسے تیل کی تلجھٹ پس جب وہ (جہنمی) اسے اپنے منہ کے قریب کرے گا تو اس کے چہرے کی کھال اس میں گریڑے گی۔

امام ترفدی فرماتے ہیں کہ اس کی سند میں رشدین ہیں جن پر کم یا داشت کی وجہ سے کلام ہواہے۔ تشریخ:۔ پوری آیت اس طرح ہے: 'وإن یکستَغِینُو ایُعَاثُو ابِمَاءِ تَحَالمُ ہل یکشوِی الوُجُوہ''۔ (الکہف آیت: ۲۹) ترجمہ: اوراگرفریا دکریں گے (پیاس کی) توالیے کھولتے ہوئے پانی سے ان کی دادری کی جائے گی جو پھلے ہوئے تانے کی طرح (گرم ہوگا اور جو) مونہوں کو بھون ڈالےگا۔

اس آیت میں ''کالسمهل''کے بارے میں بیرحدیث ہے کہ وہ مُہل عکر الزیت کی مانندہوگی ،عکر بفتح العین والکاف اصل میں گدلا پن کو کہتے ہیں چونکہ یہاں زیت یعنی زیتون کے تیل کی طرف اضافت ہوئی ہے اس لئے مراد تلجمٹ ہے، پھلی ہوئی کوئی بھی دھات، پیپا درزیون کا پتلا تیل بھی مہل کہلاتا ہے۔

قوله: "فروة وجهه" بروزن رحمة اصل سرى كهال بمع بال كوكيتم بين يهان مجاز أچرے كى كھال پر اطلاق ہواہے۔

حديث الم حرية : - "ان الحميم لَيُصَبُ على رؤسهم فَيَنفَذُ الحميم حتى يخلص الى جوفه فيسلِتُ مافى جوفه حتى يمرُق من قدميه وهو الصهر ثم يعاد كماكان ". (حسن غريب صحيح)

کے شک نہیں کہ کھولٹا ہواپانی جہنیوں کے سروں پرڈالا جائے گاہیں وہ کھولٹا ہواپانی نفوذکرے گارہوگا) یہاں تک کہ اس کے پیٹ تک پہنے جائے گاہیں وہ کاٹ ڈالے گااس کو جواس کے پیٹ میں ہے (یعنی آئنتیں اور کلیجہ وغیرہ) حی کہ یہ چیزیں اس کے دونوں قدموں سے (یعنی دُبرسے) نکل جا ئیں گے اور یہی وہ 'صهر'' ہے (یعنی قرآن کی اس آیت میں ''یُصَبُ مِن فَوقِ دُوْسِهِم الْحَمِیمُ مُصهرُبِه مَافی وہ 'صهو '' ہے (یعنی قرآن کی اس آیت میں ''یُصَبُ مِن فَوقِ دُوْسِهِم الْحَمِیمُ مُصهرُبِه مَافی بطونهم والْحلود '') (یج آیت بیا ''رجمہ: یعنی ڈالا جائے گاان کے سروں پر کھولتا ہواپانی جس سے پھروہ (کافر) جیسا تھا ویا ہی لوٹا دیا جائے گا۔

قوله:"المحسميم"ح،م، مين حرارت كمعنى پائے جاتے ہيں يہال كھولتا ہواگرم پانى مراد ہے جوحد درجہ گرم ہوگا۔

قسول النصعة "السلت الم كاضم وكره دونول جائزين اصل من قطع اوركا شئ كو كتب بين "سلت القصعة"، اس وقت كهاجا تا ج جب برتن كوچاك كرصاف كياجائ كوياصاف كرن كمعنى مين بحى آتا ہے۔ قسول النصصة "يسر ق" بضم الراء بمعنى يخرج كركر ق الصم اس وقت كتب بين جب تيرنشان سے يار بوجائے۔

قوله: "وهوالصهر" بفتح الصاديكملان كوكمة بين يعن قرآن من "يصهر به" يسمراديمي صورت ب-

قوله:"ثم یعاد"ای مافی جوفه ـ

چونکہ کافر دنیا میں اپنی خبافت سے تو بنہیں کرتا بلکہ زندگی بھر بار بارا ورمسلسل گناہ وجرائم کرتا رہتا ہے اس لئے اس کی سز ابھی مکرر مکر رہوگی اور چونکہ وہ ارادہ وعزماً بمیشہ کفرکوا ختیار کر چکا ہوتا ہے کہ اگروہ بمیشہ زندہ ہوتا تو ہمیشہ کا فربی رہتااس لئے وہ آخرت میں ہمی ہمیشہ عذاب میں بتلاءرہ کا کیونکہ سرزاعمل کے مطابق ہوتی ہے جب سہ ابن عمر کی روایت میں کا فرکی زبان دوفر سخ کے بقدر نکلنے کا ذکر آیا ہے کہ جب رجال بن عبر ہونے آن پڑھنے اور فقا ہت حاصل کرنے کے بعد معلم کی حیثیت سے بنوضیفہ قبیلہ لیمنی کیا مہ جاکراپی مجموثی شہادت سے ایسا فتنہ برپاکر دیا کہ پوراقبیلہ مگراہ ہوگیا، اس لئے اس کی زبان میدان محشر میں لوگوں کے یا دان کے بیائی جائے گی تا کہ وہ لوگوں کے قدموں کو صراط متنقیم سے ہٹانے کی سرزایا ہے۔

صديث آخر: "عن ابى امامة عن النبى صلى الله عليه وسلم فى قوله: ويُسقىٰ مِن مُآءِ صَدِيدٍ يَتَجَرَّعُه "قال يُقَرَّبُ الى فيه فيكرهه فاذا أُدنِى منه شَوى وَجهَه ووقعت فروة وأسه فاذا شربه قطع أمُعَاءَ أه حتىٰ يحرج من دبره يقول الله تبارك وتعالىٰ: "وسُقُواماءً حميماً فَقَطع امعاء هم "ويقول: وان يستغيثوا يُغاثُوا بماء كالمهل يشوى الوجوه بئس الشراب وَسَآءَ ت مُرتَفَقاً". (حديث غريب)

اوراس (کافر) کو پیپ ولہو کے پانی سے پلایا جائے گا، وہ اس کو گھونٹ، گھونٹ پینے گا (ابراہیم:
آیت: ۱۱۱، ۱۷) اس آیت کی بابت آپ نے فرمایا وہ کمپچراس کے منہ کے قریب کردیا جائے گاتو وہ اسے ناگوار
گذرے گالیس جب اور نزدیک کیا جائے گاتو وہ اس کے چہرے کو بھون ڈالے گا اور اس کے سرکی کھال بہت
بالوں کے گریڑے گی اور جب وہ اسے پیئے گاتو وہ اس کی آنتوں کو کاٹ دے گایہاں تک کہوہ اس کی دبرسے نکلیس گی، اللہ تبارک و تعالیٰ فرماتے ہیں: ان کو کھولتا ہواگرم پانی پلایا جائے گاسووہ ا بن کی انتو یوں کو چورچور کردے گا اور اللہ فرماتے ہیں: اگر جہنمی پیاس کی فریاد کریں گے تو ان کی فریا دری کی جائے گی ایسے پانی سے جو تیل کی تیجھٹے کی طرح ہوگا جومونہوں کو بھون ڈالے گائری ہے پینے کی چیز اور بُری ہے آرام گاہ۔
سے جو تیل کی تیجھٹے کی طرح ہوگا جومونہوں کو بھون ڈالے گائری ہے پینے کی چیز اور بُری ہے آرام گاہ۔

قوله: "صديد" لينى خون اور پيپ كامجموعه

قوله: "يتجرعه" جرعة سے محونث كوكت إلى الينى في نبيس كيس كاس لئے كھونث كھونث بينا پڑے گا۔

قوله: "مرتفقاً"وهمزل جهال آرام كياجاتا هـ باقى الفاظ كى تشريح گذرى هـ ـ قوله: فى حديث ابى سعيدالخدرى قال: "لسرادق النارار بعة جُدُر كثف كل جدار مسيرة اربعين سنة". قوله: "لَسُوادق" بشّخ اللام مبتداً اربعة جُدُرِ خبر ہے۔ سُر ادق بضم السین سردق بفتح السین کی جمع ہے گھیرنے والی چیز کو کہتے ہیں جیسے دیواریا قنات تاہم وہ قناتیں کپڑے کا ہونا ضروری نہیں اس احاطہ میں حکمت یہ ہےتا کہ دوزخ کی تپش وحرارت میں مزیداضا فہ ہوئین گری بھی ہوا ورجس بھی ۔ قوله: " جُحدُر" بضمتین جدار کی جمع ہے۔

قوله: "كِفَف" بكسرالكاف وفتح الثّاء موثالًى _

وبها الاسناد: قال "لوان دلواً من غسّاق يُهراق في الدنيالانتن اهل الدنيا" _ اگر دوزخيول ك زخمول سے بہنے والى پيپ كاايك دُول دنيا ميں بَهَا دياجائے (يعنی دُال دياجائے) توسب دنيا والے مَرْ جاكيں گے۔ان تيوں اسانيد ميں رشدين بن سعد ميں جوشكلم فيه بيں _

قول : "غساق" سين كاتشد يد كساتها أكر چيخفيف بهى جائز ہاس كى تغيير ميں كى اتوال ہيں:
ایک بیك دوز خیوں كے زخموں كى پیپ كو كہتے ہيں ۔ دوم: بیك آنو وں كو كہتے ہيں۔ سوم: بیك در زخموں كى پیپ كو كہتے ہيں جو شدت برودت كى وجہ سے آگ كى طرح ان كوجلائے گا۔ بعض نے كہا كه زنا كاروں كى شرم گاموں سے بہنے اور رسنے والا ماده مراد ہے، سورة ص ميں ہے: "هدا فحليك و فحو م حَمِيم و خَسَّاق" (ص: آيت: ۵۷) ترجمہ: بيك كولاً ہواگرم يانى اور پيپ ہے اب اس كے مزے جكھيں۔

حديث آخر: حضرت ابن عبال سے مردی ہے كه رسول الله صلى الله عليه وسلم في يه آيت پر صلى: "إِنَّقُو الله حَقّ تُقَاتِه وَ لَا تَمُو تُنَّ إِلَّا وانتم مسلِمون "قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لو ان قسطرة من النوقوم قُطِرَت في الدنيا لَافسَدَت على اهل الدنيامعايشهم فكيف بمن يكون طعامه". (حسن صحيح)

(پھر)رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمايا: اگرزقوم (سينله) كاايك قطره بھى دنياميں برگاديا جائے تووہ دنياوالوں كى معيشت تباہ (ليمنى جيناحرام) كردے گاپس اس كا حال كيا ہوگا جس كا كھانا يہ ہو۔ قولسہ: "المذقوم" انتہائی تلخ، خارداراوربد بوداردرخت ہے جس کے کھانے پراہل دوزخ کومجبور کیا جائے گا جسے اردوو ہندی میں تھو ہر کہتے ہیں اور سینڈہ بھی کہاجا تا ہے۔

اس آیت اور حدیث میں مناسبت بیہ ہے کہ جو محص تقوی اختیار کرے گاوہ ان مصائب وآفات سے نجات یائے گاجن میں سے ایک زقوم بھی ہے۔

باب ماجاء في صفة طعام اهل النار

(دوزخ والول كے كھانے كابيان)

"عن ابى الدرداء قال والسول الله صلى الله عليه وسلم: يُلقى على اهل النار المجوع فيَعلِي الله ماهم فيه من العذاب فيستغيثون فيُغاثون بطعام مِن ضريع لايُسمِن ولايغنى من جوع فيستغيثون بالطعام فيُغاثون بطعام ذى غُصَّة فيذكرون انهم كانوايُجيزُون الغُصَصَ في الدنيا بالشراب فيستغيثون بالشراب فيُدفع اليهم الحميم بكلاليب الحديد فاذا دَنت من وجوههم شوَت وجوههم فاذا دخلت بطونهم قَطَّعَت مافى بطونهم فيقولون:أدعوا خَزَنَة جهنم فيقولون:ألم تك تأتيكم رُسُلُكم بالبيّنات ؟قالوا: بلي الوا:فادعوا وما دعاء الكافرين إلا في ضلال قال:فيقولون:أدعُوامالِكاً فيقولون يامالِك اليقضِ عليناربك قال صلى الله عليه وسلم فيُجيبُهم إنكم ماكثون! قال الاعمش نُبِّتُ أن بين دعائهم وبين إجابة مالِك إيّاهم الف عام،قال فيقولون ادعواربكم فلااحدخير من ربكم فيقولون رَبَّنا غَلبت علينا شِقوتُناو كُناقوماً ضالّين، ربّنا أخرِ جَنامنها فان عُدنا فإنا ظالمون، قال فيجيبُهم إخسَنوا فيها ولاتكلمون، قال فعند ذالك يَبْسُوا من كل خيروعند ذالك يأخذون في الزفير والحسرة والويل".

حضرت ابودرداءرضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جہنی ہوں پر بھوک مُسلّط کی جائے گی، وہ بحوک (تکلیف میں) اس عذاب کے برابر ہوجائے گی جس میں وہ مبتلا ہوں گے، پس وہ (جوک کی اور نہ (بھوک کی) فریاد کریں گے تو ان کی فریادری کی جائے گی ضریع (خاردار جھاڑی) سے جونہ فریہ کرے گی اور نہ ہی بھوک مثابے گی، پس وہ فریاد کریں مے (اور طرح) کھانے کی تو وہ فریادری کئے جا کیں گے ایسے کھانے

سے جو گلے میں سینے والا ہوگا، تو وہ یادکریں گے کہ وہ دنیا میں سینے ہوئے نوالوں کو پانی سے اُتاراکرتے سے ہوگے میں سینے والا ہوگا، تو وہ یادکریں گے، توان کولو ہے کے آکٹروں کے ساتھ کھولٹا ہوا پانی دیا جائے گاجب وہ پانی ان کے چہروں کے قریب ہوگا تو وہ ان کے مونہوں کو بھون ڈالے گا اور جب وہ ان کے پیٹوں میں اُتر ہے گا توان کے پیٹوں میں جو پچھ ہے کوریزہ ریزہ کردے گائیں وہ کہیں گے کہ جہم کے گرانوں کو دعا کے لئے کہا توان کے بیٹوں میں جو پچھ ہے کوریزہ ریزہ کردے گائیں وہ کہیں گے کہ جہم کے گرانوں کو دعا کے لئے کہا کہ دونا کے دونا کے لئے کہا کہ دونا کے دون

آپ صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: پھر دوزخی کہیں گے کہ مالک (داروغہ جہم) کو (دعاء کے لئے)
پکارو! پس وہ کہیں گے اے مالک! (دُعاء کریں تاکہ) آپ کارب ہمارا کام تمام کردے (لیعنی موت دے
ہمیں)۔

آپ سلی الله علیہ وسلم نے فر مایا: چنانچہ مالک ان کوجواب دیں سے کہ کوئی شک نہیں کہتم اس حال میں ہمیشہ پڑے رہو گ ہمیشہ پڑے رہو گے! امام اعمش فرماتے ہیں کہ جھے بتلایا گیا ہے کہ ان کی پکار اور ان کو مالک کے جواب دینے کے درمیان ہزار سال گذریں گے۔

آپ نے فرمایا: وہ لوگ کہیں گے اپنے رب کو (براہ راست) پُکا رو کیونکہ تمہارے رب سے بہتر (درشفقت وقدرت) کو کی ٹہیں، چنا نچہ وہ کہیں گے: اے ہمارے رب! ہماری بدیختی ہم پر غالب آئی ہے اور ہم گمراہ تھے، اے ہمارے رب تو ہمیں اس سے نکال! اگر ہم نے دوبارہ ایسا کیا تو بھینا ہم قصوروار ہوئے۔

آپ نے فر مایا: اللہ تبارک وتعالی ان کوجواب میں کہیں گے وُ ھنکارے ہوئے پڑے رہواہی میں اور مجھ سے کوئی بات مت کرنا! آپ نے فر مایا: اب کی باروہ ہر بھلائی سے مایوں ہوجا کیں گے اور اس وقت وہ گدھے کی طرح چلانے کیکیں مے اور افسوس وہلا کت کو پکارنا شروع کریں گے۔

تشری : قول د: "فَیَعدِلُ ماهم فید" لین الل جہنم پرایی بخت بھوک مسلّط کی جائے کہاں کی اللہ جہنم پرایی بخت بھوک مسلّط کی جائے کہاں کی الکطرح وہ ظاہری وباطنی دونوں حالتوں میں عذاب شدید میں جلّا وہوجا کیں گے۔ جتلا وہوجا کیں گے اس بھوک کے عذاب سے نکلنے ویجنے کے لئے وہ کھانے کی طاش شروع کریں گے۔ قول دی جائے ہوگا واللہ کرنے یا مدوطلب کرنے کے لئے آتا ہے قول ہے: "فیست فیدون" اصل میں فوٹ یعنی مددگار طلب کرنے یا مدوطلب کرنے کے لئے آتا ہے

یہاں مرا دبھوک ختم کرنے کی مدد ما نگناہے یعنی کھانا طلب کریں گے۔

قول د: "ضریع" ایک تم کا فاردار پودا ہے الکوکب میں اسے جواسہ کہا ہے، اور جب کفار نے اس کا فداق اُڑا ناشر وع کیا کہ پھرتو ہم دوزخ میں خوب کلڑے رہیں گے، کیونکہ ہمار ہے اونٹ جب جواسہ کھاتے ہیں تو خوب فربداور تازہ موٹے ہوجاتے ہیں تو اس پر نازل ہوا" لایس میں ولایغنی من جوع "پینی دوزخ کا جواسہ نین موثل کا جواسہ نیت موثا کر تا ہے اور نہ ہی بھوک مارتا ہے۔ کیونکہ اول تو دنیوی جواسہ اور دوزخ کے جواسہ میں فرق ہے دوم اونٹ جب اسے کھاتے ہیں جب وہ کچا اور تازہ ہو جسے شہر تی کہاجا تا ہے گر جب خشک اور سخت ہوجائے تو اونٹ اسے منہ بھی نہیں لگا سکتے ہیں کیونکہ اس کے کانٹیں بہت سخت ہوجاتے ہیں اس وقت اسے ضریع کہاجا تا ہے اس وقت وہ زہر یلا ہوگا۔

غرص جہنیوں کی بھوک کسی طرح کم نہ ہوسکے گی بلکہ کھانے کی کوشش سے ان کی مصیبت مزید ہوھ جائے گی۔

قوله: "الغصص" بضم الغين عُصَّة بالضم كى جمع جوه لقمه يا بدى وغيره جوطق بين بخش جائے بخرض ان كواپيا كھانا ديا جائے گا جو گئے ميں تھنے گا ان كوياؤا جائے گا كہ وہ دنيا ميں پائى پى كر تھنے ہوئے لقے كوا تارتے، چنا نچه وہ پائى مائليں گئين ان كوجو پائى ديا جائے گا اس ميں آئلا سي تكثر من بوئى سلافيس ہوں گل۔ لاہم استحد من شارطين نے اس كا مطلب بيہ بيان كيا ہے كہ كلا ليب سے پكڑ كر پائى پلا يا جائے گاليكن حاشيہ كوكب پر ہے كہ اس طرح كلا ليب كا فائدہ نظر نہيں آتا اس لئے مجمع بيہ كہ پائى كلا ليب كے ساتھ ملاكر ديا جائے گا۔ چنا نچه كلا ليب تو منه ميں پھنس جائيں ہے جبكہ گرم كھولتا ہوا پائى ان كى انتر يوں كوكا في دال دے گا ،كلا ليب كا وائد وقت ميں بھنس جائيں ہے جبكہ گرم كھولتا ہوا پائى ان كى انتر يوں كوكا في دال دے گا ،كلا ليب كلو بنتے الكاف وتشد يوالا مى جمع ہے۔

قوله: "ادعوا حزية جهنم" لينى محافظ فرشتول سے كهوكدوه اسپنے رب سے بهارے لئے دعاء مائكيں اس طرح" ادعو امالكاً" كامطلب بھى يہى ہے۔

قبولیہ: ''اخسینوا''اصل میں گئے کے دُھٹکارنے کے لئے جوالفاظ ہوتے ہیں اس کو کہتے ہیں گرار دومیں اس کے لئے کوئی مُعیّن لفظ ستعمل نہیں ہے۔

عارضة الاحوذى ميں ہے كہ چونكہ جہنيوں كے كلام كے صدرو بحز ميں اختلاف وتضاد ہے كيونكہ پہلے انہوں نے خودا قراركيا كہميں بدیختی نے گھيرليا ہے اور پھر بھی كہتے ہيں كہميں اس سے نكال ديں،اس لئے يہى

جواب مناسب ہے، کیونکہ وہ ایک محال خواہش کا اظہار کرتے ہیں۔

قوله: "زفير" گدھے کي آواز کي ابتدائي حالت جبكه آخري حالت کوهمين کہتے ہيں۔

انام ترندی کی تصریح کے مطابق بیروایت موقوف ہے تا ہم اسے مرفوع کے علم میں کہنا میج ہے کیونکہ بید مدرک بالرائے والعقل نہیں ہے۔جیسا کہ اصول میں بیان ہواہے۔

صديث الى معيد النبى صلى الله عليه وسلم قال: "وهم فيها كالحون "قال تشويه النار فَتَقلَص شَفَتُه العُلياحتى تبلغ وسط راسه وتسترخى شفته السُفلي حتى تضرب سُرته". (حسن صحيح غريب)

نی سلی اللہ علیہ وسلم نے اس آیت کے متعلق فرمایا''و هم فیها کالمحون''(مؤمنون: آیت:۱۰۱) ترجمہ:وہ جہنمی اس میں بدشکل ہوں گے آپ نے فرمایا کہ آگ دوزخی کو بھون ڈالے گی اس طرح اس کا بالائی ہونٹ سکڑ جائے گایہاں تک کہ وہ اس کے سرکے نصف تک پہنچ جائے گا جبکہ اس کا نچلا ہونٹ لٹک جائے گایہاں تک کہ اس کی ناف تک آ جائے گا۔

قوله: "كالحون " ترش رُواور بكر عبوے مُنه كوكت بي كالح كى جمع ہے جس كے مونث دانوں اورمنه كونه مُعيا سكے۔

قوله: "فتقلص" ان يحقبض يعنى سكوجائ كا اورست جائكا جيدريشى كيرُ اجلنے سيسكوجاتا ہے۔ حديث آخر: - "لوان رصاصة مثل هذه واشار الى مثل الجُمجُمَةِ أُرسِلت من السماء الى الارض الخ". (حسن صحيح)

آپ نے فرمایا کہ اگراس طرح کاسیئہ اوراس کے ساتھ آپ نے ایک گول برتن (یا سرو کھو پڑی) کی مانٹرکا اشارہ فرمایا آسان سے زمین کی طرف پھینکا جائے (یا چھوڑ دیا جائے) جس کی مسافت پانچ سوسال ہے تو وہ رات سے پہلے ہی زمین پر پہنچ جائے گالیکن اگروہ سیسہ (گولایا گیند) زنجیر کے بسر ہے سے چھوڑ اجائے تو وہ وہا لیس سال تک ون رات چلار ہے گاجہنم کی جہہ تک جانے یا فرمایا کہ گہرائی سے قبل (یا زنجیر کے دوسر سے بہلے)۔

قوله: "رصاصة" سفيدكولعى اوركاكوأسرب يعنى سيسه كتية بين قوله: "المجمعة" بضم الجمين كول برتن كوبعى كتية بين اوركو برى كوبعى مرادكول كيندى طرح سيسه كاكولا ب قوله: "من رأس

السلسلة" السعمرادوه زنجير بجس كاذكرسورة الحاقة مين آيا بي في سلسلة ذرعها سبعون ذراعاً فاسلكوه" السنجون ذراعاً فاسلكوه" السنجير بي جبني كوجكر اجائكا والعياذ بالله

قوله: "اصلها" لین زنجیر کا دوسرایس اجبکه تعرها سے مرادجہنم کی تبهہ ہے راوی کوشک ہے تا ہم زنجیر کا نچلاسر ااور دوزخ کی تبهد دونوں مسافت میں مساوی ہیں۔واللہ اعلم۔

اشکال:۔آسان سے زمین تک تو کوئی بھی مادی چیزا کیک دن میں نہیں پہنچ سکتی؟ بلکہ روشی بھی نہیں پہنچ سکتی ہے جس کی رفتار تقریباً تمین لا کھ کلومیٹر فی سیکنڈ ہے۔

حل: في عبد الحق محدث دہلوگ نے جواب دیا ہے کہ یہاں مرا تقلیل ہے یعنی اگر آسان سے زمین تک کی مسافت ایک دن میں فرض کرلی جائے تو وہ زنجیراس کے مقابلے میں چالیس سال کی مسافت سے بھی زیادہ طویل ہے لہذا میں شاخم سے لئے ہے جیسا کہ قرآن وسنت کا اصول ہے کہ آمیکہ میں تفاخم الناس کی رعابیت کی جاتی ہے۔

باب ماجاء ان ناركم هذه جزء من سبعين

جزء من نارجهنم

(دوزخ کی آگ دنیوی آگ ہے ائتہر گنازیادہ تیز ہے)

عن ابى هريرة عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: ناركم هذه التى توقدون جزء واحدمن سبعين جزء من حَرِّ جهنم، قالواو الله إن كانت لكافية يارسول الله إقال فانها فُضِّلت بتسعة وستين جزءً كُلُهن مثل حَرِّ ها". (حسن صحيح)

تہاری یہ آگ جے تم جلاتے ہوجہنم کی حرارت (گری) کے ستررہ کا بڑاء میں سے ایک ہے، صحابہ کرام نے عرض کیا کہ اللہ کے رسول! بلا تخبہہ یہ (دنیوی) آگ بھی یقینا کافی ہے، آپ نے فرمایا کہ کوئی شکن بیس کہ اُسے اُنتہر گنا بڑھایا گیا ہے جس کا ہر جزء اِس (دنیوی آگ) کی طرح گرم ہے۔
تشریح: قولہ: "ان کانت "مخفقہ من المثقلہ ہے یعنی اِنّه یا انہا کانت اللہ ۔
قولہ: "قال فانہا فُضِلت اللہ" جواب کا مطلب بیہ ہے کنہیں بلکہ چونکہ جہنم کی آگ اللہ تبارک

وتعالی کے غضب کامظہرواٹر ہےاوراس کے انتقام کا ذریعہ ہے اس لئے اس کا جوش وخروش اور درجہ کرارت یقیناً دنیاوی آگ سے زیادہ ہونا جا ہے۔

عارضة الاحوذى ميں ہے كہ كويا صلا آگ جہنم كى ہے كر جب اللہ نے اسے دنيا والوں كے فائد ے لينى جلانے كے كام كے كہ بھينا چا ہا تو اسے سمندر ميں دوم تبد ڈيوكر ثكالا ، اگر چہ بير صديث ايك طرح كي تمثيل ہے اصل آگ جہنم كى بہت كرم ہے تا ہم دنيوى آگ كا درجہ حرارت مختلف ہوتا ہے۔ اگر ہم اوسطا ايك ہزار سينٹى كريڈ لي اس تو مانتا پڑے كا كر دوزخ كا درجہ حرارت سر ہزار سينٹى كريڈ ہے۔ اَعَا ذَنَا الله منهاو من كىل كوب يوم القيامة و رَحِمَنا في القبر و الحشو۔

حديث آخ: - "أوقدعلى النارالف سنة الخ".

جہنم کی آگ کوایک ہزارسال دہکایا گیا یہاں تک کہ دہ مُرخ ہوئی پھراسے ہزارسال دہکایا گیا تا آئکہ دہ سفید ہوئی پھراس کوہزارسال دہکایا گیا حتیٰ کہ دہ کالی ہوگئی، چنانچہ (اب) دہ سیاہ تاریک ہے۔

سائنسی تحقیق کے مطابق بھی سیاہ رنگ تمام رنگوں میں سب سے زیادہ گرم ہے مع ہذااس کا تاریک ہونا مزید ہیبت ناک ہوگا۔غرض شدت حرارت کے ساتھ اس میں شدید وحشت بھی ہوگی۔ (بیرحدیث موقوف در تھم مرفوع ہے مگر مرفوعاً بھی مردی ہے)

باب ماجاء ان للنارنَفَسين وماذُكِرَ مَن يُخرجُ من

النارالخ"

(دوزخ کے دوسانس کابیان اور دوزخ ہے مؤمن کے نکلنے کا ذکر)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :اشتكت النارإلى رَبها و قالت أكّلَ بعضى بعضاً فَجَعَلَ لها نَفَسَين نَفَساً في الشتاء وَنَفَساً في الصيف فامانَفَسُهافي الشتاء فزمهرير واما نَفَسُها في الصيف فَسَمُوم ". (حسن صحيح)

جہنم نے اپنے رب سے شکایت کی،اس نے کہا کہ میرے بعض نے بعض دیگر کو کھالیا۔ چنانچہ (درخواست کو قبول فرماکر) اللہ نے اس کو دوسانسوں کی اجازت مرحمت فرمائی ایک سانس سردیوں میں اور دوسرا

سانس گرمیوں میں، پس اس کاسردیوں والاسانس تو وہ زمبر بر (سخت شنڈا) ہے اور جو گرمیوں والاسانس ہے تو وہ نو ہے (بعنی شدید گرم ہوا)۔

تشريح: _قوله: "اشتكت النار" يشكايت بزبان قال بعيمكن باور بزبان حال بعي مراد بوسكى

ہ۔

قوله: "نَفَساً" بِالْمُحْتِينِ سانس *كوكهت*ِ بير_

قوله:"زمهرير" تخت تُمندُا۔

قوله:"سموم " گرم ہوا۔

اس نظام تفس کے دومطلب ہوسکتے ہیں:ایک میہ کہ اس کوظا ہر یعنی معنی حقیقی پرمحمول کیا جائے علی ہذا مجمد اس نظام تفس کے دومطلب ہوسکتے ہیں:ایک میہ کہاں کہ کا اس نظام تشریح استرندی: جلداول:ص:۲۰۴ پر گذراہے۔(ویکھئے''باب ماجاء فی البجیل بالظہم''ص:۴۰:۲:)

مزیدبرآ سیس کے بارے میں سائنی تحقیق یہ ہے کہ جب اس کے مالیکواز قریب وجمع ہوجاتے ہیں توان میں حرارت پیدا ہوتی ہے جس ہیں توان میں حرارت پیدا ہوتی ہے جس کی آسان مثال فرت کا کمپریسر ہے کہ جب گیس اس کے اندر ہوتی ہے تو گرم رہتی ہے اور جب پائیوں میں پھیل جاتی ہوجاتی ہے تو گرم رہتی ہے اور جب پائیوں میں پھیل جاتی ہے تو شنڈی ہوجاتی ہے اس لئے فرت کے برف فانہ سے حرارت نکل کرسر دہوجاتا ہے، تاہم چونکہ عالم غیب اسباب کے ضابطے سے بالاتر ہے اس لئے وہاں بیضابطہ لاگوکرنے کی ضرورت نہیں کیونکہ وہ محض خوار ت

دوسرامطلب میہ کہ اس کومعنی مجازی پرمحمول کیا جائے کہ دنیا کی گرمی وسر دی دوزخ کے سموم وزمہریر کے مشاہر ہیں گویا بیدو ہاں ہے آتی ہیں۔

بعض حفرات کوزمبر پر کوشندامانے میں تا مل ہے میرے خیال میں بدتا مل یا انکارایک غلطہ ہی پہٹی ، ہے کہ دہ بیسوچتے ہوں گے کہ آگ کے اندرسر دخانہ کو یا نعمت ہے، حالانکہ ایسا ہر گرنہیں جھے اچھی طرح یا دہ کہ جب ہم بچپن میں برف میں کھیلتے اور ہاتھ پاؤں سُن ہوجاتے تو آکر آگ کے پاس بیشے جاتے حالانکہ بزرگ اس ہے منع کرتے ، مگر جب ہاتھ بیرگرم ہوجاتے تو ہم دردکی شدت سے تڑ پنے لگتے ، الہذاگرم اور سردکا اجتماع ہرایک کی انفرادی تکلیف سے بہت زیادہ ہے۔ اُعا ذَنا الله من غضبہ

مديث آخر: _"عن انس أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الخ".

قادہ کے دونوں شاگردوں شعبہ اور ہشام کے الفاظ شروع صدیث میں مختلف ہیں، ہشام نے کہا کہ
دوزخ سے نکلے گا اور شعبہ کے الفاظ ہیں کہ جہنم سے ہراس شخص کو تکالوجس نے ''لاالے اللہ '' کہا ہوا وراس
کے دل میں بو کے برابر خیر (ایمان) ہو (اور) جہنم سے تکالواس شخص کو جس نے لاالے اللہ اللہ '' کہا ہوا وراس
کے دل میں گندم کے دانے کے برابر خیر (ایمان) ہو، جہنم سے تکالواس شخص کو بھی جس نے ''لاالمہ اللہ اللہ '' پڑھا
ہوا دراس کے دل میں ذرہ کے وزن کے مطابق خیر ہو، شعبہ کی روایت میں ذرہ بغیر تشدیدراء کے ہے جس کے معنی کہا کا دانہ ہیں۔ (حسن سجے)

بیروایت بخاری و مسلم میں بھی ہے (بخاری: ص: ۱۱ج: ۱' باب زیادة الایمان ونقصانه ') اور (مسلم: بیروایت بخاری و مسلم میں بھی ہے (بخاری: ص: ۱۱ج: ۱۱ج: ۱۱جی الایمان ونقصانه ') اور (مسلم: بیروایت بیل الایمان میں ' بخرج' ') کاصیفه مجبول بھی آیا ہے پھر شعبہ کی روایت میں 'احسر جو ۱' باب افعال سے امر کے مخاطب وہ اہل ایمان ہیں جن کو جنت کا پروانہ مل چکا ہوگا، وہ بل صراط عبور کرنے کے بعد دوسرے مؤمنین کی سفارش کریں گے تو اللہ تبارک وتعالی ان کی سفارش منظور فرما کران سے فرما کیں گے کہ حاک نکالوالے۔

قوله:"بُرُّة" كُنْدم_

قوله: "ذرّة" بفتح الذال وتشريدالراء المفتوحيئر في چيونى كوبھى كہتے ہيں اور كمرے ميں روشندان ميں آنے والى دھوپ ميں جوگرو كے چھوٹے اجزاء نظرآتے ہيں ان كوبھى كہتے ہيں اور ہاتھ زمين پرر كھ كرجھاڑنے سے جوجزء گرتا ہے اس كوبھى ، كنابيہ تليل ترين مقدار سے ، اس روايت ميں شعبہ نے ذرة بضم الذال وتخفيف الرائقل كيا ہے جوكئى كو كہتے ہيں كيكن امام سلم يروايت نقل كرنے كے بعد لكھتے ہيں: "قسال يسزيد حسَد حف فيها ابو بسطام" ابوبُطام شعبہ كى كنيت ہے يعنی انہوں نے اس ميں تھے ف كى ہے البذا سے حوثر قرالتشد يوبى ہے كيونكدروايت كى ترتيب ميں زيادت سے كى كی طرف انقالات ہوئے ہيں۔

اس روایت سے بظاہرایمان کی زیادتی و کی معلوم ہوتی ہے کیونکہ بُوگندم سے بڑا ہوتا ہے اور ذرہ سب سے چھوٹا ہوتا ہے، بید مسئلدان شاء اللہ کچھ تفصیل کے ساتھ ابواب الایمان میں عنقریب بیان ہوگا، تاہم چونکہ فرکورہ روایت میں خیرسے اوراس روایت کے مطابق جس میں ایمان کی تصریح ہے سے ایمانی کیفیات بھی مراد ہوگئی ہیں جوایمان کے آثار میں شار ہوتی ہیں ایس حدیث کا مطلب یہ ہوگا کہ جس نے لا اللہ اِلّا اللہ یعن کلمہ

شہادت پڑھاہوجس سے دہ مؤمن شارہوتا ہے ادراس کے دل میں اس کے آثار بھی پائے جاتے ہوں، چونکہ نکالنے والے اہل ایمان ہوں مے ادران کوایمان کے آثار ہی نظر آسکتے ہیں اس لئے مراد آثار ایمان لینازیادہ قرین قیاس ہے نیزاس لئے بھی کہ سلم:ص:۳۰ایراس مدیث کے آخر میں ہے:

"فيقول الله تعالىٰ:شفعت الملائكة وشفع النبيُّون وشفع المؤمنون ولم يبق إلاارحم الراحمين فيقبض قبضة من النارفيخرج منهاقوماً لم يعملوا خيراً قط الخ".

ظاہرہے کہ بغیرایمان کے تو کوئی بھی جنت میں نہیں جاسکتا معلوم ہوا کہ خیرسے مراداعمال اور کیفیات قلبیہ یعنی ایمان کے آثار ہیں۔مزیر تفصیل کے لئے بخاری وسلم کی شروحات ملاحظہ ہوں۔

حدیث آخر: _اللدتعالی فرمائیں گےجہم سے نکالواس مخص کوجس نے کسی ون مجھے یاد کیا ہویا کسی موقع پر مجھ سے ڈرا ہو۔ (حسن غریب)

یعنی جو بتقاضائے ایمان اللہ کو یا دکر چکا ہو یا اللہ سے ڈرا ہو، یہ قیدلگا ٹا اس لئے منروری ہے کہ پچھے نہ پچھے خوف اور ذکر تو کفار بھی کرتے ہیں۔

حديث آخر: - "عن عبدالله بن مسعودٌ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: انى كاعرف اخراهل النارخروجاً رجل يخرج منهازَ حفاً فيقول يارب النخ". (حسن صحيح) رسول الله صلى الله عليه وكلم نے فرمايا دوزخ سے نكلنے والے آخری شخص كويس اچھى طرح جانتا ہوں وہ

رسون الله فی الله علیہ و مے حرمایا دوری سے صفوا ہے الری میں ویں اپی عرب جانباہوں وہ الیا فخض ہے جواس سے نکل کر گھٹوں کے بکل چلے گا اور کہے گا اے میرے رب الوگوں نے سب گھروں کو (اپنے اپنے قبنے میں) لے لیا ہے آپ نے فرمایا: اس سے کہا جائے گا کہ تو جنت کی طرف چلوتو سہی اور اس میں داخل تو ہوجا! آپ نے فرمایا پھروہ چلے گا تا کہ اس میں داخل ہوجائے تو پائے گا لوگوں کو کہ انہوں نے سب مکانات لے لیے ہوں گے، چنانچہ وہ والیس لوٹ کر کے گا اے میرے رب الوگوں نے تمام جگہوں کو (اپنی تحویل میں) لیا ہے، آپ نے فرمایا کہ اللہ تبارک و تعالی اس سے فرما کیں گئے وہ زمانہ یا دہے جس میں تو تھا؟ (یعنی دنیا کی زندگی) وہ کہے گا'نہاں' (یا دہے) تو اس سے کہا جائے گا کہ اب تو آرز و کر! آپ نے فرمایا: پس وہ آرز و کی انہیں کہ خواہش کی آرز و کیس کی تم نے خواہش کی اور دنیا کا دس میں کریے گا ہیں اس سے کہا جائے گا کہ تیرے لئے وہ سب ہے جس کی تم نے خواہش کی اور دنیا کا دس مُنا (مزید بھی تہیں ویا جارہا ہے) آپ نے فرمایا وہ کے گا (ازروئے تعجب) کہ تو مجھ سے خداق اور دنیا کا دس مُنا (مزید بھی تہیں ویا جارہا ہے) آپ نے فرمایا وہ کے گا (ازروئے تعجب) کہ تو مجھ سے خداق

کرتاہے حالاتکہ تو مالک الکل ہے؟ ابن مسعود فرماتے ہیں کہ بخدامیں نے رسول الله حلی الله علیہ وسلم کود یکھا، آپ بنس پڑے یہاں تک کہ آپ کی داڑھیں کھل گئیں (یعنی نمودار ہو گئیں اور نظر آئیں)۔

قوله: "آخو اهل النار" اگلی روایت جوابوذر سے مروی ہے یں "و آخر اهل البعنة دخو لا" "کا اضافہ ہے تو ملاعلی قاری مرقات میں فرماتے ہیں کہ ان دونوں میں تلازم ہے للہٰ ادونوں کوذکر فرمانا صرف وضاحت کے لئے ہے، یہ بھی ہوسکتا ہے کہ دفع تو ہم کے لئے ہوکہ اسے درمیان میں معلق نہیں رکھا جائے گا بلکہ دوز خے سے نکا لئے کے بعد سیدھا جنت میں لے جایا جائے گا۔

قوله: "زَحفاً" يَكِكا پيداوركبنول كيل مركنا_

یدروایت بہال مخضر ہے سلم بھی۔ ۱۹۰۵ تا ایس بیروایت تنصیلاً مردی ہے۔ جس کا خلاصہ بیہ کہ یہ شخص دوزن سے نکلتے وقت گرتا اُٹھتا ہوا مشکل سے نکل جانے کے بعد والیس مُو کر دوزن کود کی کراللہ کاشکر کر ہے گا اور کے گا کہ اللہ نے مجھے وہ نعمت دی جو کی کوئیس دی ہے پھراسے ایک درخت وکھائی دے گا تو وہ اس کے قریب جانے کی درخواست کرے گا، اللہ تبارک وتعالی اس سے وعدہ لے گا کہ پھرکوئی آ رزوتو ظا ہزئیس کرو گے وہ وعدہ کر ہے گا، اللہ تبارک وتعالی اس سے وعدہ لے گا کہ پھرکوئی آ رزوتو ظا ہزئیس کرو گے وہ وعدہ کر ہے گا، اللہ تبارک وتعالی اس مرح کے اور اینی پینے گا توایک اور درخت جو پہلے سے زیادہ خوبصورت ہوگا اسے دکھائی دے گا، اس طرح وہاں بھی جانے کی خواہش کر ہے گا اور وعدہ کر ہے گا کہ پھرکوئی سوال نہیں کروں گا، غرض وہاں چنچنے کے بعد جنتیوں کی آ وازیں سے گا اس طرح وہ جنت میں داخل ہونے کی درخواست دو عاء کر ہے گا الخ۔

قوله: "آتَـنك كرالز مان الذى كنتَ فيه؟" بعض شارطين نے اس سے جہنم كى زندگى مرادلى بے ليكن سے جہنم كى زندگى مرادلى بے ليكن سے جہنم كى زندگى مرادلى بے ليكن سے جہنم كى زندگى مراددنى بادہ اور اور بيكى بادشاہ بوجس كى آرزودنى بىلىت جائے تو زب قسمت اس لئے مراددنیا ہے تھر يہ بھى بوسكتا ہے كہ بي خض كوئى بادشاہ بوجس كى آرزودنيا بيس مملكت كى توسيح تقى اور عام خض بھى بوسكتا ہے كہ اسے بادشاہ بننے كاشوق يا تصور گذرا بو قولد: "ضحك" بمعنی تبسم كى توسيح تقى اور نواجذ سے مرادانيا بيا انياب كے بعدوالے دانت بيں، كيونكم آخرى داڑھوں كے ديكھنے كے لئے بورامنے كولنا پڑتا ہے جو آئے كى عادت شريف نقى ۔

ر ہایہ مسئلہ کہ اس مخص نے اللہ کی طرف مسخر کی نسبت کی جسارت کیسے کی ؟ تواس کے تین جواب ہو سکتے ہیں: (۱) کہ چونکہ اس مخص نے بار باراللہ سے وعدہ کیا اور پھراسے تو ڑا اور ہروعدہ خلافی پراللہ نے اس

کاعذر تبول فرمایاعلی هذاای درگذر کوبطور مشاکلت سُخرید کہا۔ (۲) یا استفہام انکاری ہے لینی مجھے پہتہ ہے کہ تو ذات نہیں کرتا۔ (۳) یا پھریہ بات ہے ساختہ اس کی زبان پر آجائے گی جس کی ایک مثال پیچھے گذری ہے کہ جس شخص کی سواری کم ہوئی ہواور مالوی کے بعدا سے ل جائے اور وہ کہے:''انت عبدی و انار بک '' آپ کی مسکرا ہے سے تیسر سے اختال کی تائید ہوتی ہے۔ (تدبر)

صدیت الی ذران سے جو لہ: "یُوتی ہو جل فیقول سَلُو اعن صِغار ذنو به و اَحْبِنُو اکبارها".

یکی اس آخری جنتی کو دوز خ سے نکالنے کے بعد لا یا جائے گا تو اللہ تبارک و تعالی (فرشتوں سے)
فرمائیں گے کہ اس سے چھوٹے چھوٹے گئا ہوں کے بارے میں پوچھواور بڑے گناہ پوشیدہ رکھو (یعنی ان کے
بارے میں مت پوچھو) چنا نچے اس سے کہا جائے گا کہتم نے فلاں فلاں دن فلاں فلاں کام کئے تھے؟ تو نے فلاں
فلاں و قت یہ یکام کئے ہیں؟ (تو وہ اقر ارکر ہے گا) آپ نے فرمایا پس اس سے کہا جائے گا کہ تیرے ہرگناہ کے
بدلے ایک نیکی ہے آپ نے فرمایا وہ شخص فوراً کہے گا اے میرے رب ابلا شبہہ میں نے بہت سے کام
بدلے ایک نیکی ہے آپ نے فرمایا وہ شخص فوراً کہے گا اے میرے رب ابلا شبہہ میں نے بہت سے کام
(گناہ) اور بھی کئے ہیں جن کو میں یہاں نہیں دیکھا ابو ذرط فرماتے ہیں بخد امیں نے رسول اللہ علی اللہ علیہ وسلم کو

اس کا ایک مطلب تو سابقہ حدیث میں گذراہے کہ مراد مخک سے تبسّم ہے کیکن بعض علاء نے اس کو ظاہر پر محمول کیا ہے اور فرمایا ہے کہ اگر چہ آپ کی عادت شریفہ تو مسکراہ ہے ہی کی تاہم ہوسکتا ہے کہ بعض دفعہ آپ نے خک بھی فرمایا ہو علی بندا کہا جائے گا کہ بھی کبھار ہننے میں کوئی قباحت نہیں بشر طیکہ کثرت وشدت کی حد تک نہ ہو، جہاں تک قیمتے اور حجک کی عادت کا تعلق ہے تو ان سے بہر حال بچنا جا ہے۔

قوله: "أخبنوا" إخباء عامركاصيغه العنى جُمها وَعَبُأُ كَمْ عَن جِمها فَ كَآت إِيل قوله: "فان لَكَ مسكان كل سَيّنة حسنة" اگراس محف فضل بارى كهاجائة وهرتوكوكي اشكال نهيل كونكه "فان لك فضل الله يوتيه من يشاء" لكن اگراس خصوصيت برمحول ندكياجائة واس كوسورة فرقان كى "ذالك فضل الله يوتيه من يشاء" لكن اگراس خصوصيت برمحول ندكياجائة واس كوسورة فرقان كى آيت نمبره كالامن تاب وامن وعمِلَ عملاً صالحاً فأولئك يُبدِ لُ الله سَيّناتهم حسناتٍ وكان الله غفوراً رحيماً "كان الله غفوراً رحيماً "كان الله غفوراً رحيماً "كان الله عن عملاً عملاً عملاً عام كان الله عن عادت عطافرا تاب، شرك الله مقوراً رحيماً كوش عفت اور خل كى جكه الله عن مركرى خصلت كوش الله اس كواچهى عادت عطافرا تاب، شرك كي بدلة حيد، زنا كوش عفت اور خل كى جكه الحام عيره وغيره كردوم اقول بيه كه بيتبد يلى زماندا سلام عيل

کے ہوئے گناہوں کے بارے میں بھی ہاور عین گناہ کی جگہ قیامت کے دن اللہ تبارک و تعالی اسے نیکیاں عطا فرمائے گاجیے سے سیار کی بارے میں بھی ہا دورہ وہ مقوی وہوت افزا ثابت ہوجاتی ہالبتہ ہے کہ نامشکل ہے کہ ایسانرم. سلوک کتنے لوگوں سے کیاجائے گا؟ تاہم اتن می بات ظاہر ہے کہ ندامت کو لمحوظ رکھا جائے گا، یہ قول سعید بن مستب اور کھول کا ہے۔ باب کی حدیث سے اس کی تائید ہوتی ہے جبکہ پہلاقول ابن عباس و دیگر مفسرین کا ہے۔ مستب اور کھول کا ہے۔ باب کی حدیث سے اس کی تائید ہوتی ہے جبکہ پہلاقول ابن عباس و دیگر مفسرین کا ہے۔ تیسراقول ہے ہے کہ گناہوں کو مٹا کر مل صالح اور تو بہ کی برکت سے اس کی نیکیوں میں اضافہ کر دیا جائے گا۔ واللہ اعلم۔

صدیث آخر: حضرت جابر فرات جی کدرسول الدسلی الدعلیه وسلم نے فرمایا: دوزخ میں اہل توحید میں سے پچھلوگوں کوعذاب دیا جائے گا یہاں تک کہ وہ اس میں کوئلہ بن جا کیں گے، چھران کورحمت خداوندی ڈھانپ لے گی چنانچدان کو ذکالا جائے گا اور جنت کے درواز وں کے پاس ڈالا جائے گا ، آپ نے فرمایا پس جنتی ان پر پانی چھڑک دیں گے، اس طرح وہ آگیں گے جیسے کہ اُگناہے دانہ سیلاب کے لائے ہوئے مورانے میں، پھروہ جنت میں داخل ہوجا کیں گے۔ (حسن سیحے)

قوله: "حُصماً" بضم الحاءوفي ألميم مُمة كى جمع بمعنى كوئله كيا-

قوله: "الغُناء" بضم الغين اصل من سيلاب من بنے والى چيز كو كہتے بي مريهاں مراد داندادر نجے ہے۔ قوله: "محمالة السيل" سيل بمعنى سيلاب اور ثمالدادر تميل السيل بمعنى محمولد كے بيں يعنى سيلاب كے ساتھ بنے والى اشياء جيسے ككرياں، درخت كے اور اق اور كچير وغيره۔

چونکہ سیلانی کچرہ جب کنارے پر لگتا ہے تو اس میں پائے جانے والے دانے بہت ہی جلدا گئے ہیں اس لئے ان جنتیوں کی سُرعت صحبِ مندی کی حملۃ اسیل سے تشبید دی گئی، گویارا کھ اور کو کلہ سے انسان جلدی ہیدا ہوکر جنت کی طرف بھا گیں گے جبکہ اس سے قبل وہ کو کلہ بن چکے تھے، اگر غور کیا جائے تو کو کلہ بنانا بھی اللہ کی مہر یانی ہے کیونکہ جو جگہ جل کرمتغیر ہوجاتی ہے وہ سُن ہوکرا حساس در دوجلن سے تقریباً عاری ہوجاتی ہے، غرض صدیث باب کے مطابق عصاق مؤمنین کو جہنم میں عذاب دیا جائے گالیکن ان کی کھالیس تبدیل نہیں کی جائے گئی جبکہ کفار کی کھالیس تبدیل ہوتی رہیں گی تا کہ وہ اپنے کئے ہوئے کی سز اہمل طور پرچکھیں۔ صدیث الی سعید الحذری ہے۔ دوز خ سے ہراس شخص کو نکالا جائے گا جس کے دل میں آیک ذرہ کا ہم وزن مدیث الی سعید الحذری ہے۔ دوز خ سے ہراس شخص کو نکالا جائے گا جس کے دل میں آیک ذرہ کا ہم وزن ایمان ہوگا، ابوسعید خدری فرماتے ہیں کہ جس کو شک ہووہ 'ان اللہ لاینظلم مشقال ذرۃ ''الابیۃ پڑھ لے۔

قسولسه: "مشقال" بمعنی وزن کے جبکہ ذرتہ کے بارے میں پیچھے تین اقوال گذرے ہیں فلینذ کر۔ علاوہ از ال ابن العربی نے عارضة الاحوذی میں کھاہے کہ ذرتہ وینار کا ایک ہزار چوبیسوال جزء ہوتا ہے جو یہال مرادہے اور کنایہ ہے قلیل سے انہوں نے وینار کے باقی اجزاء کا ذکر بھی کیاہے ۔ فن شاء فلیراجع

صدیث آخر: حضرت الوہریہ دسول الله صلی الله علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں آپ نے فرمایا دوز خ ہیں جانے والوں میں دوخض بہت زیادہ چلا کمیں گے تورب جارک وتعالیٰ حکم دیں گے کہ ان دونوں کو دوز خ ہیں جانے والوں میں دوخض بہت زیادہ چلا کمیں گے تم دونوں کا زور، زورسے چنخا چلا تاکس بناء پرتھا؟ وہ جواب دیں گے کہ ہم نے ایساس لئے کیا تاکہ تو ہم پرحم فرمائے! الله فرما کمیں گے تہمارے لئے میرارحم کرنایہ ہے کہ تم دونوں جا واورخودکودوز خ ہیں وہیں ڈالوجہاں تم سے، چنانچہوہ دونوں چلیں گے، پس ان میں ایک تو خود کوگرادے گا ورخودکو وزخ ہیں وہیں ڈالوجہاں تم سے، چنانچہوہ دونوں چلیں گے، پس ان میں ایک تو خود کوگرادے گا ورخودکو تالله دوزخ (کی اس جگہ) کوشند اخوشگوار بنادے گا جبکہ دوسرا کھڑار ہے گا اورخود کو نہیں گرائے گا، پس رب جارک وتعالی اس سے پوچھیں گے کہ تہمیں کس چیز نے خودکوگرانے سے روکا جیسے تیرے ساتھی نے خودکوگرانے اور وہ جواب دے گا کہ اے میرے رب! جھے پوری امید تھی کہ تو جھے اس میں دوبارہ نہیں لوٹائے گا بعداز اس کہ تو ایک دفعہ جھے نکال چکا، تورب جارک و تعالی اس سے فرما کیں گے کہ تم اپنی امید پر رہو چنانچہوہ دونوں اللہ کے فضل سے ل کر جنت میں داخل ہوجا کیں گے۔

اس روایت میں رشدین بن سعداورانعم افر لقی دونوں ضعیف ہیں۔

مديث آخر: _ "لَيُخرَجَنّ قوم من امتى من النار الخ". (حسن صحيح)

آپ نے فرمایا یقینا میری امت کے کھولوگ میری سفارش سے جہنم سے نکالے جا کیں مے جن کوجہنمی کہا جائے گا (یعنی الل جنت ان کوجہنمیوں کے نام سے یادکریں مے)

قوله: "ليخوجن" نذكوره بالاترجمه مجهول صيغ كاكيام كياسي-

قوله: "نُسَمُّونَ الجهنمين" جَبَنى كى جمع ہے تا ہم سلم كى روايت ميں ہے كہ بيلوگ الله سے دعاء مائليں مے جس كى وجہ سے ان كا يہ تسميہ ختم كرديا جائے گالينى اس كے بعد جنتى ان كوجہنى كہنا چھوڑ ديں مے۔ حديث آخر: _ آپ سلى الله عليه وسلم نے فرمايا ميں نے دوزخ جيسى تكين چيزہيں ديھى دراں حاليكہ اس سے بھا منے والاسور ہا ہواور جنت جيسى فعت نہيں ديھى دراں حاليكہ اس كا چاہنے والاسور ہا ہو۔ حاشيہ توت يراس حديث كومرفوع كے بجائے عامر بن قيس كامقولہ قرار ديا ہے امام تر ذك تے ہى اس کی تضعیف کی ہا گر چینض حضرات نے اس کی تحسین بھی کی ہے۔

بہرحال مطلب اس کا یہ ہے کہ دوزخ کی ہولنا کی سُن کرایک آدمی کیسے سوسکتا ہے، جبکہ جنت کی لا متنابی نعمتوں کا سُن لا متنابی نعمتوں کاسُن کرکسی کو نیند کیسے آتی ہے؟ اس لئے بعض حضرات نے ''مساد أیست ''کوفعل تعجب کا صیغہ مانا ہے یعنی ان دونوں کونظرا نداز کرنا تعجب خیز ہے۔

باب ماجاء أن اكثراهل النار النساء

(دوزخ میں زیادہ تعدادعورتوں کی ہے)

"عن ابى رجاء العطار دى قال سمعتُ ابن عباس يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : إطَّ لعتُ في النار فرأيت اكثر اهلها النساء". (حسن صحيح)

آ پ صلی الله علیه وسلم نے فرمایا میں نے جنت میں جھا لکا تو میں نے جنت والوں میں زیادہ تعداد غریبوں کی دیکھی اور میں نے دوزخ میں جھا نکا تو میں نے دوزخ والوں میں زیادہ تعدادعورتوں کی دیکھی۔

تشریح: حضور پاک سلی الله علیه وسلم کا میجها نکنالیلة الاسراء یاصلوة خسوف میں ہوسکتا ہے اوران کے علاوہ بھی ہوسکتا ہے کوئی مرتبہ دکھائے گئے ہیں۔

جنت میں فقراء کی اکثریت ایک تواس لئے ہے کہ غریب آ دمی عموماً اللہ کے احکامات کوخوشی سے مانتا ہے جبکہ غنی میں عموماً سرکتی کاعضر پایا جاتا ہے۔ دوم ویسے بھی دنیا میں غریبوں کی تعداد زیادہ ہوئی بلی ظاوجہاول کے۔ سے جنت میں تعداد زیادہ ہوئی بلی ظاوجہاول کے۔

جہاں تک عورتوں کی دوزخ میں اکثریت کاتعلق ہے توایک تو دنیا کی عورتوں کی تعداد مردوں کے مقابلہ میں زیادہ ہے دوم عورتوں میں ناشکری اور فسق و فجو رکا عضر زیادہ ہوتا ہے دیکھئے جب وہ بازار کی غرض سے گھر سے نگلتی ہیں تو کس طرح زیب وزینت اختیار کرتی ہیں اس کا مقصد مردوں کواپئی طرف راغب و مائل کرتا ہے، تاہم بیار شادا بتداء احوال آخرت کے بارے میں ہوسکتا ہے گر جب اللہ کے فضل سے مؤمنات دوزخ سے نکل جا کیں گی تو پھر شاید صورت حال مختلف ہوجائے ، بہر حال اس روایت میں حور میں کو کھی ظامیں رکھا گیا ہے۔ بلکہ صرف دنیوی کو گول کے حوالے سے بات کی گئی ہے۔

باب

"عن النعمان بن بشيران رسول الله صلى الله عليه وسلم:قال ان اهو نَ اهل النار عذاباً رجل في احمص قدميه جَمرتان يغلى منهمادماغه". (حسن صحيح)

دوزخ والوں میںعذاب کے حوالے سے ہلکا ترین وہ مخص ہوگا جس کے دونوں پیروں کے تلووں میں دوچنگاریاں ہوں گی جن سے اس کاد ماغ اُبل رہا ہوگا یعنی کھولے گا۔

تشریخ: قوله: "احمص" پاؤں کے تلوے میں جوخالی جگہ ہوتی ہے، بخاری کی روایت کے مطابق یہ خوض خواجہ ابوطالب ہوں گے میقینا ان کی اسلام کے لئے بوی خدمات ہیں اور حضور علیہ السلام سے انتہائی محبت کرتے جس کی برکت سے عذاب میں تخفیف تو ہوگی مگر عدم ایمان کی وجہ سے جنت میں واخل ہونے کی المیت سے محروم رہے ۔ واللہ علیم علیم ۔ اس کی کچھ کمتیں مفسرین نے ذکر کی ہیں ۔

باب

"اَ لَا أُخبِركم بِهاهل الجنة؟كل ضعيف مُتَضَعّف لواقسَمَ على الله لَا بَرُّه اَ لَا أُخبِركُم باهل الناركل عُتُلِّ جَوَّاظٍ متكبر". (حسن صحيح)

کیاتہ ہیں جنتیوں کے بارے میں (لیعنی ان کی علامات)نہ بتلا کا ہر کمزور جفیر سمجھا جانے والا ہے اگروہ اللہ کے بھروسے پرتشم کھائے تواللہ اس کی قتم پوری کرے اور کیاتہ ہیں دوز خیوں کے بارے میں نہ بتلا کاں؟ ہر سخت مزاج (یابدزبان) مالدار بخیل (یاموٹا پیٹو) اور گھمنڈی۔

تشریخ:۔یدروایت مسلم بس ۲۰۳۰ج:۲ میں بھی آئی ہے امام نووی اس کی شرح میں لکھتے ہیں کہ "منصفحف" ماہواکمشہور کے مطابق بفتح العین ہے یعنی جے لوگ معمولی سجھتے ہیں اوراس کے ضعف کی وجہ سے اس پر چڑھ آتے ہیں جبکہ ضعیف بمعنی متواضع کے ہے، چونکہ ایسافخص زم دل ہوتا ہے اس لئے ایسافخص جنتی ہوتا ہے۔
قوله: "عتل" بضم العین والتاء بدمزاج جھکڑ الو۔

قوله: "جواظ" بفتح الجيم وتشديد الواوَاس كئ معانى بيان كتي بي مال جمع كرنے اور بخل كرنے والا يعنى جوهو ق ندديتا ہو، يا جوموٹا ہو۔" وقيل القصير البطين " يعنى بردے پيف والا تعمماً نا۔" وقيل

* ...

+-

الفاحر "لعن فخركرنے والا

قولسه: "مت كبراورغروركرف والأعمن لأكرف والا چونكه ايدا محض الله كالحلوق پرحمنيس كرتا ورحم فيون الله و كرتا ورحق ق العبادى پرواه فيل كرتا الله و يصلحه

ابي الابمان

عن رسول الله صلى الله عليه وسلم

ایمان باب افعال کامصدرہے مجرد باب ''امن '' ہے جس کے معنی بے خوف ہونے اور مطمئن ہونے کے آتے ہیں باب افعال چونکہ متعدی ہوتا ہے اس لئے اس کے معنی ہوں گے بے خوف و مطمئن کرنے کے چنانچہ جس نبی پرایمان لایاجا تا ہے مؤمن اس کواپنی طرف سے اطمینان کا یقین ولا تاہے کہ آپ میری تکذیب سے بے خوف دہے!

اس طرح مو من خود بھی نبی ورسول کی بات ہے مطمئن ہوجا تا ہے آگر چداس بات پر دلیل نہ ہو چنا نچہ متکلمین بعنی اہل النة والجماعة کے نز دیک مقلد کا ایمان بھی معتبر ہے بعنی ایمانِ تقلیدی۔

ایمان سے متعلق ابحاث کافی طویل ہیں جس کو تفصیل در کار ہوتو وہ بخاری کی شروحات خصوصاً عمد ہ القاری علامہ عینی کی شرح بخاری میں دیکھے لیے یہاں انتہائی اختصار کے ساتھ اس کے چند پہلوؤں کو اجمالاً بیان کرتا ہوں:

(۱)ایمان لغت میں وہی تقدیق منطقی جمعنی اذعائ تھم المخمر کے ہے بینی خبردیے والے کوسیا مانناالبتہ تقیدیق منطقی اورایمان میں بیفرق ضرورہ کہ ایمان نفس تقیدیق کا نام نہیں بلکہ اس اذعان کے ساتھ قبول وانقیاد بھی ضروری ہے، بایں طور کہ اس پر شلیم کا اطلاق صبح ہوسکے جسے فارس میں گرویدن کہا جاتا ہے لینی بغیرانتکہاروا نکاراور بلاعناد ماننا بخرض تقیدیق مع الانقیاد کوایمان کہتے ہیں جبکہ تقیدیق منطق کے لئے انقیاد شرط نہیں۔ (تدیر)

اصطلاح شریعت میں ایمان کی تعریف عقائد نمی وشرح عقائد میں یوں کی گئی ہے: "والایسمان هوالتصدیق بماجاء به من عندالله تعالیٰ ای تصدیق النبی صلی الله عملیمه وسلم بالقلب فی جمیع ماعلم بالضرورة مجیئه به مِن عندالله

تعالى اجمالاً والاقراربه الخ".

یعنی حضور صلی الله علیه وسلم الله کی طرف سے جو پچھ لائے ہیں اوروہ اس طرح ثابت ہیں جیسے بدیبی موتا ہے تو ان سب کی تقید بیت مع الاقرار باللمان اجمالی طور پرکرنا ایمان ہے۔ ہاں جو چیزیں تفصیل مروی ہیں یا جن کی تفصیل کموظ ہوتو وہاں ایمان تفصیلی لا نابھی لازی ہے، نیز اقرار سے مانع کی صورت میں اقرار کا سقوط بھی ہوسکتا ہے لیکن عندالمطالبہ بدون المانع اقرار بھی لازی ہے۔

حاصل مطلب بیہ ہے کہ دین کی وہ موٹی موٹی باتیں جواس طرح مشہور ہوئی ہوں جواپی شہرت کی وجہ سے ہرعام وخاص کو معلوم ہوں تووہ ان کو دین کی حیثیت سے جرعام وخاص کو معلوم ہوں تووہ ان کو دین کی حیثیت سے جانتا ہو جیسے نماز ، زکو ق ، روزہ اور جج وغیرہ ان کی تصدیق مع الانقیا دائیان ہے اوران کا تصدیق نہ کرتا کفر ہے۔

(۲).....کفر کیا ہے؟ بظاہرتو کفرانکارکو کہنا چاہئے لیکن اگر ہم کفر کامصداق انکارکوگردانتے ہیں تووہ ہ شخص جوندا نکار کرتا ہواور ندتھند ہتی، وہ ندمو کمن ہوگا اور ندہی کا فرکہلائے گاس لئے سب سے اچھی بات یہ ہے کہ کفرتصد ہتی وانقیا دے فقدان کا نام ہے خواہ پھراس کے ساتھا نکار بھی ہویا بغیرا نکار کے ہو۔

بناء بریں کفر کی متعد دصور تیں بن گئیں (۱) کفرا نکار (۲) کفر جحو د (۳) کفرعنا د (۴) کفرنفاق۔

کفرانکار: پیہ کردل وزبان دونوں سے انکار ہو۔ کفر جود بیہ کردل تو تصدیق کرتا ہولیکن زبان پراقر اردشلیم اورانقیاد نہ ہوجیسے فرعون اورا ہوجہل کا کفر، اگردل سے تصدیق اور زبان سے گاہے گاہے اقر اربھی ہوگرتشلیم وانقیاد نہ ہوخواہ عدم انقیاد عناد کی وجہ سے ہویا پھر کسی اور بناء پر ہوجیسے خواجہ ابوطالب کا انکار عار کی وجہ سے تھا اسے کفر عِنا دکہا گیا ہے، جبکہ کفرنفاق قتم دوم کی ضدہے یعنی ظاہری تشلیم وانقیاد اور اقر اربولیکن دل میں تصدیق اور انقیاد باطنی نہ ہوجیسے عبد اللہ بن ابی ابن سلول کا کفر۔

نیز بدیمیات وضروریات دین میں تاویل بھی کفرہے۔مثلاً ایک فخص نماز،روزہ اورز کو ۃ اور جج کاوہ مطلب تبدیل کرتاہے جوامت میں مسلم ہے تو وہ بھی کا فر ہوجا تاہے چنا نچہ قادیانی اس لئے کا فر ہیں کہ ایک تو انہوں نے ایک بدیمی مسئلے کا انکار کیا دوم انہوں نے نصوص کے اجماعی مطالب کو کم تف کردیا۔

(۳)ایمان بسیط ہے یامرکب؟ بیمسلد کافی اختلافی ہے۔ابتداءًاس میں دوقول ہیں:ایک بسیط ہونے کا اور دوم مرکب ہونے کا۔اور ثانیا سات اور علی تقدیر آٹھ اقوال ہیں بایں طور کہ چار ندا ہب بساطت کی صورت میں بنتے ہیں اور تین یا چارتر کیب کی صورت میں ،ان ندا ہب کی تفصیل اس طرت ہے کہ کرا میہ جہمہ،

مرجد اورجمهومحققین كاندهب ايمان كى بساطت كاب پهران مين اختلاف يه:

(۱)....کرامیفقط اقر ارکوایمان کہتے ہیں،اس کا بطلان طاہر ہے کہ پھرتو منافق بھی مؤمن ہوجا تا ہے ،حالانکہ منافقین بتصریح جہنم کے نچلے طبقے میں ہوں گے۔

(۲).....جُهیمه صرف معرفت کوایمان قرار دیتے ہیں بیہ مذہب بھی باطل ہے کیونکہ پھراہل کتاب کومؤمنین مانتا پڑےگا۔

(۳)مرجد کہتے ہیں کہ نفس تقدیق ایمان ہے بایں طور کہ کوئی گناہ اس کے منافی یامفزہیں جیسا کہ کفر میں نیکی مفیزہیں ،نصوص سے اس کی نفی بھی بتقریح معلوم ہوتی ہے اور عصاۃ المؤمنین کا جہنم میں جانا بھی ثابت ہے۔

(۳)جہور محققین یعنی متکلمین و فقہاء فرماتے ہیں کہ ایمان تقدیق قلبی کانام ہے تاہم یا نسب ایم یا نسب ایم ایمان کا درجہ ہے، اس سے اقرار یا اعمال کی اہمیت میں کسی طرح کمی کا تو ہم نہیں ہونا چا ہے وہ سب اپنی جگہ اہم ہیں تا ہم ان کی حیثیت فرعیات و ثمرات اور لواز مات کی ہے آگر کسی مؤمن میں تقدیق بالجنان ، اقرار باللمان اور عمل بالارکان سارے موجود ہوں تو نور علی نور ہے اور وہ کامل ایمان ہے جس کی بناء پر وہ عذاب خداوندی سے محفوظ رہے گا۔ کیکن اگر کسی میں فقط تقدیق پائی جاتی ہوتو وہ بھی مؤمن ہی کہلائے گا اور اگر اللہ اسے گناہ پر سزا وینا چاہے تو بالآخر اس کو جنت میں واض فرمائے گا۔

ترکیب ایمان میں بھی چارا توال ہیں بید بہب جمہور محدثین ،معتزلداور خوارج وغیرہ کا ہے۔کہ ایمان تین عناصر کے مجموعے کا نام ہے،تصدیق قلبی ، زبان سے اقراراور عمل ، پھران کے آپس میں اختلاف ہے۔ (۵)خوارج کے نزدیک کبیرہ گناہ کے ارتکاب سے آدمی کا فرہوجا تا ہے ان میں بعض غالی لوگ

صغیره گناه کوبھی موجب کفر کہتے ہیں۔

(۲)معتر لد کہتے ہیں کہ مرتکب کمیر واگر چدایمان سے تو خارج ہوجا تا ہے لیکن جب تک تقد لیق باقی ہوتو وہ کفر میں داخل نہیں ہوتا،اس کو وہ لوگ منے لة بین منز لتین سے تعبیر کرتے ہیں، تا ہم حکم وانجام کے اعتبار سے ان دونوں ند ہوں میں کوئی فرق نہیں کیونکہ دونوں کے نزدیک مرتکب کمیر واگر تو بہ نہ کرے تو ہمیشہ دوزخ میں پڑار ہے گااس کی معافی کی صورت ممکن نہیں نہ اس کی شفاعت ہو سکتی ہے اور نہ ہی اس کی سراختم ہو تکتی ہے لین بیٹار نصوص سے اس موتف کی نی ہوتی ہے۔

(2)اصحاب حدیث فرماتے ہیں کہ ایمان مندرجہ بالاتین امورے مرکب توہے لیکن کسی معصیت ہے دی ایمان سے خارج نہیں ہوتا۔

(٨)اگرایمان کے لئے اقرارکوشرط کے بجائے شطریعنی جزء مانا جائے تو پھرایک اور فد ہب بھی قابل ذکر ہوگا کہ ایمان دو چیزوں سے مرکب ہے(۱) تقدیق (۲) اقرارعقا کد نفی میں اس کوذکر کیا گیا ہے "الایمان هو التصدیق والاقواد" اس پرعلام آفتا زائی " ککھتے ہیں:

"هذاالذي ذكره من أن الايمان هو التصديق والاقرار مذهب بعض العلماء وهو اختيار الامام شمس الاثمه و فخر الاسلام ".

پھر جولوگ اقر ارکوشرط کہتے ہیں تو ان کا مطلب سے کہ احکام شرعیہ کا اجراء اقر ار پرموتو ف ہے جہاں تک فی مابینہ و بین اللہ کا معاملہ ہے تو اس کے لئے فقط تصدیق ہی کا فی ہے، فقد اکبر میں امام صاحب " کا غذہب اس آتھویں قول میں نقل کیا گیا ہے۔

ان نداہب کے دلائل مطولات میں ملاحظہ کئے جاسکتے ہیں یہاں اتنی بات عرض کی جاتی ہے کہ اہل حق کا جواختلاف نظر آتا ہے دواصل زمانے کے حالات کا تقاضا تھا، کہ جب معتزلہ اورخوارج نے بڑے شدومد کے ساتھ یہ بات کی کہ مرتکب کبیرہ ایمان سے خارج ہوجا تا ہے تو متعلمین نے فرمایا کہ ہرگزئیں بلکہ ایمان تو تصدیق کا نام ہیں۔

اس کے برعس جب محدثین کے زمانے میں اہل بدع نے عمل کی حیثیت یکسر گرادی جیسے مرجیہ یا تصدیق کی ضرورت ختم کردی جیسے کرامیہ اور چمیہ یا اقرار کی شرط یا شطریت کونظرانداز کردیا جیسے مرجمہ وجمیہ تو اس وقت کے اہل حق نے ان مینوں کی اہمیت پرزورویا، اور یہ ہردور کے اہل حق کا طریقہ رہا ہے۔ یہ اختلاف ایسا بی ہے جیسا کہ صفات باری تعالی کے بارے میں متعقد میں اور متاخرین کے مابین رہا ہے۔ تد بروتشکر

باب ماجاء أُمِرتُ ان اقاتل الناس حتى يقولو الاإله الا الله

(مجھے حکم دیا گیا ہے کہ لوگوں سے قبال کروں یہاں تک کہ وہ لا الہ الا اللہ کہیں)

"عن ابى هسويرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : أُمِوتُ ان أقاتل الناسَ حتى يقولوالاإله إلا الله فاذاقالوهاعَصَمُوامِنّى دِماتَهم واموالَهم إلّا بِحقهاو حسابهم على

الله". (حسن صحيح)

بجھے تھم دیا گیاہے کہ میں لوگوں سے لڑوں یہاں تک کہوہ''لا الہالا اللہ'' کہیں پس جب انہوں نے بیہ کلمہ پڑھ لیا تو انہوں نے بیہ کلمہ پڑھ لیا تو انہوں نے محفوظ کرلیا مجھ سے اپنے جان و مال کوسوائے اس کلمہ کے حق کے،اوران کا حساب اللہ کے پاس ہے۔ کے پاس ہے۔

تشری : "فاذاقالو هااوربحقها" دونوں کی خمیری کلمہ کی طرف راجع بیں اور مطلب حدیث کا یہ ہے کہ جب لوگ اسلام کو بول کرلیں تو پھران سے لڑنے کی مخبائش ختم ہوجاتی ہے۔ ہاں البعة دائرة اسلام میں داخل ہونے کے بعداس کلمہ کے جوحقوت بیں ان میں کوتا ہی پرگرفت کی جائے گی جوظا ہری خلاف ورزی ہوگ ان کامؤاخذہ ہم کریں گے۔ جیسے حدود کا نفاذ ،اور جوخفی ہوگی اس پرعدم اطلاع کی وجہ سے یاعدم شبوت کی بناء بہم سرانہیں دے سکتے بلکہ وہ معاملہ اللہ کے سپردہ ،اسی طرح اگر اقر ارجھوٹا ہوگا تو اس پرسز ادینا بھی اللہ کا کام ہے۔

اس سےمعلوم ہوا کہ اجرائے احکام کے لئے ظاہری اقرار کافی ہے ہاں البتہ اگر اس سے کوئی ایسا کام سرز دہوجائے جوایمان کے منافی ہوجیسے بُت کو سجدہ کرنایا زنار باندھنا تو وہ اقرار کا لعدم شار ہوگا۔

پھرلا الدالاً اللہ إسمِ علَم ہے مراداس سے پوراکلمہ طیبہ اور اسلام ہے اور یہی وجہ ہے کہ صحیحین میں ''ویؤ منو ابی، وہما جنت بد، اور و اَنّ محمداً دسول اللهٰ' کا اضافہ بھی مروی ہے، اور ترندی کے اسکے باب میں مزیداضا نے بھی ہیں۔

چونکہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم اللہ کی طرف سے مامور ہیں اس لئے جب آپ فرمائیں کہ اُمِر ث تو مطلب یہی ہوگا کہ مجھے اللہ نے عمر دیا ہے۔ اور جب صحابی فرمائیں کہ اُمِر ث تو مرادیہ ہوگا کہ مجھے نبی علیہ السلام نے تھم دیا ہے بینیں ہوسکتا کہ صحابی کے قول' اُمِر ث' کا مطلب بیایا جائے کہ مجھے صحابی نے تھم دیا ہے اس کی وجہ تخت الاحوذی میں یہ بتائی ہے کہ صحابہ کرام عجب میں جہد دوسرے جبہد کے تھم سے استدلال نہیں کرتا'' لانھم من حیث انھم مجتھدون لایحتجون بامر مجتھد آخو ''فیر مقلدین کواپنے پیشواکی یہ بات اچھی طرح سمجھ لینی جا ہے۔

قرآن میں تین تنم کے لوگوں سے ان کی حیثیت کے مطابق بات کی گئی ہے: (۱) ایک عوام الناس کا طبقہ ہے اس کے لئے عام نہم انداز ، آسان اور سہل زبان میں فقص وامثال کے ذريد نصحت بيان كي كي بهجيها كمالله فرمايا: "ولقديسر ناالقرآن للذكر فهل من مُدّكر"؟ -

(۲) دوم علماء کی جماعت ہے کہ ان کے لئے ان کے شایان شان دلائل اوراحکام بیان کرنے کا جامع ومخضر طرز اختیار کیا گیا ہے تا کہ وہ ان اصول سے استنباطات کرتے رہیں۔

(۳) سوم معاندین کا گروہ ہے بیلوگ نہ تو نقیحت سُنتے اور قبول کرتے ہیں اور نہ بی احکام قبول کرنے کی زحت کرتے ہیں اور نہ بی احکام قبول کرنے کی زحت کرتے ہیں ان کے لئے جہاد کا تھم ہے کہ جب سیائمۃ الکفر راستہ ہے جٹ جا کی تحقیم ہے کہ جب سیائمۃ الکفر راستہ ہے جٹ کی گذری ہے۔ ہدایت کا سبتہ بابنہیں کرسکیں ہے، جہاد کے متعلق بحث تشریحات جلد یا نچے میں گذری ہے۔

سوال: بظاہراس مدیث ہے جزیہ کی نبی ہوتی ہے کیونکہاس میں دوہی صورتیں بیان کی گئی ہیں کہ یا تو دہ لوگ اسلام قبول کرلیں یا پھرموت کے کھا شاتار دیئے جائیں گے۔

جواب: ۔اس کے متعدد جوابات ہیں: ایک جواب: یہ ہے کہ اس میں لفظ ناس سے مرادمشرکین ہیں این عرب کے اہل شرک اوران کا تھم یقیناوہ ہی ہے جوسوال میں ذکر ہوا، ان سے جزید وصول نہیں کیا جاتا۔

ووسراجواب: بيب جوعلامه طبي في دياب كديه حديث توعام باورناس تمام كفاركوشامل بخواه وه الل كتاب بى كيول نه بول تا جم اس حديث ميل آيت كي وجه يخصيص كي في بيعن "حسل المعسطوا المجزية عن يدوهم صاغرون" -

تیسرا جواب: یہ ہے کہ قال سے مراد تہرادر تسلط ہے خواہ وہ غلبہ قال کی وجہ سے ہویاصلحہ اور جزید کی وصولی کی صورت میں ہو جبکہ کلمہ شہادت پڑھنے سے مرادانقیاد ہے خواہ اسلام قبول کرنے سے ہویا جزیدادا کرنے سے اور بلاشہہ ذمی لوگ بھی اسلامی ریاست کے احکام کے پابند ہوتے ہیں اگر چدان کواپنے اپنے ندا ہب کے مطابق رسومات اداکرنے کی اجازت ہوتی ہے۔ مگروہ اپنی رسوائی پر شرمندہ رہنے کی وجہ سے اسلام کے آگے ہے۔ بہل بھی ہوتے ہیں اور یہی گویا تھی قبال ہے۔

حدیث آخر: حضرت ابو ہریرہ فرماتے ہیں کہ جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم کی وفات ہوئی اور آپ صلی الله علیہ وسلم کی وفات ہوئی اور آپ صلی الله علیہ وسلم کے بعد ابو بر ظفیفہ بنادیئے گئے تو عربوں میں سے جس کوا نکار کرنا تھا وہ مُنکر ہوگیا (چنا نچہ ابو بکر ٹے ان کے خلاف جہاد کا اعلان کیا) پس عمر بن خطاب نے ابو بکر ٹے کہا آپ لوگوں (مانعین زکو ہ) سے کسے لا بن کے خلاف جہاد کا اعلان کیا) پس عمر بن خطاب کہ مجھے تھم دیا گیا ہے کہ میں لوگوں سے لا ول یہاں کسے لا بی کہ جسے تھم دیا گیا ہے کہ میں لوگوں سے لا ول یہاں تک کہ وہ دہ اس نے جمعے سے اپنی مال وجان محفوظ تک کہ وہ دہ اس نے جمعے سے اپنی مال وجان محفوظ تک کہ وہ دہ اس نے جمعے سے اپنی مال وجان محفوظ

کر لی سوائے حق اسلام کے اور اس کا حساب اللہ کے پاس ہے پس ابو بکر ٹے فر مایا اللہ کی قتم ہے! میں ضرور لڑوں گااس فحض ہے جونماز اور زکو ہ کے درمیان فرق کرتا ہے، بے شک زکو ہ مال کاحق ہے اور قتم ہے اللہ کی! کہ اگر بیلوگ وہ رہی مجھے نہ دیں جووہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو دیا کرتے تھے تو میں اس کے روکنے پران سے بہر حال لڑوں گا حضرت عرفز ماتے ہیں کہ بس کیا تھا خدا کی قتم! میں سمجھ گیا کہ اللہ نے ابو بکر اللہ کا سینہ جنگ کے لئے کھول دیا ہے تو میں سمجھ گیا کہ اللہ نے ابو بکر اللہ علیہ بات صحیح ہے۔ (حس صحیح)

قوله: "كفر من كفر" حضرت كنگوئ الكوكب مين فرمات بين كمخرفين ك تين كروه تها: ايك جوبالكليدم تد بهوك ته حدود منهول في مرف و كانكاركيا تها اورسوم جوز كوة كي فرضيت كمعترف ته جوبالكليدم تد بهو كانكاركيا تها اورسوم جوز كوة كي فرضيت كمعترف ته محرحك ته محركة بوك ته مع متابهم عام شارطين في دوجهاعتيس بنائي بين ايك جومرتد بوگئ ته اورسيلم كذاب كه حامي بوگئ ته دوم جو مانعين زكوة ته بيادر به كدان مرتدين يا مانعين مين مهاجرين اورانسار شامل ند ته بلكه بيد دراصل وه قبائل ته جويد بينه منوره سه دورا فياده علاقون مين آباد ته اوراسلام قبول كرف كي بعد اسلامي الله عليه وسلم كي محبت درياده فيش يافته بهي نهين تها اور يكي وجه كدان شبهه كدر پيش بوف كي وجه ما انعين زكوة كومحابه في مرتدين نهين سمجها تها كيونكه وه يه بحدر به تقط كدان شبهه كدر كوق ان خواس مد في الهيم صدفه "آلاية حضرت عرش كالبويرش من مناظره بهي اي تناظر مين براس مديث مين كفر كالطلاق تغليباً يا كفر دون كفر كرز مرح مين آتا به كيونكه انكا استدلال اگر چه غلط تها مگراس مين ان كوفيه به لاحق تها اب چونكه زكوة كاوجوب بديهيات دين مين سه ايك به البذا آن منكر زكوة كوبالا جماع كافر كها جاري كام من كلهت بين:

"قلنالافان من انكرفوض الزكواة في هذه الازمان كان كافراً باجماع المسلمين". (تفصيل كرليخ و كيمينووي برسلم ص: ٣٩،٣٨ خ: اقد يمي كتب خانه)

ابوبکرصدیق کاجواب بظاہر قیاس جدلی کے طرز پر ہے جس سے بیلاز مہیں آتا کہ ان کونص کاعلم نہ ہواہوکہ قال بند کرناصرف کلمہ شہادت پڑھنے پرموقوف نہیں بلکہ نماز،روزہ وز کو ہ وغیرہ سب احکام کی ادائیگی سے مشروط ہے لیکن چونکہ حضرت عمر تو تارکین وجاحدین صلوۃ کے خلاف قال کے قائل سے تو ابو بکر نے ان کو بتلا دیا کہ جس طرح نماز کا تھکم ہے اس طرح زکوۃ کا بھی ہے اوران کی توجہ 'آلا بحق ہے '' کی طرف مبذول کرادی کہ اسلامی حقوق کی عدم ادائیگی بھی جنگ کی وجہ بن سکتی ہے۔ اور چونکہ قیاس جدلی تھا اور بیر مناظرہ اظہار

حق کے لئے تھااس لئے حضرت عرائی مجھ میں یہ باریک کنت آتے ہی ان کو بھی شرح صدر ہوگیا،عارضة الاحوذی میں ہے: "ولوقاتلهم بالاجتهادلکان ذالک له ولکن النص ثابت من طُرُق "۔

غرض حصرت ابو بکڑنے نص اور قیاس دونوں طریقے اپنائے جس سے استدلال مزید متحکم ہوااب وہ نص کون ی تھی؟ تو الکوکب الدری کے حاشیہ پرامام حاکم کی اکلیل کے حوالے سے عبدالرحل ظفری رضی اللہ عند کی حدیث نقل کی ہے:

"قال بَعَتَ رسولُ الله صلى الله عليه وسلم الى رجل من اشجع لِتوخه صَدَقَته فَابَىٰ ان يعطيها فَرَده اليه الثانية فَابَىٰ ثم رده اليه الثالثة وقال: إن أبى فاضرب عُنُقه ! قال عبدالرحمن أحَدُ رُواة الحديث : قلتُ لِحكيم: ما أرى ابوبكرٌ قاتل اهل الردة الاعلى هذا الحديث ؟ قال: اجل!".

ای طرح حدیث الی هریرة میں بھی 'ویقیمواالصلواۃ ویؤتواالز کواۃ''ثابت ہے۔ للذاجن شارمین نے کہاہے کہ حضرات شیخین کے پاس نص نہیں تھی بلکہ یہ استدلال قیاس پر بن ہے تواس کی اب چنداں ضرورت نہیں رہی۔

قوله: "عِقالاً" بروزن كتاب وه رى مراد ہے جس سے اونٹ بائد هاجا تا ہے عِقال كے كُي معنے آتے ہيں كي سے اونٹ بائد هاجا تا ہے عِقال كے كُي معنے آتے ہيں كيكن يہاں چونكہ تشديداور تصبيق مقصود ہے اس لئے رى ہى مراد ہے جو كنابيہ ہے معمولی چیز سے لین اگر كوئی اتنى مقدار میں ذكو ة روكے جس كی قیت ایك رى كی برابر ہوتو بھی اسے معاف نہیں كیا جائے گا۔

تارک صلوٰۃ وصیام اور مانع زکوۃ کا تھم جلدسوم کے بالکل شروع میں عرض کیا جاچکا ہے (ویکھیے ابواب الزکوۃ :ص: ۹ ج: ۳) یعنی مانع زکوۃ سے زکوۃ زبردتی بھی وصول کی جاسکتی ہے آگر چداس میں اُس کی جان چلی جائے۔

قوله: "ماهوالان دأیت النے" حوضمیرشان ہے جس کی تغییر مابعد نے کہ ہے۔ قوله: "فعرفت انه الحق" بی تقلیز نیس بلکه اپنے قول سے دجوع ہے کیونکہ ایک مجتہد کو دوسرے مجتہد کی تقلید جائز نہیں ہال موافقت جائز ہے، امام نو دی فرماتے ہیں:

"ومعنى قوله :عرفت انه الحق اى بمااظهر من الدليل واقامه من الحجة فعرفت بذالك ان ماذهب اليه انه الحق لاان عمر قلدابابكر فان المجتهد

لايقلد المجتهد وقدزعمت الرافضة ان عمرانماوافق ابابكر تقليداً وبنوه على مندهبهم الفاسدفي وجوب عصمة الائمة وهذه جهالة ظاهرة منهم والله اعلم". (شرح ملم: من منهم: الذي كتب فانه)

باب ماجاء امرت ان اقاتل الناس حتى يقولوا لاالة الاالله الخ

"عن انس بن مالكُ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : امرت ان اقاتل الناس الخ".

تشریخ: اس مدیث کی تشریخ سابقه باب کی پہلی مدیث میں کی جا چک ہے البتہ یہاں یہ بھی اضافه ہے 'وان محمداً عبده ورسوله وان یستقبلو اقبلتناویا کلو اذبیختناوان یصلوا صلا تنا، فاذا فعلوا ذالک حُرِّمَت علینادمائهم واموالهم الابحقها،لهم ما للمسلمین وعلیهم ماعلی المسلمین "۔ (حسن محج)

مجھے تھم دیا گیا ہے کہ میں لوگوں سے لڑوں یہاں تک کہوہ گواہی دیں' لاالمسہ الا اللّٰہ '' کی اور بید کہ محمل اس کے بندے اور اس کے رسول ہیں اور بید کہوہ ہمارے قبلہ کی طرف رُخ کریں اور ہمارا ذیجہ کھا کیں اور ہماری طرح نماز پڑھیں ، پس جب وہ ایسا کریں گے تو ہمارے او پران کے خون اور ان کے اموال (املاک) حرام کردیتے جا کیں گے (یعنی یہ سب چیزیں محترم ہوجا کیں گی) سوائے کلمہ کے حقوق کے (یعنی وہ ان پرلازم ہوں گے جو مسلمانوں کو حاصل ہیں اور ان کے ذمہ وہ ذمہ داریاں ہوں گی جو مسلمانوں کو حاصل ہیں اور ان کے ذمہ وہ ذمہ داریاں ہوں گی جو مسلمانوں کو حاصل ہیں اور ان کے ذمہ وہ ذمہ داریاں ہوں گی جو مسلمانوں کی جو مسلمانوں کی عائد ہوتی ہیں۔

اس مدیث میں استقبال قبلہ کا ذکر بطور خاص اس لئے کیا گیا ہے کہ چونکہ ہماری نماز اور اہل کتاب کی نماز میں بہت ساری چیزیں مشترک ہیں جبکہ قبلہ کمل امتیازی شعارہے کیونکہ اہل کتاب کعبہ کی طرف نماز نہیں پڑھتے ہیں۔
پڑھتے ہیں۔

اور ذبیحہ کا ذکر امتیا نے عادی کے لئے ہے کہ جب عبادات میں امتیازات کو بیان فرمایا تو آکل وعادات کا تمایز بھی بیان فرمایا کوکہ ذبیحہ عبادات میں سے بھی ہے۔

غرض جب تک کوئی اسلام کے دائرہ میں پوری طرح داخل نہیں ہوگااس وقت تک وہ مسلمان شارنہیں ہوگا اس وقت تک وہ مسلمان شارنہیں ہوگا اور جب کوئی اسلام قبول کرلے تو پھراس کے جان وہال سے تعرض جائز نہیں جیسا کہ سابقہ باب میں مگذراہے۔

121

باب ماجاء بُنِي الاسلام على خمس

(اسلام یا فی (ارکانوں) پر بنایا گیاہے)

"عن ابن عسمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: بُنِي الاسلام على خمس شهــــادة ان لاالله الاالله وان محمداً رسول الله واقام الصلواة وإيتاء الزكواة وصوم رمضان وحج البيت". (حسن صحيح)

حضرت ابن عمر "فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: اسلام کی بنیاد پانچ چیزوں پر قائم کی گئی ہے: (۱) لا الدالا الله اور محمد رسول الله کی گواہی دینا (۲) نما زکوفر وغ دینا (۳) زکو ق دینا (۴) رمضان کے روزے رکھنا (۵) اور بیت اللہ کا حج کرنا۔

تشری : بنا عمارت کھڑی کرنے کو کہتے ہیں تا ہم حسی بناوٹ کے ساتھ اس کا اطلاق معنوی ترکیب وہیت پر بھی ہوتا ہے اور یہاں یہی معنوی تضویر وتشبیہ مراد ہے کہ جیسے اسلام کو یا کولیے جیسے کی طرح محفوظ حجمت ہے جس کاعمود لینی نی کاستون کار مردز و اور زکو ہ وج ہے جس کاعمود لینی نی کاستون کار مردز و اور زکو ہ وج ہیں ،عمود کے بغیر تواس کی حجمت نصب ہو،ی نہیں سکتی بلکہ زمین ہوس ہوجاتی ہے جبکہ باقی اطناب کے بغیر سے جیمہ باقی اطناب کے بغیر سے جیمہ ناتھ سے جہاں تک باقی اعمال کا تعلق ہے تو یوں جھنا چا ہے جیسے کوئی خیمہ یا گھر زیادہ محفوظ ہوتا ہے اور کوئی محفوظ ، بڑے سوراخ اور دراڑ سے زیادہ خطرہ لائن رہتا ہے اور چھوٹے سُر اُن سے چھوٹے خطرات اور گری وسردی کی آمد کا خطرہ در پیش رہتا ہے۔

قول د "علی خمس" بعض مطرات کویشهدلاق بوتا ہے کوئی اور بنی علیه میں اتحاد ہے کوئکہ اسلام تو عین ارکان خمسہ کا نام ہے تو وہ ان پر کیے بنی ہوا؟ اس لئے بعض شارعین نے یہ جواب دیا ہے کہ "علی بعثی مِن" کے ہے کین اس کا می بھی جواب ہوسکتا ہے کہ اسلام سے یہاں مراد بیئت ترکیبی ہے جسیا کہ او پرتشر تک میں گذرا ہے اور بیئت ارکان سے غیر ہوتی ہے آگر چہ یہ غیریت اعتباری ہوتی ہے کین تشبید کے لئے کافی ہے۔

قوله: "شهادة الخ" محرور رفوع دولون ير صناجا تزباى طرح باقى معطوفات كااعراب، معالى بنايربدليت خسساوررف بناء برنبريت مبتداء مقدرك لئي يعنى وهي يااحدهما والنها وهاكذا

قولد: "واقام الصلواة" اقامت كئى معنى آتے ہیں يہاں معنى فروغ دینازیادہ مناسب ہے باتی عقیق اللہ الصلواۃ " اقامت كئى معنى آتے ہیں يہاں معنى فروغ دینازیادہ مناسب ہے باتی عقیق ابواب الصلوۃ میں گذری ہے۔ (تشریحات: ج:اص: ۱۸۸۳) چونكدان پانچ اركان میں فرض كفاميد كاكوئى بہلونہیں پایا جاتا اس لئے اِن كی تخصیص كی گئى جبكہ باقی اركانِ اسلام جیسے جنازہ وتھین اور جہادو خدمت والدین اور میگر حقوق واجبد دوسروں كے اداكر نے سے اوران كی كفایت سے ذمه سے ساقط موجاتے ہیں۔

باب ماجاء في وصف جبرئيل للنبي عَلَيْتُهُ الايمانَ والاسلامَ

(نبی صلی الله علیه وسلم کے سامنے جرئیل علیه السلام کا ایمان واسلام کابیان (بعنی سوال) کرنا)

"عن يحيى بن يعمُرقال اول من تكلم في القدر مَعبَدالجُهني قال خوجتُ انا وحُميد بن عبدالرحمن الحِميري حتى أتيناالمدينة، فقلنالولَقِينارجلاً من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فسألناه عما اَحدَث هو لآء القوم فلقينايعني عبدالله بن عمر، وهوخارج من المسجد قال فاكتنفتُه اناوصاحبي فقلتُ يا اَبَاعبدالرحمن !ان قوماً يقرؤن القرآن ويتقفرون العلم ويزعمون "ان لاقدروان الامر أنفّ"قال فاذالقيتَ أولئك فاحبرهم انى منهم برئ وانهم منى بُراء ، والذي يحلف به عبدالله لوان احدهم اَنفَقَ مثل أحدذه باماقبل ذالك منه حتى يؤمن بالقدر خيره وشره.

قال ثم أنشأيحدث فقال:قال عمربن الخطاب كناعندرسول الله صلى الله عليه وسلم فجاء رجل شديدبياض الثياب شديدسوادالشعر لايُرئ عليه اثر السفرو لايعرفه منا احد حتى أتى النبي صلى الله عليه وسلم فَالزَقَ رُكبَته بِرُكْبَتِه ثم قال يامحمداماالايمان؟ قال ان تؤمن بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الآخروالقدر خيره وشره.

قال : فما الاسلام؟ قال شهادة ان لااله الا الله وان محمداً عبده ورسوله واقام الصلواة

وايتاء الزكواة وحج البيت وصوم رمضان ،قال فماالاحسان؟قال: ان تعبدالله كأنك تراه، فان لم تكن تراه فانه يراك اقال في كل ذالك صدقت قال فتعجبنامنه يسأله ويصدقه، قال فمتى الساعة؟قال: ما المسئول عنها باعلم من السائل اقال فما أمَارَ اتُها؟؟؟قال: ان تلدالامة ربَّتها وان ترى الحفاة العُراة العَالَة رِعاء الشاء يتطاولون في البنيان!

قال عمر فلقينى النبى صلى الله عليه وسلم بعدذالك بثلاث فقال : ياعمر اهل تدرى مَن السائل ؟ ذاك جبرئيل اتاكم يعلمكم امر دينكم": (صحيح حسن)

حضرت یکی بن یعر سے روایت ہے کہ سب سے پہلے جس شخص نے تقدیر کے بارے ہیں تفکو کہ ہے وہ معبر تُبنی ہے، یکی بن یعر فرماتے ہیں کہ ہیں اور جمید بن عبدالرحن دونوں (مدینہ کی طرف) نکلے، یہاں تک کہ ہم مدینہ پنچی، ہم نے کہا کہ اگر نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابہ میں کی سے ہماری ملاقات ہوجائے تو ہم اس سے پوچیس گے اس مسئلہ کے بارے میں جوان لوگوں (مشرین قدر) نے رچایا ہے، چنا نچہ ہماری ملاقات (حسب منثا) اس سے ہوئی یعنی عبداللہ بن عراسے جبنہ وہ مجدسے نکلنے والے ہے تو ہیں نے اور میرے ساتھی دونوں نے ان کو گھیرلیا (یہاں بعض شخوں میں بیاضا فہ ہے "فی ظنت شن ان صاحبی مسیکل الکلام وائی" یعنی میں نے باور کیا کہ میراساتھی بات کرنے کا اختیار مجھے دے گا) چنا نچہ میں نے کہا اے ابوعبدالرحل ! ب یعنی میں نے باور کیا کہ میراساتھی بات کرنے کا اختیار مجھے دے گا) چنا نچہ میں ان لوگوں سے ملاقات ہوجائے شہیں ، ہی ہر چیز پہلی مرتبہ ہی وجود میں آتی ہے ، ابن عرائے فرمایا جب آپ کی ان لوگوں سے ملاقات ہوجائے نہیں ، ہی ہر چیز پہلی مرتبہ ہی وجود میں آتی ہے ، ابن عرائے فرمایا جب آپ کی ان لوگوں سے ملاقات ہوجائے تو ان کو بتا کو کہتے کہا کہ اور تم ہے اس کی جس کی عبداللہ قسمیں کو بات کہ اگران میں سے کوئی ایک اعداد تر ہے کہا تو اور ان کا مجھ سے کوئی تعلق نہیں ، اور تم ہے اس کی جس کی عبداللہ قسمیں اس خور ہیں آتی ہے ، ابن عرائے کہا کہ اس کی جس کی عبداللہ قسمیں اس خور ہی ہی مارت ہی تو ل نہیں کیا جائے گا تا وقتیکہ اس خورج کے ساتھ تھ تر پر برایمان نہ ہوا دراس کے تعلق نہیں ، اور تم ہے اس کی جس کی عبداللہ قسمیں اس خورج کے ساتھ تھ تر پر برایمان نہ ہوا دراس کے تعلق کر بے ہر۔

یجی کہتے ہیں کہ پھرابن عرصدیٹ بیان کرنے گئے ہی فرمانے گئے کہ عربن خطاب نے فرمایا کہ ہم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسال اللہ علیہ استے ہیں اچا تک ایک شخص آیا جوانتہائی سفید کپڑوں والا اور نہایت سیاہ بالوں والا تھا، نہ تواس پر سفر کا اثر دیکھا جا سکتا تھا اور نہ ہی ہم میں سے کوئی اس کو پہچا تا تھا، یہاں تک کہ وہ (سیدھا) نی صلی اللہ علیہ وسلم کے قریب آکرا ہے گھنے کوآٹ کے گھنے سے ملاکر بیٹھ گیا، اور پھر پوچھا: اے محمد! ایمان کیا ہے؟ آپ نے فرمایا (ایمان بیہ) کہتو ایمان لائے اللہ پر،اس کے فرشتوں پر،اس کی کتابوں

یر،اس کے رسولوں پر،آخری دن (قیامت) پراور تقدیر پرایمان لائے ،اس کے خیروشر پر (لینی ان سب کی تقدیق کرناایمان ہے)

اس مخض نے بوچھا تو اسلام کیاہے؟ آپ نے فرمایا: گواہی دینا کہ اللہ کے سواکوئی معبود نہیں اور مید کہ محمد اللہ کے بندے اور رسول ہیں اور نماز قائم کرنا اور زکو ۃ دینا اور بیت اللہ کا جج کرنا اور رمضان کے روز ہے رکھنا (اسلام ہے)۔

اس نے پھر پوچھا کہ احسان کیا ہے؟ آپ نے فرمایا کہتم اللہ کی عبادت کرواس طرح (توجہ ہے) کہ گویاتم اللہ کود کھے رہے ہو!اورتم اس کواگر چہ(عبادت میں) دیکھو نہیں سکتے ہولیکن وہ تو تہمیں دیکھ رہا ہے (اس لئے عبادت میں توجہ ضروری ہے)

حفرت عمر ففرماتے ہیں کہ وہ سائل ہر جواب پر کہتا آپ نے سی فرمایا حضرت عمر قرماتے ہیں کہ ہمیں اس پر تبجب ہوا کہ وہ آپ سے سوال بھی پوچھتا ہے اور آپ کی تصدیق بھی کرتا ہے

سائل نے پوچھاپس قیامت کب ہوگی؟ آپ نے فرمایا جس سے قیامت کے بارے میں پوچھا جارہا ہےوہ (اس حوالے سے) سائل سے زیادہ نہیں جانتا!

سائل نے کہاتواس کی علامات کیا ہیں؟ آپ نے فرمایا (اس کی نشانیاں یہ ہیں) کہ جنے گی بائدی اپنی سیّدہ کواوریہ کہ دیکھے گاتو ننگے ہیر، برہند تن مختاج بریوں کے چُرانے والوں کوجواو پُی او پُی عمارتیں بناتے ہوں گے۔

حفرت عراف نورمایا کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم اس کے تین دن بعد مجھے سے ملے تو فر مایا اے عمر! کیا تم جانتے ہووہ سائل کون تھا؟وہ جرئیل تھے جو (دراصل) تمہارے لئے آئے تھے تا کہ تہمیں آپ کا دین سکھلادیں۔

تشریخ: امام ترفری نے حدیث کے ای آخری جملے سے ترجمۃ الباب اخذکیاہے چونکہ حضرت جرکی سے دین کے بارے میں سوالات بوجھے تھے جوآنخضور علیہ السلام کے جوابات کے موجب بنے اس لئے تعلیم کی نسبت حضرت جرکیل کی جانب کی تعلیم کی نسبت حضرت جرکیل کی جانب کی تعلیم کا نسبت حضرت جرکیل کی جانب کی تعلیم کا باندیں بھے 'بنی الامیر المدینة''۔

ي بهى موسكا ب كمانبول في ترجمة الباب حضرت جركيل كى تقديق سى ليا بوجبكم المام بخاري في السيام بخاري في الريول باب باندها بي المان والاسلام

الخ"_

قوله: "اول من تسكلم فی القدر معبدالجهنی "بضم الجیم جُهیند قبیلد كی طرف منسوب، یه مخص بقره میں رئیس القدریہ تفاحضرت حن بقری کے حلقہ درس میں بیٹھتا تھا مگر واصل كی طرح اس نے اپنا نظریہ تقدیر کے بارے میں كھڑلیا تھا، پھرمدیند منورہ آیا تھا ٨٠ ھیا الس کے بعد جاج بن یوسف نے تل كردیا تھا، ابواب التقدیر بیں قدریہ وغیرہ کے بارے میں تفصیل گذری ہے۔

قولہ:"فاکتنفتُه الخ" گف پرندے کے پراور باز دکو کہتے ہیں لینی میں ابن عرا کے ایک جانب ہو کمیا اور میر اساتھی دوسری جانب۔

قوله: "يتقفرون العلم" بيلفظ متعدد طريقول سے پر حاگيا ہے بہال قاف، فا، پر مقدم ہے جس كے معنی طلب كرنے اور جمع كرنے كے آتے ہيں، دوسرى روايت يفترن يعنی ياء كے بعد فاء ہے جيسا كہ حاشيہ ترخدى پر ہےا كي ميں يتفقرون يعنی فاء - تاءاور قاف مؤخرہ كے درميان ہے اس كے معنی باريكيوں سے بحث كرنا ہے اور يہى مطلب يتفقرون كا بھى ہے يعنی علم كى گہرائى اور تعروبة تك يہنجنے كى كوشش كرتے ہيں۔

قول، "وان الامرانف" بضم الهزة والنون يعى كوئى بهى كام سابقد تقدير كے مطابق نبيل موتا بلكه نومولود موتا به بالكل نيا اور تازه موتا به -

قول منهم بوی " میتمبید ہاورا ظهار نفرت ہے تا کرسامعین کے ذہنوں میں اس اٹکار کی شاعت بردھ جائے ، پھراس کے بعددلیل سے اپنامدی کا بت فرمایا۔

قول د: "ماقبل ذالک منهم النے" بظاہریان کی تغیر ہے کیونکہ اعمال کی عدم تبولیت اہل النة والجماعة کے نزویک کناه سے نیس بلکہ عدم ایمان کی وجہ سے ہوتی ہے گئی ہذا کہا جائے گا کہ یہ تغیران قدریہ ک ہے جونقذر کے یکس منکر ہوں، یہ بھی ہوسکتا ہے کہ عدم قبولیت سے مراداس پر تواب کی نئی ہوعدم فراغ الذمہ نہو، قبولیت کے دونوں معنے ترقدی کے سب سے پہلے باب" القیل صلاق بغیر طہور" میں گذری ہیں ۔ حضرت عمر کی حدیث میں چونکہ ایمان بالقدر کی تقریح ہے اس لئے انہوں نے بطور استدلال کے بیرصد یث ذکر فرمائی۔

قوله: "كناعندرسول الله صلى الله عليه وسلم" يدجمة الوداع ك بعدكا واقعه باور جونكه محاب كرام المح كوسوالات يوجهف سيمنع كيا كياتها الله عليه و وكن بوشيار اعرابي كي آن كا تظاركرت اوراس كرسوال يوجهف يرخش بوجات الله للح حضرت جرئيل في اعرابي كي طرح بيله كا عداز افتياركرك يوجها

''یا محم' تا کہ صحابہ پہچان نہ کیس، کپڑے سفید تھے جونورانی مخلوق اوراہل علم کے ساتھ زیادہ مناسب ہیں اس لئے آنخضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے سفید کپڑے پہننے ،اس کے احرام اور کفن کو پہند کیا اور افضل قرار دیا ہے۔اگر چہ بیان جواز کے لئے دوسرے رنگوں کا بھی بنفس نفیس استعال کیا ہے جیسے فتح مکہ کے دن آپ نے سیاہ عمامہ با ندھ رکھا تھا اس لئے کہا جائے گا کہ دوسرے رنگ کے کپڑے بھی جائز ہیں سوائے خالص سرخ رنگ کے جومردوں کے لئے مکروہ ہے گمرافضل بہر حال سفید ہیں خواہ عمامہ ہویا کوئی اور لباس۔

جہاں تک کالے بالوں کاتعلق ہے تواس میں اشارہ ہے کہ طلب کا اصل اور موزون ترین زمانہ جوانی کا دورہے جس میں حواس ظاہر ہے وباطنیہ مضبوط ہوتے ہیں۔

قوله: "لابری علیه اثر السفرو لا یعوفه منااحد" پہلے جملے سے اس کے مسافر ہونے کی نئی مراد ہے اور دوسرے سے مقامی باشند ہے ہونے کی۔ کیونکہ مسافر کی حالت اس طرح نہیں ہوتی ہے وہ تو پراگندہ بالوں اور میلے کپڑوں والا تھکا ماندہ نظر آتا ہے نہ کہ تروتازہ جبکہ مقامی شخص کو وہاں کے لوگ بچانے ہیں مگر یہاں یہ کیفیت تھی کہ جب وہ شخص آیا تو سب لوگ اس کو ایسے ہی دیکھتے رہے جیسے کی انجان شخص کو دیکھتے ہیں۔

جہاں تک اس محض کے بیٹے اور سوال کرنے کا انداز ہوتو بیصحابہ کرام ہے اپی شخصیت چھپانے کے لئے ہے، یہ بھی ممکن ہے کہ ان کی توجہ اپنی طرف مبذول کرانا چاہتے ہوں کیونکہ غیر معمولی کام کرنے والے کی طرف لوگ متوجہ ہوجاتے ہیں، کسی کی مجال تھی جوآٹ کے پاس اس طرح قریب ہوکر بیٹے اور آپ کو یا محمہ! سے خاطب کرے؟ یہ بھی ہوسکتا ہے کہ یا محمہ! کہنا اسم صفتی کے طور پر ہویا پھر یا محمہ! کہنے کی ممانعت انسانوں کے لئے خاص ہو۔

مسلم کی روایت میں 'فسالزق رکتیسه بو کبتیه ''پریکی اضافہ ہے' ووضع کفیسه علی فیحلیه ''کہا پخ گفتے آپ کے گفتوں سے ملا کر بیٹھا اور اپنے دونوں ہاتھ آپ کی یا پنی رانوں پر رکھ دیئے، یہ مجی ابہام پیدا کرنے کے لئے تھا یعنی حضورعلیہ السلام کی رانوں پر رکھنے کی صورت میں۔

قوله: "ماالایمان؟" چونکه ایمان نجات کی بنیا داور ملاک الحسنات ہے اس کئے اس کا سوال مقدم کیا۔ قوله: "فیماالاحسان ؟" اگراحسان کے صلہ میں لفظ "إلیٰ" آجائے تو جمعنی نیک سلوک کرنے کے آتا ہے جبکہ بغیر" الیٰ" کے جمعنی اخلاص کے آتا ہے جو یہاں مراد ہے کیونکہ لغت میں احسان کے معنی خوب بنانے اوراجیما کرنے کے آتے ہیں اور چونکہ اخلاص ہے بھی اعمال وعبادات میں جان پیدا ہوتی ہے اس لئے اخلاص کواورشرع کےموافق عبادت کرنے کواحسان کہاجا تاہے۔

قوله: "ان تعبدالله النع" يعنى عبادت كرتے وقت تيرى كيفيت يد بهونى چاہئے كه كوياتم الله تبارك وقت تيرى كيفيت يد بهونى چاہئے كه كوياتم الله تبارك وقع الله كار كي وقع الله كود كيور به بهوا اگر چهتم الله كود كيور باہم الله كود كيور باہم الله كود كيور باہم الله كود كيور باہم الله كور باہم الله كور باہم الله كور باہم الله كوتا بى ندكرنا جاہئے!

عبادت من تين چزي بوتى بين جيما كتفيراين كثرين مكد لغت من ذلة كوكهاجا تام "بسقسال طريق مُعَبّد اى مُذَلِّلٌ وفى الشرع عبارة عما يجمع كمال المحبة والخضوع والنحوف".

(ابن كثر: ص: ٢٥ ج: اقد كي كت خانه)

بعض شارحین نے یہاں دونوں جملوں سے دوالگ الگ مقامین کا مطلب بیان کیا ہے کہ پہلا درجہ مشاہدہ کا ہے جوسب سے اعلی ہے جبکہ دوسرا مراقبہ کا درجہ ہے بینی اوّلاً تو یہ کوشش ہونی چاہئے جیسے آدمی اللہ کود کھ رہا ہولیکن اگروہ یہ درجہ حاصل کرنے میں کا میاب نہیں ہوجا تا تو پھراس یقین کے ساتھ عبادت کرے کہ اللہ تواسے دیکھ رہا ہے مثلاً کوئی شخص لوگوں سے براہ راست مخاطب ہوتو وہ زیادہ چوکنار ہتا ہے بنسبت اس کے کہوہ فی وی کی کرے۔

لین حضرت کنگوئی نے الکوکب میں اس مطلب کی تخی سے نفی کی ہے، وہ فرماتے ہیں کہ یہاں ایک ہی مرتبہ کابیان ہے بینی مراقبہ اور مطلب بیہ ہے کہ جیسے جیسے مراقبہ میں اضافہ ہوگا تواحسان کے حسن میں بھی زیادتی آئے گی، اور جملہ ثانیہ پہلے جملے کی دلیل ہے بعنی عبادت میں غفلت نہیں ہونی چاہئے بلکہ یوں کرنی چاہئے جسے آدمی اللہ کود کھر ہاہے آگر چہوہ اللہ کود کھر تہیں سکتا لیکن اللہ تواس کود کھر ہاہے 'ف کیف تعفل عنه چاہئے وکیف تصلی وقلبک فی مکان وجسمک فی مکان النے ''اورعلام سندھی کے ماشیہ سلم سے بھی کی بات معلوم ہوتی ہے کہ 'فان لم قسکن النے ''میں ان وصلیہ ہے جسیا کہ اور پر جمہ میں اختیار کیا گیا ہے وہ کھتے ہیں:

"والمقصودبيان مراعاة الخشوع في العبادة والخضوع وما يتعلق بالعبادة على الوجه الذي واعاه لوكان رائياً والاشك انه لوكان رائياً حال العبادة لم يسرك شيئاً لِمَاقدرعليه من الخشوع وغيره والمنشأ لِتلك المراعاة حال كونه رائياً إلاكونه تعالى رقيباً عالماً مطلعاً على حاله وهذا موجودوان

لم يكن العبد يراه تعالى ،ولذالك قال النبى صلى الله عليه وسلم فى تعليله: فان لم تكن تراه فانه يراك وهويكفى فى مراعاة الخشوع على ذالك الوجه"فَإ ن "على هذاوصلية الخ". (ماشير مرمم مرمم : ٢٠٠٠: ١)

اس سے ان جائل صوفیاء کے زعم کی بھی تر وید ہوگی جو کہتے ہیں کہ 'فان لم ملک تو اہ ''کامطلب یہ کہ گرتم نے اپنی ہستی کو مٹاویا تو تم اس (اللہ) کو دیکھو گے گویا 'نسس اہ ''شرط کے لئے جزاء ہے حالانکہ یہ صراحنا غلط ہے ایک توبیہ است کے اصول کے منافی ہے کیونکہ اگر 'نسس اہ ''جزاء ہوتو پھر حالت جزمی میں الف ساقط ہونا چا ہے تھا۔ دوم بیصدیث کے مقصد کے خلاف ہے کیونکہ یہاں بات احسان کی ہورہی ہے نہ کہ رویت باری تعالی کی ۔ سوم یہ بلاغت کے بھی مخالف ہے کیونکہ سوال میں رویت کا کوئی تذکر وہیں لہذا پھر جواب سوال باری تعالی کی ۔ سوم یہ بلاغت کے بھی مخالف ہے کیونکہ سوال میں رویت کا کوئی تذکر وہیں لہذا پھر جواب سوال کے موافق نہیں ہے گا۔ چہارم اس کے بعد' فانہ یو اک ''کا کوئی مطلب اور دبوانییں ہے گا۔

قوله: "فعجبنا منه النح" تعجب كى وجدخود بيان فرمائى كرتفيدين سيمعلوم موتاتها كدوه ان حقائق كوجانتا بجبكه سوال تومجهول كي بار بيس موتاب-

قوله: "ماالمسنول عنهاالخ" لين قيامت كي آمكاوتت سوائ الله تبارك وتعالى كى كى كومعلوم خيس توجيعة منيس جانة اليابي مين بهي نبيس جانيا بول -

قوله: "ان تلدالامة ربتها" اس جملے کے مطلب میں شارعین بخاری و مسلم اور مفکلو ق کشراح نے بہت کچھ کھا ہے جیسا کہ باقی حدیث جرئیل پر بھی تفصیل سے کھا ہے ، لیکن جو مطلب سب سے زیادہ جلی ہے وہ سارے یہ بیٹی الی ہوجائے گی جدیث جرئیل پر بھی تفصیل سے کھا ہے گئوم کے حاکمہ بن جائے گی وہ سارے یہ ہیٹی الی ہوجائے گی جیسے آئ کل مشاہدہ ہے اور جب لڑکی کا بیحال ہوگا، تو لڑکا تو اختیارات رشتوں وغیرہ کے ماں سے لے لے گی جیسے آئ کل مشاہدہ ہے اور جب لڑکی کا بیحال ہوگا، تو لڑکا تو بطریق اولی نافر مان و آ قابے گا۔ ابن رجب ضبی نے شرح المسین میں اس حدیث پر ککھا ہے کہ مطلب سے ہے کہ قلب الامور ہوجائے گا، حقائق بالکل اُلٹ بلیٹ جائیں گے، جیسے آئ کل نظر آر ہا ہے کہ علماء کو ان پڑھ کہا جا تا ہے اور دو پیسوں کے کمانے والے کو علم والا تعلیم یافتہ بلکہ اعلی تعلیم یافتہ کہا جا تا ہے اور زمام افتد ارکو تکھ لوگوں کاحق سمجھا جا تا ہے اور زمام افتد ارکو تکھ

قوله: "المحفاة "بضم الحاء حافى كى جمع بمعنى نظر بيروالا -قوله: "غُواة" جمع عارى كى هرب يرمطلب بيس كمل نظر لوگ بلكة جن كرم پر بورالباس نهو- قوله: "العَالَة" عالى جع بفقروتاج كوكبته بير-

قوله: "رِعاء الشاء" كبسرالرا وراعى كى جمع بمعنى چرواب كــ

قوله: "بتطاولون" تفاخر بھی مقصود ہوسکتا ہے کہ تعمیرات میں ایک دوسرے سے بازی لے جانے ک مجر پورکوشش کریں ہے، اور معنی لغوی لیتنی لمبی لمبی اوراو نجی اونچی تعمیرات بھی مراد ہوسکتی ہے آج دونوں کا مشاہر ہ عام کیا جاسکتا ہے۔

قول ه: "فلقینی النبی صلی الله علیه و سلم بعد ذالک بثلاث" شیخین کی حدیث میں ہے کہ جب حضرت جرئیل اٹھ کر چلے گئے تو نبی نے فر مایاس آ دی کو دالپس میرے پاس کا لوگر صحابہ کرام " کو پکھ دکھائی نددیا تو نبی نے اس وقت فر مایا تھا کہ بیہ جرئیل تھے، گویا اب تک نبی کو جس معلوم نہ ہوا تھا جمکن ہے کہ حضرت عرب میں خالی کرنے والوں میں لکے ہوں گروہ محض نہ ملنے کی وجہ سے اپنے گھر چلے گئے ہوں اور چونکہ ان کا گھر عوالی میں تھا اس کے اسکے دن نہ اے ہوں۔

باب ماجاء في اضافة الفرائض الى الايمان

(فرض اعمال کوایمان میں شامل کرنے کابیان)

"عن ابن عباس قال قَدِمَ وفدعبدالقيس على رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالوا:

إنّا هدا المحتى من ربيعة ولسنائصل اليك الافى الشهر الحرام إفَمُرنَابشى ناخُده عنك
وندعوا اليه مَن وَرَاءَ ناإفقال امُرُكم باربع: الايمان بالله ثم فَسَرَها لهم شهادة ان لااله إلاالله
وانى رسول الله واقام الصلواة وايتاء الزكواة وان تؤدّو اخُمُسَ ماغَنِمتُم". (حسن صحيح)
حضرت ابن عبال سروايت بفرمات بين كرعبدالقيس كانمائنده وفدرسول الله صلى الشعليوسلم
كى فدمت بين عاضر بوااور عرض كياانبول في كريم اس قبيل والي (برح قبيله) ربيد سے بين اور بمسوات
حمت والم مبين كة ب تك رسائى عاصل نبيل كر سخة بين (كيونكه بماراراست دش قبيله مضر برب) اس لئة
آب بمين اليي (جامع) بات كاهم وين جس برجم خود بحي عمل كرين اوران لوگول كوبمي اس كي دعوت وين جو
بمار م يحي (انظار مين) بين إلين آپ في فرمايا كه بين تمين بين واران لوگول كوبمي اس كي دعوت وين جو
بمار م يحي (انظار مين) بين إلين آپ في فرمايا كه بين تمين بين واران لوگول كوبمي ادريكه من الله كارسول

ہوں،اورنمازکوفروغ دینا،اورز کو قادا کرنااور بیکمتم جوفنیست حاصل کرتے ہواس کا یا نچواں حصادا کرو۔

تشریخ: قوله: "وفدعبدالقیس" واندگی جمع بنائنده جماعت کو کہتے ہیں جو کسی بزی شخصیت سے ملنے جائے ، بعض نے کہا ہے کہ معززین پر شمل جماعت کو کہتے ہیں۔ جبہ عبدالقیس ، ربیعہ قبیلہ کی ایک شاخ کانام ہے جو مُضر قبیلہ کے مقابل ہے، عملی ہذا اللہ کی بنا پر اختصاص منصوب ہوگا تقذیر اس طرح ہوگا ''انا ہذا اللہ ی حتی من دبیعة ''۔ ربیعہ اور مضر دونوں قبیلوں کی جڑ نزار بن معد بن عدنان نامی شخص ہے ربیعہ اور معزاس کے دو بیٹے تھے جن سے یہ دو قبیلہ بن گئے، پھر ربیعہ قبیلہ کے ایک شخص عبدالقیس کی اولا دنے بھی ایک قبیلہ کی شکل اختیار کر لی جس کا یہاں ذکر ہے، یہ لوگ بحرین میں اور اس کے آس پاس رہتے تھے دینہ جانے کے لئے ان کو معز قبیلہ کے علاقوں سے گذر تا پڑتا تھا گرآپس کی دیمینوں کی وجہ سے اشہرالحرم کے علاوہ باتی مہینوں میں وہ ان کو گذر نے نہیں دیتے جبدا شہرالحرم میں باتی عربوں کی طرح یہ لوگ بھی جنگ بندی کی وجہ سے ایک دوسر سے پر حملے نہیں کرتے تھے، یہاں شہر حرام سے مرادیا تو جنس ہے جو چار مہینے ہیں ذی القعدہ کی وجہ سے ایک دوسر سے پر حملے نہیں کرتے تھے، یہاں شہر حرام سے مرادیا تو جنس ہے جو چار مہینے ہیں ذی القعدہ ، ذی الحجہ بحرم اور د جب مراد ہے کیونکہ معزاس کا خصوصی اہتمام واعظام کرتے تھے۔

قبوله: "ناخذه وندعو االيه" دونوں کوجزم ورفع كے ساتھ پڑھناجائزہ جزم اس لئے كہ جواب امر بیں اور رفع اس لئے كہ جملہ صفت تی ہے كيونكہ كرہ كے بعد جملہ صفت ہوتا ہے۔

قوله: "آمر کم باربع النے" یہاں روایت میں اختصار ہے جبکہ تھیں کی روایت میں ہے:"امر هم بسار بسع و نهساهه عسن اربع "لینی ان کوچارتم کے برتنوں اور مکلوں کے استعال سے بھی روکا تھاجن کاذکر ابواب الاشرب میں گذراہے۔

قوله: "شهادة ان لا اله الا الله النه الخ" مبتدا ومقدر ك خرب اى هى شهادة ان لا الخ" ـقوله: "و اقدام المصلواة الخ" أكرا قام اور ما بعد كمها در معطوف كوم ورير ما جائة النع" واقدام المصلواة النع" أكرا قام اور ما بعد كمها در معطوف كوم ورير ما جائة وان كاعطف ايمان يرموكا اور مماسب الكرم فوع يرد ها جائة وعطف شهادة يرموكا اوريك امام ترفد كى كوض اور ترجمة الباب كساته وزياده مناسب بها كونكدا كرمون على بياعال ايمان كي تغيير مين شامل مول ك-

چونکه حدیث کے الفاظ پر بظاہر میاعتراض واردہوتا ہے کہ اگر میا عمال ایمان میں شامل ہیں تو پھر ماہتی تین اشیاء کیا ہیں؟ اور اگر میرایمان پرعطف ہیں تو پھر تو اشیاء چارنہیں بلکہ پانچے ہوجا کیں گی: (۱) ایمان (۲) نماز (۳) صیام (۴) زکو ق(۵) اواء الخمس ۔ غرض پہلا اعتراض مرفوع ہونے اور دوسرا بحرور ہونے پڑی ہاس لئے شارعین نے دونوں مکنہ صورتوں کوسامنے رکھتے ہوئے جواب دیا ہے۔ کہ پہلی صورت کے افتیار کرنے میں جواب بیہ کہ دادی نے باقی اشیاء کوذکر نہیں کیا ہے اور چونکہ دوایت کوفقر کر کے قتل کرنا جائز ہے بشرطیکہ مطلب تبدیل نہ ہوتا ہواس لئے کوئی اشکال نہیں۔

دوسری صورت میں جواب یہ ہے کہ اصل اشیاء اربعہ اقام الصلوٰ قوایتاء الزکوٰ قوغیرہ ہیں اگر چہ صوم کا ذکر یہاں نہیں مگر میح روایت میں وہ بھی فہ کور ہے، جہاں تک ایمان کا تعلق ہے توبیان چاروں میں معدود نہیں کو نکہ بلغاء کے یہاں جو چز پہلے سے معلوم ہواس کا تذکر ہ مقصودی نہیں ہوتا ہے۔ اور یہاں بھی وفد کوایمان کا پہلے سے پیت تھا، یا پھر اداء الحمس کا ذکر جواب پراضا فہ ہے کیونکہ بیلوگ جنگہو تھے اس لئے ان کو بی تھم بتادیا، یا پھر زکوٰ قونس ایک بی البذا تعداد جارہی ہے۔

ر باج كاعدم تذكره تواكر چه جمهور كزديك في المره هي فرض مواب اس آيت بي والسموا المحج والعموة لله "اوريوفد ٨ مه هي آيا تعاليكن ابن مجروا بن كثير وغير ما ك تحقيق بيه كه ال وقت في فرض بيس مواتها كيونكه ال كفرضيت اس آيت به مولى بي والله على المناس حج البيت من استطاع الميه سبيلا" - (ال عران: آيت: ٩٤) فلاا شكال -

جہاں تک ایمان کی کی وزیادتی کاتعلق ہے توبیہ سئلہ دراصل اس کی ترکیب وعدم ترکیب پرمٹی ہے جوحفرات ترکیب کے قائل ہیں جبکہ ایمان کو بسیط مانے والے اس کی کی کوشلیم مہیں کرتے ہیں۔ نہیں کرتے ہیں۔

چونکہ پہلے عرض کیا جا چکا ہے کہ اہل حق کے درمیان یہ اختلاف دراصل حالات کے تقاضوں پہنی ہے اس لئے کہا جائے گا کہ ان کے آپس میں کوئی قابل ذکر اختلاف نہیں ہے لہٰذااس کوزیادہ ہوادینے کی ضرورت نہیں اور جن نصوص سے اس کی زیاد تی معلوم ہوتی ہے تو اس سے مراد تو ت، انشراح بھرات وغیرہ ہیں تفصیل شرح عقائد میں دیکھی جاسکتی ہے۔ تر فدی کا اگلاباب بھی اسی مسئلہ کے لئے ہے۔

قوله: "وقال قتيبة و كنا نوضى ان نوجع الغ" ال سے مرادعباد كى تحسين وتوثيق ہے كہميں ان سے روزانه كم ازكم دوحديثوں كے سننے پر بوى خوشى محسوس ہوتى ۔

باب استكمال الايمان وزيادته ونقصانه

(ایمان کوکامل بنانے اوراس کے زیادہ اور کم ہونے کابیان)

"عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : إنّ من اكمل المؤمنين ايماناً احسنهم خُلُقاً واَلطَفُهُم باهله". (حديث حسن)

اہل ایمان میں کامل ترایمان اس کا ہے جس کے اخلاق ان میں سے زیادہ اچھے ہوں اورجوان کی بنسبت اپنے گھروالوں سے زیادہ نرمی کابرتا و کرتا ہو۔

تشری : قوله: "د ضیع لعائشة" رضع یهال پردضای بهانی کمعنی میں ہےند کہ معنی شہور۔ مطلب بیہ کے کدوایت میں انقطاع نہیں ہے بلکہ تصل ہے۔

اس صدیث سے صن اخلاق اور نرم برتاؤ کا اعلیٰ مقام معلوم ہوتا ہے خصوصاً جب اپنے گھر والوں کے ساتھ ہو، کیونکہ بعض لوگ نیک نامی اور داد حاصل کرنے کے لئے اُجانب کے ساتھ و حسن سلوک کرتے ہیں جبکہ بعض اپنی ملازمتوں اور غربت کی مجوری کے پیش نظر گھر کے باہر چاپلوسی کے عادی ہوجاتے ہیں گروہ اپنے گھر میں شیر کی طرح دھاڑتے رہتے ہیں۔اس صدیث میں ان کی توجہ اس نکتے کی طرف مبذول کرادی گئی ہے کہ میں شیر کی طرح دھاڑتے رہتے ہیں۔اس صدیث میں ان کی توجہ اس نکتے کی طرف مبذول کرادی گئی ہے کہ اپنی سلطنت اور غلبہ کی جگہ میں اپنے زیر دست لوگوں اور کمز وروم تاج انسانوں کے ساتھ نرم روبیہ ہی آ دی کے دست اصل اخلاق کی عکاسی کرتا ہے لہٰذا اپنے نوکروں اور ملاز مین سے ختی اور اپنے سے زیادہ طاقت ور کے آگے دست اس اخلاق نہیں بلکہ مکاری ہے جوایمان سے غیر چیز ہے، مزید وضاحت اگلی صدیث میں ہے۔ امام ترفدی نے اس باب کی مندرجہ بالا اور مندرجہ ذیل دومزیدا حادیث سے ایمان کی کی وبیش کے امام ترفدی نے اس باب کی مندرجہ بالا اور مندرجہ ذیل دومزیدا حادیث سے ایمان کی کی وبیش کے

امام ترفدیؓ نے اس باب کی مندرجہ بالا اور مندرجہ ذیل دومزیدا حادیث سے ایمان کی تمی وہیشی کے اثبات پر استدلال کیا ہے۔ اثبات پر استدلال کیا ہے۔

مگر پیچے عرض کیا جا چکا ہے کہ اہل حق میں بیا ختلاف کو یا وقت کے الگ الگ تقاضوں کی بناء پر تھا اور

یکی وجہ تھی کہ امام مالک نے ایمان کی کی کے قول سے اجتناب کیا تاکہ خوارج کے زعم کو تقویت نہ طے کو کہ اس
قول کی ایک وجہ ریجی ہے کہ ایمان کی زیادتی کے بارے میں نصوص ہیں جبکہ کی کے حوالے سے کوئی حدیث
یا آیت نہیں ہے، تا ہم جمہور محدثین نے جب بید دیکھا کہ زیادت وکی دومقائل چیزیں ہیں للہٰ دااگر کوئی کل ایک ضد کو قبول کرتا ہے تو وہ دوسری سے بھی موصوف ہوسکتا ہے جیسا

كەمندىجە بالاحدىث اوردىكرنصوص بىساس كى تفرى كى تو دەكى كوجى تبول كرے گا۔

متکلمین کہتے ہیں کہ زیادتی سے مرادقوت و پھتکی یا تفصیل بعدالا جمال وغیرہ ہے کیونکہ جو صحابہ کرام اسلام کے پہلے دور میں جبکہ وقی کا نزول جاری تھا، انقال فرما چکے ہیں وہ بھی بھینا کامل ایمان والے سے ان کا ایمان کی طرح ناقص نیس تھا، اس طرح آج بھی جوآ دی بالغ ہوئے کے بعد فرضیت جج وزکو ق سے پہلے بغیر جج وادائے زکو ق کے مرجائے اسے بھی ناقص الا یمان نہیں کہاجا سکتا، جس کا صاف مطلب یہی بنتا ہے کہ اعمال خمرات ایمان ہیں اجرا وہیں ہیں ور خدوانفائے جز مسانفائے کل لازم آتا اور ایما مخص ناقص شمرات ایمان تھیں اجرا وہیں ہیں ور خدوانفائے جز مسانفائے کل لازم آتا اور ایما مخص ناقص ناقص کے نزدیک آگر چا یمان تھید ای کا نام ہے ہاں ہے بات ضرور ہے کہ تصدیق میں مراتب ہیں اہل النہ والجماعة کے نزدیک آگر چا یمان تقلیدی بھی نجات اخروی کے لئے کا فی ہے لیکن یقین کا درجہ یقینا اس سے اعلیٰ ہے اس طرح یقین میں بھی تین درجات ہیں بھی بیتین بھیں ایکنین اور جن ایقین جیسا کہ حضرت ابرا ہیم علیہ السلام نے فرمایا تھا 'دہلی و لکن لیطمئن قلبی ''۔

حدیث آخر: حضرت الوجریه وضی الله عند سے دوایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے لوگوں سے خطاب فرمایا اوران کو فیصت کی ، پھر فرمایا: اے گروہ عورتوں کے! صدقہ دیا کرو! کیونکہ دوز خیوں میں تہاری تعداد ذیادہ ہے، پس ان میں سے ایک خاتون نے عرض کیا: اے اللہ کے رسول ایسا کیوں ہے؟ آپ نے فرمایا: میں نے فرمایا کرتے ہمارے بہت زیادہ لعن وطعن کرنے سے بیٹی شو ہروں کی ناشکری کرنے سے! آپ نے فرمایا: میں نے فرمایا: میں ناتمام عقل اور ناتھ دین والے کوجوتم سے زیادہ غالب رہتا ہو پختہ عقل والوں اور ذی رائے نہیں دیکھا کسی ناتمام عقل اور ناتھ دین والے کوجوتم سے زیادہ غالب رہتا ہو پختہ عقل والوں اور ذی رائے لوگوں پر!ان میں سے ایک عورت نے دریافت کیا کہ عورتوں کی عقل اور دین کی کی کن ثنانی کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: تم میں سے دوعورتوں کی گواہی ایک مرد کے برابر ہے (بینقھی عقل کی نشانی ہے) اور تمہارے دین کا فرمایا: تم میں سے دوعورتوں کی گواہی ایک عورت (ہرماہ کم از کم) تین چاردن رک جاتی ہے، نمازنہیں پر ھتی۔ نقصان چیف کا آنا ہے چنا نچیتم میں سے ایک عورت (ہرماہ کم از کم) تین چاردن رک جاتی ہے، نمازنہیں پر ھتی۔ (حسن میحے)

تشری : قوله: "خطب الناس" يعن عيدگاه يس قوله: "وليم ذاك يارسول الله!" لفظ "لم "اصل يس لِمَا تفام محتفيفا الف كوحذف كرديا كيا ب قوله: "لِكثرة لعنكن" يعنى بددعاء يعنى رحت سددرى كوكمت بي حقوله: "و كفر كن العشير "عثير بروزن غريب اكر چرطلق مصاحب كهت بين مكر يهال مرادشو برب كيونكده محى ساته د بتا سي معلوم بواكدنت كرنا اورناشكرى كرنا كبائر كنا بول بي

سے ہیں۔قولہ: "لندوی الالباب" أب کی جمع ہے فالص عقل کو کہتے ہیں جس میں شکوک اورخواہشات کی آمیزش نہ ہواور مطلب سے ہے کہتم لوگ جب مضبوط رائے رکھنے والے ہوشیار خفس پر غالب رہتی ہوتو عام لوگوں پر غالب آنا تو معمولی بات ہے ، چنانچ حقیقت یہی ہے جبیبا کہ آپ نے ارشا وفر مایا کہ بروے بروے عقلاء کو سوائے انبیاء کے ورت ایک چنگی اور ایک ہی ہندی سے بے وقوف بنالیتی ہے الا ماشاء اللہ قلیل ماهم ، کون ہوسکتا ہے جو یوسٹ کی طرح ہماگ جائے ؟

قوله: "مِنكن" اغلب كراتهم تعلق ب_قوله: "ومانقصان عقلها؟ الخ" يعني عورت كعقل ودین کے ناتص ہونے کی نشانی کیاہے؟ لہذالفظ مااستفسارلمیت کے لئے نہیں بلکہ نشانی دریافت کرنے کے لئے ہے کیونکہ جب آٹ نے ان کے نقصانِ عقل ودین کی خبردے دی توان محابیات کویفین تو آبی میالیکن ان کے سامنے مرداور عورت کے عقل ودین کے درمیان تفاوت کی واضح نشانی نہیں تھی۔جس پڑ آئی نے فرمایا کہان كانسيان تقص عقل اورايام حيض ميس تركيصوم وصلوة نقصان دين كى علامت ب، جهال تك عورتول ك نقصان عقل کاتعلق ہے تواگر چدعام عورتیں اس حقیقت کوشرح صدر کے ساتھ قبول کرنے پر آمادہ نظر نہیں آتیں جوان کے نقصان عقل کی ایک مستقل دلیل ہے کیونکہ ہربے وقوف آدمی اینے آپ کودانا وعقمند کردانتا ہے ، مران کا كثرت سے بولنا، ہربات برازنا، چيوٹي حيوثي باتوں كوأجيمالنا، مكر وفريب كرنا، نقالي كرنا، تيزى سےنشو ونمايانا، جلد موٹا یا اختیار کرنا، در دِزہ کے وقت موت کے قریب پہنچنے کے باوجوداس کے اسباب دوبارہ اختیار کرنا اور سابقہ تکلیف کوبھول جانا،اور بازاراورنامحرم مردوں میں زیب وزینت کے ساتھ یوں چلنا کہ وصن میں بیہ احساس ہرونت موجزن ہوکہ گویاسارے لوگ اسے دیکھ رہے ہیں اورزیادہ ترفکر آخرت سے بے نیاز ہوکر گناہوں کی داعیہ ہوناوغیرہ وغیرہ نقصان عقل کی علامات ہیں چنانچہ کوئی عورت منطق نہیں پڑھتی ۔اگر جہاس مين بهى بارى تعالى كى حكمت بي كيونك "لولا الحمقى لَخَربَتِ الدنيا "اكراحت لوگ نه موت تودنيا كانظام نہیں چل سکتا، کیونکہ دنیا کی بقاء جس طرح اللہ والوں کے وجود برموتوف ہے اس طرح دنیا کا چلنا ہے وقو فوں کی کثرت سے موجودگی بربھی بنی ہے، عورت میک اپ کر کے سارا سارا دن دوسروں کوخوش کرنے کے لئے اپنی نمازے اس لئے بے اعتنائی کرتی ہے کہ وضوء کرنے سے میک اپ خراب ہوجا تاہے۔

اس مدیث سے میہ معلوم ہوا کہ معذور آ دمی کواگر چہ عذر کی بناء پرایک عمل ترک کرنے کی رخصت دی جاتی ہے مگراس کے باوجودوہ عمل کرنے والوں کا جتنا اثواب حاصل نہیں کرسکتا،اور چونکہ اس مدیث میں نقصان دین سے تواب کی مراد ہے لہذااس سے امام ترندی" کا استدلال زیادت ایمان پر سے نہیں۔اس حدیث سے ریخ کا قوی امکان پردا ہوتا ہے۔ حدیث سے ریخ کا قوی امکان پردا ہوتا ہے۔

مینے عرض کیا جاچکا ہے کہ اہل دوزخ میں عورتوں کی زیادتی دخول اولی کے اعتبارے ہے مروری نہیں کہ دو ہمیشہ اس میں رہیں کیونکہ اہل ایمان کا جنت میں جانا طے شدہ ہے ، نیز اس حدیث میں حاضرات کو عائبات پرتغلیب دی گئی ہے لیعن میں کم محابیات کے لئے نہیں بلکہ مجموعی عورتوں کے لئے ہے۔

بہرحال اس ارشاد پاک میں عورتوں کوایک مفید مشورہ دیا گیاہے کہ اگروہ صدقہ دیا کریں گی تووہ عذاب سے نجات حاصل کرسکتی ہیں۔ محابیات نے اس پر بھر پورشل کیا۔ باتی امت میں آنے والی عورتوں کے لئے بھی یہی مفیدتر کیب ہے۔

جہاں تک عورت س کی ناشکری کاتعلق ہے تواس کی دوصور تیں ہیں: ایک تویہ ہے کہ عورت شوہر کے احسانات کی صرت نفی کر ہے جیسا کہ اس صدیث کے دوسر سطریق ہیں ہے: 'کی قبول احدا مُحنُ اذا غضبت علی ذوجہا: ماد آیٹ منک خیراً قظ ''لینی غصر کے وقت بول اٹھتی ہے کہ ہیں نے بھی ہمی ہمی ہمی ہمی تیری طرف سے نیک برتا و کوئیں دیکھا۔ دوسری صورت یہ ہے کہ شوہر کے احسانات پرشکر بیادانہ کر ہے۔ یہ کی ایک طرح کی ناشکری اور کفران ہے کیونکہ وہ شکر چھپاتی ہے۔ قبولہ: "یعنی و کفوکن العشیر" میں ''یعنی ''کالفظ راوی کا مدرج واضافہ ہے کہ داوی کو اپنے استاذ کے الفاظ یادنہ ہے تواس کے مفہوم کو لیمنی کہہ کرادا کردیا۔ الاسعید خدری کی حدیث میں اس طرح ہے: 'ن کیٹون اللعن و تکفون العشیر ''۔

حدیث آخر:۔ایمان کے کھاد پرسررو کباب ہیں ہیں ان میں سب سے معمولی راستہ سے تکلیف دو چیز کو ہٹا تا ہے ادرسب سے اونچا 'دلا الله'' کہنا ہے۔ (حسن سجح)

قول د "بسط عن بمسرالباء كالفظ تمن سے نوتك عدد كے لئے استعال ہوتا ہے بعض روايات ميں بسط وست و ست ون بھى آيا ہے كيكن ال ميں تعارض نہيں كيونك مراد كشير ہے يا بعض روايات ميں كي كانواع بعض ديكر ميں شامل كى كئى جيں۔

این العربی عارضة الاحوذی میں لکھتے ہیں کہ: ایمان امن سے ہے لینی خودای لئے امن حاصل کرنا اور دوسروں کو امن دینا اور اس کے اسباب زیادہ ہیں لہذا ان سب اسباب پرایمان کا اطلاق کیا گیا ہے پھر جو چیز امن کے منافی ہے اس کے ترک کو بھی ایمان کہا کیونکہ اس کے ارتکاب سے امن ختم ہوجا تا ہے جیسے

زنااور چوری وغیریا۔

پھران شعبوں کوبعض علاء نے جمع کرنے کی کوشش کی ہے مگران کے آپس میں تفاوت پایا جا تا ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کدان کی تعیین تفصیلاً مروی نہیں ہے لہذاان پر اجمالاً ایمان بھی کافی ہے۔

ابن حبال في نعداد سترر 2 ككس ب جويه بن (١) ايمان بالله (٢) واصفاعه (٣) وحدوث ماسواه (٣) وملائكته (٥) وكتبه (٢) ورسله (٤) والقدر خيره وشره (٨) واليوم الآخر (٩) ومحبة الله (١٠) والحت في الله (١١) والبغض في الله (١٢) ومحبة النبي صلى الله عليه وسلم (١٣) واعتقاد تعظيمه صلى الله عليه وسلم ووخل فيه الصلوة عليه واتباع سُنعة (١٨٧) الاخلاص ويدخل فيه ترك الرياء وترك العفاق (١٥) والتوبية (١٦) والخوف من الله (١٤)والرجاء الى الله(١٨)والشكر على نعماة (١٩)والصرعلى البلاء (٢٠)والرضاء بالقصاء (٢١)والحياء من الله (٣٢) والتوكل على الله (٢٣) والرحمة على الخلق (٢٣) والتواضع وييض فيه تقظيم الكبيروالرحمة على الصغيروترك الكيم والمحب (٢٥) والوفاء بالوعد (٢٧) ترك الحمد (٢٧) ترك الحقد (٢٨) ترك الغضب (٢٩) العطق بالتوحيد (٣٠) تلاوة القرآن(٣١) تُعلُّم العلوم الشرعية (٣٢) تعليمها (٣٣) الدعاء (٣٣) ذكرالله (٣٥) الطهر (٣٦) ستر العورة (٣٤) صلوة الفرائض (٣٨) صلوة السنن والنوافل (٣٩) الزكوة بجميع انواعها (١٠٠) صدقة التطوع (١١١) قَاتُ الرقاب (٢٠١) الجودويي في الإطعام (٢٠٠) صيام الفرض (٢٠٠) صيام النوافل (٢٥) الاعتكاف (٣٦) تحرى ليلة القدر (٢٨) الحجرة (٣٩) الطّواف (٥٠) الفر اربالدين من النِّين (۵) الوفاء بالندر (۵۲) محافظة الإيمان (۵۳) اداء الكفارات كلما (۵۴) التعقّف من الزيّا واللواطة بالنكاح (۵۵)القيام بحقوق العيال (۵۲) بر الوالدين ويدخل فيه برالاساتذة وكل ذي حق (۵۷) تربية الاولاد (٥٨)صلة الرحم (٥٩) طاعة السيد (٢٠) الرحمة على العبد (١١) العدل في الإمارة (٢٢) مصاحبة الجماعة (١٣) طاعة اولى الامر(١٣) الاصلاح بين الناس (١٥) قتل الخوارج ويدخل فيهتل البُغاة (٢٢) الاعابية على الخيروية في الامر بالمعروف والنبي عن المنكر (٦٤) اقامة الحدود (٦٨) الجهادوية في اداء الخمس (٢٩) انفاق المال في حقه وترك التبذيروالاسراف داخل فيه (٤٠) ردّ السّلام (١١) جواب العاطس (٧٢) كف الاذ كاعن الناس (٣٣) اجتناب اللهو (٣٨) ايفاء الدّين (٧٤) الاحسان مع الجار (٧٦) حسن المعاملة مع الناس (٤٤) وكف الا ذي عن الطريق - (بشكريه مولانا عبيد الله قتر بارى برحاشية شرح عقائد)

باب ماجاء الحياء من الايمان

(حیاء کاایمان میں ہے ہونے کابیان)

"عن سالم عن ابیه ان دسول الله صلی الله علیه وسلم مَرَّ برجل وهویعظ اخاه فی المحیاء فقال دسول الله صلی الله علیه وسلم: الحیاء من الایمان ". (حسن صحیح)

رسول الله صلی الله علیه وسلم المحض کے پاس سے گذرے درال حالیہ وہ خض اپنے بھائی کو (ترکِ)
حیاء کے بارے میں تھیمت کر دہاتھا، پس رسول الله صلی الله علیہ دسلم نے فرمایا کہ حیاء تو ایمان میں شامل ہے۔
تشری : امام ترفدی نے اپنی پوری کتاب میں کہیں بھی فقی مسئلہ میں اپنے استاذامام بخاری کا قول
بطور استدلال یا تحرید فاصب میں فقل نہیں کیا ہے اگر چہ رجال کے بارے میں زیادہ تران پر تکیہ کرتے ہیں یا
پھوامام داری پرجیسا کہ مقدمہ میں گذراہے، تا ہم ابواب الایمان میں بطرز امام بخاری مصنف نے کئی ابواب
ترکیب ایمان کے سلسلہ میں ذکر کتے ہیں ، علی ہزاتر تھۃ الباب میں لفظ "من "جعیش کے لئے ہوا در چونکہ
ترکیب ایمان کے سلسلہ میں ذکر کتے ہیں ، علی ہزاتر تھۃ الباب میں لفظ "من نہیں اس حدیث میں" من" وجعیشی میات کے اور اگرمن المحت میں ابتدائیہ ہونے پھر ابرائی کی بدولت حیاء پیدا ہوتی ہواداگرمن ہمنی جونا ہوتی ہوادی کی ایمان سے نہیں بلکہ کا مل ایمان کے اعتبار سے ہے۔

چھے عارضة الاحوذی کاحوالہ گذراہے کہ ایمان امن سے ہے لہذاامن کے اسباب کو بھی ایمان کہا گیاہے۔

"لِماكان الايمان الامان حقيقة ،وكانت له اسباب وفوائد سُمِّيت كلها باسمها كقوله "الحياء من الايمان" فهذه تسمية سببه بهاالخ".

بہر حال میخض اپنے بھائی کو حیاء کے بارے میں بخت وسست کہدر ہاتھا تو آپ نے منع فرمادیا کہ مثلاً اگر حیاء کی وجہ سے اس کا کہر حق تلف ہوجائے تواس کے بدلے اسے اُخردی اجرو تو اب ملے گالہذا حیاء سے بختانہیں چاہئے بلکہ باحیاء رہنا چاہئے ہاں البتہ جہاں کوئی حق بات کہنی ہوتو اس سے گریز نہیں کرنا چاہئے جواس کے بیان سے شرما تا ہے تو وہ حیائے محمود نہیں بلکہ وہ خذلان ہے، حیاء کے متعلق بیچھے باب گذرا ہے۔

باب ماجاء في حرمة الصلواة

(نماز کے تقترس کابیان)

"عن معاذبن جبل قال كنتُ مع النبى صلى الله عليه وسلم فى سفرفاصبحتُ يوماً قريباً منه ونحن نسير، فقلت يارسول الله آخيرنى بعمل يُدخِلنى الجنة ويُبَاعِلنى عن النارا قال: لقدسالتنى عن عظيم وانه يسيرعلى من يَسرّه الله عليه، تعبُدُالله ولاتشرك به شيئاً وتُقيم الصلواة وتؤتى الزكواة وتصومُ رمضان وتَحُجُ البيت ثم قال: آلاا وُلُك على ابواب الخير؟ الصومُ جُنّة والصدقة تُطفِئى الخطيئة كما يُطفِئى الماءُ الناروصلواة الرجل من جوف الليل، قال ثم تلا "تتجافى جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم ... حتى بَلَغَ ... يعملون "ثم قال: اَلا أخير كَ براس الامركله وعموده و ذِروة سنامه؟ قلت بلى يارسول الله! قال رأسُ الامر الاسلام وعمودُه الصلواة و ذِروة سنامه الجهادثم قال اَلااخبرك بِمِلاك ذالك كله؟ قلت بلى يارسول الله! قال فَاخَذَ بلسانه، قال كُفّ عليكَ هذا اقلتُ يانبى الله وَإنّا لَمُواخذون بما نتكلم به؟ قال فَكِلتك أمُك يامعاذ! و هَلْ يَكُبُ الناسَ فى النارعلى وجوههم اوعلى مناخرهم الا حَصائِذُ السِنَتِهم ". (حسن صحيح)

حفزت معاذبن جبل رضی الله عنه فرماتے ہیں کہ ایک سفر (تبوک) میں ، میں نبی صلی الله علیه وسلم کے ساتھ تھا تو ایک دن میں اللہ علیہ وسلم کے ساتھ تھا تو ایک دن میں ان کے قریب رہا جبکہ ہم چل رہے تھے پس میں نے عرض کیاا ہے اللہ کے رسول! جمھے کوئی ایسا عمل بتاد یبجئے جو مجھے جنت میں داخل کرے اور دوزخ سے مجھے دورکر دے!

آپ نے فرمایابلا شبہتم نے مجھے ایک بڑی بات پوچھی ہے، تاہم وہ اس فخض کے لئے آسان ہے جس کے لئے آسان ہے جس کے لئے اللہ آسان کردے بتم اللہ کی عبادت کرواوراس کے ساتھ کسی کوشریک نہ کرو، نماز کوفروغ دو، زکو قادا کرتے رہو، رمضان کے روزے رکھواور بیت اللہ کا حج کرو!

پھرآپ نے فرمایا کیا میں مجھ کواچھائی کے دردازوں کی خبر نہ دوں؟ روزہ ڈھال ہے، صدقہ گناہوں کو بُھا تا ہے جسیا کہ پانی آگ کو بجھا تا ہے۔ اورآ دمی کارات کے درمیانی حصہ میں نماز پڑھنا (خبر کے ابواب بین) حضرت معاذ "فرماتے ہیں کہ پھرآپ سلی الدعلیہ وسلم نے آیت " محت حسافی جنوبھم " کی تلاوت کی بین) حضرت معاذ "فرماتے ہیں کہ پھرآپ سلی الدعلیہ وسلم نے آیت " محت معاذ "فرماتے ہیں کہ پھرآپ سلی الدعلیہ وسلم نے آیت " محت معاذ " فرماتے ہیں کہ پھرآپ سلی الدعلیہ وسلم نے آیت " محت معاد اللہ علیہ وسلم کے اسلامی اللہ علیہ وسلم کے اسلامی کی الدول کی الدول کی معاد معاد کی الدول کی معاد کی الدول کی معاد کی معاد کی الدول کے الدول کی کی معاد کی معاد کی معاد کی معاد کی معاد کی معاد کی کی معاد کی معاد کی معاد کی معاد کی معاد کی کی کی معاد کی کی معاد کی معاد کی معاد کی معاد کی معاد کی معاد کی کار کی کی معاد کی کی معاد کی کی کار کی کی کار کی کار کی کار کی کار کی کی کار کی کار کی کار کی کار

یہاں تک کہ 'یعملون'' تک پڑھا (ترجمہ:الگرائی ہیں ان کی کروٹیس اپنی خواہگا ہوں سے اوروہ اپنے رب کو بکارتے ہیں ڈرسے اور امید سے)۔

پھرآپ نے فرمایا کہ کیا ہیں تخفے پورے امر (دین) کی اصل اوراس کے ستون اوراس کی کوہاں کی بلندی کی خبر نہ دوں؟ ہیں نے کہا کیوں نہیں اے اللہ کے رسول! آپ نے فرمایا کہ امرکائر (اصل) اسلام (کلمہ شہادت) ہے اوراس کا ستون نماز ہے اوراس کی کوہان کی بلندی جہادہ ، پھرآپ نے فرمایا کیا ہیں تخفے ان سب کی جڑنہ بتا کوں؟ ہیں نے کہا کیوں نہیں اے اللہ کے رسول! حضرت معافظ فرماتے ہیں کہ آپ نے اپنی زبان پکڑ کر فرمایا سے اپنے فلاف استعال سے روک لواپس میں نے عرض کیا کہ اے اللہ کے نبی ایم پکڑے جا کیں گئرے مان باتوں کی وجہ سے جوہم ہو لتے ہیں؟ آپ نے فرمایا تیری ماں تخفیح کم کرے، اے معافی ایک کوئی دبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سوا؟ (ایعنی زبان کی کائی ہوئی کھیتی کے سواگی ہوئی کھیتی کے سواگی ہوئی کھیتی کے سواگی ہوئی کھیتی کے سواگی ہوئی کے دریغ استعال سے لوگ دوز خ میں جاتے ہیں)۔

تشری: بعض روایات معلوم ہوتا ہے کہ پیگفتگوسفر جوک میں ہوئی تھی۔ قبولہ: "بدخیلنسی
الجنة ویباعدنی عن الناد" بیخل اور یباعد کو بنا ہرجواب امر مجزوم پڑھنا بھی اگر چہ جائز ہے مگرزیادہ صحح بیہ
کمان کومرفوع پڑھ کرممل کی صفات قرار دیا جائے لینی ایساممل بتائے کہ جس میں بیدونوں خوبیاں ہوں کہ جنت
میں لے جاتا ہواوردوز خرسے بیجاتا ہو۔

قوله: "لقدسالتنی عن عظیم وانه لیسیوالنے " یعنی تم نے ایسے مل کے بارے میں پوچھاجس کوسرانجام دینا بہت آسان ہے اور یہ کوسرانجام دینا بہت مشکل کام ہے البتہ جس پراللہ آسان کردیں تواس کے لئے بیمل بہت آسان ہے اور یہ مشاہدہ کے عین مطابق ہے کیونکہ کسی کا فر کے لئے کلمہ شہادت پڑھناموت ہے بھی زیادہ مشکل ہے اور کسی فاسق مشاہدہ کے عین مطابق ہے کیونکہ کسی کا فر کے لئے کلمہ شہادت پڑھناموں کام بین کین اللہ کے نیک بندوں کی توغذا یہی ہیں وہ مختص کے لئے نماز اور روزہ وغیرہ یا تہجد کی نماز انتہائی دشوار کام بین کین اللہ کے نیک بندوں کی توغذا یہی ہیں وہ ان کے بغیر زندہ نہیں یہ وہ سکتے ہیں۔

قوله: "تعبدالله النخ" بياوراس پرمعطوف جملياتو إخبار بمعنى امركي بين جيها كراو پرترجمه كيا كيا جيا كيا مبتدالله ،اى العمل الذى تسالنى عنه كيا كيا جيا كرمبتدا مقدر كي خبر بين تقذيراس طرح بوگن "هوان تعبدالله ،اى العمل الذى تسالنى عنه هو عبادتك الله النخ "قوله: "اكا دُلك على ابواب النخير" يهال سينوافل كا دُكركرنا جا بين اورجب نفلى روز سياور صدقه كايرعالم بي قرائض كامقام تويقيناس سياعلى بوتا به للذا فرائض كامحم بطريق

اولی معلوم ہوجائے گا، گویایہ ماقبل کی دلیل ہے کہ جب نقل عبادات کابد مقام ہے تو سابقہ جوفرض عبادات کا ذکر ہواان کومعمولی نہ مجھا جائے۔ (کذافی الکوکب الدری)

قوله: "المصوم جنة" بضم الجيم وتشديدالنون سير اوردُ هال كو كميّة بين چونكروز عدخوابشات توث جاتى بين اورنس كروربوجا تابها سلّ صائم برنس اورشيطان كاوارنبين چلاتهم بيه مقصدا يك دو روز ول سن حاصل نبين كياجاسكا بلك لگا تارگي روز عدر كفت سنا اضحلال آتا بوروزه و هال كاكام كرليتا بهد قوله: "و المصدقة تطفى النح" ابن العربي عارضة الاحوذي بين فرمات بين كديدكنايه آگست حفاظت ساورم ادمكي بُها نام جس كي تشبيد حي بُها في والى چيزيني يانى سنوي گي ب

قوله: "تتجافی جنوبهم عن المضاجع" بچھونوں سے پہلؤ وں کا دورر ہنا کنایہ ہے نماز پڑھنے سے لیکن یہ کون ی نماز ہے تو مشہور وحقق قول کے مطابق تبجد کی نماز مراد ہے بعض حضرات نے صلوق الدّابین لیعنی مغرب وعشاء کے درمیان کی نماز مراد لی ہے کیونکہ صحابہ کرام دن میں کھیتوں اور دیگر امور میں مصروف ہوتے اور عام عربوں میں مغرب کے بعد سونے کارواج تھا گر صحابہ کرام عشاء کی نماز کا انتظار کرتے اور نوافل پڑھتے۔

قوله: "بوأس الامو" جيس مرك بغيركوئى انسان زنده نبيس يه سكتا اى طرح دين اسلام بحى بغيركله شهادت كمعترنيس يعنى اعتقادة حيد ورسالت ضرورى بـ قوله: "عَموده" بمعنى ستون كفان الصلوة عسمادالدين قوله: "و ذروة سنامه" بكسرالذال چوئى اور بلندى كوكت بيل سنام فتح السين اونث ككو بان كوكت بيل جهادكواسلام كى او في چوئى كنه كامطلب بيه كه اسلام كى سربلندى كا دارومدار جهاد پرب اگرجهاد بوگاتو اسلام كابر چم اعلى وارفع بوگا ورسارى و نياپراس كارعب قائم رب گاليكن جهاد ك تعطل سے سارے فتنے سرأ شاكر بدمست باتقى كى طرح حقائق كومنے و يا مال كرتے ربيں گے۔

قوله: "مِلاک" كَبسراكميم جزكوكهاجاتا باس مين فتح بهى جائز بهدقوله: "كُفّ" بضم الكاف وفتح الفاء المشددة منع كرو، روكو! قوله: "فَكِلَتك " بَبسرالكاف بمعنى فَقَدَ تُك ليكناس معنى لغوى يعنى محم كرتا مراذبيس به للكريدا يك محاوره به جورفع غفلت اورانتهاه ك لئے بولا جاتا به قوله: "يكب" بفتح الياء وضم الكاف منه كال كرنے كو كہتے ہيں۔

قوله: "او مناحرهم" "او "شكمن الراوى كے لئے ہے۔ "منجر "بفتح الميم وكسر الخاوى جمع ہاں ميں خاوكا فتح بھى صحيح ہے تاك كے نتھنے كے سوراخ كو كہتے ہيں۔ قبوله: "حصالله" بمعنى محصود، حسيد اور محصود كل

ہوئی تھیتی کو کہتے ہیں اس میں زبان کے بے در اپنے استعال کی تشبیہ درائتی کے ساتھ دی گئی ہے ادر باتوں کی مشابہت کی تھیتی اور گھاس سے بیان کی گئی ہے قرجس طرح درائتی خشک وتر اور ضارونا فع کی تمیز کئے بغیر کا لئی ہے اس طرح اگر زبان کو بے لگام چھوڑ دیا جائے تو وہ بھی ہر طرح کی بات کرتی ہے جس سے اتنا نقصان ہوتا ہے کہ آدمی اوندھا یعنی ذلیل ہوکر جہنم کا ایندھن بن جاتا ہے ہی زبان کی حفاظت نجات کی صانت ہوئی۔

حدیث آخر: حضرت ابوسعید خدری فرماتے ہیں کہ رسول الله علیہ وسلم نے فرمایا جبتم کی محض کودیکھ وجوم جدی دکھیے جھال کرر ہا ہوتو اس کے لئے ایمان کی گواہی وے دو، کیونکہ الله فرماتے ہیں: ''انسمیا یعمو مساجد الله من امن بالله''۔ (سور و توبہ: آیت: ۱۸) بے شک آباد کرتے ہیں اللہ کی مجدول کووہ لوگ جوایمان لائے ہیں اللہ کی اور نماز کی پابندی کرتے ہیں اور زکو قادا کرتے ہیں۔ (حسن غریب)

قوله: "يتعاهدالمسجد" تعقد دراصل تخفظ اورتجد يدعهدكو كمتے بيں چريهاں اس سےمرادصورة التحدروخدمت بھی ہوسكتی ہے اورمعنوی عمارت يعنی عبادت بھی ہوسكتی ہے، پھرعارضة الاحوذی میں ہے كه مراداذان س كرمجد ميں جانا ہے (تو چونكه اذان پانچ دفعه بوتی ہے علی بذا پانچوں نمازی باجماعت مراد بیں یعنی بیتا ہوكا بہرعال مدلول ہے رہامز يدوابسكی تو وہ نورعلی نورہ) وہ مزيد لکھتے ہیں كه میں نے اپنے ایک ساتھی كود يكھا جولو بادتھا جب اذان سُنتا تو وہ بھوڑ اجو پہلے بی اٹھا چكا بوتا مار نے كے بجائے چھینك دیتا "لمثلا يكون عملاً بعد النداء و لكنه ير ميها ويقدم إلى المسجد "-

باب ماجاء في ترك الصلواة

(نماز چھوڑنے کا گناہ)

"عن جابر عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: بين الكفرو الايمان ترك الصلواة". (حسن صحيح) وعنه "بين العبدوبين الكفر ترك الصلواة". (حسن صحيح) (ا) ثماز حجور تا كفراورا يمان كوملا تا بـــــ (۲) ثماز حجور تا بند اوركفركوبا بم ملا تا بـــــ

تشريخ: ترك الصلاة مبتداً مؤخر باوريين الكفر والايمان خرمقدم بجبكدلفظ "بين "جوظرف بكامتعلق محذوف بيعن "وصلة بين الكفر و بكامتعلق محذوف بيعن "وصلة بين الكفر و الايسمان" چونك نمازير هناايمان اوركفرك درميان جاب بية ترك صلوة سي وه جاب ختم موكر طاپ كا

موجب بنتا ہے جس کا مطلب بی لکتا ہے کہ نمازی وجہ سے کفراور ایمان اور نمازی و کفر کے درمیان حدفاصل کا واسط رہتا ہے کین جب بیواسط ختم ہوجائے تو دونوں کی سرحدیں با ہم ال جاتی ہیں اور آ دی کفر کی سرحد ہیں داخل ہوجا تا ہے۔ چونکہ کفر وایمان کلی مشکک ہیں اس لئے اگر چدہ تارک صلا ق کلیة کا فرتونہیں کہلائے گالیکن کفر کے انتہائی قریب جانے سے بلکہ بارڈر سے داخل ہونے کی وجہ سے وہ جزوی کا فرکہلانے کا مستحق ہوجا تا ہے۔

صحیح مدیث آخر: العهدالذی بینناوبینهم الصلواة فمن ترکهافقد کفر". (حسن صحیح غریب)

ہمارے اور ان منافقین کے درمیان عہدو پیان (کادار دیدار) ثماز (پر)ہے پس جس نے نماز حجھوڑ دی تواس نے کفر کیا (بعن ظاہری کفرکو بھی اختیار کرلیا)۔

چونکه منافقین کلمه شهادت پڑھتے اور نمازیمی پڑھتے تھے اس لئے ان پرمسلمانوں کے احکام لا گوکئے جاتے تھے تو نمازی وجہ سے ان کو تحفظ حاصل تھا ہیں اس ارشاد کا مطلب یہ ہوا کہ اگر وہ نماز پڑھنا چھوڑ دیں تو پھر ہمارے اور ان کے مابین امن وامان کا عہد باتی نہیں رہے گا جیسے 'باب ماجاء اُمرت ان اقاتل الناس حتیٰ یقو لو الاالہ الااللہ ویقیمو االصلواۃ' میں عقریب گذراہے ملی ھذا' فمن تر کھافقد کفو ''کا مطلب یہ ہوا کہ اب اس پرمنافق کے احکام نہیں بلکہ کا فرے احکام لا گوہوں کے ، یہ بھی ہوسکتا ہے کہ فقد کفر بنا پر تغلیظ کہا گیا ہو۔ حدیث کا یہ مطلب حاشیہ قوت پر قاضی بیضا وی سے شاوی سے قال کیا گیا ہے۔ (تارک صلواۃ کا تحم تشریحات: جلدسوم: ص: ۹ پر گذراہے)

بأب

"عن العباس بن عبدالمطلب انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: ذاق طعم الايمان من رضى بالله رباً وبالاسلام ديناً وبمحمد نبياً ". (حسن صحيح)

ایمان کامزہ چکھااس نے جوراضی ہوااللہ کے رب ہونے پر،اسلام کے دین ہونے پراورمحمصلی اللہ علیہ وسلم کے نبی ہونے پر

تشریخ: فوله: "ذاق " حاشی توت مین امام راغب سے قل کیا ہے کہ تھوڑی مقدار کھانے یعن میکھنے کو دوق کہتے ہیں جبکہ زیادہ مقدار کو اکل کہا جاتا ہے۔

قوله: "دَضِیّ" رضا کے معنی قناعت کے ہوتے ہیں یعنی کسی چزیراس طرح خوش ہونا اور مطمئن ہونا کہ اس کے علاوہ دیگر کسی چیز کی خواہش ،طلب اور توجہ باقی نہ رہے ،علی بنرا مطلب بیہ ہوا کہ جوفض اللہ کورب مانے ،اسلام کودین مانے اور محمصلی اللہ علیہ وسلم کونی مانے پراس طرح خوش ہواور مطمئن ہوکہ وہ اللہ کے سواکس اور رب کا نضور تک نہ کرے۔

اوراسلام کے علاوہ کی اور فدہب کے لئے نرم گوشہ ندر کھے اور نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد کی اور شبخی خواہ وہ قادیا فی ملمون ہویا کوئی اور جمونا شبخی ہوکو نبی شلیم ہی نہ کرتا ہوتو بھینا وہ ایما ن پر مطمئن کہلائے گا اور اسے ایمان کی الیم طلاوت نصیب ہوگی جیسے مزیدار چیز کے کھاتے وقت دل ود ماغ ہیں سروروشاد مافی کی کیفیت اور خوش کی لہراٹھتی ہے اور پورے بدن میں پھیلتی ہے جس سے مستی ختم اور ہمت تازہ دم ہوجاتی ہے پھراس حدیث میں اور آنے والی حدیث میں ایک لطیف تشیبہ ہے کہ جو خص ان صفات کا حالی ہوگاوہ صحت مند آ دمی کی طرح ہے جولذیذ اشیاء کی مشماس واضح طور پر محسوں کرتا ہے۔ اس کے برعکس جو خص ان خویوں سے محروم ہووہ گویاصفراء کے مریض کی طرح ہے جوٹیٹھی پیٹھی اشیاء کی حلاوت کا حساس نہیں کرسکتا ہے۔ حدیث آخر: ۔ تین خصاتیں (خوبیاں) جواگر کسی کے اندر آجا میں تو وہ ان کی بناء پر ایمان کی حلاوت پائے گا(ا) وہ ختمی جس کے نزد یک اللہ اور اس کے رسول باتی سب چیزوں سے زیادہ عزیز ہوں (یعنی وہ کسی ہو۔ پائے گا(ا) وہ ختمی جس کے نزد یک اللہ اور اس کے رسول باتی سب چیزوں سے زیادہ عزیز ہوں (یعنی وہ کسی سے تی محبت نہ کرتا ہو) (۲) اور یہ کہ وہ آگر کی ختمی سے عبت کر بے تو اس کی عبت صرف اللہ ہی کے لئے ہو۔ سے تنی محبت نہ کرتا ہو) (۲) اور یہ کہ وہ آگر کی ختمی سے عبت کر بے تو اس کی عبت صرف اللہ ہی کے لئے ہو۔ سے تنی محبت نہ کرتا ہو) کا پہند زیا ہے ایک کو جبہ اللہ نے اسے کفر سے نوالا ہے ایسا تا گوار سمجے جسے وہ آگر میں سے جیتے ہوئے کوئا پند کرتا ہے۔ (حسن میسے کے بیا ہوں کسی کے لئے ہو۔ سے تنی عب نے کوئا پند کرتا ہے۔ (حسن میسے کی جب کہ اللہ نے اس کی کوئی پند کرتا ہے۔ (حسن میسے کے بیا کہ کوئی کوئی کی در ان میں کی کرتے ہوں کی کہ کہ کہ کی کرتا ہوں کوئی پر کوئی کرتا ہے۔ (حسن میسی کی کرتا ہے۔ (حسن میسی کوئی کوئی کوئی کی کرتا ہے۔ (حسن میسی کی کیٹی کی کی کرتا ہے۔ (حسن میسی کی کرتا ہے۔ (حسن میسی کی کرتا ہے۔ (حسن میسی کوئی کی کرتا ہے۔ (حسن میسی کی کرتا ہے۔ (حسن میسی کرتا ہے

اس مدیث میں کامل ایمان کا ذکرہے جس کے نصیب ہوجانے کے بعد کیفیت اور حالت یہی ہوتی ہے جواس مدیث میں فدکورہے کہ آدمی اپنی مرضی کو بالائے طاق ہی نہیں رکھتا بلکہ بھول جاتا ہے اور صرف اللہ کی خوشنودی کی تلاش میں زندگی کھیاتا ہے۔

ال حدیث میں 'بعدا ذانقدہ اللہ منہ ''اس فخص کے لئے ہے جو پہلے کفر میں زندگی گزار رہاتھا گر اللہ نے تو فیق دی اور شرف باسلام ہوا، اور وہ فخص بھی اس کا مصداق ہے جس کوشر وع سے اللہ نے کفر سے محفوظ رکھا ہو گرآپ کے ذمانہ میں اکثریت قتم اول سے تعلق رکھتی تھی اس لئے وہ تبیر غالب رہی علیٰ ہذا''ان یسعود'' ای معنی کے مطابق ہے دوسرے معنی کے مطابق بمعنی یصیر کے ہے۔

باب لايزنى الزانى وهومؤمن

(ایمانی کیف میس کوئی زنانبیس کرسکتا)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لايزنى الزانى وهومؤمن ولايسرق السارق وهومؤمن ولكن التوبة معروضة". (حسن صحيح غريب)

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ پرسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: کہ زنا کرنے والا مخض زنانہیں کرتا دراں حالیکہ وہ کامل مومن ہواور چورچوری نہیں کرتا دراں حالیکہ وہ کامل مومن ہو۔ تا ہم توبہ پیش کی ہوئی رہتی ہے۔

تشریخ: قوله: "و هو مؤمن" داؤ حالیت کے لئے اور تنوین تعظیم کے لئے ہے پس مطلب میہ واکہ کال ایمان اور زنا وچوری بھی جمع نہیں ہو سکتے ہیں یعنی اگر ایمان کامل ہے تو اس کے ساتھ زنا وچوری جمع نہیں ہو سکتے ہیں لیمن اللہ ماقص ہے۔

قوله: "ولنكن التوبة معروضة" لين زناوسرقه كى وجه ايمان تو كلف جائكا البتداس ذانى اورچوركوتوبكرن كاموقع وياجاتا به بها كراس نے توبكر لى توايمانى كيف وكمال پهر بحال موسكتا ہے۔

عديث آخر: "اذازني العبدخرج منه الايمان فكان فوق رأسه كالظلة فاذاخرج من ذالك العمل عاداليه الايمان".

جب بندہ زنا کرتا ہے تواس سے (کمال) ایمان نکل جاتا ہے اور اس کے سرکے اوپر سائبان کی طرح منڈ لاتا ہے پھر جب و چخص اس عمل سے فارغ ہوجاتا ہے تو ایمان اس کی طرف لوٹ آتا ہے۔

یہ حدیث ترندی میں معلق ہے لیکن ابوداؤدنے اپنی سنن میں متصل ذکر کی ہے امام حاکم " نے صحیح علی شرط الشخین قرار دی ہے اور حافظ ذہمی نے ان کی موافقت کی ہے۔ (کذافی تحفۃ الاحوذی)

ائینے ظاہری مطلب کے لحاظ سے بیصدیث بہت مشکل ہے کیونکداس میں کبیرہ گناہ کے ارتکاب سے
ایمان کے خروج کی تصریح ہے جو بظاہر معتزلہ وخوارج کی دلیل ہے کین اگر سابقہ صدیث کی تشریح کو لمحوظ رکھا
جائے تواشکال ختم ہوجائے گا، پس مطلب بینکلا کہ زناوغیرہ کبیرہ گناہ کے دوران کامل ایمان باتی نہیں رہ سکتا بلکہ
وہ نکل جاتا ہے جہاں تک نفسِ ایمان کی بات ہے تواس صدیث میں اس کی بات نہیں ہورہی ہے تا ہم کامل ایمان

کاسر پرمنڈلانے میں بیاشارہ ضرورہ کدایمان کا تعلق اس محض سے کمل ختم نہیں ہوتا بلکداس کا نورختم ہوجاتا ہے۔ اور شرات ضائع کردیئے جاتے ہیں اور جڑیں اس زانی کے دل کے اندر باتی رہتی ہیں۔ جیسے آدی اپنے او پر چھتری پکڑ سے قواس چھتری کا دستہ اس کے ہاتھوں میں ہوتا ہے اور چھتری کا کپڑ اسر کے او پر ہوتا ہے جس کی بناء پر حفاظت رہتی ہے، پھر جب آدی گناہ وزناسے نکل جائے تو ایمان لوٹ جاتا ہے کیونکہ کامل ایمان اور زنامیں تضاد ہے جب ایک کی کی میں واض ہوگا تو دوسراو ہاں سے نکے گا اور جب وہ نکلے گا تو بیرواض ہوگا۔

البت يهال يه مانا پڑے گا که زنا کرنے کے بعد زانی پھر سے خود بخو دکائل مومن بن جاتا ہے کونکہ جب کائل ایمان لوٹ آیا تو آدمی کائل مومن بن جائے گا حالا نکہ یہ مانا تو بہت مشکل ہے، اس لئے بعض شارحین نے یہ بہ ہے کہ اس صدیت پیس کائل کی بات ہیں بلک نفسِ ایمان کی بات کی گئی ہے اور بی تھم تغلیظاً ہے لیمی زائی گویانشس ایمان سے محروم ہوجا تا ہے۔ لیکن بی قوجیہ پہلے اشکال سے زیادہ مشکل گئی ہے، اس لئے اس کاحل بی نظر آتا ہے (واللہ اعلم) کہ بات تو کائل ایمان کی ہوری ہے لیکن چونکہ حقیقت یہ ہے کہ کائل مومن اول تو زنا کر تانیس اگر بالفرض اس سے زنا صادر ہوجائے تو وہ فوراً تائب ہوجا تا ہے کیونکہ تو بہ کاموقع تو دیا جاتا ہے حسیا کہ باب کی پہلی حدیث میں گذر گیا لہذا مطلب یہ ہوا کہ جب وہ زناسے فارغ ہوجائے اور ایمان کے حیالات فوراً تائب ہوجائے تو ایمان واپس لوث آتا ہے۔ لہذا کہا جائے گا کہ یہ صدیث مفتر ہے اور مائی سابقہ صدیث میں تو بہ کی تعدید میں گئیر ہے فیان المحدیث یہ فسسر بعضہ بعضاً کمایفسر القور آن

قوله: "هذاخروج عن الايمان الى الاسلام" ينى ايمان جولى تقديق ويقين كانام ك ويقين كانام ك ويقين كانام ك ويقين كانام ك الموت موت موت وكون فخض مناه اورخصوصاً كبيره مناه كاارتكاب نبيس كرسكا ب للهذاج فخض الياكر عاده موياديوك وي حدتك مسلمان بهلكن الله جلكا اصل مطلب وي بجواد پرتشر ك ميس كذر كيا يعنى كامل ايمان نبيس ربتاليكن نفس ايمان باقى ربتا به شرح عقائد ميس المتن "والكبيس و الا يحد العبدالمؤمن من الايمان و الاتد حله في الكفر "ك تحت سن بعرى" كاند بب يقل كيا ميا كرده مرتكب كبيره كومنا فق ما نت تقد -

"واحتجت المعتزلة بوجهين الاول أن الامة بعداتفاقهم على أن مرتكب الكبسيرة فاسق، اختلفوافي أنه مؤمن وهومذهب أهل السنة والجماعة أو

کے آخر میں نقل کیا ہے۔

کافر و هو قول الحوارج او منافق و هو قول الحسن البصري الخ". (من ٨٣)

لیکن مقاصد میں حضرت حسن بھری " کااپنے قول سے رجوع نقل کیا حمیاہے لہذااب اہل المنة والجماعة کے مابین اس مسئلہ میں کسی طرح کاکوئی ابہام یا اختلاف نہیں ہے اور متفقہ مسئلہ ہے کہ جب تک کسی گناہ کو جلال و جائز سمجھ کرنہ کیا جائے تو نفس ارتکاب سے کوئی کفرلازم نہیں آتا ہے جبیا کہ امام ترفہ گی نے باب

"وهذا قول اهل العلم لانعلم أحَداً كَفَرَاحَداً بالزناوالسرقة وشرب الخمر".

قوله: "وقدروى من غيروجه عن النبى صلى الله عليه وسلم انه قال فى الزناو السرقة من اصاب مِن ذالك شيئاً فاقيم عليه الحدفهو كفارة ذنبهروى ذالك عن على بن ابى طالب وعبادة بن الصامت الخ" يحديث حفرت عباده بن صامت عدام ترذي في ابواب الحدودين نقل كى بهاس بروبال بحث گذرى به فلانعيده و (و يَصَرَ تشريحات ترذى: جلد فيجم عن ٣٥٥ سي آكن باب ماجاء ان الحدود كفارة الاهلها")

صديث آخر: "من اصاب حداً فعُجِّل عقُوبَتُه في الدنيافالله اعدل من ان يُعَنِّى على عبده العقوبة في الآخرة ومن اصاب حداً فستره الله عليه وعفاعنه فالله اكرم من ان يعودفي شي قدعفاعنه". (حسن غريب)

حفرت علی رضی الله عند سے مروی ہے کہ نبی صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: جوکس (موجب) حدکو پہنچا (معند سے مروی ہے کہ نبی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: جوکس (موجب) حدکو پہنچا (معنی کرگذرا) پس اس کی سزاد نیا میں جلد ہی دے دی گئی تو اللہ کا انسان اس سے بہت بالاتر ہے کہ وہ اپنی معاف کی سزا قیامت میں دُہرادیں اور جوفض کسی حد (معناف کی ہواس سے رجوع فرما کیں۔ معاف کی اور اللہ کا کرم اس سے بہت او نیجا ہے کہ جو چیز معاف کی ہواس سے رجوع فرما کیں۔

حضرت گنگوری نے الکوکب الدری میں فر مایا ہے کہ یہاں ہردو حکموں کی دودو صورتیں ہیں پہلے حکم کی دوصورتیں ہیں پہلے حکم کی دوصورتیں ہیں کہ حدوہ کو در فر مایا دوصورتیں یہ ہیں کہ حدقائم ہونے کے بعدوہ محدودیا تو تو بہرے گایا نہیں تو اس میں تو بدوالی صورت کو ذکر فر مایا کیونکہ بظاہر جد کننے کے بعدمومن تائب ہوئی جاتا ہے جبکہ دوسری صورت حذف کردی گئی ،اسی طرح گناہ پرکسی دوسرے کی اطلاع نہ ہونے کی صورت میں وہ تو بہرے گایا نہیں تو اس میں بھی تو بدوالی صورت کو ذکر کیا جومومن

کی شان کے مطابق ہے، غرض یہاں دونوں صورتوں میں توبہ کی قید مراد ہے۔

على بدااس مديث كاسابقه مديث سے كى طرح تعارض بيس آيا كونكه اس بيس مغفرت كومشيت بارى تعالىٰ برموقوف كيا كيا سي م الله فهو الى الله تعالىٰ ان شاء عدّبه يوم القيامة و ان شاء غفر له وروى ذالك عن على بن ابى طالب وعبادة بن الصامت و خزيمة بن ثابت عن النبى صلى الله عليه وسلم "_

باب ماجاء المسلم من سَلِمَ المسلمون من لسانه ويده

(مسلمان وه ہے جس کی زبان اور ہاتھ (کی ایذاء) سے مسلمان محفوظ رہیں)

"عن ابى هريرة قال قال: رسول الله صلى الله عليه وسلم: المسلم من سَلِمَ المسلمون من لسانه ويده والمؤمن من آمِنَه الناس علىٰ دمائهم واموالهم ". (صحيح)

حضرت ابو ہریر افر ماتے ہیں کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: مسلمان وہ ہے جس کی زبان سے اور اس کے ہاتھ سے لوگ اپنے خون اور اس کے ہاتھ سے لوگ اپنے خون (جانوں) اور اپنے مال کے بارے میں مطمئن ہوں (بعنی بے خوف ہوں)۔

تشری : اس مدیث کے پہلے جزء کی تشری ابواب صفۃ القیامۃ میں باب بلاتر جمہ کے حت حضرت ابوموی اشعری کی مدیث میں گذری ہے، اور جومطلب پہلے جلے کا بنتا ہے وہی دوسر سے جلے کا بھی ہے یعنی سلم سلامتی کے معنی میں البذا مسلم کوچا ہے کہ وہ دوسروں کی سلامتی کوئینی سلامتی کے معنی میں البذا مسلم کوچا ہے کہ وہ دوسروں کی سلامتی کوئینی بنائے اور مومن کوچا ہے کہ وہ دوسر سے اہل ایمان کے امن واطمینان کی عملی صفانت دے وہ اپنے قول و کمل سے دوسر سے مسلمانوں کو بیا باور کرائے کہ وہ نہ کسی کوزبانی و تولی تکلیف پہنچا ہے گا اور نہ عملی طور پر کسی کوجانی و مالی نقصان پہنچا ہے گا اور نہ عملی طور پر کسی کوجانی و مالی نقصان پہنچا ہے گا۔

آگرکوئی مسلم ومومن قولاً یاعملاً اس کرداروذ مه داری کے خلاف چاتا ہے تو وہ مسلمان ومومن کہلانے کا مستحق نہیں کو کہ وہ اپنے عمل ایذا ورسانی سے خارج از اسلام وایمان تو نہیں ہوگائیکن یہ ایساہوگا جیسے کوئی جاہل اپنانام بحرالعلوم رکھے آگر چہ اس کے پاس تھوڑ ابہت علم تو ہوتا ہے لیکن بینا م یقیناً بے جارکھا ہواتصور کیا جائے گا۔ غرض کا مل مومن وہ ہے جوسلامتی کے پیغام کے ساتھ امن دینے کا التزام کرتا ہو۔

باب ماجاء ان الاسلام بدأغريباً وسيعودغريباً

(اسلام نامانوس شروع مواتھااور عنقریب وہ دوبارہ نامانوس بن کرلوٹے گا)

"عن عبدالله بن مسعودقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان الاسلام بَدَأً غريبًا وسيعود كما بَدَأَ فطوبي للغُرباءِ ". (حسن صحيح غريب)

بے شک اسلام نامانوس ظاہر ہواہے اور عنقریب دوبارہ ایسائی ہوجائے گاجیسا کہ پہلے ظاہر ہوا تھا۔ پس ابدی عزت ہے نامانوس (اجنبی ہوجانے) والوں کے لئے۔

تشری : قسولید: "بَدَهٔ" بیلفظ اگرمهموز اللام موجیسا که امام نووی نے تصری کی ہے تو بمعنی ابتداء کرنے اور شروع مونے کے ہے اور اگر بَدَ الف کے ساتھ لینی ناقص سے موتو پھر ظہور کے معنی میں ہے بَسدَا بسدو بُسدُو اَ بمعنی ظہور کے آتا ہے مطلب کے لحاظ سے دونوں میں کوئی فرق نہیں تا ہم اصل روایت ہمزہ کے ساتھ ہے۔

قوله "غریباً" غرابت سے ہا جنبیت وندرت کو کہتے ہیں چونکہ نادراشیاء سے تعجب ہوتا ہے اس لئے تعجب کو بھی غرابت کہتے ہیں ،غریب پردیسی کو کہتے ہیں کیونکہ وہ دیارغیراور پردیس میں نامانوس ہوتا ہے اس کا پوچھنے والانہیں ہوتا یا پھرایک دوآ دی ہوتے ہیں۔

قوله: "فيطُوبي" بروزن فعلى طيب سے مؤنث كاصيغه استقضيل ہے بمعنی خوش خبرى كے يا بمعنی خيرو بھلائى كے۔ جنت اورا يك جنتى درخت وغيره كے اقوال بھى ہيں۔

قول ہ: 'لِلغوب اء''غریب کی جمع ہم ادمسلمان ہیں۔خصوصاً وہ لوگ جوامت کے نساد کے وقت جب لوگ سنتوں اور دین کے باقی احکام کونظر انداز کر دیں گے، بیان احکام پڑمل کریں گے اور لوگوں کوسنت کے مطابق زندگی گذارنے کی تلقین کریں گے۔

اس حدیث شریف میں اسلام کی ابتدائی اورآخری حالت کی تشبید ایک اجنبی مسافر کے ساتھ دی گئی ہے جو کسی شہریابتی میں وارد ہوتا ہے اورکوئی اس کا پُرسان حال نہیں ہوتا ہے وہ اپنے آپ کولوگوں پر پیش کرتا ہے اپنا تعارف کروا تا ہے مگروہ لوگ اس کومہمان بنانے کے لئے تیار نہیں ہوتے ہیں وہ سمپری کے عالم میں مارامارا پھرے۔ کہیں مجدمیں پنچتا ہے یالوگوں کے کسی اور مجمع میں جا گھستا ہے بہت سارے لوگ اس سے بیخے کی

کوشش کرتے ہیں کوئی سنگدل گالیاں بھی دیتا ہے ، کوئی بے وقوف دھے بھی دیتا ہے اور بچے بھی بھی اس کے پیچھے لگا دیئے جاتے ہیں مگران لوگوں میں ایک خداترس الیا بھی ہوتا ہے جواس پردلی غریب کوجگہ دیتا ہے اور کھانا کھلاتا ہے۔

فیک ای طرح حال اسلام کا تھا ابتدائی دوریس۔ ادراسلام سے دابستہ لوگوں کا جومعاشرہ بیل نہ مرف تنہا کردیے مے سے بلکدان پرزین تک کرنے کی ساری چالیں چلی گئیں ، بعینہ یہی صورت حال اسلام کے آخری دوریس بن جائے گی کہ دین دالوں کوکش دنیداری کی وجہ سے معاشر سے بیس الگ تحلک کردیا جائے گا، اس طرح ان کے لئے معاشرہ بیس کوئی جگہ ، کوئی وقار ، کوئی رشتہ ، کوئی منصب وغیرہ نہیں ہوگا بس وہ اس دنیا میں ایسے ہوں کے جیسے وہ یہاں دالوں کے ابنائے جنس دنوع سے نہیں ہیں یقیناً یہ بہت تکلیف بلکہ نا قابل برداشت صورت حال ہوگی لیکن ہمت دالوں کے لئے آنحضور صلی اللہ علیہ وسلم نے عظیم خوش خبری دی ہرداشت صورت حال ہوگی لیکن ہمت دالوں کے لئے آنحضور صلی اللہ علیہ وسلم نے عظیم خوش خبری دی ہرداشت صورت حال ہوگی لیکن ہمت دالوں کے لئے آنحضور صلی اللہ علیہ وسلم نے عظیم خوش خبری دی ہرداشت صورت حال ہوگی لیکن ہمت دالوں کے لئے آنحضور صلی اللہ علیہ وسلم کے تا میں دی وہ اس کے لئے مرمدی عزت ہوگی۔

صديث آخر: "ان الدين لَيَارِز الى الحجاز كماتارِزالحيّة الى جُحرهاوَلَيعقِلَنَّ الدين في المحمود الله عن المعمود الأروِيَّة من رأس الجبل ان الدين بداغريباً ويرجع غريباً فطوبى للغرباء الذين يصلحون ماافسدالناس من بعدى من سنتى". (حسن)

بے شک دین حجازی طرف سمٹ آئے گا جیسا کہ سانپ اپنے بل بیں شکوجا تاہے،اور بلاشبہہ دین حجاز میں پناہ نے گاجنگلی بکری کی طرح جو پہاڑکی چوٹی پر پناہ لیتی ہے، بے شک دین نامانوس شروع ہوا تھا الخ۔ قول۔ «لَیَا اُدز" کبسرالرا مِسکڑ جانے کو کہتے ہیں تاہم ما رزیناہ گاہ کو بھی کہتے ہیں البذایا رزیمعنی پناہ

لينے کے بھی میچ ہے۔

قولد: "لَيَعقِلَنَّ" پناه لينے كمعنى ميں بے كيكن مراداكى پناه ہے جہال تك رسائى ناممكن موجائے كيونكه عقل بمعنى روكنے اورا متناع كے بھى ہے۔

قولسه: "مَعقِل" مصدريسى ياظرف مكان كاصيغه ب-قوله: "الأروِيّة" بضم الهمزة وتشديدالياء جنگل بكرى كوكت بين -

مطلب یہ ہے کہ خطرات اور فسادامت کے زمانہ میں اسلام حجاز کوجائے پناہ بنائے گااور ہاتی دنیاسے

سٹ کراس طرح واپس آ جائے گا کہ اس کا وہاں نام ونشان بھی باقی نہیں رہے گا۔ جیسے سانپ اپنے بل میں اور جنگی بکری پہاڑی چوٹی پرجانے کے بعد قابل دیداور قابل تناول وصول نہیں رہتی اور جہاں سے ہوکریہ دونوں واپس آتے ہیں تو وہاں ان کےنشانات بھی یا نامشکل ہوتا ہے۔

اس حدیث میں غرباءان لوگوں کو کہاہے جوان سنتوں کی بحالی میں مصروف عمل ہوں مے جن کولوگوں نے مسخ کردیا ہوگا، چونکہ عوام کوسنت کے مقابلہ میں بدعت عمل میں بہت زیادہ لطف محسوس ہوتا ہے۔ دوسری طرف علاء کی معاشرے پر گردنت کمزور ہوتی جارہی ہے اس لئے جیسا کہ مشاہدہ ہے عام علاء اور خصوصاً علاء سوء عوام ومعاشرے کے مزاج پر چلیں گے ،ایسے میں جوعلاء سنتوں کے احیاء کی کوشش کریں گے ظاہر ہے کہ ان کواچھی نظر سے نہیں و یکھا جائے گاوہ لامحاشرہ میں الگ تھلگ ہوجا نمیں گے، اس حدیث کوابن العربی میں عارضة الاحوذی میں بھی حسن کہا ہے۔

باب ماجاء في علامة المنافق

(منافق کی نشانیوں کابیان)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : اية المنافق ثلاث اذا حَدَّثَ كَذَبَ واذاوَعَدَا حَلَفَ واذاأُنتُمِنَ خان" (حسن غريب)

منافق کی تین نشانیاں ہیں:جب بات کرے توجھوٹ بولے اور جب وعدہ کرے تو خلاف ورزی کرے اور جب اسے امانت سونی جائے تو خیانت کرے۔

صديث آخر: "اربع من كُنّ فيه كان منافقاً وان كانت فيه خصلة منهن كانت فيه خصلة منهن كانت فيه خصلة من النفاق حتى يَدَعَهَا، اذا حَدَّث كذب واذا وَعَدَا خَلَفَ واذا خاصم فجر واذا عاهد غَدَرً ". (حسن صحيح)

یہ چار با تیں جس میں ہوں گی: وہ منافق ہوگا وگر کسی میں ان میں سے ایک بات (عادت) ہوگی تواس میں نفاق کی ایک عادت ہوگی تا آئکہ وہ اسے چھوڑ دے: (۱) جب بات کرے تو جھوٹ ہو لے (۲) اور جب وعدہ کرے تو خلاف ورزی کرے (۳) اور جب کسی سے لڑائی کرے توبے ہودہ گوئی کرے (۳) اور جب عہد و پیمان کرے تو عہد شکنی کرے۔ تشریخ: پینلی مدیث شی ادات کاعدد حصر کے لئے نہیں ہے اہذا بیدا دکال وارد نہیں ہوتا چاہے کہ کہا کے حدیث میں اور کھی مورد کے الے نہیں ہے اہدا کہ کہا ہوتا ہا ہوتا ہوتا ہوتا ہے کہ کہا ہے کہ کہا ہے کہ کہا ہے کہ کہا ہوتا ہوتا رہتا تھا۔
کا اضافہ کیا گیا ہوجیا کہ علم نبوی میں مسلسل اضافہ ہوتا رہتا تھا۔

اس مدیث کی تشریخ اورمطلب میں شارجین کافی پریشان نظرا تے ہیں کیونکہ بظاہران خصلتوں میں تو پہت سارے مسلمان جتلاء ہیں اس طرح ان سب کومنا فتی کہنا پڑے گا بلکہ بخاری شریف کی روایت میں تو تصری ہے کہ ایسافخص خالص بعنی پکامنا فتی ہے دوسری طرف منا فتی کی اُخروی سزاتو کافر ہے بھی زیادہ بخت بیان ہوئی ہے، تو امام ترف گئے نے حسن بھری ہے کہ اس سے مرادنعاتی میں ابتا کے بحس سے تغرلا زم نہیں آتا بلکہ مرف گناہ کا ارتکاب ہوتا ہے۔ کسی نے کہا کہ ان خصلتوں کا دائی اجتماع لیعنی بطور عادت مسترہ ہونا مراد ہے وغیرہ و فیرہ لیکن اس کا سب سے بہترین مطلب ابن العربی نے عادمت الاحوذی میں بیان فر مایا ہے کہ نظات اس قول یا عمل کا نام ہے جو باطن کے خلاف ہو، پس اگر بیخالفت باطن مع الظاہر عقائد میں ہوتو یہ نفاقی تو کہ ہوا وہ خالص منا فتی ہوگا۔ اگر عمل میں ہوتو نفاقی عمل ہے۔ اس طرح وہ خض جس میں یہ چار خصائیں جمیع ہوگی ہوں وہ خالص منا فتی ہوگا۔ اگر سے نہ ہوتو دہ بھی خالف تو حید میں ہوگا۔ اگر سے نہ ہوتو دہ بھی خالف تو حید میں ہوگا۔ اگر سے نہ ہوتو دہ بھی خالف منا فتی ہوگا مرکا فرنہیں بلکہ عاصی ہوگا:

"والمختارمن ذالك ان يقول: الذى يُحَدِّثُ فيكذب ان كان فى التوحيد فهو كافروان كان فى التوحيد فهو كافروان كان فى غير ذالك فهو عاص والكل نفاق وكذالك من عاهد ف غدر ووحد فَا خلفه ان كان ذالك مع الله فهو كافر كقوله تعالى: "ومنهم من عاهدالله لئن آتانامن فضله لنصّدَقن ولنكونن من الصالحين فلما اتهم من فضله بخلوابه وتولّواوهم معرضون". (توبه: آيت تمرير: 21،20) تا بم الرجوت كى غرض مي كى بنياد پر بوتواس كا مم كررا به ـ (عارضة الاحوذى: ص: 22،20)

صديث آخر: ـ"اذاوعدالرجل وينوى أن يَفِي به فلم يَفِ فلاجناح عليه". (حديث ريب)

جب آدمی وعدہ کرے اور ارادہ بہی ہوکہ اے پوراکرے گامگروہ اسے (بیجہ عذر) پورانہ کرسکا تواس برکوئی منا نہیں ہے۔

یہ حدیث بتفری امام ترفدی ضعیف ہے تا ہم اس کا مطلب سے ہے کہ اگرایک محض وعدہ کرتا ہے اور اسے پورا بھی کرتا جا اور اسے پورا نہ کر سکے تو اس پر گناہ نہیں لینی سے وعدہ خلافی نفاق کی شاخ نہیں کیونکہ منافق تو شروع ہے اورا پی عادت کے مطابق ایفائے عہد کا پابند نہیں جبکہ مسلمان وعدہ پورا کرنے کواپئی دین واضلاتی ذمہداری بھتا ہے مگرعذر پیش آنے کی صورت میں وہ بہر حال پورا کرنے کا پابند نہیں۔

باب ماجاء سِبَابُ المسلم فسوق

(مسلمان کوگالی دینا گناه ہے)

"قتال المسلم اخاه كفروسِبَابه فسوق". (حسن صحیح)
مسلمان كاایخ (مسلمان) بهائی سے لڑنا كفر ہے اوراس كوگائى دینا گناہ ہے۔
اس حدیث پر بحث اورتشریح "باب ماجاء فی اشم" میں گزری ہے۔ (دیکھتے تشریحات ترفدی:
ص:۲۵۳ ج:۲)

باب ماجاء في من رَمَىٰ أخاه بكفر

(مسلمان کوکافر قراردینے کا گناہ)

"عن ثابت بن الضحاك عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: ليس على العبد نلر فيما لايملك، وَلا عِنُ المؤمن كقاتله ، ومن قَذَفَ مؤمنا بكفر فهو كقاتله ومن قتل نفسه بشئ عَذّبه الله بماقتل نفسه يوم القيامة". (حسن صحيح)

لازمنہیں ہوتی بندے پرنذراس چیز کی جس کاوہ مالک نہیں ،اورمومن پرلعنت کرنے والا (محناہ میں) اس کے قاتل کی طرح ہے اور جس نے کسی مومن پر کفر کا الزام لگایا تووہ (بھی محناہ میں) اس کے قاتل کی مانند ہادرجس نے خودکوکس چیز سے مار ڈالاتو قیامت کے دن اللہ اس کواس چیز سے سزادیں مے جس سے اس نے خودکشی کی ہوگی۔

تشریخ: اس صدیت میں چار باتوں کاذکرہے: (۱) نذر (۲) لعنت کرنا (۳) تکفیر (۳) اورخودشی۔
یہاں امام ترفدیؒ نے صرف تکفیر لیعنی تیسرے مسئلہ کے لئے باب قائم کیا ہے باتی تینوں مسائل اپنے اپنے متعلقہ
ایواب میں گزرے ہیں، نذر کے لئے (تشریحات ترفدی: ۲۰۰۳ج: ۵٬۲۰۰ ج:۵٬۲۰۰ باب لانلو فی مالایملک ابن
ادم "اول ابواب النذ وروالایمان) لعنت کے لئے (دیکھتے: ص: ۲۳۲: ج:۲٬۲۰ باب مساجاء فی اللعنة من
ابواب البروالصلة) اورخودش کے لئے (ملاحظ ہون ص: ۳۳۳ ج:۲٬۲۰ باب ماجاء من تل نفسہ سم اوغیرہ)

تاہم لعن کے حوالہ سے یہاں مزید شاعت کاذکر فرمایا ہے کہ لعنت کرتا کویا تل کرنے کے مترادف ہے کونکہ لغت میں ملعون کواللہ کی رحمتِ افروک سے محروم کرتا مقصود ہوتا ہے اور تل کرنے سے دنیوی نعمتِ حیات سے انقطاع مطلوب ہوتا ہے البتہ اگر قاتل سے مراد قال کرنے والا لینی لڑنے والا لیاجائے تو پھر تھم ہیں نہتا تخفیف آجائے گی کیونکہ قال سے قل کرتالا زم نہیں آتا تاہم قال کرنے میں مراتب ہیں بعض قال کفرہے، بعض قریب الی الکفر اور بعض مباح بلکہ باعث اجرو او اب ہوتا ہے جیسا کہ اپنی جگہ بیان ہوا ہے، حاشیہ میں ہے کہ لاعن کوقاتل کہنا الی قرالات قلی باکائل کے قبیل میں سے ہے تغلیظا وتشد بدا جبکہ قذف کی تشبیہ قل کے ساتھ ذیادہ فلا ہرہے کیونکہ کفر (ارتدادو غیرہ) قتل وقال کے اسباب میں سے ہے، پس کی کوکافر کہنا کو یا استحقاق قبل کا فتو کی ہے ہمکن ہے کہ کوئی اس فتوی کی وجہ سے مقد ون کوئل کے اسباب میں سے ہے، پس کی کوکافر کہنا کو یا استحقاق قبل کا فتو کی ہے ہمکن ہے کہ کوئی اس فتوی کی وجہ سے مقد ون کوئل کرے اس طرح قاذ ف بھی شریک قبل شار ہوگا۔

حدیث آخر: "ایمار جل قال لاخیه "کافر" فقد باء بها احدهٔ هما" (حدیث صحیح)
جرفخص نے اپنے (مسلمان) بھائی کوکافر کہا تو یقینا ان دونوں میں سے کوئی ایک اس کلم کاستحق ہوا۔
قوله: "کافر" مرفوع ہے بنا برخبریت یعنی انت کافریا ہوکافریا پھر حرف ندا و محذوف کا منادی ہے۔
قوله: "باء" باء بالشی کے معنی لوٹے کے آتے ہیں پینی ان میں سے ایک اس لفظ کفر کے ساتھ لوٹے گا
کیونکہ اگروہ مخض جسے کافر قرار دیا جار ہاہے واقعتا کفر کا مرتکب ہوتو پھریہ بات اس پرفٹ ومنطبق ہوجائے گی
لین اگروہ کفرسے بری ہوگاتو پھر جس نے کافر کہا ہوگاوہ اس کلم کاستحق ہوگا کیونکہ اس نے مسلمان کے اسلام کو
کفر کہا اور یہ بات بقینی ہے کہ دین تن کو باطل قرار دینا کفر ہے۔

یہاں تک تو حدیث کا مطلب آسان ہے کین اگر الزام لگانے والے کا عقیدہ یہیں ہے کہ وہ اسلام کو باطل کہتو پھر حدیث مشکلات میں سے ہم اشیہ پراس کی پانچ توجیہات کی گئی ہیں جن کا خلاصہ بیہ ہم الیا کہنے والا کا فرتو نہیں ہوگا البت ہخت گنجگار ہوگا کہ اس نے انتہائی خطرناک بات کی ہے ، کی ہذا اس صورت میں کفر کا استحقاق تغلیظاً وتشد بدا ہوگا۔

تکفیرکااصول"باب مساجداء فی ابسطنال السمیسراث بین السمسیلم والکافومن ابواب الفوائض "میں بیان کیاجاچکا ہے۔ (دیکھئے تشریحات تریزی: ۲۵،۳۲۵ج: ۲)

باب ماجاء من يموت وهويشهد ان لاإله الا الله

(ایمان کی حالت میں موت آنے کا بیان)

"عن الصنابحى عن عُبادة بن الصامت انه قال : دخلتُ عليه وهو فى الموت فبكيت فقال: مَهلاً لِمَ تبكى ؟ فوالله كِن أُستُشهِدتُ لَاشهَدَنّ لكَ اوَكِن شُقِعَتُ لَاشهَعَنّ لَكَ وَكِن استطعتُ لَان فَقِعَتُ لَاشهَعَنّ لَكَ وَكِن استطعتُ لَان فَعَنّكَ ثم قال: والله مامن حديث سمعته من رسول الله صلى الله عليه وسلم لحُم فيه خير إلا حَدَّث تكموه إلا حديثاً واحداً وسَاحَدٍ تكموه اليوم وقداً حيط بنفسى سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: من شهِد ان لااله الاالله وان محمداً رسول الله حَرَّم الله عليه النار". (حسن صحيح غريب)

حفرت عبدالرحل بن عُسیلہ فرماتے ہیں کہ میں عبادہ بن صامت کے پاس آیا جبکہ وہ حالت نزع میں معنے تو میں رونے لگا، حفرت عبادہ نے فرمایا تھہ جاؤ ۔۔۔۔۔تم کیوں روتے ہو؟ ۔۔۔۔فداکی تم اگر جھ سے گواہی طلب کی گئی تو میں ضرور تیرے لئے گواہی دول گا اورا گرمیری سفارش قبول ہوتی ہے تو میں ضرور تیرے لئے سفارش کروں گا اورا گرمیر ابس چلے تو میں ضرور تخفی نفع پہنچاؤں گا، پھر انہوں نے فر کھیا بخدا میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ دسلم سے جو بھی ایسی حدیث میں ہے جس میں آپ لوگوں کا فائدہ ہے تو وہ حدیث میں نے آپ سے بیان کی ہے سوائے ایک حدیث کے اور وہ بھی بیان کربی دیتا ہوں کیونکہ جھے گھرا گیا ہے (بعنی موت نے) میں نے رسول اللہ کا اللہ علیہ وسلم سے بیارشا دفر ماتے ہوئے سنا ہے کہ جواس بات کی گواہی دے کہ اللہ کے سواکوئی سعبور فیس اور جھے اللہ کے رسول ہیں تو اللہ اس پر دوز خ حرام کر دیتا ہے۔

تشری : منابحی کے بارے میں امام ترفری نے کتاب کے دوسرے باب "باب ماجاء فی فضل المهور" میں تفصیل بیان کی ہے فلیرا جع چونکہ حضرت منابحی " کوایٹ استاذ حضرت عبادہ بن صاحت کے فراق کا یقین ہو گیا تھا اس لئے صدمہ فراق برداشت نہ کر سکے اور ... رو پڑے جس پر حضرت عبادہ نے ان کوسلی دی۔ موت کے وقت بھی خوف کا فلیہ ہوتا ہے اور بھی رَجَاء کا حضرت عبادہ بن صاحت پر رجاء کا فلیہ تھا جو کہ مستحن امر ہے اس لئے فرمایا کہ میں تیری ہم کمن مدد کروں گا۔

قوله: "مامن حدیث الاحداد کموه" لینی جو می مدیث اعال سے اتفاق می وہ میں نے بیان ہیں جو می مدیث اعال سے اتفاق می وہ میں نے بیان ہیں کا ہے۔ ہاں بیان کی ہے اور جس میں احکام نہ تھے اور اس کے عدم بیان میں مسلمت می تو دہ میں نے بیان نہیں کی ہے۔ ہاں آج ایک ایک مدیث بیان کرتا ہوں جو اگر چہ اعمال سے متعلق تو نہیں اور بیان کرنے میں اس پرتکیہ کر کے اعمال میں سُستی کا اندیشہ تھالیکن تم میرے خاص شاگر دہوا ور میں بھی آخری کھا ت حیات میں ہوں اس لئے بیان کرتا ہوں تاکہ کمتمان علم لازم نہ آئے اور تم غلط نبی میں جس میں ہوگے کیونکہ ایسی فضیلت والی احادیث سے عوام ست ہوجاتے ہیں خواص نہیں۔

قوله: "حَرَّم الله عليه النار" بظاہراس جملے سے اعمال کی اہمیت کم ہوجاتی ہے اس لئے علماء نے اس میں تا ویل کو ضروری سمجھا ہے۔

امام ترندی نے امام زہری کا قول نقل کیا ہے کہ یہ اس دفت کا فرمان ہے جب صرف تو حید کا تھم تھا باتی احکام دفرائفن وغیر ہا ابھی نازل نہیں ہوئے تھے لیکن بیقول بلادلیل ہے۔

دومراتول جس کی طرف ام ترزی اشاره کرنا چاہتے ہیں بیہ کہ حرم الله علیه الناوکا مطلب بیہیں کہ عاصی جہنم میں نہیں جائے گا بلکہ مطلب بیہ کہ کہ اگروہ دوزخ میں جائے بھی تب بھی اس میں ہمیش نہیں دہ کا بلکہ اسے بالآخرد ہاں سے نکال لیاجائے گا علی ہزا ترمت سے مراد ضلود کی نفی ہے، اور بیضمون کی صحابہ کرام سے نقل کیا ہے: ''قال سین حرج قوم من الناد من اہل التو حیدوید خلون المجنة ''چنا نچہ جب الل التوحید کوجنم سے نکال کرجنت میں داخل کیا جائے گا تواس وقت کا فرارز وکریں کے کہ کاش اور بھی مسلمان ہوتے۔

پھرآ کے امام ترفدی نے پر چی والی حدیث نقل کر کے اہل النع والجماعة کے فد مب کا دوسرا پہلو مرال ہو اللہ و مرا ہہلو مرا ہم اللہ اللہ کی میں جانا ثابت ہے جبکہ بعض روایات سے عنوومغفرت بھی ثابت ہے اس اللہ کا اللہ واللہ اللہ کی مشیت پرموقوف ہے اگروہ چاہے ثابت ہے اس کے اہل النع والجماعت کہتے ہیں کہ عاصی کا معاملہ اللہ کی مشیت پرموقوف ہے اگروہ چاہے

توبقدر گناہ سزادے کر جنت میں واخل فرمادیں اور چاہے تو بغیرعذاب وعقاب کے شروع بی سے جنت میں داخل فرمادیں۔وماذالک علی اللہ بعزیز

باب کی حدیث کے مطلب میں اور بھی بہت سے اقوال ہیں مثلاً بیخاصیۃ المفرد ہے جس کی وضاحت

پہلے گزری ہے ، یا بیاس فخص کے لئے ہے جس نے کوئی گناہ نہ کیا ہو یا گناہ سے کچی تو بہ کرلی ہو، جبکہ حضرت
وہب بن مُنتہ فرماتے ہیں کہ 'لا الہ الا اللہ' مقاح الجنہ ہے تا ہم چائی کے لئے دیدانے بھی ضروری ہیں لہذا کلمہ
تو حید کے ساتھ اعمال بھی بہت اہم ہیں کیونکہ جس چائی میں دیدانے نہیں ہوں گے تو اس سے تا لے کا جلدی
کھلنا ضروری نہیں بھی جلدی کھل جاتا ہے اور بھی پریشانی ہوتی ہے ہی جس قدر چائی دیدانوں سے خالی ہوگی ای
مقدار میں یریشانی ہوسکتی ہے آگر چے بھی بھی لگاتے ہی تالہ کھل جاتا ہے، ابن الحراثی نے اس کو پند کیا ہے۔

حديث تخر: حضرت عبدالله بن عمرو بن العاص رضى الله عنهما فرماتے ہیں کہ میں نے رسول الله صلى الله عليه وسلم سے ارشاد فرماتے ہوئے ساہے کہ اللہ تعالی قیامت کے دن میری امت سے ایک آدمی کوسب لوگوں ہے الگ کردیں مے (یعنی سب خلائق کے سامنے اس سے روبر دبات کریں مے) پھراس کے سامنے ننا نوے رجشر کھول دیتے جا ئیں گے، ہررجشر تاحد نگاہ پھیلا ہوا ہوگا، پھراللہ فرمائیں گے: کیا توان میں ہے کسی گناہ کا ا نکار کرتا ہے؟ کیا تھے پرمیرے (متعین کردہ) نگران فرشتوں نے کوئی ظلم کیا ہے؟ (کہ تجھ پرنا کردہ گناہ کاالزام لگایا ہو؟) وہ کیے گانہیں اے میرے رب! الله فرمائیں کے تو کیا تیرے یاس کوئی عذرہے؟ وہ کیے گانہیں اے میرے رب! (یعنی خلاصی کا کوئی راستہ نہیں ہے) پس اللہ فرمائیں مےکیون نہیں بے شک ہارے یاس تیری ایک نیکی ہے اور یہ کہ آج تھے پر پچھ الم بیس ہوگا ، چنا نچہ ایک پر چی نکالی جائے گی جس پر کھا ہوگا ''اشھدان لاالمه الا الله واشهدان محمداً عبده ورسوله ''پسالتُدفر ماکيس کے حاضر ہوجا واسيخ وزن اعمال کے یاس (با کتهبیں انصاف کا قریب سے مشاہرہ ہو) وہ کم گااے میرے رب!اس پر جی کاان رجٹروں سے كياموازنه بوگا؟؟؟ پس الله فرمائيس محليكن تخمه برظلم نبيس بوگا (لبذاوزن ضروري ب تاكه موازنه كياجائ) نبی صلی الله علیه وسلم نے فرمایا چنانچہ وہ سارے رجشر تراز و کے ایک پلڑے میں رکھ دیتے جائیں مے اوروہ یر چی دوسرے پلڑے میں،اس طرح سارے رجٹر ملکے ثابت ہوں مے اوروہ پر چی بھاری ثابت ہوگی اوراللہ کے نام کے مقالبے میں کوئی چیز بھاری نہیں ہو مکتی۔ (حسن غریب)

قىولىد: "سِيجِلاً" كبسرۇسىن دجىم وتشدىداللام، دفترىينى حساب وكتاب كى بۇي كتاب كوكىتى بى

یهاں مرادوہ کتاب ہے جس میں اعمال درج کئے جاتے ہیں۔ قبولید: "بِطاقة "بیسرالباء چھوٹی پر چی چونکہ عموماً اس کو کپڑے اور جا در کے پکومیں لپیٹ کرد کھاجا تاہے اس لئے اسے بطاقہ کہتے ہیں گویا پہلفظ طاق سے ہے اور باءذا کد ہے۔قولہ: "فطاشت"ای خَفَّت۔

اس مدیث سے وزن اعمال کی کیفیت کی ایک صورت یہاں سے معلوم ہوئی جبکہ بعض روایات سے اس بند ہے کا تولنا بھی معلوم ہوتا ہے اور یہ بھی ممکن ہے کہ عین اعمال کوجسم بنا کروزن کیا جائے۔ شرح عقا کدیں ہے: ''والمسیزان عبارة عمسا یکعرف به مقادیر الاعمال والعقل قاصر عن ادر اک کیفیته ''۔ (شرح عقا کدیم)

بہرحال وزن حق ہے اگر چہ اس کی کیفیت مدرک بالعقل نہیں ہے۔ پھر بظاہر بیخض کلمہ شہادت کے علاوہ دیگر نیکیوں سے کمل عاری وخالی معلوم ہوتا ہے اس کے پاس سوائے اس کلمہ کے وکی عمل نہیں ہوگا تا ہم اس کلمہ کے وکی عمل نہیں ہوگا تا ہم اس کلمہ کے پڑھے میں یہ بھی احتال ہے کہ زندگی میں بہلی بار پڑھا جانے والا ہوا وریہ بھی ممکن ہے کہ مسلمان ہونے یا بالغ ہونے کے بعد کسی دوسرے موقع پراس نے پڑھا ہو جوعنداللہ شرف قبولیت حاصل کرچکا نیز اس شخص نے بالغ ہونے کے بعد کسی دوسرے موقع پراس نے پڑھا ہوجوعنداللہ شرف قبولیت حاصل کرچکا نیز اس شخص نے قب ہوئی نہیں کی ہگریہ بھی ہوسکتا ہے کہ اس کی دوسری نیکیاں بھی ہول کیکن نسبت اس پر چی کی طرف کی گئی کے وک باقی نیک اعمال میں قبل اللہ کے نام کی برکت سے آیا۔

باب إفتراق هذه الامة

(اس امت میں فرقہ بندیوں کابیان)

"عن ابى هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: تَفَرَّ قت اليهو دعلى إحلاى وسبعين فرقة او النتين وسبعين فرقة والنصارى مثل ذالك وتفترق امتى على ثلاث وسبعين فرقة". (حسن صحيح)

حضرت ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا یہود اِ کھتر فرقوں میں بث مجمع یا فرمایا کہ پہٹر فرقوں میں اور نصاری بھی ای طرح (متفرق) ہو گئے اور میری امت جہتر فرقوں میں بث جائے گی۔

صديث آخر: "ليأتِيّن على امتى مااتئ على بني اسرائيل حدوالنعل بالنعل حتى ان

كان منهم من أتى أمَّه علانية لكان في امتى من يصنع ذالك وان بنى اسرائيل تفرَّقت على ثنتين وسبعين ملة واحدة قالوا من هي يارسول الله؟ قال:مااناعليه واصحابي". (حسن غريب)

میری امت پرضروروہ وقت آئے گاجو بنی اسرائیل پرآیا تھاجیے ایک نعل دوسری نعل کے برابرہوتی ہے، یہاں تک کداگراُن میں کوئی ایسا شخص ہوجو کھلم کھلا زنا کرے اپنی ماں سے قومیری امت میں مجی ایسا آدی ہوگاجو ویسائی کرے گا اور بے شک بنی اسرائیل بیتر ملتوں میں بٹ کئے تھے اور میری امت تیتر ملتوں میں بٹ جائے گی، یہسب کے سب دوز خ میں جائیں میسوائے ایک ملت کے صحاب نے عرض کیاا سے اللہ کے رسول! وہ ملت کون کی ہے؟ آپ نے فرمایا: جومیر سے اور میر سے صحاب کے طریقہ برہوگی۔

تشری : پہلی حدیث میں راوی کوشک ہے کہ آیا آپ نے اکھتر فرمایا پہتر؟ مگردوسری روایت میں پہتر ہی کاعدد بغیر شک راوی کے مروی ہے۔قولہ: "من اتی امد علانیة"اس کا بے غبار مطلب زنا ہے۔

صدیث کا مطلب یہ ہے کہ یہودونصاری باہمی اختلافات کی وجہ سے اپنے اپنے نداہب پرقائم ندرہ سے بلکہ دونوں امتیں آپس میں بہتر ، بہتر فرقوں میں بٹ کئیں میری امت بھی ان کے نتش قدم پر چلے گی اور ان کی بیروی ومتابعت میں ان کے قدم سے قدم ملاکر چلے گی حتی کہ اگران میں کوئی اپنی ماں سے علانے زنا کرتا ہوتو اس اس امت میں بھی ایسافخض ہوگا جواس میں بھی ان کی بیروی کرےگا۔

چنانچہ آج کل اس کا صاف مشاہدہ کیا جاسکتا ہے کہ ساری اسلامی دنیا کے مسلمان مغرب کی مشابہت اختیار کرتے ہیں زندگی افتیار کرنے میں بہت زیادہ دلچہی لینے ہیں عورتوں کی اور سردمردوں کی مشابہت اختیار کرتے ہیں زندگی کا کوئی شعبہ خواہ وہ سیاست کا ہویا صحافت کا بتجارت کا ہویا منا کحت کا ،اخلاق ولباس اور زندگی کی بود وہاش کے تمام اطوار میں مغرب بینی بہود ونصاری کا اتباع ضروری تصور کیا جاتا ہے ،صرف اتنی می بات ہے کہ بہودا پنا انہاء کو بھی تل کرتے ہے کہ بہودا ہیں اس لئے اس امت کے لوگ انہیا علیم السلام کے وارثوں علیاء وسلماء کوئل کرتے ہیں۔

ابن تیمید نے اس موضوع پرایک مستقل کتاب ''اقتضاء الصراط استیقیم مخالفۃ اصحاب المحیم ''لکھی ہے جوانتہائی اہم ہے۔ اس میں ایک اشکال کا جواب دیا ہے کہ جب اہل کتاب کی متابعت ناگزیر ہے جبیبا کہ ''فقت سعن'' کے صیغہ تاکید ہے معلوم ہوتا ہے تو پھراہل کتاب کی مشابہت سے ممانعت کیوں فرمادی ؟ جواب میہ ہے کہ اگر چہ

ال امت کی غالب اکثریت الل کتاب کی پیروی کرے گی بمقندائے حدیث بابلین پھر بھی آپ بیچاہ رہے افتح کہ بیری فالب اکثریت اللہ کتاب کی پیروی کرے گی بمقندائی کی مشابہت سے دورر ہاور دورر ہے گئی چنانچہ جب محابہ کرام نے اس طاکفہ تاجیہ کے بارے میں آپ سے پوچھا تو آپ نے جوابا فرمایا جومیر سے اور میں ایک چنانچہ جب محابہ کرام کے طریقہ یر ہوگاوہ طاکفہ مصورہ ونا جیہ ہوگا۔

بعض حضرات نے ان فرقوں کی تقسیم ونشائدی میں تکلف کیا ہے کسی نے کہا کہ ہیں روافض کے ہیں ، ہیں خوارج کے ، قدریہ معتزلہ کے بھی ہیں اور ہاتی چھوٹے چھوٹے فرقے ہیں جوکل ملا کر بہتر بنتے ہیں جبکہ ایک جماعت الل النة والجماعة کی ہے ، کسی نے دوسرے طریقے سے عدد کو پورا کیا ہے لیک صحیح بات یہ ہے کہ قیامت تک آنے والے تمام فرقے مراد ہیں لہذا جوگزرے ہیں وہ بھی اس عدد میں شامل ہیں اور جوا بھی ہاتی ہیں وہ بھی مراد ہیں ، مرف اتی بات یعنی ہے کہ الل النة والجماعة نا جی ہیں باتی ناری ہیں۔

تاہم بیانتراق اصول وعقائد میں مرادہ فرعیات واعمال کا اختلاف مراذبیس لہذا فقہاء میں جو اختلاف ہے۔ اختلاف ہے انتراق اصول وعقائد میں مرادہ فرعیات واعمال کا اختلاف ہے وہ ہر گزنجات کے منافی نہیں ہے کیونکہ ان میں سے کوئی ہی دوسرے کی تصلیل نہیں کرتا نیز 'مسا السا علیہ واصحابی ''میں بھی اس کی طرف اشارہ ہے کیونکہ صحابہ کرام میں جو چیز مشتر کتھی وہ عقائد کی رشی تھی۔ فروی مسائل میں صحابہ کرام کے درمیان بھی اختلاف تھا۔

حضرت مولا نامحرادریس صاحب کا ندهلی گند "عقا ندالاسلام" بیس امام ربانی مجددالف ای کا قول نقل کیا ہے کہ جن بہتر فرقوں کے بارے بیس "کے کہ ہے میں الناد "آیا ہے اس سے دوزخ کا دائی عذاب مراد نہیں اس لئے دوزخ کا دائی عذاب ایمان کے منافی ہے دائی عذاب کفار کے ساتھ مخصوص ہے اور چونکہ یہ بدعتی فرقے سب اہل قبلہ ہیں اس لئے ان کی تکفیر ہیں جرات نہ کرنی چاہئے جب تک کدد پی ضروریات کا انکار اور احکام شرعیہ کوردنہ کریں ۔اوران احکام کے جودین سے ضروری اور بدیمی طور پر ابابت ہوں محکر نہ ہوں۔ (انتی ملخما کتوب: نبر ۱۳۵۸ دفتر سوم، مقائد الاسلام: من ۲۳۳، ادارہ اسلامیات، الاہور)

یعی جب تک کوئی فرقہ ضروریات دین کاصری محکریا مؤقِ ل ندین اس وقت تک ان کی تکفیر نہیں کرنی چاہئے مگر جوفرقہ کفر کامر تکب ہوجاتا ہے تو ان کا جنت میں جانا ممنوع ہوجاتا ہے علی ہزاالل قبلہ میں ہے جولوگ کفرے کم رابی کے مرتکب ہوں کے تو وہ گنہ گاروں کی طرح دوزخ کے مستحق ہوں کے وہ اپنی سزا کم محکمتے کے بعد جنت میں وافل ہوں کے اور یہی وہ اہم نکتہ ہے جس کی رُوسے اسلاف نے فرزی مبتدھ ک

تکفیرے اجتناب کیاہے۔

یہاں پریہ بات بھی قابل ذکرہے کہ ابن العربی ماکلی نے عارضة الاحوذی کے اس باب میں اہل الظاہر پر سخت ناراضکی وبر میں کا ظہار کیا ہے کہ یہاوگ قیاس کے مکر ہیں حالانکہ قیاس پر تو معرفت وباری تعالی مبن ہے۔

المستر شدعرض كرتاب كه بيه بات بالكل بجاب كه تياس معرف به بارى تعالى كاابم ذريعه بلك بني عليه به جناني عقائد في عبارت "حقائق الاشياء ثابتة "سى بى شروع بوجاتى بي كونكه جب محسوسات كاعلم مكن بوسك كاتفعيل شرح عقائد بين ديمهى جاسكتى ب-

ابن العربی "نے اس بارے میں بہت سے اشعار بھی لکھے ہیں جو جاہے وہ عارضہ کے اس باب میں ملاحظہ کریں۔

اس حدیث سے ملتا جلتامضمون''با ب فی لزوم الجماعة''من ابواب الفتن میں گزراہے۔(دیکھئے تشریحات تر زری:ج:۲ص:۵۱۵تاص:۵۲۲)

بے شک اللہ تبارک وتعالی نے اپنی مخلوق کوتار کی میں پیدا کیا پھران پراپی طرف سے پچھنورڈ الاپس جس کووہ نور پہنچاس نے ہدایت پائی اور جس سے پھوک گیاوہ گمراہ ہو گیا،اس لئے میں کہتا ہوں کہ قلم سو کھ گیا ہے اللہ کے علم کے مطابق ۔

قبوله: "خلقه" مراد تقلین بینی جن وانس ہیں۔قبوله: "فی ظلمه "مرادیا تو توت بیمیہ یانفس امارہ بالسوء کی تاریکی ہے یااخلاق رذیلہ ہیں یا پھرَ جہالت مرادہے علی حذا نور سے مرادعلی التر تیب قوت ملکیہ، نورایمان،اخلاق حسنہ اورنو رمعرفت باری تعالیٰ ہے جودلائل اور بیجھنے کی صلاحیتیں ہیں۔

قوله: "من نوره" لین اپن جانب سے ان میں ہدایت پانے کے ذرائع بھی ڈالے مثلاً توت بہمیہ اورنس امارہ شہوات کی تکمیل پرآمادہ کرتے ہیں تو قوت ملکیہ اورنورایمانی اطاعت باری تعالی کی طرف راغب کرتے ہیں اس طرح اخلاق سید اور جہالت وونوں گراہی پرا کساتے ہیں جبکہ اخلاق حسنہ اور جہالت وونوں گراہی پرا کساتے ہیں جبکہ اخلاق حسنہ اور ومعرفت

ہدایت پرآ مادہ کرتے ہیں۔

قوله: "فيمن اصابه النے" لينى جس پراچھائى كا پہلوغالب آيا تووہ ہدايت پررہا جبكه بُرائى كادامن تقامنے والا يعنى جس مِس فضائل مغلوب اور رذائل غالب ميں وه گرائى پررہتا ہے۔

قوله: "ولذالك اقول جفّ القلم على علم الله" كنابيه عدم تغير ي يعنى تقدر يكمى جا چك إب اس من تبديل مكن نبيس ب _ تقدير كي تفسيل ابواب القدر من كزرى ب فليراجع

حدیث آخر: حضرت معاذبن جبل رضی الله عندفر ماتے ہیں کدرسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا
کیاتم جانتے ہوکہ الله کاحق بندوں پر کیا ہے؟ میں نے کہا: "الله ورسول اعلم "الله اوراس کارسول بہتر
جانتے ہیں۔ آپ نے فرمایا کہ اس کا ان پر بیت ہے کہ وہ اس کی عبادت کریں اوراس کے ساتھ کسی کوشریک نہ
کریں ، آپ نے فرمایا تم جانتے ہوکہ جب لوگ ایسا کریں (یعنی صرف اس کی عبادت کریں) تو ان کا الله
پرکیاحق ہے؟ (یعنی لاکن کیا ہے؟) میں نے کہا: الله ورسول خاصل مآپ نے فرمایا: وہ یہ ہان کوعذاب نہ
دے۔ (حس میرے)

قوله: "ماحقهم على الله ؟" الله تبارك وتعالى پركوئى چيز واجب تونبيس جيسا كه عقائد في اورشرح عقائد وغيره ميس ب البنة الله ؟ الله تباتول اورا عمال پرانعام مقرركيا ب اورثواب كا وعده كيا ب تو و و اتنازياده يقينى ب كهاست شارع ك كلام ميس عموماً ان الفاظ س تعيير كيا جا تا ب جو وجوب پر ولالت كرتي بيل جيئ و مسامن دابة في الارض الاعلى الله رزقها "رسورة بهود: آيت: ٢) يا جيسے باب كى صديث ميس "ماحقهم على الله" ب كيونكه جب بحى د فيوى بادشاه كى كور وكرتا ب اوراست انعام و يخ كا اعلان كرتا ب تو ندتواست مايوس كرتا ب اورنداس كي توقع س كم ديتا ب بلكه زياده بى ديتا ب توجب و نيا كي ملوك كايد حال ب توما لك يوم الدين كي شان تو بهت او في ب --

حدیث آخر: حضرت ابوذررضی الله عند سے روایت ہے کہ رسول الله علیہ وسلم نے فر مایا کہ میرے پاس جرئیل آئے اور جھے انہوں نے خوش خبری سنادی کہ جوبھی مرجائے اور وہ اللہ کے ساتھ کسی چیز کو شریک نہ کرتا ہوتو وہ جنت میں جائے گامیں نے عرض کیا ، اگر چہوہ زنا کرے اور چوری کرے؟ انہوں نے فر مایا "دران کے در صفحے)

لعنی جب آئی کی موت عقید او حید پرآئے گی تو دہ ضرور جنت میں داخل ہوگا اور شرک کے علاوہ کوئی گناہ

بھی اسے جنت سے دائماً روک جیس سے گا آ کے اللہ کی مرضی ہے کہ ابتداء ہی سے جنت میں وافل کردے بایں صورت کہ سارے گناہ معاف فرمادیں یا کچھ سرا ابقدر گناہ دے کر پھر جنت میں بھیج دیں ، مگر جنت میں ضروروافل فرمائیں کے کیونکہ اللہ فرمائے ہیں:''ان اللہ لا یعفوان یشوک به ویعفو مادون خالک لمن یشاء''۔

ان دونوں مدیثوں سے توحید کا او نچا مقام معلوم ہوتا ہے اور یکی وجہ ہے کہ اس سے سابقہ مدیث میں جوحضرت معاذ اللہ سے مردی ہے عبادت کے بعد 'ولایشسو کے وابسہ شیناً'' کی تصری ہے لینی صرف نمازودیگر عبادات ہی کافی نہیں بلکہ ساتھ ساتھ شرکیہ اعتقادات وعبادات سے بچنا بھی لازی ہے لہذا جو کفار اللہ کی عبادت بھی کرتے ہیں وہ اس خوش خبری کے ستی نہیں ہیں۔

ابوذرگی پرحدیث میمین میں بھی آئی ہے بخاری شریف کے جنائز میں ہے: ''انه من مات مِن امتی لایشسرک بالله شیئاً دخل الجنة فقلتُ النج ''۔ (بخاری:ص:۲۵ اج: ۱) جَبَر کتاب برمالخلق میں اس طرح ہے: ''من مات من امتک النج ''۔ (بخاری:ص:۲۵۷:ج: ۱، قد کی کتب خانه) یعنی حضرت جرئیال فرح ہے: ''من مات من امتک بارے میں سنادی۔



البي التعالير عن رسول الله صلى الله عليه وسلم

علم سے مرادشریعت سے آگی اورمعرفی باری تعالیٰ کے لئے معاون علوم ہیں آگر چہ علوم کی اقسام تقریباً لا تعداد ہیں محرسارے علوم آیک جیسے نہیں ہیں کوئی علم فرض ہے، کوئی نفل ،کوئی مباح ،کوئی مکروہ اورکوئی حرام یہ جدیدای طرح کی تقسیم ہے جیسے اصول فقہ میں عمل اور تھم کی کی گئی ہے۔

ابن قیم نے اس موضوع پرایک مستقل کتاب بنام دیمشتاح دارالمعادة ، الکھی ہے جس کا ظاصہ یہ ہے کہ اللہ نے حضرت آدم کو جنت سے نکال دیا مگراس کے بدلے میں جنت سے افضل دو چیزیں ان کوعطا وفر مادیں ایک علم دوسراارادہ (کسب) وہ لکھتے ہیں: ''اذاکان کل من العلم والعمل فرصاً فلا بدمنهما کالصوم والصلواۃ المنے ''لینی جس عمل کی جو حثیت ہوگی اس کے لئے حصول علم کی بھی وہی حثیت ہوگی علی افران عمل کے روزائل اخلاق کے لئے قل بہتا ہم چونکہ جرام سے بچنا ہمی فرض ہے اس لئے روزائل اخلاق کا علم بھی فرض ہے تواہ وہ میں معلوم ہوا کہ جس علم سے امر مباح کا حصول مقصود ہو چیسے عصری علوم تو وہ درجہ مباح ہیں شامل ہیں گو کہ تے نیت سے اس کا درجہ عبادت تک گئی جا تا ہے ، جبکہ وہ علوم جومعرفت باری تعالی سے دور کرتے ہوں وہ دراصل جہالت درجامہ علم ہے جیسے جا دو علم موسیقی اور غلط اراد سے حاصل کیا جانے والاعلم۔

باب اذاارادالله بعبدحيراً فَقَّهَه في الدين

(جب الله كى بعد كى بعلائى جا بتا بعق است دين كى بجه عطاكرتا ب) "عن ابن عباس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: من يو دالله به خيراً يُقَقِّهه فى الدين "(اى يجعله عالماً فى الدين) (حسن صحيح) الله جس كى خير و بهملائى چا بهتا ہے تواسے دين كى بجھ بوجھ عطاء فرما تا ہے يعنى فقيد بنا تا ہے۔

تشريح: قوله: "خير اً" اس ميں تنوين تعظيم كے لئے ہے اى خير اً عظيماً وعميماً۔
قوله: "يُه فَقِهه "فِقه لغت مِن فَهِم وبصيرت كو كمتے ہيں جبكہ اصطلاح ميں دلائل سے احكام شرعيد كه استنباط كے ملكہ كو كہاجا تا ہے پھر فَقِه كيسر القاف اس وقت كهاجا تا ہے جب آدى بات كا مطلب ومراد سمجھ جبكہ فَقه بن ما القاف اس وقت كہاجا تا ہے جب آدى بات كا مطلب ومراد سمجھ جبكہ فَقه بن ما القاف اس وقت كم جب آدى الله تعالى: "ير فع الله الله ين آمنو او الله ين أو تو االعلم حدر جات".

حدیث کا مطلب واضح ہے کہ دیں بیجھنے سے دینداری آسان ہوجاتی ہے کیونکہ جب آ دی شریعت کے اسرارورموز سے آگاہ ہوگاتوہ وہ دین وآخرت کے امور میں دلچیں لے گااور کل بھی شریعت کے مطابق کرے گا۔

نیز اسے اللہ تبارک و تعالیٰ کی خوشنو دی حاصل کرنے کا طریقہ بھی معلوم ہوگا جس سے وہ جست کے اعلی وار فع درجات حاصل کرے گا بخلاف اس شخص کے جودین کے مزاج اوراس کی افا دیت سے ناواقف ہوالیا شخص عمو آ دنیا کی وادیوں میں سرگرواں رہناہے آگروہ امور دین پڑمل کرتا بھی ہے تو پوری طرح شرح صدر کے بغیر دنیا کی وادیوں میں سرگرواں رہناہے آگروہ امور دین پڑمل کرتا بھی ہے تو پوری طرح شرح صدر کے بغیر لگار ہتا ہے۔ جس سے نہ تو عبادت کا بھر پورلطف حاصل کیا جاسکتا ہے اور نہ بی آخرت میں کوئی اعلیٰ مقام پایا جاسکتا ہے بلکہ ایساشخص عمو آعمل کے شوق میں شریعت کونقصان پہنچا تا ہے اور وہ بجمتا ہے کہ وہ نیکی کر رہا ہے۔

جاسکتا ہے بلکہ ایساشخص عمو آعمل کے شوق میں شریعت کونقصان پہنچا تا ہے اور وہ بجمتا ہے کہ وہ نیکی کر رہا ہے۔

بہرحال نقید مخص نہ صرف خود فائدہ میں رہتا ہے بلکہ دوسروں کو بھی فائدہ دیتا ہے ،صوفیہ کے نزدیک بغیر مل کے نفس علم سے کوئی محض نقیہ نہیں بن سکتا جیسا کہ حاشیہ برحسن بھری کا قول نقل کیا ہے۔

ابن العربی عارضة الاحوذی میں لکھتے ہیں:''صد قو ا'' یعنی انہوں نے سی کہاہے کیونکہ جو تحف نجات کزئیں جانتاوہ کیسے نقیہ ہوسکتا ہے؟

پھراللہ تبارک وتعالیٰ جس کوشریعت کا ماہر بنانا چاہتا ہے تواس کی عادت شریفہ ہے کہ اسے شوتی علم، ذہانت اور عالی ہمت عطاء کرتا ہے اگر چہ بطور خرق عادت رہے تھی ممکن ہے کہ سی غبی کوفقا ہت عطاء فرمائے۔

بعض لوگ اپنے بچوں میں سے ذہین کوسکول میں داخل کرتے ہیں اور اغبیا کو مدرسہ میں ، ان کو یہ بات سمجھ لینی چاہئے کہ جس شخص کو اللہ نے علم کے لئے پیدانہیں کیا ہے اسے کیونکر فقیہ بنایا جاسکتا ہے ایسے میں اہل مدارس کی بھی ذمہ داری بنتی ہے کہ وہ بچوں کے انتخاب میں اس بات کالحاظ رکھیں کہ کو ن سابچھ کم پڑھنے کی اہلیت

ر کھتا ہے کیونکہ علم ہرایک کے لئے مفیر نہیں بعض اوگ علم پڑھنے سے اپنے خراب مزاج کی وجہ سے مجر جاتے ہیں جیسے فر جیسے فرق مبتدعہ کے سارے پیشواا یسے ہی تھے۔

باب فضل طلب العلم

(علم حاصل كرنے كى فضيلت)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :من سَلَكَ طريقاً يلتمس فيه علماً سَهّلَ الله له طريقاً الى الجنة". (حسن)

جوفض کی راستہ میں چلا،جس میں وہ علم (دین) تلاش کرتا ہوتو اللہ تعالیٰ اس کے لئے جنت کاراستہ آسان کردیےگا۔

تشری : قوله: "طویقاً بمراز قصیل علم ہے خواہ اس کے لئے حسی داستہ اختیاد کر کے سفر کرے یا نہ کرے عارضۃ الاحوذی میں ہے کہ اللہ کے داستے بہت ہیں ان میں سب سے افضل طلب علم ہے پھر آ مے فوائد میں لکھتے ہیں: "لا خلاف ان طریق العلم طریق الی الجنة بل اوضح الطرق الیها "پونکہ علم حاصل کرنے سے شریعت برعمل کرنا آسان ہوجا تا ہے، علم کا کے لئے اسے مازگار ماحول مل جاتا ہے، عالم کا کلیہ ولباس بھی گناہ کرنے میں ایک رکاوٹ ہے اس لئے یہ بھی ایک طرح کی آسانی ہے کیونکہ شریعت بعینہ جنت کا راستہ ہے۔

اور بیمطلب بھی ہوسکتا ہے کہ میدان محشر میں اور بل صراط پرعلاء کے ساتھ خصوصی رعایت برتی جائے جس کی بناء بروہ مشکلات و بریشانیوں سے بجیس اور باسانی جنت میں داخل ہوں۔

چنانچ ابن قیم مفتاح دارالسعادة میں لکھتے ہیں کرعلاء کامقام ددرجد انبیاء علیم السلام کے بعدیعن مدرجة مدرجة مسلب العلم لیسحین به الاسلام فهومن الصدیقین و درجته بعددرجة النبوة"۔ (ص:۱۲۳) داراکتب العلمية)

ابن كثير فطرانى ساحديث فقل كى ب:

"قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : يقول الله تعالى لِلعلماء يوم القيامة اذا قعد على كرسيه لِقضاء عِباده انى لم اجعل علمي وحكمتي فيكم

الاوانا اريدان اغفرلكم على ماكان منكم ولاأبالي ". (اسناده جيد)

(تغيرابن كثيراة أسورة طه: ١٣١٠ ج:٣٠ قدي كتب خاند)

تا ہم رفضیلت ان علم ء کو حاصل ہے جواحیائے دین کی غرض سے علم حاصل کرتے ہیں۔

مديث آخر: ـ "من خرج في طلب العلم فهوفي سبيل الله حتى يرجع ". (حسن

غريب)

سریب) جو خص علم (دین) کی طلب میں لکلاتو وہ (مسلسل) راہ خدامیں رہتا ہے یہاں تک کہ وہ واپس لوث کرآئے۔

قول ہے: "من حوج" لین ایخی اپنے کھر وغیرہ سے نیز کسب یعنی مطالعہ وغیرہ بھی اس تھم میں ہے کیونکہ خروج کے اصلی معنی طلب کے ہیں البذا جوش کھر بیٹھے بیٹھے مطالعہ کتب یا دوسر اعلمی مشغلہ جاری رکھے شائدوہ بھی اس اجر کا مستحق ہو۔ واللہ اعلم وعلمہ اتم

قوله: "فهو فی سبیل الله المنے" سبیل الله دراصل جهاد کے لئے بطوراس علم استعال ہوتا ہے چونکہ عالم اور شہید کا درجہ معروف و مشہور ہے۔ اس لئے جس عمل کا تواب جہاد کے برابر ہوتا ہے اس کی تشبیہ جہاد ہے دی جاتی ہے جرچونکہ یہ جس جائز ہے کہ مُشبّہ کا درجہ مشبہ بہ سے زیادہ ہوجیے" السلھ مصل علسی محمد و علی ال محمد کماصلیت علی ابر اهیم النے "لہذا اس مدیث سے بدلاز منہیں آتا کہ جہاد کا سزعلم کے سفر سے زیادہ باعث اجروثو اب ہو کیونکہ طائب علم کے لئے فرشتے اپنے پر بچھاتے ہیںابن العربی عارضة اللو ذی ہیں اس مدیث کے تت لکھتے ہیں: "و سُبُل الله کشیرة منهاو افضلها طلب العلم "سیده مزید لکھتے ہیں ..." و سُبُل الله کشیرة منهاو افضلها طلب العلم "سیده مزید لکھتے ہیں ..." و سُبُل الله کشیر قامنی البحنة بال او ضبح الطوق البحد الماری عام کے الدی البحد نے با او ضبح الطوق البحد البحد البحد البحد البحد الله البحد ا

حديث آخر: - "من طلب العلم كان كفّارة لِمَامَضَى". (ضعيف) جس في طلب كياعلم كوتوه اس كر بي الميك كنابول كا كفاره موكيا -

قوله: "كفارة لمماهضى" اكرمراد صغائر مول تو چونكه المضمون كى بهت سارى احاديث وارد بي اس لئے كہاجائے گاكد حديث باعتيار سند كے ضعيف ہے جبكم ضمون كے لحاظ سے جماعت الاحوذى بي ہے:

سولااشكال في ان الحسنات يلهبن السيئاتولا اشكال في ان طريق العلم طريق الجنة لان مِن سُبل الله الشريعة او اشرف سُبل الله".

میمی ہوسکتاہے کہ مصلی سے مرادوہ حقوق اللہ ہوں جن کا تدارک نہیں ہوسکتا ہے بلکہ ممکن ہے کہوہ حقوق العباد بھی معاف ہوتے ہوں جن کا تدارک نہیں ہوسکتا جیسے کس سے معمولی الرائی کی ہے محروہ آ دمی اب زندہ نہیں ر باد غیرہ ذالک۔

باب ماجاء في كِتمان العلم

(علم جُمهانے کابیان)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :من سُئِل عن علم عَلِمَه ثم كَتَمَه أُلجِمَ يوم القيامه بِلَجَام من نار". (حسن)

جوسوال کیاجائے ایسے علم (مسئلہ) کے بارے میں جس کووہ جانتا ہو پھروہ اسے مُعمائے (یعنی نہ بتائے) تو قیامت کے دن وہ لگام دیاجائے گا آگ کی۔

تشری : قوله: "من مسئل عن علم " یعنی جس کی سائل دستفتی کو ضرورت ہواوروہ جواب کو یکھنے کی الجیت بھی رکھتا ہو۔ قبوله: "هم کتمه "لفظائم یہاں پر برائے استبعاد ہے یعنی عالم کی شان تو اشاصی دین اور تعلیم ہے ہی جو عالم باوجو دِ تقاضا کے نیس بتا تا گویاوہ ایک تجب خیز روش اپنائے ہوئے ہے، پھر بھتان عام ہے خواہ ذبانی طور پر بتانے سے گریز کرے یا پھر کتاب کی ضرورت کی کو پیش آ جائے اور بیاسے نددے تا ہم آج کل لوگوں میں امانت داری بہت کم ہے وہ کی کی چیز لے کر پھروا پس نہیں کرتے ہیں خصوصاً کتاب کے معاملہ میں لوگ بہت لا پروائی کرتے ہیں ایسے میں کتاب ندویتا اس وعید میں نہیں آتا ہاں ذمدواروا مانت دارا وی میں تاب دوکتا اس وعید میں نہیں آتا ہاں ذمدواروا مانت دارا وی سے کتاب روکتا اس وعید میں آئے گا۔

قوله: "المجم الغ" بعین مجول یعنی جس طرح اس نے دنیا میں اپن زبان لگام کی ما نکر ہنا کر جواب دینے سے کریز کیا ای طرح اسے لگام پہنا کرخاموش کردیا جائے گا کیونکہ گناہ وسرا میں مناسبت ہوتی ہے۔
اس حدیث سے معلوم ہوا کی علم چھپانے کی اجازت نہیں ہے خصوصاً جب کوئی شخص طالب وسائل بن کرعالم کے پاس آئے تو یہذ مدداری اور بھی بوھ جاتی ہے۔

- (۱) کیونکہ جواب نددیے سے سائل جہل کے اندھرے میں رہے گا۔
 - (٢) سائل عمل ك ثواب ي محروم موكا ـ
- (٣) خاموثی یا جواب سے انکار کی صورت میں وہ عالم آپ کی وصیت جوا کلے باب میں مروی ہے یم کن نہیں کر سکے گا۔
 - (٣) اور بيك كتمان علم أيك طرح كتمان شهادت بهي ہے۔

(۵) نیزیداییا بخل ہے جس میں دونوں طرفین کونقصان ہے تاہم اگروہ سائل ایہا ہوجومسلہ کے جواب کونہ سمجھتا ہویا غیرمفیدیا فضول سوال کرتا ہویا اس جواب کے اظہار میں کوئی نقصان متوقع ہویا کسی دیگر مصلحت کے بیش نظر جواب دینا شرعاً ضروری نہ ہوتو پھروہ کتمان اس وعید میں نہیں آتا۔خاص کرعوام جب غیرمعمولی فضائل سنتے ہیں تو پھرعمل میں سست ہوجاتے ہیں۔ (تدبروتذکر)

باب ماجاء في الاستيصاء بمن يطلب العلم

(طالب کے لئے آپ کی وصیت کابیان)

"عن ابى هرون قال كُنّا ناتى اباسعيدفيقول مرحباً بوصيّة رسول الله صلى الله عليه وسلم، ان المنبى صلى الله عليه وسلم قال: ان الناس لكم تَبَعّ وان رجالا يأتونكم من اقطار الارض يتفقّهون فى الدين واذا ا تَوكُم فاستوصُو ابهم خيراً".

ابوہارون فرماتے ہیں کہ ہم (طلبہ)حضرت ابوسعید خدریؓ کے پاس آتے مقے تو وہ فرماتے مقے خوش آمد بدرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی وصیت کے مطابق بے شک نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ: لوگ تہمارے تابع ہیں اور یہ کہ تہمارے پاس کچھلوگ دنیا کے (مختلف) اطراف سے آئیں گے تاکہ وہ (تم سے) دین کی سمجھ بوجھ حاصل کریں چنانچہ جب وہ تمہارے پاس آئیں تو تم ان کے ساتھ اچھا سلوک کرنے کے لئے میری وصیت یا در کھو!

تشری :۔ امام ترندی نے اس حدیث پرضعف کا حکم نہیں لگایا ہے تا ہم اس کے ضعف کی طرف اشارہ فرمایا ہے کہ بیروایت صرف الى ہارون کی وساطت سے مروی ہے چونکہ ابوہارون ضعیف شیعہ ہے اس لئے کہاجائے گا کہ بیروایت ضعیف ہے گواس کا مضمون صحیح ہے۔

باب کی آگل صدیث میں بیاضا فدہے کہ وہ طلبہ مشرق کی جانب یعنی عراق وغیرہ سے آئیں گے چنانچہ ابو ہارون کہتے ہیں کہ ابوسعید خدر کی جب ہمیں ویکھتے تو ہمیں ترحیب وخوش آمدید کہتے اوراس کی وجہ آپ کی وصیت پر عمل قرار دیتے کیونکہ آپ نے صحابہ کرام "کو وصیت فرمائی تھی کہ جب لوگ علم حاصل کرنے کی غرض سے آپ کے پاس آئیں توان کے ساتھ اچھا برتا وکرو، وہ سلوک خواہ مالی ہویا تولی وعملی۔

ابن العربی نے عارضة الاحوذی میں لکھاہے کے حدیث میں انحید وا " سے مراقعلیم ہے لینی جب تابعین تمہارے پاس آ جا کیں تو تم چونکہ میرے صحابہ ہو، میرے مکارم اخلاق ودیگر تعلیمات سے آگاہ ہولہذا اُن کو اِن کی تعلیم دیا کرونلی بذا مجرحدیث کامضموں مجم ہوجائے گا، کیونکہ ایک اور مجم حدیث میں ہے: 'تحسم عون ویُسم منکم ویُسم میں یسمئع منکم "اس طرح" فیلید لمغ الشاهد الغائب "وغیرہ بہت ساری احادیث ہیں۔قولہ: 'تعبع " تحقین تالع کی جمع ہے جیسے خدم جمع خادم ہے۔ اس سے تابعین کی وجہ تسمیہ محمل مولی یعنی مکارم اخلاق اور شریعت کے میں ساری امت صحابہ کرام کی تالع ہے، الاول فالاول۔

قوله: "فاستوصوابهم خیراً" سین طلب کے لئے ہاورکلام میں تجرید ہے لین اسپے نفوں سے ایک فخص منزع کرکے اس سے طلبہ کے بارے میں اصیت طلب کریں یا مطلب بہ ہے کہ ان کے بارے میں میری وصیت قبول کرو!غورسے سنو!اوراس پڑمل کرو۔

باب ماجاء في ذهاب العلم

(علم أمُح حافيان)

"عن عبدالله بن عسروبن العاص قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان الله لا يقبض العلم انتزاعاً ينتزعه من الناس ولكن يقبض العلم بقبض العلماء حتى اذالم يترك عالماً إتخدالناس وءُ وساً جُهّالاً فسُئِلوا فَافَتُوابغير علم فضلُّواواضلُّوا". (حسن صحيح) عالماً التخدالناس وءُ وساً جُهّالاً فسُئِلوا فَافَتُوابغير علم فضلُّواواضلُّوا". (حسن صحيح) بِحث الله تعالى قبض بين كركمان كولوگوں سے چين لے ليكن علم كوبف كركا الله تعالى قبض الله تعالى كرنے كذريد، يهال تك كه جبنين چيور كاكس عالم كوتولوگ جا بلول كو اينام داريناليس كے چنانچ ده مردارمائل يو چه جاكيں كو ده بغير علم كوتوك ديں كے بس ده (مردار) خود

بھی مراہ ہوں گے اور دوسروں کو بھی مراہ کریں گے۔

تشری: قوله: "إنسزاعاً" يقيض كامفول مطلق بمنى قبعاً كه يا يستزعه كامفول مطلق معنى قبعاً كه به يا يستزعه كامفول مطلق مقدم ب-قسول، "دُءُ وسساً" بغنم الهزة وبعد حاواؤراً سى جمع بجبكها س كربعض طرق بس دوسرا من وسرا بمن من بمع بمطلب ومنى دونون قر أتون كا أيك به كي تكدراً س اوركي دونون مر داركوكيت بي -

حدیث کا مطلب ہیہ کے علم فتم ہوجائے گا گراس کے فتم ہونے کی صورت بینیں ہوگی کہ لوگوں کے سینوں سے پرواز کر کے چلاجائے بلکہ ایک ایک عالم کا انقال ہوتارہے گا اور پیچے خلاء پُر کرنے کے لئے کوئی نہیں سلے گا اس طرح ایک دوراییا آجائے گا کہ کوئی عالم بھی نہیں بچے گا۔ پس لوگ جابل آ دمیوں کو اپنا سردار ومفتی بنالیس سے پھروہ ان سے مسائل پوچیس سے اوروہ ان کو بغیظم کے جوابات دیں سے یعنی اپنی سجھ ورائے کے مطابق اس طرح وہ سردارخود بھی گراہ ہوں سے کہ فلط فتوی اور فلط عمل بتا کیں سے اور دوسروں کو بھی گراہ کردیں سے کہ دوسرے ان کے فلط فتو کی اینا کیں سے۔

اس مدیث سے تعلم کی ترغیب معلوم ہوئی کہ اگر تعلم کاسلسلہ خدانخواستہ منقطع ہوجائے توعلاء ختم ہوجائے توعلاء ختم ہوجائیں سے اور نتیجتا جہالت و کمراہی جنم لے گی۔

نیز جابل کورئیس بنانے اور بغیرعلم شریعت کے فتوی دینے کی ممانعت بھی معلوم ہوئی ،علاوہ ازیں ریکھی معلوم ہوا کہ اجتہا دوفتوی کی صلاحیت ختم ہوجائے گی۔

عارضة الاحوذى ميں ہے كہ پہلى امتوں ميں ايسا بوتاتھا كيم سينوں سے قائب بوجاتاتھا، اب صرف علاء كتب من الله وقت ملاء كتب من الله الله وقت من الله وقت الله

حدیث آخر: حضرت ابودرداء رضی الله عند سے روایت ہے کہ ہم نی سلی الله علیہ وسلم کے ساتھ تھے تو آپ نے اپنی نگاہ آسان کی طرف اُٹھائی ، پھر آپ نے فرمایا یہ ایساونت ہے کہ لوگوں سے علم (وتی) اُ پک الیا جائے گا یہاں تک کہ وہ اس کی کسی چیز پر قادر نہیں رہیں گے، تو حضرت زیاد بن لبیدانساری رضی الله عند نے فرمایا کسے اُ پیک لیاجائے گا (علم) ہم سے جبکہ ہم نے قرآن پڑھا ہے اور بخدا ہم اسے ضرور پڑھتے رہیں گے اور پڑھا کی اس کو اپنی عور توں اور بچرں کو! آپ نے فرمایا اے زیادا تھے پردوئے تیری ماں! میں تو ما تھے اور پڑھا کے میں وہ تیری ماں! میں تو ما تھے اور پڑھا کے میں اور پڑھا کے اس کو اپنی عور توں اور بچرں کو! آپ نے فرمایا اے زیادا تھے پردوئے تیری ماں! میں تو ما تھے کے اس کو ایک کے اس کا میں تاریخ

مدینہ کے سجھ دارنوگوں میں شارکرتا تھا، یہ توراۃ والجیل بھی تو یہوددنساری کے پاس ہیں مگران کو کتافا کھھ مور ہاہے؟ حضرت بجیر بن تغیر فرماتے ہیں اس (حدیث کوسننے) کے بعد میری ملاقات عُبادہ بن صامت سے مولی تو میں نے ان سے کہا کیا آپ نے سُنافیس جوآپ کے بھائی ابودرداڈ نے کہا؟ چنانچہ میں نے وہ بات جوابودرداڈ نے کہی تھی ان کو بتادی ، تو انہوں نے فرمایا ابودرداء نے بچ کہاہے ، اگر آپ چا ہیں تو میں بچے ضرور بتادی کہ سب سے پہلاعلم جولوگوں سے اٹھایا جائے گاوہ خشوع ہے قریب ہے کہ تو جامع مجم میں داخل ہوگا گر اس میں کوئی عاجزی کرنے والانہیں دیکھے گا۔ (حسن غریب)

قوله: "فسخص" المحاليا -قوله: "اَوَانُ"اى وقت -قوله: "يُختَلَسُ "بعيغ مجهول اى يُسلب برعة جهول اى يُسلب برعة جهون لياجائ كا وقت على السيم ادكياج؟ توايد احمال يه مرادوقى جاورات كا كابى بوئى كه آپ كاسنرا خرت عنقريب شروع بون والا ج، الهذا آپ كوصال ك بعد لوگول كاعالم بالا سے برقتم كا تعلق وى ختم بوجائ كا كيونك آپ آخرى نبى بين على بذا "حتى لايد قدر واحده على شى "كامطلب بيه واكد لوگ رسول كى زبانى پر بحد شن سك كدوه اس دارفانى بين بيس بول كى دبال طرح علم كم بوت بوت بالآخر تم بوجائ كاس لئ محريد بيش كوئى چونك مطلق نفى علم كوستان مقى كيونك اس طرح علم كم بوت بوت بالآخر تم بوجائ كاس لئ حضرت زياد نياس كى صورت يونى -

دوسرامطلب بیہوسکتا ہے کہ بعضل النے سے مرادانس علم کی نفی ہو کہ علم کم ہوتے ہوتے بالآخر ختم ہوجائے گاحتی کہ لوگ ہو کے بالآخر ختم ہوجائے گاحتی کہ لوگ کھر ہو کے بھر استنہام ہوجائے گاحتی کہ لوگ کھر ہو کھی علم شریعت کے حصول پر قادر نہیں ہوں گے اس پر حضرت زیاد نے بطور استنہام کے بوجھا کہ علم کا سلسلہ تو ہم جاری رکھیں گے بایں طور کہ ہم اپنی اولا دکو پڑھا کیں گے اوروہ اگل سل میں خطل کردے گی اس طرح بیسللہ تو بظاہر جاری ہی رہے گا۔

اورآپ کے جواب کا مطلب یہ ہے کہ علم صرف قر اُت کرنے اور دوایت کرنے کانا مہیں ہے بلکہ علم خوات کو این کے جواب کا مطلب یہ ہے کہ علم صرف قر اُت کرنے اور دوایت کرکوئی علم شریعت پڑل نے خوات وفلاح کا ایک ذریعہ ہے اور بیاس وقت ممکن ہے جب اس پڑل کیا جائے اگرکوئی علم شریعت پڑل نے عاری ہوتو وہ بجائے نجات کے ہلاکت خیز ثابت ہوجا تا ہے اس مقصد کے سمجھانے کے لئے آپ نے اہل کتاب کی مثال دی جو با وجود علم کے گراہ ہیں۔ نیز عمل سے علم زندہ بلکہ زیادہ پختہ ہوجا تا ہے جبکہ یغیر عل والاعلم بالآخر ختم ہوجا تا ہے۔

غرض علم اورعمل دونوں ع،م،ل ماده سے مرکب ہیں لپنداان کا آپس میں ایک دوسرے سے تعلق جسم

وجان کی طرح ہے جوان کوالگ کرے گاوہ ان کو باتی نہیں رکھ سکے گا، لہذاعلم کو کل کے لئے سیکھنا چاہئے اور اس پڑمل کرتا چاہئے ورنظم اٹھ جائے گا پھراس کے حصول کی کوئی صورت ممکن نہیں رہے گی۔اس لئے حضرت عبادہ بن صامت نے علم کے اٹھنے کی دلیل اور مثال میں خشوع کاختم ہونا پیش کیا کیونکہ عاجزی علم کے لواز مات میں سے ہے اور فی لازم سے ملزوم کی فی ہوہی جاتی ہے۔ (تدبر)

باب ماجاء في من يطلب بعلمه الدنيا

(علم دین کودنیا کمانے کا ذر بعیرنہ بنایا جائے)

"عن كعب بن مالك قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: من طَلَبَ الله عليه وسلم يقول: من طَلَبَ الله المعلم المعلماء اولِيُمَارِى به السُفهاء اويَصرِف به وجوة الناس اليه اَدخله الله النار". (غريب)

حضرت کعب بن ما لک فرماتے ہیں میں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم کوارشادفر ماتے ہوئے شنا ہے کہ جس نے علم حاصل کیا اس لئے تا کہ وہ اس کے بل ہوتے پرعلاء سے مقابلہ (اور برتری حاصل) کر ہے یا اس کے ساتھ نا دانوں سے تکرار و جست بازی کرے یا اس کے ذریعہ (امیر) لوگوں کے زُخ اپنی طرف مبذول کرائے تو اللہ تعالیٰ اس کو دوز خ میں داخل کریں گے۔

تشریخ: قوله: "لِيُجَارى" جرياً اور جراءً چلنا وردورُ نے كو كہتے ہيں يعنی و فخض صرف اس لئے علم حاصل كرتا ہے تاكدوہ علاء ك شانہ بشانہ چلى ياان كساتھ على دورُ ميں شامل ہوكر مقابله كرے جس سے لوگوں ميں چرچا اور شہرت پيدا ہو۔ قوله: "او لِيُمادى" برية بمعنى شك سے ہے كيونكہ بحث كرنے ہے آوى كوخود بھى شك لائق رہتا ہے اور دوسرے كوبھى شك ميں ڈالتا ہے، اس لئے مرية كوبمعنى جھر ابھى ليا گيا ہے اور اگر مراء سے ہوتو پھر بھى معنى جھر ااور بحث و تكرار كے ہيں۔

قوله: "أو يسصوف به النع" لوگول كى توجه إلى طرف چيردين كا مطلب بظاهر مالدارول كى توجه حاصل كرنا ہے تاكه ان سے دنيوى مفادات حاصل كرسكة تا جم حاشيه پر مرقات سے قتل كيا ہے كه اس ميں عوام اور طلبه كى توجه حاصل كرنے كى نيت بھى مراد ہے تاكه اس كى تعظيم واكرام اور شهرت خوب ہو۔

عارضة الاحوذي ميں ہے جس كا مطلب يہ ہے اكرنيت بركن تو بچر بھى نہيں بچے كاليس اكرنيت علاء

سے مناظروں کی ہوتو حسد کی بناء پر ثواب ختم ، اس طرح حال بے وقو فوں بعنی عوام کے ساتھ ممارا ق کی نیت کا ہے جبکہ تیسرے جلے بعنی لوگوں میں شہرت کا شوق دین کو دنیا کے عوض بیچنے کے متر ادف ہے، ایسے مخض کا خاتمہ بالخیر خطرہ میں ہے۔ والعیا ذباللہ

غرض فسادنیت انتہائی خطرناک فتنہ ہے اس لئے ہرطالب علم کوئیت کی اصلاح کی اشد ضرورت ہے تاکہ اس کی تحوست سے خاتمہ بالخیر متاثر نہ ہوتا ہم یہ وعید علم شریعت کے بارے میں ہے جبکہ دنیوی تعلیم کا تھم بس دنیا وی عمل کی طرح ہے جو عمل اچھا ہے یا مباح ہے تو اس کی تعلیم بھی اس طرح ہے اور جو عمل نا جا تز ہے تو اس کی تعلیم بھی نا جا تز ہے گو کہ زندگی بھر دنیوی عمل اور علم دونوں میں انبہاک مذموم ہے خصوصاً جب اس سے غفلت جنم لیتی ہو۔

تخصیل علم میں نیت کیا ہونی چاہئے؟ توتفیرخازن میں آیت:''فلولانفرمین کیل فرقة منهم طائفة لیتفقّهوافی الدین ولیُنذرواقومهم اذار جعواالیهم لعلهم یحذرون ''۔(توب:آیت:۱۲۲) کے تحت کھاہے:

"وفى الآية دليل على لنه يجب ان يكون المقصودمن العلم والتفقّه دعوة الخلق الى الحق وارشادهم الى الدين القويم والصراط المستقيم فكل مَن تفقّه وتعلّم بهذا القصدكان على المنهج القويم والصراط المستقيم ومن عَدَلَ عنه وتعلّم العِلم لطلب الدنياكان من الاخسرين اعمالاً".

حديث آخر: "من تعلم علما لغيرالله اواراد بِه غيرالله فليتبوّ مقعده من النار".

جس نے اللہ (کی رضاء) کے سوا (کسی اور مقصد) کے لئے علم سیکھایا فرمایا کہ اس نے (حصول رضائے) باری تعالیٰ کے علاوہ کسی اور مقصد کا ارادہ کیا تو وہ اپنا ٹھکا نہ دوزخ بیں بنا لے۔

قوله: "او ار ادمه" بظاہر لفظ" او "شک من الرادی کے لئے ہے ابودا کو "باب فی طلب العلم لغیر اللہ" میں حضرت ابو ہرریٹا کی مرفوع حدیث ہے:

"من تعلم علماممائيتغي به وجه الله لا يتعلمه الاليصيب به عرضاً من الدنيا لم يجدعَرَف الجنة يوم القيامة يعنى دِيحَهَا". (ص: ٥١٥ج: ٢٠. يرمُح كتب فانه) ان دونول حديثول سے ايك بات يه معلوم موئى كهم شريعت كے صول ميں نيت خالص لوجه الله ہونی جاہدے دوسری بات سے کہ جوفلونیت سے پڑھے گا تو وہ جنت میں ان لوگوں کے ساتھ داخل نہیں ہوسکے گاج بہشت میں پہلے داخل ہوں کے اب جہنم میں کب تک پڑار ہے گا بی صرف اللہ جانتا ہے۔

پرجس طرح نسادنیت نقصان دہ ہے توای طرح بغیر کی نیت کے محض بے مقصد پر مناہمی کوئی ام جماع کا منہیں کوئک اتنا پر اعمل جس کا اواب بھی بے تعاشازیادہ ہے اوراس کے لئے وقت بھی بہت زیادہ درکار ہے بنے کسی مقصد کے کرنا جیسے بعض طلبہ کرتے ہیں ضیاع وقت بھی ہے اور علم کی بے حدنا قدری بھی ہے۔

امام ترفری نے اس مدیث پرکوئی تکم نہیں لگایا ہے مرعارضة الاحوذی میں ابن العربی فرماتے ہیں: "و هو حدیث صحیح المعنی ضعیف المسندو المبنی" اس مدیث کامضمون سی ہے کدوسری روایات اوراصول کے موافق ہے اگر چرسند کمزور بلکہ ضعیف ہے۔

بابماجاء فی الحَبِّ علی تبلیغ السماع (یادگی ہوئی احادیث دوسروں تک پنجانے کی فضیلت وذمہداری)

"عن ابان بن عثمان قال خرج زيدبن ثابت من عندمروان نصف النهار قلناما بَعَثُ الله هذه الساعة إلالشي يسأله عنه، فقمنا فَسألناه فقال نعم سَأَلنا عن اشياء سمعناها من رسول الله صلى الله عليه وسلم سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: نَضَرَ الله امرء سمع مناحديثا فحفظه حتى يُبَلِّفَه غيرَه فَرُبُّ حامل فقه الى من هوافقة منه ورُبَّ حامل فقه ليس بفقيه". (حسن)

حضرت ابان بن عثان بن عفائ سے روایت ہے کہ حضرت زید بن ٹابت دو پہر کے وقت مروان کے بہاں سے لکے بقو ہم نے کہا کہ مروان نے اس (آرام اور گری کے) وقت ان کے باس بکا وااس ہی لئے بھجا ہوگا تا کہ ان سے کوئی (اہم) بات بوجھے ، چنا نچہ ہم کھڑے ہوئے اوران سے اس بات کے متعلق بوچھا، تو انہوں نے فرمایا بال مروان نے ہم سے بجوالی ہی با تیں بوچھیں جوہم نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے نی انہوں نے شرمایا بال مروان نے ہم سے بجوالی ہی با تیں بوچھیں جوہم نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے نی مقدی میں میں نے ہم سے بحوالی ہی باتی کوچھیں جوہم نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے ارشا وفر ماتے سنا ہے: الله الله محفی کوروتاز و رکھیں جس نے ہم سے کوئی حدیث نی بھراسے یا در کھا یہاں تک کہ اس کوروسروں تک پہنچائے کیونکہ بھی بھر انے بھر نے والے سے زیادہ والے اللہ ہے تھیں) جواس اٹھانے والے سے زیادہ والے الے ہی نے بھر نے والے سے زیادہ

سجمدار موتاہے، اور بعض فقہ (کے مسائل والفاظ) کے یادکرنے والے فقینہیں ہوتے ہیں

حديث آخر: "نيضر الله امرء سمع مناشيناً فَبَلَغَه كماسمعه فرب مُبَلِّغ اوعىٰ من سامع". (حسن صحيح)

اللدتروتاز ورکھاس کوجوہم سے کوئی چیز سے (یادیکھے) پھراسے اس طرح آگے پہنچائے (دوسرول تک) جیسی اس نے سنی ہوکہ بعض پہنچائے ہوئے سننے والوں سے زیادہ یادکرنے والے ہوتے ہیں (لیعن مطلب کوزیادہ بہتر بچھتے ہیں)۔

تشری : قوله: "مابعث الیه هذه الساعة الالشی یساله عنه" بعث كافاعل مروان به یعی ما بعث مروان الی زیدبن ثابت هذه الساعة النج چونکه اسلاف كی عادت حكم انوں كے پاس جانے كی نتی محر جب ان كوطلب كياجا تا تعالى تب جاتے اور وقت بھی دو پہر كا تعاجس ميں عموماً لوگ قيلوله كرتے ہيں اس لئے اس وقت مروان كے پاس جانا بلاوج نہيں ہوسكا تعالى صور ورت پیش آئی۔

قولسد: "نعم مسالک اشیاء النے" دفع تو ہم ہے یعنی میں اس لئے بلاتا خمر مروان کے پاس آیا تھا کہ ان کوبعض احادیث سننے کی طلب تھی اور ہم لوگ نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی احادیث مبارکہ کی تبلیغ میں ہرگزشستی نہیں کرتے کیونکہ ایک توبیہ ماری ذمہ داری ہے دوم اس کا اجر بہت زیادہ ہے۔

قوله: "نضر الله النخ" مخفف پر صنابهی سیح بیکن بشد بدالضادباب تفعیل سے پر صنااسح بضرة چرے کی رونق کو کہتے ہیں جونعتوں اورخوشیوں کے ملنے سے نصیب ہوتی ہے۔قبوله: "سمع منا حدیثا" الگی روایت میں بجائے حدیثاً کے حدیثاً کے حدیثاً ہے جو کمل کو بھی شامل ہے تا ہم اُس روایت کی ابن ماجہ والی سند میں بجائے حدیثاً کے حدیثاً کے حدیثاً کا لفظ ہے بھرمتا جمع میں بقول طبی کے صحابہ کرام "کو بھی شامل کرتا مراد ہے۔

قوله: "فبلغه كماسمعه" الى بعض حفرات نے روایت بالمتن كى ممانعت پراستدلال كيا ہے تاہم جہور كے نزويك روایت بالمعنى بشروط جائز ہے تفصيل وصول حدیث وغيره كتب ميں ہے سيوطي نے الانقان ميں وى جلى اوروى خفى يعنى قرآن وحديث ميں فرق كرنے كے بعد لكھا ہے:

"ومن هه ناجازروایة السنة بالمعنى لان جبرئیل ابدًاه بالمعنى ولم تجزالقراءة (اى قراءة القرآن) بالمعنى لان جبرئیل ابدًاه باللفظ ولم يُبح له إيحاثه بالمعنى الخ". قوله: "فرب حامل فقه الخ" ال میں راویوں کی تین تسمیں بیان کرنامقصود ہے: (۱) جونقیہ ہو (۲) جوافقہ ہو (۳) جوفقیہ ہو (۳) جوفقیہ ہو کہ انقہ ہو ۔ پہلی تم : صیغہ افقہ اسم تفضیل سے معلوم ہوا کہ راوی نقیہ ہوتا ہے لیکن محمول الیہ یعنی جس تک پہنچائی جاتی ہو وہ حامل سے زیادہ فقیہ ہوتا ہے۔ دوسری قتم : لفظ رُبّ سے معلوم ہوئی کیونکہ رُبّ تقلیل کے لئے آتا ہے جس کا مطلب یہ ہوا کہ اکثر تو حامل افقہ ہوتا ہے لیکن بھی کھارمحمول الیہ زیادہ فقیہ ہوتا ہے جبکہ قتم سوم کی تقریح کے آخریس کی گئی ہے ورب حامل فقہ لیس ہفقیہ کذافی الکو کب الدری۔

عارضة الاحوذي ميں ہے كەحضرت زيد بن ثابت كى حديث متعدد طرق سے مروى ہے اور سي ہے اور سي ہے اور سي ہے اور سي ہے ا اگر چەامام ترندي نے حسن كى تصریح كى ہے۔

قوله: "فرب مُبَلَّغ اوعیٰ من سامع"مُبَلَّغِ بابتفعیل سے صیغه اسم مفعول ہے بینی محمول الیہ للبذالام پر فتح پڑھاجائےگا۔اوگ بمعنی احفظ کے آتا ہے کیکن یہاں مرادافقہ ہے جسیا کہ سابقہ صدیث میں تصریح ہے۔

ال حدیث سے نبی کریم صلی الله علیه وسلم کی تعلیمات کوسی اوردوسروں تک پیچانے کی خصوصاً قابل و دھین لوگوں وطلبہ کو پڑھانے کی انتہائی جامع خوش خبری ثابت ہوئی چونکہ نا اہلوں کو پڑھانے سے علم کا ضیاع ہوتا ہے اس لئے بعض علاء نے اس سے منع فر مایا ہے ،حضرت مولا نامفتی محمد شفیع صاحب نے کشکول میں مطرف ہوتا ہے اس لئے بعض علاء نے اس سے منع فر مایا ہے ،حضرت مولا نامفتی محمد شفیع صاحب نے کشکول میں مطرف بن عبد الله بن عبر کا تو ل نقل کیا ہے: ''لات طعم طعمامک من لایشتھ یہ قال مهدی کانه یعنی الحدیث ''۔ (بحوالہ طبقات: من 103)

اورمشكوة مين ابن ماجروبيها كى ايك ضعيف حديث ب: "طلب العلم فريضة على كل مسلم و النه على كل مسلم و النه عندغير اهله كَمُقَلِّدِ الخنازير الجواهرَ و اللؤلوَ و الذهب "ــاس پر ملاعلى قاري في مرقات من العلم عندغير من الايفهمه او من يويدمنه غرضاً دنيوياً او من الايتعلمه لله" ــ

باماجاء في تعظيم الكذب على رسول الله عَلَيْهِ

(من گفرت احادیث بیان کرنے کی سخت ممانعت)

"عن عبدالله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :من كَذَبَ عَلَى متعمداً فَليَتَبَوّاً مقعده من النار". (حسن صحيح)

حضرت عبدالله بن مسعود رصنی الله عنه فرماتے ہیں که رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا ہے: جس نے

مجمد برجان أو جوكر جموث باندهاده اینا لفكان چنم میں بنالے۔

تشریخ: حاشیہ پرمرقات اور طبی کے حوالے سے نقل کیا ہے کہ ابن صلاح نے اس حدیث کو متواتر قرار دیا ہے کہ ہاجا تا ہے کہ باسٹھ صحابہ کرام جن میں عشرہ بیشرہ بھی ہیں سے بیصدیث مروی ہے کو یابیصرف اسی حدیث کی خاصیت ہے جوعشرہ بیشرہ کی جماعت سے مروی ہے ہیں صحابہ کرام کے نام توامام ترفی نے بھی وفی الباب میں ذکر کئے ہیں۔

قوله: "عَلَى متعمداً" تعمد قير سے وه صورت وعيد سے خارج ہوگئ جس ميں وہم يانسيان كى بناء پر حديث ميں غلطى آجائے ياكسى سے روايت من ہواور خيال يا يقين بيہ وكديي صديث صحح ہے حالانكہ وہ موضوع تقى تو وہ بھى معاف ہے بشرطيكہ اس ميں روايت كرنے كى صلاحيت موجود ہو۔

ملاعلی قاریؒ فے مرقات میں اور ابن الحر فیؒ نے عارضہ میں کھاہے کہ بعض صوفیہ جوترغیب وتر ہیب کے حوالے سے احادیث بناتے ہیں اور جواز میں ہے کہتے ہیں کہ نی علیہ السلام نے تو ''عَسلَسے'' فرمایا ہے لیمی میر سے خلاف جو بنائے گا جبکہ ہم تو ''لُمہ'' لیمی نی علیہ السلام کے مقصد کے مطابق بناتے ہیں جوان کے خلاف نہیں بلکہ ان کے حق میں ہیں ، تو یہ حض جہالت ہے کیونکہ اس صدیث کا مطلب ہے کہ جو محض میری طرف الیمی بات منسوب کرے جو میں نے نہ گی ہوتو ''فلیت وامقعدہ من النار '' امر بمعنی اخبار ہے جیسا کہ باب کی آگلی مدیث میں ہے: ''فاند من گذب عَلی یک بیک النار '' بے شک جس نے جمحے پر جھوٹ با ندھاوہ دوز خ میں داخل ہوگا۔ اس کو امر کے صیفہ سے بیان کرنے کی حکمت تہدیداور تہم ہے تا کہ ازیادہ سے زیادہ تخلیظ اور تشکہ معن دے۔

عارضة الاحوذي ميس بكه:

"ان الامة اجمعت على ان الكذب على الله يكون به الرجل كافراً في أنسبته منا لا يجوز اليه في ذاته اوصفاته او افعاله وكذالك عن النبي صلى الله عليه وسلم في مثله الخ".

ینی اللہ کی ذات وصفات میں غلط بیانی ہے آدمی کا فرہوجا تا ہے خواہ آدمی ازخودالی غلط بیانی کرے یا نبی سلی اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ اللہ علیہ وسلی اللہ علیہ وسلی کے مشکل آپ نے یوں فرمایا ہے۔البتہ اگروہ ایسا جھوٹ ہولے جس سے شریعت میں کی یا بیشی آتی ہوتو ہے گناہ کمیرہ ہے گرایمان سے خارج نہیں ہوگا:"الاان یقصد بذالک

الاست خدف ف بسالشر بعد فهو كافر "لين اگرشريت بيل كى بيشى كرنے كے لئے جموث بناتا ہواور مراد شريعت كى بوقعتى موتو يكفر ب-

غرض حدیث بیان کرتے وقت انہائی احتیاطی ضرورت ہے جتی کہ حاشیہ پر تو غلط عبارت پڑھنے کو بھی بیدوعید شامل کی گئی ہے۔

آج کل حدیث قل کرنے کی شرا لگا:۔ان احادیث میں جو خت وعید آئی ہے اس سے بیٹیں جھتا چاہئے کہ یہ خطاب محابہ کرام سے ہے وہیں کیونکہ محابہ کرام تو سارے عدول ہیں وہ تو آپ پر جھوٹ بائد سے کا تصور بھی نہیں کرسکتے تھے،اس لئے کہاجائے گا کہ وعید قیامت تک آئے والی تمام امت کے افراد کے لئے ہے، تاہم اتناسافر ق ملحوظ رکھنا چاہئے کہ جس زمانہ میں احادیث کی باقاعدہ تدوین نہیں ہوئی تھی تو راویوں کا مطریقہ کاریتھا کہ وہ مختلف اساتذہ کے پاس جاکران کی احادیث زبانی شنع اور کیسے طلبہ کے سامنے کوئی تھی ہوئی تھی ہوئی تھی ہوتا تھا بلکہ استاذا سے ہی مصودہ سے اجادیث شنا تا اور طلبہ اس املاء کو ضبط کرتے تھے، جس کی تفصیل اصول حدیث اور تاریخ وغیرہ کتب میں دیکھی جاسکتی ہے۔

آج کل چونکہ احادیث ساری مرتب ہوگئ ہیں ادر کتابیں جھپ چکی ہیں ابندااب راویوں کی وہ سخت شرائطاتو اسا تذہ کے لئے لازی نہیں کہ مثلاً جوان ہونا، جا فظاتو کی ہوناوغیرہ تاہم ورع اور بجھ داری کی قیداب بھی ملحوظ رکھنا چاہئے طلبہ کوچاہئے کہ ایسے اسا تذہ سے احادیث پڑھیں جن کی محبت وشرف تلمذ حاصل کرنے سے عمل کا شوق بڑھتا ہو، اور وہ استاذ حدیث کا صحح مطلب سجھتا ہو۔

دیگربات جوبہت اہم ہے ہے ہے کہ آج کل احادیث کے بارے میں لوگ افراط تفریط کا شکارہو گئے
ہیں ایک فرقہ تو بالکل جمت حدیث کا مشربو گیا ہے کہ ان کے برغم احادیث پر مجروسہ کرنا مشکل ہے، جبکہ پجھ لوگ
محض اس بات پر کہ حدیث میں آیا ہے اعتاد کر کے اسے عمل میں بھی لاتے ہیں اور نقل بھی کرتے ہیں وہ اپنے
آپ کواحتیاط اور علم کی قیدسے مبراء بچھتے ہیں ، حالانکہ بیدونوں طریقے غلط ہیں مشکرین حدیث پر تو علاء نے
با قاعدہ کی ہیں اور ان کے شبہات کے کافی شافی جوابات دیئے ہیں اگر چدان معاندین کوشفا و نعیب نہ
ہوئی ہم نے مقدمہ تشریحات میں اس پر مختر گفتگو کی ہے فلیرا جح

جہاں تک دوسرے گروہ کا حال ہے تو یہ بھی ایک فتنہ ہے کم نہیں آپ کسی بھی بازار میں عام بازاری آدی ہے سُن سکتے ہیں جو کہتے ہیں کہ حدیث میں یوں آیا ہے جبکہ وہ ریب بھی نہیں جانتے ہیں کہ بیر حدیث کس کتاب میں ہے اوراس کی سندکا درجہ کیا ہے؟ اورامل الفاظ کیا ہیں؟ عام خطیب حضرات بھی ایسے بی ہیں ۔ ۔اختمار کے پیش نظراحاد یف نقل کرنے کے لئے یہال دوجامع شرائط پیش کی جاتی ہیں جوشس ان شرکط پر اورا اُتر تا ہوت وہ دوایت کا مجاز ہوگا اور جس میں بیشرائط نہوں تو وہ اس کی جمارت ندکر سے بلکہ یوں کہے کہ ہمنے فلاں عالم سے بیمسئل سُنا ہے:

(۱) بہلی شرط: جوازروایت کی بیہ کہ اگر نقل کرنے والاعلم رجال میں اتن مہارت رکھتا ہو کہ وہ سندد کی کرخود فیصلہ کرسکے کہ اس حدیث کا درجہ کیا ہے؟ تو سندجا نجینے کے بغیراس کے لئے روایت کرنا جا تزمین وہ پہلے سندد کی کر پہلے اظمینان حاصل کرے تب روایت کرے۔ تا ہم آج کل رجال کے ماہرین کا شاید کہیں وجود شہویا کم از کم میرے علم میں نہیں ہے۔

(۲) دوسری شرط: یہ کہ جب تک اسے یہ معلوم نہ ہوکہ ائکہ مدیث یس سے کس نے اس ک اس کے یا جسین کی ہے یا نہیں ؟ تو اس وقت تک اس کے لئے روایت کرنے کی جرات نہیں کرنی چا ہے ، چونکہ آئ کل یہ مقام صرف علا ویل عاصل کر سکتے ہیں اس لئے موام کو بہر حال احادیث کی روایت سے پر ہیز کرنا چاہئے کی یہ دو تو سکے الفاظ قل کرنے پر بھی قادر نہیں ہوتے ہیں جسیا کہ عام شاہدہ ہے ، بلکہ اکثر عوام موضوی احادیث زیادہ پند کرتے ہیں ہاں اگر کسی متند کتاب ہیں دیکھ کرروایت کریں تو وہ الگ بات ہے بشر طیکہ وہ حدیث کا درجہ بھی بیان کریں اور یہ کہ وہ درجہ جانے بھی ہوں۔

یدونوں شرا لط معین کے علاوہ دیگر کتب کے لئے ہیں جیسے شنن و مسانید، جہاں تک معین کا تعلق ہے تو ان کی روآیات چوکد تمام معال ہیں اس لئے غیر ماہر بھی ان سے روایت کرسکتا ہے، اگر چہ بخاری و مسلم کی بعض روایات پر بھی کلام کیا گیا ہے:

"قال الحافظ السخاوى فى فتح المغيث وبالجملة فسبيل من اراد الاحتجاج بحديث من السنن لاسيماابن ماجه ومصنف ابن ابى شيبه وعبد الرزاق مسماالا مرفيها اشداو بحديث من المسانيد واحد، اذجميع ذالك لم يشترط من جمعه الصحة ولاالحسن خاصة (۱) وهذا المحتج ان كان مُتَأَمِّلاً لمعرفة الصحيح من فيره فليس له ان يحتج بحديث من المسنن من فير ان ينظرفى اتصالي اسناده وحال رُوَاتِه كماانه ليس له ان

يحتج بحديث المسانيد حتى يحيط علماً بذالك (٢) وان كان غير متأهل لدرك ذالك فسبيله ان ينظر في الحديث فان وجدا حداً من الالمة صَحَّحَه ،او حَسَّنَه فله ان يقلده وان لم يكن ذالك فلايقدم على الاحتجاج به فيكون كحاطب ليل فلعله يحتج بالباطل وهو لايشعر".

(اتمس الدالحاج لن يطالع من ابن اجه به المناطع المنابي المنابع ا

باب ماجاء في من روى حديثاً ويُرى انه كَذِبٌ

(مشکوک روایت سے پر ہیز کابیان)

"عن المغيرة بن شعبة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: من حَدَّث عَنِّي حديثاً وهو يرى انه كذب فهو اَحَدُالكاذبين". (حسن صحيح)

حضرت مغیرہ بن شعبہ ہے مروی ہے کہ نبی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: جس نے میرے حوالے سے کوئی حدیث بیان کی جبکہ وہ جانتا ہو کہ وہ جھوٹ ہے تو وہ (دو) جھوٹوں میں سے ایک ہے۔

تشریخ: فیولید: ''وهویوی''لفظیُریٰ بفتح الیاءو ضمها دونوں طرح پڑھنا جائز ہے بالفتح بمعنی یقین کے آتا ہے اور بالضمہ جمعنی ظن و گمان کے آتا ہے مطلب یہاں دونوں کا ایک ہے یعنی روایت کے بے اصل ہونے کا یقین ہویاظن ہودونوں صورتوں میں روایت کرنا جائز نہیں ہے۔

قول ه: "أحَدُ الكاذبين" كاذبين جمع اور تثنيه دونو لطرح پڑھنا جائز ہے كه دونو ل روايتيں ثابت بيں -جمع كى صورت ميں مطلب يه ہوگا كه يوخف سند كے باقى راويوں كى طرح جموثا ہے جبكہ تثنيه كى صورت ميں مطلب ميں دواخمال بيں: ايك يه كه وه فخف مسلمه كذاب اوراسو عنسى كى طرح ہے كيونكه انہوں نے نبوت كا دعوىٰ كرك الله پر بہتان با ندھا تھا تو جموثى حديث نقل كرنے والا بھى الله اوراس كے رسول پرتہمت لگا تا ہے كا دعوىٰ كر تا ہے جو الله اوراس كے رسول برتہمت لگا تا ہے بعنی اليہ بات كرتا ہے جو الله اوراس كے رسول برتہمت لگا تا ہے بعنی اليہ بات كرتا ہے جو الله اوراس كے رسول برتہمت كا عنہيں كى ہے۔

دوسرامطلب جوزیادہ ظاہرہے ہیہ کہ بیشخص حدیث گھڑنے والے کی طرح جھوٹاہے کہ ایک نے بنائی اوردوسرے نے شائع کی غرض اچھی طرح اطمینان کرنے کے بعد ہی روایت بیان کرنی چاہئے۔
امام ترندیؓ نے امام داریؓ سے بوجھا کہ اگر کسی کوسند میں گڑ برد کاعلم ہوجائے اور پھراسے روایت کرے

تو کیادہ بھی اس وعید میں شامل ہوگا؟ تو انہوں نے جواب دیا کنہیں بلکہ اصل دارومدارمتن حدیث پر ہے علی ہذا اصل چیزمتن حدیث کا بھی مجھے ہوگا جبکہ متن اصل چیزمتن حدیث کا مجھے ہوگا جبکہ متن کے بے اصل ہونے کے علم کی صورت میں سندخواہ بظاہرتو کی ہی کیوں نہ ہولیکن روایت کرنے سے بچنالازی ہوگا إلّا بیکہ اس کی علت بیان کرے۔

باب مانهی عنه ان یقال عندحدیث رسول الله عَلَيْسَهِ

(حدیث سُن کربہانے تراشاجا رُنبیں ہے)

"عن ابى رافع وغيره رَفَعَه قال لاألفِينَ احدَكم مُتّكِتاً على اَرِيكته يأتيه امرمماامرتُ اونَهَيتُ عنه فيقول لاادرىماوَجَدنافى كتاب الله إتّبعناه". (حسن)

حضرت ابورافع رضی الله عند سے روایت ہے اور قتیبہ کے علاوہ دوسرے راوی اس کومرفوع روایت کرتے ہیں (جبکہ قتیبہ نے موقوف علی ابی رافع روایت کیا ہے) آپ نے فر مایا: میں ہرگزتم میں سے کی ایک کو ایک مند پر تکیدلگائے ہوئے نہ پاؤں جس کے پاس میراکوئی تھم آئے جس کا میں نے امر کیا ہویا نہی کی ہو تو وہ کہنے لگے کہ میں نہیں جانتا بس ہم جو پچھاللہ کی کتاب میں یا کیں گے اس کی پیروی کریں گے۔

صريث آخر: ــ "ا كلا همل عَسى رجل يسلخه الحديث عنى وهومتكى على أريكته فيقول بينناوبينكم كتاب الله فماوجدنافيه حلالا إستحللناه وماوجدنافيه حراماً حرّمناه وانّ ماحرّم رسول الله كماحرّم الله". (حسن غريب)

آگاہ ہو! کہ وہ وقت قریب ہے کہ ایک آدمی کو میری صدیث پنچے گی جُبکہ وہ فیک لگائے ہوگا پی مند پر...پس وہ کے گاہارے اور تمہارے درمیان اللہ کی کتاب ہے پس ہم جواس میں حلال پائیس کے اس کوطلال کہیں کے اور جس کوحرام پائیس کے اس کوحرام سمجھیں کے ...حالانکہ بلاشبہہ اللہ کے رسول نے جس چیز کوحرام کہا ہے وہ ویسی ہی حرام ہے جیسی اللہ نے حرام کی ہو۔

تشری : قوله: "لااُلفِینَ"ای لااَجِدَنَّ میں ندد یکھنے پاؤں یعنی ایباموقع نہیں آنا چاہئے کہم میں سے کوئی صدیث کورد کرے قوله: "متکناً علیٰ ادیکته" دہن کے لئے جوچھر کھٹ عربوں میں خاص طور پر سجایا جاتا ہے اسے ادیکہ کہا جاتا ہے، یہ تعبیرال مخض کی حماقت، تکمراور علم سے بے رغبتی سے کنا یہ ہے کیونکہ جو

مختص دنیا کی لذتوں کاعادی اور زیادہ کھانے کا خوگر ہوجاتا ہے تو وہ احمق و متکبر بھی ہوتا ہے اور جابل بھی ، اور جابل و متکبر بھی ہوتا ہے اور جابل بھی ، اور جابل و متکبر بی ایسی بات کرسک ہوتا ہے کہ اللہ اور رسول کے احکام بیں فرق ہے کوئی ذی عقل اور باشعور محف ہے بات نہیں کرسک کیونکہ ہر دانا محف جات ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جواحکام دیتے ہیں یا جوار شاوات فرمائے ہیں وہ مگل بو بی میں اور یہ کہ قرآن پڑھل بغیرا حادیث کے ممل ہو بی خبیں سکتا ''ہویدون لیطف نو انو داللہ بافو اھھم''۔ (الایة)

بہرحال آنحضور صلی اللہ علیہ وسلم کی یہ پیش کوئی سیح ٹابت ہوئی ہے جوآپ صلی اللہ علیہ وسلم کے مجزات میں سے ایک ہے، بخداتی کی ہر بات کچی ہوتی ہے کہان کامشن سچائی پھیلانا ہے۔

منکرین حدیث کا حکم: عارضة اللحوذی میں ہے کہ اگر حدیث کواہانت کی غرض سے ردکیا جائے تو یہ کفر سے ردکیا جائے تو یہ کفر ہے اور اگر خبر واحد ہونے کی وجہ سے مستر دکر ہے تو وہ خض مبتدع ہے جبکہ ابن العربی فرماتے ہیں کہ میر سے زدیک وہ کا فرہے کیونکہ جو خبر واحد کا انکار کرتا ہے تو وہ در حقیقت پوری شریعت کی فی کرتا ہے: 'وہ سے اقول فان من انکو حبر الو احد فقد و قالمسریعة کلھا النے ''۔

تیری صورت یہ ہے کہ حدیث کواس لئے قبول نہ کرے کہ وہ قرآن کے ساتھ (بظاہر) معارض ہے ...اس میں تفصیل ہے جواصول فقد میں بیان ہوئی ہے۔خلاصہ باب یہ ہے کہ حدیث کا بہت اونچا مقام ہے اس کے متعلق لا پرواہی اورخالفت کا تضور بھی نہیں کرنا چاہئے ،اس بناء پرمرقات میں ملاعلی قاریؒ نے لکھا ہے:''ول فار کے تا الا مام الا عظم الد حدیث ولوضعیفاً علی الرأی ولوقویاً ''۔یعن حدیث ضعیف بھی ہوتہ بھی رائے اور قیاس اگر چ تو ی ہو پرمقدم ہے۔(کذافی تحقة الاحودی)

باب ماجاء في كراهية كتابة العلم

(مديث كلصنے كى ممانعت كابيان)

"عن ابی سعیدقال اِستاذنّاالنبیّ صلی الله علیه وسلم فی الکتابة فلم یاذن لنا". حضرت ابوسعیدخدریؓ فرماتے ہیں کہ ہم نے نبی صلی اللّه علیہ وسلم سے حدیث کلفنے کی اجازت چاہی تو آپ نے ہمیں اجازت نہیں دی۔

تشريح: _قوله: "استأذنا "سين وتاءطلب ك لئ بين يعنى طلبنا الإذن في كتابة الحديث _

برروایت مسلم میں ان الفاظ کے ساتھ آئی ہے: ''لا تکتبو اعنی و من کتب عنی غیر القرآن فلیمحه ''۔ (مسلم:ص:۱۲۲،ج:۲) یعنی قرآن کے علاولکھی ہوئی بات کے مٹانے کا تھم دیا تھا۔

ان دونوں حدیثوں سے کتابت حدیث کی ممانعت معلوم ہوتی ہے اور اس کو بہانہ بنا کرمنکرین حدیث نے جیت مدیث نے جیت کی کوشش کی ہے گرچونکہ کتابت حدیث کے جواز بلکہ استخباب یا وجوب پرامت کا اجماع ہے اس لئے نہ کورہ بالا حدیث یا تو منسوخ ہے یا مؤدِ ل ہے جس کی تفصیل تشریحات تر نہ کی کے مقدمہ میں گذری ہے۔ (دیکھیے: ص: ۱۹ تا ۲۳ ج: ۱) اور پچھ جوت اسکلے باب میں بھی ہے۔

باب ماجاء في الرخصة فيه

(احادیث ککھنے کی اجازت کا بیان)

"عن ابى هريرة قال كان رجل من الانصار يجلس الى رسول الله صلى الله عليه و سلم فيسمع من النبى صلى الله عليه وسلم الحديث فيعجبه ولا يحفظه فشكى ذالك الى رسول الله صلى الله عليه وسلم: انى لاسمع منك الحديث فيعجبنى ولا احفظه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: استَعِن بيمينك واو مابيده لِلخطّ". (هذا حديث ليس اسناده بذالك القائم الخ)

حضرت ابو ہریرہ سے دوایت ہے فرماتے ہیں کہ انصار میں سے ایک شخص رسول اللہ ملی اللہ علیہ وسلم کی مجلس میں بیٹھتا تھا اور نبی سلی اللہ علیہ وسلم سے حدیث سنتا تھا تو وہ حدیث اس کو پیند آتی لیکن اس کو یا ذہیں رہتی پس انہوں نے رسول اللہ علیہ وسلم سے اس کی شکایت کی کہ میں آپ سے حدیث سنتا ہوں اور بہت پسند کرتا ہوں لیکن مجھے وہ یا ذہیں رہتی پس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اسپنے وائیں ہاتھ سے مددلیا کرواور (اس کے ساتھ) آپ نے اپنے ہاتھ سے خط کی جانب (کلھنے کا) اشارہ کیا۔

باب کی بیرحدیث آگر چرضعیف ہے کین کتابت احادیث کے بارے میں سی حج احادیث کا بہت بڑا مجموعہ موجود ہے اس لئے کتابت حدیث پرامت کا اجماع ہے آگر بالفرض اس بارے میں کوئی سیجے حدیث نہمی ہوتی تب بھی امت کا تعامل استدلال کے لئے کائی تھا جیسا کہ اصول میں بیان ہوا ہے حالانکہ یہاں تو سیجے احادیث میں بگرت پائی جاتی ہیں از اں جملہ باب کی دوسری اور تیسری احادیث بھی ہیں یہ دونوں احادیث مقدمہ میں

مخزری ہیں۔

حدیث آخر: حضرت ابو ہریرہ سے مروی ہے کہ نی صلی اللہ علیہ وسلم نے خطبہ ارشاد فرمایا (پھراس کی تفصیل بیان فرماتے ہوئے) فذکر قصة بعنی خطبہ ج نقل کیا تو ابوشاہ نے فرمایا اے اللہ کے رسول! بیمیرے لئے لکھواد بیجئے تورسول اللہ علیہ وسلم نے فرمایا (بیخطبہ) ابوشاہ کے لئے لکھ دو!۔ (حسن سیحی رواہ الشخان) صدیث آخر:۔ ابو ہریرہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ علیہ وسلم کے صحابہ میں سے رسول اللہ علیہ وسلم کی احادیث مجھ سے زیادہ کی کے پاس نہیں تھیں سوائے عبد اللہ بن عمرو کے کیونکہ وہ لکھا کرتے ہے جبکہ میں نہیں لکھتا تھا۔ (حسن سیحی اخرے ابخاری ابیناً)

ر ہابیسوال کہ پھرابو ہریرہ کی مردیات کی تعداد کیوں زیادہ ہے؟ تواس کا جواب مقدمہ میں گزراہے علاوہ اس کے ایک جواب بی بھی ہے کہ عبداللہ بن عمروبن العاص عبادت وسیاست میں مشغول ہو گئے تھے جبکہ ابو ہر ریرہ قدریس وتحدیث میں گئے رہے۔

چونکہ ابو ہریرہ کے پاس کھی ہوئی احادیث بھی ثابت ہیں اس لئے کہاجائے گا کہ باب کی حدیث میں عہد نبوی صلی اللہ علیہ وگی احادیث بھی مرادہ مطلقاً نہیں ، ہوسکتا ہے کہ نبی کے وصال کے بعد حضرت ابو ہریرہ نے ندوسرے صحابہ کی احادیث لکھ کر یکجا کی ہوں یاا پنی یاد کی ہوئی احادیث خوف نسیان کے پیش نظر کھی ہوئی۔ مول۔ یہ بھی ممکن ہے کہ کسی اور صحابی کی کھی ہوئی احادیث سے استفادہ کرتے ہوں۔

باب ماجاء فى الحديث عن بنى اسرائيل (اسرائيلى روايات فقل كرنے كاتكم)

"عن عبىدالله بن عسروقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: بَلِّغُواعتَى ولوايةً وحَدِّثُواعنَى ولوايةً وحَدِّثُواعن النار". (حسن صحيح)

میری طرف سے پنچاؤاگر چاکی ہی آیت ہوادر بنی اسرائیل سے نقل کرواس میں کوئی حرج (محمناہ) نہیں اور جومجھ پرارادةٔ حجوث باند سھے وہ اپناٹھ کا نہ جہنم میں بنا لے۔

تشريح: ـقوله: "بَلِغُواعتى ولواية" عارضة الاحوذي من بكيلغواامركميغمة إلى ك

طرف سے بلغ کی فرضیت معلوم ہوئی تاہم یہ بلغ فرض کفایہ ہے علی ہذابعض کی تبلغ سے باتی کی ذمہ داری ساقط ہوجائے گی۔ انتها۔ چونکہ حنفیہ کے نزدیک فرضیت کے ثبوت کے لئے نص کا قطعی اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ موتا دونوں شرط ہیں اور یخبر واحد ہے اس لئے اس سے تو فرضیت کا قول مشکل ہے تاہم دیگر نصوص کود مکھ کر تبلیغ کواور خصوصاً امر بالمعروف و نہی عن المنکر کوفرض کہا جاسکتا ہے۔

محشی نے طبی سے نقل کیا ہے کہ آپ نے ارشادات کے لئے لفظ تبلیخ استعال فرمایا جس میں متن اور منددونوں میں احتیاطی طرف اشارہ ہے جبکہ بنی اسرائیل کی روایت کے لئے لفظ تحدیث میں توسع کی جانب اشارہ ہے کیونکہ ذمانہ بہت درازگز راہے اس لئے اسرائیلی روایات میں سندکی رعایت ولزوم میں منیق ویکی ہے، اس لئے آپ نے فرمایا 'ولاحسر ہے' 'یعنی ان کی ہاتوں میں سچائی کا امکان ہے اور خمین مشکل ہے کیونکہ ان لوگوں نے اسانید کی پابندی ملحوظ نہیں رکھی ہے لہذا جہاں صدق کا امکان ہواس کونقل کرنے میں حرج نہیں ہے۔ یہاں آیت سے مراد بعض حضرات کے نزد کی صدیث ہے کیونکہ اس کے معنی قطعہ بمعنی کلڑے کے ہیں جوحدیث پر بھی صادق ہے گین قطعہ بمعنی کلڑے کے ہیں جوحدیث پر بھی صادق ہے گین قاضی بیضا وگ اور شخ عبدالحق 'فرماتے ہیں کہ مراد قرآن کی آیت ہے اور جب قرآنی آیت ہے اور اس کی نشروا شاعت بھی عام ہے و حدیث کی بطریق اولی واجب ہے کیونکہ قرآن کی حفاظت کا وعدہ تو اللہ نے فرمایا ہے اور اس کی نشروا شاعت بھی عام ہے تو جب عام کا ابلاغ لازمی ہے تو صدیث کی بطریق اولی ضروری ہے۔

حضور کامعمول شریف تھا کہ جب بھی ومی نازل ہوتی تو فوراحاضرین کو بتاتے اور کا تبین ومی کو بکل کر ان سے لکھواتے پھر صحابہ اس کوآ سکے تک اور دوسروں تک پہنچاتے ، پیطریقد احادیث میں بھی رائج تھا گولکھنے کاعام معمول ندتھا۔

ایک روایت میں بنی اسرائیل کی تقدیق و تکذیب سے ممانعت آئی ہے جبکہ باب کی حدیث میں اجازت کی تقریح ہے بیا جات کی حدیث میں اجازت کی تقریح ہے بیا بیا اس کاحل یہ ہے کہ اسرائیلی روایات تین طرح کی ہیں:

(۱) ایک وہ جو ہمارے عقا کدواحکام ہے معارض ہوں ،ان کا تھم: یہے کہ وہ روایات من گھڑت ہیں اوران کی روایت ،ان پڑمل کرنا اور ان کے مطابق عقیدہ رکھنا جا کرنہیں ہے۔

(۲) دوسری وه روایات بین جن کی ہماری شریعت میں تصدیق ثابت بیں جیسے فرعون کا غرق ہوتا۔ الی روایات کی تصدیق لا زمی ہے کہ وہ ہماری شریعت کا حصہ بیں۔

(س) تيسرى قتم كى روايات وه بين جوقر آن كى مجل آيات كى تفاصيل مين مفيد ثابت موسكتى بين، وه

28

تورات میں تفصیلاً مروی ہیں اور ہمارے عقا کدواعمال سے کسی طرح متصادم نہیں ، یاان کی زبانی وہ روایات جو تاریخی حیثیت کی حال ہیں تو ایسی روایات کی نقل میں کوئی حرج نہیں ہے، ہاں البتہ جواسرائیلی روایات صرت عقل کے خلاف ہیں جیسے عوج کی قد وقامت کے بارے میں بے سرو پار وایات تو ان کونقل کرناعقل کے منافی ہے، الیمی روایات بچے رات کو شغل کے طور پر نقل کرتے ہیں یا پھران کورد کرنے کی غرض سے نقل کیا جاسکتا ہے۔ غرض وعظ وقسیحت، تفصیل مجمل اور تاریخی روایات جوعقل وقل صحح کے منافی نہوں نقل کی جاسکتی ہیں اور باب کی حدیث میں یہی آخری تیسری قتم مراد ہے۔ حدیث کے دوسرے جزء کا ربط ماقبل سے بیہ ہے کہ روایات کے خلط ملط ہونے سے آپ کی طرف غلط بات کی نسبت ہو گئی ہے لہذا اختلاط سے بیچنے اورا حتیاط کی تاکید فرمائی ، اس جملے کی تشریح کی بلے گذری ہے۔

باب ماجاء ان الدال على الخير كفاعله

(نیکی بتانے والانیکی کرنے والے کی طرح ہے)

"عن انس بن مالك قال أتى النبى صلى الله عليه وسلم رجل يستحمله فلم يجد عنده ما يحمله فدَّلُه على آخَرَ فَحَمَلَه فَاتَى النبى صلى الله عليه وسلم فَأَحبَرَه فقال: ان الدال على الخير كفاعله" (غريب من هذه الوجه)

حضرت انس سے مردی ہے فرماتے ہیں کہ ایک شخص نے نبی سلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آکر آپ سے سواری طلب کی مگراس نے آپ کے پاس ایسا جانور نہیں پایا جس پر آپ اس شخص کو سوار کرتے ، پس آپ نے اس کو ایک اور شخص کا بتا تادیا چنا نچہ (وہ شخص اس کے پاس مگیا اور) اُس نے اِس کوسواری وے دی وہ شخص (پھر) نبی سلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آیا ادراس کی اطلاع آپ کودی تو آپ (صلی اللہ علیہ وسلم) نے فرمایا خیر کا بتا دینے والا اس کام کے کرنے والے کی طرح ہے۔

تشریخ: قبولہ: "فلم یجد عندہ النے" اس کا ظاہری مطلب تو وہی ہے جواو پرتر جمہ میں بتایا گیا ہے دوسرااحمال میر بھی ہے کہ فلم یجد کی ضمیر آنحضور کی طرف راجع ہو پھرمطلب میر ہوگا کہ آپ کواپنے پاس کوئی ایساجانو زمیس ملاجس پراس مخض کوسوار کرسکیں اس لئے اسے دوسرے کے پاس بھیج دیا۔

چونکہ مل علم پرینی ومتفرغ ہوتا ہے اس لئے کسی نیکی کی طرف را ہنمائی کرنے والے کو بھی عمل کرنے

والے کے برابر ثواب ملت ہے، تا ہم اگر بتلانے کے باوجود کوئی اس دلالت وعلم اور تبلیغ بڑمل نہ کر ہے تواس صورت میں علی کا ثواب اگر چرنہیں ملے گائین دلالت کرنے اور را ہنمائی کا ثوب بہر حال ملے گا، چنا نچہ قاضی بیضا وی نے ''سواء علیہ ہم آء نذر تھم ام لم تنذر ھم لایؤ منون ''۔ (بقرہ بآیت: ۲) کی تغییر میں کھا ہے کہ جن کفار پر مُہر جباریت لگ چکی تھی وہ آگر چرائیان لانے والے نہ تھے مگر پھر بھی اللہ عزوج ل نے 'نسواء علیک '' منوب فرمایا کیونکہ وہ ایمان لائے ایش فرمایا کیونکہ وہ ایمان لائے ایندلائے آپ کے لئے ڈرانا اور نہ ڈرانا دونوں مساوی نہ تھے بلکہ آپ کو انذار پر ثواب ملتار ہتا تھا۔

اس کے رعمس جوفض کسی برائی کی دلالت کرے گاتو وہ بھی عامل کی طرح گناہ میں برابر کاشریک ہوگا جیسا کہ باب کی آخری صدیث میں ہے۔ عارضة الاحوذی میں ہے کہ دلالت کرنے میں مماثلت گناہ اور تواب کے اعتبارے ہے ضان اور تا وان میں مماثلت نہیں علی بندا اگر کسی نے کسی کے دیمن کواس کا پتابتلا دیایا ال کی دلالت کی تو دلالت کی تو دلالت کی تو دلالت کرنے والے پر بالا تفاق ضان نہیں ہوگا' آلاان اب احسیفة قال ان المحرم اذا دلّ المحدم الدال بما بحنیٰ علی الصیدالل نان المحدم الدال بما بحنیٰ علی الصیدالل نان المحرم نے حلال کی کی شکار میں کی طرح دد کی تو یہ وجب جزاہوگی۔

المستر شدعرض كرتاب كدحنفيد ك نزديك تسبيب كامسكدكافى تفصيل طلب ب جومدايي جلدسوم " كتاب الاكراة" مين ديكها جاسكا ب جبكة "كتاب الرجوع عن الشيادات" مين بحى" صاحب مداية" في يد اصول بيان كيا ب كد: "لان التسبيب على وجه التعدى سبب المضمان كحافو البنو الغ"د (فلينتظومن شاء)

صدیث آخر: دعفرت ابومسعودانساری سے روایت ہے کہ ایک فض نی صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آ اورآپ سے سواری طلب کی ، اُس نے کہا میراجانورسواری کے قابل نہیں رہا ہے پس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: تم فلال فحض کے پاس جا ؟! (یعنی وہ تہ ہیں سواری دے دے گا) چنا نچہ وہ فلال کے پاس علیہ وسلم نے فرمایا: ''من دل علی خیر فله مثل کیا تو اُس نے اِس کوسواری دے دی اس پرسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ''من دل علی خیر فله مثل اجر فاعله او قال عامله''۔ (حسن میح)

قول : "أبدع " بضم البمزة بسيغه مجبول جانور كتفك جانے اور بلاك بوجانے دونوں كے لئے استعال بوتا ہے ، يہى حديث دوسرى سندے ذكركرنے كے بعدامام ترفى فرماتے ہيں كماس ميں دمثل

اجر فاعله "بغيرهك راوى كےمروى بـــ

صديث آخر: عن بُريدبن عبدالله بن ابى بُردة عن جده ابى بُردة عن ابى موسىٰ الله على لسان نبيّه الاشعرى عن النبى صلى الله على لسان نبيّه ماشاء". (حسن صحيح)

سفارش کریں اور تواب حاصل کریں اور اللہ اپنے نبی کی زبانی وہ تمام فیطے ضرور صادر فرمائیں گے جودہ حاہیے ہیں۔

قوله: "عن ابی بر دهٔ عن جده ابی بر ده " اس میں جَدِّ ه کی خمیر بُر ید کی طرف لوئتی ہے جیسا کہ آگے تر نذی نے اشارہ کیا ہے نیز بُر یدایئے داداابو بُر دہ کی کنیت سے بھی یاد کئے جاتے ہیں۔

قول : "ولتوجروا وليقضى الله" پہلالام امركے لئے اوردوسراتا كيد كے لئے ہے اس ميں دوسرى قرأت دينقش ہے يعني آخر ميں ياء كے بغير ہے، پس يەمىغدا مركا ہوگا، جنہوں نے ليقطى كالام امركے لئے كہا ہے تواس سے مرادد عاہے۔ (تدبر)

حضورعلیہ السلام کاصحابہ کرام کوسفارش کی ترغیب دینادو حکمتوں پرشمل ہے ایک ان کوکار فیر میں شامل کرنا جیسا کہ سابقہ حدیث میں گذر چکا ہے۔ دوم بھی ایسا ہوتا ہے کہ عام آدی بڑی شخصیت سے ملنہیں سکتا ہے رعب کی وجہ سے یا کسی رکاوٹ کی بناء پر پس سفارش کی ترغیب میں اس کی مدد کرانا بھی مقصود ہے۔ پھر یہ ثواب نیک مقصد کی سفارش تک محدود ہے آگر کسی ناجا تزکام یا کسی کی حق تلفی وغیرہ کے لئے ہوگی تو وہاں تکم معکوں ہوجائے گا اللہ تبارک و تعالی فرماتے ہیں: ''من یشفع شفاعہ حَسَنَة یکن له نصیب منها طومن مشفع شفاعہ حَسَنَة یکن له نصیب منها طومن یشفع شفاعہ حَسَنَة یک اللہ تبارک و تعالی فرماتے ہیں: ''من یشفع شفاعہ حَسَنَة یکن له نصیب منها طومن یشفع شفاعہ حَسَنَة یک اللہ تصدیب منہا کہ تاہ میں اس کے لئے استعال ہوتا ہے یعنی جس نے اچھی سفارش کی تو اس کے لئے ثو اب کا حصہ ہے اور جس نے ناگوار چیز کے لئے استعال ہوتا ہے یعنی جس نے اچھی سفارش کی تو اس کے لئے ثو اب کا حصہ ہے اور جس نے اگرائی کی سفارش کی تو اس کے لئے گناہ میں حصہ ہے، پھر سفارش کی تو اس کے لئے ثو اب کا حصہ ہے اور جس نے گرائی کی سفارش کی تو اس کے لئے گناہ میں حصہ ہے، پھر سفارش کی تو اس کے لئے ثو اب کا حصہ ہے اور جس نے گرائی کی سفارش کی تو اس کے لئے گناہ میں حصہ ہے، پھر سفارش کی تو اس کے لئے ثو اب کا حصہ ہے اور جس نے گرائی کی سفارش کی تو اس کے لئے گناہ میں حصہ ہے، پھر سفارش کی تو اس کے لئے ثو اب کا حصہ ہے اور جس

حدیث آخر: حضرت عبداللہ بن مسعود سے مردی ہے فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا ہے: کوئی آ دمی ایسانہیں جوظلم کی رُوسے قل کردیا جائے مگریہ کہ ہوتا ہے آ دم کے بیٹے (قابیل) پرایک بارگناہ اس کے خون کا میداس لئے کہ وہ پہلا مختص ہے جس نے قل کا راستہ بنایا ہے۔ (حسن میجے)

قوله: "وقال عبدالوزاق مسنّ القتل" يعنى يلفظ بمزه كساتهاور بغير بمزه دونو سطرح يعنى

باب افعال اور مجر ددونوں سے مروی ہے معنی ومطلب دونوں کا ایک ہے یعن جس نے کوئی راہ بدی و گزاہ کی ڈائی تو جتنے لوگ اس راستہ پر چلیں گے ان کے مرتکب لوگوں کے اپنے گناہ اپنی جگہ پورے ہوں کے لیکن مع ھذاان سب میں سے ہرایک کے برابر گناہ بنیا د ڈالنے والے مخض کو بھی ملے گاوالعیا ذباللہ۔ یہ ضمون اسکتے باب میں زیادہ وضاحت کے ساتھ بیان ہواہ۔

باب ماجاء فی من دَعَا اِلیٰ هُدًی فاتَّبِعَ او الی ضلالة (جسن نیک بری کی دوت دی اوراس کی پیردی کی گئی)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :من دعالى هُدى كان له من الاجرمشل اجورمن يَتْبِعُه ولاينقُصُ ذالك من اجورهم شيئاً ومن دعا الى ضلالة كان عليه من الاثم مثل اثام من يُتَبِعُه لاينقُصُ ذالك من اثامهم شيئاً". (حسن صحيح)

حضرت ابوہریرہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے: جس نے بکا یاہدایت کی طرف اس کے لئے ان لوگوں کے ثواب کے برابر ثواب ہوگا جواس کی فرما نبرداری کریں گے جبکہ اس کا ثواب ان لوگوں کے ثوابوں میں سے پچھ کم نہیں کرے گا۔اور جس نے لوگوں کو کسی کمراہی (ممناہ) کی طرف نبایا یا تواس کو اثناہی گناہ ملے گا جتنے گناہ اس کی پیروی کرنے والوں کے ہیں باوجود یکہ اس کا گناہ ان کے گناہوں میں پچھ مجمنییں کھنا ہے گا۔

صديث آخر:-"من سن سنة خيرف البع عليها فله اجره ومثل أجورمن إتبعَه غير منقوص من اجورهم شيئاً ومن سن سنة شرفالبع عليها كان عليه وزره ومثل اوزارمن اتبعه غير منقوص من اوزارهم شيئاً". (حسن صجيح)

تشریخ: قوله: "فی السندعن ابن جریر النے" این جریرے مرادمنذربن عبداللہ ہیں۔ قوله: "من دعاالی هدی" بدایت کی تعریف میں معتز لداورالل النة والجماعت کے مابین مشہوراختلاف ہے جوعام طور پرنسانی کتب کے اوائل میں بیان کیاجا تا ہے۔ یہاں مرادکی بھی نیکی کے مل کی رہنمائی ہے جس کا اوثی درجہ راستہ سے تکلیف وہ چیز کا بٹا تا ہے۔

قوله: "من سَنَّ سنة حير "مرادوه پنديده عمل ہے جودين كاصول دضوابط كموافق ہو۔قوله: "من سنَّ سنة شر" يه سنة حير كمقابل ہے يعنی وہ ناپنديده عمل جودين كاصول وضوابط اور مزاح "من سنة شر" يه سنة حير كم مقابل ہے يعنی وہ ناپنديده عمل جودين كاصول وضوابط اور مزاح ياصر تح نصوص كمنا فى ہولينى دين اسلام ميں اس كے جوازكى كوئى تقوس دليل نه ہو،اس كى مزيد وضاحت الكلے باب ميں آر بى ہے۔

قوله: "فاتبع" مجهول كاصيغه بـ قوله: "غير منقوص" چونكه نيكى يابدى كمل كى بنياد والنا والناسم مل كامحرك اورسب بنيا به توجس طرح فعل كى نسبت سبب كى طرف هوتى به اسى طرح اس باعث على فض كو بحى اجريا وزر ماتار به كا اوراس حديث كا "آلا تسسز و وازرة و زر أخسرى وان ليس للانسان الاسان الاسان سعى " و خم: آيت: ٣٩،٣٨) سكونى تعارض بيس كونكه بير آيت ايمان اورغير متعدى عمل كار من سعى المناه كار بار عين ارشاد من و ليسمل و القالة مع القاله مع القاله مع القاله مع القاله مع القاله مع القاله وليسملن يوم القيامة عما كانو ايفترون " و (عنكبوت: آيت: ١٣١)

غرض اچھائی و برائی کی بنیا در کھنے والاقحض اس وقت تک عمل میں شریک رہتا ہے جب تک وہ عمل جاری ہوخواہ سال دوسال تک جاری رہے یا قیامت تک باتی وساری رہے۔

باب الاخذبالسنة واجتناب البدعة

(سنت طريقه پر چلنے اور بدعت سے بچنے كابيان)

"عن العِرباض بن سارية قال وَعَظَنَارسول الله صلى الله عليه وسلم يوماً بعدصلوةِ المغداة مسوعظة بليغة ذَرَفت منهاالعيونُ وَوَجِلت منهاالقلوبُ فقال رجل: ان هذه موعظة مُودِعفسماذاتعهَدُ الينايارسول الله؟قال:أوصيكم بتقوى الله والسمع والطاعة وَإِن عبد حَبَشى ،فانه من يَعِيش منكم يَرى اختلافاً كثيراً وايّاكم وَمُحدَثاتِ الامورفانهاضلالة فمن

ادرك ذالك منكم فعليه بسنتى وسنة الخلفاء الراشدين المهدِيِّين عَضُوا عليها بالنواجد". (حسن صحيح)

حضرت عرباض بن ساریدرضی الله عنه فرماتے ہیں که رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ایک دن فجر کی نماز کے بعد ہم کو ہوئی کال نفیحت فرمائی جس سے آنکھیں بہنے لگیں اور دل کا بھنے گئے (بینی ہم خوف زدہ ہوگئے) کہ ایک مخف نے کہا کہ یہ وعظا تو رخصت کرنے والے کا لگتا ہے (یارخصت ہونے والے کی نفیحت کی طرح ہے) سواے الله کے رسول! آپ ہم کو کیا وصیت فرماتے ہیں؟ آپ نے فرمایا ہیں تہ ہیں وصیت کرتا ہوں الله سے ڈرنے کی ،اور بات سننے اور کہا مانے کی تاکید کرتا ہوں اگر چہوہ (حکر ان) جبٹی غلام کیوں نہ ہو،اس لئے کہ جوتم میں سے زندہ رہے گاوہ بہت زیادہ اختلاف دیکھے گا،اور تم بدعات سے بچتے رہنا کیونکہ وہ گراہی ہیں بی جوخف تم میں سے وہ وقت پائے تو ضرور لازم پکڑے میری سنت کو اور حق پرقائم ہوایت یا فتہ جانشینوں کے طریقہ کو! سنت کو ڈاڑھوں سے خوب مضبوطی سے پکڑو!

تشریک: قوله: "بهلیغهٔ "یعنی بَلَغت الیناوَاثُوت فی قلوبناوَجِلاً وفی اعییناتذداباً ۔ غرض مؤثر انداز میں تھیحت فرمائی۔قوله: "ذَرَفَت"ای سالت و دمعت آکھوں سے آ نسوپہہ پڑے۔

قسولسه: "وجسلست" بکسرالجیم ای خافت یعن جمار دل خوف کے مارے بہت زم ہوگئے۔
قسولسه: "مُوَدِّع" بکسرالدال الوداع کہنے والے، رخصت لینے والے مسافر کو کہتے ہیں چونکہ گھر کاسر براہ سنر
پرجاتے وقت یا کسی کوسنر پرجیجے وقت خصوصی نفیحت اور وصیت وتا کید کرتا ہے تا کہ اس کے چھوٹے ان ہدایات
پرمل کر کے خطرات اور پریشانیوں سے بچیں اس لئے ان صحابی نے بھی نبی سلی اللہ علیہ وسلم کے انداز بیان سے
پرد گر اس سے محسوس کیا کہ آپ سفر آخرت پرتشریف لے جانے والے ہیں اس لئے انہوں نے آپ سے
مزید قسیحت کی درخواست فرمائی ، وہ قر اس کیا تھے؟ تو ممکن ہے کہ سورہ کھر ہویا جیسے باب فی و هاب العلم میں
جواحادیث گذری ہیں مثلاً ہذااً وَان یُنحتلس العلم من الناس المنے وغیرہ ہوں۔

قول د: "وان عبد حبیشی" لین ارباب اقتداری مع وطاعت ضرور کرواگرچه ده محمران کوئی حبثی غلام کیوں نه ہو، لین ام اگر چه قریش میں سے ہونا چاہئے لیکن اگر کسی غیر کوبھی بنایا جائے یا کوئی زبردتی بن جائے تو بھی اس کی اطاعت کرتے رہو، یہ مسئلة شریحات کی جلد پنجم وششم میں مکرر گذرا ہے۔
اس کا خلاصہ یہ ہے کہ جمہور کے نزدیک جب تک صرت کے نفرنہ ہوتو امام کے خلاف خروج واجب نہیں

بلکہ بوں کہنا چاہئے کہ جائز نہیں کیونکہ اس سے عام اہل اسلام خصوصاً بچوں اور عورتوں کوغیر معمولی نقصان پہنچاہے ہاں البتہ فاسق حکمر انوں کافسق کے امور میں اتباع بھی جائز نہیں، اس لئے اگروہ کوئی غیر شرعی حکم کریں تو آدمی کواس سے بچنالازم ہے خواہ اس کے لئے نوکری یا کری قربان کرنا پڑے یا جمرت کرنے کی نوبت آئے تو بھی اس سے گریز نہ کرے۔ نیز ظالم حکمر انوں کی اطاعت عام امور میں صالح وعادل بادشاہ کی طرح واجب بھی نہیں کمامڑ۔

قوله: " يَرى احتلافاً كثيراً" عارضة الاحوذي ميں ہے كہ حضور پاك سلى الله عليه وسلم كوآنے والے اختلافات ومنكرات كے غلبے كا جمالى تفصيلى علم تھا يعنى الله نے ان كوآنے والے فتنوں سے آگاہ فرما يا تھا مگرآپ نے ہرا يک كواس كى تفصيل نہيں بتائى تھى البتة ان فتنوں سے آپ امت وصحابہ كو ڈرايا كرتے تھے تا ہم بعض صحابہ كرام جيسے حضرت حذيفه وابو ہر يره رضى الله عنها كوان كى (بعض) تفاصيل بھى بتلا دى تھيں۔

قوله: "وایّاکم و محدثاتِ الامور" لفظِ مُحدَث اور بدعت کے معنی آگر چنی چیز، خے ول اور خے فعل و محدثاتِ الامور" لفظ مُحدَث اور بدعت کے معنی آگر چنی چیز، خے ولی اس کا اطلاق اس نے نظر ہے ، یا تول و مل پر ہوتا ہے جو قرآن وسنت سے کی طرح ثابت نہ ہولیتی نہ صراحة ، نہ دلالہ واشار ہ اور نہ استنباطاً مع ہذا اس کو امور شرع میں شار بھی کیا جاتا ہولیتی اسے باعث اجرو تو اب سمجھا جاتا ہواور بیکا مکی دینی ضرورت کی بناء پڑ ہیں بلکہ کی دوسری غرض کیا جاتا ہو اور فور سے کیا جاتا ہو ۔ لہذا جو کا م اُولہ اربعہ لیمنی کی وجہ سے کیا جاتا ہو ۔ لہذا جو کا م اُولہ اربعہ لیمنی میں وسنت یا اجماع اور قیاس سے ثابت ہوتو وہ بدعت نہیں جیسا کہ عبدالرخمن مبارک پوری صاحب نے تحفظ الاحوذی میں قاضی شوکانی کی کتاب '' الفتح الربانی'' سے قبل کیا ہے:

"وكانوااذا أعوز أهم الدليل من كتاب الله وسنة رسوله (صلى الله عليه وسلم) عمملوا بسما يظهر لهم من الرأى بعد الفحص والبحث والتشاور والتدبر وهذا الرأى عندعدم الدليل هو ايضاً من سنته لِمَادَلٌ عليه حديث معاذ: لَمَّاقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم بِمَ تقضى ؟قال بكتاب الله ،قال فان لم تجد؟قال اجتهدر أبي ،قال فان لم تجد؟قال اجتهدر أبي اقال: الحمد الله الذي وقي رسول رسوله او كما قال وهذا الحديث وان تحكلم فيه بعض اهل العلم بماهو معروف فالحق انه قسم الحسن لغيره

وهومعمول به وقداوضحت هذافي بحث مستقل الخ".

لینی جب محابہ کرام اورخصوصاً خلفائے راشدین کوقر آن وسنت میں کوئی دلیل عندالصرورت نہلی تو وہ غورو تد برکر کے اپنی رائے قائم کرتے اور بیرائے بھی سنت ہی کے موافق ہے (کیونکہ وہ ان اصول سے ماخوذ ہوتی ہے جوقر آن وسنت میں بیان ہوئے ہیں) اس پر حدیث معاذ دلیل ہے اوراگر چراس حدیث پر بعض علاء کی طرف سے اعتراض ہے کر بچی اور مجے بات ہے کہ بیرحدیث حسن لغیر ہ کے درجہ میں ہے جوقا بل عمل ہے۔

ای طرح جوکام محابہ کرام کے زمانہ میں عدم ضرورت کی وجہ سے نہ ہوااور بعد میں اس کی دینی ضرورت پیش آئی اورعلاء نے بغیرافتر اتی کے وہ کام کیا جےعلوم کی تدوین تو وہ بھی بدعت کے زمرے میں نہیں آتا جیسا کہ علامہ تفتازانی "نے شرح عقائد کے شروع میں بیان کیا ہے اور چیجے تشریحات میں بھی گذراہے اور حضرت شاہ ولی اللہ نے ججہ اللہ البالغہ میں تفصیل سے کھا ہے۔

غرض جوکام بلامنشاء کے کیاجائے اوراسے کار خیروشری امرتصور کیاجائے یادہ امورشرع کے ساتھ خلط ملط کردیاجائے تو وہ بدعت ہے حضرت شاہ صاحب نے العرف الشذی بیں اس کی مثال رسم سوئم اور چہلم کی دی ہے ہاں جس کام کو تو اب کی نیت سے نہ کیاجاتا ہو گراسے ترویج دی گئی ہوتو وہ رسم کہلائے گاجیے شادیوں کی رسومات وغیرہ۔

پھراہن العربی فرماتے ہیں کہ محدث اور بدعت اپنے ناموں کی وجہ سے مذموم نہیں اور نہ ہی معنی کی وجہ ہے ممنوع ہیں بلکہ محدث و بدعت خلاف سنت اور داعی الی العسلا لت کی بناء پر مذموم ہیں۔

"وليسس السمحدث والبدعة مذموماً للفظ محدث وبدعة ولالمعناها فقدقال الله تعالى "ماياتيهم من ذكرمن ربهم محدث". (الانيام: آيت: ٢) وقال عمر: نعمت البدعة هذه وانمايُذَمُّ من البدعة ماخالف السنة ويُدَّمُّ من المحدثات مادعاالى ضلالة". (انتهى)

ینی نام سے فرق نہیں پڑتا ۔۔۔۔۔ علی ہذا آگر کوئی مبتدع اپنی بدعات کا نام جوہمی رکھے یا کوئی کسی شری امرکا نام جوہمی رکھے اس سے عظم پر ارتبیں پڑے گامٹلا بر بلوی حضرات نے رہے الاول کے جلوس کا نام جشن عیدر کھا ہے اور دعوی عشق رسول کا کرتے ہیں مگریٹل چونکہ قرون مشہود کھا بالخیر میں نہ تھا حالا نکہ صحابہ کرام میں کوآٹ سے ہم سے زیادہ محبت تھی اس لئے یہ بدعت ہے اس کے برعکس فقہاء کے قیاسی مسائل کوغیرمقلدین

واہل الظاہر بدعت کہتے ہیں مگر وہ سنت کے زمرہ میں شامل ہیں جیسا کہ مبارک پوریؓ کی شرح سے قاضی شوکا نی " کی عبارت کے اقتباس میں آپ نے ابھی پڑھا۔

قوله: "فعلیه بسنتی" لغت کاعتبارے مطلق طریقه کو کہتے ہیں جوفرض کوبھی شامل ہے تا ہم علاء نے فرض اور سنت اور واجب کی الگ الگ اصطلاحات مقرر کی ہیں تا کہ احکام کی درجہ بندی سمجھانے میں ہولت ہو۔

قوله: "وسنة المخلفاء الواشدين المهديين" علاء في تصريح فرمائى بكرخلفائ راشدين على ما و الشهرين البعد المبين البوكروعم اورعثان وعلى رضى الله عنهم ابن العربي في اس براجماع فقل كياب "وهم ادبعة باجماع"اوريك الله في الناك شان مين بير يت تازل فرمائى ب:

"وعدالله الذين آمنوا منكم وعملوا الصالحات ليستخلفنهم في الارض كما استخلف الذين من قبلهم ولِيُمكِنن لهم دينهم الذي ارتضىٰ لهم وليسدلنهم من بعد حوفهم أمنا يعبدونني لايشركون بي شيئاً". (الور:آيت:۵۵)

پھران میں سے حضرات شیخین کی سنت زیادہ مؤکدہ ہے۔ تغییرابن کثیر میں مرفوع حدیث ہے:

(قت دو اب الحذین من بعدی ابی بکروعمر "(ص: کاج: ا،قدیمی کتب خانہ) پھرایک عورت سے بی
صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایاتم ابو بکرکو پاؤگی یہ تب فرمایا تھا جب اس عورت نے کہاتھا کہ اگر میں آپ کے پاس
آجا کوں اور آپ کونہ پاؤں؟" و هو خصوص خصوص المخصوص "۔(عارضة الاحوذی) یعنی صحابہ میں
اگراختلاف ہوجائے تو خلفائے اربعہ کوتر جمج ہوگی پھراگران میں بالفرض اختلاف ہوجائے تو شیخین کا قول مقدم
ہوگا اور شیخین میں حضرت ابو بکر سم کا جیسے قاضی شوکانی " کے حوالے سے گذر چکا ہے کہ ان حضرات کی
رائے سنت سے مختلف نہ تھی اس لئے ان کی سنت کے اتباع کا تھم دیا اور یہ امرا تھاتی ہے پھرعارضة الاحوذی میں
ہوگا اور شیخین میں حضرت ابو بکر سم کا جسیا کہ پیچھے قاضی شوکانی " کے حوالے سے گذر چکا ہے کہ ان حضرات کی
دائے سنت سے مختلف نہ تھی اس لئے ان کی سنت کے اتباع کا تھم دیا اور یہ امرا تھاتی ہے پھرعارضة الاحوذی میں
ہوگا دین جہتدنہ ہو) دوسر سے ترجے کے لئے کہ خلفاء اربعہ کا قول مقدم ہوگا کمام تر۔
(یعنی جمجہدنہ ہو) دوسر سے ترجے کے لئے کہ خلفاء اربعہ کا قول مقدم ہوگا کمام تر۔

قوله: "عَضُواعليهابالنواجذ" نواجذا خرى دانتول كوكت بين چونكه ايك تووه مضبوط بوت بين دوسرك خريس بودك ايك توه مضبوط بوت بين دوسرك خريس بون كي وجدان كي گرفت سب دانتول سے پکڑنے كوشتازم بالذا مطلب بيه واكدان كي سنت پورى طرح عمل ميں لاؤجزوى عمل كافى نہيں "ف معناه عضواعليها بحميع الفع و لايكون تناولها

نهساً النع" ـ (عارضة الاحوذي) غرض ان كى سنت ترك كرنا جائز نبيل ہے۔

صديث آخر: ـ"ان النبى صلى الله عليه وسلم قال لِبلال بن الحارث: إعلما قال: ما اعلَم يَارسول الله؟ قال إنّه من آخيى سنة من سنتى قدمِيت بعدى كان له من الاجرمثل من عمل بهامن غيران ينقُصَ من اجورهم شيئاً ومن ابتدع بدعة ضلالة لايرضاهاالله ورسوله كان عليه مثل اثام من عمِل بهالاينقُصُ ذالك من اوزارالناس شيئاً". (حسن)

نی صلی اللہ علیہ وسلم نے بلال بن حارث سے فرمایا: ' جان لو' ! حضرت بلال بن حارث نے پوچھا اے اللہ کے رسول کیا جانوں! آپ نے فرمایا ہی کہ جس نے میری سنتوں میں سے گوئی ایسی سنت کوزندہ کیا (بعنی اسے دوبارہ شائع کیا) جے مردہ بنادیا گیا ہو (بعنی اس پڑل چھوڑ دیا گیا ہو) میر سے بعد تو اس کے لئے اتنابی ثواب ہے جتنا ثواب اس پڑل کرنے والوں کا ہے بغیراس کے کہ دہ ان کے ثوابوں میں سے پچھ کم کر دے۔ اور جس نے کوئی بدعت گرابی کی تکالی جے اللہ اوراس کارسول پیند نہیں کرتے تو اس پران تمام لوگوں کا گناہ ہوگا جواس پر علی کریں کے بغیراس کے کہ ان کے گناہ ول کے بوجھ میں سے پچھ کم ہوجائے۔

قولسه: "اعلم" یکم تنبیک طرح بے جومظمون کی اہمیت کے پیش نظر خاطب کو جگانے اور توجہ سے
سننے کے لئے استعال ہوتا ہے لیں حضرت بلال کا مقصد "مااعلم بارسول الله؟" سے بیہ کہ میں اس
مضمون کے سننے اور اس پڑمل کرنے کے لئے تیار ہوں آپ ارشاد فرما کیں ۔ قوله: "من احیاست النے" یعنی
اس پڑمل کیا یا دوسروں کڑمل کرنے کا کہا جس سے لوگوں نے عمل شروع کیا ۔ قولہ: "لا ینقص" متعدی ولا زی
دونوں طرح استعال ہوتا ہے اس لئے او پرترجہ میں پہلے لا ینقص کے ترجمہ میں متعدی کا لحاظ رکھا گیا ہے جبکہ
دونوں طرح استعال ہوتا ہے اس لئے او پرترجہ میں پہلے لا ینقص کے ترجمہ میں متعدی کا لحاظ رکھا گیا ہے جبکہ
دوسرے میں لازی کا۔

باقی تشریح پیچے گذری ہے۔ (دیکھے"باب ماجاءان الاسلام بَدَ أَخر بِبَا الْحَن "من ابواب الا یمان)
گویا متر وک سنت کودوبارہ پروان چر حانا" من سَنّ سُنّة حَسَنة "کی طرح ہے اس لیے مُحی النة کوتما م عاملین
کاجتنا تو اب ہوگا جبکہ مبتدع" من سن سنة سَینة "کے ذمرے میں آتا ہے اس کا تھم بھی گذرا ہے۔ فلجھظا۔
حدیث آخر: حضرت انس بن مالک فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے جھ سے
فرمایا اے میرے بیارے بیٹے!اگر تیرے بس میں ہوکہ جم کرے تو اور شام کرے تو اور تیرے ول میں کسی کے
لئے کھوٹ (میل وحمد) نہ ہوتو ایسا ضرور کرو پھر جھے سے فرمایا اے بیارے بیج !اور یہ خصلت میری سنت ہے

اور جس نے میری سنت زندہ کر دی اس نے (گویا) جھے زندہ کیااور جس نے جھے زندہ (خوش) کیاوہ جنت میں میرے ساتھ ہوگا۔ (حسن غریب)

قوله: "یابئنی" بھیغدتھ نیرمعلوم ہوا کہ پیارکرنے کی غرض سے اجنبی ہے کو بیٹا کہا جاسکتا ہے۔ قوله: "لیس فی قلبک غِش لاَ حَدِ" بکسرالغین خیرخوابی کی ضدیمعنی بدخوابی کے ہے اورا صَد میں عموم ہے جی کہ کا فرے ساتھ بھی خیرخوابی ضروری ہے کہ اس کوائیان پرلانے کی تدبیر سوچی جائے اورا سے بلاوجہ تنگ نہ کیا جائے۔قولہ: "فقدا حیانی" مشکلو ہیں ترفدی کی بیردوایت احیانی کے بجائے اُحمینی نقل کی گئ ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ ترفدی کے بعض شخوں میں من احجب سنتی فقداَ حَبینی بھی ہے۔

قوله: "وفى المحديث قصة طويلة" چونكه بدروايت ترندى كتفروات ميس سے بهاورامام منذريٌ في "الترغيب" ميں اس كوضعيف كہاہے۔اس لئے اس قصداوراس كي تفصيل بيان كرنے سے شارحين في لاعلمي كا ظہار كيا ہے۔

باب في الانتهاءِ عمّانهيٰ عنه رسول الله عَلَيْكُمْ

(ان چیزوں سے دوررہنے کابیان جن سے آٹ نے منع فر مایاہے)

"عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: أتركونى ماتركتكم! فاذا حَدَّثتُكُم فَخُدُواعَنَى فانماهلك من كان قبلكم بكثرة سؤالهم واختلافهم على ابنياء هم". (حسن صحيح)

حضرت ابو ہریرہ فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: چھوڑ دوتم جھے جب تک کہ میں متہبیں چھوڑ سے رکھوں (بعنی شہبیں کوئی شے (سحکم) بیان کروں تو اس کو مجھ سے لیا کرو (بعنی سیکھوا ورعمل کرو) بے شک تم سے پہلے لوگ اپنے نبیوں سے زیادہ سوالات اوران کی مخالفت کی وجہ سے ہلاک ہو گئے۔

تشریخ: قبولسه: "اتسو کونسی" یعنی کثرت سے اور نضول سوالات مت پوچھو جیسے بنی اسرائیل کیا کرتے تھے جہاں تک ضرورت کا سوال ہے تواس کی ممانعت مراز نہیں، چونکہ سوالات سے جواب میں احکام نازل ہوں گے جن بڑمل کرنا پڑتا ہے خواہ اوامر ہوں یا منابی اور سارے لوگ عمل میں چست تو ہوتے نہیں ہیں

اس لئے امت پرشفقت کی بناء پرآپ نے کٹر توسوال سے ممانعت فرمائی، نیز بنی اسرائیل سوال پوچھتے گراس کے مطابق نازل ہونے والے حکم پڑل سے کتراتے حالانکہ بیموجپ ہلاکت ہے اس لئے آپ نے منع فرمایا۔معلوم ہواکہ نبی کی بات پڑل نہ کرنااس کی خالفت کے زمرے میں آتا ہے ہاں البتہ اگر پوری طرح ممل کی استطاعت نہ ہوتو بفقر راستطاعت جتناعمل کرسکتا ہے آتنا ضرور کرے بالکل ترک نہ کرے جیسے نماز کے درجات ہیں جبکہ منابی سے ممل اجتناب لازی ہے اللا یہ کہ اضطرار اور بعض میں ضرورت ہو، چنانچہ مسلم شریف کی روایت ہیں جبکہ منابی سے ممل اجتناب لازی ہے اللا یہ کہ اضطرار اور بعض میں ضرورت ہو، چنانچہ مسلم شریف کی روایت ہیں۔ ان فاذا اُمرتکم ہشی فاتو امنه مااستطعتم و اذا نہیت کم عن شی فلڈ هو ہوں۔

باب ماجاء في عالم المدينة

(مدیند کے بوے عالم کی فضیلت)

"عن ابى هرير. ة روايةً يُوشك ان يطرب الناس اكبادَالابل يطلبون العلم فلايجدون احداً اعلم من عالم المدينة". (حسن صحيح)

حضرت ابو ہریرہ سے مرفوع روایت ہے قریب ہے کہ لوگ اُونٹوں کے جگروں کو ماریں مے وہ علم طلب (تلاش) کررہے ہوں مے پس وہ نہیں پائیں سے کسی کوجو لدیند کے عالم سے علم میں بڑھ کرہو۔

تشریخ:قوله: "روایه "بنا و برتمیز منصوب ب اور کنایه بردایت کے مرفوع بیان کرنے سے۔
قوله: "یُوشِک " بکسرالشین ای بر بود وائد قریب بے قوله: "ان بعضوب الناس اکباد الابل"
مالت رفعی میں ہے کہ یوشک کا اسم ہے اکباد جمع کرد کہتے ہیں مراد جگر کے محاذی پہلو ہے اور یہ کنایہ ہے۔
ہر عب سفر سے کیونکہ طالب علم ہی وہ مسافر ہونا چاہے جواپی طلب میں آئی تا ہواور منزل کی طرف لگا ہو۔
عبدالفتاح الوفده نے محدث کی تمن علامات بلکہ شرائط ذکر کی ہیں: (۱) سراج المشی (۲) سراج الکتابت عبدالفتاح الوفده نے محدث کی تمن علامات بلکہ شرائط ذکر کی ہیں: (۱) سراج المشی (۲) سراج الکتابت ہو۔ گرافسوں کہ آج ہمارے لا اُبلی بن کی وجہ سے دنیاوالوں کوسب سے زیادہ فارغ عالم دین نظر آتا ہے کہ وہ ہمیں اورخصوصاً ان علاء کو جوعوام سے جوئے ہیں جیسے ائمہ مساجد سکول ٹیچرز اور سیاس اکثر علاء وہ ان کو کا کشراوقات کپ شپ میں معروف دیکھتے ہیں اس سے ہمارے اسلاف کی بھی قدر کیسرختم ہوگئی اہ افسوں۔

کواکٹر اوقات کپ شپ میں معروف دیکھتے ہیں اس سے ہمارے اسلاف کی بھی قدر کیسرختم ہوگئی اہ افسوں۔

اس مدیث کے مصدات میں یقین سے بچھ کہنا تو ممکن نہیں البت اس کا مطلب ہم یوں بیان کر سکتے ہیں اس صدید بیں اس کے مصدات میں یقین سے بچھ کہنا تو ممکن نہیں البت اس کا مطلب ہم یوں بیان کر سکتے ہیں اس حدید بیں اس کے مصدات میں یقین سے بچھ کہنا تو ممکن نہیں البت اس کا مطلب ہم یوں بیان کر سکتے ہیں اس حدید ہوں کیسے ہیں اس سے بھول بیان کر سکتے ہیں اس مدید ہوں بیان کر سکتے ہیں اس حدید ہوں بیان کر سکتے ہیں اس حدیث کے مصدات میں یقین سے بچھ کہنا تو مکن نہیں البت اس کا مطلب ہم یوں بیان کر سکتے ہیں

کہ یاتوجنس عالم مراد ہے کوئی مخص مراذ ہیں اس بناء پر صحابہ کرام کا اولین دورمراد ہے کہ علم ابھی دنیا ہیں پھیلا نہیں تھا اس لئے جب اسلام جزیرہ نماعرب سے باہر نکل گیاتو لوگوں نے علم کی تحصیل کے لئے مدینہ کا ژخ کیا۔ دوسراا خمال ہے ہہ بداسلام کے آخری دور کی بات ہورہی ہوتی اس کا مصدات ابھی تک رونمانہیں ہوا ہے اور یہ بھی مکن ہے کہ وہ شخصیت گزر چکی ہواس کو امام ترفری نے بیان کیا جمہور کے نزدیک بیام مالک ہیں جبکہ بعض کے نزدیک بیام کی حضرت عربن خطاب کے پڑیو تے عبداللہ بن عبداللہ بن عبداللہ بن عبداللہ بن عبداللہ بن عرب الله بن عربی الله بن عربی کے الفلاب رضی اللہ عن کویا ترفری کی عبارت میں سہوہوا ہے حافظ ابن ججز نے التر یب میں اس پر تنہیں کی عبارت میں سہوہوا ہے حافظ ابن ججز نے التر یب میں اس پر تنہیں کی عبارت میں سہوہوا ہے حافظ ابن ججز نے التر یب میں اس پر تنہیں کی عبارت میں سہوہوا ہے حافظ ابن ججز نے التر یب میں اس پر تنہیں کی عبارت میں سہوہوا ہے حافظ ابن ججز نے التر یب میں اس پر تنہیں کی ہے۔ الخطاب رضی اللہ عنہ میں ہو ہوا ہے حافظ ابن ججز نے التر یب میں اس پر تنہیں کی ۔

باب ماجاء في فضل الفِقه على العبادة

((نفلی) عبادت سے فقاہت کے افضل ہونے کا بیان)

"عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : فقية اَشَدَّ على الشيطان من الفِ عابدٍ". (غريب)

ایک مجھددار (ماہر)عالم شیطان پر، ہزارعابدوں سے زیادہ سخت ترہے۔

تشری : ابن العربی عارضة الاحوذی میں لکھتے ہیں کہ حدیث تو غریب ہے لیکن اس کے معنی ظاہر ہیں اس لئے فقہ ہم کو کہتے ہیں پس اگرایک طرف عابد سلسل عمل تو کررہا ہے لیکن دوسری طرف وہ اہلیس کی تلمیس سے نہیں چک سکتا جبکہ نہم دین رکھنے والافخص تذکیرو تذکر کرتا ہے اس لئے عابد کے مقابلے میں افضل ہے تاہم اگراس کے ساتھ عمل بھی شریک ہوجائے تو پھراس کا مصداق وہ عالم بن جائے گاجس کے بارے میں امام ترفدی نے اس بیس آ کے قل کیا ہے ' عالم عامل یُدعی کبیرا فی ملکوت السموات ''ایک روایت میں کبیرا کے بجائے عظیماً آیا ہے۔ اور ایساعالم دارث انہیاء بھی بن جاتا ہے۔

غرض شیطان فساد پھیلاتا ہے اور شرکا جال بچھاتا ہے جبکہ عالم نہ تو خوداس کے جال میں پھنتا ہے اور نہ ہی لوگوں کو سینے دیتا ہے جبکہ جالل عابد بساادقات عبادت میں لگار ہتا ہے حالانکہ وہ شیطان کے جال میں پھنس چکا ہوتا ہے اور اسے پید بھی نہیں ہوتا ہے اس موضوع پر ابن الجوزی کی کتاب تلبیس ابلیس ایک جامع تصنیف ہے

وہ لکھتے ہیں کہ عابدی عبادت کا نفع اس کے گھر کے دروازے سے آ کے نہیں جاتا جبکہ عالم دین خلق خدا کو گراہی سے ہدایت کی طرف کلاتا ہے۔ سے ہدایت کی طرف کلاتا ہے۔

ا مام ما لک فرماتے ہیں کہ پچھلوگوں نے بغیرعلم کے عبادت کاشغل اپنایا تو انہوں نے امت کے خلاف تکوارین کالیں:

> "فقال ابن القاسم: سمعت مالكاً يقول: ان اقواماً ابتغواالعبادة و اَضاعوا العلم فخرجواعلى امة محمد صلى الله عليه وسلم بِاَ سيافهم ولو ابتغوا العلم لَحَجَزَهم عن ذالك ". (بنتاح دارالحادة: ص:١٢٣)

ابن قیم نے مقاح دارالسعادہ کے ای صفہ پریہ بھی نقل کیا ہے کہ ابوموی اشعری نے حضرت عمر الا کولکھا کہ ہمارے پاس اتی تعداد میں طلبہ نے قرآن پڑھاتو حضرت عمر نے جواب میں لکھا کہ ان کے نام رجمر میں لکھے کہ ہمارے پاس اتی تعداد میں طلبہ نے قرآن پڑھا کے سال انہوں نے زیادہ تعداد کھی اس پر حضرت عمر نے فرمایا کہ ان کے نام منادیں ایسانہ ہوکہ لوگ جلدی جلدی جلدی بغیر تفقہ کے قرآن پڑھنے گئیں:

"فكتب اليه عمران امحهم من الديوان فانى أخاف من ان يسرع الناس فى القرآن (قبل)ان يتفقّهوافى الدين فيتأوّلوه على غيرتاويله". (ايضاً)

حدیث آخر: حضرت قیس بن کیر (واضیح کیر بن قیس) فرماتے ہیں کہ ایک فض مدینہ سے حضرت ابودردا ﷺ کے پاس آیا جبکہ وہ دشق (شام) میں شے ، ابودردا ؓ نے بوچھا: میرے بھائی کیے آنا ہوا؟ اس نے کہا ایک حدیث (شاخ) کی غرض سے جھے خبر کپنی ہے کہ آپ اس کو (براہ راست) رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں حضرت ابودردا ؓ نے فرمایا: کیا تم کسی اور کام سے نہیں آئے ہو؟ اُس نے کہا دونہیں "ابودردا ؓ نے بوچھا کیا تجارت کی غرض سے نہیں آئے ہو؟اس نے کہا دونہیں "اس نے کہا اس مدیث سنے کی نیت سے آیا ہوں!

حضرت ابودردائ نے فرمایا تو (خوش خبری سُن لوکہ) ہیں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے ارشاد فرمایت کی طرف جانے فرمایا تو رہے جس میں وہ علم ڈھونڈ ھتا ہے تو اللہ تعالی اس کو جنت کی طرف جانے والے داستہ پر چلا تا ہے، اور یہ کہ فرشتے اپنے پر بچھاتے ہیں طالب علم کی خوشنودی کے لئے ، اور یہ کہ عالم جو ہوتا ہے اس کے لئے وہ سب مخلوقات دعائے مغفرت کرتی ہیں جو آسانوں میں ہیں اور جوز مین پر ہیں یہاں تک کہ

بانی میں مجھلیاں بھی۔اور یہ کہ عالم کی نضیلت عابد پرائی ہے جیسے جا ندی باتی ستاروں پرہے۔

بے شک علاء انبیاء کے وارث ہیں بے شک انبیاء نے دینارودرهم کی ورافت نہیں چوڑی ہے بلکہ انہوں نے ملک ہیں میراث میں چھوڑا ہے، توجس نے علم حاصل کیا بلاشبہ اس نے مجر پورحصہ حاصل کیا '' و لا نعر ف ھذا الحدیث الامن حدیث عاصم بن رجاء بن حیوة ولیس اسنادہ عندی بمتصل النح ''لین اس حدیث کی سند میں بہت اختلاف ہے آگر چہیہ متعدد کتب حدیث میں مروی ہے تا ہم اس کے اجزاء مختلف میں مروی ہے تا ہم اس کے اجزاء مختلف میں مروی ہیں۔

قوله: "فانی سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم النع" اس مین دواحتال بین ایک بیک بید و بی مدیث ہوجس کے لئے وہ فخص آئے سے ، دوم بیک بیاس کوبطور خوش خبری کے سنائی کہ تیرابی سفراتی برکات پر شمل ہے۔قوله: "من سَلک طریقاسَلک الله به النع" اس مدیث کابی بر وابواب العلم کے شروع میں "باب فضل طلب العلم" میں گذرا ہے۔ سلک الله بسه میں "ب" کی ضمیر "من" کی طرف راجع ہوادر "باء" تعدی کے لئے ہے ای جعله سالک و و ققه ان یسلک طریق المجنة جیسا کہ ماشیہ پر مرقات سے قبل کیا ہے، اس میں یہ می احمال ہے کہ شمیر علم کی طرف راجع ہوادر باء مسبب سے الی الله له بسبب صورت میں "موصولہ کی طرف عا کہ شمیر کو مقدر ما نتا پڑے گا تقذیر اس طرح ہوگی: "مَسَهَّلَ الله له بسبب العلم طریقاً الی المجنة۔

قول د: "وان السملات که لتضع النع" فرشتوں کے پراور بازو بچھا نے کا مطلب کیا ہے؟ تواس بارے میں متعدداتوال ہیں: ایک یہ کہ اس کے قدموں کے نیچ بطور فرش بچھا دیتے ہیں یہ معنی حقیقی ہے اور اس کے ماننے میں استبعاد نہیں ہونا چاہئے ۔ دوسرااحتمال بمعنی تواضع کے ہے۔ تیسرا مطلب یہ ہے کہ سیاصین فرشتے جب طالب علم کود کھتے ہیں تو اپنا سفر اور طیران منقطع کر کے اس کے گردجت ہوجاتے ہیں، یہ دونوں آخری معنی تاویلی ہیں۔ قبول ہے: "وف صل العالم علی العابد" مراد بے عمل عالم اور محض جائل عابر نہیں بلکہ فرض عبادت تاویلی ہیں۔ قبول ہے: "وف صل العالم علی العابد" مراد بے عمل عالم اور محض جائل عابر نہیں بلکہ فرض عبادت اور ضروری علم جن میں دونوں شریک ہوں اس کے بعدایک شخص نفلی عبادت میں مصروف رہتا ہے جیسے نفلی نمازیں اور روز ہے جبکہ دوسرات کے رف العلم اور اس کی نشر واشاعت میں لگار ہتا ہے تو ان میں سے عالم کا درجہ بہت بلند ہے اور روز رے جبکہ دوسرات کے میں گذری ہے۔ یا در ہے کہ سن بھی فرائفن میں شامل ہیں بطور تا ہے کے۔

قوله: "كفضل القمر الخ" الم من دواجم كتول كي طرف اشاره ب: ايك يدكه چونكه جا ندكانور

سورج سے ماخوذ ہوتا ہے اس لئے محمود علم وہی ہے جونو رنبوت جو بمز لیٹس کے ہے سے ستفا دہو۔ دوسرانیہ کہ امت میں جو بھی جتنا بھی بڑا ہوگا مگروہ مقام نبوت سے پھر بھی بہت یہ بھی ہوتا ہے کیونکہ سورج اور چا ندکی روشنی میں جو تفاوت ہے وہ سب برعیاں ہے جبکہ ستار ہے وہ بہت پیچھے ہیں۔

صديث آخر: "قال يزيدبن سلمة يارسول الله اانى سمعتُ منك حديثاً كيثراً الله ان يُنسِى (يُنسِيَنى) أوَّلَه آخِرُه فَحَدَّثنى بكلمة تكون جِمَاعاً اقال: إتّقِ الله فيما تعلما". (ليس اسناده بمتصل....مرسل)

حفرت برید بن سلمدرضی الله عند نے فرمایا اے الله کے رسول! میں نے آپ سے بہت ی احادیث بی بیات کی احادیث بی بیات کی احادیث بی بیل کی میں ڈرتا ہوں کہ ان کا آخر مجھے سے ان کا اول میمال دے گالبذا کوئی ایسی حدیث مجھے سے فرماد تیجئے جوجامع ترین ہوآئے نے فرمایا: ڈروتم اللہ سے ان چیزوں میں جن کوتم جانتے ہو (یعنی احکام)۔

امام ترفديٌ في اس مديث كومرسل كهاب مرابن العربيُّ عارضة الاحوذي بي كلي كهاس مديث كم عن كماس مديث كم عن معنى حج بي " ولكن المحديث صحيح المعنى النع".

قوله: "ان يُنسِى اوله آخره "إنساء سي بمعنى مُعلا دينے كے ہادله اسكامفعول به اورآخره فاعل بينى كثرت كى وجه سے وه سب احادیث يا در كھنامير بے لئے مشكل ہو گيا ہے۔ قول مد: "جِ مَساعاً" بروزن كتاب جوتمام خير و بھلائى كو يجاكر نے والى ہو۔ قول مد: "في ما تعلم" بينى جوجو ترام بيں اور تمہيں معلوم بيں ان سي بجوادر جواوامر بيں اس پر عمل كرو، يعنى بقدراستطاعت، جيسا كم يجھے گذرا ہے۔

صديث آخر: ـ "خصلتان لاتبعت معان في منافق حُسنُ سمتِ ولافقهُ في الدين". (غريب)

دوخوبیاں ہیں جوکسی منافق میں جمع نہیں ہوتیں عمرہ اخلاق اور دین کی سمجھ داری۔

قوله: "لاتجتمعان" يقضيه البه بدونول كى عدم موجودگى كى صورت يل بھى صادق باورايك مودوسرانه مو پھر بھى صادق بي كونكه فضائل كے مودوسرانه مو پھر بھى صادق بيم مطلب يہ ب كه يدونوں باتيں منافق يس يجانبيں موسكتى بيں كيونكه فضائل كے لئے كل كى عمد كى چاہئے جومنافق مين نييں ہے۔ قوله: "سمت" بروزن شس اخلاق، سيرت اورا يقطريقه وسليقه كو كتے بيں ۔ قوله فى الدين" لاتا كيد كے لئے ہے جيسے غير السم خصوب عليهم ولا الضالين ۔

حدیث آخر: حضرت ابوامامہ باہلی سے مروی ہے فرماتے ہیں کہرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں دوخصوں کا تذکرہ کیا گیا،ایک ان میں سے عبادت گذارتھادوسراعالم تھا،تورسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: 'فسضل المعالم علی العابد کفضلی علی ادنا کم ''عالم کی فضیلت عابد پرالی ہے جیسی میری افضلیت تم میں سے معمولی آدمی پر ہے پھررسول الله صلی الله علیہ وسلم نے (مزید) فرمایا بے شک اللہ رحمتیں نازل فرما تاہے اور فرشتے اس کے اور زمین و آسانوں والے یہاں تک کہ چیونی اپنے سوراخ میں اور حی کہ مجھلیاں بھی لوگوں کو فیرکی تعلیم دینے والے (عالم) کے لئے دعائے مغفرت کرتے ہیں۔ (حسن فریب حیج)

قوله: "رجلان احده ماعابدوالآخو عالم" اس كامطلب عرض كيا جاچكا ب كهمرادزا كدهم ومل محل محمل وخرض عمل وخوس كي ال مونا ضروري ماس مين تفاوت يا تفاضل مراذبيس ہے۔

اس مدیث سے عالم کی نفلیت نمایاں طور پر معلوم ہوتی ہے امام ترفری نے فضیل بن عیاض کا تول نقل کیا ہے کہ باعمل عالم جولوگوں کو خیرو بھلائی کی تعلیم دیتا ہے عالم بالا میں برد افخض پکاراجا تا ہے بعنی بردی شان دشوکت سے یادکیا جا تا ہے اور فرشتے اس کا تذکرہ ادب واحر ام سے کرتے اور اسے قدر کی نگاہ سے دیکھتے ہیں۔ اور سیاس لئے کہ وہ خلتی خدا کو صرف گندے تالا بول سے صاف ستھرے تالا ب کی طرف رہنمائی بی نہیں کرتا بلکہ مخلوق کو صاف شخر الآب حیات ابدی مہیا کرتا ہے اس سے بردی خدمتِ خلتی و خیرخوابی کیا ہو سکتی ہے اس کے رفع درجات کا باعث بن جاتی ہے۔

قوله: "فضل العالم على العابد" ان دونول ش الف لام جنس كے لئے ہے۔ قوله: "كفضلى على ادناكم " اس ميں زبردست مبالغة فرمايا ورنديوں فرماتے كة" كفضلى على اعلىٰ كم " تب بحى مقصد پورا بوجا تا اور وہ بحى مبالغة بى بوتا مرعالم باعمل كى شان كوخوب نماياں كرنے كے لئے فرمايا على ادناكم مقصد پورا بوجا تا اور وہ بحى مبالغة بى بوتا مرعالم باعمل كى شان كوخوب نماياں كرنے كے لئے فرمايا على ادناكم معمد بيتى يكون منتها ه المجنة". (حسن

مؤمن ہرگزسیرنہیں ہوتا ہے خیر سے جس کودہ سنتا ہے یہاں تک کداس کی انتہا وجنت پر ہوجاتی ہے۔ قولہ: ''لن یشب الموقون من خیریسمعد'' المؤمن میں الف لام عہد کے لئے ہے مراد کامل مؤمن ہے اور خیرسے مراد علم ہے، خواہش چاہے محسوسات کی ہویا معقولات کی میں بھی بھی دنیا میں پوری نہیں ہوسکتی اس کی جمیل کی داحد جگہ جنت ہے کیونکہ دہاں سب کچھ ہے، یہاں حدیث میں اگر چہ جنت سے مرادموت ہے کیونکہ موت پر مخصیل علم کاسلسلہ منقطع ہوجاتا ہے تاہم عالم کی قبر کو یااس کی جنت ہے اس لئے تعبیر جنت سے کردی بخلاف منہوم فی الدنیا کہ اس کی خواہش کے منتہاء کے لئے قبر کی مٹی ذکر فرمائی ہے"و لایسمسلا ف الاالتواب" جیسا کہ ابواب الز ہدیں گزراہے۔

حدیث آخر: "الکلمة الحکمة صالة المؤمن فحیث وَجَدَهَافهواَ حَقَ بها". (غریب)
دانشمندی کی بات مومن کی کھوئی ہوئی چیز ہے، پس وہ جہال بھی اس کو پائے تواس کا زیادہ ستحق ہے۔
قولمه: "المحلمة الحکمة" حکمت دانشمندی کو کہتے ہیں اس کا حمل واطلا ت کلمہ پرمبالغة ہے جیسے
زیدعدل ایک روایت میں الکامة الحکیمة آیا ہے وہاں اسادی ازی ہے کیونکہ حکیم صاحب حکمت ہوتا ہے ایک
روایت میں کلمة الحکمة اضافت موصوف الی الصفة کے ماتھ آیا ہے۔

بہرحال حدیث کا مطلب سے ہے کہ حکمت کی بات مومن کی گمشدہ چیز کی مانند ہے البذاوہ جس کے پاس اسے پائے اس پڑمل کرے اس کوندد کیھے کہ یہ بات میں کس سے سُن رہا ہوں بلکہ بات کی قدر کود کیھے یا مطلب سے ہے کہ بھی حکمت کی بات ایک مخص کے پاس ہوتی ہے گروہ اس کی الجیت نہیں رکھتا مگر جب حکیم کوملتی ہے تو وہ محویا اس کا مستحق ہے اسے لاقط سے لے لے۔

اس میں ایک رمزیہ بھی ہے کہ جس کے پاس پھیملم ہے تو وہ اسے ضائع نہ کرے اور بُخل بھی نہ کرے بلکہ دوسر وں تک پہنچائے کا کہ دوسر وں تک پہنچائے کا کہ دوسر وں تک پہنچائے کا کہ دوسر وں تک پہنچائے تا کہ دوسر وں تک پہنچائے تا کہ دوسر وں تک پہنچائے اس سے فائدہ اٹھائے بعینہ اس طرح جیسے کسی کو لقطہ مل جائے تو وہ اس کی حفاظت کرے اور مالک تک پہنچائے خواہ وہ چیز خسیس ہویا نفیس۔

فائدہ:۔حدیث کے ظاہرہے یہ معلوم ہوتا ہے کہ قائل کونہ دیکھاجائے بلکہ قول کودیکھاجائے اگر بات سے ہوتا ہے کہ قائل کونہ دیکھاجائے اگر بات سے ہوتا ہے کہ کون ک بات سے ہونان لینی اور لے لینی بعنی قبول کر لینی چاہئے ،گر یا در ہے کہ یہ کام فقط ماہر ہی جانتا ہے کہ کون ک بات سے ہے ہورکن وزنی ہے؟ اور کون کی فلط ہے؟ جیسے جو ہری، جواہرات کوجا نتا ہے عام آ دمی نہیں جانتا ہی طرح عام آ دمی کو بیدلازم ہے کہ متند عالم دین کی تقلید کرتا رہے وہ از دخویہ فیصلہ نہیں کرسکتا ہے کہ فلاں کی بات سے ہے اور فلاں کی فلط کیونکہ اس کے پاس باتوں کو پر کھنے کی کسوئی نہیں ہوتی ہے۔

اس مقصدی طرف اشارہ کرنے کی غرض سے امام ترفدیؓ نے اس مدیث کو بجائے ابواب الایمان کے ابواب الایمان کے ابواب الایمان کے ابواب الایمان کے ابواب العلم میں ذکر فرمایا کہ میکام علماء کا ہے۔ (تدیر)

ابواب الاستنبنان والآداب

عن رسول الله صلى الله عليه وسلم (اجازت عليه وسلم (اجازت عابن اوراجهي عادتون كابيان)

استیذان کے معنی اذن لینی اجازت طلب کرنے کے ہیں جس کے مختف مراتب ہیں جوان ابواب میں بیان ہوں گے،اور آ داب،ادب کی جمع ہے اصل میں بُلا نے اور دعوت دینے کو کہتے ہیں چونکہ زصال جمیدہ اور اخلاقی حسنہ بھی اجھے کا موں اور اچھی باتوں پر آ مادہ کرتے ہیں کو یا اچھی عادتوں کی دعوت دیتے ہیں اس لئے زصال جمیدہ کو آ داب کہاجا تا ہے عرف عام میں ایسی عادتوں کوسلیقہ مندی سے بھی تجبیر کیا جا تا ہے۔

باب ماجاء في افشاء السلام

(سلام کی تروت اور عام کرنے کے بیان میں)

"عن ابسى هريسرة قسال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: والذى نفسى بيده الاتدخلوا الجنة حتى تؤمنوا، والاتؤمنواحتى تحابوا الكادُلكم امراً اذا انتم فعلتموه تحاببتم! أفشو االسلام بينكم". (حسن صحيح)

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عند فرماتے ہیں کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے فرمایات ہے ہاں کی جس کے قبضے میں میری جان ہے تم جنت میں داخل ہیں ہوسکو سے جب تک کہ ایمان نہ لاؤ! اور تم مؤمن (کامل) نہیں بن سکتے ہو جب تک آپس میں محبت نہ کرو! کیا میں تمہیں ایساا مرنہ بتاؤں کہ جب تم اس پڑمل کرو محے تو ایک دوسرے سے محبت کرو ہے؟ آپس میں سلام کوعام کرو!

تشریخ: قوله: "لاتدخلوا" نبی بمعنی فی ہے لین لاتدخلون البحنة النع قوله: "ولات منوا" سابقہ جمل توبد بہی ہے کیونکہ بغیرایمان کے جنت میں جانا محال ہے اور اس میں کسی کواختلاف نہیں۔ یہاں وقت ہے کہ اس حدیث میں ایمان سے مرادش ایمان ہوا وراگر کامل ایمان ہوتو مطلب یہ ہوگا کہ

جب تکتم کاللمؤمن نہیں بوگے اس وقت تک اکرام کے ساتھ جنت میں نہیں جاؤگے یا دخول اولی نصیب نہیں ہوگاعلی ہزاد دسرے جیلے کا مطلب بیہوا کہ جب تکتم ایک دوسرے سے محبت نہیں کروگے اس وقت تک کامل مؤمن نہیں بن سکتے۔

عارضة الاحوذی بین ہے کہ اللہ اور رسول اللہ علی اللہ علیہ وسلم کی مجبت تو شرط ایمان ہے ہی اور چونکہ اللہ کو یہ بات پندہے کہ لوگ (مسلمان) آپس بین ایک دوسرے سے مجبت کریں اس لئے حدیث باب بین اسے مداوی ایمان قرار دیا۔ پھر اللہ سے مجبت یہ ہے کہ دل بین اس کے ہرا ہرکوئی دوسری محبت نہ ہواوراس کے حکم کے مساوی کسی بات کونہ سمجھ (چہ جائیکہ اس سے اعلی تصور کرے) نی صلی اللہ علیہ وسلم کی محبت کا مطلب یہ ہے کہ لوگوں بین ان کے مقام کے ہرا ہر کسی کا مقام نہ سمجھا جائے۔ اسی طرح ان سے محبت سب لوگوں سے ہو ھر کر ہو۔ مؤمن کی مجبت یہ ہے کہ جواپنے لئے پند کرے وہی دوسرے مؤمن کے لئے بھی پند کرے لینی آدمی جتنا اپنا خیر خواہ ہے اتنا بی دوسرے کا بھی ہور دیے ۔ پھر آپ نے اس محبت کے حصول کا طریقہ ارشاد فر مایا کہ آپس بین سلام کوفروغ دیں کیونکہ ایک تو یہ باہمی تعلق کا پختہ ذریعہ ہے ، دوم اس سے دین کے شعائراً جا گر کرنے بین غیر معمولی مدوماتی ہے ، اس سے اہل ایمان بین وصدت و پچہتی پیدا ہوتی ہے جس سے ان کواورا یمان کو تقویت میں مقامات سلام کرنے اور کفار کوذات ہوتی ہے۔ اس صدیف بیس ملام کورواج دینے کا حکم ہے تا ہم تقریباً ایس مقامات سلام کرنے سے مستمنی ہیں۔ (دیکھیے تشریباً ایس مقامات سلام کرنے سے مستمنی ہیں۔ (دیکھیے تشریباً ایس مقامات سلام کورواج دینے کا حکم ہے تا ہم تقریباً ایس مقامات سلام کرنے ہیں۔ دوسر تا ہم تقریباً ایکس مقامات سلام کرنے ایس سے دین کے میں کورواج دینے کا حکم ہے تا ہم تقریباً ایکس مقامات سلام کرنے ایس سے مستمنی ہیں۔ (دیکھیے تشریباً ایس مقامات سلام کرنے : ا

باب ماذكرفي فضل السلام

(سلام كى نضيلت كابيان)

"عن عمران بن حُصين ان رجلاً جاء الى النبى صلى الله عليه وسلم فقال: السلام عليكم ورحمة الله عليكما فقال السلام عليكم ورحمة الله فقال النبى صلى الله عليه وسلم "عشرون" ثم جاء اخرفقال: السلام عليكم ورحمة الله فقال النبى صلى الله عليه وسلم "فلاثون". (حسن غريب)

حضرت عمران بن حصین سے مروی ہے کہ ایک فخص نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوا اور کہنے لگا السلام علیم! ۔ تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: دس (نیکیاں) ہو گئیں (بعنی جواب دینے کے بعد فرمایا کہ

اس کودس نیکیاں مل کئیں) پھرایک اور خص آیااس نے کہاالسلام علیم ورحمۃ اللہ ،سونمی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: بیس (نیکیاں کھی کئیں) پھرایک تیسر افخص آیااس نے کہا: السلام علیم ورحمۃ اللہ و برکاتہ پس نمی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: تمیں (ہوگئیں)۔

تشری : چونکر آن حمیدین ضابطه بیان ہواہے 'من جاء بالسحسنة فله عشو امثالها''که ایک نیکی کے بدیا وی کوش خری ارشاد فرمائی که ایک نیکی کے بدیا وی کوش خری ارشاد فرمائی که اس نے ایک ہی جملہ میں سلام اداکیا جبکہ دوسرے نے دوجملوں میں لپذاوہ ہیں کا مستحق ہوااور تیسرا تین جملوں کی وجہ سے تیں نیکیاں کمانے میں کامیاب ہوا۔

اس حدیث پاک سے بیمعلوم ہوا کہ سلام پر ورحمۃ الله وبرکانہ کااضافہ متحن ہے اور چونکہ اللہ نے فرمایا ہے کہ وا ذائحیے ہے ہے ہے معلوم ہوا کہ سلام کیا جائے کہ وا ذائحیے ہے ہے ہے ہے ہے ہوا باحسن منھااور دو کھا "۔(النساء: آیت: ۸۸) لین اگر تہیں سلام کیا جائے تواس سے بہتر الفاظ میں جواب دویا ای طرح کا جواب دوا یعنی سلام پراضافہ کرویا کم اذکم وہ کلمات سلام لوٹا دو علی بدااگر کوئی سلام میں کہالسلام علیہ متوجواب میں وعسلیہ میں کہا اسسلام ورحمۃ الله یا کم از کم وعلیہ کم کرنا چاہئے بلکہ بہتر یہ ہے کہ جواب میں کہا جائے وعلیہ کم السلام فرور کہددے، اس آیت میں تحیہ سے مراد سلام بوایا کو بھی پر افظ شامل ہے۔

تاہم ان دوکلموں کے اضافہ کے علاوہ کس تیسر ہے کلمہ کا اضافہ بھی مستحس ہے؟ تو تحفۃ الاحوذی میں فتح الباری کے حوالے سے پچھ ضعیف احادیث نقل کر کے لکھا ہے کہ ابن عمر و برکاتہ کے بعد پچھ کلمات کا اضافہ نیزباب کی حدیث کے بعض طرق میں بیاضافہ ہے کہ ایک چوشے خص نے آکر سلام کیا اور ومنفرتہ کا اضافہ کیا تو آپ نے فرمایا: ''اربعون''یعنی چالیس نیکیاں ہو گئیں، پھراس پرتبھرہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ آگر چہ یہ احادیث ضعیف ہیں مکران کے مجموعہ سے کم از کم جواز ثابت ہو سکتا کہے۔ واللہ اعلم

باب ماجاء في أنَّ الاستيذان ثلاث

(اجازت تین مرتبه تک طلب کرنی چاہئے)

"عن ابى سعيد قال اِستأذن ابوموسى على عمرفقال: السلام عليكم! أأدخُلُ؟؟ فقال عمر: "واحدة"ثم سَكَتَ ساعةً ثم قال: السلام عليكم إأادخلُ؟ فقال عمر: "ثنتان"ثم سَكَتَ ساعةً فقال السلام عليكم الآدخلُ ؟ فقال عمر: "ثلاث" ثم رجع فقال عمر للبوابِ ماصَنَع ؟ قال زَجَع قال عَلَى به فلماجاء وقال ماهذا الذي صنعت ؟ قال : "السنة "قال السنة ؟ والله لَتَاتِينتي على هذا ببرهان وبَينة ولافعكن بك قال فاتاناونحن رُفقة من الانصار فقال: يامعشر الانصار اللستم اعلم الناس بحديث رسول الله صلى الله عليه وسلم ؟ الم يقل رسول الله صلى الله عليه وسلم ؟ الم يقل رسول الله صلى الله عليه وسلم ؛ الاستيذان ثلاث فإن أذِنَ لَكَ والا فارجع ؟ فجعل القوم يُمازحونه قال ابوسعيد شم رفعت رأسى اليه فقلت مااصابك في هذامن العقوبة فاناشريكك قال فاتى عمر فاخبره بذالك فقال عمر: ماكنتُ علمتُ بهذا" . (حسن صحيح)

حضرت ابوسعید خدری فرماتے ہیں کہ ابومویٰ (اشعری رضی اللہ عنہ) نے حضرت عمر (رضی اللہ عنہ) سے اجازت مانکی (بایں صورت کہ) کہانا السلام علیم "کیامیں اندرآ سکتاموں؟ توعر نے فرمایا ایک بار (اجازت ما تکی) پیمروه کچھ دریاخاموش رہے پیمرکہا''السلام علیم'' کیامیں اندرآ جاؤں؟ تو عمر نے فرمایا دوہوئیں، چنانچهوه پحر پچهدريپ كمرے رہے پحر كہنے ككے "السلام عليكم" كيا ميں اندرآ سكتا ہوں؟ توحضرت عمر نے فرمايا: تین بار ہو کیں ، پھر ابوموی "واپس چلے مے ،پس عمر فے اپنے دربان سے کہا: انہوں نے کیا کیا؟ دربان نے کہادہ لوٹ مجئے ،حضرت عمر نے فر مایا جاان کومیرے پاس لاؤا چنانچہ جب وہ آئے ان کے پاس تو حضرت عمر ا نے بوچھا میتم نے کیا کیا؟ (یعنی کیول واپس چلے گئے؟) انہوں نے جواب دیا کہ سنت کی رُوسے واپس میاہوں۔حضرت عمر نے فرمایا بیسنت ہے؟ بخداضروری ہے کہ یاتوتم اس برگواہ (دلیل) لاؤ کے یا پھر میں حمهیں نمونہ عبرت بنا دوں گا! حضرت ابوسعیر ظرماتے ہیں کہوہ ہمارے یاس آئے جبکہ ہم انصار ایک گروہ کی شکل میں بیٹے ہوئے متے (لیمن کچھلوگ ل كربیٹے تے) اس انہوں نے كہااے كروہ انسار كے! كياتم رسول الله سلى الله عليه وسلم كي حديثول كوسب سے زيادہ جانے والے نہيں ہو؟ كيارسول الله صلى الله عليه وسلم نے نہيں فرمايا ہے كه اجازت تين مرتبه طلب كى جائے - پس اگراجازت مل جائے منہيں (تو داخل ہو) ورنہ واپس چلے جاؤ! پس لوگوں نے (ان کو پریشان دیکھ کر)ان پر ہنسنا شروع کیا ابوسعید خدریؓ فرماتے ہیں کہ پھر میں نے اپناسرا تھا کر ان کی طرف (ویکھا) اور کہا آپ کواس مسلد میں جوہزا ہوگی میں اس میں آپ کے ساتھ برابرشر یک رہوں گا، رادی کہتا ہے کہ ابوسعید طعفرت عمر کے پاس آئے اور انہیں بیصدیث سنائی ، پس حضرت عمر نے فر مایا مجھے بدبات معلوم نہیں تھی (یعنی کہ تیسری مرتبہ اجازت نہ ملنے کی صورت میں واپس جانا جاہے اور مزیدا صرار نہیں

كرناجاية)_

جولوگ مدیث پر اگر کے سے جان پھواتے ہیں ان کو بہانہ ل کیا اور کہنے گئے کہ حضرت عرقے نے ابوموی اشعری استعری کا پابنداس لئے بنایا کہ ان کی مدیث خبروا حدیثی جو جت نہ تھی ... گریہ تا ثر قطعا غلط ہے۔ چونکہ بے شاروا قعات و دلائل اس پرصری ناطق ہیں اور ثبوت کے لحاظ ہے وہ دلائل صحیح بھی ہیں کہ تمام صحابہ کرا م جشمول حضرت عمر خبروا حدکو جمت و دلیل تسلیم کرتے تھے اس لئے حضرت عمر کے اس جملے کی تا ویل صحیح ضروری ہے۔ ابن العربی نے عارضہ الاحوذی میں اس کی سات وجو ہات بیان کی ہیں ، جن میں سے ایک تو جہدیہ ہے جس کو امام نو وی نے شرح مسلم میں بھی ذکر کیا ہے کہ حضرت عمر کا کو بیا تدیشہ لاحق ہوا تھا کہ کہیں لوگ اپنے ذاتی مفادات کے لئے احادیث بنانے یابیان کرنے کی جمارت نہ کریں۔ یہ خوف ان کومنافقین ومبتد میں کی طرف ہے حسوس ہونے لگا تھا حضرت الوموی ایا صحابہ کرام میں سے کی ہے متعلق ہرگز نہ تھا کا وحاشا وہ صحابہ کرام کے بارے میں غلط تصور بھی بھی نہیں کرسکتے سے لیکن ان کی وساطت سے دوسروں کو سبق وہ صحابہ کرام کے بارے میں غلط تصور بھی بھی نہیں کرسکتے سے لیکن ان کی وساطت سے دوسروں کو سبق پر حسانا چاہتے تھے لیکن ان کی وساطت سے دوسروں کو سبق پر حسانا چاہتے تھے لیکن ان کی وساطت سے دوسروں کو سبق پر حسانا چاہتے تھے لیکن ان کی وساطت سے دوسروں کو سبق

"فَارَادسد الباب خوفاً من غيرابي موسى كاشكاً في رواية ابي موسى فانه

عند عمر اجل من ان يظن به ان يُحَدِّث عن النبى صلى الله عليه وسلم مالم يقل بل ارادز جرغيره بطريقه الخ". (نووى برسلم ص:٢١١ ح:٢)

بالفرض اگر مان لیاجائے کہ حضرت عمر الله کا مقصود تحقیق ہی کروانا تھا تو پھر کہاجائے گا کہ بیتحقیق خرواحد کے غیر معتبر ہونے کی وجہ سے نہتی کیونکہ جب ابوموی اور ابوسعید رضی الله عنها حضرت عمر کے پاس آئے اور حضرت ابوسعید نے روایت بیان کی تو یقینا وہ خبر واحد کے درجہ سے نہیں بڑھی کیونکہ خبر متواتر سے کم بہر حال خبر واحد ہے بلکہ وہ مزید اطمینان کے لئے ایسا کرنا چاہتے تھے اور اطمینان بالائے اطمینان تو ہوسکتا ہے جیسا کہ یقین بالائے یقین ہوسکتا دولکن لیطمئن قلبی ''۔ (اللیة)

قوله: "فجعل القوم يمازحونه" مسلم كى روايت مي ب: 'فجعلو ايضحكون" اس سابن العربي في يم بن فجعلو ايضحكون" اس سابن العربي في يم يشانى دوركر في كاطريقه كس كي پاس موجود بوتو (كي من من المن الله الله كي ا

قوله: "فقال عمر ما كنت علمت بهذا" لين مجهد يمعلوم ندتها كرتيسرى مرتبه اجازت ندسك كل صورت مين والپس لوثا چائي حسلم كى روايت مين به كهانهول نفر مايا: "خفى عكى هذا من امور سول الله صلى الله عليه وسلم الهانى عنه الصفق بالاسواق "لين تجارت ك شخل كى وجه سه يدمسك مجه پر مخفى را امام ترزي ن اس كى وجه كى طرف اشاره كيا به كه چونكه مفرت عرض نه تين بار اجازت طلب كي تي الله عليه وسلم الله عليه وسلم في اجازت دے دى تقى - تدبر

اس مدیث سے استید ان کی اہمیت معلوم ہوئی کہ بغیرا جازت کے کسی کے گھر میں یا خاص طور پرد ہنے اور تخری نے گھر میں بیا خاص طور پرد ہنے اور تخری نے گئے میں نہیں جانا چاہئے بلکہ اجازت طلب کرلی جائے اگرا جازت الل جائے تو ٹھیک ہے ور نہ داخل ہونے کی ضدنہ کی جائے۔ استید ان کی مشروعیت پراجماع ہے اور قرآن وسنت سے بھی صراحثا خابت ہے۔ چنا نچہ ام تر نہ کی کا یہ باب اس مقصد کے لئے ہے اور قرآن پاک کی سور ہ نور کی آیات میں بھی استید ان کا تھم ہے:

"ياايهاالذين امنوالاتدخلوابيوتاًغيربيوتكم حتى تستأنسوا وتسلّموا على اهلها ذالكم خيسرلكم لعلكم تذكّرون...الىوان قيل لكم

ارجعواف ارجعوا....الى....ليس عليكم جناح ان تدخلو ابيوتاً غير مسكونة فيهامتاع لكم". (سورة نور: ٢٩،٢٨،٢٤)

اس کی تفسیر میں ابن کیر کھتے ہیں کہ زمانہ جا ہلیت میں اجازت لینے کارواج نہیں تھا بلکہ لوگ ہوں ہی خاموثی سے گھر میں داخل ہوجاتے اور کہتے میں آگیا وغیرہ ،جس کی وجہ سے صاحب خانہ کو تکلیف ہوتی ۔ اللہ تبارک وتعالی نے اس رسم کوختم کیا اور استیز ان کا حکم دیا۔ چونکہ استیز ان کا مقصد دوسروں کے عیوب سے نظر بچانا ہے اس لئے ملا قاتی مخص کو دروازے کے سامنے کھڑ انہیں ہونا چاہئے بلکہ وہ وائیں یا بائیں ایسی جگہ کھڑ ا

پھراجازت پہلے لے یاسلام پہلے کرے تواس میں تین اقوال ہیں: ایک اختیار کا دوسرا پہلے استیذان کا تیسراجواضح ہے پہلے سلام کرے پھراستیذان۔ مندرجہ بالاآیت میں حتی تنتا نسواکا یہی مطلب ہے کہ حتی تنتا ذنوالیتی بغیراجازت کے داخل مت ہو، البذااگر تین باراجازت طلب کرنے کے باوجوداجازت نہیں ملی حالانکہ صاحب خانہ کو استیذان کاعلم ہوایاس نے صریح الفاظ میں ملنے سے معذرت کرلی تو پھراضح قول کے مطابق واپس لوٹ جانا جا ہے جیسا کہ باب کی حدیث میں ہے۔

تاہم استیذان ایسے مواقع پرستحب ہے جہاں آدی بغیراجازت کے ملناپندنہیں کرتا مثلاً گھر میں یاکسی ادارے یا خانقاہ کے خصوص کمرہ میں جہاں آدی اپنے ذاتی معمولات میں معروف ہو مثلاً ذاتی کام یاکوئی ایسا کام ہوجس کے لئے تنہائی ویکسوئی درکارہوجیسے تصنیف کا وقت ہویاد میرو خلا نف ہوں یا کمپنی کا حبابی کام وغیرہ ہواگرہ وہ عام ملنے کی جگہ ہوتو پھراجازت لینے کی ضرورت نہیں اس طرح آپنے گھر میں داخل ہوتے وقت بھی اجازت کی ضرورت نہیں البتہ اپنی آمدی اطلاع کے لئے کوئی عمل ہونا چاہے جیسے درواز کے فوراز ورسے کھولنا یا کھانسنا وغیرہ تاکہ گھر والوں کو آگاہی ہوکیونکہ جیسے مرواچا تک داخل ہونے والے سے نفرت کرتے ہیں تو عورتیں بھی غیروں کی اپنی حالت پر آگاہی کو کر امانتی ہیں ۔غرض حسن معاشرت کا تقاضا ہے کہ اجازت یا کوئی اطلاع آمد کی ہوئی چاہوں دوازہ الگ ہے یاس کا دروازہ الگ ہے اورراستہ گھر سے نہیں گذرتا تو مہمان کوا یہ جو گھر سے الگ ہے یا اس کا دروازہ الگ ہے اورراستہ گھر سے نہیں گذرتا تو مہمان کوا یہ دفعہ داخل ہونے کی اجازت سے مظہر نے کے باقی اوقات میں ہر بارواخل ہونے کی اجازت طلب کرنالازی نہیں ۔کذائی تفیر این کیر

پھراگر گھر براہویا جس کی اجازت درکارہے اوروہ دروازے سے اتنا دورہو کہ اس تک نہ سلام پنچے اور نہ ہوا گھر براہویا جس کی اجازت درکارہے اور نہ استید ان کے جورائج طریقہ ہووہ بھی بروئے کار لانا جائزے مثلاً تھنٹی گئی ہوتو اس کو بجا کرا پی آمد کی اطلاع دے اور جب کوئی نکلے تو سلام کرے اجازت مائے۔

باب كيف ردالسلام

(جواب سلام كابيان)

"عن ابى هريرة قال دخل رجل المسجدورسول الله صلى الله عليه وسلم جالس فى ناحية المسجد فصلى الله عليه وسلم: فى ناحية المسجد فصلى الله عليه وسلم: وعَلَيكَ... اِرجِع فَصَلٌ فانك لم تُصَلّ... فذكر الحديث بطوله". (حسن)

حضرت الوہريرة سے روايت ہے كہ ايك فخص متحدين داخل ہوا جبكہ رسول الله صلى الله عليه وسلم متحدك ايك محضرت الوہرية سلم متحدك ايك فخص متحدث الله عليه وسلم متحدك ايك كوشه ميں تشريف فرما يتح لس اس نے نماز پڑھى كھرآ كرآ پ كوسلام كيا، تورسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمايا: ' وعليك' واليس جاكردوباره نماز پڑھ كيونك تم نے (كامل) نماز نہيں پڑھى۔

تشری : قوله: "و حل د جل" به صفرت خُلاً وبن رافع رض الله عند تقد قوله: "و عليك" الم م ترفری فی الله عند تقد قوله: "و عليك "الم م ترفری فی اس باب ميل به حديث ذكر فرما كه به كوشش فرما کی به كدسلام که جواب ميل "و عليك " يحی كانی به يعنی اگر چه افضل پوراسلام به اوراس سے زيادہ افضل اس پر رحمت و بركت کی دعاء كااضا فد ہے جيسا كه يحي عرض كيا جا چکا ہے كين اكتفاء على الاقل بحی جا تزہے گويا فد كورہ حديث ميل سلام كا به جواب بيانِ جواز ك يحي عرض كيا جا چہا ہے كئين اكتفاء على الاقل بحی آئی ہے جس میں ہے: "و عسليك السلام" للإ الرق تا كہ تا ہوكات بيہ كرابن العرب" نے فرمايا ہے كمكن ہے كہ آپ نے اس طرح" و عليك "كمكن ہے كہ آپ نے اس طرح" و عليك "كمكن ہے كہ آپ نے اس طرح" و عليك "كمكن ہے كہ آپ نے اس طرح" و عليك "كمكر جواب اس لئے ديا ہوكہ اس مختص نے نماز كامل نہيں پر می تھی" و يہ حسمل انه لم يكمل عليه المسلام لانه لم يكمل صلاته" (عارضة الاحدی)

غرض امام ترندی کا استدلال کل نظر ہے، آیک روایت میں ہے کہ آپ نے ابتداء لفظ 'عسلیک السسلام '' سے ممانعت فرمائی ہے کہ بیسلام تحیۃ المیت ہے لیت ہے لامی کا دت زمانہ جا المیت میں بیتی کہ صاحب قبر کواس طرح سلام کرتے تھے۔ یہ بھی ہوسکتا ہے کہ تحیۃ المیت سے مراد جا المیت کا سلام ہواگر چہ وہ آپس

كاسلام كرنا موكيونكه جابل بهى ميت كى طرح موتاباس لئے"عليك السلام" سے بچنا چاہئے۔

شرح مسلم ص:۲۱۲ج:۲ میں امام نوویؒ فرماتے ہیں کہ ابتداء بالسلام بالاتفاق سنت ہے جبکہ اس کا جواب فرض (واجب) ہے پھراگر کسی نے جواب میں 'علیم' 'بینی بغیرواؤکے کہددیا توبالاتفاق بیتا کافی ہے اوراگر''وعسلیس کسم''واؤک ساتھ کہددیا تو بیجائز ہے، بینی جبیبا کہاوپرگزراہے (کہ خلاف اولی ہے) اور جواب میں''وکیکم السلام'' جمع کا صیغہ لائے تا کہ دونوں فرشتوں کو بھی شامل ہوجائے۔

پھرسلام کرتے وقت 'السلام علیکم 'الف لام کے ساتھ کہنا چاہئے اوراس میں دوباتوں کا خیال ہونا چاہئے: (۱) ایک یہ کہ سلام میں دوسرے کا اکرام ملحوظ ہو۔ (۲) دوم یہ کہ اس میں تواضع کا حصول ہولہذا چھوٹے بروں کوسلام کریں اور را کب پیدل پراورقلیل کثیر پر۔ راقم نے سلام کے مسائل نسبۂ تفصیل سے 'دنقشِ اخلاق'' میں ذکر کئے ہیں۔خلاصہ یہ ہے کہ جو بھی سلام کرنے میں پہل کرے گا تو اس کا تو اب زیادہ ہوگا تا ہم داخل ہونے والا بہر حال سلام میں پہل کرے۔

قوله: "فذكر الحديث بطوله" يغصلى حديث مع الشرح" باب ماجاء في وصف الصلواة " من ابواب السلوة مين گذرى ب_ (ديكھئے تشريحات ترندى ص:١١١٣ج:٢)

باب ماجاء فى تبليغ السلام (كى كاسلام پنجانا)

"عن عامرقال ثنى ابوسلمة ان عائشة حَدَّثته ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لها: ان جبرئيل يُقرِئُكِ السلام اقالت وعليه السلام ورحمة الله وبركاته". (حسن صحيح) حضرت عامردوايت كرت بين ابرسلم ي محضرت عائش في ان سے بيان فرمايا كدرسول الله سلى الله عليه وسلم في ان سے فرمايا كد جرئيل تم كوملام كمت بين سوحضرت عائش فرمايا: "وعسليسه السلام ورحمة الله وبركاته" يعن جرئيل برملام باورالله كى رحمت اور بركتين اس كى -

تشری : اس معلوم ہوا کہ جس طرح بالشافہ سلام کرتا چاہئے ای طرح بالواسطہ بھی سلام کہلوایا جاسکتا ہے۔ پھر حافظ ابن حجر نے فتح الباری میں فرمایا ہے کہ جس کی وساطت سے سلام کہلوایا جارہا ہے اگروہ پہنچانے کا التزام کرے تو وہ اس کے ذمہ امانت ہے لہذا پہنچا تالازی ہوگا اورا گروہ التزام نہ کرے تو وہ ودبیت

ہےجس کا قبول کرنا اور پھرادا کرنالازمنہیں۔

پرجب وه ذرید سلام پنچائے تو ملّغ الیدای وقت جواب دے دے اور بہتریہ ہے کہ جواب میں پنچانے والے کو بھی شامل کرے جیسا کرنسائی کی ایک ضعف روایت میں ہے کہ ایک فیض نے نی سلی اللہ علیہ وسلم کواپنے والد کا سلام کہا تو آپ نے جواب میں فرمایا: 'وعلی کی وعلی ابیک السلام ''ای طرح جب حضرت خدیجہ ' کو نی سلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت جرئیل کا'' سلام 'اللہ علیها ''پنچایا تو انہوں نے جواب میں فرمایا: ''ان اللہ عوالسلام و منه السلام و علیک و علی جبوئیل السلام ''۔ تا ہم صدیث الباب سے معلوم ہوتا ہے کہ مبلغ کو شامل کرنا واجب نہیں ورنہ حضرت عائشہ مرور' و علیک و علیه السلام النے '' فرما تیں ۔ باب کی روایت بخاری منا قب عائشہ میں ہی ہے۔

باب ماجاء في فضل الذي يبدأبالسلام

(سلام كرفي ميں پہل كرفے والے كى فضليت)

"عن ابى أمامة قال قيل يارسول الله! الرجلان يلتقيان أيُّهُما يبدأ بالسلام؟ فقال: اولاهمابالله". (حسن)

حضرت ابوامامہ سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے بوجھا کیا کہ جب دو مخص آپس میں ملیں توان میں کون پہلے سلام کرے؟ آپ نے فرمایا جوان میں سے الله (کی رحمت) کے زیادہ قریب تر ہو۔

تشری : عام طور پراییا ہوتا ہے کہ متواضع فخص سلام میں پہل کرتا ہے کیونکہ وہ اپنے آپ کو ہرایک سے کمترتصور کرتا ہے اس لئے وہ انظار نہیں کرتا کہ دوسرا جھے سلام کرے اور متواضع اللہ کی رحمت کے قریب ہوتا ہے اس لئے اس کو 'او لا هُما باللہ'' قرار دیا۔

باب ماجاء في كراهية اشارة اليدفي السلام

(سلام میں ہاتھ کے اشارہ پراکتفاء مکروہ ہے)

" عن عمروبن شعيب عن ابيه عن جده ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال:ليس

مِنّا مَن تَشَبَّهُ بغيرنا، لاتَشَبُّهُوا باليهود ولابالنصارئ فان تسليم اليهودالاشارة بالاصابع وتسليم النصارئ الاشارة بالاكفِّ". (اسناده ضعيف)

رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمايا و وقعض ہم ميں سے نہيں جو ہمارے سوا (كسى اور) كے ساتھ مشابہت اختيار كرے۔ تم مشابہت مت كرويبود كے ساتھ اور نہ ہى نصارى كے ساتھ كيونكه يبود كا سلام كرنا الكيوں كا اشارہ ہوتا ہے اور نصارى كا سلام تقيليوں سے اشارہ كرنا ہوتا ہے۔

تشری : اس حدیث سے معلوم ہوا کہ سلام کرتے وقت صرف ہاتھ کا اشارہ کا فی نہیں ہے اس سے سلام کا مقصد حاصل نہیں ہود ونسار کی کی مشابہت کی وجہ سے مکروہ ہے، البتہ آگر سلام زبان سے کر بے اور درمیان میں فاصلہ دور ہویا شور ہواور سلام سائی نہ دیے تواشارہ کر سکتا ہے تا کہ سلم الیہ کومعلوم ہوجائے کہ فلال شخص نے سلام کیا پھراس کے جواب کا بھی بہی تھم ہے۔

عارضة الاحوذى ميں ابن العربی "فرماتے بیں كه بير حديث ضعيف ہے بلكه موقوف ہے للبذا عند الضرورت اشارہ سے سلام كرنا جائز ہے يعنی زبانی سلام كے ساتھ اشارہ ملايا جاسكتا ہے۔ المحلے سے پيوستہ باب ميں اس كی تصریح ہے۔

باب ماجاء في التسليم على الصبيان

(حچو ٹے بچول کوسلام کرنے کابیان)

"عن سَيَّارِقال كنت امشى مع ثابت البُنانى فَمَرَّ على صِبيان فَسَلَّمَ عليهم فقال ثابت: كنتُ مع النبى صلى الله عليه وسلم فَمَرَّ على صِبيان فَسَلَّمَ عليهم فقال: انس كنت مع النبى صلى الله عليه وسلم فَمَرَّ على صِبيان فسلم عليهم ". (صحيح)

حضرت سیّارے روایت ہے کہ میں ثابت بُنانی کے ساتھ چل رہاتھا کہ ان کا گذر چنداؤکوں پر ہوا تو انہوں نے ان کوسلام کیا، پھر ثابت نے کہا کہ میں انس کے ہمراہ چل رہاتھا کہ وہ چنداؤکوں کے پاس سے گذر ہے تو ان کوسلام کیا پھر حضرت انس نے فرمایا کہ میں نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ جارہاتھا، جب آپ بچوں کے پاس سے گزرے تو ان کوسلام کیا۔

تشری :۔اس مدیث سے بچوں کوسلام کرنے کا استحباب معلوم ہوا تا ہم سلام کے مخاطب بچوں کی عمر

کم از کم اتن ہونی چاہئے کہ دہ سلام کی عام کلام سے تیز کرسکیں۔ پھرنسائی کی روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ آپ کامعمول نثر بیف قفا کہ انصار کے پاس تشریف لے جاتے اوران کے بچوں کوسلام کرتے اوران کے سروں پر ہاتھ مبارک پھیرتے اوران کے لئے دعا فرماتے۔ بچوں کوسلام کرنے میں تواضع کا حصول ہوتا ہے، اس سے بچوں کی تعلیم بھی ہوجاتی ہے، اوران کے بردوں سمیت پورے فائدان کی محبت حاصل کی جاتی ہے، خصوصانی صلی اللہ علیہ وسلم کے سلام کرنے سے تیمریک اور ازالہ بیبت بھی اہم مقصد تھا۔

باب ماجاء في التسليم على النساء

(عورتون كوسلام كرف كابيان)

"عن اسماء بنت يزيدتُ حَدِّثُ ان رسول الله صلى الله عليه وسلم : مَرَّ في المسجد يوماً وعُصبةً من النساء قعود قالوي بيده بالتسليم واشارعبد الحميد بيده ". (حسن)

حضرت اساء بنت یزید بیان کرتی ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم ایک دن مجد میں گذر ہے جبکہ عورتوں کا ایک گروہ وہاں بیٹھا ہواتھا کہ آپ نے اپنے ہاتھ سے سلام کا اشارہ کیا۔ رادی حدیث عبدالحمید نے (سمجمانے کے لئے) اپنے ہاتھ سے اشارہ کیا۔

تشری : قری : وغصبة "وا و حالیت کے لئے ہادر عصب جماعت کو کہتے ہیں۔ قسو لسه: "فَسالُسوی" اصل میں مائل کرنے اور موڑنے کو کہتے ہیں لیکن یہاں مراداس سے اشارہ کرنا ہے لیعن زبانی سلام کے ساتھ ہاتھ کا اشارہ بھی فرمایا۔ چنانچہ امام ترفدی ہی بات کہنا چاہتے ہیں اس بناء پر انہوں نے باب الاشارة علی النساء کے بجائے التسلیم علی النساء قائم کیا ہے۔

اس حدیث سے جواز سلام علی النساء معلوم ہوااس کی سندیں اگر چرشر بن حوشب ہیں مگرا کی تو یہ قابل استدلال راوی ہیں دوم اس کی تا سکہ بخاری کی روایت سے بھی ہوتی ہے جو'نساب تسسلیم الوجال علی المنسساء و النساء علی الوجال "میں حضرت بہل بن سعد ساعدیؓ سے مروی ہے:'قال مُحتّانفوح ہیوم السجہ معة قسلت ولِمَ؟… وفیه… فاذا صلینا المجمعة اِنصَرَفنانُسَلِم علیها النح "(بخاری ص:۳۳) اس باب میں حضرت جرمیل کا سلام علی عاکشتہ بھی فرکور ہے جیسا کہ بیجھے حدیث گزری ہے۔ بال البتہ جہال فتذ کا اندیشہ ہوتوان تمام صورتوں میں عورتوں کوسلام کرنا کروہ یا ممنوع ہوگا، اس طرح

عورتوں سے مصافحہ می حرام ہے الا یہ کہ کوئی عورت محرمہ ہویا بہت زیادہ پوڑھی ہو۔ چنانچہ ہرا یہ جلد چہارم کتاب الكراھية ميں ہے:

" أمّااذاكانت عبوزاً لاتشتهى فلاباس بمصافحتهاومس يدها لانعدام خوف الفتنة وقدرُوِى ان ابابكر كان يدخل بعض القبائل التي كان مسترضعاً فيهم وكان يصافح العجائز الخ. (براية: ٤٠٠٠ ٣٨٠٠٠٠)

قوله: "ان شهراً تو کوه" بیلفظرک سے یعنی بالناء والراء بھی آیا ہے جس کے معنی ظاہر ہیں یعنی چھوڑ وینا ہے جھوڑ ا ہے، مگر بینو ن اور زاء سے بھی آیا ہے ای نزکوہ کھر بمعنی نیزہ زنی کے ہوگا مراد وہی طعن کرنا اور چھوڑ وینا ہے لیکن ترفدی نے امام بخاری سے نقل کیا ہے کہ شہر حسن الحدیث ہیں۔

باب ماجاء في التسليم اذادخل بيته

(گھرمیں داخل ہوتے ہوئے سلام کرے)

تشری : چونکه این گھریں داخل ہونے کے لئے سلام استیذ ان کی ضرورت نہیں اس لئے برکت کے حصول کی غرض سے سلام کو مشروع کیا گیا چنا نچہ سور و نور کی آیت: ۱۱ میں ہے: ''فاذا دخلتم ہیو تا فسلِمُو اعلیٰ انفسسکم تحیّة من عندالله مبارکة طیبة ''' پھراس سلام کی آواز کی حدباب کیف السلام میں بیان ہوئی ہے: ''فیسجئی رسول الله صلی الله علیه وسلم من اللیل فیسَلِمُ تسلیماً لایوقظ النائم ویسمع الیقظان النے ''لینی اتی مقدار میں سلام کرے کہ جائے ہوئے سنی اور سوئے ہوئے کی نین فراب نہو۔

باب کی حدیث میں اگر چیلی بن زید بن جدعان ہیں کیکن حضرت شاہ صاحب فرماتے ہیں کہ ایک تو یہ مسلم کے راوی ہیں دوم بیشہر بن حوشب سے زیادہ اعلیٰ ہیں باب سابق میں امام بخاری کی تو میتی شہر کی تصریح ہوئی نیز باب کیف السلام میں آنے والی روایت سے بھی باب کامضمون ثابت ہے کہی باب کامضمون ثابت ہے

- جو خص این بیوی کوسلام کرناعیب مجمتاع اگروہ بجائے حمیة الجالجیت کے شریعت کی پیروی کرے تواج جا ہوگا۔

باب السلام قبل الكلام

(سلام، بات چیت پرمقدم بونا چاہئے)

"عن جابربن عبدالله قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: السلام قبل الكلام". (منكر)

رسول الدصلى الله عليه وسلم في فرمايا كرسلام تفتكوت يبلي بونا جائد-

تشری : ابن الحربی عارضة الاحوذی میں لکھتے ہیں: "رُوَی السرملای منکراً صعیفاً عن جابوقال رسول الله صلی الله علیه وسلم: "السلام قبل الکلام" وهومعنی صحیح النے لین یہ روایت سند کے اعتبار سے نہایت ضعف ہے کیکن معناصیح ہے کیونکہ سلام بہر حال کلام پر مقدم ہے ، مرقات میں ہے کہ سلام کا موقع ابتداء ملاقات ہی ہے لیس اگر سلام سے پہلے کوئی اور بات ہوجائے تو سلام کا وقت اور موقع فوت ہوجائے گا جسے کہ السجد ، مسجد میں داخل ہوتے ہی پر حنی جائے۔

قوله: "لاتدعوا احداً الى الطعام حتى يُسَلِّم " كى كوكھانے پر مرعونہ كروجب تك كدوه سلام نہ كرے۔ يدايا ہے جيسا كدابواب الزہدش ابوسعيد كى حديث ميں ہے: "و لايدا كے طعام ك إلا تقى " باب ماجاء فى صحبة المؤمن يعنى اكرام اور دعوت والے كھانے پر پاك بازلوگوں كو مرعوكر ناچا ہے يا مطلب بيہ كة تعلق اور دوئ منتى اور شرع كے بابندلوگوں كے ساتھ ہونا چاہئے كيونكہ صحبت ، حركات وسكنات حتى كه باتوں كا بحى اچھااور يُر ااثر ہوتا ہے لہذا جوشرع پركار بند ہوگااس كى معيت سے فائدہ ہوگا اور جوشر بعت سے جتنا باغى موگا وہ خير سے اتنابى دور ہوگا لہذا اليے فض كى صحبت سے دور رہنا چاہئے كداى ميں سلامتى ہے۔

باب ماجاء في كراهية التسليم على الذمي

ذِی کوسلام کرنا مکروہ ہے۔

"عن ابى هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: لا تبدّاو اليهودَو النصارئ بالسلام فاذا لقيتم احدهم في طريق فَاضطَرُوه الى اَضُيقِه". (حسن صحيح)

یہودونصاریٰ کوسلام کرنے میں پہل نہ کرواور جب تم ان میں سے کسی ایک سے راستہ میں مبلوتو ان کو راستہ کی تنگ جگہ (کنارے) کی طرف (جانے یر) مجبور کروا۔

تشریخ: اس حدیث سے معلوم ہوا کہ غیر مسلموں کو ابتدا و سلام کرنا کروہ ہے ہاں البتہ کسی ضرورت کی صورت میں سلام کرنا جائز ہے جیسا کہ حضرت شاہ صاحبؓ نے العرف الشذی میں فرمایا ہے اس طرح اگروہ لوگ مسلمان کوسلام کریں توجواب دینا چاہئے جوباب کی آگلی حدیث میں بیان ہوگا، پھر سلام کے الفاظ 'سلام علم سن اتب عالم ہدی' 'ہونے چاہئے اس حدیث کی شرح تشریحات ترذی بس ۱۲۲ مجلد: ۵ میں گزری ہے۔ دیکھئے'' باب ماجاء فی التسلیم علی اصل الکتاب من الواب البیر''۔

صديث آخر: "عن عائشة قالت ان رهطاً من اليهو دد خلواعلى النبى صلى الله عليه وسلم على الله عليه وسلم عليكم السام عليك فقال النبى صلى الله عليه وسلم عليكم السام واللعنة افقال النبى صلى الله عليه وسلم ياعائشة! ان الله يُحِبُّ الرفق في الامركله قالت عائشة ألم تسمع ماقالوا؟قال قد قلتُ "عليكم". (حسن صحيح)

حضرت عائشہ "فرماتی ہیں کہ ایک گروہ یہودکا نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آیا اور کہا انہوں نے
"المسام معلیکم" بعنی تجھ پرموت ہوا تو نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے جواب دیا "علیکم" بعنی تم پر ہوا پس
حضرت عائشہ تن ہیں کہ میں نے کہا بتم پرموت ہوا ور لعنت ہوا تو نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اے عائشہ! بے
شک اللہ ہرکام میں نرمی کو پہند فرماتے ہیں حضرت عائشہ نے فرمایا: کیا آپ نے نہیں سنا جوانہوں نے کہا؟ آپ
نے فرمایا بلا شبہ میں کہہ چکا ہوں کتم پر ہو!۔

قول ان السام "موت كم منى من ہے چونكد يبودكى عادت ہے كدوه مشتبالفاظ كا استعال كرتے ہيں جيسے آج كل مغربى ميڈيا كا حال ہے اس سے وہ دوسروں كوغير محسوں طور پردھوكد دے كرا بنا كام نكالتے ہيں كين اللہ كے نبی نے ان كے ذموم مقصداور بدمنى تلفظ كا ادراك كرليا تفااور جواب ايباديا كہ جوان كوثر مندگى اور ندامت پر مجبود كرد ہا تفا جبكداس سے آئ كے خسن اخلاق پر پجھ آئى بھی نہيں آئى ،اس لئے حضرت عاكث اور ندامت پر مجبود كرد ہا تفا جبكداس سے آئ كے خسن اخلاق پر پجھ آئى بھی نہيں آئى ،اس لئے حضرت عاكث كوت فرآئ نے نہ خت لجا درانقام میں لعنت كا ضاف سے منع فر مايا ،اور يہ كہ چونكدان كا يہ قول شتم رسول اور گالم گلوج كوت نے دمرے ہيں شامل ہے اس لئے اس پر مبركيا جانا چا ہے گوكد سب البي پر خاموثى گناہ اور خوشى كفر ہا مام بخارى كى رائے ميں يہ تحريفاً سب وشتم تھا قامنى عياض كہتے ہيں كہ آپ

ک زی تالف قلب کے پیش نظر تھی جوشروع کا تھم ہے۔

الكافركفرالخ".

پرعلیم وائے ساتھ بھی آیا ہے اور پغیرواؤ کے بھی۔ اس میں علاء کے دونوں تول ہیں بہر حال اگر غیر مسلم سلام کرے تو جواب وے دیتا چاہئے گرعلیم کے ساتھ۔ جہاں تک ابتداء بالسلام کی بات ہے جس کے لئے امام ترذی نے باب قائم کیا ہے تو اگر چہ بعض علاء کے نزدیک بیر وام ہے گرعندالحاجة بی جائز ہے بشر طیکہ مقصود دفع شروض ریا جلب منفعت اصلیہ ہو، اکرام مقصود نہوچائی الکوک الدرال کے حاشیہ پر ہے:
''و مسلک الد حنفیة فی مسئلة الباب مافی الدرالم ختار ویسلم علی اہل اللہ علی الملہ الملہ مصافحة اللہ علی اللہ الدمن کے ماکرہ للمسلم مصافحة الملہ اللہ مسلم فلا باس بالرّ دلکن لایزید علی قولہ و علیک کے صافی الدخانیة و لوسلم واعلی مسلم فلا باس بالرّ دلکن لایزید علی قولہ و علیک کے صافی الدخانیة و لوسلم علی الذمی تجلیلاً (تعظیماً) یکفرلان تجلیل

باب ماجاء في السلام على مجلس فيه المسلون

وغیرهم (مسلم دغیرمسلموں کی مخلوط مجلس پرسلام کاتھم)

"عـن عـروة ان اسامة بن زيد اخبره ان النبي صلى الله عليه وسلم مربمجلس فيه اخلاط من المسلمين واليهودفسلم عليهم". (حسن صحيح)

نی صلی اللہ علیہ وسلم کا گذرایک ایسی مجلس کے پاس سے ہواجس میں مسلمان اوسد بہود (ملے جلے) بیٹھے تھے تو آتے نے ان برسلام کیا۔

تشریخ: فوله: "احلاط" بفتح الهمزة خِلط کی جمع ہے اردو میں خلط ملط اور ملے عُلے کو کہتے ہیں۔
اس مدیث سے مشتر کے جلس پرسلام کرنے کی شنیت معلوم ہوئی خواہ وہ جمع الل اسلام و کفار کا ہویا اتقیاء
وفستات کا ہوتا ہم ایسے میں نیت مسلمانوں پرسلام کرنے کی ہوئی چاہے ۔عارضة الاحوذی میں ہے کہ اگر الل
النة والل بدعت ایک ساتھ بیٹھے ہوں تو بھی سلام کرے اور نیت الل النة کی کرے ، ابن العربی "فرماتے ہیں

کہ آگرسب لوگ ظالم ہوں (لینی خواہ کا فرہوں یا دیگر فساق جوعلانیفش کرتے ہوں) تو آگر ضرورت ان سے متعلق ہوتو سلام کر بے کی بھی جھے حفاظت ملنی متعلق ہوتو تمہاری طرف سے بھی جھے حفاظت ملنی چاہئے (لیمنی لغوی معنی کا ارادہ کرے)۔

باب ماجاء فی تسلیم الراکب علی الماشی (مواریادے کوملام کرے)

(۱) "عن ابى هريسرة عن النبى صلى الله عليه وسلم قال : يُسَلِّم الراكب على السماشى، والماشى على القاعدو القليل على الكثير... وزادابن المثنى في حديثه... ويسلم الصغير على الكبير... وروى بطريق آخر"(۲) وعن فضالة بن عبيد مرفوعاً... وفيه يسلم الفارس على الماشى والماشى على القائم والقليل على الكثير". (حسن صحيح) (٣) وفي رواية اخرى والمارعلى القاعدو القليل على الكثير". (حسن صحيح)

حضرت ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا کہ سوار آ دمی پیدل چلنے والے کوسلام کرے اور پیادہ بیٹھے ہوئے پرسلام کرے اور تھوڑے زیادہ تعدادوالوں پرسلام کریںاورابن شنی کی حدیث میں بیاضا فہ ہے کہ چھوٹا بڑے کوسلام کرے۔

دوسری حدیث میں بیہ ہے کہ گھڑسوار پیدل چلنے والے پرسلام کرے اور پیادہ کھڑے ہوئے مخض پرجبکہ آخری روایت میں ماثی کے بجائے مار کالفظ ہے لین گذرنے والا بیٹھے ہوئے مخص کوسلام کرے۔

تشری : ارساب کیف د دالسلام "میں ضابطہ عرض کیا جاچکا ہے کہ سلام کے بنیادی اصول دو بیں: اکرام اور تواضع ،اس لئے جہاں اپنی برائی کا اندیشہ لاحق ہو وہاں سلام میں پہل کرے تا کہ تواضع حاصل ہوا در تکبر کا سد باب کیا جا سکے لہذا سوار بیادہ کوسلام کرے اور بھی براجھوٹے کوسلام کرے مرجہاں دوسروں کی تو قیم جھوٹوں کو جا ہے کہ بروں کوسلام کریں اور قلیل کثیر کوسلام کریں۔

امام نوویؓ فرماتے ہیں کہ بیضابطہ راستہ میں ملاقات کا ہے جہاں تک آنے والے کاتعلق ہے جبکہ دوسرافریق بیشاہوتو آنے والا ہرصورت میں سلام میں پہل کرے خواہ وہ چھوٹا ہویا بڑا تھیل ہوں یا کثیر۔ پھر جماعتی شکل میں سلام کا جواب بھی جماعتی صورت میں دینا چاہے تاہم بعض علماء فرماتے ہیں کہ اگر پھے نے یہذمہدداری دباہ دی توباتی کا ذمہ فارغ ہوجائے گاخواہ وہ بعض آنے والے ہوں یا جواب دینے والے۔ باب کی پہلی روایت سند کے اعتبار سے منقطع ہے جیسا کہ امام ترفد کا نے تصریح کی ہے کہ حسن بھر گ نے ابو ہریرہ سے نہیں سُنا ہے مگراس کے باقی طرق سیح ہیں اور سیحیین میں مروی ہیں باب کی اگلی دونوں روایتیں مجھ صحح ہیں۔

باب التسليم عندالقيام والقعود

(أنفحة بيضة سلام كرنا)

"عسن ابسى هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: اذاانتهى احدكم إلى مسجلس فليُسَلِّم ، فان بَدَا له ان يجلس فليجلس ، ثم اذاقام فليسلّم فليست الاولى باحق من الأخرة". (حسن)

جبتم میں سے کوئی ایک مجلس میں پنچے تواس کوچاہئے کہ سلام کرے پھراگروہ بیٹھنا چاہے تو بیٹے جائے، پھر جب کھڑا ہو(یعنی جانے گئے) تواس کوچاہئے کہ سلام کرے کیونکہ آمد کا سلام دوسرے (جانے کے) سلام سے زیادہ حقد ارنہیں ہے۔

تشری : قوله: "فلیست الاولی النے حاشیر ندی پر طبی کا قول تھا کہ جس طرح پہلے سلام میں یہ پیغام ہے کہ جس طرح پہلے سلام میں یہ پیغام ہے کہ میری موجودگی میں ہم لوگ میرے شرسے محفوظ رہو گے تو جاتے وقت سلام کرنے میں یہ باور کرانا مقصود ہے کہ میری غیر موجودگی میں ہمی ہم لوگ میرے شروضرر سے مطمئن رہواس لئے پہلاسلام ہنسبت دوم کے زیادہ ضروری نہیں کیونکہ موجودگی میں شرکا اندیشہ کم ہوتا ہے ۔ نیز جس طرح خاموشی سے آگو کہ سے انظی ہوتا ہے ۔ نیز جس طرح خاموشی سے آگو کہ سے انظی ہوتا ہے ۔ نیز جس طرح خالاف ہے توای طرح چیکے سے آگھ کر چلا جانا بھی آ داب وشائشگی کے منافی ہے ۔ پھر داخل ہونا سلیقہ مندی کے خلاف ہے توای طرح چیکے سے آگھ کر چلا جانا بھی آ داب وشائشگی کے منافی ہے ۔ پھر مورونت کے لئے دور سے آنایا دورتک جانا ضروری نہیں بلکہ جب نظروں سے اوجھل ہواورمجلس پر نمودار موجودگی میں مام کرے، پھر دوسرے سلام کو جوائے تو سلام کرے، پھر دوسرے سلام کو جوائے تو سلام کرے، پھر دوسرے سلام کو جوائے تو سلام کرے۔ کو یار تھتی کا اسلامی طریقہ آخری عمل سلام کرتا ہے۔

باب الاستيذان قبالة البيت

(گھرکے سامنے اجازت طلب کرنے کا طریقہ)

"عن ابى ذرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : من كشف سِتراً فادخَلَ بَصَرَه فى البيت قبل اى يؤذن له فراى عورة اهله فقداتى حدّاً لايحل له ان يأتيه لوانه حين ادخل بصره استقبله رجل فَقَقاً عينيه ماغَيَّرتُ عليه، وان مَرِّ رجل على با بٍ لاسترله غيرمُغلَق فنظر فلاخطِيئة عليه انماالخطيئة على اهل البيت ". (غريب)

حضرت ابو ذرط فرماتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا جس نے کھولا پر دہ (لیعنی کسی کے کھر کے دروازے کا پر دہ اُٹھایا) اوراپی نگاہ اندر گھر میں داخل کی قبل اس کے کہ اسے (داخل ہونے کی) اجازت طے اور دیکھے لیس اس نے گھر والوں کی پوشیدہ چیزیں ، تو بلا تھہہ اس نے وہ کام کیا جواس کے لئے جائز نہ تھا۔

اگراس کے اندرد کیھتے وقت کمی مخض نے اس کے سامنے آکراس کی دونوں آنکھیں چوڑ دیں تو میں اس کے اس کم اس کے اس کی وزوازے کے پاس سے گذراجس کا پردہ نہ ہواور (دروازہ بھی) بند نہ ہو پس اس کی نظر (باختیار) اندر کئی تو اس پر پچھ گناہ نہیں ،گناہ صرف گھروالوں کا ہے۔

تشريح: أمام ترفي جوتك اجازت لين كاطريق بتانا جائة بين اس لئة ته الباب مس مفاف مقدر ماننا پر سكالين باب كيفية الاستيذان النع يالفظ كيف مقدر بين باب كيف الاستيذان النع مقدر ماننا پر سكالين باب كيف الاستيذان النع وقد الله وقد الله

قول د: "ماغيّر ث عليه" الكوب الدرى من حضرت كنكوبي في اس كوبمعن قير كلياب" اى لم أغيّر فعله ولم أمنعه عن إرتكاب ذالك لانه لم يفعل بأساً" "تا بم ال من ويراحالات بحى بين تخة الاحوذي من ال كوعار ساليا به اورروايت عَيْر ث بالعين أمهملة لقل كي بهاى ما نسبَهُ الى العيب من يريره حديث كامطلب بي ب كه صاحب خانه كواسيخ كمركا دروازه بندر كهنا جاسيم يا كم ازكم اس يريرده آویزاں ہونا چاہیے تا کہ گزرنے والوں کوائدرد کھنے کا موقع نہ ملے خصوصاً ایسے گھر کا دروازہ بہر حال بند ہونا چاہی جس کے سامنے سے عام راستہ گذرتا ہو۔ اگروہ کوتا ہی کرتا ہے تواس غلطی کا ذمہ داروہ خود ہوگا۔

جہاں تک ملاقات کرنے والے کاتعلق ہے تو وہ اجازت طلب کرتے وقت الی جگہ کھڑا نہ ہو جہاں سے گھر کا اندرونی حصہ نظر آتا ہو بلکہ تھنٹی بجانے یا آواز دینے اور دروازہ کھنگھٹانے کے بعدایک جانب کھڑا ہوجائے اور نظراندردوڑانے کی کوشش نہ کرے بلکہ اس سے پر ہیز کرے آگر کسی نے کوشش کی مثلاً پر دہ اٹھا کر دیکھا یا دروازہ کھول کراندر جھا نکا تو اس نے گناہ کیا اور اجازت طلی کا مقصد ہی نظرانداز کیا، پھر جب اندرجانے کی اجازت مل جائے تو آگر چہاندرواض ہوتے ہوئے گھر کے اندرد کھنا جائز ہے لیکن اس کا مطلب بیہ ہرگر نہیں کہ مرات کود کھیے بلکہ اجازت کا مطلب بقدر ضرورت دیکھناہوتا ہے لہذا پورے گھر میں گھو منے اورد کھنے کی نہ ضرورت ہے۔ (تد ہر)

اگر کسی نے ان اصول کی پرواہ کے بغیراوراجازت ملنے سے قبل گھر کے اندرد یکھااور گھر والے نے
اس کی آنکھ پھوڑ دیں تواہام شافع کے نزدیک وہ معاف ہے اس پروئی قصاص یا دیت نہیں اکثر حنفیہ کے نزدیک
اس پرقصاص تو نہیں کیونکہ اس صدیث کی وجہ سے شہر اباحت پیدا ہوا تا ہم اس پردیت ہوگی، کیونکہ دیگر روایات
کوسا منے رکھتے ہوئے نظر کرنے سے آنکھ پھوڑنے کی اجازت متر شح نہیں ہوتی للندا باب کی حدیث تغلیظ پرمحمول
ہے، ہاں البتہ اگر کسی نے باہر سے دیکھنے کے بجائے سراندر داخل کر کے دیکھنے کی کوشش کی اور صاحب خانہ نے
پھروغیرہ بھینک کراس کی آنکھ ضائع کردی تواس پر بالا جماع تا وان وقصاص نہیں ۔ تا ہم قبیہ میں پہلی صورت بھی بھر میں عدم دیت کا تول ہے۔
میں بھی عدم دیت کا تول ہے۔

باب من اطلع في دارقوم بغيراذنهم

(بلااجازت کس کے گھر میں جمانکنا)

"عن انس ان النبي صلى الله عليه وسلم : كان في بيته فاطّلَعَ عليه رجل فَاهوى اليه بِمِشْقُصٍ فتأخّر الرجل". (حسن صحيح)

حضرت انس سے مردی ہے کہ نی صلی اللہ علیہ وسلم اپنے گھر میں تھے کہ استے میں ایک آدی نے جھا تک کرآٹ کودیکھا تو آٹ نے اس کی طرف بڑھادیا نیزے کا لمبا پھل (یعنی نیزے کی لمبی نوک) تو وہ خض

ليحجيبث كيا_

صديث آخر: "ان رجلاً إطلع على رسول الله صلى الله عليه وسلم من جُحُو في حجرة السنبى صلى الله عليه وسلم ومع النبى صلى الله عليه وسلم مِدراة يَحُكُ بهارأسه فقال النبى صلى الله عليه وسلم : لوعلمتُ انك تنظر لَطَعَنتُ بهافى عينك انماجُعِل الاستيذان من أجَل البصر". (حسن صحيح)

ایک شخص نے رسول اللہ علیہ وسلم کے گھر میں ایک دَرَز سے جھا نکا جبکہ نبی علی اللہ علیہ وسلم کے پس نیٹ درز سے جھا نکا جبکہ نبی علی اللہ علیہ وسلم کے پاس پُشت خار (سکھ تھا جس سے آپ اپنا سر کھجار ہے تھے، پس نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے (بعد میں) فرمایا کہ اگر جھے معلوم ہوجا تا کہ تو جھا تک رہا ہے تو میں اسے تیری آئھ میں کوج دیتا (لیعنی چھو دیتا) بے شک اجازت طلب کرنا آئھ (سے بیجنے) ہی کی خاطر تو مشروع کی گئی ہے۔

باب التسليم قبل الاستيذان (سلام كرنااجازت طبي برمقدم ہے)

"ان كَـلَدَة بن حسنبل اخبره ان صفوان بن أُمَيَّة بَعَنَه بِلَبَنِ وَلَبَأٍ وضغابيسَ الى النبى صلى الله عليه وسلم بإعلى الله عليه وسلم عليه ولم أسلم فقسال النبى صلى الله عليه وسلم : إرجِع فقل السلام عليكم أستاذن ولم أسلم فقسال النبى صلى الله عليه وسلم : إرجِع فقل السلام عليكم أادخل وذالك بعدما اسلم صفوان". (حسن غريب)

کلدہ بن حنبل نے عمروبن عبداللہ کو خبردی ہے کہ صفوان بن امیر نے ان کو (کلدہ کو) دودھ بھیس اور چھوٹے کھیروں کے ساتھ نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں بھیجا جبکہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم وادی کے بالائی حصد میں تھے، فرماتے ہیں کہ میں آپ کے پاس داخل ہوا گرندا جازت طلب کی اور نہ ہی سلام کیا، پس نبی صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا والله جا وَل اور دوبارہ آوَ) اور کہو 'السلام علیہ کم ''کیا میں اندر آجا وَل؟؟؟ بدواقعہ صفوان بن امیہ کے اسلام قبول کرنے کے بعد کا ہے۔

تشری : قولد: "لَبَا" بمعن کمیس کے ہینی دہ گاڑ هادوده جوجانور کے بچدد ہے کے بعددوهاجاتا ہے اس کو بیوی اور بوبائی کہتے ہیں چونکہ بیدووده بہت طاقت ورہوتا ہے اس لئے لوگ بطور تخذ ایک دوسرے کو ہدیہ کرکھویا کی طرح بن جاتا ہے بہت لذیذ بھی ہوتا ہے اس کی جمع ہدیہ کرکھویا کی طرح بن جاتا ہے بہت لذیذ بھی ہوتا ہے اس کی جمع الباء آتی ہے یعنی بروز ن لبن وزنا ومعنا فرداو همتاً ۔ اس کے لئے ابودا وَد میں "چد این "کالفظ استعال ہوا ہے۔ قولہ: "ضغابیس" ضغیرس کی جمع ہے چھوٹے اور کچ کھیرے اور کرئ کو کہتے ہیں ۔ بعض اہل لغت کہتے ہیں کہ یہوئی اور طرح کا بودا ہوتا ہے۔

اس مدیث سے معلوم ہوا کہ آنے والے کوچاہئے کہ پہلے سلام کرے پھراندرجانے کی اجازت طلب کرے تاہم استیزان کے لئے کوئی بھی رائج ومہذب طریقہ اپناناجا کز ہے مسئلہ کی تفصیل ونوعیت پہلے عرض کی جا چکی ہے۔ ویکھئے" باب ماجا وفی ان الاستیزان ٹلاث 'عارضہ میں ہے" انسه یہ جو زالاستیدان بصوب الباب والحجو النح"۔

صدیث آخر: حضرت جابر فرماتے ہیں کہ میں نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے اجازت چاہی (ایمنی اندواض ہونے کی) ایک دین کے بارے میں جومیرے والد پر تفاتو آپ نے پوچھا''من هذا؟' بیکون ہے؟ تو میں نے کہا''انا'' میں ہوں! تو آپ نے فرمایا''آفااکا'' یعنی میں ... میں ... کویا آپ نے میرے جواب کو ناپسند کیا۔ (حسن میحے)

عارضة الاحوذى ميں اس نا گوارى كى وجه يد بيان فرمائى ہے كه آپ صلى الله عليه وسلم كامقصدية قاكه إنا تعارف كراؤ! جبكه أفاسے يعنى اس جواب سے كه ميں ' بول ابہام مزيد بوھ جا تا ہے يا كم ازكم ابہام باقى رہ جا تا ہے اس لئے كلام لغوسا ہوجا تا ہے ۔ اس سے معلوم ہوا كه كوئى بوجھے كه كون ہو؟ تو جواب ميں ايسے تعارفى الفاظ يانام ذكر كرنا جا ہے جن سے ابہام دور ہوا در تعارف ہوجائے۔

باب ماجاء فی کر اهیة طروق الرجل اهله لیلاً (گریس فرے رات کواجا تک آنا کروہ ہے)

"عن جابر ان النبي صلى الله عليه وسلم نَهاهم ان يطرُقوا النساءَ ليلاً". (حسن

صحيح

صرت جابڑے مردی ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے صحابہ کورات میں (سفرے اپنی) عورتوں کے باس داخل ہوئے سے منع فرمایا تھا۔

تشریج: فوله: "ان مطرقوا" باب نفر سے طارق رات کوآنے والی چیز کوہمی کہتے ہیں اور کھ تکھٹانے کوہمی کہتے ہیں بہر حال رات کوآنے والے کو طارق کہا جاتا ہے خواہ وہ دروازے پردستک دے یا نیدے۔

چونکہ عورتیں بہت حساس ہوتی ہیں اگران کے شوہر کسی لیے سفر پر مکتے ہوں اوروہ ان کی جلدوالہی کی امید نہ رکھتی ہوں اوروہ ان کی جلدوالہی کی امید نہ رکھتی ہوں تو عموماً وہ زیادہ صفائی سقرائی کا اہتمام نہیں کرتی ہیں اگر کوئی شخص اچا تک رات کو گھر پنچے گا تو ایک تو بیوی کی خستہ حالت دیکھ کرشو ہر کا دل بھی ٹوٹ سکتا ہے اس لئے حسن معاشرت کو پروان چڑھانے کی خاطر اچا تک اورخصوصاً رات کو بغیراطلاع کے آنے سے منع فرمایا۔

بیعلت مسلم وغیره کی روایات سے معلوم ہوتی ہے: "حتیٰ تست بحد المُغیبة و تمت شط الشعثة "

"ایک روایت میں ہے: "إذاأطال الوجل الغیبة "لینی اگر لمبسفر سے واپسی ہوجائے تواج بک گھر میں مت

داخل ہو بلکہ بیوی کوصفائی اور بناؤسنگھار کا موقعہ دے کر بعد میں جا کا علی بذا اگر کوئی شخص غیر شادی شدہ ہو یا سفر
قریب کا ہویا آنا متوقع ہو کہ کہ کہ کہ ایم کو کہ للاں تاریخ کو واپس آؤں گایا آج کل کی سہولت کے پیش نظر فون پر
آنے کی اطلاع دے چکا ہوتو پھر کسی بھی وقت گھر میں آنا بھروہ نہ ہوگا۔

باب کی اگلی روایت میں جویہ ہے کہ اس نہی کے بعد دوآ دمی گھروں میں رات بی کو داخل ہوئے تو ہراکی نے اپنی اپنی بیوی کے ساتھ آ دمی کو پایا تو اس کو صدیث باب کی علت نہیں جھنا چاہئے ،اس کی علت وہی ہے جواد پر بیان ہوئی یہ دوسری روایت یا تو سند کے اعتبار سے فابت نہیں یا پھر پیمض ایک اتفاق ہوسکتا ہے ، ابن العربی نے عارضة الاحوذی میں اس تا کر کوختی سے منع فر مایا ہے:

"وهذاالذي رُوي لم يصح بحال، لوصح لَمَاكان دليلا على ان النبي صلى

الله عليه وسلم قصده فلايصع لِآحدِ ان يجيزه الخ ". انهول نے استعليل كوجهل تعيركيا ہے۔

باب ماجاء في تتريب الكتاب

(خطاكوخاك آلودكرنا)

"عن جابران رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: اذاكتب احدكمَ كِتاباً فَليُتَرِّ به فانه أنجحُ لِلحاجة ". (حديث منكر)

جبتم میں سے کوئی خط کیمے تواس پرمٹی چھڑک لے کیونکہ بیاس کے مطلب کو پورا کرنے ہیں بہت لیدہے۔

تشری : اولاً تواس مدیث پر فاشیر قوت المعتدی علی التر فدی میں تفصیل سے بحث کر کے اس کے تمام طرق کو ضعیف قر اردیا جا چکا ہے، اگر بالفرض اس کو سی ایس تو پھر کمتوب پر شی ڈالنے کا ظاہری مطلب بھی لیا جا سکتا ہے تا کہ حرد ف کی سیابی خشک ہوجائے اور خط لیسٹنے سے حروف مٹنے نہ پائیں ہم سکول کے زمانہ میں ایسا میں کرتے تھے حالا تکہ ہمیں اس مدیث کاعلم نہیں تھا البتہ آج کل روشنائی پی ہوتی ہے اس لئے تحریر جلد خشک ہوجاتی ہوجاتی مردت نہیں رہی ہے۔ یااس کوز مین اور مٹی پر کھ دے تا کہ اپنے مکتوب پر محروسہ نہ دہ ہا یہ کہ النظام خطاب میں تواضع اختیار کرنے سے، تا ہم ملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ یہ آخری تو جھے اللہ چہ آگر کے ایس متعارف ہے اور خصوصاً ہو ہے مناصب پر فائز لوگوں کو درخواست کھنے میں میر طریقہ معروف ہے مراسخے ضور صلی اللہ علیہ وسلم کے خطوط میں یہ ربگہ نہیں یا یا جا تا تھا۔

بابٌ

قلم كان برركهنا

"عن زیدبن ثابت قال دخلت علی رسول الله صلی الله علیه وسلم وبین یَدیه کاتب فَسَمعته یقول: ضَعِ القلم علی اُذُنِک فانه اَذْکُرُ لِلمُملِی". (وهو اسنادضعیف) حضرت زیدبن ثابت قرمات بی کمی رسول الله صلی الله علیه وسلم کے یاس داخل بواجبدآت کے حضرت زیدبن ثابت قرمات بی کمی رسول الله صلی الله علیه وسلم کے یاس داخل بواجبدآت کے

سامنے لکھنے والا بیٹھاتھا، پس میں نے آپ سے بیفر ماتے سُنا کہ قلم اپنے کان پررکھ دوکہ ایسا کرنے سے لکھنے والے کو مضمون جلد یاوآ جاتا ہے (یعنی اِلقاء ہوتا ہے)۔

تشری : ۔ اس مدیث کوابن جوزیؓ نے موضوع قرار دیا ہے لیکن حاشیہ قوت میں اور مرقات میں ابن جوزیؓ کے تا شرکور دکر دیا گیا ہے کہ ابن عساکر کی روایت سے اس کی تائید ہوتی ہے ہاں البتہ مدیث ضعف سے خالی ہیں ہے۔

بصورت صحت حدیث کا مطلب یہ ہے کہ جب تلم ہاتھ میں ہوتو معمولی اشارہ ملنے پروہ لکھنا شروع کردے گا جبکہ کان پر ہونے کی صورت میں ہاتھ خالی ہوگا تو سوچنے کی فرصت زیادہ اللہ جائے گی، نیز خط سُنا جا تا ہے تو قلم کان پر ہونے سے گویا لکھنے اور سُننے میں مطابقت کی طرف اشارہ ہے قال الطبی ؓ یہ بھی مطلب ہوسکتا ہے کہ قلم کے لئے جب کان بطور ظرف وکل مقرر ہوگا تو دوران تحریقام تلاش کرنے کی پریشانی سے بچاجا سکے گا جیسا کہ تجربہ ہے کہ ہم لوگ لکھنے وقت بسااوقات صفحات بلٹنے کے لئے قلم جلدی میں کہیں رکھ دیتے ہیں پھروہ ادھراُدھرغائب ہوجا تا ہے بھی ہزایہ سلقہ مندی کے آواب میں سے ہوا۔ تا ہم آج کل کے اکثر قلم بھاری ہوتے ہیں ان کا ،کان پر تصمنا مشکل ہے۔ قبو لسے: "لِسلسم میلی "املاء سے اسم فاعل کا صیغہ ہے اس کے معنی تو لکھوانے والے کے ہیں گر بجاز آ یہاں لازم باب سے ہے یعنی لکھنے والا۔

باب في تعليم السُّريانِيَّةِ

(سُر يانى زبان سيكين كابيان)

"عن زيد بن ثابت قال امرنى رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان أتَعَلّم له كلمات من كتاب يهود، وقال انى ماوالله ماامَنُ يهودعلى كتابى، قال فمامَرٌ بى نصف شهر حتى تعلّمتُه له قال: فلماته كان اذاكتب الى يهودكتبتُ اليهم واذاكتبوااليه قرأت له كتابهم". (حسن صحيح)

حضرت زید بن ثابت فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے مجھے تھم دیا کہ ہیں آپ کے لئے یہود کے طرز تحریر کے چند (معتدبہ) الفاظ سیھ لوں اور آپ نے فرمایا بخدا! میں یہود کی تحریر پربالکل اطمینان نہیں کرتا جووہ میرے لئے کرتے ہیں، حضرت زید بن ثابت فرماتے ہیں کہ مجھ پر ابھی آ وھام ہینہ گذرنے ہیں، حضرت زید بن ثابت فرماتے ہیں کہ مجھ پر ابھی آ وھام ہینہ گذرنے ہیں، حضرت زید بن ثابت فرماتے ہیں کہ مجھ پر ابھی آ وھام ہینہ گذرنے ہیں، حضرت زید بن ثابت فرماتے ہیں کہ مجھ پر ابھی آ وھام ہینہ گذرنے ہیں،

آپ کے واسطے سریانی زبان سیکھ لی، فرماتے ہیں کہ جب میں نے وہ زبان سیکھ لی تو پھر جب بھی آپ یہود کو خط کصنا جاتے تو میں ان کو کھتا اور جب وہ لوگ آپ کوخط کھے کہتے تو میں آپ کوان کا خط پڑھ کر سُنا تا۔

تشری : ـ زمانہ ہجرت کے ابتدائی دور میں آپ یہود سے خط و کتابت میں عموماً یہود پر انحصار فرماتے مگران کی موروثی خیانت کی وجہ سے آپ کوان پر اعتاد نہ تھاخصوصاً جب ان کی مخالفت کھل کرواضح ہوگئی اس لئے آپ نے حضرت زید بن فابت اللہ کوان کی زبان سُر یانی کے سیمنے کا تھم دیا جوانہوں نے پندرہ دن سے کم مدت میں کمل کیا۔

ال حدیث سے ایک طرف صحابہ کرام کی فطانت و ذہانت کا اندازہ لگایاجا سکتا ہے اور دوسری طرف وشمن قوم کی زبان سیکھنے کا جواز معلوم ہوتا ہے جیسے آج کل انگریزی ہے، تاہم اس ممل میں دوباتوں کو بطور خاص ملحوظ رکھنا چاہئے ایک میر کہ دیکا م ضرورت کے تحت ہو کہ کوئی ایسادا عیہ پیش آیا ہوجس کی وجہ سے ان کی زبان سیکھنے میں زندگی کی ضرورت محسوں کی جاتی ہو تھن شوقیہ طور پریاافتار کے لئے یااصلی مقصد کوچھوڑ کرمھن زبان سیکھنے میں زندگی بسرکر تانہ صرف کا رعبث ہے بلکہ باعث ندامت بھی ہے۔

دوسری بات بیہ کرزبانوں میں بھی تا خیرات ہوتی ہیں،انگریزی زبان کی بیتا خیرعام مشاہدہ ہے کہاں سے آ دمی میں خرورادر تکبر آتا ہے لہٰذااس میں جتناانہاک ہوگاای تناسب سے تکبر میں اضافیہوگا۔ لا ماشاءاللہ۔ شخ الاسلام ابن تیہیہ کھتے ہیں:

"وسن ذكران شاء الله بعض ماقاله العلماء من الامربالخطاب العربى وكراهة مداومة غيره لغير حاجةواللسان تقارنه اموراً حرى: من العلوم والاخلاق فان العادات لها تأثير عظيم في ما يُحِبُّهُ الله وفيما يكرهه الخ". (إتتناء العراط السنقيم خالفة الحاب الحجم : ص : ١٦٣)

حضرت تفانویؒ نے المسک الذکی میں اس مدیث سے جوازِ تعلیم انگریزی پراستدلال کورد کرنے میں بہت زورلگایا ہے ،اگر چہ بیاس زمانہ کی بات ہے جب انگریزوں سے لڑائی چل رہی تھی اورنفرت اپنے عروج کو پنجی ہوئی تھی اس لئے اس تفصیل کو یہاں نقل نہیں کیا گیالیکن ایک اقتباس آپ بھی پڑھئے:

"اس زمانہ میں اُلٹامحاملہ ہور ہاہے کہ لوگ عربی خوانوں سے کہتے ہیں کہتم اگریزی پرموتا کہ جامعیت حاصل ہوجائے اورلو کول کواگریزی میں دین سمجھاسکوا درینیس کہتے کہ اگریزی دان

عربی پردهیس اوراشاعت دین کریں الخ"_(ص:۵۷۵)

باب ماجاء في مكاتبة المشركين

(مشركين سے خطوكتابت كابيان)

"عن انس بن مالک ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كتب قبل موته الى كِسرى والى قيصَد والى الله عليه وسلم كتب قبل موته الى كسرى والى كل جَبَّاريدعوهم الى الله وليس بالنجاشى الذى صلّى عليه". (حسن صحيح غريب)

حفرت انس سے روایت ہے کہ رسول الد صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنی وفات سے پہلے کسری کو خط کھا اور قیصر اور نجاشی اور ہر مغروروسرک بادشاہ کو خطوط کھے ،جن کو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے اللہ کی طرف کلا یا اور یہ وہ نجاشی نبیس تھا جن کی نماز جنازہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے پڑھی ہے۔

تشریخ: _ کِسر کی شاہ فارس کالقب تھا۔ قیصر شاہ روم کا اور نجاشی شاہ حبشہ کالقب تھا، علاوہ ازیں ترکی بادشاہ کوخا قان قبطی کوفرعون ،مصری کوعزیز اور تمیّر (بین) کے بادشاہ کو تیج کہاجا تا تھا۔ جبکہ مقوّس وغیرہ کے نام بھی خطوط بھجوادیئے تھے۔

یے خطوط آپ نے صلح حدید ہیں اور اسال فرمائے تھے ،اوراس کے ساتھ دنیاوالوں کودعوت کا ممل موگیا تھا کیونکہ باتی لوگ یا تو ان سلاطین وملوک کے زیر فرمان تھے یا پھران کے پیچھے دوراُ فقادہ علاقوں میں تھے جیسے منگولیا، چین اور مشرق بعید کے ممالک جن کے راستہ میں یہ ملوک حائل تھے اس لئے ان کی ذمہ داری بھی ان ملوک پرعائد ہوتی تھی ، ہاں البتہ ان کوبھی دعوت پنجی مگر آپ کے صحابہ کرام کی فتو حات کے زمانہ میں کیونکہ جب پرامن طریقہ سے دعوت قبول نہیں کی گئی تو سوائے جہاد کے اورکوئی چارہ نہیں رہتا تھا کیونکہ دعوت کا ممل بھی ان ایر محال لازی تھا کہ اللہ کا تھم تھا اس لئے پہلے پُر امن مشن کو آنے مایا مگر جب بیر ملوک اس میں رُکاوٹ بین تو بھر جہاد کا در اس میں رُکاوٹ بین کی ارامت انتظار کرنا ، ناگزیر ہوا۔

قوله: "وليس بالنجاشى النع" يعنى آپ نے جسنجاشى كنام خطارسال فرمايا تعابيه وه والأنبيس على جسنجاشى كانام المحمد بروزن اربعد ہے اور جنہوں نے مہاجرين اولين كوجكد وجمايت دى تقى كيونكدوه اس خطست مہلے ہى انقال كر يك يتے اور آپ نے مدينه ميں ان كى نماز جنازه اوافر مائى تقى جس كى تفصيل "ابواب الجمائز"

میں گذری ہے۔(دیکھیے 'باب ماجاء فی صلوٰۃ النبی سلی اللہ علیہ وسلم علی النجاثی'')

باب كيف يُكتب الى اهل الشرك

(غيرمسلمون كوخط لكصن كاطريقه)

"عن ابن عباس انه اخبره ان اباسفیان بن حرب اخبره ان هرقل اَرسَلَ الیه فی نفر من قریش و کانوا تُجّاراً بالشام فَاتوهفَذَكَرَ الحدیثقال: ثم دَعَابكتاب رسول الله صلی الله علیه و سلم فَقُرِی فاذافیه بسم الله الرحمن الرحیم ،من محمدعبدالله و رسوله الی هرقل عظیم الروم ...السلام علی من اتبع الهدی....امابعد!.....". (حسن صحیح)

حفرت عبیداللہ کہتے ہیں کہ حفرت ابن عباس نے ان کو خبر دی ہے کہ ابوسفیان بن حرب نے ان (ابن عباس) سے بیان کیا ہے کہ ہرقل نے پیغام بھیجاان (ابوسفیان) کو جبکہ ابوسفیان قریش کی ایک جماعت کے ساتھ تھے یہ لوگ شام میں تاجروں کی حیثیت سے موجود تھے، چنانچہ یہ سب (۳۰ آدی) ہرقل کے پاس گئے پھر پوری تفصیل روایت بیان کی (جو بھیجین میں ہے اور بخاری نے بدءالوی میں پوری تفصیل کے ساتھ نقل کی ہے) پھر ہرقل نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا کمتوب کرای متکوایا اور وہ بڑھ کر سایا گیا چنانچہ (سرفہرست) اس میں یہ مضمون تھا ہم اللہ الرحمٰن الرحیم یہ جمری طرف سے ہے جواللہ کے بندے اور اس کے رسول ہیں ہرقل کی طرف جوروم کے بروے (آدمی) ہیں۔ اس مخص پرسلامتی ہوجو ہدایت کا پیروکار ہو۔ اتمابعڈ!
دسول ہیں ہرقل کی طرف جوروم کے بروے (آدمی) ہیں۔ اس مخص پرسلامتی ہوجو ہدایت کا پیروکار ہو۔ اتمابعڈ!

حدیث کی پوری شرح بخاری و مسلم کے شار حین نے کی ہے کیونکہ اس خط کا پورامتن اور تفصیلی پس منظرہ ہیں مروی ہیں، یہاں پرامام تر فدی نے اس صدیث کا ایک کلا انقل کر کے غیر مسلموں کوخط کھنے کے طریقہ پر روشی ڈالی ہے کہان کوخط کھا جائے تو پوری ہم اللہ کھے، اور سب سے پہلے کھے پھر اپنانام اور جس کو کھور ہا ہے اس مکتوب الیہ کانام کھے تاہم بعض حضرات سے اپنانام مکتوب الیہ کے بعد کھنے کی اجازت منقول ہے جیسے الی زید من عرو۔ اور یہ کہ مشرکین کوسلام کیسے کیا جائے ، اور یہ کہ خط اور خصوصاً دعوت میں مکتوب الیہ کی حیثیت کو لھوظ رکھ کراس کا اقر ار بونا چا ہے تا کہ دعوت میں نری رہے جوموثر ثابت ہوتی ہے اور یہ کہ مرنامہ کے بعد خطاب فصل کونی اما بعد بھی ہونا چا ہے اور یہ کہ مرنامہ کے بعد خطاب فصل کونی اما بعد بھی ہونا چا ہے اور یہ کہ خط میں اختصار وجامعیت ہونی چا ہے اور یہ کہ کتوب الیہ کواس کی ذمہ داری

کا حساس بہتر طریقہ سے یا دولا یا جائے اور بیر کہ خط کے ذریعہ سے بھی دعوت کا فریضہ ادا ہوتا ہے اور بیر کہ سربراہ کودعوت دینے سے دامی کی ذمہ داری جو باقی تک دعوت رسائی کی ہے پوری ہو جاتی ہے۔ مزید فوائد ومسائل کے لئے بخاری کی شروحات ملاحظہ ہوں۔

باب ماجاء في ختم الكتاب

(خطر مُركانے كابيان)

"عن انس بن مالك قال لَمَّاارادالنبي صلى الله عليه وسلم ان يكتب الى العجم قيل له ان العجم لايقبلون إلا كتاباً عليه خاتم فاصطنع خاتماً قال فَكَانَى انظرالي بياضه في كَفِّه".(حسن صحيح)

حضرت انس سے مروی ہے فرماتے ہیں کہ جب نم صلی اللہ علیہ وسلم نے مجمی بادشا ہوں کے نام خطوط ارسال کرنے کا ارادہ فرمایا تو آپ سے کہا گیا کہ شاہان مجم مہر شدہ خط کے سواکوئی خط قبول (وصول) نہیں کرتے ہیں چنانچہ آپ نے ایک مہر بنوائی حضرت انس فرماتے ہیں کہ میں گویا (ابھی بھی) اس مہر (انگوشی) کی سفیدی آپ کی تقبلی میں دیکھ رہا ہوں۔
آپ کی تقبلی میں دیکھ رہا ہوں۔

تشرت : فوله: "عليه خاتم" اى نقش خاتم جس پراگوشى سے مهرلگائى ئى موكونكه الكوشى كى مهريس تبديلى اورغيزمتعلقة مخص كى طرف سے آنے كا امكان كم ازكم روجا تا ہے۔

اس صدیث سے بیمعلوم ہوا کہ کفار کو دعوت دیتے وقت ان کی جائز شرائط کو ماننے میں کو کی حرج نہیں کی وکہ اس سے دعوت مفیدتر بن جاتی ہے عارضة الاحوذی میں ہے: ' بحَدَدی علی العدادة معهم اذکان خالک ادعسیٰ السی قبولهم ''چنانچیسریانی سیکھنے کی دجہ بھی یہی ضرورت وصلحت بھی حضور کی انگوشی کی تفصیل اپواب اللباس جلد پنجم تشریحات میں گذری ہے۔فلانعید ہ

باب كيف السلام

(ملام كيے كياجائے)

"عن المقداد بن الاسود قال: اقبلتُ آنًا وصاحبان لِي قدذهبت اسماعُناو ابصارُنامن

البَهِ عَلَيْه وسلم فاتَفُسَناعلى اصحاب النبى صلى الله عليه وسلم فليس احد يَقبَلُنا فاتينا النبى صلى الله عليه وسلم: النبى صلى الله عليه وسلم: النبى صلى الله عليه وسلم: احتيليوا هذا اللَبَنَ فكنانَحيَّلِهُ فيشرَب كل انسان نصيبه ونرفع لرسول الله صلى الله عليه وسلم نصيبه فيجئى رسول الله صلى الله عليه وسلم من الليل فيُسلِم تسليماً لا يُوقِظ النائم ويُسمِع اليقضان ثم يأتى المسجد فيصلى ثم يأتى شرابه فيشربه". (حسن صحيح)

حضرت مقدادین اسود فراتے ہیں کہ میں اور میرے دور نیق (مدید) آئے ،اس وقت بحوک وافلاس کی وجہ ہے ہماری ساعتیں اور ہماری بصارتیں بہت کر در ہوچکی تھیں تو ہم نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابہ کے سامنے خودکو پیش کرنا شروع کیا محر (خربت کی وجہ ہے) کوئی ہمیں (مہمان کے طور پر) تبول نہیں کرتا تھا، چتا نچے ہم نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے ، تو آئے ہمیں اپنے محر لے آئے ، لیس (خوش قسمی علی چتا نچے ہم نبی کریاں تھیں تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ان کا دود حدو ہو! لیس ہم دود حدو ہے تھے اور ہم خص اپنا حصہ پیتا تھا اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے جھے کا دود ھے ہم او پر رکھتے تھے چنا نچے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے جھے کا دود ھو ہم او پر رکھتے تھے چنا نچے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مرتے جوسونے والے کو جگا تانہیں تھا اور شنائی دیتا جا گئے والے کو ، کھر آئپ مسجد میں تشریف لاتے اور ایساسلام کرتے جوسونے والے کو جگا تانہیں تھا اور شنائی دیتا جا گئے والے اور اس کو پی مسجد میں تشریف لے جاتے اور (تنجد کی) نماز پڑھتے کھر اپنے جھے کے دود ھے کے پاس آئے تھے اور اس کو پی لیتے تھے۔

اس مدیث سے سلام کی کیفیت معلوم ہوئی کہ نہ توالی پست آ واز سے ہو کہ تخاطب شن نہ سکے اور نہ بی اتنی بلند آ واز سے ہو کہ سونے والوں کی نیند میں خلل ڈالے اور نماز ہوں کی نماز میں ہمی خلل ڈالے۔

یروایت سلم بی تفصیل سے مروی ہے جس کا ظل صدیہ ہے کہ حضرت مقداد قرماتے ہیں کدایک رات کوشیطان نے جھے آپ کے حصد کا دودھ پینے پرا کسایا لیکن جیسے بی دودھ پید بی کہ چاتو جھے خت ندامت موئی بیں نے چا دراوڑھ لی مرنیز کہاں آربی تھی کہ آپ کی بددعا وکا خطرہ لائی تعاچنا نچے آپ آئے جب پیالہ کو

عَالَى بِاياتُو آبِّ نے يردعاء يرصل: "المهم اطعم من اطعمني واسق من سقاني "توميل نے محمر الليا تا کہآئے کے لئے ایک بمری ذیح کرلول مرجب بمربوں کے پاس کیا توان کے تھن دودھ سے بھرے ہوئے تے میں نے دودھ نکالا اورآٹ کے پاس آیا،آٹ کو پلایا اور پھرآٹ کوساری صورت حال بتلادی۔ (مسلم س:۱۸۴ج:۲)

باب ماجاء في كراهية التسليم على من يبول (پیشاب کرنے والے پرسلام مکروہ ہے)

"عن ابن عمران رجلاً سَلَّمَ على النبي صلى الله عليه وسلم وهويبول فلم يَرُدُّ عليهُ النبي صلى الله عليه وسلم "السلام". (حسن صحيح)

ایک مخص نے می صلی الله علیه وسلم کوسلام کیااس حال میں کرآپ پیشاب کررہے تھے ہی نبی صلی الله عليه وسلم في اس كوسلام كاجواب بين ديا-

تشريح: _معلوم مواكه پيشاب مين مشغول كوسلام كرنا مكرده إدرا كركوئي كري تواس كاجواب بين ویاجائے، مسئلہ کی تفصیل ' کو اهیة ر دالسلام غیر متوضی '' کے باب میں گزری ہے۔ (ویکھتے: تشریحات ص:۲۸۲ج:۱)

باب ماجاء في كراهية ان يقول عليك السلام مبتدئاً (پہل کرنے والے کے لئے علیک السلام کہنا مکروہ ہے)

"عن ابى تميمة الهُجيمي عن رجل من قومه قال طلبتُ النبي صلى الله عليه وسلم فلم اقدرعليه فجلستُ ،فاذانفرٌ هوفيهم والااعرفه وهويُصلِح بينهم فلمافَرَغَ قام معه بعضهم فقالوا يارسول الله افلمارأيتُ ذانك قلت"عليك السلام يارسول الله!" "عليك السلام يا رسول اللُّه" "عليك السلام يا رسول الله" قال "عليك السلام تحيَّةُ الميَّت"ثم أقبَلَ عَلَى فقال اذالَقِيَ الرجل احاه المسلم فليقل السلام عليك ورحمة الله وبركاته ثم رَدٌّ عَلَىٌّ النبي صلى الله عليه وسلم قال: وعليك ورحمة الله وعليك ورحمة الله إروعليك ورحمة

الله).(حسن صحيح)

حضرت الوتميمة في قوم كايك فض (ابوئرى جابربن سليم الله جديسى) سنقل كرتے بي فرماتے بي فرماتے بي كديش ني صلى الله عليه وسلم كو و هوند هتار باليكن بين اس بين كامياب نه بوسكاتو بين بيئة كيا پجراچا تك ايك جماعت (نظر) آئى آپ بھى ان لوگوں بين تھے كريس آپ كو پپچا تنائيس تفاجبكة آپ ان كے درميان بين مصالحت كرار ہے تھے، چنا نچ جب آپ فارغ بو چكو آپ كساتھ پجولوگ بھى كھڑے بوت و كالين جانے كے) تو انہوں نے كہا: اے اللہ كے رسول! پس جب جمھے يہ معلوم ہوا (كرآپ يہى بين) تو ميں نے كہا تھ پر سلامتى ہوا اللہ كرسول! (تين باركہا) آپ نے فرمايا و عليك السلام 'مُردوں كاسلام ہے! پھرآپ ميرى طرف متوجہ ہوكے اور فرمايا جب تم ميں سے كوئی فض اپنے مسلمان بھائى سے ملے تو اس كو (يوں) كہنا چا ہے مرف ميں درجمۃ الله ورجمۃ ال

تشریخ:۔قوله: "عن رجل" اگل روایت پی ان کے نام کی تصریح ہے یعنی جابر بن سلیم جھی چونکہ ہید یہ بیٹ وارد سے اور آپ کے ہاتھ بیعت اسلام کرنا چا ہے سے گر آپ کو پہچان جیس رہے ہے اس لئے تھا کے اور بیٹھ گئے گھران کا تین مرتبہ سلام کرنا اعلی کی وجہ سے تھا اور آپ کا جواب بیل تا خیر کرنا عدم وجوب جواب کی وجہ سے تھا کیونکہ غیر مسنون سلام کا جواب ضروری نہیں گر آپ کا تین بار جواب دینا ان صحابی کی ولداری کے لئے تھا ور نہ عام معمول شریف ایک بار ہی جواب دینے کا تھا، چونکہ علیک کی تقدیم سے اختصاص کا شائبہ ہوتا ہے اس لئے آپ نے نام کر کے فرایا "فرای ایس بار ہی جواب السلام تحید المعیت "میت سے مراد جابل بھی ہوسکت ہوتا تھا جو نکہ علی و کسا ماہ ہوتا تھا جو نکہ علی کی مشابہت اللام سے قبل جابل لوگوں کا سلام علیک السلام ہوتا تھا جس میں علیک مقدم ہوتا تھا چونکہ جُہلا ء کی مشابہت اچھی بات نہیں اس لئے آپ کے اسلام سے تاب کے اسلام کیا جا تا تھا جسے عربی اشعار و مراثی میں المحمول بھی ہوسکت ہوتا تھا جسے عربی اشعار و مراثی میں المحمول بھی ہوسکت ہوتا تھا جسے عربی اشعار و مراثی میں المحمول ہوتا تھا بیت میں اوگ مردوں کو ایسا سلام کیا جائے اور نہ بی آپ کا اہل قبور پر سلام اس طرح ہوتا تھا بلکہ اس میں بھی السلام سے کہ مردوں کو ایسا سلام کیا جائے اور نہ بی آپ کا اہل قبور پر سلام اس طرح ہوتا تھا بلکہ اس میں بھی السلام سلام کیا جائے اور نہ بی آپ کا اہل قبور پر سلام اس طرح ہوتا تھا بلکہ اس میں بھی السلام سے کہ والمیت میں لوگ مردوں کو علیک السلام سے سلام کرتے لہذا تعہیں بحثیت مسلمان ایسانہیں کرنا چا ہے۔

حضرت تقانوی المسک الذی میں فرماتے ہیں کہ میرے نزدیک بداضافت الی الفاعل ہے یعنی

مردے کی زندہ کوسلام تو کرنیس سکتے ہیں مگر جب زندہ اسے سلام کرتا ہے تو مردہ جواب میں علیک السلام کہتا ہے اور تم تو زندہ بولہذا مُر دوں جیسا سلام نہ کرو!

پھر پیچے وض کیا جا چکا ہے کہ السلام علیک کے بجائے جمع کا میپغہ علیکم کہنازیادہ افضل ہے تا کہ کراماً کاتبین بھی اس میں شامل ہوں۔امام نو دی شرح مسلم میں لکھتے ہیں:

"والافسال أن يقول السالام عليكم ليتناوله ومَلَكيه واكمل منه ان يزيد ورحمة الله وايضاً وبركاته ولوقال سلامٌ عليكم أجزأه". (نودي ص:٢١٢ج:٢) لينى اگري اطب ايك بوتوالسلام عليك بحى كانى ہے گرعليم افضل ہے۔اس طرح جواب كا حال بحى ہے۔ غرض جو پہلے سلام كرے وہليكم كومة خركر كے كے السلام عليكم۔

قولسه: "و ذکسر قبصة طویلة" امام *زندگ نے اس مدیث کو تفرنقل کیا ہے تعصیلی روایت ابودا وُد* "باب ماجاء فی اسبال الا زار' میں ہے۔ (ص:۵۲۴ج:۲، لباس، میرمحد کتب خانہ)

صديث آخر: عن انس بن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم: كان اذاسلم، سَلّمَ ثلاثاً واذاتكلم بكلمة أعَادها ثلاثاً". (حسن غريب صحيح)

رسول الله صلى الله عليه وسلم جب سلام كرتے تو تين بارسلام كرتے اور جب كوئى بات فر ماتے تواس كوتين بارلوثاتے تھے۔

تشریح: ۔ آخضور کی عادت شریفہ سلام کررکرنے اور عام بات دیر انے کی ندیمی اس لئے کہاجائے گا کہ اس صدیث کا خاص مجمل مراد ہے مثلاً پہلاسلام استیذ ان کے لئے ہوتا تھا دوم تحید کے لئے اور سوم والیسی پر الوداع کے لئے۔

یا جب مجمع بردا ہوتا تھا تو ایک سلام آ مے یعنی سامنے والوں کو دوسرادا کیں جانب والوں کو اور تیسراہا کی طرف والوں کو، یا پہلا مجمع کے شروع میں یعنی واخل ہوتے ہی ، دوسرا در میان میں اور تیسراا خمر میں بیٹنے والوں کو۔ اس طرح جب کوئی بات اہم ہوتی تو اسے تین مرتبہ ارشا وفر ماتے یا کوئی مضمون مشکل ساہوتا تو اسے مکر وفر ماتے تا کہ سب لوگ سجھ جا کیں، یا مجمع بردا ہوتا تو آ مے اور دا کیں با کیں تین بار ارشا وفر ماتے۔

بابٌ

"عن ابى واقدالليثى ان رسول الله صلى الله عليه وسلم بينماهو جالس فى المسجد والنساس معه إذا قبل ثلاثة نفر فاقبل اثنان الى رسول الله صلى الله عليه وسلم وذهب واحد، فلما وقفاعلى رسول الله صلى الله عليه وسلم سَلّمَا، فاما احدهما فَرَأى فُرجة فى الحلقة ف حلس فيها واما الاخر فجلس خلفهم ، واما الآخر فَادبَرَ ذاهباً ، فلما فَرَ عُرسول الله صلى الله عليه وسلم قال الله فأوى الى الله فأواه الله واما الاخر فاعرض فاعرض الله عنه واما الاخرة واما الاخرة فاستحيى فاستحيى الله منه واما الاخرفاعرض فاعرض الله عنه وحسن صحيح)

حضرت ابوواقد لین سے روایت ہے کہ دریں اٹنا جبکہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم مبحد میں جلوہ افروز سے اورآپ کے ساتھ لوگ بھی سے ،استے میں تین فضی سامنے سے آئے پس دوتورسول الله صلی الله علیہ سلم کی (مجلس کی) طرف آگے بو سے اورا کیک چلا کیا، چنا نچہ یہ دونوں جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے پاس سلم کی (مجلس کی) طرف آگے بوسے اورا کیک چلا کیا، چنا نچہ یہ دونوں جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم سراتو وہ (بتقاضائے حیام) لوگوں کے پیچے بیٹھ کیا جبہ تیسر اپیٹھ پھیر کرچلا گیا، جب رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے ایک نے اللہ سے جگہ میں تین اشخاص کی خبر ندوں؟ کہ ان میں سے ایک نے اللہ سے جگہ میں تو اللہ نے اسے جگہ دی (یعنی صلقہ میں) اور دوسرے کوشرم آئی (صلقہ کے اندر بیٹھنے سے یا والہ س جائے میں تو اللہ نے اس کو مروم نہیں کیا، اور تیسرا جو تھا تو اس نے گریز کیا (میٹھنے سے) تو اللہ نے اس سے بھی گریز کیا (میٹھنے سے) تو اللہ نے اس سے بھی گریز کیا (میٹھنے سے) تو اللہ نے اس سے بھی گریز کیا (میٹھنے سے) تو اللہ نے اس سے بھی گریز کیا (میٹھنے سے) تو اللہ نے اس کو مروم نہیں کیا، اور تیسرا جو تھا تو اس نے گریز کیا (میٹھنے سے) تو اللہ نے اس کو مروم نہیں کیا، اور تیسرا جو تھا تو اس نے گریز کیا (میٹھنے سے) تو اللہ نے اس کو مروم نہیں کیا، اور تیسرا جو تھا تو اس نے گریز کیا (میٹھنے سے) تو اللہ نے اس کو میں کیا یا)۔

تشری : قوله: "فاوی الی الله فاواه" پہلا بغیر مدکے ہے کیونکدلازی ہے جبکہ دوسرامدود ہے کہ تعدی ہے، یہ تینوں یا تو مجد کے پاس سے گذرر ہے سے چن میں دوائدر آگئے اورایک وہیں سے چلا گیا یا پھر نیوں ائدر آگئے اورایک وہیں سے چلا گیا یا پھر نیوں ائدر آئے گرایک نے آپ کے قریب جانے کی کوشش کی تواللہ نے اس کی مراد پوری کر لی جبکہ دوسر سے نیوں ائدر آئے جیار ہوئی کر لی جبکہ دوسر سے نے بتقاضائے حیا مجلس میں داخل ہونے کومناسب نہیں سمجھا تو طقہ کے کنار سے بیٹے گیا جبکہ تیسراوالی چلا گیا اس نے ضرورت بیٹے کی محسوس نہیں کی تواللہ جارک وتعالی نے بھی اس کی پراوہ نہیں کی ہے بھی ہوسکتا ہے کہ دوسر سے نے بھی جانے کی نیت کی ہوسکتا ہے کہ دوسر سے نے بھی جانے کی جانب لوٹ

گیالبذان فاستحیی "بیل بیدونول احتال بیل قبولده: "فاستحیی الله منه "اگر حیاء وغیره صفات المخلوق کا طلاق الله پر به وجائے تو اس سے مراد غایات بوتی بیل یعنی ذکر سبب اور مراد مسبب ، مسئلہ کی وضاحت پہلے گزر چکی ہے علی بذا اگر مراد بیہ وکدوہ مجلس کے اندر بیٹھنے سے شرما گیا تو فاسخی اللہ کا مطلب بیہ بوگا کہ اللہ نے اس کی حیاء پر جزاء عطافر مائی علی بذا اس کا تو اب پہلے والے سے زیادہ بوا، اورا گر مطلب بیہ بوکہ وہ واپس جانے سے زک گیا تقاضائے حیاء تو فی سست سے مرم نہیں مطلب بیہ بوگا کہ اللہ نے بھی اس کو جلس سے محروم نہیں فر مایا اور اس کا تو اب ترک نہیں کیا ۔ بناء بر بر تقدیر حیاء کا اطلاق اللہ پر مشاکلة بوا ہے جیسے" ان السمندافی قیب بخدعون الله و هو خادعهم"۔ (النساء آیت: ۱۳۲)

اس مدیث سے معلوم ہوا کہ جو حض دینی حلقہ اور اللہ کے رسول کے جینے قریب جانے کی نیت اور کوشش کرتا ہے تو وہ اس تناسب سے اللہ کا قرب حاصل کر لیتا ہے قال اللہ "واللہ ین جاهدوا فینا لنهدینهم شبلنا" (اللیة) اس کے رعس جو حض بے اعتنائی ولا پرواہی کرتا ہے تو وہ محروم ہوجاتا ہے۔

صلى الله عليه وسلم جلس مَرزة قال كُنّااذااتيناالنبي صلى الله عليه وسلم جلس احدُنا حيث ينتهي ". (حسن غريب)

حضرت جابر بن سمر ہفر ماتے ہیں کہ جب ہم نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آتے تو ہم میں سے ہوخض حلقے کے آخر میں بیٹھ جاتا۔

یعنی گردنیں پھلا تکنے کی کوشش نہیں کرتے بلکہ جہاں جوم ختم ہوتااس کے پیچے بیٹے جاتے کیونکہ اس سے نہلوگوں کو تکلیف ہوتی ہے اور دنی بات چیت اور وعظ وہیعت میں خلل پڑتا ہے، ہاں اگرآ کے جگہ خالی ہویا کوئی معزز خفس ہواوراس کے آگے جانے سے کسی کو تکلیف نہ ہویا کوئی اس کوآ کے ججمع میں جگہ دے یاصف میں جگہ دے آت جانے جانے سے کسی کو تکلیف نہ ہویا کوئی اس کوآ کے جمع میں جگہ دے یاصف میں جگہ دے تواس کی طرف جانا جائز ہے جیسا کرتشر بچات: ص:۲۸۲ ج:۲" ہاب ماجاء فی کو اہیة المتخطی یوم الجمعة "میں گذرا ہے۔

باب ماجاء (ما)على الجالس في الطريق

(راستے پر بیٹھنے والے کی ذمہ داری)

"عن ابى اسحاق عن البراء ولم يسمعه منه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم مَرَّ بناس من الانصاروهم جلوس فى الطويق فقال: ان كنتم لابُدَّ فاعلين فرُدُّو االسلام واعينوا المظلوم واهدو االسبيل". (حسن)

حضرت ابوسحاق بدروایت حضرت براء بن عازب سے نقل کرتے ہیں مگران سے بدروایت سی نہیں کے کہدرسول اللہ علیہ واللہ انسار کے چندلوگوں کے پاس سے گذر سے جوراستہ میں بیٹے ہوئے تھے آپ نے فرمایا اگر تمہارے لئے راستہ پر بیٹھنا تا گزیر ہوتو سلام کا جواب دیا کرو!اورمظلوم کی مددکرو!اور (بیسکے ہوئے کو) راستہ تایا کرو!۔

تشری : قوله: "ولم يسمعه" يعن ابواسحاق في يدوايت حضرت برام سفيس في ابام امام ترفي في المام المام ترفي في المام المام ترفي في المام المام ترفي في المام المام

حدیث کامطلب میہ کہ اولاً تو کوشش میہ ہونی چاہئے کہ راستوں پرنہ بیٹھا جائے کیونکہ وہاں سے عورتوں کے گذر نے کابھی احمال ہے جس سے ایک طرف بدنظری ممکن ہے تو دوسری طرف گذر نے والی عورت کوراستہ میں رکا وٹ محسوس ہوگی البتہ اگر کوئی بیٹھنا چاہے تو اس کی اجازت دی گئی گراس کومشر وط کیا گیا چند آ داب کے ساتھ کہ سلام کا جواب دو گے مظلوم کی مدد کرو گے ،اور بھو لے ہوئے کوراستہ بتا کہ کے علاوہ ازیں بھی کچھ آ داب ہیں مثلاً ہو جھیں مدد کرنا آج کل جیسے گاڑی کو دھکا دینے کی ضرورت پیش آتی ہے اس میں تعاون کرنا وغیرہ۔

دراصل شریعت ہرموقعہ پرمسلمان کو بیاحساس دلاتی ہے کہ اس کی زندگی کسی بھی جگہ اور کسی بھی وقت ذمددار یوں سے خالی نہیں ہے وہ جہاں بھی ہواس کی فلاں فلاں ذمدداری ہوگی از اس جملہ راستہ کی ذمدداریاں بٹلا دی کئیں۔

باب ماجاء في المصافحة

(مصافحه (باتحد ملانے) كابيان)

حضرت انس فرماتے ہیں کہ ایک فض نے ہو چھا اے اللہ کے رسول! جب ہم میں سے ایک آدی اپنے (مسلمان) بھائی سے ملے یا اپنے دوست سے ملے تو کیاوہ اس کے لئے تھکے؟ آپ نے فرمایا ' دنہیں' اس نے عرض کیا تو کیا (اس کی عرض کیا تو کیا (اس کی اجازت ہے کہ) اس کا ہاتھ کیڑے (یعنی) اس سے ہاتھ ملائے؟ آپ نے فرمایا ' ہاں'!

تشری : اس مدیث میں رسول الله ملی الله علیہ وسلم سے تین سوالات ہو چھے میے ہیں جن میں سے دو
کی آپ نے نفی میں جواب دیا ہے اورایک کا اثبات میں گردراصل یہاں چارسوالات ہیں: (۱) تھکنا
(۲) معافقہ کرنا (۳) ہوسددینا اور (۴) مصافحہ کرنا (۱) ان میں پہلا یعن تھکنا کروہ بلکہ حرام ہے جس کا ضابطہ
اکھے باب میں ملاحظہ کیا جا سکتا ہے حضرت شاہ صاحب العرف المعندی میں فرماتے ہیں: ''امساالانسحناء
عندائسم لاقعات فسم کروہ ہیں اورامام ابو یوسف کے مافی فتاوی المحنفیة (۳،۲) معافقہ یعنی کھے ملنا اور ہوسہ
دینا طرفین کے نزدیک کروہ ہیں اورامام ابو یوسف کے نزدیک اس کی مخبائش ہے چنا نچہ ہدا ہے جلد چہارم کتاب
الکرامیة میں الجامع الصغیرمع البدایہ کی عبارت ہے:

"ويكره ان يقبّل الرجل فَمَ الرجل اويده اوشيئاً منه اويعانقه وذكر الطحاوى ان هذاقول ابى حنيفةومحمد وقال ابويوسف رحمهم الله لاباس بالتقبيل والمعانقة الخ".

مرمتاخرین حنفید کی اکثریت کا میلان جواز کی طرف ہے۔ چونکہ دونوں طرف روایات پائی جاتی ہیں اس لئے تطبیق یوں دی گئی ہے کہ اگر فتنہ کا اندیشہ ہویا کوئی اور مفسدہ ہوجیسے مالداری کی وجہ سے ہاتھ چومنا تو پھر کروہ ہے جبکہ فتنہ کا اندیشہ نہ ہونے کی صورت میں بلا کراہیت جائز ہے العرف المشذی میں ہے:

"وَامَّا التقبيل فَمُتَحَمَّلٌ والمعانقة جائزة بشرط الامن عن الوقوع في الفتنة".

بعض الل ظاہر نے کہا ہے کہ سفر سے آنے والے سے معانقہ کرنا جائز ہے جبکہ عام ملاقات میں مکروہ ہے اس کے لئے امام ترفہ گائے اس کے بعد مستقل باب قائم کیا ہے (س) چوتھا امریعنی مصافحہ کرنا بالا تفاق جائز ہے۔مصافحہ صغیر ہے۔مصافحہ سے باب مغاعلہ کا مصدر ہے یعنی ہاتھ کی سطح اورخصوصاً جنیلی کو تھیلی سے ملانے کو کہتے ہیں تاہم شریعت کی اصطلاح میں اس کا اطلاق پورے ہاتھ لیعنی تھیلی انگلیوں سمیت ملانے پر ہوتا ہے۔

تجب کی بات یہ ہے کہ بیلوگ امام بخاری کے تراجم کو بہت اہمیت دیتے ہیں گریہاں نہ معلوم ان

کوکیا ہوا؟ شایدان کے کوئی خاص اصول مقرر نہ ہوں۔ نیز دہ مصافی کو بیعت پر قیاس کر کے استدلال فرماتے ہیں

کہ چونکہ بیعت ایک ہاتھ سے ہوتی ہے لہذا مصافی بھی ایک ہاتھ سے ہونا چاہئے حالا تکہ یہ بھی بے جاضد ہے

کیونکہ اگر مصافی کا طریقہ قیاس سے ثابت کرنے کی مخبائش ہے (حالا تکہ آپ تو قیاس کو اہمیت نہیں دیتے ہیں) تو

مصافی کو استلام جراسود پر قیاس کرنا چاہئے کہ دونوں میں مشابہت پائی جاتی ہے بیعت پر قیاس میں الفارق ہے

کیونکہ بیعت توایک وعدہ ہوتا ہے اور عرب ایسے موقعوں پر ہاتھ رکھ دیتے ہے چنا نچہ تھے کوئا کو ای لئے صفحہ

کیونکہ بیعت توایک وعدہ ہوتا ہے اور عرب ایسے موقعوں پر ہاتھ درکھ دیتے ہے چنا نچہ تھے کہ کاس لئے میں۔

بہرمال اس مسلم میں دونوں جائین سے افراط وتفریط ہوتی ہے بعض علاء ایک ہاتھ سے طانے کوغیرمسنون کہتے ہیں میکی درست نہیں جبکہ غیرمقلدین ایک عی ہاتھ طانے پرامرار کرتے ہیں میکی زیادتی

ے-حضرت گنگونگ الکوکب میں فرماتے ہیں:

"والمحق فيه ان مصافحته صلى الله عليه وسلم ثابتة باليدوباليدين إلّاان المصافحة بيدواحدة لماكانت شِعار اهل الافرّنج وجب تركه لذالك".

المستر شد: عرض كرتا ہے كه ال مسئله كى نوعيت كھڑ ہے ہوكر پيثاب كرنے كى طرح ہوگئى ہے كه اصل شريعت ميں بول قائما كى مخواكش اور ثبوت توہے مگر بوجوہ اس كى علاء ممانعت كرتے ہيں جس كى تفصيل''باب النبى عن البول قائما''ميں گزرى ہے۔(ديكھئے تشريحات:ج:اص:١٠)

خلاصہ یہ ہے کہ جس طرح بول قائماً غیر سلموں اورخصوصاً انگریزوں کا شعار ہونے کی وجہ سے علماء نے کروہ تحریمی قرار دیا ہے اس طرح مصافحہ ایک ہاتھ سے بھی غیر سلموں کے شعار ہونے کی وجہ سے ممنوع قرار پایا خصوصاً جب ہندوستان میں انگریزوں کے خلاف تحریک آزادی زوروں رکھی ۔

اگرغیرمسلموں کی مشابہت کی شناعت کی تفصیل درکار ہوتو امام ابن تیمیہ" کی کتاب' إقت صساء المصدواط السمستقیم مخالفة اصحاب الجحیم "کامطالعہ کیا جائے کہ کس طرح علاء وقت شعار غیر ہونے کی وجہ سے مستحب کے ترک کے قاوی دے چکے ہیں طاعلی قاری فرماتے ہیں: ' کسل مسنة تکون شِعار اھل بدعة فتر کھا اولی''۔

ابن تیمیہ نے اپنی مندرجہ بالا کتاب میں اس کی کئی مثالیں دی ہیں کہ بہت سے شافعیہ روافض کی مثابہت سے بیخے کے لئے قبر کی سنیم مسنون کورک کرنے کا فتوی دیتے ہیں اور حنفیہ نے کفار کی عید کے موقع پر بیخے وکفر قرار دیا ہے اور مالکیہ کہتے ہیں کہ جس نے کفار کی عید کے موقع پر بیخے ون کردی گویا اس نے خزیر ذرخ کیا (ص: ۱۳۵) اور امام احمد تو یہاں تک فرماتے ہیں کہ میمینوں اور بچوں کے نام فاری میں رکھنا اس نے خزیر ذرخ کیا (ص: ۱۳۵) اور امام احمد تو یہاں تک فرماتے ہیں کہ میمینوں اور بچوں کے نام فاری میں رکھنا کمروہ ہیں 'و اما کلام احمد و اصحابه فی ذالک فکٹیر جداً اکثر من ان یُحصر النے''۔ (ص: ۱۳۷) حدیث آخر:۔ حضرت قنادہ نے حضرت آن دہ نے حضرت آنس رضی اللہ عنہ سے پوچھا کہ کیا صحابہ کرام میں مصافحہ پر تعامل تھا کا نہوں نے فرمایا'' ہاں'' (حسن صحح)۔ حدیث آخر:۔ ابن مسعود سے مردی ہے کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا سالم (ملاقات) کی تحمیل میں سے ہے ہاتھ پکڑتا (یعنی ہاتھ ملانا)۔

ان کی بیدوسری حدیث ابواب الصلوة میں گذری ہے بین نمازعشاء کے بعد گفتگو کی اجازت فظ نمازی (تہجد بڑھنے والے) اور مسافر کے لئے ہے۔ (ویکھنے تشریحات: ص: ۱۲ اس ج: ۱٬۵۰۱ باب ماجاء فی رخصة السمر بعد

العثاء ") اوراس سے بل والے باب میں ص: ۱۵ میر

حدیث آخر: حضرت ابوامات ہے روایت ہے کدرسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا کہ مریض کی پوری طرح عیادت (یمار پری) یہ ہے کہ تم میں سے کوئی ایک (یعنی عیادت کرنے والا) اپناہا تھاس کے ماتھ پر کھ کراس سے پوچھ "کیف هو "لیعنی آپ کیسے ہیں؟ اور آپس کی دعاوسلام کی محکل مصافی سے ہوتی ہے۔

اس حدیث کی سندعلی بن یزید کی وجہ سے بتقری امام بخاری " کمزور ہے تا ہم اس میں جومضمون ہے وہ اعتدال کی تلقین ہے کہ عیادت اور ملا قات کے وقت اتن ہی بات بھی کافی ہے مزید تکلف کی ضرورت نہیں ، ہاں اگر کسی امر عارض کی وجہ سے اس میں کی بیشی کی ضرورت محسوس ہوتو وہ ممنوع نہیں ہے۔

صديث آخر: "مامن مسلمين يلتقيان فيصافحان إلا تُحْفِرَ لهماقبل ان يتفرقا". (حسن غريب)ويُروئ هذا الحديث من غيروجه عن البراء".

حضرت براء بن عازب سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کوئی دومسلمان ایسے نہیں ہیں کہ وہ آپس میں ملیس اور مصافحہ کریں مگر ہی کہ بخشے جاتے ہیں وہ دونوں قبل اس کے کہ وہ جُد اہوں۔

اس مدیث میں نہ صرف مصافحہ کے جواز کا بیان ہے بلکہ اسے باعث مغفرت بھی قرار دیا گیا ہے تا ہم
اس بارے میں دوسری احادیث کو کھوظر کھتے ہوئے کہا جائے گا کہ صرف خاموثی سے مصافحہ گنا ہوں کی مغفرت کا
باعث نہیں بلکہ جس سے پہلے سلام ہواورا پنے گنا ہوں کی مغفرت کی طلب ہولیتی زبانی استغفار ہوبعض روایات
میں درود شریف پڑھنے کا ذکر ہے بعض میں جمر کا بھی ذکر ہے الی ملاقات اور مصافحہ باعث مغفرت ہے۔

مسنون ہے جبکہ نمازی جب ایک ساتھ کھڑے ہوجاتے ہیں قوباتھ نیس طاتے ہیں گر جب فجر وعمر کی نمازے فارغ ہوجائے وی مرائ ہوجائے ہیں اس کے حنیہ کے زدیک بی کروہ ہے:"ولھ فاصد احسان میں اسلامی اللہ علامہ میں اللہ علی علی اللہ علی علی اللہ علی

المستر شد: عرض كرتا ب كه لما على قارئ كا قول واقعتاً مج اور داخ بلكن بميں بيد كينا ب كه انہوں في جو وجه كرا ہيت كى بمان فرمائى ہ آيا بيہ معقول اور مج ب اگر مج به تو چرعيدين كى نمازوں كے بعد معانقه كوكيوں مكروہ نه كہا جائے ؟ جبكہ مصافحہ كے استجاب پراجماع اور معانقة طرفين كے نزد يك عام حالات ميں اور عند الملاقات بھى مكروہ ہے ہى عيد كى نماز كے بعد كيے مستحن ہوسكتا ہے؟؟؟

باب ماجاء في المعانقة والقُبلة

(گلے ملنے اور بوسدد یے کابیان)

"عن عائشة قالت قدم زيدبن حارثة المدينة ورسول الله صلى الله عليه وسلم فى بيتى فَاتَاه فقرع الباب فقام اليه رسول الله صلى الله عليه وسلم عُرياناً يَجُرُّ ثوبه والله مارأيع عُريانا قبله ولابعده فاعتنقه وقَبَّلَه". (حسن غريب)

حضرت عائشہ فرماتی ہیں کہ زید بن حارثہ دید بڑتی مجے جبکہ رسول اللہ علیہ وسلم میرے کھر ہیں سے چنا نچہ حضرت عائشہ فرماتی ہیں کہ زید بن حاصر ہونے کے لئے آئے اور درواز و کھنگھٹایا، پس رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم (بساختہ) ان کی طرف اُٹھے پر ہنہ حالت میں اپنی چا در کو کھیٹے ہوئے، بخدا! میں نے آپ کواس سے پہلے اور اس کے بحد بھی پر ہنہیں دیکھا، چنا نچہ آپ نے ان کو کھلے لگا یا اور بوسد دیا۔

تشریخ: قوله: "قدم زیدبن حادثه، بشهور صافی بین جن کوآپ نظینی بنایاتها پر قرآن نے اس اصطلاح اور طرز کومنسوخ کردیا جیسا کہ سورہ احزاب میں بیان ہوا ہے تا ہم آپ کی ان سے محبت قائم ودائم رہی السابقون الاولون میں بین، یہ واقعہ کس سفر سے والیسی پر پیش آیا ہے تو کسی روایت میں نظر سے نیس گذرا ہے ممکن ہے کہ کی غزوہ سے والیسی مراد ہویا کس سفر سے قبول ہے: "غریاناً" اگر چاس میں بیا حال ہے کہ آپ کا ایورا بدن مبارک منتشف ہوا ہواور بیشان نبوت کے خلاف نہیں ہے جیسا کہ حضرت موگ کے بارے میں کا ایورا بدن مبارک منتشف ہوا ہواور بیشان نبوت کے خلاف نہیں ہے جیسا کہ حضرت موگ کے بارے میں

بخاری کی روایت ہے، تاہم یہاں میچ محمل پر مدیث کو بلائکلف حمل کیا جاسکتا ہے کہ آپ کے کندھوں سے بالائی جا در گرگئ جہاں تک از ار کا تعلق ہے تو وہ بدستور باتی تھا۔

قول : "بَجُو فوب " چوكدات شدت مرت كا وجد فرا الحف تصال لئے كندموں سے جادر كمك كى جے آب سنبال رہے تے تو تھينے كامورت بيدا ہوگی قولد: "و الفعاد أيته عُرياناً قبله و الابعده" يعنى ميں نے آپ كركى سے ملتے ہوئے يا كرے سے باہراس حالت ميں مجمئ نيس و يكھا ہے ، كونكد آپ عام حالات ميں محرك اندر بھى يورالباس زيب تن فرمات (تدبر)

قوله: "فاعتنقه وقبله" سبارے میں "باب ماجاء فی المصافحة" میں ہم نے العرف الشذی اور ہدایہ کی عبارات نقل کی جی فلید کر البیت کا دارد مدارخوف فتنہ سے محفوظ ہونے اور اس میں بڑنے برہے۔ ہونے اور اس میں بڑنے برہے۔

پوسد دین اس میں الکوک الدری کے میں نے الدرالخار سے کا چوہنے کی پانچ صورتیں ہیں: (۱) ہیار کرنے کی غرض سے جیسے چھوٹے نیچ کو چومنا (۲) رحمت کے لئے جیسے والدین کے درکو بوسہ دینا (۳) شفقت کے لئے جیسے بعائی کے ماتھے کو بوسہ دینا (۳) شہوت کے طور پرجیسے ہوئی کا بوسہ لینا (۵) قبلہ تحتیہ (دعاوسلام) جیسے المل علم وعادل با دشاہ کے ہاتھ کو چومنا جبکہ ما حوالحقار قول کے مطابق غیر عالم اور غیرعادل بعنی عام آدی کے ہاتھ کو بوسہ دینا مباح نہیں بعض حضرات نے قبلہ دیات کا بھی اضافہ کیا ہے جیسے خیرعادل بین عام آدی کے ہاتھ کو بوسہ دینا مباح نہیں بعض حضرات نے قبلہ دیا ت کا بھی اضافہ کیا ہے جیسے حجراسود کا بوسہ لینا جبکہ علما وادر مظلماء کے سامنے ذھین کو بوسد دینا حرام ہے۔

خلاصہ یہ ہوا کہ چھوٹے بچوں ، مال پاپ اور ہمائی کے سر، بیوی اور جمراسود کا بوسہ لینا جا تزہے جبکہ
پانچ یں تئم میں تفصیل ہے کہ اگر کسی کے علم وعدل یا زہدیا کسی اور ویٹی شرافت کی وجہ سے ہاتھ کو چو ہے تو یہ
جائز ہے بشر طبیکہ اس میں غلونہ ہواور بوسہ دینے والے کی نیت بھی تعظیم ویٹی ہواور جس کا بوسہ لیا جار ہاہے وہ بھی
بد باطنی تکبراور عجب میں جتلا منہ ہواس کے علاوہ تمام صور تیں ممنوع جیں اگر چہ بعض سے زیادہ شنع جیں۔

السر بر تعظیم کے دید میں میں اس کے علاوہ تمام صور تیں ممنوع جیں اگر چہ بعض بعض سے زیادہ شنع جیں۔

کیا مجدو تعظیمی مفروشرک ہے؟ جیبا کراو پر بیان ہوا کے قبلہ بعض صورتوں میں جائز اور بعض میں منوع ہے کیا سیدہ کرنا کسی بھی صورت میں جائز نہیں گو کہ بغیر نجھکے ہاتھ پاؤل چونے کی بعض علماء نے اجازت دی ہے ، کیکن سوال یہ ہے کہ آیا تھکنے کے ادتکاب سے مفروشرک تولازم نہیں آتا؟ یہ سوال بحدہ تعظیمی کے بارے میں زیادہ زورے اُفتا ہے۔

اس مسئلہ پرشخ الاسلام علامہ شبیراحم عثانی " نے فضل الباری شرح (تقریر) بخاری میں تفصیل سے بحث کی ہے، جس کا خلاصہ یہ ہے کہ بعض لوگ اس کوشرک جلی قراردیتے ہیں کین محققین کے زویک بیش کر آئیں ہے جس کی موٹی سی دلیل یہ ہے کہ شرک کوجھی بھی ایک لحد کے لئے جائز نہیں کیا گیا ہے جبکہ سجدہ تعظیمی کاقر آن میں دوجگہ ذکر ہے، ایک حضرت یوسٹ کے لئے اور دوم حضرت آدم کے لئے لہذا کہاجائے گا کہ سجدہ تعظیمی شریعت محمد بیش بالکل حرام وشرک کا شعبہ اور گناہ کہیرہ ہے اس کا مرتکب مبتدع و فاس ہے سخت تعزیر وعذاب جہنم ہے مرمع ہذا یہ بحدہ بت پرتی شرک جلی اور بحدہ تعبدی کی طرح نہیں ہاں البتہ فیعا رکفر کے ذمرے میں آنے والا سجدہ خواہ کسی بھی نیت سے ہووہ کفر ہے جیسے بُت کے سامنے سجدہ کرنا چا ہے نیت عبادت کی ہویا تعظیم کی جمورت میں کفروشرک جلی ہے۔ (صورت میں کفروشرک جلی ہے۔ (ص:۲۲۲ تا۲۲ ج:۱)

باب ماجاء في قبلة اليدو الرجل

(ہاتھ پاؤل چُو منے کابیان)

"عن صفوان بن عَسّال قال قال يهودى لِصاحبه اِذهب بناالى هذاالنبى فقال صاحبه لاتقل نبى انه لوسَمِعَك كان له اربعة اعين فَاتَيا رسولَ الله صلى الله عليه وسلم فَساً لاه عن تسع ايات بيّنات فقال لهم لاتُشر كوابالله شيئاً ولاتسرقواو لاتزنواو لاتقتلواالنفس التى حَرّم الله إلابالحق ولا تمشواببرئ الى ذى سلطان ليقتله ولاتسحروا ولاتأكلوا الربوا ولاتقذفوا محصنة ولاتولّوالفرار يوم الزحف وعليكم خاصّة اليهودَ!ان لاتعتدوافي السبت!قال فَقَبّلُوا يَديه ورجليه وقالوانشهداتك نبيّ ،قال: فمايمنعكم ان تَتبِعُوني؟قال قالوا ان داؤدَدَعَارَبُه ان لايزال من ذُرّيّتِه نبيّ وإنّانَخاف ان تَبعناك ان تقتُلنااليهودُ". (حسن صحيح)

حضرت صفوان فرماتے ہیں کہ ایک یہودی نے اپنے ساتھی ہے کہا کہ ہمیں اس نبی کے پاس لے چلو (یعنی ہمارے ساتھ چلو) تو اس کے ساتھی (یہودی) نے کہا: نبی مت کہوکیونکہ اگروہ تجھ سے یہ من لیس گے تو (خوثی سے) ان کی چارا تکھیں ہوجا کیں گی (یعنی یہود کی تقد یق سے) چنا نچہ وہ دونوں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آئے اور آپ سے نور وکھلی نشانیوں کے متعلق ہوچھا، پس آپ نے فرمایا: (ا) اللہ کے ساتھ کسی کو شریک مت کرو! (۲) چوری مت کرو(۳) زنانہ کرنا (۲) اس محض کوئل مت کروجس کا قبل اللہ نے حرام کیا ہے

سوائے جائز (شرع) طریقہ کے (۵) کس بے گناہ کو (لیعنی بے قصور کو) کسی حاکم کے پاس نہ لے جاؤتا کہ وہ اس کو آل کرے این کسی کے بات نہ ہے جاؤتا کہ وہ اس کو آل کرے (لیعنی کسی بے قصور کو مجرم ثابت کرنے اور آل کروانے کی شرارت مت کرو!) (۲) جادومت کرو (۷) سودنہ کھاؤ (لیعنی سودی لین دین مت کرو) (۸) اور کسی پاک دامن عورت پرزنا کی تہمت مت لگاؤ (۹) اور بھا گئے کے لئے پیٹھ نہ پھیرو کا فرول سے مقابلہ کے وقت !اور (۱۰) بطور خاص تمہارے لیعنی یہود پر الزم ہے کہ ہفتہ کے دن حدسے آگے نہ بردھو!)

رادی نے کہالیں انہوں نے آپ کے ہاتھوں اور پیروں کو چوما، اور ساتھ ہی کہا کہ ہم گواہی دیتے ہیں کہآ پ (اللہ کے) نبی ہیں! آپ نے فرمایا پھرتہ ہیں میری پیروی سے کیا چیز روکت ہے؟ راوی کہتے ہیں کہانہوں نے کہا کہ یہود کہتے ہیں کہ داؤڈ نے اپنے رب سے دعاما تکی ہے کہان کی اولا دمیں ہمیشہ نبی ہواکریں! اور بیکہ ہم ڈرتے ہیں اگر ہم آپ کا اتباع کریں تو یہود ہمیں قبل کردیں گے۔

تشريح: ـقوله: "انه لوسمعك كان له اربعة اعين" ياكي محاوره بجوخوش اورسرورت کنایہ کے طور پر استعال کیا جاتا ہے بعنی اگروہ یہود کی زبانی اپنی تصدیق کے الفاظ سنیں تو بہت خوش ہوں گے اوران کی آکھیں ٹھنڈی ہوجائیں گی،چونکہ خوشی کے وقت حواس تیز ہوجاتے ہیں اس لئے کنامی سجے ہے۔ قوله: "فَسَالاه عن تسع آيات بينات" ييني واضحات ريسوال نومجزات كي بار عيس تعايا نواحكامات؟ تو اس میں دونوں اخمال ہیں: اگر نوم عجزات مراد ہوں تو چھرسوال یہ ہے کہ جواب میں تو معجزات کا ذکر نہیں ہے تو اس کا جواب میہ ہے کہ چونکہ نومعجزات مشہور تھاس لئے راوی نے ان کا ذکر ضروری نہیں سمجھاا درصرف احکام پر اكتفاءكياعلى بذا ''فيقال لهم الاتشركواالغ ''مين لاتشركواالخ كلام مستانف ہے اور چخزات كے متعلق جواب محذوف ہے وہ معجزات یہ ہیں: (۱) ید بیضاء (۲) عصا (۳) طوفان (۴) جراد (۵) قتل (۲) ضفادع (۷) دم (٨)سِون (٩) نقص ثمرات بعض نے بداورعصا کی جگه طمسہ اورانفلاق البحرکوشامل کیاہے۔ان معجزات كاتذكره قرآن مين آيا ہے اس لئے راوى نے حذف كرديئے۔اورا كرمراداحكام موں تو حاشيةوت المغتذى ميں بحواله طبی کے نقل کیا ہے کہ احکام در اصل دس متے جن میں ایک یہود کے ساتھ مختص تھا یعنی سبت کی تعظیم والا جبکہ باتی نورہ عام تھے جوسب کوشامل تھے یہود نے آئے سے امتحان کی غرض سے نو (۹) کے بارے میں یو چھا گر آئے نے وہ سارے نواحکام بھی بتلادیئے جوعام تھے اور یہود کے خاص تھم کوبھی ظاہر فرمایا جس سے ان کویقین آعمیااورآت کے ہاتھ یاؤں چوسنے ملے،احکام کوآیات اس لئے کہا کہ یہ مکلف کی شقاوت اورسعادت

يردلالت كرت بي كيونكه آيت نشاني كو كهتم بي-

قوله: "فقبلوايديه ورجليه"اس سے ہاتھ پاؤں كے چوشنكا جواز ابت ہواجس كے متعلق پہلے ، عرض كياجا چكا ہے كہ طرفين كروه مانتے ہيں اور ام ابو يوسف كنزديك اس كى مخوائش ہے تا ہم ہاتھ چوشنے ك جائز صور توں ميں بياحتياط لازى ہے كہ جھكنے كے بغير ہاتھ كواٹھا كرچوما جائے جبكہ پاؤں كابوسہ شعار ہندؤوں كى وجہ سے مكروہ ہے۔

قول نہ: "قالواان داؤ ددعار بّہ النے" انہوں نے اسلام قبول نہ کرنے کے لئے دودلیلیں پیش کیں ایوں کہنا چاہئے کہ دوعذر پیش کردیے: ایک سیکہ یہودیش سے بات مشہور ہے کہ حضرت داؤڈ نے دعا کی ہے کہ ان کی ادلا دیس نبوت کا سلسلہ جاری رہے ۔ دوم سیکہ اگر ہم آپ پرائیان لائیس تو یہودہ میں قل کردیں گے۔ کویا پہلی دلیل نقل ہے اوردوسری عقلی محرملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ دراصل بید دوسری بات پہلی پرمرتب ومتفری کویا پہلی دلیل نقل ہے اوردوسری عقلی محرملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ دراصل بید دوسری بات پہلی پرمرتب ومتفری ہے مطلب بیہ ہے کہ یہاں ایک بی بات ہے بایں طور کہ داؤڈ کی اولا دیس نبی آئیس گے جن پر یہودائیان لائیس کے جس سے ان کی طاقت بردھے گی اگر ہم آپ کی پیردی کریں تو وہ مضبوط ہوکر ہم گوئل کردیں گے ایکن بیاوگ ہوں اپنی بات واستدلال میں جھوٹے تھے کیونکہ زبور میں حضرت داؤڈ کو ہتلا یا میا تھا کہ محرصلی اللہ علیہ وسلم مبعوث ہوں کے اور دوہ آخری نبی ہوں کے پھر حضرت داؤڈ نے دعافر مائی تھی تو پھر اس کا مصداق حضرت عیں خوار سے دیا دور تو تو ان کا جموٹ بالکل صاف و بے غبار ہے۔ اگر بالفرض مانا جائے کہ حضرت داؤڈ نے دعافر مائی تھی تو پھر اس کا مصداق حضرت عیں خود دور تو تو ان کو بیا تا کہ یہودان پر ایمان نہیں لاتے ، بلکہ حضرت عیں خودل کے بعد یہود کوئل کردیں مے بہاں تک کہ کوئی دور تو تو بھر بھی ان کو بیناہ نہیں دے گا۔

بيحديث ابواب النفيريس سورة بن اسرائيل يس بهى امام ترفري فقل كى ب،اس يس بياضافه بنات "باقى حديث اى طرح ب-

با ب ماجاء في مرحَباً

(مرحبا (خوش آمدید) کہنے کابیان)

"عن ابى النفسر ان ابامُرَّة مولىٰ أمَّ هانئ بنت ابى طالب اخبره انه سمع أمَّ هانئى تقول ذهبت الى رسول الله صلى الله عليه وسلم عام الفتح فوجدتُه يغتسل وفاطمة تستره

بشوب، قالت: فَسلّمتُ ، فقال: من هذه ؟ قُلتُ اناأم هاني إقال مرحباً بِأُمّ هاني فذكر قصةً في الحديث". (صحيح)

ابوالعضر أم بان كمولى ابومر و سدروايت كرتے بيل ،ابومر و نے ابوالعضر كوفردى ہے كمانہوں (ابومره) نے ام بانى سے سنا ہے فرماتى تعيس كم بيل فق كمه كے دن رسول الله صلى الله عليه وسلم كى خدمت بيل حاضر بوكى تو بيل نے آپ كونها تے ہوئے پايا، اور حضرت فاطمه "آپ كے كر سے آڑ كے ہوئے تعيى فرماتى بيل كم بيل نے سلام كيا، تو آپ نے بوجھاريكون ہے؟ بيل نے عرض كيا كه بيل ام بانى بول، آپ نے فرمايا: ام بانى! مرحبالينى خوش آ مديد ہو!۔

تشری : قول ان از موجا "رحب کشادگی کو کہتے ہیں البذام حباوس اور فراخ جگہ کو کہتے ہیں بیالفاظ کر بمہمان کو آمد کے وقت کہتے ہیں تا کہ مہمان خوش ہوکہ اہلِ خانہ میری وجہ سے تک دل نہیں ہور ہا اور میری وجہ سے ان کی جگہ تنگ نہیں ہوگ کو یا میز بان مہمان کو سنی دیتا ہے کہ ہمارے ہاں آپ کے لئے بہت جگہ ہو جہ سے ان کی جگہ تنگ نہیں ہوگ کو یا میز بان مہمان کو سنی دیتا ہے کہ ہمارے ہاں آپ کے لئے بہت جگہ ہو آپ بین میر کا بنا گھر ہے آپ اپنے ہی گھر بنی گئے گئے ، اور آپ بین میر کر ہے اور لوگ زم خو ہیں ای صادفت احلا و مسھلا ۔ بعض کہتے ہیں کہ تقدیراس طرح ہے کہ الیت احلا و و طیت سھلا۔

بہرحال اس سےمعلوم ہوا کہ سلام کے بعدخوش آ مدیدی الفاظ کینے میں کوئی حرج نہیں بلکہ اگر مرحبا کے مخصوص الفاظ کیے جائیں توسنت کا ثواب ملے گا جبکہ باتی زبانوں کے الفاظ بھی جائز ہیں جیسے خوش آ مدید اور پخیر راغلے وغیرہ۔

اس حدیث میں جس قصد کی طرف اشارہ ہے وہ صحیحین میں تنصیل سے سروی ہے جو حضرت ام ہانٹا کے شوہر کے خاندان کے دوفحصوں کی امان سے متعلق ہے۔

حدیث آخر: حضرت عِکرمہ بن الی جہل فرماتے ہیں کہ جس روز میں رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے پاس آیا تو آپ نے فرمایا: "مو حبابالو اکب المهاجو" دونوں صدیثوں میں مرحبا کے بعد" با" زا کد بنا نامجی جا تزہدیت کے لئے بھی مان سکتے ہیں ای آتی واسعاً لاضیقا "اور تعدیت کے لئے بھی مان سکتے ہیں ای آتی الله بک مرحباً۔

اس سے معلوم ہوا کنفس جرت فتح مکہ کے بعد بھی باقی ہے کیونکہ حضرت عکرمہ فتح مکہ کے دن بھاگ

کریمن چلے سے تھے گران کی ہوی ام کیم بنت الحارث یمن جاکران کووالیں لے آئیں اور حضور کی خدمت میں پیش کیا، اس سلسلہ میں کشتی کا واقع بھی مشہور ہے ہوسکتا ہے کہ دونوں اسباب رونما ہوئے ہوں، حضرت عکرمہ مخلص صحابی بن گئے تھے اور جنگ میموک میں شہیر ہوئے ، کہتے ہیں کہ انہوں نے نبی سلی الله علیہ وسلم سے شکایت کی کہلوگ واہل مدین ان کوعد واللہ کا بیٹا کہتے ہیں تو نبی سلی الله علیہ وسلم نے خطبہ دیا: 'النساس معادن ، خیار هم فی الاسلام اذافقهوا '' باب کی دوسری صدیث سند کے اعتبار سے کمزور ہے جیسا کہ امام ترندی نے تصریح کی ہے۔

باب ماجاء في تشميت العاطس

(چھنکنے والے کے لئے دعائی کلمات)

عارضة الاحوذى شراس باب كوماقبل سالگ كرك "كتاب الادب" كاعنوان قائم كيا به - "عن على قال وسول الله صلى الله عليه وسلم: للمسلم على المسلم مِتِ بالمعروف يُسَلِّم عليه اذالَقِيَه ويجيبُه اذادعاه ويُشَمِّتُه اذاعَطَسَ ويعودُه اذامَرِضَ ويَتَبِعُ جنازته اذامات ويُحِبُّ له ما يحب لِنفسه". (حسن)

ایک مسلمان کے دوسرے مسلمان پرچھ پہندیدہ حقوق ہیں:(۱)اس کوسلام کرے جب اس سے
طے۔(۲) جب وہ اس کودعوت دے تواسے قبول کرے۔(۳)اوراس کے لئے دعائے خیر کرے جب وہ
چھنکے(لینی جواب میں برحمک اللہ کے)۔(۴)اوراس کی بیار پُری کرنے جب وہ بیار ہوجائے۔(۵)اوراس
کے جنازے کے پیچھے جائے جب وہ انقال کرے۔(۷)اوراس کے لئے وہی چیز پہند کرے جواپئے
لئے پہند کرتا ہے۔

تشریخ: قوله: "ست بالمعروف" کلام میں تقدیر ہادرستے صفت اول اور بالمعروف صفت دوم ہے لینی للمسلم علی المسلم خصال ست مُتلَبِّسة بالمعروف معروف اس بات اور کام کو کہتے ہیں کہ جس پر اللہ راضی ہوتا ہے، اور عقلاً بھی وہ خوبی ہو۔ قسوله: "اذدعاه" وعوت عام ہے چاہے کھانے کی ہویاکسی کام وحاجت کے لئے قوله: "ویشمته "باب تفعیل کا صیغہ مضارع ہے تا تت سے ماخوذ ہے تکلیف پردشمن کے اظہار مسرت کو کہتے ہیں علی ہذا تفعیل سلب ما خذک لئے ہے لینی اللہ آپ کی تکلیف پردشمن کوخوشی

منانے کاموقع نددے، تاہم یہال معنی 'یو حمک اللہ '' کہنا ہے۔ اسکے تین جملوں کی تشریح پہلے گذری ہے۔
پھر بیت مقوق واجب علی الکفایہ ہیں لینی اگر بعض نے اداکیا تو باقی سے فرض ساقط ہوجائے گا۔ اس صدیث کے مقابلہ میں باب کی اگلی حدیث زیادہ صحیح ہے اور سلم میں بھی ہے، دونوں کامضمون ایک ہی ہے البتہ اس میں بینی جناز تہ کے بجائے '' یشھ دہ '' کے الفاظ ہیں جس کا ایک مطلب تو یہی ہے کہ جنازہ میں حاضر ہوجائے یعنی عندالنزع تو یہ اس کی موت قریب ہوجائے یعنی عندالنزع تو یہ اس کے پاس حاضر ہوجائے ، نیزاس میں بجائے و یحب لہ ما یحب لعف ہے '' و لینصح له اذا غاب او شهد '' کے الفاظ ہیں لیمی موجوائے ، نیزاس میں بجائے و یحب لہ ما یحب لعف ہے '' و لینصح له اذا غاب او شهد '' کے الفاظ ہیں لیمی اس کی غیر موجودگی اور موجودگی دونوں حالتوں میں اس کی غیر موجودگی اور موجودگی دونوں حالتوں میں اس کی غیر موجودگی اور موجودگی دونوں حالتوں میں اس کی غیر موجودگی اور موجودگی دونوں حالتوں میں اس کی غیر موجودگی اور موجودگی دونوں حالتوں میں اس کی غیر موجودگی اور موجودگی دونوں حالتوں میں اس کی غیر موجودگی اور موجودگی دونوں حالتوں میں اس کی غیر خواہی کا خیال رکھے۔ (صحیح)

باب مايقول العاطس اذاعطس

(چینک آنے پر کیا کہنا جائے)

"عن نافع ان رجلاً عَطَسَ الى جنب ابن عمرفقال الحمدالله والسلام على رسول الله فقال ابن عمر: وانااقول: الحمدالله والسلام على رسول الله صلى الله على وسلم ،عَلَمَنَا و نقول الحمدالله على كل حال". (غريب)

حضرت نافع فرماتے ہیں کہ ابن عمر کے پہلویں ایک مخض کو چھینک آئی تواس نے (چھینکے کے بعد)
کہاالحہ مداللہ والسلام علی رسول اللہ ، پس ابن عمر نے فرمایا میں بھی کہتا ہوں کہ المحمداللہ والسلام
علی رسول الله (لیکن) رسول الله سلی الله علیہ وسلم نے ہمیں اس طرح نہیں سکھایا (بلکہ) رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ہمیں سکھایا ہے کہ ہم کہیں الحمداللہ علی کل حال۔

تشری :۔ ابن عمر کی کیروتر دید کا مقصدیہ ہے کہ چھیکنے والے نے جو کلمات پڑھے ہیں ان کی اچھائی میں کوئی شک نہیں ہے لیکن میدمقام ان کلمات کانہیں ایسے موقع پرذ کرمسنون وما تورفقط الحمدللہ علی کل حال ہے، درود پڑھنے کا بیموقع نہیں لہذا اذکار ما تورہ میں ردوبدل نہیں کرنا جا ہے۔

یخ عبدالحق محدث دہلوی نے فرمایا ہے کہ بظاہرالی زیادتی مفید معلوم ہوتی ہے مگر درحقیقت وہ نقصان ہوتا ہے جیسے اذان کے جواب میں لاالمیہ الااللہ پر مسحد مدر سول اللہ کااضا فیہیں ہوتا جا ہے اس طرح دیگر امثال میں بھی اضافہ سے بچنا جا ہے۔

بعض علماء نے فرمایا ہے کہ چھینک پرصرف الحمد للہ کہنا چاہے جیسا کہ بخاری میں ابو ہریرہ کی صدیث میں ہے: ''فلیقل الحمد لله ''مگردوسرے حضرات اس اضافہ کواس طرح المحمد لله ورب العالمین کئے کوجائز بلکہ افضل سجھتے ہیں اور حدیث باب میں ابن ممڑ کے قول کا مطلب ظاہر پرصل کر کے کہتے ہیں کہ حمد پر اضافہ ہوسکتا ہے بشرطیکہ وہ اضافہ جو سکتا ہے جہ کہ دوسرے اذکار کا اضافہ نہیں کیا جاسکتا اسکتا ہے باب کی اصادیث سے اس کی تائید ہوتی ہے۔ واللہ اعلم

با ب ماجاء كيف يُشمّتُ العاطس؟

(چینکنے والے کوجواب دینے کابیان)

"عن ابسي موسى قال كان اليهوديتَعاطسون عندالنبي صلى الله عليه وسلم يرجون ان يقول لهم يرحمكم الله فيقول يهديكم الله ويصلح بالكم". (حسن صحيح)

یبود نی صلی الله علیه وسلم کے پاس چھینکا کرتے تھے (یعنی تکلف کر کے)ان کی خواہش ہوتی کہ آپ ان کو' مرحمکم اللہ'' کہیں، مگر آپ فرماتے اللہ تنہیں ہدایت دیں اور تبہاری حالت درست فرمائیں۔

قوله: "بالكم" بال قلب كوكيتم بين كمريهال مرادحال بے چونكدر حت تو مؤمنين كے ساتھ مختل ہے اس لئے آپ ان كے لئے ہدايت اور تو نِق قبلى حالت كى اصلاح كى دعاء فرماتے تاكہ جور حت ايمان پر موقوف ہے اس كا موقوف عليہ پہلے حاصل ہوتب ہى موقوف كا ترتب ہوگا۔

حدیث آخر: حضرت سالم بن عبید (الا جعن اصحاب صفی سے تھے) سے مروی ہے کہ وہ ایک سفر میں اوگوں کے ہمراہ تھے تو لوگوں میں سے ایک فض کو چھینک آئی ہی اس نے کہا: ''السلام علیہ کے م '' تو حضرت سالم بن عبید نے قرمایا' علیک و علیٰ امک '' (یعنی تھے پر سلام ہواور تیری ماں پر) تو اس آدی نے اس بات کو صوس کیا (یعنی تک دل ہوا) ہی حضرت سالم نے فرمایا ارے! میں نے تو وہی بات کی ہے جو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمائی ہے، کہ ایک فیض نے نبی سلی اللہ علیہ وسلم کے پاس چھینک لی اور کہا: ''السلام علیہ م '' تو نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ''عملیک و علی اُمّک '' (آپ نے اس کے بعد فرمایا) جب تم میں سے کوئی ایک چھینک لے تو کہے: ''السے مداللہ و ب العمال میں ''اور چوشی اس کو جواب دے تو کہ میں سے کوئی ایک چھینک لے تو کہے : ''السے مداللہ و ب العمال میں ''اور چوشینک لے تو کہے ۔ ''السے مداللہ و ب العمال میں ''اور چوشینک اس کو جواب دے تو کہ میں سے کوئی ایک چھینک لے تو کہے '' یہ خفو اللہ لی و لکم ''۔ ھذا حدیث اختلفو الحی

روایة النع یعن بدروایت متعدد کتب میں مروی ہے گراس کی سنداختلائی ہے جیسا کدام مرزی نے فرمایا ہے۔
قولہ: "علیک و علیٰ امک" اس جواب میں دو نکتے ہیں: ایک بیکہ جس طرح علی ا مک یعن مخاطب کے
ہجائے اس کی ماں غائبہ کوسلام کرتا ہے کل ہے تو اس طرح چینک کے بعد سلام بھی ہے موقع ہے۔ دوسرا ایہ کہ تھے
ماں نے تعلیم دی ہے اس لئے تیری تر تیبات غیر مرتب ہیں اگرتم مردوں سے تعلیم حاصل کرتے تو یہ کی باتی نہ
رہتی! کیونکہ عورتیں تو صرف ابتدائی تعلیم ہی دے سکتی ہیں جبکہ کا مل تعلیم مردوں سے حاصل کی جاستی ہے۔

صلى الله عليه وسلم قال: اذاعَطَسَ احديث آخر: - "عن ابى ايوب ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: اذاعَطَسَ احدكم فليقل المحمدالله على كل حال وليقل الذى يَرُدُّ عليه "يرحمك الله" وليقل هو "يهديكم الله ويصلح بالكم".

جبتم میں سے کوئی ایک چھینک لے تو چاہئے کہ وہ ''المحمداللہ علی کل حال ''کہاور جوش اس کو جواب دے تو اسے چاہئے کہ وہ 'نیسر حمک اللّٰه ''کہاوراُسے (چھینکے والے کو)' نیھدیہ کم الله ویصلح بالکم'' کہنا چاہئے۔

المضمون كى مديث حضرت ابو بريرة سي بهى مروى ب جسي بخارى في مي مرفوعاً روايت كياب: "اذاعطس احدكم قليقل المحمد لله، وليقل له اخوه او صاحبه يرحمك الله فاذاقال له يرحمك الله فليقل يهديكم الله ويصلح بالكم".

ان روایات سے معلوم ہوا کر چھنکنے والے کو جواب دینا الفاظ فرکورہ کے ساتھ لیمی ''یر حمک اللہ''
کہنا ضروری ہے حنفیہ کے نزدیک مفتی برقول کے مطابق بیہ جواب واجب علی الکفا بیہ ہے۔ ایک روایت استجاب
کی بھی ہے اسی طرح فرض علی الکفا بیکا بھی قول ہے جبکہ شافعیہ کے نزدیک سنت علی الکفا بیہ ہے۔ بنابر ہر تقدیر
جواب اس وقت دیا جائے گا جب چھینکنے والا المحسد مللہ کہا ورساتھ والا سنے۔ اس لئے چاہے کہ چھینکنے والا
المحسمد مللہ استے زور سے کہد دے کہ حاضرین سنکیں۔ اس بارے میں امام ابودا کو ''کا واقعہ شہور ہے کہ
انہوں نے ساحل پر چھینکنے والے سے المحسمد مللہ سُنا، کشتی تو گزرگی کیکن جواب و بینے کے لئے آپ نے کرایہ
انہوں نے ساحل پر چھینکنے والے سے المحسمد مللہ سُنا، کشتی تو گزرگی کیکن جواب و بینے کے لئے آپ نے کرایہ
ارکشتی کی اور قریب جاکر یو حمک اللہ کہددیا۔

پر تھینے والایہ فسر الله لساولکم کہدے جیسا کہ ام طبرانی نے ابن مسعوداورابن عمرض الله عنماوغیر ماسے قل کیا ہے اور حنید نے اسے افتیار کیا ہے یا پھر حدیث باب کے مطابق " یہدیکے الله و

یے الکم ''کے امام ثافی اور امام الگ کے نزویک دونوں میں اختیار ہے جبکہ بعض حضرات کہتے ہیں کہ دونوں لفظوں کو جمع کردے۔ (کذائی تخفۃ الاحوذی)

باب ماجاء في ايجاب التشميت بحمد العاطس

(چھنکنے والے کی تحمید کرنے پر برحمک اللہ کہنا واجب ہے)

"عن انس بن مالك ان رجلين عَطَسَا عندالنبى صلى الله عليه وسلم فَشَمّتُ اَحَـدَهُما ولم يُشَمِّتِ الآخرَ فقال الذي لم يُشَمِّته يارسول الله شَمّتُ هذاوَلَم تُشَمِّتنى ؟ فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انه حمدالله وانك لم تحمده!" (حسن صحيح)

حضرت انس سے روایت ہے کہ دو محض نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس چھینے آپ نے ان میں سے ایک کو دعائے رحمت دی (یعنی سرحمک اللہ کہا) اور دوسر ہے کو دعائے خیر نہیں دی تو وہ محض جس کو آپ نے دعائی بیں دی تھی کہنے لگا: اے اللہ کے رسول! آپ نے اس کو دعا دی اور مجھے نہیں دی؟ پس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اس لئے کہاس نے اللہ کی حمد بیان کی تھی اور تم نے نہیں کی تھی۔

تشریخ: سابقہ باب میں عرض کیا جاچکا ہے کہ جواب دینا حمد سننے سے مشروط ہے۔اس حدیث سے اس کی تائید ہوتی ہے سالم اور جواب سلام کی طرح ہے۔ (فتذکر)

چونکہ چھینک آٹا اللہ کی طرف سے ایک نعت ہے کیونکہ ایک تواس کے ذریعہ وہ گر دوغبار خارج ہوجا تا ہے جوسانس کی نالی میں چھیپھڑوں میں جانے کی کوشش کرتا ہے۔ دوم اس سے پخستی جنم لیتی ہے، اس لئے اس پراللہ کی ستائش ہونی چاہئے جس نے ہمار ہے جسم میں ایسااعلی نظام قائم کیا جوخود کارشین کی طرح چلتار ہتا ہے اور خود بخو دا پنا دفاع کرتا ہے، پس جوخض چھینکنے کے بعد تخمید نہ کرے اس نے گویا اللہ کی نعت کی ناشکری کی اس لئے وہ دعا کا مستحق نہیں نو حاضرین میں سے کوئی اس کو دعا دینے کا یا بندنہیں بلکہ بعض روایات میں جواب کی فی ہے۔

باب ما جاء كم يشمّت العاطس

(چینئنے والے کو کتنی بار دعا دی جائے)

"عن اياس بن سلمة عن ابيه قال عَطَسَ رجل عندرسول الله صلى الله عليه وسلم

واناشاهد فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم : يرحمك الله اثم عَطَسَ الثانية فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم : هذارجل مزكوم". (حسن صحيح)

حضرت ایاس اپنے والدسلمہ بن اکوع سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے فر مایا ایک مخص کورسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس چھینک آئی اور میں (بھی) وہاں موجود تھا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:
''بو حمک اللہ'' پھراس نے دوبارہ چھینک کی تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: بیز کام زدہ مخص ہے۔
تشریخ: باب کی اگلی حدیث میں ہے کہ آپ نے تیسری مرتبہ چھینک پریہ جواب دیا کہ تجھے زکام مواہے، جبکہ تیسری حدیث میں ہے کہ چھینک والے کوتین دفعہ جواب دے دو (یعنی برحمک اللہ کہو) آگراس سے زیادہ چھینکے تو تیری مرضی ہے جواب دویا نہ دو!۔ (مگراس کی سند مجبول ہے)

بظاہران نتنوں روایات میں تعارض ہے جس کودُ ورکرنے کی دوبی صورتیں ہیں:(۱) ایک ترجے کی (۲) دوم تطبیق کی، پس امام ترفدگ نے دوسری حدیث کوترجے دی ہے اور تیسری کو ضعیف قرار دیا ہے جبکہ ان العربی نے عارضة اللحوذی میں تیسری حدیث کوترجے دی ہے بیترجے باعتبار سند کے نہیں ہے کیونکہ سند تو بتفریح ترفدی مجبول ہے بلکہ ازروے احتیاط ہے چنا نچہ وہ لکھتے ہیں:

"العساشرة: اذازادع لى الثالثة روى ابوعيسى حديثاً مجهولاً فَان شِتتَ فَسَمّته وان شئت فلاوهووان كان مجهولاً فانه يستحبُّ العمل به لانه دعاء بخيروصلة لِلجليس وتوددله".

الكوكب الدرى ميں ہے كہ پہلا جواب واجب ہے دوسرامتحب ہے اور تيسراقريب الى المستحب ہے اور تيسراقريب الى المستحب ہو اور اس كے بعد مباح ہے، اور جب زكام كاعلم ہوجائے تو پھر جواب دينا واجب نہيں خواہ چھينك آنے سے پہلے معلوم ہو يا چھينك كے ايك يادويا تين دفعہ بعد معلوم ہوجائے۔ پھراگر كسى نے مكر رچھينكوں كا آخر ميں ايك ہى جواب ديا تو حاشيد الكوكب الدرى ميں بحوالہ محطا وى على الراقى من شرح المؤطاللقارى كا كھاہے كہ يہ مى كانى ہے جواب ديا تو حاشيد الكوكب الدرى ميں بحوالہ محطا وى على الراقى من شرح المؤطاللقارى كا كھاہے كہ يہ مى كانى ہے جيسا كہ بحدة تلاوت كا تھم ہے۔

پھر صدیث باب کاریہ مطلب نہیں کہ زکام والا مخص دعا کا مستحق نہیں بلکہ مرادیہ ہے کہ وہ بریمک اللہ جوچھینکنے والے جوچھینکنے والے کو دعائے خبر ہے کا مستحق نہیں مرض کی شفایا بی کی دعا کا تومستحق ہے ہی۔

باب ماجاء في خفض الصوت وتخمير الوجه عندالعطاس

(چھنگنے کے وقت آواز پست کرنے اور مُنہ ڈھا لکنے کابیان)

"عن ابى هريسرة ان السنبى صلى الله عليه وسلم كان اذاعَطَسَ غَطَّى وجهَه بيده اوبثوبه وغَضَّ بهاصوتَه". (حسن صحيح)

نبی صلی الله علیه وسلم کو جب چھینک آتی تو آپ اپنے چہرے کواپنے ہاتھ یااپنے کپڑے سے ڈھانپ لینتے اور چھینک کی آ واز کو آہت فر ماتے تھے۔

تشری : قوله: "و غض بها"ای خفض بالعطسة صوته اینی چینکی آواز کو پست فرمات و اینی چینکی آواز کو پست فرمات و اینی تو عام حالات می بھی آواز کو پست رکھنامحود بلکه امور بہ بے قال الله حکایة عن لقمن "و اغضض مِن صوت کی آفاز چونکه می آواز چونکه می موت کی آفاز چونکه می موت کی آفاز چونکه می موت بی ہے کوئی کلام نہیں ہے جو بظاہرا یک به مقمد آواز ہے البتہ ہے تو غیرا فتیاری جس سے مقمود فضلہ اور غیر ضروری بلکہ مضرمواد کا اخراج ہے اور "و السفسروری یقدر بسقدر المضرورة "اس لئے اس کو پست رکھنا محمود ہوا۔

جہاں تک مند ڈھا پینے کا تعلق ہے تو عارضۃ الاحوذی میں ہے کہ اگروہ مُنہ نہ ڈھا کے تو شایداس کے سامنے کوئی بیٹے امود کی بیٹے امور کی بیٹے کہ مند موڑ دیا اور چھینک کے ساتھ گردن کی بڈی یارگ اپنی جگہ سے اُر گی اور مند فیر ھارہ کی اور اگر سامنے کی طرف چھینکا ہے تو آ کے والے پر طوبت کے ذرات گیس کے (خاص کر جب کوئی کھانا کھار ہا ہو، یا کوئی دوسری نازک چیز موجود ہوجسے ہاتھ کی کھی ہوئی تحریروہ خراب ہوگی)۔

المستر شد: عرض كرتائ كديه علت كهانت بين بهى موجود باس لئة آدى كوچائ كه كهانت وفت يا تومند بركير ايا باته وركه يا محرمند ومرى جانب موژ دے خصوصاً زكام اور فى بى (TB) كى صورت بيس ـ

با ب ماجاء ان الله يُحِبُّ العُطاسَ ويكره التثاوُبَ (چينك كرم اور جمالَ كنم كابيان)

"عن ابى هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: العُطاسُ من الله والتثاوُّبُ من الله والتثاوُّبُ من الله على فيه واذاقال: "آه آه"فان الشيطان يضحك من جوفه وان الله يحب العُطاس ويكره التثاوُب فاذاقال الرجل"آه آه"فان الشيطان يضحك من جوفه". (حسن)

حضرت ابوہریرہ سے دوایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا چھینک آنا الله کی طرف سے

(نعمت) ہے اور جمائی لیمنا شیطان کی طرف سے (کا ہلی کا اثر) ہے، پس تم میں سے جب سی کو جمائی آئے تو وہ

اپنا ہاتھا ہے منہ پرد کھ لے اور جب وہ (جمائی لینے والا) آہ، آہ کرتا ہے تو شیطان اس کے (کھلے) منہ پر ہنتا

ہے (لیمنی نماتی اُڑا تا ہے) اور بے شک الله (بندے کی) چھینک کو پند کرتا ہے اور جمائی کو تا پند کرتا ہے، اور

جب کوئی فخض (منہ کھول کر) آہ، آہ کرتا ہے جب جمائی لیتا ہے تو شیطان ہنتا ہے اس کے اندر (کے دیکھنے یا

واضل ہونے) ہے۔

تشری : بعض شخو سی صدیث کا آخری حصد جو کررمعلوم ہوتا ہے موجو ذہیں ہے ابن العربی عارضہ میں لکھتے ہیں کہ ام ترفی نے اس صدیث کو صرف حسن کہا ہے گرابن عجلان کی اوراحادیث کی انہوں نے بھی کی ہے ابن اس صدیث کو صرف حسن کہا ہے گرابن عجل ان کی اوراحادیث کی انہوں نے بھی ہے ابندا اس میں آو، آو کے الفاظ نہیں ہے لہذا باب کی حدیث بھی ہے اوراس مضمون کی حدیث بخاری میں بھی ہے البتداس میں آو، آو کے الفاظ نیں ۔ (دیکھتے جو ارک اس میں است طاع "کے الفاظ ہیں۔ (دیکھتے جو ارک اس میں است طاع "کے الفاظ ہیں۔ (دیکھتے جو ارک اس میں است طاع "کے الفاظ ہیں۔ (دیکھتے جو ارک اس میں است طاع "کے الفاظ ہیں۔ (دیکھتے جو ارک اس میں است طاع "کے الفاظ ہیں۔ (دیکھتے جو ارک اس میں اس میں اور اس میں است طاع "کے الفاظ ہیں۔ (دیکھتے جو ارک اس میں اس می

جمائی کے بارے میں قدرے تفصیل پہلے گذری ہے فلیراجع تشریحات ترندی بص:۲۱۵ج:۲' باب ماجاء فی کرامیة النثا وَب فی الصلوٰة'')۔

چونکہ جمائی زیادہ کھانے اور بدن کے قال کا اثر ہے اس لئے بیاللہ تبارک وتعالی کو ناپندہے جبکہ چھیکا بدن کی تخفیف کا اثر بھی ہے اس لئے اللہ کو پسندہے، اور ضابطہ بیہ ہے کہ اچھی چیزوں کی نسبت اللہ کی طرف ہونی جا ہے اور نمی اشیاء کی نسبت شیطان کی طرف کیونکہ شیطان نر ائی پرخوش ہوتا ہے اور

اس پرا کساتا ہے، اگر چہ ہر چیز کا خالق اللہ ہی ہے۔

آج کل سائنسی تحقیق کے مطابق انسانی دماغ اور کمپیوٹر میں یہ بات بھی قدرے مشترک ہے کہ کمپیوٹر گرم ہونے کی صورت میں کام کرنے سے قاصر ہوجا تا ہے اس کی رفتار بندر بی کم ہوتے ہوتے تقریباً ختم ہوجاتی ہے تو جس طرح کمپیوٹر کوشنڈک کی ضرورت پڑتی ہے اس طرح دماغ بھی جمائی کے ذریعہ اپنی زائد حرارت خارج کرتا ہے۔ تاہم یہ ایک نظر یہ ہے۔ اگر اس وجہ کوشیح ما نیں بھی تو اس سے اندازہ لگایا جا سکتا ہے کہ چونکہ انبیاء علیہم السلام کے مزاج انتہائی معتدل ہواکرتے تھے اس لئے ان کے دماغ کا حدسے زیادہ گرم ہونے اور کام میں سُستی وکا ہلی کا سوال بید انہیں ہوتا اس لئے ان کو جمائی لینے کی ضرورت پیش نہیں آتی تھی۔

بہرحال چھینک کورو کناطبی لحاظ سے صحت کے لئے نقصان دہ ہے جبکہ جمائی کے روکنے سے پھے بھی نقصان نہیں ہوتا ہے اس لئے جمائی کورو کئے کا حکم ہے کہ جہاں تک ہوسکے جمائی کوروک لیا جائے جبکہ چھینک کوروکنا تونہیں چاہئے مگرآ وازیست کرنے کی بھر پورکوشش کی جانی جاہئے۔

قوله: "فإن الشيطان يضحك مِن جوفه" يضحك ظاہرى معنى يعنى بننے پرمحول كرنے ميں كوئى حرج نہيں البتة اس سے مرادخوش ہونا بھى ہوسكتا ہے كيونكہ وہ انسان كادشن ہے اور جمائى كے وقت آ دمى كى شكل بہت بُرى محسوس ہوتى ہے اس لئے شيطان خوش ہوجا تا ہے اس سے نبچنے كى اچھى تدبير جمائى كورو كنا ہے مگر آ نے كى صورت ميں مند بر ہاتھ ركھنا ہے تا كہ منہ كھلا ہوانظر نہ آئے ۔ بعض روایات میں ہے كہ شیطان داخل ہوتا ہے بنابر ہر تقدیر جمائى سے اورخصوصا مُنہ كھولنے سے بچنا جا ہے ۔

صديث آخر: "عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان الله يحب العُطاسَ ويكره التثاوُّبَ فاذاعطس احدكم فقال الحمدلله فحقّ على كل من سمعه ان يقول يرحمك الله واما التشاؤب ، فاذاتناء ب احدكم فَليرُده ما استطاع و لايقول هاه، هاه فانما ذالك من الشيطان يضحك منه". (صحيح)

طرف سے ہوہ اس سے ہنتا ہے۔ یعنی کسی طرح شیطان کوخوش ہونے ، نداق کرنے اور داخل ہونے کاموقع نہیں دیتا جا ہے۔

باب ماجاء ان العُطاس في الصلواة من الشيطان

(نماز میں چھینک آ ناشیطان کا اثر ہے)

"عن عدىعن جده (دينار) رفعه قال العُطاس والنعاسُ والتثاوُبُ في الصلواة والحيض والقي والرعاف من الشيطان". (هذاحديث غريب)

حضرت عدى ابن ثابت اپنے والد ثابت الانصارى سے،اپنے جدسے (جن كانام بقول يكيٰ بن معين ، دينارہ)روايت كرتے ہيں وہ اس كوم فوع نقل كرتے ہيں كه نماز ہيں جمين آنا، أو كھنا، جمائى لينااور حيض، قے اورتكسير شيطان كى طرف سے ہيں۔

تشری: بروایت ضعیف بے لیکن بصورت صحت مرادشدت سے چینکیں آنا وراو کھنا ہے جیا کہ این العربی " نے عارضة الاحوذی میں یہی تو جید کی ہے: 'ویبین ان ماحف منه لا یعدمنه''۔

پھران چھیں سے تین کوالگ ذکر کیااور جھیں '' ٹی الصلاق'' کے لفظ سے ہاتی تین کوالگ کردیا کیونکہ آخری تینوں سے نماز باطل ہوجاتی ہے بخلاف اوائل کے ۔اور شیطان کی طرف نسبت کرنے کی وجہ وہی ہے جو پہلے عرض کی جا چکی ہے یعنی شیطان کوان امور سے خوثی ہوتی ہے کہ عبادت متاثر یا ختم ہوجاتی ہے۔ پھر چھینک اگر چدا کی رحمت ہے گرنماز میں روکنا چا ہے جس کا ضابطہ یہ ہے کہ جب چھینک آئے تو اس کے روکنے کے لئے کسی عضو کواور خصوصاً او پروالے ہونٹ کا وہ حصہ جوناک سے ملا ہوا ہے دبانا مجرب ہے جس کا مطلب سے کہ جب د ماغ کسی اور جانب متوجہ ہوجاتے ہیں تو چھینک کی سرختم ہوجاتی ہے لی بڑا ہم کہ سے تین کہ جب نماز میں مرضوع کی اس متنوں کا آنا نماز میں عدم خشوع کی اس متنوں کا آنا نماز میں عدم خشوع کی علامت ہے اس لئے ان کوشیطان کی طرف منسوب کیا اور یہ دوسری وجہ ہوجائے گی ان متنوں کوالگ ذکر کرنے کی کیونکہ آخری تین انسانی بس کی بات نہیں اور نہ بی ان کاخشوع سے کوئی تعلق ہے۔

باب ماجاء في كراهية ان يُقام الرجل من مجلسه

ثم يجلس فيه

(کسی کواس کی نشست سے اٹھا کر،اس کی جگہ خود بیٹھنا مروہ ہے)

"عن ابن عسران رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: لايقيم احدُكم آخاه من مجلسه ثم يجلس فيه". (حسن صحيح)

حضرت ابن عمر سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فر مایاتم میں سے کوئی ایک اپنے (اسلامی) بھائی کواس کی جگہ سے ندا تھائے (تاکہ) پھرخوداس میں بیٹھ جائے۔

تشری :۔قولہ: "من مجلسہ" یعن ایس جگہ جہاں اس کے لئے بیٹھنا کی طرح ممنوع نہیں تھا جیسے مہار مواضع مثلاً مجدی عام جگہ یا دوسری کوئی جگہ جیسے لوکل بسوں میں جو بھی پہلے سیٹ پر بیٹھ جاتا ہے تو وہ اُس کا حق تصور کیا جاتا ہے۔ لہذا ایسے میں کسی کے لئے یہ جائز نہیں کہ اسے اٹھا کرخوداس کی سیٹ پر بیٹھ جا با ہام نودی فرماتے ہیں کہ یہ نہی تحریم کے لئے ہے، کیونکہ ایسا کرنا دوسر ہے کی حق تلفی بھی ہے اور تکبر بھی ہے بلکہ ممکن ہودی فرماتے ہیں کہ یہ نہی تحریم کے لئے ہے، کیونکہ ایسا کرنا دوسر ہے کی حق تلفی بھی ہے اور تکبر بھی ہے بلکہ ممکن ہے کہ دو محق اٹھنے سے انکار کردے اور جھگڑ ہے کی صورت پیدا ہوجائے اس لئے اس کوشش کونا جائز تر اردیا۔

اس سے برعکس اگر کوئی جگہ دوسر ہے کے لئے متعین ہے جیسے بک شدہ سیٹ یا استاذ کے لئے بنی ہوئی نشست اور غیر متعلقہ آدمی آکر اس پر بیٹھ جاتا ہے تو اس کواٹھانا جائز ہے کیونکہ قصور سار ااس کا ہے جود وسر ہے کاحق مارتا ہے۔

با بی اگل صدیث پریاضا فدہ کہ ''وکان الرجل یقوم لابن عمر فعمایہ جلس فیہ ''آدی ابن عمر فعمایہ جلس فیہ ''آدی ابن عمر فعمایہ جلس فیہ ''آدی ابن عمر کے لئے نہ بیٹے یاوہ ابن عمر کے لئے نہ بیٹے یاوہ آدی بتقاضائے حیاء کھر ابوجا تادل سے اپنی جگہ چھوڑنے پرآمادہ نہ ہوتا جو آرائن سے معلوم ہوسکتا ہے۔ پھر قربات میں ایثار میں اختلاف ہے شافعیہ کے نزدیک مکروہ ہے جبکہ باقی اشیاء یعنی ذاتی حقوق میں محبوب ہے۔ کتاب السلوۃ میں گذراہے کہ کسی افضل محف کے لئے صف میں جگہ دینے کے لئے اپنی جگہ سے چھلی صف میں منتقل ہوتا جائز ہے بلکہ امید ہے کہ اس پراجروثو اب بھی مل جائے۔

با ب ماجاء اذاقام الرجل من مجلسه ثم رجع فهواحق به

(جو خض اپن جگه ہے اُسٹھے ، اور پھراس میں بیٹھنا چاہے واس کاحق بنراہے)

"عن وهب بن حُليفة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: الرجل احق بمجلسه، وان خرج لِحاجته ثم عاد فهو احق بمجلسه". (صحيح غريب)

حفرت وہب بن حذیفہ سے روایت ہے کہ رسول الله علیہ وسلم نے فرمایا آدی اپنی نشست کا زیادہ مستحق ہے ،اوراگروہ کی غرض سے لکے (یعنی مجدوغیرہ سے)اور پھرواپس آ جائے تووہ اپنی جگہ کا زیادہ حقد ارہے۔

تشری : جیسا کرسابقہ باب میں عرض کیا جاچکاہے کہ جس جگہ کے ساتھ کی کا تن متعلق ہوجائے اس پر بیٹھنا درست نہیں اور بیٹھنے کی صورت میں اس کواٹھایا جا سکتا ہے، کیکن جو جگہ خالی ہے اور کسی کے ساتھ خق نہیں تو اس پر جو فق پہلے بیٹھ گیاوہ اس کا حق ہے ، پھراگر وہ کسی امر عارض سے وہ جگہ چھوڑ کر کہیں چلا جائے اور والیس آنے کا ارادہ ہواور خاص کر جب وہ بہد دے یا کوئی نشانی چھوڑ دے یا علامات سے والیس آنامعلوم ہو تو وہ جگہ اس آجائے تو وہ بی اس پر بیٹھنے کا حق رکھتا ہے مثلاً مسجد میں نماز کے انتظار میں بیشا تھا مگروضوکی تجدید کے لئے لکلایا لمباسنرہے مگر راستہ میں بس یا دوسری گاڑی دک می اور لوگ اتر کئے تو گاڑی روانہ ہونے کی صورت میں ہر خص اپنی بی سیٹ پر بیٹھےگا۔

پھر جیسے تغلیمی اداروں میں بیرف ہے کہ سال کے شروع میں جوطالب علم دریں گاہ میں جس جگہ بیٹھ جاتا ہے سال کے آخر تک وہ جگہ اس کے لئے مختص ہوجاتی ہے تو وہ بھی اس حدیث شریف سے معلوم ہوتا ہے، ہاں دوسری نمازیا اسکے سال کے لئے بیش نہیں رہتا۔

باب ماجاء في كراهية الجلوس بين الرجلين بغيراذنهما

(بلااجازت دوآ دمیوں کے درمیان بیٹھنا مکروہ ہے)

"عن عبدالله بن عمروان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: لا يحل لرجل ان يفرق بين النين إلاباذنهما". (حسن)

حصرت عبدالله بن عمرو بن العاص سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فر مایا : کسی مختص کے لئے روانہیں کہ وہ دو مخصوں کے درمیان جُدائی کرے مگران کی اجازت ہے۔

تشری : قول د: "ان یف ق بین اثنین" دوآ دمیوں کے درمیان تفریق کی صورت اور ممانعت کا مطلب سے ہے کہ دو شخص مل کرایک جگہ بیٹھ جاتے ہیں اورایک ساتھ بیٹھنا ان کا ایک گونہ مقصد ہوخواہ کوئی خفیہ بات کرنا چا ہے ہوں یا ویسے انس ومجت کی وجہ ہے ، جیسے دوساتھی ایک ساتھ درس گاہ میں بیٹھتے ہیں یا سنر کے دوران ایک سیٹ پر بیٹھتے ہیں تو کسی کے لئے میہ جائز نہیں کہ آگر ان کے درمیان گھس جائے کیونکہ سے بھی حق تلفی اورایذاء وا بحاش ہے ۔ ہاں اگر ان کی اجازت اورخوش سے ہوتو وہ الگ بات ہے اس کی ممانعت نہیں ہے ۔ اس طرح اگر وہ قریب قریب نہ بیٹھے ہوں اور نی میں تیسرے کے لئے جگہ خالی ہوتو بھی اس میں بیٹھنے کی اجازت ہے بشرطیکہ اس جگہ اس میں بیٹھنے کی اجازت ہے بشرطیکہ اس جگہ اور بھی اس میں بیٹھنے کی اجازت ہے بشرطیکہ اس جگہ اور بھی میں تیسرے کے لئے جگہ خالی ہوتو بھی اس میں بیٹھنے کی اجازت ہے بشرطیکہ اس جگہ اور بھی میں تیسرے کے لئے جگہ خالی ہوتو بھی اس میں بیٹھنے کی اجازت ہے بشرطیکہ اس جگہ اجتماع ہوتا ہو۔

باب ماجاء في كراهية القعودوسط الحلقة

(حلقہ کے درمیان بیٹھنا مکروہ ہے)

"عن ابى مِجلَزِ ان رجلاً قعدوسط الجلقة فقال حُذيفة: ملعون على لسان محمد ولعن الله على لسان محمد من الله على لسان محمد من قعدوسط الحلقة". (حسن صحيح)

حضرت ابو مجلز سے روایت ہے کہ ایک مخص حلقہ کے درمیان میں بیٹے گیا تو حضرت حذیفہ کہنے لگے کہ محمصلی اللہ علیہ وسلم کی زبان سے وہ مخص ملعون ہے اور محمصلی اللہ علیہ وسلم کی زبانی اللہ کی لعنت ہے اس مخص پرجو حلقہ کے بیج میں بیٹے تاہے۔

تشریج: ۔اس کا مطلب یا توبہ ہے کہ جیسے مداری حلقہ لگا تا ہے اورلوگ اس کے گردجمع ہوجاتے ہیں چروہ لوگوں کو ہنا تا ہے،اس میں لعنت کی وجہ ظاہر ہے۔

یہ بھی مطلب ہوسکتا ہے کہ کوئی شخص علمی صلقہ کے درمیان میں آگر بیٹھ جائے خواہ وہ حلقہ دائرہ کی شکل میں ہواس صورت میں وہ لوگوں کے میں ہواس صورت میں وہ لوگوں کے درمیان میٹھنے کے لئے گر دنوں کو بھلا نگتا ہوا گذرے گا اور بھی میں بیٹھ کرجگہ تنگ کرے گا دونوں صورتوں میں تکلیف کا باعث سنے گا، تا ہم یہ وعیدعدم ضرورت کی صورت میں ہے اگر حلقہ کے درمیان بیٹھنا ضروری یا مقصد تکلیف کا باعث سنے گا، تا ہم یہ وعیدعدم ضرورت کی صورت میں ہے اگر حلقہ کے درمیان بیٹھنا ضروری یا مقصد

میں مفید ہوتو پھرکوئی قباحت نہیں جیسے واعظ کا بچ میں بیٹھنا جائز ہے۔

باب ماجاء في كراهية قيام الرجل للرجل

(ایک شخص کادوسرے کے لئے کھٹر اہونا مکروہ ہے)

"عن انس قال لم يكن شخص احب اليهم من رسول الله صلى الله عليه وسلم وكانوا اذاراوه لم يقوموا،لِمَا يعلمون من كراهيته للالك". (حسن صحيح غريب)

حضرت انس سے روایت ہے فر ماتے ہیں کہ صحابہ " کورسول الله صلی الله علیہ وسلم سے زیادہ کوئی پیند نہیں تھا، اور (مع ہٰذا) وہ جب آپ کود کیھتے تو کھڑے نہیں ہوتے، کیونکہ وہ جانتے تھے کہ آپ اس کو پہند نہیں فرماتے ہیں۔

تشریحات جلد: دوم ص: ۲۰۷) پریدمسکدگذرا ہے کہ شروع میں بیچم تھا کہ جب امام بیٹھ کرنماز پڑھائے تولوگ (تشریحات جلد: دوم ص: ۲۰۷) پریدمسکدگذرا ہے کہ شروع میں بیچم تھا کہ جب امام بیٹھ کرنماز پڑھائے تولوگ بھی بیٹھ جا کیں اورمقصداعا جم کی رسم کی مخالفت تھی کیونکہ اہل فارس میں بیدستورتھا کہ وہ اپنے اعاظم وسلاطین کے لئے کھڑے ہوجاتے اور پھراس کے گردیا سامنے کھڑے بی رہنے مگر جب عقا کداسلام اوراسلامی احکام واعمال میں کھڑے نافیر آیا تو پھرآئے نے مرض الوفات میں نماز بیٹھ کر پڑھائی جبکہ صحابہ کرام ط کھڑے تے لئدا پہلاتھ منسوخ ہوگیا۔

لہذا کہاجائے گا کہ اب نفس قیام میں کوئی حرج نہیں تا ہم بوجوہ اس میں بعض صورتیں اب بھی ممنوع یا مکروہ ہیں گویااس میں جوازلذاتہ ہے مگر بھی بھاریا بسااوقات اس میں بنج داخل ہوجا تا ہے علی ہذااس قباحت فیری کے تناسب سے اس کی قباحت کم دبیش ہوتی رہتی ہے اور جہاں کوئی قباحتِ غیری نہ ہوگی تو بذات خود قیام جائز ہوگا۔

لبنداجن روایات سے قیام ثابت ہے وہ عدم بتح پرمحول ہیں اور جہاں نفی ثابت ہے وہ قباحت غیری کی وجہ سے گویا قیام جائز لذاتہ بمنوع لغیر ہ ہے۔

اس ضابط كوسامن ركت موت ابمتعدد صورتيس بن جاتى بين:

(۱) اگر کوئی مخص اس کا خواہشند ہو کہ اس کی تعظیم کے لئے لوگ کھڑے ہوں تو قیام کی بیصورت سب

ے زیادہ شنیج اوراس کے تکبریس اضافہ کرنے کے مترادف ہے۔

(۲) آگر بغیر تکبراور بغیرخواہش کے ہوگراییا کرنے سے اس آدمی میں عجب اور تکبر پیداہونے کا اندیشہ ہوتو یہ صرف کروہ ہے۔ اس سے بچنا چاہئے۔ اس طرح جہاں تھہ بالاعاجم آتا ہویا محوظ ہووہاں بھی کراہیت ہوگی جیسے عورت کا اینے شوہر کے لئے اس وقت تک کھڑی رہنا جب تک وہ بیٹھ نہیں جاتا۔

(۳) تعظیم کے طور پرنہ ہوبلکہ اکرام اورقدردانی کی وجہ سے ہواورمندرجہ بالا دونوں علتیں لیعنی پہلی دونوں صورتیں نہ ہوں تو گھر اہونا آگر چہاں دونوں صورتیں نہ ہوں تو گھر جائز ہے جیسے اپنے والداپنے دوسرے بزرگوں یا استاذکے لئے کھڑ اہونا آگر چہاس کا ترک اولی ہے، عارضة الاحوذی میں اس صورت کومخطور وکروہ سے مشکل کیا ہے:

"قال ابن العربي: الاان يكون الولدللوالدوالتلميذمع الاستاذاوالولى الملاطف الذي صفاقلبه وامن غيبه فتزول العلة فيزول الحكم الخ".

یعن اس شرط پر کہ قیام اس کے لئے مضرف ہو۔

(س) اگرکوئی سفرہے واپس آئے تواس کے استقبال کے لئے ، یاکسی کومبارک باد پیش کرنے کے لئے یا جگہ دینے کے لئے اٹھنا پڑے تو یہ ستحب ہے یا کم از کم جا نزہے۔ واللہ اعلم وعلمہ اتم واتھم

تاہم آج کل ہم پر حُب جاہ کا غلبہ ہے اس لئے ہمیں چاہئے کہ کسی بھی مخص کو آپ حق میں قیام سے روکیں کیونکہ اگر بالفرض ہمارے دلوں پراس کا کہ ااثر نہ بھی ہوتا ہوتو کم از کم دوسروں کے لئے ایک رہنما اصول بنانا تو پھر بھی قابل تحسین عمل ہے اور یہی وجہ ہے کہ ہمارے اکا برقیام سے منع کرتے اور شاید حدیث باب میں اس کی طرف اشارہ ہو۔ واللہ اعلم وعلمہ اتم واحکم

باب کی آگلی حدیث الونجلز مروی ہے کہ حضرت معاویة (گھرسے) نکلے تو حضرت عبداللہ بن زبیر اور حضرت معاویة نے فرمایا: بیٹھ جائے! میں اور حضرت معاویة نے فرمایا: بیٹھ جائے! میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے بیفر مائے سُنا ہے کہ جس کو یہ بات پہند ہو کہ لوگ اس کے سامنے کھڑے رہیں تو وہ اپناٹھ کا نہ جہنم میں بنالے ۔ (حسن)

قول من يَتَمَثَّلَ له "تمثّل كمعن نقشه اور مثال بيش كرنے كے بي مرصله بن الم" آجائے تو بمعنی سامنے آن يَتَمَثَّلَ له الله تعالى: "فَتَمَثَّلَ لَهَابَشُواً سَوِيًا"۔ تو بمعنی سامنے كھڑے وہا كار چہ بیخواہش نقى كداوگ ان كے سامنے كھڑے وہيں يا كھڑے ہوجا كيں مگر

پھر بھی انہوں نے روکا شاید میسد ذرائع کے لئے تھا جیسے سابقہ تین باب سے پہلے باب میں گذراہے کہ ابن عرا کے لئے کوئی جگہ خالی چھوڑنے کے لئے اٹھتا تو وہ اس جگہ بڑہیں بیٹھتے تھے۔

بہر حال سب سے اچھی اور بے غبار بات یہ ہے کہ آپ کے سامنے کوئی بھی کھڑا ہوجائے تواسے سے جھاکر روکنا چاہئے تاک تعظیم کی شکل پیدانہ ہو۔ تاہم اگر بھی بھار جائز صورتوں پڑھل ہوجائے تواس میں زیادہ قباحت محسوس نہیں کرنا چاہئے لیکن معمول بنانے سے بچنا اور نع کرنا چاہئے اس لئے مقدی اور پیشوافخض کو چاہئے کہ دہ لوگوں کورو کے۔

باب ماجاء في تقليم الاظفار

(ناخن راشنے کابیان)

"عسن ابى هسريرة قال قسال رسول الله صلى الله عليه وسلم : حمس من الفطرة الإستِحداد، والخِتان، وقص الشارب ونتف الإبط وتقليم الاظفار". (حسن صحيح)

حضرت ابوہریر افر ماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: پانچ چیزیں فطرت (یعنی انبیاء کی سنت) میں سے ہیں: (۱) زیریاف بالوں کوصاف کرنا (۲) ختنه کرانا (۳) مونچھیں گتر نا (۴) بغلوں کے بال نوچنا (۱کھاڑنا) (۵) ناخنوں کوتر اشنا۔

صديث آخر: "عن عائشة ان النبى صلى الله عليه وسلم قال: عشر من الفطرة قص الشارب وإعفاء اللحية والسواك والاستنشاق وقص الاظفار وغسل البراجم ونتف الابط وحلق العائدة وانتقاص الساء قال زكرياقال مصعب ونسيت العاشرة الاان تكون المضمضة". (حسن)

حضرت عائشہ ہے روایت ہے کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: دس با تیں فطری ہیں: (۱) موفیجیس کا شا (۲) ڈاڑھی برو معانا (۳) مسواک کرنا (۴) ٹاک میں پانی چڑھانا (۵) ناخن تراشنا (۲) انگلیوں کے جوڑ دھونا (۷) بغل کے بال اکھاڑنا (۸) زیرناف بال مونڈ ٹا (۹) پانی سے استنجاء کرنا (۱۰) راوی مصعب کہتے ہیں کہ دسویں چیز میں بھول گیا ہوں شاید وہ کلی کرنا ہی ہے۔

تشری :۔باب کی پہلی مدیث توبالا تفاق صحیح ہے اور صحیحین کے علاوہ متعدد کتب میں بھی مروی ہے

جبکہدوسری حدیث اگر چمسلم میں بھی ہے گراس میں مصعب بن شیبہ ہیں، عارضة الاحوذی میں ہے: ''وَ غَمَزَه الناس '''،العرف الشادی میں حضرت شاہ صاحبؓ نے اس طرف اشارہ کیا ہے کیا تن ہیں حضرت شاہ صاحبؓ نے اس طرف اشارہ کیا ہے گئیں تھے تا الاحوذی میں ہے کہ ابن معین اور عجل نے توثیق کی ہے جبکہ امام احمدؓ اور ابو حاتم " وغیرہ نے لین بیان کی ہے گویا بیرصان کے رادی ہیں اس لئے امام ترفدیؓ نے اس کوصن کہا ہے۔

قوله: "من الفطرة" مرادسنن مرسلين بيل كيونكه ايك توان كا عادات فطرت كے مطابق ہوتى بيل، دوم ان باتول پرشرائع متفق بيل اس لئے ان كوفطرت سے تجيير كيا۔ تولد: "إستحداد "لوہ كا استعال يعني استر ب وغيره سے زيرناف بال كوصاف كرنا كيونكه جب تك بي بال صاف نه كئے جائيں اس وقت تك سيج استجاء اور كمل صفائي ممكن نبيل اور يہي مطلب دوسرى حديث ميل" وحلق العانة "كا ہے عانة كل اور دُرُر دونوں مواضع كے بالوں كو كہتے بيل پران موضعين كے بال كسى طرح بھى صاف كرنا جائز ہے خواہ ادويات سے كيوں نه ہوتا ہم مردك لئے استرہ يالو ہوئى دوسرا آلد استعال كرنا زيادہ افضل ہے جبكہ عورتوں كے لئے اكھاڑنا بہتر ہے كيونكه كاشنے سے موضع ميں خشونت مى بيدا ہوتى ہے۔

قول : "والیختان" بیسنت ابراجیمی ہے ایک روایت کے مطابق ان کا ختنہ اس ۱۰ مسال کی عمر میں ہوا تھا جیسا کہ صحیحین میں ہے، ختنہ موضع حثفہ کے اوپر کھال کے غلاف کا شے کو کہتے ہیں ۔ ختنہ کے بارے میں اختلاف ہے کہ آیا فرض ہے یا واجب یا کم از کم سنت؟ ابن العر فی فرماتے ہیں کہ حضرت ابراہ میم کی بوی عمر میں ختنہ کرانا اس کی فرضیت کی دلیل ہے کیونکہ بالغ کے لئے سترعورت فرض ہے جو واجب یاسنت کی وجہ سے ترک نہیں کیا جا سکتا۔ جمہور شافعیہ امام احمد بعض مالکیہ اورا یک روایت امام ابوصنیفہ کے مطابق بیرواجب ہے، امام ابوصنیفہ سے میا واجب ہے، امام اجمد ہونی کہ بھی ہے، بعض شافعیہ اور عام علماء بھی اس کوسنت کہتے ہیں علی ابوصنیفہ سے ایک روایت اس کے سنت ہونے کی بھی ہے، بعض شافعیہ اور عام علماء بھی اس کوسنت کہتے ہیں علی فیرا گرکوئی غیر مسلم بلوغت کے بعد اسلام قبول کر ہے تو اس پرختنہ لا زمی نہیں کیونکہ اس کے لئے کھف عورت کی ضرورت پڑے گی حالانکہ ستر فرض ہے۔ اور آج کل باندیاں بھی نہیں ہیں تا کہ وہ خرید کراس سے کروائے ، ہاں البت اگر وہ شادی شدہ ہے اور اس کی یوئی باسانی کر سکے تو وہ الگ بات ہے۔

ختنہ عورتوں کے لئے واجب یامسنون نہیں ہاں آگرکوئی بی ایسی ہوجیسا کہ بعض قوموں میں ہوتا ہے کہ زائد کلزا جماع میں حائل ہوتا ہوتو پھراس کا بھی ختنہ ہوتا چا ہے ۔ لہذاام عطیہ وغیرہ کی احادیث آگر صحح مائی جائیں تو وہ اسی ندکورہ صورت پرمحمول ہوں گی ۔ختنہ کے لئے کوئی عمراورونت مقرر نہیں تا ہم بلوغت سے پہلے ہونا

چاہے تا کہ بعد میں سرکا مسلہ پیدانہ ہو۔ ابن العربی نے جلدی ختنہ کرانے سے منع کیا ہے کہ اس سے یہود کی مشابہت لازم آئے گی اس لئے دس سال کے بعد ہونا چاہے کین حضرات خسین کا ساتویں دن ختنہ ثابت ہے۔ عارضہ میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مختون پیدا ہوئے تھے: ''وقدول دم حمد صلی اللہ علیہ وسلم ختینا دھینا''۔

قوله: "ونتف الابط" كسرالهم قب مو فيحول كو پت كرنايينى كرناراس كے لئے آسے مستقل باب آر ہا ہے۔
اور عمو ما ہوانہ لكنے كى وجہ سے بغل اكثر تر رہتے ہيں اس لئے بالوں ہيں بد بوہوجاتى ہے دوسرى طرف بغلوں كى مال نرم ہوتى ہے اس كے بال اكھاڑ نازيادہ تكليف دہ نہيں ہوتا جبكہ كاشے سے دوبارہ جلدى بال نكل جاتے كھال نرم ہوتى ہے اس كے بال اكھاڑ نازيادہ تكليف دہ نہيں ہوتا جبكہ كاشے سے دوبارہ جلدى بال نكل جاتے ہيں اس لئے اكھاڑ نے كى ترغيب ہے تا ہم كائنا ہمى جائزہ اورادويات سے از الد بھى مباح ہے بہلے وائيں بغل كوصاف كرنام سخب ہے قوله: "و تقليم الاظفار" اى قطعهما ناخن كاشے كاكوئى مخصوص طريقہ ما ثور وسنون تو نہيں بكہ چيسے ہمى كائے جائيں مقصود حاصل ہوجائے گا تا ہم اصول طور پر چونكہ ابتداء دائيں سے ہونا چاہئے اور ہو سكے تو انتہاء ہمى دائيں پرہونا چاہئے كى بذا جيسا كہ نو دئ نے شرح مسلم ميں ذكركيا ہے پہلے دائيں چاہم کی شہادت كى انگل سے شروع كر سے پھر درميانى پر بندر پھر خضر آخر ہيں انگوشاء پھر بائيں ہاتھ كى چھتگى سے ہاتھ كى شہادت كى انگل سے شروع كر سے ہم وقات ہيں ہے كہ دائيں كائگوشاء پھر بائيں ہاتھ كى چھتگى سے ہوئا ميں ہو تا تھر ميں ہوگا۔

المستر شد:عرض كرتاب كه ناخن كاشخ ونت جب دونوں ہاتھ كى بتسلياں آپ كى طرف ہوں گا تو ذكورہ ترتيب دائيں سے بن سكے گى۔ (تدبر) پاؤں كے ناخن ميں دائيں پاؤں كى چھوٹى انگلى سے شروع كرے اور بائيں كى چھوٹى انگلى پرختم كرے جيسا كه خلال اصالح ميں گذراہے۔ فلينذكر۔

قوله: "وغسل المواجم" بفتح الباء وكسرالجيم بُر بُمة كى جَمّ ہے ہاتھ كى الكيوں كى پشتوں پر جوڑمراد میں كيونكدان پرميل جمع ہوجا تا ہے تو دھونا اگر چہ ہاتھ بعنی الكيوں كامسنون يامسخب ہے مگر براجم كا ذكر بطور خاص تا كيد كے لئے ہے تاكہ ہاتھ كم ل صاف ہوجا كيں اوراسى علت كے پيش نظر جہاں بھى ميل كچيل جمع ہونے كا انديشة زيادہ ہوگا اس میں مبالغہ فی الحسک مطلوب ہوگا جیسے كانوں، بغلوں، ناك، دانتوں اور ناف وغيرہ ميں۔

قوله: "وانتقاص الماء" امام ترفدیؓ نے اس کی تغییر استنجاء ہے کی ہے کیونکہ استنجاء ہی ہے۔ اس کے تغییر استنجاء بالماء ہے بیشاب کے اس کو انتقاص الماء ہے تعبیر کیا، استنجاء بالماء ہے بیشاب کیے رکتا ہے اس

کی حکمت''باب مساجداء فی النسطن بعدالوضوء من ابواب الطهادت ''میں گذری ہے۔ (دیکھتے تشریحات میں میں الدواؤد میں بجائے انقاص کے انسساح کالفظ بھی ہے اس سے نفنح کا مطلب مزید واضح ہوجا تا ہے۔

باب ماجاء في توقيت تقليم الاظفار و اخذالشار ب (ناخن كالين اورمونجه يست كرني كي مدت كابيان)

"عن انس بن مالك عن النبى صلى الله عليه وسلم انه وَقَتَ لهم في كل اربعين ليلة تقليم الاظفاروا خدالشارب وحلق العانة. وعنه: وُقِتَ لنافى قصّ الشارب وتقليم الاظفار وحلق العانة ونتف الابط ان لانترك اكثرمن اربعين يوماً". (هذااصح من الحديث الاول)

حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے ان (صحابہ) کے لئے ناخن تراشنے ،مونچھ کاشنے اور زیرتا ف بال مونڈ نے کی مدت چالیس دنوں کے اندراندر کی مقرر فر مائی تھی۔ باب کی دوسری روایت بھی انہی سے ہے کہ ہمارے لئے مونچھ کا شنے ، ناخن تراشنے ، زیرنا ف بال مونڈ نے ،اور بغل (کے بال) نوچنے کی مدت مقرر کی گئی تھی کہ ہم چالیس دن سے زیادہ تک نہ چھوڑیں۔ بیحدیث اول سے اصح ہے۔

تشریج: دومری حدیث بقریح ترفدی پہلی کی بنسبت اصح ہے کیونکہ پہلی کی سند میں صدقہ بن موئ ہیں جوصدوق ہیں اگر چہ دومری میں بھی جعفر بن سلیمان کی وجہ سے لین پائی جاتی ہے تاہم جعفر سوء حفظ کے باوجود مسلم کے رجال میں سے ہیں۔ پھر دومری حدیث گویا پہلی حدیث کی تغییر ہے بینی چالیس دن آخری وائتہائی مدت ہے کہ اس سے زیادہ مو خرنہیں کرتا چاہئے اس سے کم بہر حال مطلوب و پسندیدہ ہے، بہر حال اس میں ضابطہ بیہ ہے کہ جب ناخن اور بال است بوج جا کیں کہ بر نما محسوں ہوں اور میل ان میں جمع ہوتا ہوتو کا ثنا چاہئے بہتر ہیہ کہ ہر ہفتہ میں کا فی جا کیں تاہم جعرات یا جمعہ کے دن کے بارے میں کوئی میچے روایت نہیں گر پھر بھی بہتر ہیہ کہ ہر ہفتہ میں کا فی جا کیں تاہم جعرات یا جمعہ کے دن کے بارے میں کوئی میچے روایت نہیں گر پھر بھی بہتر ہے کہ ہر ہفتہ میں کا فی جا رہے میں مروی ہیں دوم استقبال جمعہ کی وجہ سے بیاوقات زیادہ موز وں کی جی دنہ پھر دوایا سے بھی ان دونوں کے بارے میں مروی ہیں دوم استقبال جمعہ کی وجہ سے بیاوقات زیادہ موز وں ہیں ۔ امام احریہ سے دونوں ونوں میں اختیار اور ہر ایک میں سنیت کا قول ہے۔ پھر ناخن اور سروڈ اڑھی کے بال

مندی جگہ پرنہیں چینکنے چاہئے کہ جزء آدی محترم ہوتاہے۔ پھرناخن اورمونچھ کے بڑھنے سے چونکہ آدمی غیر مہذب سامحسوں ہوتاہے اس لئے ان دونوں کی تہذیب بہر حال ہفتہ وار ہونا چاہئے جبکہ بغل اورد مگر غیر ضروری بال مونڈنے کی چالیس دن تک مؤخر کرنے کی اجازت ہے اس سے زیادہ تا خیر کر وہ تحریم ہے۔

باب ماجاء في قص الشارب

(مونچیں گترنے کابیان)

"عن ابن عباس قبال كنان النبي صلى الله عليه وسلم : يَقُصُّ اوياً حَلَمَن شاربه قال وكان خليل الرحمن ابراهيم يفعله". (حسن غريب)

حضرت ابن عباس فرماتے ہیں کہ نی صلی اللہ علیہ وسلم اپنی موٹیس کترتے تھے یا (فرمایا کہ) لیتے تھے اور آپ نے فرمایا: رحمٰن کے فلیل ابراہیم (علیہ السلام) بھی ایسا ہی کرتے تھے، اور اس باب میں حضرت زید بن ارقم کی مرفوع حدیث ہے: ''من لم یا حدمن شار به فلیس منا ''۔ (حسن سمجے)

جو خص اپنی مو خچموں میں سے ندلے (بینی نہ کائے) وہ ہم میں سے نہیں ہے۔

تشریخ: قوله: "الشادب" چونکه عربول می عام دستورمونچیس برهانے کا تھااور پھرمونچھوں کے بال کھانے پینے کی چیز میں لگ جاتے کو یا پینے لگتے اس لئے ان کوشارب سے تجیر کیا جاتا ہے۔ قبوله: "بقص اور سے اخلی اس کے سے اسکے باب میں احقاء کا لفظ آیا ہے بعض دیر دایات میں دوسر سے الفاظ بھی آئے ہیں جیسے آنھ کے اللہ وارب ، جَزُوا اللہ وارب ، وغیرہ۔

چونکدان الفاظ کے معانی میں تحور اسااختلاف پایاجا تا ہے اس لئے فقہاء کے درمیان اس مسلمیں اختلاف ہوا کہ مو فجیس کا نے کی مقدار ومعیار کیا ہے؟ تو کم از کم اتنی مقدار میں کا نے کی ادنی سنیت پرتو اتفاق ہے کہ او پروالے ہونٹ کا سرخ کنارہ ظاہر ہوجائے ،لیکن افضل کیا ہے؟ تو حنفید کی ایک روایت مونڈ نے کی ہے بلکہ امام صاحب اور صاحبین سے ایک روایت طلق کی سنیت کی ہے کیونکہ لفظ احفاء اس پردلالت کرتا ہے، امام شافی کا غرب بھی اس کے مطابق ہے کمانقلہ انجی ، عارضة الاحوذی میں حدیث باب کے ذیل میں کھا ہے: 'وھ فی ان اس کے مطابق ہے کمانقلہ انجیش فی قولہ انہ یحلق ، واحتج بقولہ احفوا الشور رب النے ''امام احمد نے اس کے لئے''لابا س' کالفظ استعال کیا ہے تحفۃ الاحوذی میں ہے: ''وروی الشور رب النے ''امام احمد نے اس کے لئے''لابا س' کالفظ استعال کیا ہے تحفۃ الاحوذی میں ہے: ''وروی

الاثرم عن الامام احمدَّانه كان يحفى شارِبَه إحفاءً شديداً''۔

لیکن اس کے برعس بہت سے علاء طق سے منع کرتے ہیں بلکہ امام مالک تواس کو بدعت اور مشلہ کہتے ہیں، عارضۃ الاحوذی بیس اشارہ ہے کہ حلق جمال علی الکمال کے منافی ہے احناف کے ایک قول کے مطابق بھی مونڈ نا بدعت ہے جیسا کہ درمختار میں حفظ رو الاب احت کی بحث میں حلق والی روایت کوقیل سے ذکر کیا ہے جوضعف کی طرف اشارہ ہے ۔ الکو کب الدری میں ہے کہ مبالغہ کے ساتھ تر اشنا اور کتر نا دونوں قتم کی روایات کوشائل ہو سکتا ہے اس لئے یہی طریقہ اصح لگتا ہے، امام نووی فرماتے ہیں: "السم ختار انسه یقص حتی یہدو طرف الشفة و لا یحفیه من اصله"۔

خلاصہ یہ ہوا کہ کم از کم ہونٹ کا بالائی کنارہ ظاہر کرنا بہر حال لازم ہے مزید مبالغہ افضل ہے ممرحلق نہ کرے پھر سبالتین لیعنی بالائی ہونٹ کے دونوں جانب کے کنارے بھی لینے حیاہے تاہم حضرت عمرٌّ دونوں کناروں کے بال چھوڑے رکھتے تھے۔

باب ماجاء في الاخذمن اللحية

(ڈاڑھی کم کرنے کی حدکابیان)

"عن عمروبن شعيب عن ابيه عن جده ان النبي صلى الله عليه وسلم : كان يأخذ من لحيته من عرضهاوطولها". (غريب)

حضرت عبدالله بن عمر وبن العاص كى روايت ہے كه نبى صلى الله عليه وسلم اپنى ڈاڑھى كى چوڑائى اورلمبائى (دونوں طرف) سے ليا كرتے تھے۔

تشریخ:۔امام ترفریؒ نے مُر بن ہارون پر بحث کرتے ہوئے اگلی روایت ذکر کی ہے جس میں وکیج بن المجر احراق کے جس میں وکیج بن المجر احراق کی ہے کہ نی صلی اللہ علیہ وسلم نے طاکف والول کے خلاف منجنی نصب کی تھی۔ قتیبہ نے وکیج سے اس رجل کے بارے میں پوچھا کہ وہ کون ہیں؟ تو انہوں نے کہا'' مُعسم بن ھارون''! بیدرمیانہ راوی ہیں، مسکلہ کی تفصیل اسکے باب میں ملاحظہ ہو۔

باب ماجاء في إعفاء اللحية

(ڈاڑھی بڑھانے کابیان)

"عن ابن عسمرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: اَحفُواالشوارب واعفوا اللُّحيٰ". (صحيح)

حضرت ابن عمر فرمات بیں که رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا: مونچھوں کوصاف کرواور ڈاڑھی کو بردھا ؟!۔

تشریخ:۔باب کی آگل روایت میں بہی مضمون بطور نجر کے منقول ہے کہ آپ نے موقی س صاف کرنے اور ڈاڑھی ہو ھانے کا تکم دیا ہے۔ قبولسہ: "واعفو االملہ حی" اعفاء کے معنی ترک کرنے کے ہیں الفاظ اللہ عنی آزاد کے آتا ہے چنا نچاس بارے میں "او فوا، وار خوا، وار جوا اور وَقِرُواً کے بھی الفاظ آئے ہیں سب بمعنی آزاد کے آتا ہے چنا نچاس بارے میں "او فوا، وار خوا، وار جوا اور وَقِرُواً کے بھی الفاظ آئے ہیں سب بمعنی آزاد تھوڑنے اور ترک قطع کے ہیں گوکہ یہ ترک محدود ہے جیسا کہ عنقریب آجائے گا۔ "دُکی" بلی ہے کہ جمع ہے لیمی میں مرف نچلے جرئے کا اعتبار ہے البذاا گرگالوں یعنی رفساروں پر بال الم جرئے کو کہتے ہیں تاہم شرقی ڈاڑھی میں صرف نچلے جرئے کا اعتبار ہے البذاا گرگالوں یعنی رفساروں پر بال اگری اور ان کا کا شاجا ترز ہے کیونکہ وہ او پر والے جرئے پر ہوتے ہیں ای طرح گلے کے بال کا شابھی وائن کا کا شاجا ترز ہے کہ ڈاڑھی رکھنا مردوں کے لئے واجب یا کم از کم سنت مؤکدہ ہے اس سلسلہ میں "الفقہ الاسلامی وادلت "میں جو بات امام نووی کی طرف منسوب کی گئی ہے کہ شوافع کے زد کید ڈاڑھی کا شاکر وہ تنز یہی ہے تو یہ انساب محض غلط ہے کیونکہ امام نووی کی طرف منسوب کی گئی ہے کہ شوافع کے زد دیک ڈاڑھی کا شاکر وہ تنز یہی ہے تو یہ انساب محض غلط ہے کیونکہ امام نووی کی خرص منس بعض بعض سے ذیادہ اور سخت فتی ہیں اس میں کراہت تنز یہی کی کوئی بات معلوم نہیں ہوتی ولفظہ:

"وقدذكر العلماء في اللحية اثنتي عشرة خصلة مكروهة بعضها اشدقبحاً من بعض، إحداها خصابها بالسواد لالغرض الجهاد... الرابعة نتفها او حلقها اول طلوعها الخامسة نتف الشيب... الحادية عشر عقدها وضفرها الثانية عشر حلقها إلااذانبت للمرأة لحية فيستحب لها حلقها...".

ای طرح پیلار آگنایا کبریت سے سفید کرنا اور پراگندہ چھوڑ نایا کرنالا پرواہی کی وجہ سے یا زاہد ہونے کا تأثر دینے کے لئے بھی مکر وہ ہے۔ (مسلم: صاح: ا''باب خصال الفطرة'')

تا ہم اس میں اختلاف ہے کہ آیا بڑھانے کی کوئی حدمقررہے پانہیں؟ تو عام طور پراہل ظاہراور بعض دیگرعلاء سَلَف اور خَلَف فرماتے ہیں کہ کوئی حدثہیں بلکہ اسے آزاد چھوڑ نا ہی سنت اور لازم ہے البتہ جج وعمرہ کے احرام کھولتے وقت اس سے ایک مشت سے زائد کا شاجا تزہے جیسا کہ ابن عمرٌ وغیرہ بعض محابہ کرتے تھے مگرعام حالات میں کا شنے کی کسی طرح اجازت نہیں ہونی چاہئے ، نیزان کا عمل مرفوع حدیث سے معارض ہے لہذا ترجی مرفوع یعنی اعفاء کو ہونا چاہئے۔

اس کے برعکس جمہورعلاء کا قول میہ ہے کہ ایک مٹھی سے زائدکو کا ثناجا تزہے اور میہ کہ ہرجانب سے زائد بَر مُشت کا ٹاجائے گا جیسا کہ سابقہ باب کی حدیث میں ہے، تخفۃ الاحوذی میں ہے کہ حسن بھری طول وعرض دونوں سے لینے کا فرماتے:

"وعن الحسن البصرى: انه يؤخذمن طُولها وعرضها مالم يفحش وعن عطاء نحوه...وقال عياض: يكره حلق اللحية وقصها وتحليفها واما الاخذ من طولها وعرضها واذاعظ مت فحسن بل تكره الشهرة في تعظيمها كما يكره في تقصريها".

اور بخاری وابودا و داور موطامیں ابن عمر سے مروی ہے کہ وہ تج وعمرے سے حلال ہوتے وقت اپنی ڈاڑھی کوآ زاد چھوڑنے میں ڈاڑھی کوآ زاد چھوڑنے میں کو گئے جوزا کہ ہوتی تواس کو کا شتے۔عارضة الاحوذی میں ہے کہ ڈاڑھی کوآ زاد چھوڑنے میں کوئی حرج نہیں البتہ اگرزیادتی فتیجے گئے تو پھرزا کد کوکا شامتحب ہے:

"ان تَرَكَ لحيته فلاحرج عليه إلاان يقبح طولها فيستحب ان يأخذ منها وليس في القدر المأخوذ منها حدالا ماروى قتادة الخ...وروى ابوداؤدقال قال مروان بن المقفع رأيت عبدالله بن عمريقبض على لحيته فيقص مازاد على الكفّ". (عارضة)

ابن عمر کی بیروایت بخاری کتاب اللباس باب تقلیم الاظفار میں ہے۔ (بخاری: ص: ۸۷۵ج:۲) حضرت گنگون کی الکوکب الدری میں فرماتے ہیں کہ اتن کمبی ڈاڑھی مسنون ہے کہ جس کی وجہ سے آدمی

محول اور مندوول كى تشبيه سي كل جائے:

"وامااعفاء اللحية فالظاهرمن فعله صلى الله عليه وسلم ان الاعفاء مسنون بحيث يخرج من التشبيه بالهنودو المجوس فحسبُ".

المستر شد:عرض کرتا ہے کہ اصل مقصود ہے ہے کہ مسلمانوں کا شعارا ہیا ہونا مقصود ومروح اور مطلوب ہے کہ جس سے اغیار کی رسومات سے خواہ وہ ذہبی ہوں یا توی امتیاز تام ہوجائے چونکہ اہل فارس ڈاڑھیاں کتر تے سے اور دومیوں میں اس کے مونڈ نے کارواج تھا اور یہود سفیدر کھنے کوشعار بنائے ہوئے سے تو آپ نے ان سب کے مقابلے میں ڈاڑھی بڑھانے اور سفید کومہندی لگانے کا بھم دیا تاکہ ان سے مشابہت ندر ہے دوسری طرف بیسنن انبیاء میں سے بھی ہاور مردائی کی علامت اور وقار کی نشانی ہے اور بہ مقصدا یک مشت دوسری طرف بیسنن انبیاء میں سے بھی ہاور مردائی کی علامت اور وقار کی نشانی ہے اور بہ مقصدا یک مشت کا ڈاڑھی رکھنے سے پوراہوجا تا ہے جبکہ ذاکہ بعض لوگوں سے ساتھ انجی نبیل گتی چنا نچے مراسل ابی وا کو دیس مضرت مجابد سے سے ایک اپنی شکل مجابد سے دوئی ہے کہ بی مسلم اللہ علیہ و سلم د جلا طویل اللحیة فقال لِمَ

جب پچہ تیرہ چودہ سال کی عمر تک پہنچ جاتا ہے تواس کے خون میں ' ہارمون' پیدا ہوتے ہیں جس کی بناء پراس کے چہرے اور بعض دیگر مواضع پر بال آگنا شروع ہوجاتے ہیں اور اس میں تولیدی صلاحیت یعنی مروانہ قوت جنم لیتی ہے لہذا ڈاڑھی کا نہ لکلنا بھی عیب ہوا اور نامردی کی علامت ہوئی اور اسے کا ٹنا بھی گویا اس صلاحیت کی شاخ کو تو ڈنے کے متر اوف ہے جبکہ لبی ڈاڑھی تشویش کا باعث ہے ' فعید الامور او سطھا'' جیسا کہ ابن عشرے عمر کے کس سے فابت ہے۔

ر ہایا خال کہ ابن عمر "کایٹمل جی وعمرہ کے ساتھ خاص ہے تو یہ بلادلیل بلکہ خلاف دلیل ہے کیونکہ اول تو ڈاڑھی کاحلق وتصرحل میں شامل نہیں دوم اگر زائد کا کا شاجا کر نہیں تو پھر ہروقت ناجا کر نہونا چاہئے ،اور یہ کہنا کہ یہ مرفوع حدیث کے معارض ہے تو اس کا جواب طبی ؓ نے دیا ہے جبیبا کہ حاشیہ توت المعتذی پہے کہ مرفوع کا مطلب میہ ہے کہا تا جم سے زیادہ بڑھا واور بیز اکد کے کا شنے کے منافی نہیں:

"قال الطيبيّ هـذالاينافي قوله "اعفوااللحي لان المنهى عنه قصهاكفعل الاعاجم واخذقليل اطراف وطول ليس من القص في شئ". یددراصل دونوں بابوں کی حدیثوں میں تطبیق ہے جس سے ابن عمر کی حدیث کی تطبیق بھی معلوم ہوئی۔ قدیم تاریخ اور انسائیکلو پیڈیا میں لکھا ہے کہ اہلِ فارس کے بڑے پوری ڈاڑھی رکھتے اور جو پنج ذات کے لوگ پوری ڈاڑھی رکھتے تو وہ ان کی ڈاڑھیاں بطور سزا کا شنے کویا ڈاڑھی وقار کی شنا خت تقی اسی طرح ہندوستان اور مغربی یورپ میں ڈاڑھی وقار کی علامت بھی جاتی تھی۔

باب ماجاء في وضع احدى الرجلين على الأنحرى مستلقياً

(چت لینے کی حالت ایک یا وال دوسرے پرد کھنا جا تزہے)

"عن عَبّادبن تميم عن عَمِّه انه رأى النبى صلى الله عليه وسلم: مُستلقياً في المسجد واضعاً إحدى رجليه على الأخرى". (حسن صحيح)

حضرت عبداللدین زیدین عاصم المازنی سے روایت ہے کہ انہوں نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کو مسجد میں چت لیٹے ہوئے دیکھا جبکہ اس وقت آپ ایک پیردوسرے پررکھے ہوئے تھے۔

تشرت کنے بیں اگر دونوں بیر لمب کے ہوئے لیٹا ہوتو پھرا کی پاؤں دوسرے پرد کھنے کا کوئی ممانعت نہیں خواہ ازار پہنے ہوئے ہیں اگر دونوں بیر لمب کے ہوئے لیٹا ہوتو پھرا کی پاؤں دوسرے پرد کھنے کی کوئی ممانعت نہیں خواہ ازار پہنے ہوئے ہویا شلوار کیونکہ اس سے کشف عورت کا اندیشہ نہیں ہوتا جو نہی کی علت ہے باب کی حدیث میں کہی صورت مراد ہے البتہ اگر ایک ٹانگ کھڑی ہوا ور آ دی جہبند پہنے ہوئے ہوتو پھرا کی پاؤں گھٹے پرد کھنا کھنب عورت کے اندیشہ کے پیش نظر من ہے جیسا کہ اگلے باب میں مراد ہے ہاں البتہ اگر پا جامہ یا شلوار اور پتلون کے عورت کے اندیشہ کے پیش نظر من ہے جیسا کہ اگلے باب میں مراد ہے ہاں البتہ اگر پا جامہ یا شلوار اور پتلون کے بہنے کی حالت میں ایسا کر بے واس میں کوئی حرج نہیں کیونکہ علت مفقو دومعدوم ہے۔

باب ماجاء في كراهيةٍ في ذالك

(چت کینے کی مکروہ صورت کا بیان)

"عن جابران رسول الله صلى الله عليه وسلم: نهى عن اشتمال الصّمّاء والاحتباء فى ثوب واحدوان يرفع الرجل إحدى رجليه على الاخرى وهومُستلقٍ على ظهره". (حسن صحيح) حضرت جابڑے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے چا در میں پیک ہونے اور ایک ہی کپڑے میں حبوہ (سُر بن کے بل بیٹھنے) سے شع فر مایا ہے اور یہ کہ کوئی شخص اپناایک پیردوسرے پر رکھ دے جبکہ وہ اپنی پیٹھ پر چیت لیٹا ہو۔

تشری : ـ ترندی کے ہندی انتی میں حضرت جابر گی دونوں حدیثوں کامتن کررہوگیا ہے جبکہ عارضة الاحوذی اور تخفۃ الاحوذی کے متون پر پہلی حدیث کے الفاظ یہ ہیں: ''اذااست لقی احدی علی ظهرہ فیلا یہ صحت کے الفاظ یہ ہیں۔ ''اذااست لقی احدی رجلیہ علی الاُنحوی ''جبتم میں سے کوئی ایک پی پُشت پر چت لیٹے تو وہ اپنا ایک فیلا یہ صحت احدی رجلیہ علی الاُنحوی ''جبتم میں سے کوئی ایک اپنی پُشت پر چت لیٹے تو وہ اپنا ایک فیلا یہ صحت کی طرف اشارہ کیا ہے گرباب کی دوسری حدیث میں ہے اور نہی کی صورت سابقہ باب میں بیان ہوئی ہے۔

اشتمال الصما اوراصتهاء کی صورتیں ابواب اللباس میں گذری ہیں۔ دیکھئے: تشریحات ص: ۵۲۵ ج: ۵٪ باب ماجاء فی انھی عن اشتمال الصماء والاحتهاء بالثوب الواحد") جس کی اجمالی صورت یہ ہے کہ چا دراس طرح اُوڑھ لینا کہ ہاتھا ندر بی اندر بندرہ جا ئیں اور آ دی مکمل پیک ہوجائے چونکہ اس میں گرنے کا خطرہ ہے اس لئے منع کیا جبکہ اصتباء سرین پر بیٹھ کردونوں ٹانگیں کھڑی کرنے کو کہتے ہیں۔ اگر بدن پرایک بی کپڑا ہوتو اگر وہ اور باند تھائے کا خطرہ نہ ہوتو پھر حبوہ میں خارج صلوۃ وہ اور باند سے باہتھوں سے جوہ باند سے ہردوجا کر ہیں۔ کوئی حرج نہیں بلکہ ٹابت ہے چا ہے ٹانگوں اور کمر پرچا در باند سے باہتھوں سے جوہ باند سے ہردوجا کر ہیں۔

با ماجاء في كراهية الإضطجاع على البطن (اُلٹالیٹنک ممانعت)

"عن ابى هريرة قال رأى رسول الله صلى الله عليه وسلم رجلاً مضطجعاً على بطنه فقال ان هذه ضِجعة لا يحبها الله".

حضرت ابو ہر میر قفر ماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ایک کھخص کو دیکھا جومُنہ کے بل اوندھا لیٹا ہوا تھا، پس آپ نے فر مایا لیٹنے کا بیطر یقہ اللہ اس کو پسندنہیں کرتا۔

تشریخ: قوله: "ضجعة" بكسرالضاد بمعنى بيئت وطريقة كے جبكه بالفتح بمعنى مرة آتا ہے يہال طريقة مراد ہے، لبنداس كو بروزن سِدرة برد هناچا ہے۔ الله تبارك وتعالى كو بيطريقة اس لئے پندنبيس كه بي

طریقہ اہل جہنم کا ہے جیسا کہ ابن ماجہ کی روایت میں ہے، نیزیدوقار اور ادب کے خلاف ہے، کسی جگہ نظرے گزرا ہے غالبًا کہ شیطان اس طرح لینٹا ہے مگر حوالہ یا زمیس فلینظر

باب ماجاء في حِفظ العورة

(سترکی احتیاط کابیان)

"عن معاوية بن حَيدة القُشَيْرِي قال قلت يارسول الله اعوراتناماناتي منها ومانذر؟ قال احفظ عورتك إلامن زوجتك اوماملكت يمينك فقال: "الرجل يكون مع الرجل"؟ قال إن استبطعت ان لايراها احدفًا فعل اقلت فالرجل يكون خاليا ؟قال فالله احق ان يُستحيئ منه!". (حسن)

بہزین کیم اپنے داداحضرت معادیہ بن حیدہ سے روایت کرتے ہیں کہتے ہیں کہ میں نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! ہم اپنے سرکس پر ظاہر کرسکتے ہیں اور کس پرنہیں؟ آپ نے فر مایا اپنے سرکی حفاظت کرو (یعنی چھپائے رکھو) سوائے اپنی ہوی کے اور جس باندی کا تو ما لک ہوانہوں نے پوچھا بھی ایک آدمی دوسرے آدمی کے ساتھ ہوتا ہے (یعنی اگر کسی آدمی کی ساتھ ہوتا ہے (تو کیا پھر بھی سرچھپانا ہے؟) آپ نے فر مایا کہ اللہ اس بات کے زیادہ ستی ہے کہ اس سے سرچھپایا جائے!

تشریخ: قوله: "ماناتی منها وما نذر"؟ ای مانُری منهاونتوک؟ بیروایت چندالواب کے بعد دوباره آربی ہے وہاں روایت کے آخر بعد دوباره آربی ہے وہاں روایت کے آخر میں بیاضافہ ہے "منه الناس "نفل معروف کے ساتھ ہے میں بیاضافہ ہے "منه الناس "نفل معروف کے ساتھ ہے جبکہ یہاں یُستحیی منه الناس "نفول کا صیغہ ہے۔

ستر انسان کے بدن میں وہ جگہ کہلاتی ہے جس کا گھل جانا انسان طبعی وجہ کی طور پر عار مجھتا ہے جومرد کے گھٹنوں سے ناف تک ہے اور عورت سرتا پاعورت ہی عورت ہے چنا نچہ اس تعبیر کے لئے اردو کا لفظ ''عورت'' بہترین ترجمان ہے ۔البتہ ضرورت کی بناء پر دفع حرج کے پیش نظرعورت کا چہرہ اور یدین وقد مین مشکل ہیں گرفتنہ کے احتمال کی صورت میں اس کا حجاب بھی ضروری ہے کیونکہ مرد کے دل کوعورت کے چہرے سے وائرس ختل ہوجا تاہے، اگرول میں اپنی وائرس بینی تقوی ہوگاتو وہ کچے دیرے لئے وائرس کا مقابلہ کر لے گا مگر جب وائرس کے حملے لگا تار ہوں گے تقویل مزاحمت سے قاصر ہوجا تاہے۔

اس مديث من حضرت معاوية بن حيدة في تين سوال يو وحص مين:

(۱)یکہ مورت یعنی سر کس کے سامنے کھول سکتے ہیں اور کس کے سامنے ہیں؟ یا د ماند د "
کا مطلب بیہ ہے کہ مانتو ک مستو ھایعنی کس سے چھپا تالازی ہے اور کس سے نہیں؟ اس کے جواب ہیں آپ
نے فرمایا سوائے ہوی اور باندی (غیر منکوحہ) کے کسی کے سامنے کھولنے کی اجازت نہیں ہے؟ اگر چہ ہوی کے
سامنے برہنہ ہوتا لپندیدہ نہیں گراس مدیث کی رُوسے میاں ہوی کا ایک دوسر سے سے پردہ کرتا واجب نہیں
کیونکہ جب اس سے بڑھ کرچھوتا جا تزہے تو نظر بطریق اولی جا تزہے گراولی بیہ کہ پردے میں رہیں چنا نچہ
متن ہدایہ ج الشرح میں ہے:

"وينظر الرجل من امته التى تحل له وزوجته الى فرجها... إلّا أنَّ الاولىٰ ان لاينظر كل واحد الى عورة صاحبه لقوله عليه السلام: اذااتىٰ احدكم اهله فليستَتِر مااستطاع و لا يتجردان تجرد العيرولان ذالك يورث النسيان النخ".

لین گورخر کی طرح مت ملوا دریہ کہ اس سے حافظہ بھی کمز ور ہوجا تا ہے، نیز حضرت عاکشہ "فر ماتی ہیں کہ میں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم کا ستر مجھی نہیں دیکھاہے اور نہ بی انہوں نے مجھے اس طرح دیکھاہے۔

(۲)دوسرے سوال کا مطلب میہ کہ مجھی لوگ آپس میں کسی جگہ جمع رہتے ہیں جیسے حمام وغیرہ میں جہاں سر کی حفاظت ضروری نہیں مجھی جاتی کیونکہ اکثر ایسے مواقع پردوست اور ساتھی ایک ساتھ نہاتے یا کھیلتے ہیں تو آپ نے اس کی ممانعت فرمادی، ہاں البتہ ضرورت کے مواضع مستقیٰ ہیں جیسے ڈاکٹر کا معائد ہویا آپریشن کی ضرورت واعیہ ہو۔

(س)خلوت میں سر کے بارے میں پوچھاتو آپ نے جواب دیا کہ اگروہاں کوئی بھی نہیں تو کم اللہ سے تو شرم کی جانی چا ہے اور کے بارے میں پوچھاتو آپ نے جواب دیا کہ اگروہاں کوئی بھی نہیں تو کم اللہ سے تو شرم کی جانی چا ہے بعنی اگر چہآ دمی اللہ سے بھی عاری ہوتا ہے اللہ ایسے محض کو پسندنہیں کرتا جبکہ ہرجگہ باردہ رہنے والامتا دب ہوتا ہے جے اللہ پسند کرتا ہے لہذا ہے ادر چونکہ باردہ رہنے والامتا دب ہوتا ہے جے اللہ پسند کرتا ہے لہذا ہے ادر چونکہ

ضرورت کی صورت میں جیسے قضائے حاجت اور عسل کرنے میں نگا ہونا باد بی نہیں بلکہ حاجت ہے اس لئے وہ صورت ناپندیدہ نہیں۔اور حیاء کے منافی بھی نہیں ہے۔

باب ماجاء في الإِتكاء

(فيك لكاني كابيان)

"عن جابربن سمرة قال رأيتُ النبي صلى الله عليه وسلم مُتكِئاً على وِسادة على يساره". (حسن غريب)

حضرت جابر بن سمر "فرماتے ہیں کہ میں نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کوتکیہ پراپی بائیں جانب فیک لگائے ہوئے دیکھا ہے۔

تشریخ: ۔اس سے معلوم ہوا کہ کھانے کے علاوہ عام حالات میں کسی چیز پر ٹیک لگا کر بیٹھنا جائز ہے خواہ دائیں جانب ہو یابائیں جانب کیونکہ دونوں کی علت ایک ہی ہے یعنی سہارالینا اوراس حدیث میں علی بیارہ قیدا تفاقی ہے۔

باُٹ

"عن ابى مسعودان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: لا يُؤمَّ الرجلُ في سلطانه ولا يُجلَسُ على تكرِمَتِه في بيته الابأذنه". (حسن)

کسی آ دی کوماموم (مقندی) نه بنایا جائے اس کی اختیار والی جگه میں اور نه اس کے گھر میں اس کی (خاص) نشست پر بیٹھا جائے مگراس کی اجازت ہے۔

تشریخ: ینی کوئی اجنبی آدمی کسی کے معاملات میں اور بالحضوص نمازی امامت اور نشست کے استحقاق میں مداخلت ندکرے کیونکہ جہال کسی کی ممل داری ہوتو وہاں دوسروں کا ممل دخل بنظمی اور ایذاءرسانی کا موجب بنتا ہے حدیث کی تفصیل تشریحات ابواب الصلوة میں گذری ہے۔ (دیکھئے تشریحات ص:۵۱۲ ج:۱ باب من احق بالا مامة")

باب ماجاء ان الرجل اَحَقُّ بصدر دابته (آدی این سواری کی اگل نشست کا زیاده حقد ارج)

"عن عبدالله بن بُريدة قال: سمعتُ ابى، بريدة يقول بينماالنبى صلى الله عليه وسلم يمشى اذجاء ه رجل ومعه حمارفقال: يارسول الله الركب! وتأخّر الرجل فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم "لا"انت احق بصدر دابتك إلاان تجعله لى قال: قد جعلتُه لك قال: فَرَكِبَ". (حسن غريب)

حضرت بُرید فقر ماتے ہیں کہ دریں اثنا کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم چل رہے تھے کہ ان کے پاس ایک شخص آیا جس کے ساتھ دراز گوش تھا و ہخض کینے اگا: اے اللہ کے رسول! سوار ہوجا کیں! اورخودوہ ہخض بیجھے ہٹ گیا ہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ' دنہیں' 'تم اپنی سواری کی اگلی نشست کا زیادہ حقد ارہو، ہاں البتہ اگر تم جھے بہ جن دوتو! وہ کہنے لگا کہ میں نے بہ آپ کے لئے کردیا! فرماتے ہیں کہ آپ سوار ہوئے۔

تشری : قوله: "سمعت ابی، بریدة" بریده "ابی عبدل ہے یعنی میں نے اپ والد بریده الله بالد کے دراز گوش سے ترجمہ کیا ہے یعنی لیے کا نوں دالا جا نور، کیونکہ حصرت شاہ ولی اللہ " نے قاری میں بیرت پرایک چھوٹی کی کتاب کسی ہے اس میں فرمایا ہے کہ جب آپ کی نسبت سے گدھے کا تذکرہ بوتو سوء ادب سے بیخ کے لئے دراز گوش کہا جائے گا گو کہ آپ کمال تواضح کی بناء پرگد کھے کی سواری معیوب نہیں بیخت سے ملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ جوشم گدھے کی سواری عار سی معاوری عار محتی ہوتا ہے۔ چونکہ ریصا حب بی بھر رہ سے کہ آپ کہ موتے ہوئے جھی زیادہ برتر و تقیر ہے کیونکہ وہ متنکر بہوتا ہے۔ چونکہ بیصا حب بی بھر رہ سے کہ آپ کے بوتے ہوئے بھی آگے بیضنے کاحق نہیں پہنچا اس لئے بیچھے بہت گیا تو آپ نے اس کو مسئلہ مجھا یا جیسا کہ واضح ہوا کہ گا ڈی چلانے اور فرنٹ سیٹ پر بیٹھنے کاحق ما لک کو ہے ہاں اگروہ کی کو بیتی دواض ہے، اس سے معلوم ہوا کہ گا ڈی چلانے اور فرنٹ سیٹ پر بیٹھنے کاحق ما لک کو ہے ہاں اگروہ کی کو بیتی دواس کے متن میں "لا" انت کے بجائے کہ کو نسبت آخے قو اس کے متن میں دونوں جملوں کا ایک بی ہالیت ہمار نے نسخہ کے دیل بھے مطلب دونوں جملوں کا ایک بی ہے البتہ ہمار نے نسخہ کے دیل مطابق معنا دو جملے بین طور اجملہ پہلے کی دلیل معنا دو جملے بین جاتے ہیں ایک "لا" نافیہ متنافل ہے بینی لا ادر کرنہ ... اورانت الی دومر اجملہ پہلے کی دلیل معنا دو جملے بین جاتے ہیں ایک "لا" نافیہ متنافل ہے بینی لا ادر کرنے ... اورانت الی دومر اجملہ پہلے کی دلیل معناد تا کہ بی جملے ک

باب ماجاء في الرخصة في إتخاذالانماط

(بستر پر بچھانے والے کپڑے (چا دروغیرہ) کے استعال کابیان)

"عن جابرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : هل لكم أنماط؟قلتُ وَ أَنَى تَكُون لنا انماط؟قال قال: أمّاانهاستكون لكم انماط؟قال فانااقول لإمرأتى : أخِّرى عنى انماطك فتقول ألّم يقبل رسول الله صلى الله عليه وسلم : انهاستكون لكم انماط؟قال فَادَعُها". (حسن صحيح)

حضرت جابر ففرماتے ہیں کہ رسول اللہ علیہ وسلم نے بوچھا؛ کیاتمہارے پاس انماط (غالیج)
ہیں؟ میں نے عرض کیا کہ جمارے پاس انماط کہاں سے آئے؟ آپ نے فرمایا: آگاہ ہو! کہ عنقریب تمہارے
پاس انماط ہوں گے حضرت جابر فقرماتے ہیں چنانچے میں اپنی ہوی سے کہتا ہوں کہ اپنے انماط کو مجھ سے ودورر کھ
تو وہ کہتی ہے: کیارسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے نہیں فرمایا تھا کہ قریب ہے کہ تمہارے پاس انماط ہوں گے!
حضرت جابر ففرماتے ہیں کہ پھر میں چھوڑ ویتا ہوں۔

تشری : قوله: "انماط" اسباب کے وزن پرنمظی جہسر کے او پر بچھائے جانے والا کپڑا،
بعض کہتے ہیں کہ وہ کپڑا جس کا جھالر بھی بنا ہوا ہو یا باریک ٹازک ولطیف کپڑا جو پانگ وغیرہ پر بھی بچھاتے ہیں
اوراس کا پردہ بھی بناتے ہیں ۔ بعض نے قالین کی ایک قتم کو کہا ہے جس پررو کیں ہوتے ہیں ۔ تا ہم حدیث میں
بستر کے او پروالی چا درمراد ہے ۔ حضور پاک صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئی اگر چہوسعت اور فراوانی مال کی آئینہ دار
ہے گرآپ نے چونکہ اس کے استعمال سے منح نہیں فرمایا اس لئے حضرت جابر گئی اہلیہ نے اس کو مباح سمجھ کر
استعمال کیا اور حضرت جابر نے بھی فکیر نہیں کی اس لئے امام ترفدی اورامام نووی نے اس کی رخصت کے لئے
باب قائم کیا ہے۔قال: "وفیہ جو از اتحاذا لانماط اذالم تکن من حریر "۔ (مسلم: ص: ۱۹۳۳)

باب ماجاء في ركوب ثلاثة على دابة

(سواری کے ایک جانور پرتین آ دی بیٹھ سکتے ہیں؟)

"عن اياس بن سلمة عن ابيه قال لقد قُدتُ بنبي الله صلى الله عليه وسلم والحَسَن

والحسين على بغلته الشهباء حتى ادخلته حُجرة النبي صلى الله عليه وسلم، هذاقُدامه وهذا خلفه". (حسن صحيح غريب)

حضرت سلمہ بن اکوع فرماتے ہیں کہ بلا شہبہ میں نے آپ کے سفید خچرکو کھینچاہے جس پر نبی صلی اللہ علیہ وسلم اور حسن فی جسین ٹبیٹے تھے یہاں تک کہ میں اسے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے آنگن میں لے آیا، یہ آپ کے آگے تھے۔ آگے تھے۔

تشری : قوله: "فُدت "موقی کی ضد ہے سائق پیچے سے ہا تکنے والے اور قائد آگے سے صیخ والے کو کہتے ہیں۔ قوله: "الشهباء "وہ سفیدرنگ جوسیا ہی مائل ہو پھران حضرات میں سے کون آپ کے آگے تھا؟ توروایت میں ہرایک اختال ہے۔ اس روایت سے تین شخصوں کا ایک جانور پرسوار ہونا فابت ہوا اور جن روایات میں من آیا ہے وہ زیادہ وزن کی علت کے پیش نظر ہے جبکہ یہاں تو حضرات کئین سطح کا وزن زیادہ نہ تھا کہ دونوں کم عمر تھے نیز خچرانتہائی طاقت ورجانور ہے بخلاف گھوڑے کے البذا کوئی تعارض ندر ہا۔

باب ماجاء في نظرة الفُجاء ة

(نا كہاں نظرير جانے كابيان)

"عن جريربن عبدالله قال سألتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم :عن نظرة الفُجاء ةِ فَامَرَنى ان اصرف بصرى". (حسن صحيح)

حضرت جریر بن عبدالله "فرماتے ہیں کہ میں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے نا گہانی (اچا تک) نظر پڑنے کے متعلق بوچھاتو آپ نے مجھے تھم دیا کہ میں اپنی نگاہ پھیرلوں۔

تشری : قول ادر افغی کے ہے مراد غیرارادی نظر ہے، البذاارادی نظر ہمرحال ممنوع ہوئی خواہ وہ پہلی بخت کے وزن اور معنی کے ہے مراد غیرارادی نظر ہے، البذاارادی نظر ہمرحال ممنوع ہوئی خواہ وہ پہلی ہویا غیرارادی نظر کا تشکسل ہو کیونکہ غیرارادی اچا تک پڑنے والی نظرا گرچہ معاف ہے مگر جب اس نظر کو جاری رکھے گاتو مزید دیکھنا ارادی بن جائے گااور یہی مطلب ہے باب کی آگلی حدیث کا:''یاعلی لائت بع المنظر قال خور قان لک الاولی ولیست لک الآخو ق'۔ (حسن غریب) پہلی نظر کے بعددوسری مت دالوکیونکہ تیرے لئے پہلی نظر جائز (معاف) ہے مگردوسری معافر نہیں ہے۔

اس میں پہلی سے مرادغیرارادی اور غیرا فتیاری ہے جبکہ دوسری سے مرادارادی وافتیاری ہے اور چونکہ اچا تک نگاہ پڑنے کے بعد نظر لوٹا نا حلاوۃ ایمانی نفیب ہونے کا ذریعہ ہاس لئے اُسے ' لکک'' سے تجییر فرمایا یعنی ایسا کرنے سے تجھے نفع ہوگا جبکہ دوسری مینی ارادی نظر نفع کے بجائے مفر ٹابت ہوگی گویا پہلی نظری متوقع نفع بھی ضائع کردےگی۔ (تدبر)

باب ماجاء في احتجاب النساء من الرجال

(عورتیں بھی مردوں کونہ دیکھیں)

"عن نبهان مولى ام سلمة انه حدثه ان ام سلمة حَدَّثته انهاكانت عندرسول الله صلى الله عليه و صلى الله عليه و مسلم ومسمونة قالت فبينمانحن عنده اقبل ابن ام مكتوم فدخل عليه و ذالك بعد ماأمِرنابالحِجاب فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم : إحتجبامنه!فقلت يارسول الله ا أليس هواعمى الايبصرناولايعرفنا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم : اَفَعمياوان انتما الستماتُبصِرانه "(حسن صحيح)

حضرت ام سلمہ یہ آزاد کردہ غلام بھان فرماتے ہیں کہ ام سلم یہ نے ان (بھان) کو بتایا ہے کہ وہ اور میمونٹرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس بیٹی تھیں، ام سلمہ فرماتی ہیں کہ دریں اثناء کہ ہم آپ کے پاس تھیں ام سلمہ فرماتی ہیں کہ دریں اثناء کہ ہم آپ کے پاس تھیں کردہ کرنے (عبداللہ) بن ام مکتوم فرآئے اور آپ کے پاس داخل ہوئے یہ اس وقت کی بات ہے جب ہمیں پردہ کرنے کا تھم کیا گیا تھا، پس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: دونوں ان سے پردہ کرو! میں نے عرض کیا: اے اللہ کے رسول! کیا وہ تو نابینا نہیں ہیں؟ نہ تو وہ ہمیں دیکھ سکتے ہیں اور نہ ہی پہچان سکتے ہیں، تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: کیا تم اسے نہیں دیکھ تیں؟

تشریخ: قوله: "ومیمونهٔ"اس کارفع ونصب دونول جائز بین اگر کانت کی خمیر متنز پرعطف مانین توم فوع پڑھا جائے گا جبکہ اسم اَنَّ (هَا) پرعطف کی صورت میں منصوب ہوگانصب اولی ہے۔قوله: "اَفَعَمیاوان" عمیا وان تثنیہ ہے عمیا ء کا جواعیٰ کی تامیث ہے۔

اس مدیث سے ثابت ہوا کہ عورت بھی مرد کونہیں دیکھ سی جیسا کہ مرد کے لئے کسی اجنبی مُضخات عورت کود یکھنا جا کرنہیں، تا ہم اس نہی کی کیا حیثیت ہے؟ تو بعض علاء کہتے ہیں کہ بیروایت ورع بربینی ہے جہاں

تک نفس دیکھنے کا تعلق ہے تو فتوی کی رُوسے عورت مردکی ناف کے اوپرادر کھٹنوں سے بینچے والے حصے کود کھ سکتی ہے جسیا کہ حضرت عائشہ "کا حبشیوں کود کھنا ثابت ہے، اس کے برعکس امام نووی شرح مسلم: ص: ۳۸۳ج: ا میں لکھتے ہیں کہ جمہورعلماء کے زدیک نظر جانبین سے حرام ہے:

"بل الصحيح اللى عليه جمهور العلماء واكثر اصحابنا انه يحرم على المرأة النظرالي الاجنبي كمايحرم عليه النظراليها".

ای طرح ابن العربی نے بھی عارضہ میں لکھاہے کہ عورت کے لئے بھی مردکود کھنا حرام ہے کین لوگ اس مسلد سے ناواتف ہیں ''کے خدالک یعصوم نظر المرأة المی الوجل ہو اموجھلہ الناس النے ''جہاں تک حضرت عائشہ اور حضرت فاطمہ بنت قیس کی حدیثون کا تعلق ہے کہ حضرت عائشہ کونی علیہ السلام نے حبشیوں کا تھیل دیکھنے کی اجازت دی اور فاطمہ بنت قیس کوعبداللہ بن ام کمتوم کے گھر عدت گزار نے کو کہا تھا تو ان احادیث کا جواب ہے کہ عدت گذار نے کے لئے دیکھنا کی طرح ضروری نہیں اس کے بغیر بھی کسی نابینا کے گھر میں پردے کے ماتھ عدت گذاری جاسکتی ہے لہذا اجازت عدت نظرے اذن کوستاز منہیں ہوئی۔

حضرت عائشہ ﴿ كَى حديث كاجواب علامه عِنى الله عِنى الله عِن الله على الله على الله على الله على الله على الله ال عرون كود كله خالا زمنيس آتا:

"وفيه جوازنظر النساء الى فعل الأجانب وَامّانظرهن الى وجه الاجنبى فان كان بشهوة فحرام اتفاقاً وان كان بغيرها فالاصح التحريم وقيل هذاكان قبل نزول "قل للمؤمنات يغضضن من ابصارهن".

(حاشينمبرك بخارى: من اساح: ١٠٠١ كتاب العيدين)

المستر شد: عرض کرتا ہے کدد کھنا تو دونوں کے لئے ممنوع ہے تا ہم مردکا نظر کرنا زیادہ فنیع ہے کونکہ اگر عورت کے دیکھ نے سے فتنہ پیدا ہوتا ہے تو وہ اگر چرفسادتو ہے گر جب مردی طرف سے فساد کا صدور وآغاز ہوگا تو چونکہ مردک حیثیت انسانیت کے ڈھانچ میں ریڑھ کی ہڈی گی ہے ہتو پھراس نظام کی اصلاح کی کوئی امید باتی نہیں رہتی کیونکہ عورتوں کی حیثیت ٹائوی ہونے کے ساتھ ان کوروکا بھی جاسکتا ہے گرم دکوروکے والا پھرکون ہوگا؟ اس لئے مردکوزیادہ پابند بنادیا گیا اگر چفن آھر دونوں کے لئے ہے فرض مردکا مقام بلند ہے اس لئے ہوگا؟ اس کے دمدداری بھی زیادہ بنتی ہے تاکہ معاشرہ گڑنے نہ پائے۔ یہ ذمدداری اگرم داورعورت دونوں پوری

کریں تو نورعلی نورگر مردبہر حال اسے نباہتارہے اگر عورت بگڑ بھی گئی توانسانیت کے بنیادی عضر یعنی مرد کی اصلاح کی صورت میں دنیاباتی رہے گی ورندسب نیست ونابود ہوجائے گا جس کا نام قیامت ہے جوانثراروز نا کاروں پر ہی قائم ہوگی۔

با ب ماجاء في النهي عن الدخول على النساء إلاباذن ازواجهن

(شوہرکی اجازت کے بغیر کسی عورت کے پاس جانامنع ہے)

"عن مولى عمروبن العاص ان عمروبن العاص ارسله الى عَلى يستأذنه عَلَىٰ اسماء البنة عميس فاذن له حتى اذا فرغ من حاجته ،سأل المولى عمروبن العاص عن ذالك فقال: ان النبى صلى الله عليه وسلم نَهَانَا ونهىٰ ان ندخل على النساء بغيراذن ازواجهن". (حسن صحيح)

حضرت عمروبن العاص کے آزاد کردہ غلام (عبدالرحمٰن بن ثابت) سے روایت ہے کہ عمروبن العاص فی نے ان کو (لیعنی عبدالرحمٰن کو) حضرت علی کے پاس بھیجا تا کہ وہ ان سے اساء بنت عمیس کے پاس جانے کی اجازت مائے چنانچے انہوں نے اجازت دے دی چنانچے جب وہ (عمرو اسا الاسے چیت کر کے) فارغ ہوئے تو مولی نے عمروبن العاص سے اس کی وجہ پوچھی (کرشتہ داری کے باوجود آپ نے اجازت کیوں طلب کی؟) حضرت عمرو نے فرمایا کہ نجی سلی اللہ علیہ وسلم نے ہمیں منع کیا ہے یا فرمایا کہ آپ نے ممانعت فرمائی ہے کہ ہم عورتوں کے پاس ان کے شوہروں کی اجازت کے بغیر جائیں۔

تشریخ: _حفرت اساء بنت عمیس ام المؤمنین حفرت میمونه بنت الحارث کی مال شریک بهن یعنی نبی علیه السلام کی سالی بین بیا سیات شو برحفرت جعفر شبن ابی طالب کے ہمراہ حبشہ کی ہجرت بھی کرچکی ہیں وہاں ان کی اولا دبھی پیدا ہو کی تھی ،حفرت جعفر گی شہادت کے بعد حضرت ابو بمرصد بق مان سے نکاح ہوا تھا اور آپ کے بعد حضرت علی کے عقد از دواج میں منسلک ہوئی تھیں ۔ باب کی حدیث انہی دنوں کی بات ہے جب وہ حضرت علی کے نکاح میں تھیں ۔

اس سے معلوم ہوا کہ عورتوں کے رشتہ دار بھی ان کے گھر میں آنا جا ہیں تو اُن کوشو ہروں سے صراحثاً یا دلالٹا اجازت لینی چاہئے ہاں عورت کے ماں باپ یا بہن بھائی ہوں تو چونکہ وہ عرفا آتے جاتے ہیں لہذا اگر شوہرنے ان کوایے گھر آنے سے منع نہیں کیا ہے وہ بغیرا جازت کے جاسکتے ہیں مگر دوسرے رشتہ داروں کے لئے اجازت لازی ہے، پھراگر شوہرنے عورت کے ماں باپ کو گھر میں آنے سے روک دیا تو وہ اپنی بیوی کو اپنے ماں باپ سے ملا قات کی ممانعت نہیں کرسکتا۔

STO

باب ماجاء في تحذير فتنة النساء

(عورتول کے فتنہ سے خبر دار کرنے کابیان)

"عن اسامة بن زيدوسعيدبن زيدبن عمروبن نفيل عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: ماتركتُ بعدى في الناس فتنةً أضَرُّ على الرجال من النساء". (حسن صحيح) نی صلی الله علیه وسلم کاارشاد ہے کہ میں نے اپنے پیچیے مردوں کے حق میں عورتوں سے بردھ کرکوئی ضرررسال فتنهيل مجهور اہے۔

تشريح: قوله: "ماتركت بعدى" ماضى كاصيغهاس كة استعال فرمايا كهوصال يقيني امرتهاجس كوعندالبلغاء ماضى تي تبير كياجا تا بي قوله: "فتنة "يعني امتحان اورآز مائش پيم" بعدى "مين اس كي طرف اشارہ ہے کہآنحضور کے وجو دِمیمون کی وجہ سے بیدنتنہ سرنہیں اٹھا سکتا تھا مگر آپ کے بعد میں ایسا ہوا۔

پھرعورت کا فتنہ ضرررساں ہونے کا مطلب دین وتقویٰ کے لئے تباہ کن ہوناہے چونکہ عورت ایک بنیادی ضرورت بھی ہے اور ہردلعزیز مخلوق بھی ہے دوسری طرف عورت میں عقل ودین کی کمی کا تقاضا ہے کہ دنیوی امور کی جانب میلان مواور آخرت کی فکرے بے نیازی مواس بناء پروہ اینے شوہر اور عاشق وغیرہ کو خسیس امور برأ کساتی ہے اوراین مجھ کے مطابق اسے گندے اور بیبودہ مشورے دیتی ہے ،مرواس کی محبت کی وجہ سے اس کے جال میں پھنس کر ہلاک ہوجا تا ہے آگر میصورت حال کہیں کہیں نظر آ جائے تو اس سے خاندانی نظام ودین تومتأثر موجا تاہے مربورامعاشرہ اس وقت بكرے كاجب من حيث الامت بورى مسلم آبادى اس فتنه ميں مبتلا موگ حدیث میں ای ہولناک منظر کی طرف اشارہ بلکہ تصریح ہے اور مردکو تنبیہ ہے کہ وہ اپی عقل کو شخکم رکھنے کی کوشش کرے، کہیں بے وقوفی کامرتکب نہ ہوجائے کہ اس کی حیثیت معاشرہ کے لئے ریڑھ کی ہڈی کی طرح ہے اگر

اسے بیاری لاحق ہوجائے تو پھرمعاشرہ کے بینے کی کوئی صورت ممکن نہیں۔

با ب ماجاء في كراهية اتخاذالقُصَّة

(بالوں میں بالوں کا سجھاشامل کرنا مکروہ ہے)

"حميدبن عبدالرحمن انه سمع معاوية خطب بالمدينة يقول: اين عُلماءُ كم؟يااهل المدينة! سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم ينهىٰ عن هذه القُصّة ويقول: انماهَلكت بنو اسرائيل حين إتخذهانساء هم". (حسن صحيح)

مُمید بن عبدالرحمٰن فرماتے ہیں کہانہوں نے حضرت معاویۃ سے مُناہے وہ (معاویۃ) مدینہ میں خطاب فرمارہے تھے آپٹے نے فرمایا اے مدینہ والو! تمہارے علماء کہاں ہیں؟ (تا کہ تمہیں روکیں) میں نے رسول اللہ صلی الله علیه وسلم کواس کچھے (کے استعال) سے منع کرتے ہوئے سُنا ہے اور بیکہ آٹ نے فرمایا بنی اسرائیل کی اس وفت تباہی آگئی جب ان کی عورتوں نے ان کچھوں کا استعمال کرنا شروع کیا۔

تشريح: قولسه: "قُصه" بضم القاف وتشديدالصاد بالول كالمجِها، بيان دنول كى بات ہے جب حضرت امیرمعاویة ما هیمیں مج کرکے واپس شام جارہے تھے اور مدینہ میں قیام کیا تھاریہ آپ ا کا آخری مج تھا، انہوں نے بیتقریر سول الله صلی الله علیہ وسلم کے منبر منور پر کی تھی اور اس میں بالوں کے ملانے کے متعلق فدكوره مرفوع حديث بيان فرماكي -اس ميل اين علاء كم؟ ميل ميه بتانا مقصود بير كم علاء ايني ذمه داري (نهي عن المنكر) كوكيون ادائيين كررب بي ؟ تا جم علاء كي طرف سے بيعذر بوسكتا ہے كدياتوان علم ميں بدبات آئي نہیں ہوگی کہمسلمان عورتیں اس طرح کی حرکت کرتی ہیں چنانچہ ایک روایت کےمطابق حضرت معاویڈ نے فرمایا کہ میں نے ریے مجھااینے خاندان کی ایک عورت کے پاس دیکھااوراس نے مجھے بتایا کہ دوسری عورتیں بھی ایسا كرتى بين جبيا كماشيكوكب من بحوالطراني منقول ب: "قال وجدت هذه عنداهلي وزعمواان المنسساء يَسزدنسه في شعورهن "اس سے معلوم ہوتا ہے كديمُل ابھى تك فروغ نہيں ياچكا تھايا پھرا گربي مشہور دمعروف تھا توعلاء نے بنوامیہ کے بعض حکمرانوں کے خوف سے خودکومعذور سمجھا ہوگا کہ بنوامیہ امر بالمعروف ونهي عن المنكر مين بهم برحكومت وخلافت مين مداخلت كاالزام لكا كرظلم وجبرنه كرين، اورسب سے زياده قرین قیاس بیہ ہے کہ اس وقت اسلامی حکومت اور خلافت موجودتی اس لئے امر بالمعروف ونہی عن المنكر كى

ذمدداری حکومت کی تھی ، ابھی وہ وقت نہیں آیا تھا کہ ارکان خلافت نے اپنی ذمہداری کونظر انداز کیا ہواس لئے علاء کے آگے آنے کی چندال ضرورت نہی حضرت معاویہ کایہ خطاب علاء کو آگاہ کرنے کے لئے ہے کہ اب آپ کے آگے آنے کا وقت قریب ہے کہ حکمرانوں کی اکثریت اپنی ذمہداریوں سے خفلت برتے گئی ہے چونکہ شام میں تو حضرت امیر معاویہ براہ راست دکھ بھال کرتے تھے اس لئے وہاں کے بازاروں اور معاشرے میں میں جہند کی شام (دار الخلافہ) سے دوری کی وجہ سے صورت حال بدلی ہوئی نظر آئی تھی اس لئے سے چیز نہیں تھی جبکہ مدینہ کی شام (دار الخلافہ) سے دوری کی وجہ سے صورت حال بدلی ہوئی نظر آئی تھی اس لئے تھیے کی ضرورت پیش آئی اس میں ارباب اختیار کے لئے بھی اعتباہ ہے۔

میبھی ہوسکتاہے کہ علاء نے عور توں کومنع کرنے کی کوشش کی ہوگی مگرشہر کی آبادی بڑھ گئ تھی۔ایسے میں مختلف النوع لوگوں کا ہوناغیر معمولی بات نہیں توممکن ہے کہ بیکام باہرسے آنے والی عورتیں کرتی ہوں۔

پھرآپ نے اس کی علت بتائی کہ بنی اسرائیل کی ہلاکت اس کمل میں لگنے کے بعد آئی کہ ان کی عورتیں بالوں میں بال ملایا کرتی تھیں، چونکہ اس سے عورت کے بالوں کاحسن بڑھ جاتا ہے اس لئے عورت کا ایسا کرنے سے اس کاحسن دوبالا ہوجاتا ہے اور فتنہ شدید تر ہوجاتا ہے۔

غرض اس حدیث کی وجہ سے بالوں میں انسانی بال ملانا کمروہ ہے آگر غیر انسانی بال یا پلاکئی بال ہوں تو آگر چہ بذات خود سیمل جائز ہے گرز کین کر کے آگر عورت با ہرنگلتی ہے تو سید بعلتِ معاشرہ بگاڑنے کے ناجائز ہوگا گھرکے اندر شوہر کی رضامندی سے ایسا کرنے میں کوئی حرج نہیں۔ ہدایہ میں ہے:

"ولايسجوزبيع شعورالانسان ولاالانتفاع بدلان الآدمى مُكرَّم لامبتذلوقدقال عليه السلام لعن الله الواصلة والمستوصلة الحديث وانسما يُرَخُصُ فيمايُتخَدُ من الوبو (اونث وغيره كي شماوربال) فيزيدفى قرون النساء وذوائبهن". (بدايين ٣٣٠ جلد: سوم 'باب البيح الناسد') واصله ومستوصلك بارب مين الكلباب آرباب -

باب ماجاء في الواصلة والمستوصِيلة والواشمة والمستوشمة

(بالول مين بال پوست كرنے والى اوركروانے والى، گودنے والى اورگدوانے والى كابيان) "عن عبدالله ان النبى صلى الله عليه وسلم لعن الواشمات والمستوشمات والمُتَنَمِّصات مُبتغياتٍ لِلمُحسن مُغَيِّراتٍ خَلقَ الله". (حسن صحيح)

حضرت عبداللہ بن مسعود ؓ سے روایت ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے لعنت بھیجی ہے گود نے والی عورتوں پر اور بدن گدوانے والیوں پر اور بنا وَسنگھار کی غرض سے چہرے کے بال صاف کرنے والی عورتوں پر جواللہ کے طرز پیدائش کو تبدیل کرنے والی ہیں۔

تشریخ: باب کی اگلی روایت جوحفرت ابن عمر سے مروی ہے اس میں الواصلة والمستوصلة کا اضافہ ہے ہیں واشمہوہ عورت ہے جو بدن کے کسی حصہ کوسوئی سے گود کر اس پرنیل چیزک دے مستوشمہ: جو کسی سے یہ کام کروائے۔''وشم ''بدن کے کسی بھی حصہ میں گودنے کا نام ہے مگر حضرت نافع فرماتے ہیں کہ الموشم فی المسلِقَةِ لیحنی وشم مسوڑے میں ہوتا ہے شاید میاس زمانے کی عورتوں کا دستورتھا آج کل عورتیں چہرے میں اور مرد ہاتھ پر کرتے ہیں۔ واصلہ: بال شامل کرنے والی اور مستوصلہ کروانے والی، وصل سے ہمعنی پوست کرنے اور جوڑنے کے ہے، جبکہ مُنگتِ مصہ دھا گے سے بیشانی اور چہرے کے بال اُکھاڑنے والی کو کہتے ہیں۔ آج کل بور چوڑنے کے ہے، جبکہ مُنگتِ مصہ دھا گے سے بیشانی اور چہرے کے بال اُکھاڑنے والی کو کہتے ہیں۔ آج کل بور چوڑی پالروالے اس کے لئے مختلف طریقے اختیار کرتے ہیں۔ بحض حضرات نے متعمصہ اس عورت کو کہا ہے جو دانتوں کوسوبین کرکے باریک بناتی ہے۔ بہر حال بیتمام حرکتیں حرام ہیں کہ ایک تو ان میں فریب اور دھوکا ہے دوم دانتوں کوسوبین کرکے باریک بناتی ہے۔ بہر حال بیتمام حرکتیں حرام ہیں کہ ایک قوار میں فریب اور دھوکا ہے دوم نور کی فرائد ہا کہ بولی ان امور میں مستقل وغیر مستقل و غیر مستقل و خیر مستقل و خیر مستقل کا بھی تھوڑ اسافرق ہے جو ابواب اللباس میں گذرا ہے۔ (دیکھئے تشریحات: ص: ۵۲۸ جو ابواب اللباس میں گذرا ہے۔ (دیکھئے تشریحات: ص: ۵۲۸ جو ابواب اللباس میں گذرا ہے۔ (دیکھئے تشریحات: ص: ۵۲۸ جو ابواب اللباس میں گذرا ہے۔ (دیکھئے تشریحات: ص: ۵۲۸ جو ابواب اللباس میں گذرا ہے۔ (دیکھئے تشریحات: ص: ۵۲۸ جو ابواب اللباس میں گذرا ہے۔ (دیکھئے تشریحات: ص: ۵۲۸ میں دور آن

باب ماجاء في المُتشبهات بالرجال من النساء

(مردوزن کاایک دوسرے کی مشابہت اختیار کرناحرام ہے)

"عن ابن عباس قال لعن رسول الله صلى الله عليه وسلم: المُتَشَبِّهَات بالرجال من النساء والمُتَشَبِّهِينَ بالنساء من الرجال". (حسن صحيح)

حضرت ابن عباس فر ماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے مردوں کی مشابہت اختیار کرنے والی عورتوں پرلعنت بھیجی ہے اورعورتوں کی مشابہت اختیار کرنے والے مردوں پرلعنت بھیجی ہے۔

حديث آخر: ـ "لعن رسول الله صلى الله عليسه وسلم المُخَنِّثِينَ من الرَّجال والمُتَرَجِّلات من النساء". (حسن صحيح)

یدروایت بھی ابن عباسؓ ہے ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے لعنت بھیجی ہے زنانہ بن اختیار کرنے والے مردوں پراورمردانہ بن اپنانے والی عورتوں پر۔

تشریخ:۔ چونکہ باب نفٹل کی خاصیت تکلف کرنا ہے اس لئے تکبہ بخف اور ترخبل کے معنی بتکلف اپنی صنف وصورت میں تبدیلی لانا ہوئے پھر مخف اگر ہفتے النون ہوتو اس سے مرادوہ مرد ہوتا ہے جس سے ورتوں کی طرح مجامعت یعنی لواطت کی جاتی ہو، یہ بھی اگر چہ گناہ کمیرہ ہے گریہاں روایت بکسرالنون مخبف ہے یعنی جوخض عورتوں کی طرح حرکات وسکنات اختیار کرے اگریہ وصف خلقی اور پیدائشی ہوتو اگر چہ عرفا یہ عیب میں شار ہوتا ہے گرغیراختیاری ہونے کی وجہ سے اس سے کوئی گناہ لازم نہیں آتا جیسے آدی مرد ہولیکن اس کی باتوں میں نزاکت ہویا اعضاء میں نرمی ہویا اس کی چھاتیاں ہوں وغیرہ ایسے خفس کوفنی کینی ہیجوا کہا جاتا ہے، مذموم صورت یہ ہے کہ آدمی جان کو جھر کو دکو ہیجوا بنالے یعنی ہی تکلف عورتوں کی مشابہت اختیار کرے اور یہاں یہی مراد ہا ایسا آدمی بموجب حدیث ملعون ہے۔

ای طرح اگرکوئی عورت مردانہ جسمانی صفات اختیار کرے خواہ لباس میں ہویابول چال میں ہو ہو ابول چال میں ہو ہو ہوں مورت مردانہ جسمانی صفات اختیار کرے خواہ لباس میں ہویابول چال میں ہو ہرصورت میں معیوب اور معیوب اور خدموم نہیں جیسے کوئی عورت علم اور دائے میں مردول کے ہمسر ہونے کی کوشش کرے تو یہ ہرگز خدموم نہیں کیونکہ ملکات فاضلہ کی ایک میت کے ساتھ مختی نہیں میں دول کے ہمسر ہونے کی کوشش کرے تو یہ ہرگز خدموم نہیں کیونکہ ملکات فاضلہ کی ایک میت سے ساتھ مختی نہیں

اگر چدرائے کی پختگی مردوں میں عام ہیں کیکن عورتوں کے لئے ممنوع نہیں۔

بہرحال اگر کسی مخص میں دوسری صِنف کی صفات خلقی اور پیدائش پائی جاتی ہوں تواسے بتکلف ختم کرنا جا ہے کیکن اپنے اختیار سے دوسری صِنف کی صفات کختصہ کی طرح اپنانا جائز نہیں۔

باب ماجاء في كراهية خروج المرأة مُتَعَطِّرةً

(عورت کے لئے خوشبولگا کرگھرے نکلنا جائز نہیں)

"عن ابى موسى عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: كل عين زانية والمرأة اذا استعطرت فَمَرّت بالمجلس فهي كذاو كذايعني زانية". (حسن صحيح)

حصرت ابومویٰ اشعری نی صلی الله علیه وسلم سے روایت کرتے ہیں کہ ہرآ نکھ (جوعورتوں کودیکھے) زنا کرنے والی ہے اور جب عورت خوشبولگا کر (گھرسے لکلے اور) کسی مجلس سے گذر ہے تو وہ ایسی ایسی ہے لینی زنا کارہے۔

تشری : جیسا کہ اسلام باب میں آرہا ہے کہ عورتوں کی خوشہو میں مبک و گلبت نہیں ہونی جا ہے صرف رنگ کی حد تک استعال کی اجازت ہے ہاں گھر میں شو ہر کے لئے کوئی بھی خوشبواستعال کرسکتی ہوں خوشبوداراور مُعَظَّرہ ہوکر جب عورت گھرسے نکلے گی اور کسی ایی مجلس پرسے گذر ہے گی جہاں مرد بیشے ہوں تو وہ زانیہ ہے کیونکہ زنا کا مطلب نامحرم عورت سے لطف اندوز ہونا ہے اور چونکہ خوشبوسے دماغ میں شاد مانی اورنفس میں بیجان پیدا ہوتا ہے اس لئے ایس عورت سے لوگ مخطوظ ہوتے رہتے ہیں اس لئے وہ زانیہ مشہری اسی بناء پر آنکھ کو بھی زانیہ کہا کیونکہ جب آنکھ عورت کودیکھتی ہے تواسے لطف حاصل ہوتا ہے اورلذت محسون ہوتی ہے تواسے لطف حاصل ہوتا ہے اورلذت محسون ہوتی ہے تواسے لطف حاصل ہوتا ہے اورلذت محسون ہوتی ہے تواسے لطف حاصل ہوتا ہے اورلذت محسون ہوتی ہے تواسے لطف حاصل ہوتا ہے اورلذت

نیز جوعورت باہر جانے کے لئے مردوں کی رغبت کا سامان کرتی ہے توبیاس کی بدباطنی اور شوق زنا کا آئینہ دارہے اس لئے بیاس کے زنا کار ہونے کی نشانی ہے ہاں شوق اور خواہش میں تفاوت ورجات ضرور ہوتا ہے۔ (تدبر)

باب ماجاء في طِيب الرجال والنساء

(مردون اورعورتون كي خوشبوؤن كابيان)

"عن ابی هریرة قال قال رسول اِلله صلی الله علیه وسلم :طِیب الرجال ماظَهَرَدِیحُه وخفی لونه وطِیب النساء ماظهرلونه وخفی ریحه".(حسن)

حضرت ابو ہریرہ فرماتے ہیں کہرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ مردوں کی خوشبودہ ہے جس کی اور علیہ مواموء اور عورتوں کی خوشبودہ ہو۔ او ظاہر ہوا دراس کا رنگ چھیا ہوا ہو، اور عورتوں کی خوشبودہ ہے جس کا رنگ ظاہر ہوا دراس کی او پیشیدہ ہو۔

صريث آخر. "إنَّ خيرطِيب الرجال مناظه وريحه و خفى لونه و خيرطِيب النساء ماظهرلونه و خفى ريحه ونَهىٰ عن المِيثرة الأرجُوان". (حسن غريب)

مردوں کی اچھی خوشبووہ ہے جس کی مہک ظاہر ہوادررنگ خفیہ ہوادر عورتوں کی بہتر خوشبودہ ہے جس کارنگ ظاہر ہوادراس کی اُو چھی ہوئی ہوادرآٹ نے سُرخ زین پوش سے منع فرمایا ہے۔

تشری : باب کی دونوں صدیثوں سے مرداور عورت کی خوشبوؤں میں فرق معلوم ہوااور بیفرق وقسیم ان کے مناسب حال کے اعتبار سے ہے کہ عورت کے ساتھوزینت مناسب ہے کی شہرت جاب کے منافی ہے۔ اس لئے وہ زینت ضروراختیار کرسکتی ہے لیکن گھر کے اندر ۔ باہر جانے کے لئے تجاب لازی ہے اورخوشبو تجاب کے فائدہ اورغرض کا از الدکرتی ہے جبکہ مرد مجداور جماعات و مجالس میں شرکت کرتے ہیں تو ان کے لئے خوشبو مناسب ہے اور تکین زینت نسوانی وصف ہے جومردانہ وصف سے مختلف ہے۔

قول د "عن المعيشرة الأرجُوان" بكسراكيم اس كمتعلق بحث الواب اللباس تشريعات ٥٠٥ وص ١٠٥٠ برك ركارى هم وه مرخ كر اجوزين ك او برجها ياجاتا تفاجبك أرجُ وان "بضم الهمزه والجيم كر على مرخ كوكت ين على بذااس كاذكر بعد المير هم بالغدك لئي بي جيئ وغر ابيب سُود " (سورة فاطرآيت ٢٠٠) جولوگ مرخ رنگ ك استعال كوكر وه كمت بين ان كزديك توكى دوسرى علت كي ضرورت نبين بين جن ك بزديك مرخ رنگ كاستعال جائز وه يهال دوسرى علتول كى بناه پركراميت كاقول بيان كرت بين مثلا يه رئيس كي براهوتا تفا يا تنعم كى وجه يا تحبه بالاعام يا اسراف كى وجه يا چونكه بيزين پوش درندول كى كهالول سي بنائ جات مي وغيره وغيره وغيره وغيره مرآسان بات بيت كرآب ني اس قتم ك تكلفات كى عادت ومعمول بنا في سينائ جات مي عادت ومعمول بنا في سينائ جات مي عادت ومعمول بنا في سينائ جات مي استان بات بيت كرآب في اس قتم ك تكلفات كى عادت ومعمول بنا في

ہے منع کیاہے۔

باب ماجاء في كراهية ردّالطيب

(خوشبوقبول نه کرنا مکروه ہے)

"عن ثُمامة بن عبدالله قال كان انس لَايَرُدُّ الطِيبَ وقال انسُّ ان النبي صلى الله عليه وسلم كان لايردالطيب". (حسن صحيح)

حضرت مُمامہ بن عبداللّٰ فرماتے ہیں کہ حضرت انس خوشبومستر ذہیں کرتے تھے اور حضرت انس نے فرمایا کہ نبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم (بھی) خوشبولینے سے انکارنہیں تھے۔

صديث آخر: ـ "عن ابن عمرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ثلاث كَاتُرَدُ (١) الوَسَائِد (٢) والدهن (٣) واللبن". (غريب)

حضرت ابن عمر ﴿ فرمات بي كدرسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمایا: تين چيزيں ايسی ہيں جن كولينے سے انكارنہيں كرناچاہئے: (1) تكيه (۲) تيل (خوشيو) (٣) دودھ۔

صريت آخر: "اذاأعطِى احدُكم الريحانَ فلايَرُدُه فانه خرج من الجنة". (غريب

جبتم میں سے کی کوخوشبودی جائے تو وہ اسے لینے سے انکار نہ کرے کیونکہ وہ جنت سے نکلی ہے۔

تشری کے:۔باب کی آخری لین تیسری روایت ابوعثان نہدی سے مروی ہے،امام تر نہ کی فرماتے ہیں کہ

ان کا نام عبدالرحمٰن بن مُلِیّ ہے۔ یہ آپ کے زمانہ میں سے مگر آپ سے ملاقات نہیں ہو کی تھی ،ایسے خفس کو نُحفَرَم

کہا جاتا ہے لہذار وایت مرسل ہے علی فہذا امام تر فہ کی کا اس کو حسن کہنا محل نظر ہے ،یا تسام می برخمول ہے۔ان

احادیث میں خوشبو، تکیہ اور دو دھ قبول کرنے کی ترغیب بیان ہوئی ہے، پہلی حدیث میں خوشبو کے لئے طیب کا لفظ

احادیث میں خوشبو، تکیہ اور دو دھ قبول کرنے کی ترغیب بیان ہوئی ہے، پہلی حدیث میں خوشبو کے لئے طیب کا لفظ

استعال ہوا ہے دوسری میں وُھن کا اور تیسری میں ریجان کا جو دراصل پودا ہوتا ہے جیسے گلاب اور چنیلی وغیرہ

د کا پھول۔ جہاں تک دھن کا تعلق ہے تو اس کا اطلاق اگر چہام تیل پر ہوتا ہے تمریباں مراد عطر ہے یعنی ذکر عام والمراد منہ الخاص اس کوعموم پر حمل کر نامجی صبحے ہے۔

بہرحال ان اشیاء کو قبول کرنے کی وجہ بیہ ہے کہ ان کے ذریعہ دوسرے کا اکرام کیا جاتا ہے اورا کرام

کرنے والے بین ہرید دیے والے پرگوئی خاص بوجھ بھی نہیں ہوتا، کیونکہ خوشبوکا استعال عربوں میں زیادہ ہوتا تھا اور دودھ بھی عام ہوا کرتا تھا جبکہ تکیہ تو وقتی طور پر استعال کے لئے دیا جاتا ہے لہذا اسے رد کرنے سے، دیئے والے کے دل میں تکدّر پیدا ہونے کا اندیشہ ہوسکتا ہے ، کیونکہ عربوں پر سخاوت اور اکرام کا غلبہ ہے وہ ہدیہ رد کرنے گوئر اما ہے ہیں ، ہاں کوئی قیمتی ہدیہ ہوتو چونکہ اس کا بدلہ دینا مشکل محسوس ہوتا ہے اس لئے اس کے نہ لینے میں کوئی حرج نہیں ۔ واللہ اعلم

قوله: "فانه خَوَجَ من الجنة" چونگر تمام غدة الوفيس اشياء كي اصل توجنت ميں بونيا ميں ان اشياء كي تمويدو بين اس كے عمر كي كا ظهار اشياء كي تمويدو بين اس كے عمر كي كا ظهار مقصود بونا ہے۔ (تدبر)

باب ماجاء في كراهية مباشرة الرجلِ الرجلِ والمرأةِ المرأةَ

(ب جابانداختلاط کی گراہیت کا بیان)

"عن عبدالله قبال قبال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لاتباشر المرأة المرأة حتى تَصِفَهَا لزوجهاكانه ينظر اليها". (حسن صحيح)

حضرت عبدالله بن مسعود فرماتے ہیں که رسول الله معلی الله علیه وسلم نے فرمایا که ایک عورت دوسری عورت سے مرح است عورت سے بیجاب بدن ندلگائے یہاں تک کہ پھراس کا خال اپنے شو ہر سے اس طرح بیان کرے کو یا وہ اسے دیکھر ہاہے۔ دیکھ رہاہے۔

تشری : مباشرت بَشُرة سے مشتق ہے نگے بدن اورجہم کو نگے جسم سے ملانے کو کہتے ہیں۔ نسائی میں ہے کہ ایک کپڑے میں دونوں مباشرت نہ کریں لینی الیانہیں ہونا چاہئے کہ ایک نگی عورت دوسری نگی عورت کے ساتھ ایک چا دروغیرہ میں لیٹ جائے اور بالحضوص اس کا تذکرہ بھی اپنے شو ہر کے سامنے نہ کرے کیونکہ شو ہر کے دئن میں وہ خیالی منظر آ جائے گا جس سے فتنے کا اندیشہ ہے بلکہ اس خیالی منظر کا تصور بذات خودا کی فتنہ ہے چونکہ جسم کی حرارت سے شہوت وخواہش میں بیجانی کیفیت پیدا ہوتی ہے جیسا کہ حضرت لوط کی قوم کی عورتیں

ایک دوسرے سے چیٹی بازی کیا کرتی تھیں اس لئے بھی ایک عورت دوسری کے ساتھ بلا حائل نہ ملے تا کہ بدن کی حرارت محسوس نہ ہو پھر بیعلت مردوں میں بوجہ اتم پائی جاتی ہے اس لئے دومردوں کا ایک ساتھ برہنہ ہوکر لیٹنا یا لمنابطریق اولی حرام ہوا جیسا کہ اگلی حدیث میں بیان ہواہے۔

صديث آخر: - "لا ينظر الرجل الى عورة الرجل ولاتنظر المرأة الى عورة المرأة ولا يُفضِى الرجل الى المرأة في الثوب الواحدولاتفضى المرأة الى المرأة في الثوب الواحد". (حسن غريب)

ایک آدی دوسرے آدی کے سترکونددیکھے اورکوئی عورت دوسری عورت کے سترکونددیکھے اورایک آدی دوسرے آدی دوسرے آدی دوسرے ایک ہی دوسرے آدی ہی کیڑے ہی گئے (لینی نہ ملے) اورکوئی عورت دوسری عورت سے ایک ہی کیڑے میں نہ ملے۔

قوله: "لایمفضی" بضم الیاءالاؤلی ای لایصل ، یعنی نہتوکی کے لئے بیجائز ہے کہ وہ دوسرے کی شرمگاہ کود کیھے خواہ ایک بی جنس سے ہوں یا الگ الگ جنس سے ہوں اور نہ کی کے لئے بیر آواہے کہ وہ ایک بی کپڑے میں برہنہ حالت میں دوسرے سے جسم ملائے البتدا گرچہ بیکام کی طرح جائز نہیں تا ہم دومردوں اور دو کورتوں کا ایک دوسرے کود کھنا سنتہ کم درجہ کا حرام ہے کیونکہ جنس ایک ہے جبکہ مخالفہ جنس والے کود کھنا سخت حرام ہے اور عقلی قباحت بھی شدید ترہے اور چونکہ بات جسموں کی ہورہی ہے اس سنے مردکا مردسے مصافحہ اور عورت کا عورت کا عورت سے مصافحہ کرنا اس محم سے مشنی ہے کیونکہ اس میں کسی ممنوع کا ارتکاب نہیں ہوتا ، اس طرح آگر صدرت ہوجائے جیسے ڈاکٹر کا آپریشن کی غرض سے دیکھنا تو وہ بھی بقدر ضرورت جائز ہے ، نیز زوجین بھی اس محم ضرورت ہوجائے جیسے ڈاکٹر کا آپریشن کی غرض سے دیکھنا تو وہ بھی بقدر ضرورت جائز ہے ، نیز زوجین بھی اس محم سے مشنی ہیں ۔ متن ہدا یہ ہو وہ ہی اس میں کا مورت کی خورت کا میں متن ہدا یہ ہیں ۔ متن ہدا یہ ہوں کی اس کھوں کو میک کو میں مور کی کو کورت کی کورٹ کی کے دو کورٹ کی کورٹ کی

"ويجوزلِلطبيب ان ينظرالى موضع المرض منها (المرأة) للضرورة وينبغى ان يُعَلِّمَ إمرأة مُداواتَهَا...وكذايجوزللرجال النظرالى موضع الاحتقان من الرجال ... وينظر الرجل من الرجل الى جميع بدنه إلامابين سُرّته الى ركبتيه ... ومايساح النظراليه للرجال من الرجل يُباح المس ... وينجوز للمرأة ان تنظر من الرجل الى ماينظر الرجل اليه منه اذا امنت الشهوة ... وتنظر المرأة من المرأة الى مايجوز للرجل ان ينظر اليه من

الرجل ". (كتاب الكراهية :ص: ١٩٥٠،١٩٩٠ ج: ٩)

باب ماجاء في حفظ العورة

اس باب كى حديث مع ترجمه حديث اورترجمة الباب پندره باب پهلے گذرائے فليرا جع بساب مساجساء فى حفظ العورة قوله: فَلا تُويَنَّهَا اپناستركسى كومت وكھا۔

باب ماجاء ان الفخذعورة

(ران سترمیں داخل ہے)

"عن جَرهـدِ قال مرّالنبي صلى الله عليه وسلم بِجرهدفي المسجدوقدانكشف فخذه فقال:"ان الفخذعورة". (حسن)

حضرت جربد فرماتے ہیں کہ نی سلی اللہ علیہ و کم مجد (نبوی) میں جربد (راوی جواسحاب صفی میں ہے۔
ہیں) کے پاس سے گذر ہے جبکہ ان کی ران کھی ہوئی تھی پس آپ نے فر مایاران (بھی) ستر (بیس سے) ہے۔
تشریخ: ۔ اگلی حدیث کے الفاظ فر رامختلف ہیں اس میں ہے کہ آپ نے ان سے فر مایا: 'ن خصص سے فی بخت کی فائدہ من العور ق ''ان بی ران چھپاؤ کہ بیستر میں سے ہے، اس باب میں آخری روایت حضرت ابن عبل سے مروی ہے: ان المدندی صلبی الله علیہ و سلم قال: " الفحذ عور ق '' ۔ ران اور اس طرح کھنے کے بارے میں متعدور وایات ان کے سترکا حصہ ہونے پر ناطق ہیں تا ہم ان روایات میں ضعف بھی پایا جا تا ہے، جمہور حنفیہ کے نزد کیک تاف سے گھنوں تک کا پورا حصر ستر ہے البتہ ناف اس میں شامل نہیں تا ہم روایات کے درجات کو اور بنیا دی اصول کو دیکھتے ہوئے ان کی حد بندی اس طرح کی گئی ہے کہ شرمگاہ لیخن فیک و وکرت فلے میں اور اس میں کی کو اختلا ف نہیں جبکہ ران ہمارے حنفیہ اور شافعیہ کے نزد یک بھی ستر میں شامر ہوتی ہے گر اس کا درجو قبکل و وکر کے جبکہ امام ما لک کے نزد یک ہیں شامل نہیں البتہ اس کا ڈھا نکنا مستحب اس کا درجو قبکل و وکر کے ستر ہونے کا انکمہ شار ہوگئے ہیں ای کا خرد میں سیامل نہیں۔ ہمارے نزد یک بھی سراک طام بھی ران کو عور ت ہمیں مانے ، جبکہ گھنے کے ستر ہونے کا انکمہ شار ہوگئے ہیں ای طرح کی روایت ہے اور اہل طام بھی ران کو عور ت نور کہ کی تورو کی بیں ۔ ہمارے نزد یک بیم سترکا میں سے کوئی بھی قائل نہیں۔ ہمارے نزد یک بیم سترکا صد ہوئی بھی قائل نہیں۔ ہمارے نزد یک بیم سترکا صد ہمارے نزد یک بیم سترکا میں ہوئی کوئی ایک نہیں۔ ہمارے نزد یک بیم سترکا میں ہوئی کوئی ایک نور سے اس کے بارے میں بھی روایات آئی

میں لہذا احتیاط کی بناء پراس کو بھی ستر کا حصہ شار کیا جانا چاہے البتداس کا درجہ تیسر مے نہر پرہے چنا نچہ ہدایہ میں ہے:

"وينظر الرجل من الرجل الى جميع بدنه إلا إلى مابين سُرّته الى رُكبتيه وفيه ... وحكم العورة في الركبة اخف منه في الفخذ، وفي الفخذ أخفُ منه في السوء وكاشف الركبة ينكرعليه بِرِفق وكاشف الفخذيُ عُنفُ عليه وكاشف الفخذيُ عُنفُ عليه وكاشف السوء ة يُؤدّب إن لَجّ ".

(كتاب الكراهية: ص: ٣٩٠ ج: ٩)

یعنی گفتے کھولنے والے گوزی سے سمجھایا جائے گا کہ ڈھا تک لوجبکہ ران کھولنے والے کوئتی سے ڈانٹا جائے گالیتن سرزنش کی جائے گا گر مارانہیں جائے گا مگر شرمگاہ ظاہر کرنے والے کی تادیب ضرب وغیرہ سے ک جائے گی آگردہ ضد واصرار کرے کھلار کھنے ہر۔

ہارااستدلال باب کی احادیث اوران احادیث سے ہے جن کی طرف امام ترفریؓ نے وفسی المباب عن علیؓ النج کہدکراشارہ کیا ہے، امام قاضی شوکانیؓ نے نیل الا وطار میں اورامام نوویؓ وحافظ ابن حجرؓ نے اِن احادیث کے مجموعہ کوقابل حجت قرار دیا ہے، امام بخاریؓ نے دونوں قتم کی احادیث پرمخضر گرجامع تبصره کرتے ہوئے فرمایا ہے کہ سند کے لحاظ سے حضرت انس کی حدیث قوی ہے گراحتیاط کی رُوسے حضرت جرمرؓ کی حدیث قوی ہے گراحتیاط کی رُوسے حضرت جرمرؓ کی حدیث رباب) وزنی ہے ولفظ:

"وَيُروى عن ابن عباس وجرهدومحمدبن جحش عن النبى صلى الله عليه وسلم : الفحد عورة وقال انس حَسَرَ النبى صلى الله عليه وسلم عن فحده قال ابوعبد الله وحديث انس اسند وحديث جرهدا حوط حتى نخرج من اختلافهم". (ص:٥٣٥٥: "بابايذكن النخذ")

خلاصہ بہے کہ باب کی روایات محرم و تولی ہیں جبکہ حضرت انس کی حدیث کہ میں نے خیبری گلی، کو پے میں نہ بہا ب کی روایات محرم و تولی ہیں جبکہ حضرت انس کی حدیث ہے تاعدہ باب کی حدیث میں بیان مواہد اللہ علیہ و ان کا بیاض دیکھا تھا واقعہ حال اور فعلی حدیث ہے تاعدہ باب کی حدیث میں بیان مواہد اللہ دائی اس کے لاز جود آپ کی ران کھلی ہوئی تھی اس کے باوجود آپ نے ابو بکر وعمرضی اللہ عنہما کواندر آنے کی اجازت دے دی تھی، یہ بھی واقعہ حال ہے۔

باب ماجاء في النظافة

(صفائی ستحرائی کابیان)

"عن صالح بن ابى حسّان قال سمعتُ سعيدبن المسيّب يقول: ان الله طيّب يُحِبُّ الطّيبَ، نظيف يُحِبُّ النظافة ، كريم يُحِبُّ الكرم ، جَوّا دُيُحب الجُودَ، فَنَظِّفُوا اأراه قال الطّيبَ، نظيف يُحِبُ النظافة ، كريم يُحِبُّ الكرم ، وَلاَتشبَّهُوا باليهو دقال فذكرتُ ذالك الخ". (غريب وخالدبن الياس يُضَعَّفُ)

صالح بن الی حتان کہتے ہیں کہ میں نے سعید بن المسیّب کویہ کہتے ہوئے مُنا ہے کہ اللہ تعالیٰ پاک ہے، پاکیز گی کو پیند کرتا ہے، نظیف (سقرا) ہے نظافت (سقرائی) کو دوست رکھتا ہے، کریم (فیاض) ہے کرم (فیاض) کو مجوب رکھتا ہے جواد ہے، سخاوت کو پیند کرتا ہے، پس تم صاف تقرار کھو! (راوی صالح کہتے ہیں) میرا گمان ہے کہ فرمایا (سعید بن المسیب نے) اینے آنکنوں (صحول) کواور یہود کی مشابہت نہ کرو!

للذاتم اینے گھروں اور ہر چیز کوصاف رکھوتا کہ مہمانوں کی آمد جاری رہے۔

با ب ماجاء في الاستتارعند الجماع

(ہم بستری کے وقت پردے کا اہتمام)

"عن ابن عمران رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: إيّاكم والتّعَرِّي فان معكم من لايفارقكم إلاعندالغائط وحين يُفضى الرجل الى اهله فاستحيوهم واكرموهم". (غريب)

حضرت ابن عمر سے روایت ہے فر ماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فر مایا: بچوتم برہنگی سے اس لئے کہ تمہار سے ساتھ وہ لوگ (فرشتے) ہیں جوتم سے جُد انہیں ہوتے مگر بڑے استنجے کے وقت اور جب آ دمی اپنی بوی سے صحبت کرتا ہے پس تم ان سے حیاء کر واور ان کی تعظیم کرو!

تشرق : اس مدیث میں ضرورت کے علاوہ کمی بھی موقع پرستر کھولنے کی ممانعت بیان کی گئی ہے کیونکہ اگر کہیں پرآ دمی نہ ہوں تو فرشتے تو ہوتے ہیں جن کو برہنہ آدمی سے تکلیف بھی ہوتی ہے اور این کا مان کی تعظیم اور شان کے بھی منافی ہے اس لئے ان کا خیال رکھنا اور اگرام کرنا ضروری ہے اور ان سے شرمانا بھی چاہئے ۔ ابن العربی عارضہ میں لکھتے ہیں کہ فرشتوں کے علاوہ اہل ایمان جنات بھی خوراک کی تلاش میں گھروں میں آتے رہتے ہیں: 'فیان المسلائ کہ تسکتب و تحفظ و الموقمنون من المجن يطلبون الزادالنے '' میں آتے رہتے ہیں: 'فیان المسلائ کہ تسکتب و تحفظ و الموقمنون من المجن يطلبون الزادالئے '' غرض حفظ اور کرام کا تبین ہردوشم کے فرشتے مراد ہیں وہ مزید لکھتے ہیں کہ ابن عمر پیل کی گھر میں موجودگی کے وقت بھی ہوی سے جماع نہ کرتے ۔ جہاں تک ضرورت کے مواقع کا تعلق ہے تو ان صورتوں میں اگر چہ برہنہ ہونے براکتفاء کرنا چاہئے چنا نچہ ایک روایت میں اونوں کی طرح ملنے سے ممانعت آئی ہے۔

باب ماجاء في دخول الحمام

(حمام میں جانے (اور نہانے) کابیان)

"عن جابرٌ ان النبى صلى الله عليه وسلم قال: من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فلايد خُل الحمام بغير ازارومن فلايد خِل حليلته الحمام بغير ازارومن

کان یؤمن باللہ والیوم الآخر فلایجلس علی مائدہ یُدار علیہم الحمر" (حسن غریب)
حضرت جابڑے دوایت ہے کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا جو محض اللہ پراورروز آخرت پرایمان رکھتا ہوتو وہ اپنی بیوی کوجمام میں نہ لے جائے اور جو محض اللہ تعالی اور قیا پرایمان رکھتا ہوتو وہ جمام میں بغیر میں نہ اور جو محض اللہ اور آخرت کے دن پرایہ بیٹھے ہووہ ایسے دستر خوان پرنہ بیٹھے جس (کے شرکاء) میں شراب کا دور چل رہا ہو۔

حديث آخر: "عن عائشة ان النبى صلى الله عليه وسلم نهى الرجال والنساء عن الحمامات ثم رَخَصَ للرجال في الميازر". (هذاحديث ... واسناده ليس بذالك القائم) ني صلى الدعليه و كم من الميازر "رون اور ورتون كوم امون مين جانے من كياتها، پرمردون كوية تهند بانده كرجانے كياتها، پرمردون كوية تهند بانده كرجانے كي اجازت دى۔

صديث آخر: "عن ابى المليح الهذلى ان نِساءً من اهل حمص اومن اهل الشام دخلن على عائشة فقالت: انتُنّ اللاتى يدخلن نساء كن الحمامات؟ سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: مامن إمرأة تضع ثيابهافى غيربيت زوجها إلاهتكتِ الستر بينهاوبين ربها". (حسن)

ابوانملی کفذ نی فرماتے ہیں کہ جمع یا شام کی کچھ کورٹیں حضرت عائشائے پاس آئیں تو حضرت عائشا نے پوچھاتم وہی ہو کہ تمہاری عورتیں جماموں میں (نہانے) جاتی ہیں؟ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو یہ ارشاد فرماتے ہوئے سُناہے کہ جوبھی عورت اپنے شوہرے گھرے علاوہ کہیں اپنے کپڑے اتاردے تو وہ کھاڑ دیتی ہے وہ پردہ جواس کے اوراس کے رب کے درمیان ہے۔

تشری : باب کی تمام احادیث سے جمام کی فدمت ثابت ہوتی ہے کیونکہ وہاں لوگ پردے کے اہتمام کے بغیراجماع عسل کرتے تھے ایسے میں تو مردوں کے لئے بھی وہاں جانا جائز نہیں چہ جائے کہ وہاں عورتیں جا کیر خصوصاً جب عورت بذات خود بھی پردے کا التزام نہ کرے، یہ ممانعت ان جماموں کے بارے میں ہوتے میں ہوتے جہاں تالاب اور حوض بے ہوتے ہیں جیسے آج کل بڑے ہوٹلوں اور بحض تفریکی پارکوں میں ہوتے ہیں، جہاں تک عام رائج جماموں کا تعلق ہے جن میں الگ الگ عسل خانے بے ہوتے ہیں اور پردے کا بھی بھر بچر خیال رکھا جاتا ہے وہ اس وعیدو نہی میں شامل نہیں ہیں ایسے حماموں میں اگر کوئی دیگر قباحت نہ ہوتو فہ کورہ

احادیث میں نبی کی علت ان کوشامل نہیں پھران میں نہانا مباح ہوگا گوکہ عورتوں کا تھم پھر بھی وہی رہے گا کہ وہ اپنے گھروں میں نہی خسل کا التزام کریں تا ہم اگر کوئی ایسی ناگز برضر ورت پیش آئے مثلاً سفر کی حالت میں شدید سردی کی وجہ سے کوئی متبادل انتظام نہ ہوا و عنسل ضرورت کی نوبت آئے تو پردے کے ساتھ جمام میں جانے کی اجازت ہے جبکہ محرم ساتھ ہوا ورکسی فتنہ کا اندیشہ نہ ہو۔

قوله: "إلاهتكت الستربينهاوبين ربها" يهال پردے برادحياء بيعنى جوعورت اپنے شوہرك گھرك علاوہ كى دوسرى جگہ كيڑے اتارے گي تو وہ حيا كاجنازہ نكالے گي كيونكه اس كے لئے شوہرك سواكسى كے سامنے كيڑے اتار نے كى اجازت نہيں۔ يهكام فقط وہى عورت كرسكتى ہے جس نے اپنى خدادادشرم وحيا بالا كے طاق ركھ كرحيا سے عارى ہونے كافيصلہ كيا ہواكى بحيا عورت كے لئے كہيں بھى كيڑے اتاركر عارى ہونا آسان ہوجا تا ہے۔ باحيا خاتون ايمانہيں كرسكتى ہے۔

باب ماجاء ان الملائكة لاتدخل بيتاً فيه صورة ولاكلب

(فرشتے ایسے گھریں داخل نہیں ہوتے جس میں تصویریا کتاہو)

"عن ابن عباس يقول سمعت اباطلحة يقول سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: لا تدخل الملائكة بيتاً فيه كلب ولاصورة تماثيلً". (حسن صحيح)

حضرت ابن عباس فرماتے ہیں کہ میں نے ابوطلحہ کو یہ کہتے ہوئے سُناہے کہ میں نے رسول الله صلی الله علیہ وسلم کو یہ اس گھر میں جس میں محتا ہویا کی الله علیہ وسلم کو یہ اس گھر میں جس میں محتا ہویا کی جاندار کی تصویر ہو۔

صديث آخر: عن اسحاق بن عبدالله بن ابي طلحة ان رافع بن اسحاق اخبره قال دخلت اناوعبدالله بن ابي طلحة على ابي سعيدالخدرى نعوده فقال ابوسعيد: أخبر نارسول الله صلى الله عليه وسلم ان الملائكة لاتدخل بيتاً فيه تماثيل اوصورة شك اسحاق لايدرى ايهماقال" (حسن صحيح)

اسحاق بن عبداللد سے روایت ہے رافع بن اسحاق نے ان کوفیر دی ہے کہ حضرت رافع بن اسحاق نے فرمایا کہ میں اورعبداللد بن افی طلحہ ابوسعید خدریؓ کی عیادت کے لئے گئے تو ابوسعید نے رمایا: احبر ناد سول الله

صلى الله عليه وسلم ... باقى مديث ابن عباب كاسابقه مديث كى طرح بـ

صديث المارحة فلم يمنعنى ان اكون دخلتُ عليك البيت الذى كنت فيه إلاانه كان كنت اتيتك البارحة فلم يمنعنى ان اكون دخلتُ عليك البيت الذى كنت فيه إلاانه كان فى باب البيت تعملل الرجال وكان فى البيت قرام سترفيه تماثيل وكان فى البيت كلب، فَمُربراس التعمال الذى بالباب فليُقلع فيصير كهيئة الشجرة ومُربالسِّتر فليُقطع ويُحير جفعل رسول الله صلى الله عليه ويُحجعل منه وسادتين مُنتبذتين توطأن ومُربالكلب فيخرج ففعل رسول الله صلى الله عليه وسلم وكان ذالك الكلب جرواً لِلحسين اولِلحسن تحت، نَصَدِ له فامر به فاخرج". (حسن صحيح)

رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرا ایا: میر نے پاس جر کیل (علیہ السلام) آئے تو انہوں نے کہا کہ میں آپ کے پاس گذشتہ رَات آیا تھا تو جھے آپ کے پاس اس گھر میں جس میں آپ تھے داخل ہونے سے نہیں روکا گر یہی کہ گھر کے درواز نے پرمردوں کی تصویر تھی ،اور گھر میں ایک باریک (یار تکین) پردہ تھا جس میں جا ندار کی تصویرین تھیں اور (یہ کہ) گھر میں ایک عمتا (بھی) تھا (اس لئے میں اندر نہ آیا) پس آپ تھم فرما دیجئے کہ سراس تصویر کا جو درواز نے پر ہے کا نے دیا جائے تا کہ وہ درخت کی شکل کی ما نندہ وجائے اور پردے کے بارے میں تھم کی جوز مین پر پڑے رہیں جن کو پامال کیا جاتا رہے کیجئے کہ اسے بھاڑ دویا جائے اور اس سے دو تھیے بنائے جائیں جوز مین پر پڑے رہیں جن کو پامال کیا جاتا رہے (لیمن روندے جائیں) اور گئے کے متعلق تھم دیجئے کہ اسے نکال با ہر کیا جائے چنا نچہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے ایسا کیا ،وہ کتا حضرت حسین یا حضرت حسن میں کا پاتا تھا (لیمن کھیلنے کے لئے) جوچھوٹی میز (یا چار پائی) کے نے ایسا کیا ،وہ کتا جی تارے بیا کیا ،وہ کیا ریا گیا۔

نے ایسا کیا ،وہ کتا حضرت حسین یا حضرت حسن میں کا پاتا تھا (لیمن کھیلنے کے لئے) جوچھوٹی میز (یا چار پائی) کے نے تھا، چنا نچہ آئے نے اس کے بارے میں تھم دیا تو اسے نکال دیا گیا۔

نے ایسا کیا ،وہ کتا حضرت حسین کے بارے میں تھم دیا تو اسے نکال دیا گیا۔

اور ڈالنے کے ہے یعنی وہ تکیے زمین پر، پڑے رہیں تا کہ اُن تصاویر کی تو ہین ہوتی رہے، اور شکل بھی مِٹ جائے۔
قولہ: "جوواً" کبسرالجیم پلے یعنی کتے کے چھوٹے بچے کو کہتے ہیں۔قولہ: "نَصَد "بروزن قمراصل میں بتہ بہ
یتہ چیزوں کے رکھنے کو کہتے ہیں میز کی طرح تیائی اور چار پائی پڑھی اطلاق ہوتا ہے کہ ان پڑھی کپڑے یا بستر وغیرہ
سامان بتہ بہ یتہ رکھا جاتا ہے، پہلے زمانہ میں ایک معمول تھا کہ زمین پر ہیٹھنے کے لئے چھوٹی چار پائی نمانشست
بنائی جاتی تھی جو بھی کری کی طرح بھی ہوتی تھی اس کے پائے بہت چھوٹے ہوتے تھے ممکن ہے کہ یہاں وہی
مراد ہو۔ والنّد اعلم

باب کی احادیث سے تصویر بنانے اوراستعال کرنے کی حرمت اور گئے پالنے کی ممانعت معلوم ہوئی البتہ ضرورت کے مواضع مشتیٰ ہیں سے کے متعلق تفصیل کے لئے دیکھئے تشریحات جلد پنجم ص: ۲۰۹، باب ماجاء فی تسویۃ القبم اورجلد پنجم ''باب فی ثمن الکلب''اورتصویر کے لئے جلد چہارم ص: ۳۵۹ تاص ۳۵۹' باب ماجاء فی تسویۃ القبم اورجلد پنجم'' باب ماجاء فی الصورۃ''ص: ۵۵۲ ملاحظہ ہو۔

علاوہ ازیں آج کل ڈیجیٹل تصویر کے متعلق بھی راقم نے جدید سائنسی اصول کے مطابق متعلق کتاب کھی ہے ''شعاعی تصویر کی حقیقت اور شرعی حیثیت' اس پر ماہرین کی آراء بھی آئی ہیں۔اس میں اس موضوع پر تفصیل سے بحث کی گئی ہے اور ثابت کیا ہے کہ جدید شعاعی تصویراور کاغذ کے فوٹو اور مجسمہ سب حرمت میں برابر ہیں ،ان سے بچنا چاہئے صرف شدید ضرورت کے وقت استعال کی جائے جبکہ بنانا تو کسی صورت میں جائز نہیں ہے۔

باب ماجاء في كراهية لبس المُعصفَر للرجال

(مردول کے لئے عُصفر (سرخ یازردرنگ) سے رنگاہوا کپڑا مکروہ ہے)

"عن عبدالله بن عمروقال مَرَّ رجل وعليه ثوبان احمران فَسَلَّمَ على النبي صلى الله عليه وسلم فلم يَرُّدُ عليه النبي صلى الله عليه وسلم السلامَ". (حسن غريب)

حضرت عبدالله بن عمرو بن العاص فرماتے ہیں کہ ایک فخص گذر ااوراس پر دوئر خ کپڑے تھے (لیمن پہنے ہوئے تھے) اس نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کوسلام کیا تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کے سلام کا جواب نہیں دیا۔ تشریح: قصوله: "المُعصفَو" مُصفَر (بضم الاول والثالث) "دکشم" ایک بوٹی ہے جس سے رنگائی کی جاتی ہے تا ہم اس کارنگ کیسا ہوتا ہے؟ تو کس نے زردقر اردیا ہے اور کس نے سرخ ، دوسرے مطلب اور باب کی حدیث کے لفظ^{ون} احمران' کے مطابق سُرخ رنگ کے کپڑوں کا استعمال مردوں کے لئے مکروہ ہے اور یہی حنیہ کا فدہب ہے۔ اس مسئلہ کے لئے امام ترفہ کی نے ابواب اللباس میں ایسا ہی باب ذکر کیا ہے جس کی تفصیل وہاں گذری ہے۔ (دیکھے تشریحات میں 2003)

البت إس باب من يهال ام ترفى في ايك تاويل كى بك "انه كره لب المعصورواوا
ان ماصبغ بالحمرة بالمدور اوغير ذالك فلاباس به" راس كامطلب بيب كدوه مر خرى مكروه ب
جوكى يود ب اور يوفى كاموجي عصفر كمة بيل كين اكرمَدَريعي منى كاسرخ رنگ موتواس ميل كوئى حرج وكراميت نهيل - يهال مَدَر سن مراد كيروب جوايك لال تم كم من موتى ب

المستر شد:عرض كرنام كه كراميت كى علت جب تيزسرفى بتو پھراس تم كافرق سجه سے بالاتر بالزام گراسرخ رنگ مكرده بالبته باكاسرخ جائز ب-

حديث آخر: - "قال على بن ابى طالب نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن خاتم الله عن القسي وعن الميثرة وعن الجَعَة قال ابوالاحوص وهوشراب يتخذ بمصرمن الشعير". (حسن صحيح)

رسول الله صلى الله عليه وسلم نے سونے كى انگوشى (پينے) سے منع فر مايا ہے اور قسى (ريشى ملاوث والے) كيڑے سے اور مرخ زين پوش سے اور جوكى شراب سے اللہ الاحوص كہتے ہيں كہ بحد شراب تقى جومصر ميں جو سے بنائى جاتى تقى ۔

سونے کی انگوشی مردوں کے لئے جائز نہیں امام ترفدیؓ نے ابواب اللہاس میں اس پرباب قائم
کیا ہے۔قولہ: "وعن القسی" وہ کپڑا جس میں ریٹم کی آمیزش ہو، بعض حضرات کہتے ہیں کہ اس میں سین ذاء
کا متبادل ہے اصل میں بیقری تفاقز خام ریٹم کو کہتے ہیں بی مسئلہ بھی ابواب اللباس میں گذرا ہے۔قولہ: "وعن
السمیٹو ق" کیسرائم می بیم چھی چندا بواب پہلے باب ماجاء فی طیب الرجال والنساء میں گذرا ہے، نیز ابواب اللباس
میں اس کے لئے مستقل باب آیا ہے۔ (ویکھئے تشریحات: ص: ۵۷ جائے ، جو وغیرہ کی شرابوں کی تفصیل
ابواب الاشربیش گذری ہے۔ فلانعیدہ۔

صديث آخر: - "عن البراء بن عازب قال أمَرَ نارسِول الله صلى الله عليه وسلم بسبع

ونهاناعن سبع، امرناب اتباع البجنائزوعيادة المريض وتشميت العاطس واجابة الداعى ونصرال مظلوم وابرار المقسم وردّالسلام ونهاناعن سبع عنّ خاتم الذهب اوحلقة الذهب وانية الفضة ولبس الحريرو الديباج والإستبرق والقسيّ". (حسن صحيح)

بخاری کی روایت میں''میا ترکم''کا بھی ذکرہے لینی سُرخ زین پوش سے ممانعت فرمائی ہے اس سے ترجمہ سے مناسبت بھی معلوم ہوئی ،ان تمام جزئیات پر بحث گذری ہے جومختلف ابواب میں ندکورہے۔

باب ماجاء في لُبس البياض

(سفید کیڑے پہننے (کی افضلیت) کابیان)

"عن سمرة بن جندب قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : البَسُو االبياض فانها اطهرواطيب وكَفِّنُو افيهاموتاكم". (حسن صحيح)

حضرت سمرہ بن جندب فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشادفر مایا ہے کہ: سفید کپڑے پہنا کریں اس لئے کہ بیزیادہ پا کیزہ اور زیادہ عمدہ (وخوب صورت) ہیں اوراس (سفید) میں اپنے مردیں کفناؤ۔
تشریح: ۔ اس باب میں سفید کپڑوں کے استعمال حیّا ومیّا کی ترغیب اور افضلیت کابیان ہے آگر چہ مردوں کے لئے تیز مُر خ اور زرد کے علاوہ باقی سب رنگ کے کپڑے پہننا جائز ہے بشر طیکہ کوئی دوسرا مانع نہ ہو، سرخ میں حنفیہ کے تھا قوال ہیں حرمت کا بھی ہے اور استحباب کا بھی مکروہ تحریجی اور تنزیبی کے اقوال بھی ہیں

جبکہ باتی ائمہ کے نزدیک وہ سرخ کروہ ہے جومعصفر ہوباتی جائزہے، یہ سئلہ سابقہ باب میں اوراس سے پہلے بھی بیان ہواہے۔ امام ترفدی نے اس باب کے بعد بھی متعدد ابواب قائم کئے ہیں۔ بہر حال ان تمام دگوں میں سب سے افضل سفید ہے خصوصاً علاء وطلبہ کے لئے کیونکہ ایک تو یعلم کے ساتھ مناسب ہے کہ نورانی لگتا ہے دوم اس میں صفائی و تقرائی نمایاں نظر آتی ہے، سوم ظاہر کا اثر باطن پر ہوتا ہے اس لئے سفید استعال کئے جائیں تاکہ باطن بھی صاف ہو۔ نیز قیت کے لئاظر سے بھی سفید کپڑے مناسب اور درمیا نہ ہوتے ہیں: ''و حیسو الامسود اوسطھا ''نیز یہ جلدی دھونے پڑتے ہیں جس سے وہ پاک دہتے ہیں اور نماز کی ادائیگی کے لئے موزوں ترین بن جاتے ہیں۔ تاہم آپ سے دوسرے رنگ کے کپڑے بہنا بھی جابت ہیں البذا کہا جائے گا کہ اصل سفید ہے اور باقی کا استعال بیان جواز کے لئے ہے، پھر سے کم عمامہ وغیرہ سب کے لئے کیساں ہے امام نووی فرماتے ہیں اور باقی کا استعال بیان جواز کے لئے ہے، پھر سے کم عمامہ وغیرہ سب کے لئے کیساں ہے امام نووی فرماتے ہیں کہ نی صلی الشرعلیہ وسلم کا فتح مکہ کے دن کا لاعمامہ بہنا ہیان جواز کے لئے تھاوہ لکھتے ہیں:

"فيه جوازلباس الثياب السُودوفي الرواية الأخرى "خطب الناس وعليه عسمامة سوداء"فيه جوازلباس الاسودفي الخطبة وان كان الابيض افضل منه كماثبت في الحديث الصحيح "خير ثيابكم البياض" وامالِباس الخطباء السوادفي حالة الخطبة فجائز ولكن الافضل البياض كماذكرنا، وانمالَبِسَ العمامة السوداء في هذا الحديث (اي ان النبي صلى الله عليه وسلم دخل يوم فتح مكة وعليه عمامة سودآء") بياناً لِلجواز". والله اعلم

(شرح مسلم للنوويّ: ٩٣٩ ج: ١٠ باب جواز دخول مكة بغيراحرام ")

باب ماجاء في الرخصة في لُبس الحُمرة للرجال

{ (مِلكے) مُرخ رنگ كے كپڑوں كا استعال مردوں كے لئے جائز ہے }

"عن جابربن سمرة قال رأيت النبى صلى الله عليه وسلم فى ليلة إضحِيان فَجَعلتُ انظرالى رسول الله صلى الله عليه وسلم والى القمر وعليه حُلّة حمراء فاذا هوعندى احسن من القمر". (حسن غريب)

حضرت جابر بن سمرة فرماتے ہیں کہ میں نے آٹھویں شب میں نبی صلی اللہ علیہ وسلم کودیکھالیں میں اللہ علیہ وسلم کودیکھالیں میں (نے موازنہ کیا) بھی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کودیکھا اور بھی چاند پرنظر ڈالٹا، آپ سُر خ جوڑا پہنے ہوئے تھے تواس وقت میرے نزدیک آپ جاندے زیادہ حسین تھے۔

تشری : قوله: "فی لیلة إضبحیان" عارضة الاحوذی میں ہے کہ کر کیب اضافی ہے اور اِضحیان مہینہ کی آتفویں رات کو کہتے ہیں انتی یا مطلق چا ندی رات مرادہ چونکہ چا ند، بذات خودکوئی نورانی جسم نہیں ہے بلکہ ہماری زمین کی طرح مختلف النوع کرہ ہے جب سورج کی شعاعیں اس پر پڑجاتی ہیں تو وہ حصدانعکاس اَئِعَہ کی بناء پر چیکدارنظر آتا ہے، جبکہ آنخضور چا ندکی روشی کے علاوہ دوسرے انوارو تجلیات اور ظاہری وباطنی محتنات وخوبیوں اور خداداد محبوبیت کا مرکز تھے ،اس لئے چاند کہاں آپ کاحسن میں مقابلہ کرسکتا ہے، باتی کمالات کی تو بات ہی اور ہے۔

ر ہائر خ کیڑوں کا مردوں کے لئے استعال کا مسئلہ تو سابقہ باب میں عرض کیا جاچکا ہے کہ اس بارے میں حنفیہ کے آٹھ تول ہیں جن اقوال کے مطابق ممنوع ہے ان کی طرف سے صدیث باب کا جواب میہ ہے کہ میہ جوڑا خالص شرخ نہیں تھا بلکہ بلکا سرخ تھایا اس میں سرخ دھاریاں تھیں سارا سرخ نہ تھا۔ (تفصیل تشریحات جلد:۵ص:۵۳۵ پرگذری ہے'' باب ماجاء فی الرفصة فی الثوب الاحم'' من ابواب اللباس)

قوله: "وفی الحدیث کلام اکثر من هذاالخ" شاید بیسند پرکلام کے بارے میں فرمایا ہوکہ خضراً بحث تو فرمادی اوراس کے لئے امام بخاری کا قول بھی نقل کیا کہ بیصدیث جو بواسطہ اشعث عن الی اسحاق عن جابر بن سمرة مروی ہے اوروہ حدیث جو بواسطہ فُعہ عن الی اسحاق عن البرام مروی ہے دونوں صحح ہیں اور باقی تفصیل حذف فرمادی ورندا گرمتن حدیث کی بات کی جائے تو شائل تر فدی میں بھی بیصدیث انہی الفاظ کے ساتھ مروی ہے اس سے زیادہ نہیں ہے۔واللہ اعلم وعلمہ اتم واتحم

باب ماجاء في الثوب الاخضر

(سنر کیڑوں کااستعال)

"عن ابى رِمثة قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم وعليه بردان اخضران". (حسن غريب)

حفرت ابورم مرضی الله عنه فرماتے ہیں کہ میں نے رسول الله صلی الله علیه وسلم کود یکھا جبکہ آپ دوسبر جا درزیب تن کئے ہوئے تھے۔

تشری : دوباب قبل "باب ماجاء فی لیس البیاض" میں عرض کیاجا چکاہے کہ سب سے بہترلہاں سفیدہے جبکہ باقی رنگوں کا استعال آپ نے بیان جواز کے لئے فر مایا، البذااگر باب کی حدیث میں "اخطران" کوخالص سبز مان بھی لیاجائے تو اس سے سُنیت پھر بھی ثابت نہیں ہوتی زیادہ سے زیادہ استجاب ثابت ہوسکتا ہے کیونکہ قرآن مجید میں بھی اہل جنت کے سبزلباس کا بار ہاذکر آیا ہے لیکن آپ نے اس کو معمول کے طور پر بھی بھی استعال نہیں فر مایا ہے۔

یہ تونفس مسئلہ کی نوعیت تھی ہلین آج کل یہ مسئلہ دوپیش ہے کہ سبزرنگ کوبعض لوگوں نے اپناشعار بنایا ہے دہ اس رنگ کوبعض لوگوں نے اپناشعار بنایا ہے دہ اس رنگ کوبطور مار کہ اور مونوگرام کے استعال کرتے ہیں اس لئے آج کل اس کے استعال سے گریز کرنا چاہئے کیونکہ اگر سنت بھی اہل بدع کا شعار بن جائے تو اسے ترک کونا اولی ہے جبکہ سبزرنگ تو سنت بھی نہیں ہے ماعلی قاریؓ نے مرقا ۃ المفات شمرح مفکلو ہے کہ کاب ابنا تزمیں بیضا بطہ بیان کمیا ہے:

"وفيه اشارة الى ان كل سنة تكون شِعاراهل البدعة تركها اولى".

(مرقات: ص: ١٣٦ ج: ٣٠ ' باب المشي باليمازة والصلوة عليهما " نصل ثالث كي دوسري حديث ، مكتبه رشيديه)

باب ماجاء في الثوب الاسود

(كاللياسكابيان)

"عن عائشة قالت خرج النبى صلى الله عليه وسلم ذات غذاة وعليه مِرطٌ من شعراسود". (حسن صحيح غريب)

حضرت عائشہ طفر ماتی ہیں کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم ایک میں کو (گھرے) نظیے جبکہ آپ پر بالوں کی کالی چا درتھی۔

تشرق: قوله: "موط" بسرائميم بروزن سدرجا دركوكت بين خواه أونى بويا كائن اوربالول سى بى موئى سے پھرمسلم كى روايت بيس ہے كماس جا در پر كجاوے كى تصويريں بنى موئى تقيس -

اس حدیث کوبھی سابقہ باب کے ضابطہ کے تناظر میں دیکھناچاہے کہ کالاءاونی اور بالوں کابنا ہوا

لباس جائزہے لیکن مسنون نہیں ہے ،گوکہ ہندوستان میں کی وقت یہ مسلمانوں کا شعار شار ہوتا تھا جیسا کہ عالمگیری میں اس مُر دے کے بارے میں لکھاہے جو کسی نامعلوم جگہ پایا جائے تو یہ کیسے معلوم کیا جائے کہ ہندو ہے یا مسلمان؟ تواس کی تین علامات بیان کی ہیں: (۱) ختنہ (۲) خضاب (۳) اور کالالباس، ان میں کوئی ایک مطرقوا سے مسلمان قرار دیا جائے گا، گراب چونکہ کالے کوروائض نے اور خصوصاً محرم کے مہینہ میں اپنا شعار بنایا ہے اس کے کالے لباس سے اور خصوصاً محرم کے مہینہ میں اس سے بچنا جائے۔

باب ماجاء في الثوب الأصفر

(زردرنگ کے لباس کابیان)

"عن قيلة بنت مخرمة وكانتارَبيبتيها، وقيلة جدة ابيهماأم أمِّه انهاقالت قَدِمناعلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فذكرت الحديث بطوله ... حتى جاء رجل وقدار تفعت الشمس فقال السلام عليك يارسول الله فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم : وعليك السلام ورحمة الله اوعليه تعنى النبى صلى الله عليه وسلم اسمال مُليّتين كانتابزعفران وقد نفضتا ومعه عُسيبُ نخلة".

حفرت صفیداور حضرت وُحید دونوں اپنے والدی نانی حضرت قیلہ رضی اللہ عنہا سے روایت کرتی ہیں کہ انہوں نے فرمایا ہم لوگ رسول الله علیہ وسلم کے پاس (جمرت کرکے) آئے پھرانہوں نے پوری طویل حدیث بیان کی بہال تک کہ ایک خفس آیا جبکہ سورج بلند ہو چکا تھا تو اس نے کہاالسلام علیک یا رسول الله اسورسول الله الله علیہ وسلم نے جو ابافرمایا و علیک السلام و رحمة اللهاور آپ پر،ان کی مراد نبی صلی اللہ علیہ وسلم سے ہیں پردو پُر انے کیڑے بغیرسلائی والے تھے جوزعفران سے رفکے ہوئے تھے جن کارنگ جھڑ (اُڑ) گیا تھا (لیعن بلکا بلکا باتی تھا) اور آپ کے یاس کھور کی ٹہنی تھی۔

تشرت : قوله: "و كانتار بيئتيها" يعنى صفيه اور دُصيه دونون حضرت قيلة كى پرورده بين، ان دونون بهنون مين سے دحيه دراوى حسان كي حقق دادى بين قوله: "فذكرت المحديث بطوله" يعنى يهال اس طويل حديث كاصرف ايك جزونقل كيا كيا مي جوزجمة الباب سے متعلق ہے باقی حدیث نقل نہيں كی ہے، اس طویل حدیث كا ایک حصدام ابوادا و د تے كتاب الخراج كے باب في إقطاع الارضين جلد دوم ص سر سر برنقل كيا ہے۔

قول انتهان الواحد کے استمال "سَمُل بروزن قری بی ہے کہ انے کیڑے کو کہتے ہیں بی کاصیفہ افوق الواحد کے اعتبارے ہے۔قولہ: "مُلیّتین "مُلُاءَ ق کی تفیر ہے چا در کے معنی میں ہے بیٹی وہ کیڑا جواز ار کے طور پر استعال ہوتا ہے یا جو بغیر سلائی کے ہوجیے احرام کی موجودہ تولیے ہوتے ہیں۔الکوکب الدری میں ہے کہ جب شنید کی اضافت تثنید کی طرف ہوجائے تو مضاف کوجع ذکر کرنا بھی جائز ہے، علی ہذا پھر مراود و کیڑے ہوں گے جیسا کہ او پر جمہ میں ذکر ہے مگر تذی کے حاشہ پر اضافت بیانی کوظا ہر کیا ہے پھر مطلب سے ہوگا کہ صرف از اروائی او پر جمہ میں ذکر ہے مگر تذی کے حاشہ پر اضافت بیانی کوظا ہر کیا ہے پھر مطلب سے ہوگا کہ صرف از اروائی چا درمراد ہے (جومکن ہے کندھوں سے پیروں تک ہو) اورا سال اگر چہ جمع کا صیفہ ہے مگر سے باعتبار اجزاء کے چانہ کہ باعتبار اتعداد کے قولہ د: "فصنا" بینی رنگ کی شدت اور تیزی اڈ گئی اور صرف تھوڑ ابہت اثر باتی تھا کے وکھ کی گزائر انا تھا اس کے بار بار دھونے سے اس کا رنگ پھیکا پڑ گیا تھا۔قول د: "فصیب" بصیف تھنے ریحی تھی اس کا مکم عسیب بھتے امین و گسر آسین آتا ہے۔

اس سے معلوم ہوا کہ جب زعفرانی رنگ کا کیڑادھو، وھوکر اس کے رنگ کا اثر کم کردیا جائے تواس
کا استعال جائزہے، لہذا آئندہ باب میں''ئزعفر'' کی جو ممانعت آئی ہے وہ تیزرنگ کی صورت میں ہے۔ یک
ضابطہ باقی تیزئر نے اور زرد کے لئے بھی ہے، غرض مردوں کو ہرتیزرنگ سے بچنا اولی ہے۔ پھر ظبی نے سفید
لباس کی افضلیت کی بیعلت بیان کی ہے کہ اس میں تواضع زیادہ ہے لہذا اس سے بیعلت بھی نکالی جاستی ہے کہ
تیزرنگ ہے آدی کے اندر رعونت و تکبر پیدا ہونے کا اندیشہ ہے جبکہ سفید اور کا لے اور جلکے رنگ میں بیعلت نہیں
ہے ان تمام ابواب کی احادیث سے یہ بات واضح ہوجاتی ہے کہ آپ لہاس میں تکلف کو پہند نہیں فرماتے بس جو
مُیٹر ہوا اس کو زیب تن فرمایا، اگر چہ آپ کوسب سے زیادہ پہندسفید لباس تھا۔ اس طرح کھانے کی چیزوں میں
بھی تکلف نفرماتے۔

باب ماجاء في كراهية التزعفروالخَلُوق للرجال

(مردول کے لئے زعفرانی رنگ اور تکین خوشبو کمروہ ہے)

"عن انس بن مالك قال نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم :عن التزعفر للرجال". (حسن صحيح)

حضرت انس فرماتے بیں کہرسول الله صلی الله علیہ وسلم نے مردوں کے لئے زعفران سے تکین ہونے

کی ممانعت فرمائی ہے۔

صديث آخر: "عن يعلى بن مُرَّة ان النبي صلى الله عليه وسلم ابضررجلاً مُتخَلِقاً قال اذهب فاغسله ثم اغسله ثم لاتَعُد!". (حسن)

حفرت یعلی بن مر ق سے مروی ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک فخص کودیکھا جوخلوق (رَبَّلین مِکس خوشبو) لگائے ہوئے تھا، آپ نے فرمایا: جاتو! اس کودھو! اور پھر (دوبارہ) دھوڈ ال! اور پھر دوبارہ ایسانہ کرو (یعنی پھرندلگاؤ!)۔

باب ماجاء في كراهية الحريرو الديباج (ريثي لباس كم انعت)

"عن ابن عمرقال سمعتُ عمريذكران النبي صلى الله عليه وسلم قال من لَبِسَ المحرير في الدنيالم يلبسه في الآخرة". (حسن صحيح)

حضرت ابن عمر" فرماتے ہیں کہ میں نے (حضرت)عمرؓ سے اس حدیث کا تذکرہ کرتے ہوئے سُنا ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: جس نے دنیا میں ریشم پہناوہ اسے آخرت میں نہیں پہنے گا۔ ملحوظ: _رئیشی لباس پر ابواب اللباس کے شروع ابواب میں بحث گزری ہے۔ (ویکھے تشریحات ص:۵۳۱ج:۵)

بابٌ

(کوٹ وغیرہ پہنناجائزہے)

"عن المِسوربن منحرَمة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قَسَمَ اقبِية ولم يُعطِ مخرمة شيئاً فقال مخرمة يابُنَى إنطلَق بناالى رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فانطلقت معه ،قال: أدخل فادعُه لى افدعوته له فخرج النبى صلى الله عليه وسلم وعليه قباء منها فقال: خَبَاتُ لَكَ هذاقال فنظر اليه فقال رَضِيَ مخرمة ؟". (حسن صحيح)

حضرت مسور بن مخرمہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے قبا کیں تقسیم فرمادیں اور (میرے والد) مخرمہ کو پھنہیں دیا تو مخرمہ نے کہا میرے بیارے بیٹے مجھے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس لے چلوحضرت مسور فرماتے ہیں کہ ہیں ان کے ساتھ گیا (جب آپ کے گھر پر پہنچ تو) اَگُو نے کہا جا اندر! اور نبی صلی اللہ علیہ وسلم کومیرے لئے بلالے! (تا کہ ہیں ان کی خدمت میں درخواست کروں) چنا نچہ ہیں نے آپ کوان کے لئے بلایا، تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نظے اور آپ پر (یعنی آپ کے پاس) ان قباؤں میں سے ایک قبائی، پس آپ نے فرمایا کہ یہ میں نے آپ کے بیار کھی حضرت مسور کہتے ہیں کہ مزمد نے اسے (قباکو) دیکھا تو آپ نے فرمایا محرمہ خوش ہوگئے؟

تشرت : قوله: "اقبية" تباءى جمع به جُرداور چونے كو كہتے بيل عام طور پرا يے بيتے باہر سے آتے جوريشى ہوتے سے يتقسيم ريشم كى ممانعت سے پہلے كى ہا كر چە ممانعت كے بعد بھى دينا ثابت ہے كين اس كا مطلب استعال كى اجازت نہيں ہے بلكة تمليك ہے استعال الگ چیز ہے اور تمليك الگ شے ہے۔ حضور پاكسلى الله عليه وسلم نقسيم كے وقت حضرت مُر مد كے لئے ایك بُدا لگ كرليا تھا اس لئے يہا ل "ولم يعط بك صلى الله عليه وسلم نقسيم كے وقت حضرت مر مد كے لئے ایك بُدا لگ كرليا تھا اس لئے يہا ل "ولم يعط مد حدومة شيناً " سے مراداى مجلس ميں دينے كنفى ہے، چونكہ حضرت محر مد عمر رسيدہ شھاس لئے اپ بينے بينے سے كہا كہ جمھے لے چلواور چونكہ حضرت مور ثابالغ شھاس لئے كہا اندرجا وَ الى قوله: "خبات لك هذا" چونكہ حضرت محر مدالى مراج كے شھاس لئے كہا اندرجا وَ الى حمط ابق ارشا وفر ما يا جو

بلاغت کامقام ہے۔قولہ: "فنظر المیہ فقال" فظر کی خمیر مخرمہ کی طرف اور فقال کی نبی سلی اللہ علیہ وسلم کی طرف را جع ہے جیسا کی ترجمہ میں اس کو کوظر کھا ہے اور "رضی معجر مہ" استفہام ہے بیعی تم راضی ہوگئے؟؟؟ دوسرااحتال میہ ہے کہ فنظر کی ضمیر نبی کی طرف اور الیہ کی ضمیر مخرمہ کی طرف را جع ہے اور فقال مخرمہ کی طرف اور الیہ کی خمیر میں کے مدارضی مخرمہ کامقولہ ہوگا۔

اس حدیث سے شیروانی ،کوٹ اورعباء وغیرہ کا جواز ثابت ہوا، بخاری ج:۲ص:۸۷۱ باب بالذهب کتاب اللباس میں ہے کہاس جُتے میں سونے کے بٹن بھی لگے ہوئے تھے۔

باب ان الله يُحِبُّ ان يُرىٰ اَثَرُنعمته على عبده

(اللهايي بندے كاظها نعت كو بسندكرتا ب

"عن عمروبن شعيب عن ابيه عن جده قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان الله يحب ان يُرى الرنعمته على عبده". (حسن)

رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمایا كه بے شك الله اس بات كو پسند كرتے ہیں كه اس كے بندے براس كی نعمت كا اثر دیكھا جائے۔

تشری : قوله: "ان یوی ایس نیوس نیول کا صیغه ہا ادر بعض میں معروف کا مجہول اصح ہے۔

اس حدیث سے اظہار نعت کا استحباب معلوم ہوا تا ہم عارضة الاحوذی میں ہے کہ صوفیہ نے اس سے
مراد جودو سخاوت کی ہے کہ صاحب استطاعت کو چاہیے کہ اللہ کا دیا ہوا مال اللہ کی مخلوق پرخرج کرتا رہے اگر چہ خود
نگا اور بھوکار ہنا پڑے لینی مختاج رہے ، لیکن فقہائے کرام اس سے مراد بذات خود استعمال لیتے ہیں لیمن آ دمی کو
چاہیے کہ اللہ نے اس کو جونعت دی ہے اس کو ظاہر کرے۔ حاشیہ پرہے کہ مناسب حال استعمال کرے تا کہ ایک
طرف اللہ کا شکر ادا ہوتو دوسری طرف غریب لوگوں کو اس کی مال داری معلوم ہوتا کہ اگروہ اس سے اپنے حوائے بیان کرنا چاہیں تو یہ عمر اس کی نشانی ہو۔

اس طرح غریوں پرخرج کرنے کاموقع آسانی سے مل جائے گا، گویا کشی نے صوفیائے کرام اور فقہائے عظام دونوں کی مرادوں کو یکجا کیا ہے۔ بہر حال دوسری طرف بھی روایات ہیں جن سے فقر اور تواضع کی فقہائے عظام دونوں کی مرادوں کو یکجا کیا ہے۔ بہر حال دوسری طرف جج دیتے ہیں اور بعض فقر اختیاری کو بشر طیکہ بخل فضلیت معلوم ہوتی ہے اس لئے بعض علاء باب کی حدیث کو ترجیح دیتے ہیں اور بعض فقر اختیاری کو بشر طیکہ بخل

اور تنجوی کی نیت سے نہ ہو۔

اعدل الاقوال يه به كه شريعت في اعتدال پرد بنه كاسم ديا به لازامعتدل لباس اورا پيج بمعصرون كه مطابق لباس پېنناچا بنه گوكه عيدين اور جعه وغيره متثنى بين جيسا كه ابواب اللباس بين گذرا به در كيف تشريحات: ٢٥٠٥: ١٩ باب ما جاء في ترقيع الثوب وباب ما جاء في لبس الصوف "ص ٢٥٥٥. ٥)

باب ماجاء في الخف الاسود

(سیاه موزے کابیان)

"عن ابن بريدة عن ابيه ان النجاشي اهدى للنبي صلى الله عليه وسلم خُفّينِ اسودين ساذجين فَلَبسهماثم توضأومسح عليهما". (حسن)

حفرت کریدہ سے روایت ہے کہ نجاش (اصحمہ)نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں چرے کے دوکا لے سادہ موزے بطور ہدیہ بھیجے تھے آئی نے دونوں کو پہنا پھروضو کرکے ان برمسے کیا۔

تشرت : قوله: "ساذجین" سافی الذال کے معنی سادہ کے ہیں کریہاں مراد کیا ہے؟ تواس میں دواخمال ہیں: ایک یہ کہ اس پرڈیز ائن اور نقوش نہیں بنے تھے۔ دوم یہ کہ ان پر بال نہ تھے بلکہ صاف تھے۔ معلوم ہوا کہ کا لے رنگ کے جرابے ، موزے اور جوتے استعال کئے جاسکتے ہیں نہ اس سے کوئی رنگ مانع ہے اور نہ ڈیز ائن الآ یہ کہ کوئی دوسری وجہ ممانعت کی ہومثلاً مردوں کے لئے نسوانی ممنوع ہے اور غیر مسلموں کا شعار مطلقاً ممنوع ہے۔

باب ماجاء في النهي عن نتف الشيب

(سفيد بال نوچنامنع ہے)

"عن عمروبن شعيب عن ابيه عن جده ان النبي صلى الله عليه وسلم: نهى عن نتف الشيب وقال انه نورالمسلم". (حسن)

نی صلی الله علیه وسلم نے سفید بال أکھاڑنے سے ممانعت فرمائی ہے اور آپ نے فرمایا کہ وہ مسلمان کا نور ہے۔

تشریخ: عروبن شعیب کی سند پرتفسال بحث گذر پی ہے جس کا خلاصہ بیہ ہے کہ اس سند کی روایت درجہ حسن میں ہوتی ہے جبیبا کہ ام تر فدگ نے تھم لگایا ہے تا ہم ابن العربی عارضہ میں فرماتے ہیں کہ لفظا تو یہ حدیث سی خبیں کی سمتا سی ہے جم کر پہلے عرض کیا جا چکا ہے کہ امام بخاری اور ابن العربی درجہ حسن کی روایت کو صعیف کہتے ہیں بہر حال ابن العربی نے بھی اس مضمون اور معنی کوسی حسلیم کیا ہے اور نور کا مطلب بیہ بیان کیا ہے کہ سفید بال موت کا پیغام لے کر آتا ہے گویا کہ وہ نذیر ہے اس لئے آدی آخرت کی طرف متوجہ ہوجاتا ہے نیز اس میں وقار بھی ہے کیونکہ جوانی تو دیوانگی کا ایک شعبہ ہے اصل سنجیدگی تو بڑھا ہے میں آتی ہے جبکہ اسے اُ کھاڑنا تغیر کخلق اللہ میں بھی آتا ہے بخلاف خضاب اور مہندی لگانے کے کہ ایک تو وہ دیکھنے والے کی نظر میں حقیقت سے مختلف نہیں ہوتا کیونکہ دیکھنے والا جا نتا ہے کہ اس نے مہندی لگائی ہے ، دوم وہ تبدیلی عارضی ہوتی ہے جبکہ اُ کھاڑنا مستقل تغیر ہے۔

باب ماجاء ان المستشار مؤتمن

(صاحب مشوره امانت دار موتاب)

"عن ام سلمة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: المُستَشَارُ مُؤتَمَنٌ". (غريب)

حضرت ام سلمہ سے مشورہ لیا جائے وہ باکہ علیہ وسلم نے فرمایا جس سے مشورہ لیا جائے وہ با جمروسہ مجھا جاتا ہے (پینی اس کی امانت وخیرخوائی پراعتاد ہوتا ہے)۔

تشری : یعنی جس سے مشورہ طلب کیا جاتا ہے تو مشورہ لینے والا اس کی دیانت اور خیرخواہی دونوں پراعتما دکرتا ہے کہ مجھے حجے مشورہ دے گا اور میر اراز افشاء نہیں کرے گااس لئے صاحب مشورہ کو چاہئے کہ ان دونوں اعتمادوں پر پورا اُترے۔

اس مدیث میں سُنشا راور مُوتَمُن دونوں اسمِ مفعول کے صیغے ہیں ابن العربی کے عارضہ میں لکھاہے کہ چونکہ ایک طرف لوگوں کی آ راء مختلف ہوتی ہیں اور دوسری جانب معانی میں بعض اوقات تعارض بھی آ جاتا ہے اس لئے ایک شخص بھی نتیجہ اخذ کرنے سے قاصر رہتا ہے اس بناء اللہ تبارک وتعالی نے دوسروں سے رائے میں مدد لینے کا تھم دیا اور نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے اس پر بنفس نفیس عمل بھی فرمایا، البذا مشورہ قرآن وسنت سے ثابت

ہوا بلکہ از روئے عقل بھی رائج ہے کہ جاہلیت کے دور میں بھی لوگ مشورے کرتے تھے۔ای طرح حضرت ابراہیم م کی ملت میں بھی مشورہ تھا انہوں نے حضرت اساعیل سے ذرج کے بارے میں مشورہ لیا تھا۔

قوله: "انی لا حقرت بالحدیث فکماآخوم منه حرفاً" اخرم باب ضرب سے واحد متعلم کا صیغه به ای لااحدف منه حوفاً بیعبدالملک بن عیرکامقوله به کهیں جب حدیث بیان کرتا بول تواس سے ایک حرف بھی کم نہیں کرتا بول اواس سے ایک حرف بھی کم نہیں کرتا بول امام ترفدی کا مقصداس بات کوفل کرنے سے عبدالملک کی توثیق کرنا ہے کہ وہ روایت میں کی بیشی سے بچتے تھے، غرض باب کی دوسری حدیث سے جے اگر چہ پہلی میں ابن جدعان کی دادی نامعلوم ہیں۔

باب ماجاء في الشُؤم

(بدشگونی کابیان)

"عن عبدالله بن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: الشُوم في ثلاثة في المرأة والمسكن والدابة". (حسن صحيح)

حضرت عبدالله بن عمر سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا بنحوست (یانا گواری) تین چیزوں میں ہے عورت میں اور کھر وسواری میں۔

صريث آخر: _"إن كان الشؤم في شئى ففي المرأة والدابة والمسكن". (رواه البخاري ومسلم عن ابن عمر)

اگر کسی چیز میں نحوست ہوتی (یاہے) تو پھر عورت اور سواری اور گھر میں ہوتی (یا ہوگی)۔

حديث آخر: _ "لاشؤم وقديكون اليمن في الداروالمرأة والفرس". (حافظُ ن فُحُ الباري مين اس كى سندكوضعيف كها ب

نوست نہیں ہے (یعنی کسی چیز میں) اور کبھی گھر اور عورت اور گھوڑے میں برکت ہوتی ہے۔ تشریخ: ۔قولہ: "الشوم" اصل میں شین کے بعد ہمزہ ہے لیکن کثرت استعال کی وجہ سے تخفیف کے لئے اس کی جگہ واؤپڑ ہوتا بھی جائزہے، یُمن وبرکت کی ضدہے یعنی نقصان اور اس سے خوف کرنے کو کہتے ہیں بعض علماء کرام اس پرمصر ہیں کہ اس حدیث میں شؤم سے مرادنا گواری طبع یعنی طبعیت کی ناموافقت ہے اور ناپندیدگی ہے۔قولہ: "وقدیکون الیُمن "يُمن بضم الياء شوم كى ضد ہے بمعنى بركت كے۔

باب کی احادیث میں بظاہر تعارض معلوم ہوتا ہے آخری حدیث سے شؤم ونحوست کی نفی معلوم ہوتی بے،ای طرح " الإطِليَرة " كى حديث سے بھى نفى معلوم ہوتى ہے جبك بہلى حديث سے بظاہراس كا شوت معلوم ہوتا ہے۔اس تعارض کودورکرنے اوراصل مطلب تک رسائی حاصل کرنے کی دوصور تیں ہیں:ایک بیک ان تین اشیاء میں نحوست کوتسلیم کر کے باتی روایات میں تاویل یا شخصیص کی جائے جبکہ دوسری صورت اس کے برعکس ہے کنچوست کی نفی کر کے باب کی پہلی حدیث میں تاویل کی جائے۔ابن العربیؒ نے عارضہ میں اس پرزور لگایا ہے کہ باب کی حدیث اپنے ظاہر پرمحمول ہے اورمطلب ہیہ ہے کہ اللہ تبارک وتعالیٰ نے ان تین اشیاء میں ہیہ تا ٹیرڈالی ہے جبیا کہاس کی عادت ہے کہاشیاء میں تا ٹیرات پیدافر ما تا ہے،الہذااس عقیدے کےمطابق کہ بیہ الله کی در بعت کی ہوئی تا خیرات ہیں ان تین اشیاء میں نحوست مانے میں کوئی حرج نہیں ہے اوراس پرموطا (اور ابوداؤد) کی روایت سے استدلال کیا ہے کہ ایک آدمی نے نبی کوخردی کہ ہم تعدادیس زیادہ تھے اور ہارامال بھی زیادہ تھالیکن اس (نے) گھر کی وجہ سے ہماری تعداد بھی گھٹ مٹی اور مال بھی چلا گیا،آٹ نے فرمایا: "دعوهافانهاذميمة" يعنى ال كمركوچ وروكيونكريير اب، ابن العربي باب كى دوسرى مديث يعن" ان كان الشوم النخ "كامطلب يربيان كرتے بي كماللد تارك وتعالى اپنى عادت كےمطابق جواس فتم كى تا ثيرات بعض دفعہ پیدافر ماتے ہیں تو غالب طور پران تین اشیاء میں ودیعت فرماتے ہیں ،البتہ وہ فرماتے ہیں شوم صرف د نیوی نہیں ہوتی ہے بلکہ اخروی بھی ہوتی ہے کہ جس گھر میں عبادت نہ ہواور جوعورت (بیوی) عبادت وطاعت میں معاون ثابت نہ ہواور جس گھوڑے پر جہادنہ کیا جائے تو وہ آ دمی کی آخرت کے لئے منحوں ہیں جبکہ امام مالک ّ اس کوظا ہر بریعنی دنیوی نقصان برحمل کرتے ہیں یعنی اللہ نے ان میں بیتا ثیرات پیدا کی ہیں جوگاہے بگاہے مرتب ہوجاتی ہیں۔حضرت مولا نااشرف علی تھانویؓ نے المسک الذکی میں اس طرف میلان کیاہے چنانچہوہ فرماتے ہیں:

"احقر كنزديك معلوم تو موتا به كدان تين چيزول مين تعالى في بحواثر ركھا به كيكن اس كا اظهار يوام كے معلوم تو موتا به كدونكه وہ اس كوئن كراس كومؤثر حقيقى سے زيادہ متصرف تجھيں گا اظہار يوام كسام في كرمؤثر حقيقى تو اللہ تعالى جيں اور ان چيزوں ميں اثر ان كار كھا موا به ندكه بالذات، پس اس اعتقاد ميں بجھ مضائقة نہيں "۔

کین جیسا کہ او پرعرض کیا گیا کہ بعض دیگر علماء کی رائے اس سے عتلف ہے، وہ کہتے ہیں: "ان کسان
الشوہ فی شنی النے" کا مطلب ہے کہ نوست کی چزین نہیں اگر ہوتی تو پھر ان بین میں ہوتی گران میں
تو نہیں للہذا کی چزمین نہیں اور بیا ہیا ہے جیسے دوسری حدیث میں ہے کہ: "لمو کان شنی سابق القدر لَسَبقه
المعین "" جبکہ باب کی پہلی حدیث میں شؤم سے مرادنا گواری طبع اور عدم موافقت ہے یعنی اگران تین چیزوں
سے طبعی میلان وہم آ جنگی پیدانہ ہوئی تو پھر پریشانی ہی پریشانی رہتی ہاور چونکہ نا گواری طبع تو دوسری اشیاء میں
بھی ہوستی ہے لیکن ان تین کے ساتھ تعلق طویل ہوتا ہے اس لئے ان تین کا بطور خاص ذکر فرمایا، گویا ان کے
نزد کی اصل "لاط سے وہ" والی حدیث ہوا وہ باتی مؤل ہیں۔ الکوکب الدری میں ہے کہ شؤم کے ایک متی
نوست کے ہیں اور دوم نا پہند بدگی اور پریشانی کے تو جہاں شؤم کی نئی ہوئی ہے تو وہاں معنی اول مراد ہے اور جن
دوایات میں اثبات ہوا ہے وہاں معنی خانی مراد ہیں فلا اشکال۔

باب ماجاء لايتناجي اثنان دون الثالث

(تین آ دمیوں میں ہے دو،الگ سرگوشی نہ کریں)

"عن عبدالله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : اذاكنتم ثلاثة فلايَتنَاجَى اثنان دون صاحِبهمافان ذالك يحزنه". (حسن صحيح)

حصَّرت عبدالله بن مسعودٌ فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: جب تم تین مُخص ہوتو اپنے (تیسرے) ساتھی کوچھوڑ کر دوخص سرگوثی نہ کریں کیونکہ یہ بات (طرزِسرگوثی) اس کوغم میں ڈالتی ہے (بیعنی وہ اس سے پریشان ہوجا تاہے)۔

تشری : صدیث کے الفاظ میں راویوں کا تھوڑ اسااختلاف ہے لیکن اس سے مدیث کی صحت پر اثر نہیں پڑتا کیونکہ معنوی لحاظ سے کوئی اختلاف نہیں اس لئے امام ترفری نے لفظی اختلاف نقل کرنے کے بعداس کوسن وسیح کہا ہے۔ بعض حضرات نے اس نفی کواول اسلام پرمحول کیا ہے کہ مدینہ منورہ میں منافقین مسلمانوں کو پریثان کرنے کے لئے سرگوشیاں کرتے تھے ، جبکہ بعض شارعین نے اس کوسنر کی حالت پرمحول کیا ہے، لیکن بہتریہ ہے کہ یہ کہ میں خود فدکور ہے 'فسسان ذالک بہتریہ ہے کہ یہ میں خود فدکور ہے 'فسسان ذالک یہ حوز ند ''کرتیسر المحض تنہا یہ کر پریثان ہوجائے گا اور مکن ہے کہ کوئی برگمانی بھی اسے پریثانی میں ڈالے اس

علت کے مطابق چارمیں سے تین کے لئے بھی الگ ہوکر سرگری ممنوع ہوئی اسی طرح دوآ دمی ایک زبان کے ہوں اور تیسراکسی دوسری زبان کابولئے والا ہوتو اگروہ اُن دوکی زبان نہ جا تنا ہوتو ان کوبھی اپنی زبان میں بات نہیں کرنی چاہئے ہاں اگر تیسرے کی اجازت ہویا وہاں دوسرے لوگ بھی موجود ہوں تو پھرکوئی حرج نہیں چنا نچہ مسلم کی روایت میں بھی اس علت کی طرف اشارہ ہے: ' حتیٰ تنخت لِمطو اہالناس من اجل ان یحزنه' ' ۔ (مسلم ص: ۱۹۹ ج:۲) عارضة الاحوذی میں ہے کہ اس حدیث میں خسن محاشرت اور آ داب مجلس کا بیان ہے کہ آ دمی کوکر یمانہ اخلاق کے زبورسے اور مروت کی دولت سے آ راستہ ہوتا چاہئے اپنے ہمنشینوں کا خیال رکھنا چاہئے اور ان کی ایڈاءر سمانی سے بچنا چا ہے وغیر ذا لک من الآ داب۔ (ھذا معنی مافی عارضة الاحوذی کا لئول کو کولئے کا دولت

باب ماجاء في العِدَةِ

(ايفائے عہد کابیان)

"عن ابى جُحيفة قال رأيتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم ابيض قدشابَ وكان المحسن بن عَلى يُشبِهُه ،وَ اَمَرَلنابث لا ثة عشر قَلُوصاً فَذَهَبُنَا نقبِضُها فاتاناموتُه فلم يعطونا شيئا فلما قام ابوبكر،قال: من كانت له عندرسول الله صلى الله عليه وسلم عِدَة فليجيئُ فقُمتُ اليه فاخبرته فَآمَرَلنابها". (حسن)

حضرت ابو بحیفہ «فرماتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کودیکھا آپ گورے ہے اور بڑھا پا آچلاتھا آپ پر (بعنی کچھ بال آپ کے سفید ہو بچے ہے گوکل ملاکران کی تعداد ہیں سے کم تھی) اور حسن بن علی آپ کے مشابہ ہے (بعینی وونوں کے جسموں کے بالائی حصوں میں مشابہت تھی) اور آپ نے ہمارے لئے تیرہ جوان اونٹیوں کا تھم دیا تھا، چنا نچہ ہم (مدید) گئے تا کہ وہ اونٹیاں لے لیں ، تا ہم است میں ہمیں آپ کی وفات کی خبر پنجی ، تو انہوں نے ہم کو پھونہیں دیا (کیونکہ معاملات حکومت موتوف ہو چکے ہے) پھر جب الوہر گھڑ ہے کہ خبریں دیا (کیونکہ معاملات حکومت موتوف ہو چکے ہے) پھر جب الوہر گھڑ سے ہوئے تو انہوں نے ہم کو پھونہیں دیا (کیونکہ معاملات حکومت موتوف ہو جکے ہے کے وعدہ ہورسول الله صلی اللہ علیہ وسلم کا تو وہ ہمارے پاس آئے (بعنی ہم سے رجوع کرے) پس میں ان کی طرف کھڑ اہوا اور حضور آئے وعدہ کا ذکر کیا تو انہوں نے ہمارے لئے ان اونٹیوں کا حکم دیا۔

باب ماجاء في فِداك ابي وَ أُمِّي

(میرے مال باب تھ پر قر بان کابیان)

"عن على قال ماسمعتُ النبى صلى الله عليه وسلم : جَمَعَ ابويه لِاَحَدِ غيرسعدبن ابى وقال له: إرم فيداك ابى وأمِّى! وقال له: إرم العلامُ الحَزَوَّرُ!". (حسن صَحيح)

حفرت علی فرماتے ہیں کہ میں نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کونیں سُنا ہے کہ آپ نے کسی کے لئے اپنے مال ، باپ کو (فِد اک میں) جمع کیا ہوسوائے سعد بن ابی وقاص کےدوسری حدیث میں ہے کہآپ نے احد کے دن سعد سے فرمایا تیرچلا!میرے مال باپ جھھ پر قربان ہوں!اور آپ نے ان سے فرمایا: تیرچلا!اے پہلوان جوان!۔

تشرت : قول ه: "فِ لَهَ اكَ" فَلَدى يفدى، جان مُهُوانِ كَ لِحَ فديد ينامثلاً قيدى كى آزادى ياجان بُهُوانِ كَ لِكَ فديد ينامثلاً قيدى كى آزادى ياجان بخشى كابدله و مراس آزاد كرايا جائے قوله: "المحزَوَّدُ" اصلاً تواس لرُ كوكست بيں جومرائ ہولينى جوانى كة تريب بوليكن يہاں مراد پہلوان اور طاقت وربے قوله: "يوم احد"مراد جنگ احد ہے۔

اس حدیث سے حضرت سعد کی ہوئی منقبت معلوم ہوئی کیونکہ جو خض محبوب ہوائی پرلوگ قربان ہوتے ہیں اور اپنے ماں باپ اس پرقربان کرتے ہیں اور چونکہ ایسا کہنے سے کسی کو قربان کرنالازم نہیں آتا اس لئے یہ کلمہ محض حوصلہ افزائی اور داد دینے کے لئے مستعمل ہوتا ہے تا کہ اس سے مخاطب وممدوح کی تجمع کی جائے یا محبوبیت فلا ہرکی جائے لہٰذا اس کلمہ کے کہنے میں جمہور کے نزد یک کوئی حرج نہیں ہے۔ پھر حضرت علی کا ایہ کہنا کہ نی صلی اللہ علیہ وسلم نے کسی کے لئے فداک ابی وائی نہیں کہا ہے سوائے سعد کے توبیان کے اپنے علم کے مطابق ہے ورنہ اللہ علیہ وسلم نے کسی کے ایک فداک ابی وائی نہیں کہا ہے سوائے سعد کے توبیان کے اپنے علم کے مطابق ہے ورنہ

نی صلی الله علیه وسلم نے حضرت زبیر بن العوام کے لئے بھی قریظہ کے دن فرمایا تھا'' بابی وامی' جیسا کہ ان کے مناقب میں ان شاء الله آئے گا۔

باب ماجاء في يابُنَيَّ

(كسى كوبيثا كهني كابيان)

"عن انس ان النبی صلی الله علیه وسلم قال له:یابنی !". (حسن صحیح غریب)
حضرت انس میرے پیارے بین! وسلم قال الدیابنی !". (حسن صحیح غریب)
حضرت انس میرے پیارے بین! الشعلیوسلم نے ان (انس سے کہائے میرے پیارے کالفظ استعال
موتا ہے۔ ابن العربی نے عارضة الاحوذی میں 'یابنی ''بطورشفقت کہنے کے جواز پراجماع نقل کیا ہے یعنی کی
چھوٹے کو،ای طرح کی کو بھائی کہنا بھی جائز ہے 'واماقول الرجل للصغیر:یابنیفانه
جائز اجماعاً لانهاشفقة و کرامة'' بلکه امام نووی نے تومتحب قراردیا ہے۔

با ب ماجاء في تعجيل اسم المولود

(نومولود بچ کانام جلدی رکھنا جا ہے)

"عن عسروبن شعيب عن ابيه عن جدّه ان النبي صلى الله عليه وسلم اَمَرَ بتسمية المولود يوم سابعه وَوَضع الاذي عنه والعَقّ". (حسن غريب)

نبی صلی الله علیه وسلم نے نوزائیدہ بچے کے ساتویں دن نام رکھنے کا اوراس کے بال وناخن وغیرہ صاف کرنے اور عقیقہ کرنے کا تھکم دیا ہے۔

تشریخ: یعنی نومولود یج کانام جلدی رکھنا چاہے اس میں ساتویں دن سے زیادہ تا خیز میں ہونی چاہئے اگر کسی نے ساتویں دن سے پہلے بلکہ ولادت سے چاہئے اگر کسی نے ساتویں دن سے پہلے بلکہ ولادت سے قبل بھی نام رکھ دیا تو یہ بھی جائز ہے کیونکہ سات یوم سے پہلے بلکہ ولادت سے قبل بھی نام رکھنا ثابت ہے:"ان الله یُبشوک بکلمة منه اسمه المسیخ عیسی ابن مویم " (آل عمران آیت: ۲) اور "علم عمران آیت: ۲) اور "علم عمران آیت: ۲) اور "علم آدم الاسماء کلها" رالآیہ) میں بھی اس کی طرف اشارہ ہوسکتا ہے۔ پھرنام کا مقصد تعین ذات اور تمیز کرنا

باب ماجاء مايُستحب من الاسماء

(الجھے اچھے ناموں کابیان)

"عن ابن عسرعن النبى صلى الله عليه وسلم قال: اَحَبُ الاسماء الى الله عبدالله وعبدالرحمن". (حسن غريب)

حضرت ابن عمر سے روایت ہے کہ نبی صلی الله علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا: کہ اللہ کونا موں میں سے سب سے زیادہ پند عبد اللہ اورعبد الرحمٰن نام ہیں۔

تشری : یعنی الله کوایسے نام پند ہیں جن سے آدی کی بندگی اور خدائے تعالی کی الوہیت وتوحید کا اظہار موجیسا کرسابقہ باب میں عرض کیا جا چکا ہے۔

باب ماجاء مايكره من الاسماء

(ناببنديده نامون كابيان)

"عن عسرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : لَأَنهَيَنَّ ان يُسَمَّىٰ رافع وبركة ويسار". (غريب)

حضرت عمر فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: کہ بے شک میں منع کرتا ہوں رافع ، برکت اور بیارنا مرکھنے ہے۔

صديث آخر: ـ الاتُسَمِّ غالامَك رَبَاح والاافلح والايساروالانجيح يقال أَفَمَّ هو ؟ فيُقال "لا". (حسن صحيح)

حضرت سمرہ بن جندب سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: اپنے لڑ کے (یاغلام) کا نام رباح نہ رکھوا ور نہ افلے اور نہ بیاراور نہ ہی نہ جب رکھو کیونکہ اگر بوچھا جائے کہ وہ وہاں ہے؟ تو کہا جائے گا کہنیں ہے!

تشریح: _رافع کے معنی بلندوعالی کے ہیں _برکت کے معنی خیر کے اور بیپار کے معنی آسانی وآسائش کے ہیں جبکہ رباح بمعنی سودونفع کے _افلح بمعنی کامیاب اور نسجیہ عنی فتح مندی کے آتا ہے۔

شاید رہنی شروع اسلام سے تعلق ہے۔واللہ اعلم

صديث آخر: - "عن ابى هريرة يبلغ به النبى صلى الله عليه وسلم قال: آخنع اسم عند الله يوم القيلمة رجل تسمى بِمَلِك الاملاك قال سفيان شاهان شاه" (شهنشاه). (حسن صحيح)

قیامت کے دن اللہ کے زویک سب سے بُرانا ماس آدمی کا ہوگا جس نے شہنشاہ نام رکھا ہو۔

قبولہ: "اختع" امام ترفدگ نے اس کے معنی افتح یعنی سب سے زیادہ فتیج بتائے ہیں جبکہ ملک الاملاک کے معنی امام سفیان بن عُرینہ نے شاھان شاہ بتلائے ہیں بعنی شاہ شاہان جے فاری میں شہنشاہ کہتے ہیں۔ امام حمیدی شخ ابنخاری نے احتمع کے معنی اَذَل وَکر کئے ہیں بعنی سب سے زیادہ ولیل، بیدونوں مطلب صحیح ہیں کیونکہ جو خص اتنا بڑادعوی کرتا ہے کہ وہ سارے بادشا ہوں کا بادشاہ ہے ، یا بڑا بادشاہ ہے تو یہ دعوی اور بات اللہ کے بوخص انتا بڑادعوی کرتا ہے کہ وہ سارے بادشا ہوں کا بادشاہ ہے ، یا بڑا بادشاہ ہے تو یہ دعوی اور بات اللہ کے بزد کی انتہائی ناپندیدہ بھی ہے کیونکہ وہ آدمی اپنے مقصدِ تخلیق یعنی بندگی کی نفی کرر ہاہے۔ کہ ندگی آ مہ برائے بندگی ،اور ایسافض قیامت کے دن اپنے اس نام اور غلط کام کی وجہ سے ذلیل ورسوابھی ہوگا کہ وہ اپنی سلطنت ٹابت کرے گروہ سر ذلت خم کئے ہوئے ہوگا۔ من تکبر وضعہ اللّٰہ سلطنت ٹابت کرے گروہ سر ذلت خم کئے ہوئے ہوگا۔ من تکبر وضعہ اللّٰہ

ان ابواب کی احادیث سے معلوم ہوا کہ اچھے نام رکھنے چاہئے خصوصاً جن سے بندگی وعاجزی کا ظہار ہوتا ہو، کر سے نام اورخصوصاً جن سے تکبراورغرورٹیکتا ہوسے بچنا چاہئے، نیز بزرگوں اورصلحاء کے نام بھی اظہار ہوتا ہو، کر سے بین اللہ میں آتے ہیں لیکن افسوس سے کہنا پڑتا ہے کہ آج ہمارے معاشرے میں اگر یزوں اورفلمی اداکاروں کے نام رکھنے کارتجان بھی جنم لے رہا ہے اس سے بچنا چاہئے۔

باب ماجاء في تغييرالاسماء

(برےنام تبدیل کرنے کابیان)

"عن ابن عسران النبى صلى الله عليسه وسلم : غَيَّرَ اسم عاصِيَةَ وقال:انتِ جميلة"!.(حسن غريب)

حضرت ابن عراسے روایت ہے کہ نبی ملی اللہ علیہ وسلم نے عاصیہ کا نام بدل دیا اور فرمایاتم جیلہ ہو۔ تشریخ: ۔قوله: "عاصیة" کے معنی نافر مان کے ہیں جبکہ جیلہ خوبصورت کو کہتے ہیں نیک سیرت کو جیلہ کہتے ہیں۔اس سے معلوم ہوا کہ اگر کسی کانام نادانی سے فلط رکھا گیا ہوتو پھراس کی بہی صورت ممکن ہے کہ
اس کو تبدیل کر کے کوئی اچھانام رکھا جائے ، فلط نام پراصرار و مداومت ہرگز نہ چاہئے۔ بعض لوگ اپنے نام کے
ساتھ آثم ومُذیب اور عاصی وغیرہ لکھتے ہیں الکوکب میں ہے کہ بیجا ترنہیں ہے۔اگلی روایت میں ہے کہ آپ
بُرے ناموں کو تبدیل فرمایا کرتے تھے، عارضة الاحوذی میں ہے کہ پہلی حدیث حسن وغریب ہے جبکہ دوسری
مرسل ہے۔تا ہم اس کا مضمون سے جوہ مزید کھتے ہیں کہ ایسے ناموں سے بھی بچتا چاہئے جوآ دمی کے تزکیفس
پردلالت کرتے ہوں تا کہ چھوٹ لازم نہ آئے، بہر حال نام کی اپنی ایک خدادادتا ثیر ہوتی ہے اس لئے بُرے منی

باب ماجاء فی اسماء النبی عَلَیْتِهِ الله ماجاء فی اسماء النبی عَلَیْتِهِ الله الله علیه وسلم کے اساء گرای)

"عن جبيربن مطعم قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :إنَّ لى اسماء، انا محمد وانااحمدواناالماحى الذى يمحوالله بِي الكفرواناالحاشرالذى يُحشَرُ الناس على قَدَمَى واناالعاقب الذى ليس بعدى نَبِيُّ". (حسن صحيح)

حضرت جبیر بن مطعم فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: میرے متعدد نام ہیں، میں محمہ موں، میں ماحی ہوں (لیعنی مٹانے والا) کہ اللہ میرے ذریعہ کفر کومٹا تا ہے، اور میں حاشر (جمع کرنے والا) ہوں کہ لوگ میرے قدموں پر (لیعن میرے افتتاح ہے) جمع کئے جائیں گے، اور میں عاقب (آخر میں آنے والا) ہوں کہ وکہ میرے بعد کوئی (نیا) نبی نہیں۔

تشری : ۔ بخاری کی روایت میں ہے کہ میرے پانچ نام ہیں 'کسی خسمسة اسماء ''اسے مراد مخص نام ہیں جو آپ ہے بہت زیادہ ہیں، جن کی صحح مخص نام ہیں جو آپ سے بہلے کسی کے لئے نہیں رکھے گئے ور خاص نام تو آپ کے بہت زیادہ ہیں، جن کی صحح تعداد تو ماثور تعداد تو ماثور تعداد جو ماثور ومنقول ہیں سر سٹھ (۲۷) ذکر کی ہیں، مولا ناموی خان نے ۵۰ فرنق کئے ہیں۔

ناموں کی کثرت سے صفات کی کثرت اور خوبیوں کا پنہ چاتا ہے چونکہ آپ کے بہت سارے اعلیٰ اوصاف ہے اس کے آپ کے بہت سارے اعلیٰ اوصاف کے اوصاف کے اوراوصاف کے

مختلف پہلووں پرشفاء میں تفصیل سے بحث فرمائی ہے، یہ کتاب پچاس سے زیادہ پہلووں پرمشمل ہے بہت سے علماء کرام نے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی زندگی کے صرف ایک ایک پہلوپر مستقل کتابیں کھی ہیں مثلاً آپ بحثیت استاذ وغیرہ ذالک۔

چنانچ ' محمہ' نام اس بناء پر رکھا گیا ہے لین اللہ نے آپ کے بزرگوں کے دلوں میں بطور الہام اس نام کا القاء کیا کہ وہ بینا م تجویز کریں ، چونکہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم محود ہیں ساری خلائق آپ کی مداح ہیں خصوصاً جب آپ مقام محود پر فائز ہوں گے۔ اور میدان محشر میں سوائے آپ کے کسی کو سفارش کی بظاہر ہمت نہیں ہوگی تو اس وقت آپ کی تعریف ومدح پرسب یک زبان ہوکر مدح کریں گے۔ اس لئے آپ ' محمہ' ہوئے یعنی جس کی محشر سے باتی ہو منہ رپر آپ پر درود پر حاجاتا ہے اور ہراذان میں آپ کا نام لیا جاتا ہے جبکہ دنیا میں کو گھنٹ ایسانہیں گذرتا جب کہیں نہیں اذان نہوتی ہو۔

آپ احمر بھی ہیں یعنی کثرت سے تعریف کرنے والا ، چونکہ اللہ تبارک و تعالیٰ کی حمد نبی سلی اللہ علیہ وسلم کی طرح کوئی نہیں کرسکتا کہ آپ نے خود بھی سب سے زیادہ اللہ کی تعریف کی ہے اور آپ کی امت بھی اللہ کی شال خوال ہے جو آپ کی حمد ہیں باعتبار حمد ہیں باعتبار حامدیت کے اور احمد ہیں باعتبار حامدیت کے دونوں صیخ مبالغ کے ہیں۔ آپ مقام محمود میں جب بحدہ ریز ہوں گے تو آپ کو اللہ کی وہ تعریفات اور محامد القاء ہوں کے جواس سے پہلے القاء والہا منہیں ہوئے ، گویا مقام محمود میں آپ کی حامدیت بھی نقط عروج بر پہنچ جائے گی اور محمود بیت بھی۔

اشکال: _آپ سے قبل تو بعض لوگوں کا حمداور محمدنام ثابت ہے جبکہ تشریح میں ان ناموں کوآپ کا خاصہ قرار دیاہے؟

حل: دراصل جب نبی صلی الله علیه وسلم کی بعثت کا زمانه قریب ہواتو آپ کے نام کا چرچا ہونے لگا لوگوں نے بینام اس منصب کے حصول کے لئے رکھا گویا بیآپ کے اتباع میں رکھا لہٰذابیا گرچہ زماناً مقدم ہے لیکن رُحبةٔ مؤخر ہی ہے۔

اس کی مثال ایس ہے جیسے مہدی بننے کی خواہش میں بہت سے لوگوں نے مہدویت کا دعوی کیا اور بعض نے جیسے مہدی کی خواہش میں بہت سے لوگوں نے مہدویت کا دعوی کیا اور حقیقت نے جیسے غلام احمد قادیا نی نے جیسے کی ہونے کا جموٹا دعوی کیا تو جیسے ان دعووں اور ناموں کی کوئی حیثیت اور حقیقت نہیں اس طرح وہ نام بھی اصلی شارنہیں ہوں گے۔

ملالله ملحاء في كراهية الجمع بين اسم النبي عَلَّسِينًا

و كنيته

(نبی صلی الله علیه وسلم کے نام اور کنیت کو یکجا کرنا مکروہ ہے)

"عن ابي هريرة ان النبي صلى الله عليه وسلم :نهي ان يجمَعَ احدّ بين اسمه وكُنيته ويُسَمِى محمداً اباالقاسم". (حسن صحيح)

حضرت ابو ہرری اللہ سے روایت ہے کہ نبی صلی الله علیہ وسلم نے منع فر مایا ہے اس سے کہ کوئی اللہ علیہ وسلم کرے آپ کے نام اور کنیت کواور اپنا نام محمد ابوالقاسم رکھے۔

حديث آخر: "عن جابرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : اذا تُسَمَّيتُم بي فلاتكنوا بي". (حسن غريب)

لینی جبتم میرانام رکھوتو میری کنیت مت رکھو![•]

ایک دفعہ بازار میں نبی صلی الله علیہ وسلم نے ایک شخص سے سُنا جواباالقاسم کوآ واز دے رہاتھا تو نبی صلی الله عليه وسلم متوجه وع اس نے کہالے اعساک میں آپ کوم اذبین لے رہاتھا، پس نبی سلی الله عليه وسلم نے فرمایا: "لاتکنوا بکنیتی"!میری کنیت نه رکھو! به

صديت آخر: "عن على بن ابي طالب انه قال يارسول الله!ار أيت إن وُلِدلي بعدك أُسَمِّيه محمداً وأكنِّيه بكنيتكَ؟قال"نعم" قال فكانت رخصةً فِيٌّ". (حسن صحيح)

حضرت علیؓ نے یو چھااے اللہ کے رسول! فرمایئے اگرآپ کے بعدمیراکوئی لڑکا پیدا ہواتو میں اس کا نام محمد رکھوں؟ اوراس کی کنیت رکھوں آپ کی کنیت کے مطابق؟ آپ نے فرمایا'' ہاں' حضرت علی فرماتے ہیں کہ بدرخصت میرے ہی لئے خاص تھی۔

تشريح: محشى نے اس بارے میں چھاتوال نقل کے ہیں:

(۱) پہلا قول: بیہ ہے کہ ابوالقاسم کنیت مطلقاً ممنوع ہے خواہ کسی کا نام محمد ہویا نہ ہو، بیا مام شافعی واہل ظاہر کا ندہب ہے۔ (۲) جمہور کا قول میہ ہے کہ نی سلی اللہ علیہ وسلم کے وجود میمون کے زمانہ تک محدود تھی تا کہ استہاہ نہ رہے اب یہ منسوخ ہے لہٰذاابوالقاسم کنیت مطلقاً جا تزہے۔ اس پر طاعلی قاریؒ نے مرقات میں لکھاہے کہ اسے منسوخ نہیں کہنا چاہئے بلکہ یوں کہنا چاہئے کہ آج وہ علت باقی نہ رہی اس لئے کراہیت بھی ختم ہوگئی لیکن اس منسوخ نہیں کہنا چاہئے کہ آج کہ تاہے کی تاہے کہ تاہے ک

(۳) ابن جریز کنزدیک نبی آج بھی باقی ہے لیکن تزیبا وتا دبا یکی قول ابن العربی کا بھی ہے۔
(۳) نبی کا تعلق جمع بین الاسم والکنیت سے ہے امام ترفدی کامیلان ای طرف معلوم ہوتا ہے جیسا کہ
ترجمۃ الباب سے ظاہر ہے لہذا صرف ایک تام رکھنے میں کوئی حرج نہیں جیسا کہ باب کی پہلی صدیث میں اس کی
تصریح ہے۔

(۵) ابوالقاسم كنيت اوراس كرساته قاسم نام دونو ل ركهنا كروه بـــ

(۲) حضرت عمر طعمرنام رکھنے سے منع فرماتے تا کہ سومادب نہ ہوجائے۔ چونکہ حضرت علی نے فرمایا تھا کہ آپ کے بعدوہ علت سب کے حق میں تھا کہ آپ کے بعدوہ علت سب کے حق میں ختم ہوگئی تھی لہذا تخصیص کی کوئی وجنہیں بلکہ رخصت عام ہوگئی، بہر حال جتگ بیامہ میں حضرت علی کے حصہ میں جو بائدی آئی تھی ان کے بطن سے پیدا ہونے والے بیٹے کانام آپ نے محمد اور کنیت ابوالقاسم رکھی دی تھی۔

باب ماجاء ان من الشعرحكمة

(بعض اشعار حکیمانه موتے ہیں)

"عن عبدالله قسال قسال رسول الله صلى الله عليمه وسلم: ان من الشعر حكمة". (غريب)

حضرت عبدالله بن مسعود قرمات بی کهرسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا بعض شعر حکمت (مطابق واقعه) بوتا ہے۔

تشری : باب کی اگلی روایت جوابن عباس سے مروی ہاس میں بجائے حکمت کے خکما کالفظ ہے اس کا مطلب بھی حکمت ہے خکما کالفظ ہے اس کا مطلب بھی حکمت ہے لین ہر شعر مُرااور فدموم نہیں ہوتا آگر چہ عام شعرا و خیلات اور وابیات کو یکجا کرتے

اورعشقیاشعار کہتے ہیں کین اشعار میں بعض ایسے بھی ہیں جودا قعہ کے عین مطابق ہوتے ہیں جیسا کہ اسکلے باب میں بیان ہوا ہے البنداشعر کی حیثیت کلام کی ہے جس ہیں اچھا بھی ہوتا ہے اور بُراو ندموم بھی ،البتہ شعر چونکہ ایک منظوم کلام ہوتا ہے اس لئے نشس سے پند کرتا ہے کہ اس کی فریکویٹسی متناسب ہوتی ہے تو جب اس کامضمون اچھا ہوتو وہ نشس میں بہت اچھی تا چیر کرتا ہے اس لئے وہ انتہائی مفید بن جاتا ہے لہذا حکمۃ بمعنی مفید لینازیادہ بہتر ہے۔

باب ماجاء في انشاد الشعر

(شغرگوئی کابیان)

"عن عائشة قالت كان النبى صلى الله عليه وسلم: يَضَعُ لِحَسَّانَ مَنبراً فى المسجد يقوم عليه قائماً يفاخرعن رسول الله صلى الله عليه وسلم اوقالت يُنافح عن رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان الله يُؤيّدُ حَسَّان بروح القدس الله عليه وسلم: ان الله يُؤيّدُ حَسَّان بروح القدس مايفا خراوينافح عن رسول الله صلى الله عليه وسلم ". (حسن صحيح غريب)

حضرت عائشہ فرماتی ہیں کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم حسان بن ثابت کے لئے مسجد میں منبرر کھواتے تھے،
حتان اس پر کھڑے ہوجاتے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف سے فخریہ اشعار پڑھتے ،یافر مایا
(ام المؤمنین نے) کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے دفاع (طرف داری) میں اشعار پڑھتے ،اور رسول اللہ صلی
اللہ علیہ وسلم فرماتے: بے شک اللہ روح القدس (حضرت جرمیل) کے ذریعہ حسان کی مدد کرتارہے گاتا وقتیکہ وہ
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی جانب سے افتخاریا فرمایا کہ جواب دہی کرتے رہیں گے۔

تشری : قوله: "انشادالشعر" إنثادادر إنثاه میں بفرق ب کدانثاه بنانے کو کہتے ہیں جبکدانثاد
پڑھنے کوچا ہے اپ اشعار ہوں یا کی دوسرے ثاعر کے ہوں آپ سے انثاه فابت نہیں بلکہ "وَمَساعَلُم الله الله عَرَ وَما يَنبغى له "_(سورة ليس: آيت: ٢٩) کی دوسے آپ کے لئے ممنوع ہے بھی تکوین جبکدانثاد میں اختلاف ہے، اس باب کی بعض احادیث سے اثبات معلوم ہوتا ہے۔

امام ترندی اس باب سے بیٹا بت کرنا چاہتے ہیں کہ طلق شعر گوئی ندموم یا ممنوع نہیں ہے کیونکہ اچھے اشعار مسجد میں پڑھنا بلکہ آپ کے سامنے صحابہ "کا اشعار پڑھنا ٹابت ہے حتیٰ کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بعض دفعہ اس کا اہتمام کرواتے اور فرماتے کہ حضرت جبر کیل حسان کی مدکرتے رہنے ہیں کیونکہ حضرت حسان کے

اشعار مسلمانوں کی ہمت افزائی نبی ملی اللہ علیہ وسلم کی مدح اور دفاع پر مشمل ہوتے جن سے کفار کی جو بھی ہوتی اور ان کی حوصلہ محتی ہو جن سے کفار کی جو بھی ہوتی اور ان کی حوصلہ محتی ہوجاتی اس بناء پر ان کے اشعار کی حیثیت جہاد کی مان ترخی اس لئے حضرت جرمیل اللہ کے حکم سے مدد کے لئے تحریف لاتے جیسا کہ بدر میں فرشتوں کا نزول ہوا تھا۔

قوله: "يفاخو" چونكهاس كمعنى بهى دفاع كے بين اس لئے صلى من الايا كيا۔ قوله: "ينافح" اى يىدافع ، چونكه كفارائ بعض اشعار مين ني صلى الله عليه وسلم پرتعريض كرتے اس لئے حضرت حمان آپ كی طرف سے دفاع فرماتے اور چونكه آپ ایک زبردست شاعر سے اس لئے كفاران كاشعار كے سان آپ كی طرف سے دفاع فرماتے اور چونكه آپ ایک زبردست شاعر سے اس لئے كفاران كاشعار كة آگے به بن نظر آتے۔ قول ه: "يفاخو او بنافح" چونكه راوى كوشك ہے كه او پركون سالفظ بولا كيا ہے اى بريمال مناسب جمله كا ترتب ہوگا۔

ووسرى حديث: ـ "عن انس ان النبى صلى الله عليه وسلم دخل مكة في عمرة القضاء وعبدالله بن رواحة بين يديه يمشى وهويقول: م

خَـلُـوابنـى الـكُفّارعن سبيلـه اليـوم نـضـربكـم على تنزيلـه ضـربـاً يُـذيـل الهـام عن مَقيلـه ويُـذهِـلُ الـخـليـلَ عـن خليلـه

فقال له عمر: پاابن رواحة ابين يدى رسول الله صلى الله عليه وسلم تقول الشعر؟ فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: خَلِّ عنه ياعمر افهى اسرع فيهم من نَضحِ النّبلِ". (حسن غريب صحيح)

حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم مکہ میں عمرۃ القصناء کے لئے واخل ہوئے جبکہ عبداللہ بن رواحہ "آپ کے آگے چل رہے تھے اور وہ مندرجہ ذیل اشعار پڑھ رہے تھے۔

کفار کی ذریت آپ کے راستہ سے ہٹو! ہلے آج ہم تم کو ماریں گے آپ کے اتر نے پر (بینی آپ پر اندی آپ کے اتر نے پر (بینی آپ پر نازل شدہ کتاب کے تھم سے)الی ضرب لگائیں گے جو کھو پڑی کو جُد اکر دے گی اپنی جگہ سے ہلا اور دوست سے دوست کی فکر تھلا دے گی۔

پس حضرت عرر نے کہا: اے ابن رواحہ! کیاتم اللہ کے رسول کے سامنے اشعار پڑھتے ہو؟ تورسول اللہ

صلی الله علیه وسلم نے فرمایا: اے عمر اسے رہنے (پڑھنے) دو بخدا! بید اشعار کفارکو تیر مارنے سے زیادہ گرال کرنے ہیں۔

قوله: "على تنزيله "اى على حكم تنزيله قوله: "الهام" بلمة كى جمع بكوردى اورمرك الهام "بلمة كى جمع بكوردى اورمرك المحل على حكم تنزيله "قيلوله كا حكم بين جهال بسم مشترك برقوله: "مُلْهِلُ" قيلوله كى جگه يعنى آرام كاه و مُعكانه قوله: "مُلْهِلُ" ذهول نسيان اورغفلت كو كميت بين - قول ه: "اسوع فيهم" اى فى الكفار يعنى بياشعاركفار مين تير بين على الدوم و ثر بين - قوله: "من نضح النبل "نبل تير، اورضح كمعنى برسان اور بوجها و كرن كرين - بين -

قوله: "وروی فی غیر هذاالحدیث ان النبی صلی الله علیه وسلم دخل مکه فی عمرة القضاء و کعب بن مالک بین یدیه و هذااصح عندبعض اهل الحدیث لان عبدالله بن رواحة قُیسل یوم مُوته و انماکانت عُمرة القضاء بعدذالک" یعی بعض المل صدیث کنزد یک باب کی روایت سے زیادہ وہ روایت اصح ہے جس میں ہے کہ عمرة القضاء کے موقع پر بیاشعار صرت عبدالله بن رواحہ کنیں بلکہ حضرت کعب بن مالک کے ہیں کیونکہ حضرت عبدالله بن رواحہ تو غزوہ موته میں شہید ہو گئے سے جبکہ عمرة القضاء غزوہ موته میں شہید ہو گئے سے جبکہ عمرة القضاء غزوہ موته کے بعدادا ہوا ہے لیکن ابن جرائے نام ترفدی کے اس تیمرہ پر تجب کا اظہار کیا ہے حالانکہ عمرة القضاء میں حضرت جعفر، حضرت عبدالله بن رواحہ تینوں موته میں شہید ہوئے ہیں ۔ پس امام جہ الانکہ حضرت جعفر مضرت زیر اور حضرت دید بن رواحہ تینوں موته میں شہید ہوئے ہیں ۔ پس امام ترفدی تھیے محدث پر یہ تضیہ کے مشتبہ ہوگیا؟ اگر چا یک روایت کے مطابق بیوا قند فتح کم کا ہے کیکن موجودہ نیز جوکروفی کے اپنے خطاکا ہے ہمارے پاس تمام طرق میں ای طرح یعنی عمرة القضاء کے بارے میں۔

تيرى حديث: عن شريح عن عائشة قال قيل لها: هل كان النبى صلى الله عليه وسلم : يَتَمَثّلُ بشعى من الشعر؟قالت كان يَتَمَثّلُ بشعر ابن رواحة ويقول: ويأتيك بالأخبار من لم تُزَوِّد".

حفرت بھرت محفرت عائش سے نقل کرتے ہوئے فرماتے ہیں کہ حفرت عائش ہے پوچھا گیا: کیا ہی صلی اللہ علیہ وسلم بھی کوئی شعر پڑھتے تھے؟ حضرت عائش نے فرمایا کہ ہاں پڑھتے تھے، ابن رواحہ "کاشعر پڑھتے اور فرماتے" ویاتیک بالا خبار النح" اطلاعات دے گاتمہیں وہ جس کوتو نے توشنہیں دیا۔
قوله: "یتمثل" اصل میں بطور مثال اور بطور استشہاد شعر پڑھنے کو کہتے ہیں گریہاں نفس پڑھنے کے قولہ: "یتمثل" اصل میں بطور مثال اور بطور استشہاد شعر پڑھنے کو کہتے ہیں گریہاں نفس پڑھنے کے

معنی میں ہے۔ قول ہ: "بشعوابن رواحه" ماشی توت پرہے کہ حضرت عائش نے جواب میں فرمایا کہ آپ کوشعرتمام باتوں سے زیادہ ناپندیدہ تھا تا ہم ایک دفعہ انہوں نے اخی بن قیس کا شعر پڑھا توا سے آگے پیچے کرے پڑھا، ویا تیک ومن لم تزوّدِ بالا خبار ابو بکر نے فرمایا ایمانیس ہے فقال رسول الله صلی الله علیہ وسلم "انی والله مااناب شاعر و ماین بغی لی" پیچے عرض کیا جا چکا ہے کہ آپ کے بطور نقل شعر پڑھنے میں اختلاف ہے، ہرفرین کے لئے دلائل موجود ہیں۔ پھر حضرت عائش نے بیشعر جوابن رواحہ کی طرف منسوب کیا ہے بینبت بجازی ہے کونکہ یشعر دراصل طرف بن عبد بحری کا ہے، پوراشعراس طرح ہے۔

ستبدى لك الايسام مساكنت جاهلا

ويساتيك بسالاخبسارمن لم تنزود

زمانہ تیرے پاس بہت جلدوہ نجریں پیش کرے گاجن کوتو نہیں جانتا۔اور نجریں لائے گاتیرے پاس وہ جے تو نے توشنہیں دیا۔ مین لم تنوو دیش ' زمانہ اور ایام سے عبارت ہے لینی مرور زمانہ کے ساتھ خود بخو دہ میں ' تمانہ کو کلہ حوادث اور واقعات پیش آتے ہیں پھران پر آ فار مرتب موتے ہیں اس طرح اسباب و مسببات کا پیسلسلہ ہمیشہ جاری رہتا ہے اور زمانہ والے ان سے آگی حاصل کرتے رہتے ہیں حالا نکہ ان اطلاعات کے لئے کسی قاصد کو زادراہ دے کر بھیجنا نہیں پڑتا بلکہ خوابی ونا خوابی وہ اطلاعات روز انہ آتی رہتی ہیں۔

يُحَكَّى حديث: - "عن ابسي هريسرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: اَشعَرُ كلمة تَكَلَّمت بهاالعرب كلمة لبيد: اَلاكُلُ شئى ماخلاالله باطل". (حسن صحيح)

نی صلی الله علیه وسلم نے فر مایاسب سے اچھاشعر جوعر بول نے کہاہے بیکلام ہے " آگاہ ہواللہ کے سواجو کھے ہے دواختام پذیرہے "۔

اس میں اشعر بمعنی اجوداور عدہ کے ہاور عرب سے مرادعرب شعراء ہیں یعنی عربی شعراء میں سب
سے اچھا شعر لبید کا میشعر ہے۔ حضرت لبید بن ربیعہ گی آدھی زندگی شعروشا عربی میں گذری تھی محر پھراپی توم کے
وفد میں نبی سلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوکر مشرف باسلام ہوئے اس کے بعد شاعری سے کمل اجتناب
کرتے رہے اور فرماتے بس میرے لئے قرآن کا فی ہے کوفہ چلے گئے تصاور اس میں وفات پائی، نبی سلی
اللہ علیہ وسلم نے ان کے اس شعر کی تعریف اس لئے فرمائی کہ یقرآن کے ساتھ موافق ہے۔

يا تجديك: "عن جابربن سمرة قال جالستُ النبي صلى الله عليه وسلم اكشر من مائة مرة فكان اصحابه يتناشدون الشعروتذاكرون اشياء من امر الجاهلية وهو ساكت فربمايتبسم معهم". (حسن صحيح)

حضرت جابر بن سمرہ سے روایت ہے فرماتے ہیں کہ میں نبی سلی اللہ علیہ وسلم کے پاس سومر تبہ سے بھی زیادہ بیٹھ چکا ہوں ،آپ کے صحابہ اشعار پڑھتے تھے اور آپس میں امور جا ہلیت کا فدا کرہ (تذکرہ) کیا کرتے تھے جبکہ آپ خاموش رہتے تھے اور بھی ان کے ساتھ مسکراتے تھے۔

یردوایت مسلم میں بھی ہے اس میں تضریح ہے کہ یہ نیشست فجری نماز کے بعد ہواکرتی تھی اورطلوع مشس تک بیسلہ جاری رہتا تھا' فاذاطلع الشمس قام و کانوایت حدّثون فیا خدون فی امر الجاهلیة فیصن حکون ویَتَبَسّم''۔ (مسلم: ص:۲۳۵ج:۱) مثلاً کوئی کہتا کہ میں نے میس (مجبور، پنیراور کھی) کائیت بنایا تھالیکن قحط پڑاتھا تو میں نے اسے کھالیا، دوسرا کہتا کہ میں نے ایک دفعہ دیکھا کہ میرے بُت پرلومڑی چڑھ کر بیٹا بردی تھی اس لئے میں نی صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آکر مسلمان ہوگیا۔

باب ماجاء لأن يَمتَلِي جوف احَدِكم قيحاً خيرله من ان

يمتلئ شعراً

(پیٹ کا پیپ سے جرجانا ،شعر کے جرنے سے بہتر ہے)

"عن سعدبن ابى وقاص قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : كَان يَمتَلِئَ جوڤ احدكم قيحاً خيرله من ان يمتلئ شعراً". (حسن صحيح)

حضرت سعد بن ابی وقاص فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: بلا تھیمہ اگرتم میں سے کسی ایک کا پیٹ ، پیپ سے بھرچائے تو وہ اس سے بہتر ہے کہ وہ اشعار سے بھرچائے۔ اور اگلی روایت جو حضرت ابو ہریرہ سے مرفوعاً مروی ہے میں قیجاً کے بعد 'یکو یہ خیو الله النح''کا اضافہ ہے بینی وہ پیپ بھی الی ہوجواس کے پیٹ کومڑ اکر بگاڑ دے اور فاسد کردے تب بھی وہ اشعار سے افضل ہے۔

تشريخ: فول : "يَرِيه" رَاه يرِيه رَيها ووَرى مروزن رَي وه بارى اورمواد جو پيك كوفراب

كرد به مطلب بيه به كفاط اشعار يا كثرت سي شعروشاعرى كومعمول بنانا موذى بيارى سي بهى زياده تباه كن بيارى سي بهى زياده تباه كن بي كونك شاعرى مي انهاك آدى كوتر آن پاك سي عافل كرويتا به بجيبا كه ابن تيمية في وله خات بحد من اكثر من سماع القصائد لطلب صلاح قلبه تنقُصُ رغبته في مسماع القر آن حتى ربما يكرهه و من اكثر من السفر الى زيارة المشاهد و نحوها لا يبقى لحج البيت المحرم في قلبه من المحبة النه...

و نحوها لا يبقى لحج البيت المحرم في قلبه من المحبة النه...

(اتتناء المراط المستقم قالمة امحاب الحجم على المدار المناء المراط المستقم قالمة المحاب الحجم على المدار المدار المراط المستقم قالمة المحاب الحيم على المدار المدا

باب ماجاء في الفصاحة والبيان

(بولنے میں تکلف کابیان)

"عن عبدالله بن عمرو إن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: إن الله يَبغَضُ البليعَ من الرجال الذي يَتَخَلَّلُ بلسانه كماتَتَخَلَّلُ البقرة". (حسن غريب)

بے شک اللہ ناپند کرتا ہے لوگوں میں سے اس بلیغ آدمی کوجوباتوں کواپٹی زبان سے اس طرح لیٹتا ہے جس طرح گائے (اپنی زبان سے جارہ کو) لیٹتی ہے۔

تشری : قول د: "البلیغ" یمن العادت میں مبالغہ کرنے والا جوبا تیں بنانے میں بہت تکلف کرتا ہے۔ قبول د: "من الموجال "خصیص مراز بین گرم دول میں نصاحت پیدا کرنے کا شوق زیادہ ہوتا ہے اگر کوئی عورت بھی پیشوق رکھے جیسا کہ آج کل اس کی بھی رسم چلی ہے تو اس کو بھی پیوٹی شامل ہوگ قولہ: "یت حلّل" محما تا ہے اپنی زبان کو اس بارے میں تفصیل بحث پیچے گذری ہے ،خلاصہ یہ ہے کہ آدی کو تکلف سے بچتا چاہئے بیضابطہ جیسے بولئے کا ہے ایسائی لکھنے والوں کے لئے بھی ہے کہ اپنی تقریر دی کریم اپنی استعداد کے بچتا چاہئے بیضابطہ جیسے بولئے کا ہے ایسائی لکھنے والوں کے لئے بھی ہے کہ اپنی تقریر دی کریم میں اپنی استعداد کے مطابق بولئا اور لکھنا چاہئے عبارات خود بخو داس کی ٹوکے زبان پر آنے لگیں تو وہ خدموم نہیں جیسے آپ کے خطبات بیرار ہا ہے جس کے بعد مُرتب میں جیسے آپ کے خطبات وادعیہ میں بیرنگ دیکھا جاسات کے دیا جاسکتا ہے۔

بابٌ

"عن جابربن عبدالله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : حَيِّرواالآنية واوكُوا الاسقية واجيفواالابواب واطفئواالمصابيح فان الفُهَهُ سَقَة رُبَّمَا جَرَّت الفتيلة فاحرقت اهل البيت". (حسن صحيح)

حضرت جابر بن عبدالله قرماتے بیں کدرسول الله علیه وسلم نے فرمایا برتن کوڈ ها تک دیا کریں!
مشکیزہ کامنہ باندها کیجئے! اور دروازے بند کیا کریں! اور چاغوں کوگل کیا کریں، کیونکہ بھی بھار چوہا بتی کو
مشکیزہ کامنہ باندها کیجئے! اور دروازے بند کیا کریں! اور چاغوں کوگل کیا کریں، کیونکہ بھی بھار چوہا بتی کو
مشکی ہے اس طرح کھر والوں کوجلادیتا ہے، یعنی رات کوسوتے وقت ان ہدایات پر مل کریں! ریدوایت بح
تفصیلی شرح تشریحات: ج:۲ص:۹۳ پر گذری ہے فیراجی ''باب مساجاء فی تنحمیر الاناء واطفاء
السراج المنح من ابواب الاطعمة'')

باب (بِلا ترجمه) (جانوروں)ابھی خیال رکھنا جاہے)

"عن ابى هريسرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: اذاسافرتم فى الخِصبِ فاعطوا الابل حَظهامن الارض واذاسافرتم فى السَنتة فبادروابهانقيهاواذاعر ستم فاجتنبوا الطريق فانهاطُرُق الدواب ومأوى الهَوَامَ بالليل". (حسن صحيح)

حضرت ابوہریرہ سے روایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: جبتم شادابی میں سفر کروتو اونٹوں کوزمین میں سے اُن کا حصہ دیا کرو! اور جبتم خشکی اور قبط زدہ جگہ میں (یاوقت میں) سفر کروتو ان کوجلدی گذارو، ان کی قوت باتی رہنے کی خاطر! اور جبتم آخر شب میں آ رام کے لئے اتر وتو راستہ سے الگ ہوجاؤ اس لئے کہوہ راستے ہیں جانوروں کے اور ٹھکا نا ہے زہر ملے کیڑوں کا۔

تشریخ:۔قولد: "خِصب "بکسرالخام بروزن سِدرمرادوه موسم ہے جس میں گھاس اور ہریالی بکثرت ہوتی ہے، ہریالی جگرت ہوتی ہے، ہریالی جگر ہوتی ہے۔قبولد: "السنة" نصب کے مقابل ہے وہ زمانہ جس میں گھاس خشک ہوجاتی ہے جینے بڑواں کامہیند، مرادخشک جگہ بھی ہوسکتی ہے لین جبتم الی جگہ سے گذروجہاں جانوروں کا

چارہ کشرت سے موجود ہوتو ایسے بیں جانوروں کاخیال رکھو بایں صورت کہ وہاں پھود جرکے لئے پڑا وَڈالوتا کہ اونٹ چہ جا تیں اس کے برعکس جب چارہ نہ ہوتو وہاں سے جلدی گذرنے کی کوشش کروتا کہ جانوروں کو بھوک گئے سے پہلے پہلے مناسب جگہ بڑنج سکوتا کہ جانوروں کے چارے کا وہاں انتظام ہوسکے۔اور جب جہیں رات کو کہیں سونے اور آرام کرنے کے لئے اثر تا پڑے تو راستہ سے ایک جانب ہوکر آرام کرو کیونکہ راستہ بیل خطرہ ہوتا ہے وہاں سے چویا ئیں بھی گزرتے ہیں اور موذی جانور بھی راستوں کی طرف آتے ہیں۔

قوله: "نقیها" نتی اصل میں ہڑی کے گودے کو کہتے ہیں گریہاں مراد توت ہے کیونکہ ہڑی کی نالیوں میں جب تک گودا ہوتا ہے تو طاقت قائم رہتی ہے جبکہ بھوک اور قبط کی وجہ سے اس میں کمی کی بناء پر کمزوری لاحق ہوتی ہے۔

باب (بلا ترجمه) (کلی میت پزہیں سونا جائے)

"عن جابرقال نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان ينام الرجل على سطح ليس بمحجور عليه". (غريب)

رسول الله صلى الله عليه وسلم نے اليي حجمت پرسونے سے ممانعت فرمائی ہے جس (كردمنڈ يروغيره ديوار بناكراس) كومخوظ نه بنايا مميا ہو۔

تشری : الی حیت جس کے اطراف پردیواریا کوئی دوسری زگادٹ کرنے سے نہ ہوتوالی حیت پرسونے سے نیندکی حالت میں بھی کرنے کا خطرہ رہتا ہے اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ رات کو اُٹھنے کی ضرورت پیش آئے اور بے خیالی میں نیچ کرجائے۔ ہاں جوجیت بہت بڑی ہواور گرنے کا اندیشہ نہ ہوتو پھر کراہیت نہیں ہوگی۔

مديث آخر: "عن عبدالله قسال كسان رسول الله صلى الله عليه وسلم يتخوّلنا بالموعظة في الايام مَخَافَة السّآمَةِ علينا". (حسن صحيح)

حضرت عبدالله بن مسعود فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نفیحت کرنے میں وقا فو قا ہماری کھیداشت فرماتے (یعنی ہماراخیال رکھتے) اس خوف کے پیش نظر کہ ہم اُ کمانہ جا کیں۔ تشریح: ۔قوله: "یَتَخَوَلُنا" خائے مجمہ کے ساتھ بمعنی دیکہ بھال کرنے اور خیال رکھنے کے ہے بعض نے ماے مہملہ کے ساتھ بھی نقل کیا ہے پھر بیمال سے بناہے ای بسطلب احوالندایین آپ ہمیں نشاط کی مالت میں وعظ فرماتے مرخائے معجمہ والانتح اصح ہے امام بخاریؒ نے کتاب العلم میں ترجمۃ الباب میں 'بتخو لھم' 'خائے معجمہ کے ساتھ فل کیا ہے۔ قبولہ: ''مخافحۃ السامحة'' مخافۃ مفاف اور بناء برمفعول لہ منصوب ہے سائمۃ بمعنی تھکن وماندگی کے ہے، لین آنحضور وعظ وقعیحت میں صحابہ کرام کے شوق اور ماندگی دونوں کو فوظ رکھتے جب شوق ہوتا تو وعظ فرماتے اور جب تھکا وٹ محسوس فرماتے کہ صحابہ کرام تھک سکتے ہیں دونوں کو فوظ رکھتے جب شوق ہوتا تو وعظ فرماتے تا کہ صحابہ کرام '' کا شوق نداو شخے بائے ، چنا نچہ بھی آداب تبلیغ ہیں کہ معروف اور تھکے ہوئے آدمی کواس اندیشہ کے بیش نظر وعظ نہیں کہنا جا ہے کہ شایداس کواچھانہ گئے۔

باب (بلا ترجمه)

(اچھاعمل وہ ہے جودائمی ہو)

"عن ابى صالح قال سُئِلت عائشةُ وام سلمة :اَىُّ العمل كَان احَبُّ الى رسول الله صلى الله عليه وسلم ؟قالتامادِيمَ عليه وان قلَّ ". (حسن صحيح غريب)

حفرت عائشہ اورحفرت امسلمہ ہے پوچھا گیا کہرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کوکون سامل پندھا؟ دونوں نے فرمایا جس پر بیکنگی و مداومت کی جائے آگر چہوہ تھوڑ اہو۔ دوسری سند میں حضرت عائشہ سے مروی ہے کہرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کودہ ممل سب سے زیادہ پندیدہ تھا جس پر بیکنگی کی جائے۔ (صحیح)

تشریخ: قول الله و الله



البي الاحتال عن رسول الله صلى الله عليه وسلم

امثال، مُثَلُ المُحْتِين كى جمع ہے اس كى مختلف و متعدد صورتيں اور معانى ہيں تا ہم يہاں ہمعنى مثال كے ہے جيسا كرار دو ہيں استعال ہوتا ہے ، لفظ مثال لغوى اعتبار ہے ہم حنى انتقال كة تا ہے ' مَفَلَ فيلان 'اس وقت كہا جا تا ہے جب آ دى اپنى جگہ ہے ہے جٹ جائے ، چونكہ عام لوگ محسوسات ہے مانوس ہوتے ہيں اس كے معقولات كا مجھناان كے لئے بہت وشوار ہوتا ہے فاص كر جب كوئى فالص معقولى امر ہوتو جب اس كى تشبيه كى محسوس چيز كے ساتھ دى جاتى ہے تو وہ معقول كا محسوس ہوجاتا ہے اور جلد ہى مجھ ہيں آ جاتا ہے ، اس لئے كلام بارى تعالى ميں اور انبيا علیہم السلام اور ديگر حكماء كى كلام بيں اَمثال ہيں معنى معقول سے محسوس كی طرف انتقال ہوتا ہے۔ ابن العربی عارضہ میں کہتے ہیں كہوائے امام تر فدی كے كى محدث كو ميں نہيں جاتا كہ اس نے اپنى كتاب ميں اَمثال كے لئے كوئى مستقل باب قائم كيا ہواگر چہ امام موصوف نے بہت اختصار ہے كام لئے رسم نے اور محسوس سے دورہ احاد يہ ذكر فرمائى ہیں تا ہم اس پر بھی ہم ان كے شكر گذار ہیں كويا امثال كے لئے ساتھا ل باب با ندھنا جام عرق تر فدى كی خصوصیت ہے۔

باب ماجاء في مثل الله عزوجل لعباده

(الله عزوجل كي بيان كي موئي مثال كاتذكره)

"عن النوّاس بن سِمعان الكِلابى قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ان الله صلى الله عليه وسلم: ان الله صلى المنوّل مستقيماً على كَنفى الصراط زُورَان لهماابواب مُفَتَّحة على الابواب سُتُورٌوداع يدعُواعلى رأس الصراط وداع يدعُوفَوقه "والله يدعواالى دارالسلام ويهدى من يشاء الى صراط مستقيم" والابواب التى على كَنفى الصراط حدودالله فلايَقَعُ احدّفى

حدودالله حتى يُكشَفَ السِّترُ والذي يدعُومن فوقه واعظ ربه". (حسن غريب)

حضرت نواس بن سمعان فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ اللہ نے ایک مثال
بیان کی ہے کہ ایک سیدهاراستہ ہے ،اس راستہ کی دونوں جانبوں میں دود بواریں ہیں ،ان د بواروں میں گھلے
ہوئے دروازے ہیں ،دروازوں پر پردے پڑے ہیں راستے کے سرے پرایک بکار نے والما بکارتا ہے (کہ سیدها
چلو) اورایک دوسرادا گی اس کے او پرسے بکارتا ہے ،اوراللہ سلامتی کے گھر (جنت) کی طرف بلار ہاہے اوراللہ
جے چاہتا ہے اسے سیدھی راہ دکھا تا ہے ،وہ دروازے جوراستہ کی دونوں طرف ہیں اللہ کی صدود ہیں ہی کوئی شخص
اللہ کی صدود میں اس وقت تک واقع نہیں ہوتا جب تک کہ پردہ ندا شھایا جائے ،اور جودا گی اس کے او پرسے بکار رہا
ہے دہ اس (مومن) کے رب کی طرف سے واعظ ہے۔

تشری حقوله: "ضرب" ای بین حقوله: "صراطاً مستقیماً سشلات بدل ب حقوله: "صراطاً مستقیماً سشلات بدل ب حقوله: "خوران"

"علی کنفی الصراط" گف بروزن قمر جانب وطرف کو کہتے ہیں گئی اس کا تشنیہ ب حقوله: "زُورَان"
بضم الزاء زُورکا تھیہ ہے دیوارکو کہتے ہیں ایک روایت میں "سُوران" آیا ہے سُور بھی دیوارکو کہتے ہیں شایدزور، سور سے بنا ہے ۔قوله: "سُتُورٌ "سِتر کی جمع ہمنی پردہ کے ۔قوله: "و دَاعِ یدعُوفوقه" ای فوق الداعی الاول ۔قوله: "واعظ رَبِّه" یعنی مومن کا قلب وضمیریا مُلهم فرشته مراد ہے، الہام کے مقابل شیطانی وسوسہ ہے۔

صدیت شریف اور مثال کا مطلب بید بے کہ اللہ نے ہرمون کے آگے اسلام کا سید حاراست منزل تک پہنچا یا ہے جب آ دمی اس راستہ پرچانا ہے تو ابتدائے سفر سے راستہ کے آغازی پرقر آن اور نبی صلی اللہ علیہ وسلم سید حاصلے اور اِدھراُ دھرنہ جمانکنے کی تلقین کرتے ہیں کہ 'وَانَ هذا صراطِی مستقیماً فاتبِعُوه و لا تَتبِعُوا السّبُلَ فت فرق بسکہ عن سبیله ط ذالکم وَصْکم به لعلکم تتقون ''۔(الانعام آیت: ۱۵۳) اور ارشاد ہے 'ان هذا القر آن بهدی لِلّتی هی اقومُ ''۔(بنی اسرائیل: آیت: ۹)

اس راستہ کی دونوں جانب دیواروں میں گھلے دروازے ہیں بیمُو مات ہیں جیسے زناوغیرہ ان دروازوں پر، پردے پڑے ہوں جانب دیواروں میں گھلے دروازوں پی بیرہ کے درمیان حاجز اور رُکاوٹیں ہیں جیسے دیا، مروت، عفت اور عاروغیرہ اس طرح حرام وحلال کے درمیان محسوس پردے وحدود بھی ہیں جیسے حیطِ ابیض من الفجر رمضان میں حرام میں آدمی تب بی واقع ہوتاہے جب اس پردہ کواٹھادے اور آسمے بڑھ جائے ہیں جب

مسلمان اسلام کے مطابق زندگی گذارتا ہے قد دوران سنر ادھراُدھر کے محرمات کی طرف خواہش ماکل کردیتی ہے تو آدی یہ سوچتا ہے کہ صرف پردہ اٹھا کرجھا تک لوں گااس کے پیچھے گلی میں کیا ہے اندھر جاؤں گانہیں کین دہ ہرا اوپر (غیب سے) ایک دوسرا داگی اسے پکارتا ہے کہ ارے! پردہ ہر گزنداُ ٹھا دورند پھر دالیسی نہ ہوسکے گی یہ دوسرا داگی مومن کا خمیر یا فرضتے کا البام ہے جواللہ کی طرف سے مقررہ تو نفس وشیطان وسوسدڈ النا ہے کہ تھوڑ اپردہ اٹھانے اوراندر جانے میں کیا حرج ہے؟ لیکن دائی روکتا ہے۔ چنا نچہ مشاہدہ ہے کہ جولوگ حرام کا اس طرح تجربہ کرنا چاہتے ہیں وہ عموماً اندرتک چلے جاتے ہیں اور پھر آگے ہوجے تی چلتے جاتے ہیں، کتنے الیے لوگ ہیں جوانسان کے تل سے ڈرتے ہیں محربہ کی کے خون سے ہاتھ در تکنے کے بعدوہ اس کو پیشر بناتے ہیں اور بعض لوگ شوقیے بھی ایسا کرتے ہیں جبکہ اللہ والے مقد مات سے بچے ہیں اس لئے وہ اصل گناہ سے بھی محفوظ رہے۔

قوله: "و لا تساحد او اعن اسماعیل بن عیاش النے" جمہور کنزدیک اساعیل کی روایت اگر شامین سے بوتو جمت ہے بشرطیک راوی تقد بولہذا امام ترفریؓ نے ابواسحات کا بیجو تحکم نقل کیا ہے یا تو بیغیر الل شام کے بارے میں ہے یا چربیا بواسحات کی اپنی رائے ہے جوجمہور کے قول سے متصادم ہے۔

(۲) حديث آخر: ان جابربن عبدالله الانصارى قال خرج علينارسولُ الله صلى الله عليه وسلم يوماً فقال: انى رأيت فى المنام كَانٌ جبرئيلَ عندراسى وميكائيل عندرجلى يقول احده مالصاحبه: إضرب له مثلاً فقال: إسمع اسَمِعَت اُذُنُكَ واعقِل! عَقَل قلبُكَ إنّه ما مَثْلُكُ وَمَثُلُ اَمتِك كمثل مَلِكِ إِتّخَذ داراً ثم بنى فيهابيتاً ثم جعل فيهامائدة ثم بَعَث رسولاً يدعو الناس الى طعامه فمنهم من اجاب الرسول ومنهم من تركه فالله هو العلك والمدار الإسلام والبيت الجنة وانت يا محمدرسول فمن اجابك دخل الاسلام ومن دخل الاسلام ومن دخل الجنة ومن دخل الجنة اكلَ مافيها". (مرسل...وقدروى...باسنادا صحمد هذا جياك يخارى ش بي)

حضرت جابر بن عبداللہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ایک دن ہمارے پاس تشریف لائے ،اور فرمایا کہ میں نے خواب دیکھا ہے گویا جرئیل میرے سرکے پاس ہیں اور میکا میل میرے ہیروں کے پاس ہیں،ان میں سے ایک اپنے ساتھی سے کہتا ہے آپ کے لئے کوئی مثال بیان کروا ہی دوسرے نے (مجھ

ے) کہا ساعت فرما کیں! (داری کی روایت میں ہے: ' لِتَنم عینٰک و لِتسمَع اُذُنگ'') اللہ کرے آپ کا کان سے، اور جھیں! اللہ کرے آپ کا دل سمجے، بے شک آپ کی حالت اور آپ کی امت کی حالت اس بادشاہ کی حالت جیسی ہے جس نے کوئی حویلی بنائی پھراس میں ایک کمرہ (بیٹھک) تیار کیا پھراس کمرہ میں دعوت راعام) کا انتظام کیا پھرا یک قاصد بھیجا جولوگوں کو کھانے کی طرف بکائے پس پچھلوگوں نے قاصد کی بات مانی اور پچھلوگوں نے اسے نظرانداز کردیا پس اللہ تبارک و تعالی بادشاہ ہے اور حویلی دین اسلام ہے اور کمرہ (بیٹھک) جنت ہے۔ جس میں دستر خوان بچھا ہوا ہے اور آپ اللہ کے قاصد ہیں جو خص آپ کی بات مانے گاوہ دائرہ اسلام میں داخل ہوگا وہ جنت میں جائے گا اور جو جنت میں جائے گاوہ جنت کی نعمین کھائے گا۔

(٣) حَدِيثَ آخر: ـ "عن ابن مسعودٌ قال صَلَّىٰ رسول الله صلى الله عليه وسلم العشاء ثم انصرف فاخذبيدعبدالله بن مسعودحتى خرج به الى بطحاء مكة فَاجلَسَه ثم خطّ عليه خطّاتُم قال: كاتبرَحَنّ خطك فانه سينتهي اليك رجالٌ فلا تُكلِّمُهُمُ فانهم لن يكلُّمُوكَ ثم مَضيُّ رسول الله صلى الله عليه وسلم حيث اراد فبينا اناجالس في خَطِّي اذ اتَّاني رجال كانهم الزُّطُّ السعارهم وانجسامهم لاارَيْ عورةً ولاارَيْ قِشراً وينتهون إلَيَّ ولايبجاوزون النحط ثم يصدرون الى رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى اذاكان من آخرالليل الكن رسول الله صلى الله عليه وسلم قدجاء ني واناجالس فقال: لقدارًاني مُنذالليلة ثم دخل عَلَيَّ في خَطِيّ فَتَوَسَّدَ فَخِذِي فَرَقَدُوكان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذارقدنفخ فبينااناقاعدورسول الله صلى الله عليه وسلم متوسدفخذى اذاانابرجال عليهم ثياب بيض ،الله اعلم مابهم من الجمال فانتهو اإلى فجَلَسَ طائفة منهم عندرأس رسول الله صلى الله عليه وسلم وطائفة منهم عند رجليه ثم قالوابينهُم :مازأيناعبداًقَطُ أوتى مثل ماأوتى هـذاالـنبـي صـلـي الله عليه وسلم :إنَّ عينيه تنامان وقلبه يقظان اضربواله مَثَلاً مَثَلَ سيّدٍ بَنيٰ قبصراً ثم جعل مائدة فدعاالناس الى طعامه وشرابه فمن اجابه اكل من طعامه وشرب من شرابه ومن لم يجبه عاقبه اوقال عدَّبه ثم ارتفعواواستقيظ رسول الله صلى الله عليه وسلم عندذالك فقال: سَمِعتُ ماقال هؤ لاء وهل تدرى من هم؟ قلتُ الله ورسوله اعلم قال: هم السملائكة فتدرى ماالمثل الذي ضربوه ؟فقلتُ الله ورسول اعلم قال المثل الذي ضربوه

الرحمن بَنَى الجنة ودعااليهاعِهاده فمن اجابه دخل الجنة ومن لم يجهه عاقبه اوعَذَّبَه". (حسن صحيح غريب)

حضرت عبداللد بن مسعود سے روایت ہے (بدواقعہ کی دورکاہے) نبی صلی الله علیہ وسلم نے عشاء کی نماز بردهی، پرآت جانے ملے بس عبداللہ بن مسعود الله پاتھ پکڑا بہاں تک کہ آٹ ان کو مکہ کے پھر یلی میدان کی طرف کے میے پس آت نے ان کو بھایا اوران کے گردایک خط کھینجا پھر فر مایا آپ ہر گراہیے دائرہ سے نہ کلیں الله بالمان بيا كرآب كے ياس كھاوگ (جنات) آئيں كے! آپ ان سے بات ندري كونكدوه مجى آپ سے بات نہيں كريں مے، پھرنى صلى الله عليه وال تشريف لے مجے جہاں آپ جا ہ رہے تھے، پس دریں اثناء کہ میں اپنے دائرہ میں تھا کہ یکا یک میرے پاس کھ لوگ آئے جیسے وہ زُطّ (جاٹ) کے ہیں (بیقوم ہندوستان اورسوڈان وغیرہ میں آبادہے)ان کے بال اوران کے جسم اُن (زطیوں) جیسے تھے، نہ تو میں نگلے دیکها تھااور نہ ہی ان پر کپڑے دیکھا تھا (بعنی ان کےجسموں پراگر چالباس نہیں نظر آتا تھا مگران کاستراور کھالیں آ بھی نظر نہیں آ رہی تھیں) وہ لوگ میرے یاس ہنچ مگر دائر ہے اند زمیں آئے بھروہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف محتے یہاں تک کہ جب رات آخر ہوگی (پھر بھی وہ لوگ نہیں اوٹے) لیکن نبی سلی اللہ علیہ وسلم میرے یاس تشریف لائے جبکہ میں بیٹھا ہواتھا،آپ نے فرمایا واقعہ بہے کہ میں نے ویکھا اینے تیک آج رات (بعن میں بوری رات نہیں سویا) پھرآت میریے یاس دائرہ میں داخل ہوئے اور میری ران کو تکیہ بنا کرسو مجئے اور رسول الله صلی الله علیہ وسلم جب سوتے تو خرائے لیتے تھے ہیں دریں اثنا کہ میں بیشا ہوا تھا اور رسول الله صلی الله علیہ وسلم میری ران كوتكيد بناكرسوسة موئ تنے لي أجا تك ميرے باس كچھلوگ آئے جنہوں نے سفيد كيڑے كان ركھے تھاور الله تعالی بی بہتر جانتے ہیں اُس خوبصورتی کو جوان کو حاصل تھی (یعنی وہ نہایت حسین تھے) پس وہ میرے پاس بنجے اس میں سے ایک جماعت رسول الله صلی الله علیه وسلم کے سرمبارک کے پاس بیٹھی اور دوسری جماعت ان کی،آٹ کے بیروں کے ماس بیٹھی (میسب فرشتے تھے اوران میں حضرت جبرئیل اور حضرت میکائیل تھے جیسا ۔ کہ سابقہ روایت میں ہے) پھرانہوں نے آپس میں کہاہم نے بھی کوئی بندہ ایانہیں دیکھاجودیا گیاہوان کمالات کے مانند جوبیہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم دیئے گئے ہیں،ان کی دونوں آٹکھیں سوتی ہیں مکران کا دل بیدار ہے ان کی کوئی مثال بیان کرو! (مثال) آپ کا حال اس آقا (سردار) کے حال جیسا ہے جس نے کوئی حویلی بنائی پھر دعوت کا انظام کیا اورلوگوں کواینے کھانے اور پینے کی طرف نکایا، پس جس نے اس دعوت کو تبول کیا تو وہ اس کے کھانے سے کھانے گا اور اس کے پینے سے پٹے آئے گا، اور جس نے وہ دعوت بول نہیں کی تو سزادے گا وہ مردار (راوی کوشک ہے کہ لفظ ' عَاقَبَه ' فر مایا ہے یا ' عَدَّ بَه ' مطلب دولوں کا ایک ہے) مجروہ لوگ (فرشتے) اُٹھ گئے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اس وقت بیدار ہوئے پس آپ نے فر مایا جو پھے انہوں نے کہا وہ میں نے سُن لیا! اور کیاتم جانے ہوکہ یہ کون لوگ تھے؟ میں نے عرض کیا اللہ ور سول اسا علم آپ نے فر مایا بیفر شتے تھے اور کیاتم جانے ہوجومثال انہوں نے بیان کی وہ کیاتھی؟ میں نے کہا اللہ ور سول اعلم آپ نے فر مایا انہوں نے جومثال بیان کی (اس کی حقیقت) ہے کہ اللہ نے جنت بنائی اور اس کی طرف اپنے بندوں کو کا یا پس جس نے اس کو قبول کیا وہ جنت میں داخل ہوگا اور جو تھیلی نہیں کرے گا اے اللہ عذا ب دے گا۔

دونوں حدیثوں سے معلوم ہوا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سوتے میں بھی بیداری کی حالت کی طرح بات کی طرح بات کو سنتے اگر چہ آئک میں بندرہتی تھیں اس لئے کہتے ہیں کہ انبیا علیم السلام کے خواب بھی وی ہوتے ہیں کیونکہ ان کے قلوب پر بھی بھی خفلت نہیں آتی ہے، یہ بھی معلوم ہوا کہ سابقہ روایت میں ' سَبِ عَت اُذُن ک اور عَقَل قلبُک' وعائی جلے ہیں گراس کے ساتھ معنی اخباری پر بھی مشتل ہیں۔

چونکہ وہ پہلے لوگ جنات تھے اس لئے وہ دائر ہ کے اندر نہ آ سکے جبکہ دوسر سے فرشتے تھے وہ اندرتشریف لے آئے کیونکہ وہ کیسر جنات کے لئے تھی ، تا کہ حفاظت رہے۔

باب ماجاء مَثَلُ النبي والانبياء صلى الله عليه وعليهم

اجمعين وسلم

(المنخضرت صلى الله عليه وسلم اور دوسرے انبياء ليهم السلام كي مثال)

"عن جابربن عبدالله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: انمامَثلِي وَمَثَلُ الانبياء كَرَجُلٍ بَسَىٰ داراً فاكملهاو آحسنها إلاموضع لَبِنَةٍ فجَعَلَ الناس يدخلونها ويتعَجَّبُون منها ويقولون لولاموضع اللبنة". (حسن صحيح غريب)

حضرت جابر بن عبداللد فرماتے ہیں کہ رسول الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ میری مثال اور انبیاء کی مثال ایس ہے جیسے ایک آدمی نے ایک گھر بنایا اور اسے پورا کر دیا اور بہت خوبصورت بنایا سوائے ایک اینٹ کی مثال ایس ہے جیسے ایک آدمی کے ایک گھر بنایا اور اسے تعجب کرتے رہے اور کہتے کی جگہ کے (کہ اسے خالی رکھا) پس لوگ وافل ہونے گے اس گھر میں اور اس سے تعجب کرتے رہے اور کہتے سے کہ کاش یوایک اینٹ کی جگہ خالی نہوتی (تو کیا خوب ہوتا)

تشری : یہ تشبیہ تمثیلی ہے جس کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ مُخبہ کے اوصاف میں سے ایک وصف کی تشبیہ دی جاتے مُخبہ ہے اوصاف میں سے ایک وصف کے ساتھ ، علی بندایہ ال مشبہ کے مفر داور مشبہ یہ کے جمع ہونے پراعتراض وار ذہیں ہوگا۔ اس تشبیہ کے بارے میں ابن العربی نے عارضہ میں لکھا ہے کہ جمعے کی سے تبلی بخش وضاحت نہ کی گیر میں نے خود مو چا تو اس نتیجہ پر پہنچا کہ آپ اس ممارت کی بنیا دی این ہے کی حیثیت رکھتے ہیں اگر آپ نہ ہوتے تو ساری ممارت گرجاتی ، لیکن الکوکب الدری میں جومطلب حضرت گنگوتی نے بیان کیا ہیں اگر آپ نہ ہوتے تو ساری ممارت گرجاتی ، لیکن الکوکب الدری میں جومطلب حضرت گنگوتی نے بیان کیا ہو وہ اس اعتبار سے زیادہ اچھا ہے کہ اس سے باتی انبیاء کے ادیان کی تنقیص کی طرف اشارہ نہیں ہوتا ہے بلکہ امتوں کا نقصان ہی ان کے ندا ہب میں کی کا سبب بنایا گیا ہے لینی جب سابقہ امتوں کے لوگ کمز ورشے اس لئے ان کوان کی شان کے مطابق شریعتیں دے دی گئیں اگر چہوہ شریعتیں تو کا مل تھیں مگر وہ لوگ اپنی عظی کوتا ہی کی بناء پرشرائع کے اسرار ورموز کونہ جان سکے مثلاً وہ معقولات کے زیادہ ادراک سے قاصر ہے تو ان کو محسوں مجزات دکھائے گئے جبکہ آپ کی آ کہ کے وقت انسان طفولیت اور پھر جوانی کے مراحل سے گذر کر سنجیدگ کے مراحل سے گذر کر سنجیدگ کے دور میں واخل ہوگیا تھا اس لئے آپ کوتر آن کا مجز ہ دے دیا گیا جو قیامت تک باقی ہے اور اہل عشل وار باب دور میں واخل ہوگیا تھا اس کے آپ کوتر آن کا مجز ہ دے دیا گیا جوقیا مت تک باقی ہے اور اہل عشل وار باب

ابواب الأمثال

دانش کے لئے عقل وَکرآ زمانے ، مسائل مستنظ کرنے اوراس کے عائبات سے آگاہی حاصل کرنے کا ایک بحرب کنارہے ، ای پر قیاس کرلیا جائے اخلاق اور باتی احکام کی تحمیل کو 'قبال المنبسی صلی الله علیه وسلم بسیشٹ لِاُ تسمسم مسکسارم الاحلاق ''اور چونکہ کمال واتمام کے بعد پھرکوئی ورجینیں اس لئے آپ پر نبوت کا خاتمہ ہوا۔

باب ماجاء مَثَلُ الصلواة والصيام والصدقة

(نماز،روزهاورصدقه کی مثال)

"عن زيد بن سلام ان اباسلام حدثه ان الحارث الاشعرى حدثه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: أن الله أمَرَ يحيى بن زكريابخمس كلمات أن يعملَ بهاويَامُرَبني اسرائيل ان يعملوابها، وانه كادان يُبطِئُ بهافقال عيسيٰ ان الله أمَرَك بخمس كلمات لِتعمل بهاوتأمربني اسرائيل أن يعملوابهافًا مّاأن تأمُرَهم وإمّاأن ا مُرَهم افقال يحييٰ أخشىٰ إن سَبَقَتنِي بهاأن يُحسَفَ بي او أعَذْبَ فجمع الناس في بيت المقدس فامتلا (المسجد)وقعدواعلى الشُرَفِ فقال: ان الله اَمَرَني بخمس كلمات ان اعمل بهن وامُرَكم ان تعملو ابهن أوِّلُهُنَّ ان تعبدو الله و لاتشر كو ابه شيئاً و ان مثل من اشرك بالله كمثل رجل اشترى عبداً من خالص ماله بذهب اوورق فقال هذه دارى وهذاعملى فاعمَل واَدِّالْيَّ! فكان يعمل ويؤدّى الى غير سيده فايكم يرضي أن يكون عبده كذالك(٢)....وان الله أَمَرَكهم بالصلولة فاذاصليتم فلا تلتفتوا فان الله ينصب وجهَه لوجه عبده في صلواته مالم يىلتىفىت (٣)...وامىركىم بىالىصىسام فسان مَشَلَ ذالك كمثَل رجل في عِصابة معـه صُرَّةً فيهامسك فكلهم يعجب اويعجبه ريحهاوان ريح الصائم اطيب عندالله من ريح المسك (٣)...والمُرُكم بالصدقة فان مَشَلَ ذلك كمثل رجل أسَرَه العَدُوُّ فاوثقوايده الى عُنُقِه وقَـدّمُوه ليـضربوا عُنُقَه فقال: أنَاأفدِيه منكم بالقليل والكثير فَفَدانفسه منهم (٥)...وامرُكم ان تـذكر والله فـان مَشَلَ ذالك كـمشل رجـل خرج العدوُّ في أثَره سِراعاً حتىٰ اذاأتيٰ على حِصن حَصِين فاحرَزنفسَه منهم كذالك العبد لايُحرز نفسَه من الشيطان ا لابذكرالله

...قال النبى صلى الله عليه وسلم: واناامرُكم بخمس: اللهُ اَمَرَنى بهن السمع والطاعة والمجهادو الهجرة والجماعة فانه من فارق المجماعة قِيدَشِبر فقد خلع رِبقة الاسلام من عُنقِه الاان يُراجِع ومَن ادَّعى دعوى الجاهلية فانه مِن جُثى جهنم فقال رجل: يارسول الله! وان صلى وصام المقال وان صلى وصام فادعو ابدعوى الله الذى سَمَّاكم المسلمين المؤمنين عبادالله!". (حسن صحيح غريب)

حضرت حارث اشعریؓ ہے روایت ہے کہ رسول اللّه صلی اللّه علیہ وسلم نے فر مایا کہ اللّٰہ نے حضرت کیجیّا ً کو پانچ با توں کا تھم دیا کہ وہ ان پر (خود بھی)عمل کریں اور بنی اسرائیل کو تھم دیں کہ وہ ان پڑمل کریں ،اور بے شک یحییٰ قریب منے کدان باتوں (کے اظہار) میں دیرکرتے ، پس حضرت عیسیٰ (علیہ السلام) نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے آپ کو یا نجے باتوں کا حکم دیا ہے تا کہ آپ ان پڑمل کریں اور بنی اسرائیل کو حکم دیں کہوہ بھی ان پڑمل کریں، پس یا تو آپ ان کو حکم دیں یا پھرمیں ان کو حکم دوں گا! یکیٰ (علیہ السلام)نے کہاا گرآپ نے مجھ سے یہ باتیں بتانے میں سبقت کی تو مجھے اندیشہ ہے کہ مجھے زمین میں دھنسادیا جائے یا فرمایا مجھے سزادی جائے (لیعنی آب نہ بتائیں بلکہ میں بی بتاؤں گا) چنانچہ آپ نے لوگوں کو بیت المقدس میں جمع کیا پس مسجد بھرگئ اورلوگ بالكيوں ميں بيشے، پس يجيٰ (عليه السلام) نے فرمايا بے شك الله نے مجھے يانچ باتوں كاتكم دياہے تاكه ميں خود بھی ان پڑمل کروں اور آپ لوگوں کو بھی ان کا تھم دوں تا کہ آپ لوگ بھی ان پڑمل کریں۔(۱)..ان میں سے پہلی بات (مثال) میے کہ آپ لوگ اللہ کی عبادت کریں اور اس کے ساتھ کسی چیز کوشریک نہ کریں اور اس ھنص کی مثال جواللہ بے ساتھ شریک تھہرا تا ہے اس شخص جیسی ہے جس نے کوئی غلام اینے ذاتی مال سے سونا یا جاندی سے خریدا، پس اس نے (غلام سے) کہا یہ میرا گھرہے اور یہ میرا کام ہے پس تو کام کراورآ مدنی مجھے دیا كرو! پس وه كام كرنے لگااورآ مدنى اينے آتا كےعلاوه (كسى اور) كودينے لگا، بتاؤتم ميں سےكون راضى ہوگا كه اس کاغلام ایبا کرے؟؟؟

(۲).....اور بے شک اللہ تعالی نے تہمیں نماز کا تھم دیا ہے ہیں جب تم نماز پڑھوتو ادھراُ دھرنہ جھا تکو اس لئے کہ اللہ تعالی بندے کی نماز میں اپنا چہرہ (کمایلیق بثانہ تعالیٰ) اس کے چہرے کے سامنے کر دیتا ہے (یعنی اللہ تعالیٰ کی رحمت بندے کی طرف کامل متوجہ ہوتی ہے) جب تک وہ ادھراُ دھرنہ جھا کئے۔

(m).....اوراللہ نے تمہیں روزوں کا تھم دیا ہے بے شک روزوں کی مثال اس مخص جیسی ہے جو کسی

مجمع میں ہواُس کے پاس الی تھیلی ہوجس میں مشک ہوپس سب لوگ جیرت کررہے ہوں یا فرمایا کہ مشک کی خوشبوان کوجیرت زدہ کئے ہوئے ہوا در بے شک روزہ دار (کے منہ) کی اُو اللہ کے نزدیک مشک کی اُو سے زیادہ پندیدہ ہے (اس کا مطلب ابواب الصوم میں گذراہے)۔

(۳)اوراللہ تعالی نے تہمیں خیرات کرنے کا تھم دیا ہے بے شک اس کی مثال اس آ دمی جیسی ہے جس کو تشمن نے قید کیا ہولی انہوں نے اس کے ہاتھ کواس کی گردن سے باندھ دیا ہواورانہوں نے اس کو آگے برطایا ہوتا کہ اس کی گردن ماریں، پس اس محف نے کہا میں تم سے اپنی جان چھڑا تا ہوں ہو للیل اور کیٹر کے ذریعہ رفعایا ہوتا کہ اس کی گردن ماریں، پس اس محف نے کہا میں تم سے اپنی جان چھڑا تا ہوں ہو لیال اور قبل سے نی رفعایا ہوں کو بدلہ (عوض) دے دیا (اور قبل سے نی سب کچھ دینے کو تیار ہوں) چنا نچہ اس نے اپنے نفس کا ان لوگوں کو بدلہ (عوض) دے دیا (اور قبل سے نی اس کے اس کے اس کے اس کی اس کے اس کو بدلہ (عوض) دیا تا ہے کہا تا ہے کہا تا ہے کہا تھی کے اس کے اس کی اس کو بدلہ (عوض) دیا تا ہے کہا تا ہے کہا تھی کے اس کے اس کی اس کی تا ہے کہا تا ہے کہا تھی کے اس کی تا ہے کہا تا ہے کہا تا ہے کہا تا ہے کہا تھی کو تا ہے کہا تا ہے کہا تھی کے اس کو تا ہو کہا تھی کو تا تا ہے کہا تا ہوں کی کا تا ہوں کو تا ہوں کی تا ہوں کو تا ہوں کی تا ہوں ک

(۵)اوراللہ تعالی نے تہمیں علم دیا ہے کہ تم اللہ کو یا کرو کیونکہ اللہ کے ذکر کی مثال اس مخص جیسی ہے جس کے پیچے وشمن تیزی سے چلا آر ہا ہو یہاں تک کہ جب وہ مخص کسی مضبوط قلعہ پر پہنچا تو اس نے اپنے آپ کوان دشمنوں سے محفوظ کرلیا اس طرح بندہ شیطان سے اپنے آپ کومخوظ نہیں کرسکنا مگر اللہ کے ذکر کے ذریعہ رئیں دشمنوں سے محفوظ کرلیا اس طرح بندہ شیطان سے اپنے آپ کومخوظ نہیں کرسکنا مگر اللہ کے ذکر کے ذریعہ رئی شیطان ہے اور ذکر قلعہ ہے) نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا میں بھی آپ لوگوں کوالہ ہی ہی پانچی باتوں کا حکم و یتا ہوں جن کا اللہ نے جمعے حکم ویا ہے : (۱) امیر کی بات سُمتا (۲) امیر کی فرمان برداری کرنا (۳) جہاد کرنا (۳) ہجرت کرنا (۵) جماعت را اللہ حق کی سے بہ بالشت کے جُدا ہوا اس نے اسلام کا پھندا اپنی گردن سے نکال دیا مگر یہ کہ وہ جماعت کی طرف لوٹ آئے بالشت کے جُدا ہوا اس نے اسلام کا پھندا اپنی گردن سے نکال دیا مگر یہ کہ وہ جماعت کی طرف لوٹ آئے اور جوخص پارتا ہے جا ہلیت جیسا پکارنا (یعنی فتحہ و ضماد پرا کساتا ہے) یقینا وہ جہنم کے انگاروں میں سے ہم پس ایک شخص نے پوچھا اے اللہ کی پُکار کے ساتھ پُکارو، وہ پُکار جس سے اللہ تعالی نے تم مسلمانوں اور پر حتا ہوا در روزہ رکھا ہو ؟ آپ نے نے فرمایا آگر چہوہ نماز پر حتا ہوا در روزہ رکھا ہو ؟ آپ نے تم مسلمانوں اور مومنوں کا نام رکھااے اللہ کی پُکار کے ساتھ پُکارو، وہ پُکار جس سے اللہ تعالی نے تم مسلمانوں اور مؤمنوں کا نام رکھااے اللہ کے بندو!

تشریخ: قوله: "وانه کادان يبطئ" تا خرکی وجه شايديقی که وه سوچ رہے تھے که بن اسرائيل کوکس طرح سمجها وَن؟قوله: "فامتلاً" لين مسجد بحرگئ اورلوگ بلنديوں پر بيٹھ گئے کيونکه فرش پرجگه خالی نہيں پی مقی قوله: "شرف" بضم الشين وفتح الراء شرفة کی جمع ہے بروزن غرفة قوله: "حصن "بکسرالحاء قلعه اورصین بمعنی محکم اورمضوط کے ہے۔قولہ: "واناا مُرسیم بعضم النع " چونکه نی صلی الله عليه وسلم کوجوامع

الکام عطاء کئے مجھے تھاس لئے آپ کی یہ پانچ با تیں بظاہر مقدار میں قلیل ہیں لیکن قدر میں کثیر ہیں کیونکہ ان سے کوئی بات با ہزئیں رہتی۔

صدیث میں مندرجہ باتوں پر پیچھے شرح میں مختلف مواقع پر تفصیلاً ابحاث گذر پھی ہیں۔ قبولسد: "من ادّعبی دعوی المجاهلیة" یہ پانچ باتوں پراضا فہ ہے کونکہ امت کاس میں مبتلاء ہونے کا اندیشہ تھا اس لئے آپ نے بطور خاص اس کا ذکر کیا دعوی جا ہلیت سے مراد بے جاتو می عصبیت ہے اور شرکی الفاظ بھی ہوسکتے ہیں۔

باب مثل المؤمن القارئ للقرآن وغيرالقارئ

(قرآن کی تلاوت کرنے اور نہ کرنے والے کی مثال)

"عن ابى موسى الاشعرى قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: مَثلُ المؤمن الذى يقرأ القرآن كمثل الاترنجة ريحهاطيّب وطعمهاطيّب، ومثل المؤمن الذى لايقرأ القرآن كمثل التمرة لاريح لهاوطعمها حُلوّ، ومثل المنافق الذى يقرأ القرآن كمثل الريحانة ريحها طيّب وطعمها مُرّ ، ومثل المنافق الذى لايقرأ القرآن كمثل الحنظلة ريحها مُرّوطعمها مُرّ وحسن صحيح)

حضرت ابدموی اشعری فر ماتے ہیں کہ رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا کہ اس مؤمن کی مثال جو قر آن بیس قرآن پڑھتا ہے اس تُر نج کی ما نندہے جس کی خوشبو بھی اچھی اور ذا تقد بھی عمدہ ہے، اور وہ مؤمن جوقر آن نہیں پڑھتا ہے اس کی مثال مجور کی ہے جس میں کوئی خوشبو نہیں ہوتی تاہم اس کا مزہ شیرین ہوتا ہے، اور اس منافق کی مثال جوقر آن پڑھتا ہے ریحان (نازیو) کی ہے جس کی تُوعمہ ہوتی ہے مگر ذا تقد کر واہوتا ہے، اور اس منافق کی مثال جوقر آن نہیں پڑھتا اندرائن کی ہے جس کی تُوجمہ کر دی (کریہ) ہوتی ہے اور ذا تقد بھی کر واہوتا ہے۔ مثال جوقر آن نہیں پڑھتا اندرائن کی ہے جس کی تُوجمی کر دی (کریہ) ہوتی ہے اور ذا تقد بھی کر واہوتا ہے۔

تشری : یعنی قرآن پڑھے والے مون کا ظاہراورباطن دونوں اچھے ہیں اس کے بریکس قرآن کی تلاوت نہ کرنے والے مون کا باطن تلاوت نہ کرنے والے مون کا باطن تلاوت نہ کرنے والے مون کا باطن تو ایمان کی وجہ سے اچھا ہے کین اس کا ظاہرا چھا نہیں لگ رہا ہے کیونکہ قرآن سے دوری اگر چہ ظاہری ہومو من کے ظاہر کو بدنما بناتی ہے اس کے بریکس قرآن کی تلاوت کرنے والے منافق کا ظاہر تو اچھا ہے کین باطنی خباشت کی وجہ سے پوشیدہ فا کدہ نہیں ہے تا ہم اگر منافق سے مراد کملی منافق ہوتو پھر کہا جائے گا کہ اس کا باطن فی الجملہ کی وجہ سے پوشیدہ فا کدہ نہیں ہے تا ہم اگر منافق سے مراد کملی منافق ہوتو پھر کہا جائے گا کہ اس کا باطن فی الجملہ

خبیث ہے۔(تدبر)

قولسه: "نسرنج" ایکمشہور پھل ہے مالئے کی طرح ہوتا ہے کین پیلا ہوتا ہے کھٹا ہونے کی وجہسے ہوتے ہیں ہوتا ہے جبکہ منظلہ خربوزے کی مانند چھوٹے چھوٹے پھل ہوتے ہیں جو بدمزہ اور بدبودارسے ہوتے ہیں اُردو میں اندرائن کہلا تاہے۔

صديث آخر: - "عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : مَثَلُ المؤمن كمثل النومن كمثل المؤمن كمثل المؤمن يُصيبه بلاء ، ومثل المنافق كمثل شجرة الأرز لاتهتزُ حتى تُستحصَدَ". (حسن صحيح)

مؤمن کی مثال کھیتی کی مانندہے ہوائیں ہمیشداس کو ٹھسکاتی رہتی ہے،اورمؤمن (بھی) ہمیشہ رہتا ہے کہ پنچتی ہے اس کوآ زمائشیں،اورمنافق کی مثال صنوبر کے درخت کی طرح ہے وہ ملتانہیں یہاں تک کہ اسے جڑسے اکھاڑ دیا جائے۔

یعنی جس طرح فصلوں پر مختلف سمتوں سے ہوائیں آتی ہیں اور یول محسوس ہوتا ہے کہ اب کی باریف صلح ختم ہوجائے گی لیکن ایک جانب لیٹ جانے اور گرجانے کے باوجودوہ دوبارہ سیدھی کھڑی ہونے کی کوشش کرتی ہے اور استے میں دوسری جانب سے ہوا آکراسے دوسری طرف زمین بوس کردیتی ہے اور بیسلسلہ آخر وقت تک جاری رہتا ہے اس طرح مؤمن بھی ہروقت بیار یول ، حوادث اور پریشانیوں کی زوپر رہتا ہے جبکہ منافق نہ تو بیار ہوتا ہے اس طرح مؤمن بھی ہروقت بیار یول ، حوادث اور پریشانیوں کی زوپر رہتا ہے جبکہ منافق نہ تو بیار ہوتا ہے اور اس کوئی غم ول پر کھا تا ہے البتہ ایک دن ایسا ہوتا ہے کہ وہ اچا تک جان دیتا ہے اور اس دنیا ہے اس کا رابطہ یک دم ختم کردیا جا تا ہے نہ مال ، نہ اولا داور نہ ہی دوست وغیرہ اس کے کام آتے ہیں جیسے صنو برکا در خت سیدھا آسان کی طرف بڑھتا ہے اور جنگل کے در ختوں میں نمایاں قد ، تنہ اور کسن حاصل کرتا ہے سنو برکا در خت سیدھا آسان کی طرف بڑھتا ہے اور اس کا استیصال ہوجا تا ہے۔

حديث آخر: "عن ابن عمران رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: ان من الشجر شحرة لايسقط ورقهاوهي مثل المؤمن ، حَدِثوني ماهي ؟ قال عبدالله فوقع الناس في شجر البوادي ووقع في نفسي انها النخلة فقال النبي صلى الله عليه وسلم: هي النخلة فاستَحييتُ يعنى ان اقول ، قال عبدالله فَحَدّثتُ عمر بالذي وقع في نفسي ، فقال لان تكون قُلتَها أَحَبُّ إِلَىً من ان يكون لي كذاو كذا وكذا . (حسن صحيح)

عبدالله بن عرف وایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فر مایا بے شک درختوں میں سے ایک درخت ایسا ہے جس کے پیے نہیں گرتے (لیتی ہمیشہ ہرموسم میں وہ تازہ رہتا ہے) اور وہ درخت مومن کی طرح ہے جھے بتا کیں وہ کون ساورخت ہے؟ عبدالله بن عرفتر ماتے ہیں کہ لوگ جنگل کے درختوں میں سوچنے لگے جبکہ میرے دل میں خیال آیا کہ یہ مجور ہی ہے، پس نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا وہ مجور کا درخت ہے، پس میں شرمندہ ہورہا تھا یعنی یہ بتانے سے (کہ وہ محبور ہے) عبداللہ قرماتے ہیں کہ (گھر میں) وہ بات جومیرے دل میں تھی میں نے عرف کو بتائی تو انہوں نے فرمایا اگرتم بتاؤ ہے تو وہ میرے لئے استے اسے مال سے بھی زیادہ خوش افز اہوتا۔

قسولسه: "لایسسقسط و رقها" بیدوجتشیه بھی ہوسکتی ہے اور دوسراقرینہ جواب پربھی ہوسکتا ہے جبکہ پہلاقرینہ بڑتا رتھا جبیار کی نارلایا گیا آپ نے پہلاقرینہ بڑتا رتھا جبیا کہ بخاری وغیرہ کی روایت میں ہے کہ نبی سلی اللہ علیہ وسلم کے پاس بُٹارلایا گیا آپ نے ہاتھ میں لیا اور بیسوال پوچھا بُھار مجود کے تنے کا گودا ہوتا ہے جوچ بی کی طرح سفیدا ورزم سا ہوتا ہے جمکین بھی ہوتا ہے، شہد کے ساتھ کھاتے ہیں۔

اس حدیث میں مومن کی تشبیہ کجور کے درخت کے ساتھ دی گئی ہے عارضہ میں ہے کہ کوئی چیزمومن کے مساوی و برا برنہیں ہو تکی حتی کہ کہ بھی ایکن تمثیلات ہر طرح کی جائز ہے۔ اس کی وجہ تشبیہ ایک ہیہ ہوتا کہ جس طرح کھجور بھی بھی اپنے لباس سے خالی نہیں ہوتا اسی طرح مؤمن بھی لباس التقوی سے عاری و مجر و نہیں ہوتا اور جس طرح کھجور کی ہر حالت نفع بخش ہے اسی طرح مؤمن کے ساتھ اٹھنا ، بیٹھنا ،مشورہ لینا اور ہر طرح کی مشارکت میں فائدہ ہی فائدہ ہی فائدہ ہی اندہ ہی مقطع مشارکت میں فائدہ ہی فائدہ ہی مورک کے بعد بھی اعمال کے فوائد جاری رہتے ہیں۔ نیز کھجور کے درخت کے سر نہیں ہوتا ہے اسی طرح مؤمن کی موت کے بعد بھی اعمال کے فوائد جاری رہتے ہیں۔ نیز کھجور کے درخت کے سر ہیں ہوتا ہے اس کے بقوں اور سے کا نفع منقطع سے اگر پانی گذرجائے تو وہ وہنگ ہوجا تا ہے بیاس کا سرکا ٹاجائے تو بھی وہ مرجا تا ہے اسی طرح مؤمن کا حال ہے اللہ تا اس کے بھور کی مثال کھجور کے ساتھ دی ''و صور ب اللہ مشلا کے لمب کے مورکی جڑمضبوط ہے ، اللہ تبارک و تعالی نے بھی مؤمن کی مثال کھجور کے ساتھ و وہ کھم اور نفع عالی ہے۔ کھجور ہرسال پھلتا ہے ،مؤمن اور نوائد واخر اض عالی ہیں اسی طرح مؤمن کا ایمان مضبوط و محکم اور نفع عالی ہے۔ کھجور ہرسال پھلتا ہے ،مؤمن ہوں ہیں ہیں ہوتی ہے اورمؤمن کو تعلیم دی جاتی ہے۔

اس حدیث سے کئی مسائل بھی معلوم ہوئے ،مثلاً اپنے طلبہ کا وقتاً فو قنامتحان لینا، جواب پرقرینہ نصب کرلینا،اور ریہ کہ جب حیاء سے مقصود فوت نہ ہوتا ہوتو خاموثی ندموم نہیں ہے،اور ریہ کہ چھوٹوں کو بڑوں کے سامنے خاموثی اختیار کرلینا افضل ہے،اور یہ کہ جس کے گھر میں ذبین ودیندار بچہ ہوتو اس سے خوثی ہونی چاہئے، دیگر وجہ حضرت عمر اللہ علیہ وہنی کہ اگر ابن عمر یہ جواب بروقت دیتے تو نبی سلی اللہ علیہ وسلم کوخوثی ہوتی جوحضرت عمر کے لئے سُر خ اونٹوں کے گئے ہے بھی زیادہ محبوب تھی۔ جن روایات میں اغلوطات سے ممانعت آئی ہے ان سے مرادا سے اُنٹوں کے گئے ہے بھی زیادہ محبوب تھی۔ جن روایات میں اغلوطات سے ممانعت آئی ہے ان کے ساتھ میں جن سے فائدہ محبوب تھی میں جن سے فائدہ محبوب تھی میں اغلوطات کرتا ہیں اُنٹر مندہ کرتا اور ان کا وقت ضائع کرتا ہویا پھراپی بڑائی ثابت کرتا وغیرہ فرموم مقاصد ہوں۔

باب ماجاء مثل الصلوات الخمس

(نماز و بنجگانه کی مثال)

"عن ابى هريسرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: اَرَأَيتم لوان نهراً بباب احدكم يغتسل فيه كل يوم خمس مرات هل يبقى من درنه ؟قالوا: لا يبقى من درنه شيء قال فذالك مثل الصلوات الخمس يمحو الله بهن الخطايا". (حسن صحيح)

رسول النصلی الله علیہ وسلم نے فرمایا بتائیے آگرتم میں سے کسی کے دروازے پرکوئی نہر ہو،جس میں وہ روزانہ پانچ دفعہ نہا تا ہوتو کیا اس کے جسم پر پچھیل میں سے روزانہ پانچ دفعہ نہا تا ہوتو کیا اس کے جسم پر پچھیل میں سے کچھ بھی باقی نہیں رہے گا! آپ نے فرمایا یہ پانچ نمازوں کی مثال ہے اللہ تعالی ان کے ذریعہ گنا ہوں کومٹا تا ہے۔

تشریخ: ادارضة الاحوذی میں ہے کہ یہاں وجہ تشبیہ بیہ ہے کہ جس طرح آدمی کابدن میل کچیل سے
آلودہ ہوتا ہے اور خسل سے (خصوصاً صاف پانی سے جوجرا شیم کش بھی ہے) جسم بالکل صاف ہوجاتا ہے
اور جب بیٹل مکرر ہوتو جسم ہروقت صاف تقرار ہتا ہے، ای طرح جب آدمی وضو کرتا ہے تواس کے گناہ جمٹر
جاتے ہیں اور چونکہ گناہ پریشانیوں کے بھی اسباب ہیں اس لئے جب آدمی وضو کرتا ہے تواساب ہموم کے مٹنے
کو وجہ سے پریشانیاں بھی ختم یا کم ہوجاتی ہیں اور یہی وجہ ہے کہ اگر کسی نے خواب میں خسل کیا تواس کی پریشانیاں
ختم ہوں گی اور دَین ادا ہوگا۔ باقی کون سے گناہ معاف ہوتے ہیں صفائر یا کہا تر؟ تو یہ بحث کتاب کے شروع میں
گذری ہے۔

باب (بلا ترجمه)

(اس امت کی مثال بارش کی طرح ہے)

"عن انس قبال قبال رسول الله صلى الله عليه وسلم :مثل امتى مثل المطر لإيُدرى أ اوّلُه خيرام آخره؟". (حسن غريب وصححه ابن حبان من حديث عمار)

میری امت کی مثال بارش کی ما نند ہے معلوم نہیں ہوتا کہ اس کا اول بہتر ہے یا آخراس کا؟

تشریخ: اس مدیث کے بارے میں تین آراوہیں:

ایک بہے کہ بیضعف ہے مربیح نہیں ہے۔

دوسری حافظ این عبدالبرسی ہے جواس کوظاہر پر حمل کرتے ہیں اس تقدیر پریدامکان پیدا ہوتا ہے کہ مابعد کے زمانہ میں محابہ کرام سے بعض سے افضل آسکتا ہے وہ اس باب کی حدیث کے ظاہر سے استدلال کرتے ہیں۔

تیسری رائے جمہور کی ہے جو پہلی دونوں آراء کے خلاف ہے جمہور کہتے ہیں کہ محابہ کرام امت کے بہترین لوگ ہیں مابعد کے زمانہ میں کوئی ایسافخض نہیں آسکتا جو محابہ کرام سے افضل ہو، جمہور کہتے ہیں کہ اس مدیث کے دومطلب ہیں:

ایک بیک اس میں افضلیت کی بات نہیں بلک نفع کی بات ہوئی ہے اور نفع کی مختلف صور تیں ہوکتی ہیں الہذا اس حدیث میں بیامکان بیان کیا گیا ہے کہ مابعد میں ایسے لوگ آسکتے ہیں جن سے اہل اسلام کو بہت ذیادہ نفع ہو مثلاً صحابہ کرام کے زمانہ میں تدوین کتب اور مناظروں کی ضرورت نہیں تھی مگر بعد میں ایسے ایسے لوگ پیدا ہوئے جن کی تصنیفات امت کے ایک بڑے حصے کے لئے مفید بن گئیں بیا ایک جزوی فضیلت ہوگئی جوکل فضیلت کے منافی نہیں ہیں صحابہ کرام میں کو کی فضیلت حاصل ہوگئی فضیلت کے منافی نہیں ہیں صحابہ کرام میں کو کی فضیلت حاصل ہوگئی ہوگئی ہوگئی ہے جیسے ایمان بالغیب ہوا، البذا قیا مت تک امت میں وقتا فو قتا اجھے اجھے لوگ پیدا ہوں گے۔

(۲) دوسرامطلب میہ کہ یہاں صحابہ کرام طکانہ بلکہ خیرالقرون کا زمانہ جو کہ ابتداء حقیقی ہے اس مواز نہ میں شامل ہی نہیں ہے کیونکہ فصل بغیر پہلی بارش کے اُمٹی نہیں البتہ مابعد کی بارشیں بھی ایک وقت میں مفید ہوتی ہیں اور بھی دوسرے وقت میں جبکہ اولین بارش جوزیج کے لئے تاگز برہے وہ تو لامحالہ انصل ہے پس صحابہ کرام وتا بعین اور تیج تابعین تو امت کے افضل لوگ ہیں ہی ان کی بات تو اور ہے میموازنہ مابعد کے لوگوں

میں مراد ہے۔ (كذافى الكوكب الدرى)

باب ماجاء مَثَلُ ابن ادم واَجَلِه وَاَمَلِه

(آدمی اوراس کی موت اورامید کی مثال)

"عن بُريدة قا ل قال النبي صلى الله عليه وسلم : هل تدرون مامثل هذه وهذه ورَميٰ بحصاتين ؟قالواالله ورسوله اعلم،قال هذاك الامَلُ وهذاكَ الاجل". (حسن غريب)

حضرت برید فرماتے ہیں کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کیاتم جانتے ہو کہ بیاوروہ کس کی مثال ہیں؟ اور (اس کے ساتھ) آپ نے دوکنگریاں چینکیس (ایک قریب اور دوسری دور) صحابہ نے عرض کیا الله ورسوله اعلم،آپ نے فرمایاوہ (دوروالی) تمنااور مید ہے اور بیر قریب کی کنگری) اجل ہے۔

تشریخ: قوله: "هذاک"ال میں هاء تنبیہ کے لئے اور کاف خطاب کے لئے ہے اصل میں" ذا" ہے، دونوں کئریاں اگر چہ ایک ساتھ نتھیں ایک دورتھی لیکن دونوں آپ کے قریب تھیں اس لئے اشارہ ایک طرح کے لفظ کے ساتھ صحیح ہوا۔ مطلب سے کہ ابن اوم اپنی زندگی سے زیادہ طویل المدتی منصوب بناتا ہے۔ اس مضمون کی حدیث ابواب صفة یوم القیمة میں گذری ہے۔ فلیتذکر وہاں نقشہ بھی دیا گیا ہے۔

َ صديث الله عليه وسلم: انماالناس عمرقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: انماالناس كإبِلِ مائة لايجدالرجلُ فيهاراحلة". (حسن صحيح)

بے شک لوگ سور ۱۰ ااونٹوں کی طرح ہیں کہ آ دی اس میں نہ یائے عمدہ سواری۔

قوله: "داحلة" طاقت وراون ومضبوط جوان اوننی کو کہتے ہیں جو ہرتتم کے سفر کے لئے موزوں ہو راصلة میں تاء تانیث کے لئے نہیں ہے اس لے اونٹ پر بھی اس کا اطلاق ہوتا ہے تو جس طرح سواونٹوں میں بشکل ایک عمدہ سواری مل سکتی ہے اس طرح انسانوں کی صلاحیتیں بھی مختلف ہیں اگران کے اندر بااخلاق اور زاہد اور شریف موصوف باوصاف مرضیہ تلاش کیا جائے تو سومیں بھی ایک کا ملنامشکل ہے کیونکہ اس حدیث کی دوسری سند میں ہے "لا تجد فیھا دا حلة" لیمن سومیں بھی ایک نہیں ملے گا۔

صديث آخر: - "عن ابى هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: إنَّمامثلى وَ مَثَلُ أُمَّتى كسمشل رجل استوقدناراً فجعلتِ الدوابُ والفَراشُ يقعن فيهافانا آخذبِ حُجزِكم

وانتم تَقَحُّمُونَ فيها". (حسن صحيح)

فرمایارسول الله صلی الله علیه وسلم نے کہ میری اور میری امت کی مثال اس مخص جیسی ہے جس نے کوئی آگ جلائی، پس جانو راور پروانے اس میں گرنے (کودنے) لگے تو میں تنہیں کمرسے پکڑتا ہوں (کہآگ میں نہجا وی) اورتم اس میں پوری توت سے گھسے جارہے ہو۔

قبول د: "الفرادش" بفتح الماء پنتگے اور پردانے قبول د: "بِ سُحجَ نِ " بِ سُم الحاء و فتح الجيم كمر پر إزار بائد هنے كى جگہ چونكہ اس جگہ سے چكڑنے كى صورت ميں گرفت مضبوط ہوتى ہے اس لئے اس كى تخصيص فرمائى يعنى ميں تمہيں مقدور بحركوشش كر كے روكتا ہوں ليكن لوگ پتنگوں كى طرح جہنم كى آگ كى طرف كودتے ، برد هة اور گھتے چلے جارہے ہيں تو جس طرح ميں پوراز دراگا تا ہوں بچانے كے لئے اسى طرح لوگ بھى جہنم ميں جانے كى پورى كوشش كرتے ہيں كيونكة تم توت كے ساتھ داخل ہونے كو كہتے ہيں۔

اس مدیث میں لوگوں کی تثبیہ پروانوں کے ساتھ دینے کی وجہ خواہشات کی تاریکی میں اندھاپن ہے کہ جس طرح پروانے اندھیروں سے آگ کی طرف بھا گتے ہیں اورا پنے انجام سے بالکل بخبررہتے ہیں ای طرح دنیا کے لوگ ہیں۔ اورآ گ جلانے کا مطلب محر مات بیان کرنا ہے لیکن محر مات کے بجائے آگ کا ذکر فر مایا کہ ایک تو آگ جلانے کا مقصد آس پاس کے ماحول کوروش کرنا مقصود ہوتا ہے اس کے اندر جانا مراذ ہیں لیکن لوگ اس مقصد کو فظر انداز کرتے ہیں۔ دوم چونکہ دنیا کی آگ جہنم کی آگ کے مشابہ ہے اس لئے لفظ ناراستعال کیا۔

آخری حدیث: "عن ابن عمر ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال: إنماا جَلُکم فیسما خلامن الامم کسمابین صلواة العصرالی مغارب الشمس ، وانمامَثُلکم ومَثُلُ إلیهو د والنصاری کرجل استعمل عُمّالاً فقال: من یعمل لی إلی نصف النهار علی قیراط قیراط ؟ فعیملت الیهو دعلی قیراط قیراط قال: من یعمل لی من نصف النهارالی صلواة العصرعلی قیراط قیراط قیراط قیراط قیراط الله مغارب قیراط قیراط قیراط قیراط الله من صلواة العصرالی مغارب الشمس علی قیراطین قیراطین فَعُضَبت الیهو دو النصاری وقالواندن اکثر عملاً واقل عطاء الشمس علی قیراطین تراطین قیران الله و الله فضلی او تیه من اشاء ". (حسن صحیح) فقال: هل ظَلَمتُکُم من حقکم شیئا؟قالوا "لا "قال: فانه فضلی او تیه من اشاء ". (حسن صحیح) حضرت این عمر سروایت ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا تمہاری مدت عمر (زندگی) ان امتوں کی بنسبت جوتم سے پہلے گذر چکی ہیں ایس ہے جیے عمر کی نماز اورغروب آ قاب کے درمیان کا وقت ہے امتوں کی بنسبت جوتم سے پہلے گذر چکی ہیں ایس ہے جیے عمر کی نماز اورغروب آ قاب کے درمیان کا وقت ہے امتوں کی بنسبت جوتم سے پہلے گذر چکی ہیں ایس ہے جیے عمر کی نماز اورغروب آ قاب کے درمیان کا وقت ہے امتوں کی بنسبت جوتم سے پہلے گذر چکی ہیں ایس ہے جیے عمر کی نماز اورغروب آ قاب کے درمیان کا وقت ہے استوں کی بنسبت جوتم سے پہلے گذر چکی ہیں ایس ہے جیے عمر کی نماز اورغروب آ قاب کے درمیان کا وقت ہے استوں کی بنسبت جوتم سے پہلے گذر چکی ہیں ایس ہے جیے عمر کی نماز اورغروب آ قاب کے درمیان کا وقت ہے

اور تہاری مثال اور یہودونساری کی مثال بس اس محض کی طرح ہے جس نے کام کے لئے مزدور لگائے پس اس نے کہا کون ہیں؟ جومیرے لئے دو پہر تک کام کریں ایک ایک قیراط پر؟ پس یہود نے ایک ایک قیراط پرکام کیا، پھراس محض نے کہا کون ہیں جومیرے لئے دو پہر سے نماز عصر تک ایک ایک قیراط پرکام کریں؟ پس نصاری نے ایک ایک قیراط پرکام کیا، پھرتم لوگ کام کررہے ہوعصر کی نماز سے غروب آفاب تک دودو قیراطوں پر، پس یہودونساری غضب ناک ہوئے انہوں نے کہا کہ ہم نے محنت زیادہ کی اور مزدوری کم پائی (یعنی ہمارا کام ان آخری اچروں سے زیادہ ہوئے انہوں نے کہا کہ ہم نے محنت زیادہ کی اور مزدوری کم پائی (یعنی ہمارا کام ان آخری اچروں سے زیادہ ہوئی جا ہجری دیا ہے گہا کہا گیا ہیں الک نے کہا کیا ہیں مالک نے کہا کیا ہیں الک سے چھوکی کی ہے؟ انہوں نے کہا نہیں پس مالک نے کہا ہے میری مہر بانی ہے میں جسے چاہوں دوں!

تشری : بعض حفرات نے اس مدیث کا مطلب یہ لیا ہے کہ دنیا کی مدت صرف اتی باقی ہے جانا وقت عفر سے مغرب تک ہوتا ہے گئن یہ بات صحیح نہیں کیونکہ اس طرح تو قیامت کی آمکا وقت باسانی معلوم ہو سے گا جو خلاف نصوص قطعیہ ہے ، اس لئے اس کا صحیح مطلب یہ ہے کہ یہ تقابل اس امت کی مدت کا سابقہ امتوں کی مُذتوں سے ہدت و نیا ہے اس کا کوئی خاص تعلق نہیں ہے یعنی جولوگ ہم سے پہلے گذر ہے ہیں ان کا مریں بہت زیادہ ہوا کرتی تھیں جبکہ اس امت کے افراد کی اوسط عمر ساٹھ ستر سال ہے لہذا سابقہ امتوں کے کوئر سے نہی اورطویل زندگیوں میں بہت زیادہ اعمال کے لیکن اس امت مرحومہ کی نیکی کم از کم دیں گنا ہو صادی گئی جبکہ لیلۃ القدرود میکر آزمنہ وامکنہ مبارکہ اس کے علاوہ ہیں ، پس اُن کا ممل زیادہ مگر تو اب ہم سے کم ہوا۔

ترندی میں جومثال بیان ہوئی ہے بیان بہودونساری کی ہے جوئے نداہب سے پہلے فوت ہوئے اور جو یہودحضرت عیمی کونہیں مانتے تھے یاوہ یہودونساری جوہمارے پیارے نبی سلی اللہ علیہ وسلم پرایمان نہ لا سکے بعنی سنے نداہب کے بعدمر گئے ان کی مثال دوسری ہے جو بخاری شریف میں حضرت ابوموی اشعری کی حدیث میں ہے بعنی ان کا اجر باطل ہوگیا ہے۔ (''باب الا جارة من العصرالی اللیل من کتاب الا جارة '' بخاری صدیث میں ہے بعنی ان کا اجر باطل ہوگیا ہے۔ (''باب الا جارة من العصرالی اللیل من کتاب الا جارة '' بخاری صدیث میں ہے بعنی ان کا اجر باطل ہوگیا ہے۔ (''باب الا جارة من العصرالی اللیل من کتاب الا جارة '' بخاری صدیث میں ہے تعین ان کا اجر باطل ہوگیا ہے۔ (''باب الا جارة من العصرالی اللیل من کتاب اللہ جارت '' بخاری اللہ علی کونا میں ہوتا ہے۔ خرض اس امت بربان حال مراد ہے۔ قولہ: ''قیر اط'' نصفِ دائق ہوتا ہے اور دائق درہم کا چھٹا حصہ ہوتا ہے۔ غرض اس امت کو اللہ تعالیٰ نے اپنے فضل سے زیادہ ٹو اب سے نواز اہے، اے اللہ! ہمیں بھی اپنا فضل اور اپنی رضا عطافر ما!

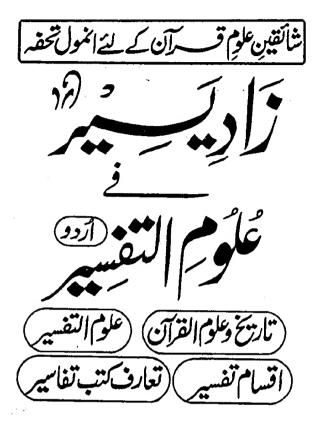
آخرابواب الامثال ويليه ابواب فضائل القرآن ان شاء الله تعالى



- نخليق كائنات اوراس كاجرت الكيزنظام
- ص حیات انسانی کے لئے فالق کی نعمتوں اور مکمتوں کابیان
 - O قيامت كاظهور اورجنت وجبنم كے احوال

قَالِيفُ مولانا كمال الرين المستنرس مولانا كمال الرين المستنرس مولانا كمال الرين المستنرس معدد المداديث العدوم حداديث العدوم المداديث المداديث

وت كي كتب خاند آنام بان كراجي ما



تالاف حفرت مولانا كمال الدين المستنرشد خادم الاحاديث النبوريئ حامع اسلام يمنزن العلوم

مَت بِي كَتَر بُنِ فِي اللهِ مِنْ مقابل آزام ہاغ کراچی ال

ٳڵؿؖٵؠؙۼؿ۫ؾؙ<u>ٳ</u>ڵڗؘؾؚۜٙٶؘڡۜػٳۄٙۯٳڵٳؙڬٛڵٳقۣ مين تواسى له بهيجا گيابون كرافلاق حسندى بحيل كون

ڈاکٹرالعریفی کی انتہائی دلچسپ اورمفید کتاب إستفيغ بحساتك كالمل اردورجم زندگی کوخوشگواریناییخ اُسوهٔ رسول اکرم تلظاور اکابر ملت کے طرز عمل کی روشی میں معاشرتی زندگی کوخوشگوار بنانے کے طریقے مصنف: ذا كرمجر بن عبدالرحمن العريقي مترجم: معراج محمد بارق